Alif U

✽ श्री: ✽

Rs. 8/-

अलफ़-लैला

अर्थात्

सहस्र—रजनी—चरित्र

चारों भाग

vol. IV

✽✽✽

DILEEP KUMAR KOUL

अनुवादक

बाबू रूपकिशोर जी गंगेरवाला

Babu ori

श्यामलाल ल

Sham Lal Hira Lal

श्यामकाशी प्रेस, मथुरा।

Sham Kashi Mathura

इस पुस्तक का पुनः मुद्रणाधिकार सदैव के लिए
ग्रन्थकर्ता से लेकर प्रकाशक ने स्वाधीन रक्खा है

मूल्य ८)

Rajeev

SPS
891.433 R 90 A
23247

Sh. Ghulam Mohamad & Sons.
Book-Sellers, Publishers & Stationers
Govt., Order Suppliers,
SRINAGAR KASHMIR

Acc. No 23247
Cost Rs. 8:50
Date 13.3.64

S. Pertap Singh Library Srinagar

171

12/9

उपोद्घात।

अलफ--लैला हाथ में आते ही यह कहना पड़ना है कि लोकोत्तर आल्हाद कारक इस ग्रन्थ के रचयिता महाशय कोई अरब देश के रहिवासी थे, उनकी विवेचना शक्ति मनोज्ञ थी। पाठकों को [illegible] से अनुभव के अतिरिक्त प्राचीन नीति विचार वैचि[illegible] व्यवहार का ज्ञान, कान्ता के समान उपदेश तथा सारगर्भित मानव चरित्र अंकन, अलंकारिक अत्युक्ति स्पष्टता से [illegible] होंगी।

प्र इसका अनुवाद अरबी फारसी में परलोकवासी मुन्शी शायाँ ने किया पश्चात उर्दू, बङ्गला, गुर्जर इत्यादि भाषाओं में आसमुद्रान्त केवल एतद्देश में ही नहीं प की भी कई भाषाओं में सुगुम्फित हुआ। हिन्द सके अनुवाद हुये परन्तु सब में उर्दू का ऐसा सम ा हिन्दी संसार के चित्त--रञ्जन को सामिग्री न त्रुटि को दूर करने के लिये मथुरा के प्रसिद्ध त्र" के अध्यक्ष मातृभाषा प्रेमी, मित्रवर बाबू मुझसे शुद्ध हिन्दी भाषा में अनुवाद करने का विवश मैंने जनवरी सन् १९१५ ई० से अनुवाद लगा दिया।

श्य
तीसरे
मछुवे
दूवा
१० सद
११ प्रध
१२ श्य
१३ ती
१४ अ
१५ प
१६ द
१७
१८

मैं न तो हिन्दी का लेखक हूँ और न साहित्यिक व्यवसायी ही हूँ ऐसी दशा में मैंने यह बड़े दुस्साहस का काम किया है, अतएव अनुवाद में कितनी ही त्रुटियों का होना सम्भव है, मुझसे जहां तक हो सका मूल लेखक महोदय के भावों को सरलता पूर्वक समझाने का प्रयत्न किया है। यथा शक्ति नामों को छोड़ कोई फारसी शब्द प्रयोग में नहीं लाया गया।

अनुवाद कैसा हुआ है इस विषय में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि जिस सद्भाव से प्रेरित होकर मुन्शी जी ने इसे फारसी में लिखा उसी प्रकार मैंने इसे हिन्दी संसार के सन्मुख रखने की धृष्टता की है, यद्यपि अनुवाद में मूल ग्रन्थ के दशमांश की सी भी सरलता नहीं है परन्तु आशा है भाषा रसिक मेरी इस अल्प भेंट को स्वीकार कर अनुग्रहीत करेंगे।

विजयगढ
६ मई १९१६ ईस्वी

ृशित

6 May 1916

थमतः
ीताराम
किशं अनेक
रन् यूरो
में भी इ
रहा ज
ा, इस
ाशी प्रे
त जी ने
किया,
में हाथ

* * *

विषय-सूची ।

प्रथम भाग

क्रमसंख्या	नाम कथा	पृष्ठ संख्या
१	कथारम्भ	१
२	गर्दभ, वृषभ और पालक की कथा	६
३	व्यापारी और हठी भार्या	११
४	दैत्य और व्यापारी की कथा	१४
५	वृद्ध और मृगी की कथा	१८
६	दो श्याम श्वान और वृद्ध की कथा	२२
७	तीसरे वृद्ध और खिच्चरी की कथा	२५
८	मछुवे की कथा	२७
९	दूवां वैद्य की कथा	३१
१०	सत्पुरुष की कथा	३३
११	प्रधान मन्त्री की कथा	३५
१२	श्याम द्वीप नरेश की कथा	४४
१३	तीन कलन्दर और पंच पत्नी की कथा	५१
१४	श्रमजीवी की कथा	५६
१५	पहिले कलन्दर की कथा	६४
१६	दूसरे कलन्दर की कथा	७२
१७	द्वेषी और भद्र पुरुष की कथा	७२
१८	तीसरे कलन्दर की कथा	८१

१९ जबीदा की कथा ९६
२० अमीना की कथा १०२
२१ सिंदबाद जहाजी की कथा १०९
२२ सिंदबाद जहाजी की प्रथम यात्रा १११
२३ ,, ,, दूसरी यात्रा ११६
२४ ,, ,, तीसरी ,, ११९
२५ ,, ,, चौथी ,, १२४
२६ ,, ,, पंचम ,, १३०
२७ ,, ,, छठी ,, १३३
२८ ,, ,, सप्तम यात्रा १३८
२९ ,, षड्यन्त्र द्वारा मृत्यु प्राप्त गृहणी की कथा १४२
३० नूरुद्दीन अली और बदरुद्दीन हसन की कथा १४७

द्वितीय भाग ।

क्रमसंख्या नाम कथा पृष्ठ संख्या
३१ कथारम्भ १६८
३२ फिरङ्गी की कथा १७२
३३ मोदी की कथा १८०
३४ अङ्गुष्ठ विहीन युवक का वर्णन १८१
३५ यहूदी वैद्य का वर्णन १८९
३६ कर विहीन युवक का वर्णन १९०
३७ सूचीकार की कथा १९७
३८ पंगु का वर्णन १९८

३९ नाई का कथन २०९
४० बकबक की कथा २११
४१ बकबारह की कथा २१४
४२ बूबक की कथा २१८
४३ अलकोज की कथा २२१
४४ अलंसचर की कथा २२४
४५ शाह व कबक की कथा २३०
४६ अब्दुल्हसन और शम्सुन्नहार के प्रणय की कथा २३५
४७ युवराज कमरुज्जमा के प्रणय की कथा २४७
४८ नूरुद्दीन की कथा २७८
४९ बद्र की कथा २९३

तृतीय भाग ।

क्रमसंख्या नाम कथा पृष्ठ संख्या

५० गानम की कथा ३११
५१ जेनुस्सनम की कथा ३२५
५२ राजकुमार खुदादाद की कथा ३३४
५३ राजकुमारी दरियावार की कथा ३३९
५४ सोते जागते की कथा ३४६
५५ अलादीन और विचित्र दीपक की कथा ३६२

१९ जबीदा की कथा ९६
२० अमीना की कथा १०२
२१ सिंदवाद जहाजी की कथा १०९
२२ सिंद्बाद जहाजी की प्रथम यात्रा १११
२३ ,, ,, दूसरी यात्रा ११६
२४ ,, ,, तीसरी ,, ११९
२५ ,, ,, चौथी ,, १२४
२६ ,, ,, पंचम ,, १३०
२७ ,, ,, छठी ,, १३३
२८ ,, ,, सप्तम यात्रा १३८
२९ ,, षडयन्त्र द्वारा मृत्यु प्राप्त गृहणी की कथा १४२
३० नूरुद्दीन अली और बदरुद्दीन हसन की कथा १४७

द्वितीय भाग ।

क्रमसंख्या नाम कथा पृष्ठ संख्या
३१ कथारम्भ १६८
३२ फिरङ्गी की कथा १७२
३३ मोदी की कथा १८०
३४ अङ्गुष्ठ विहीन युवक का वर्णन १८१
३५ यहूदी वैद्य का वर्णन १८९
३६ कर विहीन युवक का वर्णन १९०
३७ सूचीकार की कथा १९७
३८ पंगु का वर्णन १९८

३९ नाई का कथन २०९
४० बकबक की कथा २११
४१ बकबारह की कथा २१४
४२ बूचक की कथा २१८
४३ अलकोज की कथा २२१
४४ अलंसचर की कथा २२४
४५ शाह व कबक की कथा २३०
४६ अब्दुलहसन और शम्सुन्नहार के प्रणय की कथा २३५
४७ युवराज कमरुज्जमा के प्रणय की कथा २४७
४८ नूरुद्दीन की कथा २७८
४९ बदर की कथा २९३

तृतीय भाग ।

क्रमसंख्या नाम कथा पृष्ठ संख्या

५० गानम की कथा ३११
५१ जेनुस्सनम की कथा ३२५
५२ राजकुमार खुदादाद की कथा ३३४
५३ राजकुमारी दरियावार की कथा ३३९
५४ सोते जागते की कथा ३४६
५५ अलादीन और विचित्र दीपक की कथा ३६२

चतुर्थ भाग ।

क्रमसंख्या	नाम कथा	पृष्ठ संख्या
५६	कथारम्भ	४०३
५७	नेत्र विहीन भिक्षुक अब्दुल्लह की कथा	४०५
५८	युवक सीदी नेमान की कथा	४०८
५९	ख्वाजा हसन की कथा	४१३
६०	अलीबाबा की कथा	४२१
६१	दस्यु उपाख्यान	४२५
३२	अलीख्वाजा की कथा	४३२
६३	कल के घोड़े की कथा	४३६
६४	राजकुमार अहमद और दैत्यकुमारी बानो की कथा	४४८
६५	दो बहिनों के आन्तरिक द्वेष की कथा	४६९
६६	ग्रन्थ समाप्ति	४९१

❀ श्री ❀

अलफ-लैला

(अर्थात्)

सहस्र--रजनी--चरित्र

—:❀ ❀ ❀:—

❀ प्रथम भाग ❀

पूर्वकाल में फारस देश, धन-धान्य से परिपूर्ण था। परम-दयालु प्रजा पालने में तत्पर यवन सम्राट् जमजाह बड़े सुख से प्रजा का पालन करते थे। अनेक देश आधिपत्य में थे, सैकड़ों छोटे बड़े राजा कर देते थे, धन, जन, बल आदि किसी शक्ति की कमी नहीं थी।

सम्राट् के दो पुत्र थे जो सौन्दर्यवान, वयस्क, रसिक-प्रिय और अत्युदार थे। बड़ा युवराज शहरयार, तो पिता के स्वर्गवास पश्चात् सिंहासनारूढ़ हुआ और छोटे भाई राजकुमार शाहजमां को उसने अपरिमित कोष तथा सैन्य देकर तातार देश का शासन प्रदान किया।

शाहजमां भाई को धन्यवाद दे विदा हुआ और समर कन्द, का जो उक्त देशान्तर्गत प्रमुख नगर था, राजधानी बनाया।

इस प्रकार रहते सहते दश वर्ष बीत गये। शहरयार को भाई के देखने की बड़ी उत्कण्ठा हुई अस्तु, अपने प्रधान मन्त्री को भाई के लिवाने के लिये भेजा। जब मन्त्री समरकन्दके समीप पहुँचा तो शाहजमां

राजसी ठाट से २ व ३ कोस पूर्व उसके स्वागत के लिए आया। वह मन्त्री से साक्षात् कर अति प्रसन्न हुआ, भाई की कुशल क्षेम पूछी।

मन्त्री ने कहा—"सम्राट् ने आपको स्मरण किया है, मेरे साथ चलिये केवल इसी अभिप्राय से मुझे आपकी सेवा में भेजा है !"

भाई ने उसे बुलाया है। यह सुन शाहजमां के आनन्द की सीमा न रही। भ्रातृ-स्नेह हृदय-पट को चीरता हुआ नेत्रों द्वारा आनन्दाश्रु बर्षाने लगा, "ईश्वर ने चाहा तो दश दिन पश्चात् आपके साथ चलूंगा।" यह कहकर मन्त्री को सुसज्जित प्रासाद में ठहराया, सेवा सुश्रूषा के लिये अनेक दासदासी नियुक्त कर दिये।

शाहजमाँ ने यात्रा सम्बन्धी सब अटाला एकत्रित कर एक विश्वस्त कर्मचारी को राज्य भार दे और अपनी प्राण प्यारी रानी से विदा हो, मित्र बांधव और दासदासी सहित अपने डेरे में जो नगर के बाहर आगत मन्त्री के डेरे के पास था, पदार्पण किया। यद्यपि मन्त्री से यात्रा सम्बन्धी अनेक मन्त्रणा करते अर्द्ध रात्रि बीत गई। परन्तु शाहजमाँ का चञ्चल मन राजमहिषी के रूप-लावण्य पर भ्रमर बना हुआ था, अतः उसने सोचा, जाने के पूर्व एकबार हृदयानन्दवर्धिनी रानीश्री से और साक्षात् कर आऊं अस्तु वह अपने डेरे से गुप्त रूप से बाहर निकला और अन्तःपुर में पहुंचकर रानी की प्रतीक्षा करने लगा।

शाहजमां ने देखा रानी एक नीच पद-दलित दास को हृदय से लगाये आनन्द से शयनकर रही है। आह ! जिस रानी को अपनी प्राणाधार समझता था जिसके बिछुड़ने पर प्राण विच्छिन्न करने को उद्यत था हाय वही कराल हृदय नितान्त मानवी वेशमें राक्षसी निकली। यह देख उसे बड़ी घृणा हुई, क्रोध कम्पित अधरों पर दन्तारोपण होने लगा। कटि से लटकती निशित कृपाण खेंच एक ही बार में दोनों का शिर तन से जुदा कर मृत देह खिड़की के मार्ग से बाहर महल की परिखा में फेंक दिया।

उपरोक्त हत्याकांड से विभीषित शाहजमां अपने डेरे को लौट गया परन्तु यह रहस्य किसी पर प्रकट न किया।

दूसरे दिन प्रातः ही शाहजमाँ ने आगे को कूंच कर दिया यद्यपि इस यात्रा से सब मग्न थे परन्तु शाहजमां का हृत्पिंड रानी के दुष्टाचरण से द्रवीभूत प्राणों को छटपटाता था। जब वह राजधानी फारस के निकट पहुँचा तो सम्राट् शहरयार अपने सचिव इत्यादि प्रधान कर्मचारियों को साथ ले बड़े समारोह से भाई के स्वागत के लिए चला। और प्रणाम, प्रेमाभिवादन के पश्चात् भाई को सुख पूर्वक घर ले आया।

शहरयार ने भाई के लिए सुसज्जित महल नन्दन कानन के समान पूर्व से ही बनवा रक्खा था जहां से राज प्रासाद की पुष्प वाटिका का मनोहर दृश्य भलीभांति दृष्टि आता था। अस्तु शाहजमां को उसी महल में ले जाकर उतारा और स्नानादि से निवृत्त होकर नवीन वस्त्र पहिनाये। जब शाहजमां भोजन इत्यादि से निश्चिन्त हुआ तो दोनों भाई बहुत रात तक बातें करते रहे।

रात अधिक बीत गई है यह देख शहरयार भाई को वहीं छोड़ अपने शयनागार को चला गया। शाहजमां मर्मभेदी विभीषिका से क्रन्दन करता शय्या पर जा लेटा परन्तु नींद नहीं आई।

शाहजमां को कई दिन जब इस प्रकार विषम यन्त्रणा में दग्ध होते बीत गये तो शरीर कृश हो गया मुखच्छवि अतिमलीन पड़ गई। यह दशा देख शहरयार बड़े असमंजस में पड़ गया उसने सोचा दूर देश आने से किम्वा स्त्री के वियोग से भाई दुखी है अस्तु चित्त विनोदार्थ अनेक भारतवर्ष की बनी वस्तुएं भाई के पास भेजीं, अनिन्द्य लावण्यवती अप्सराओं का गान और नृत्य कराया निदान् अनेक प्रयास शाहजमां को प्रसन्न करने के किए परन्तु उसके क्लेशितचित्त को अणुमात्र भी सुख नहीं मिला कदाचित् मृगया से इसे आश्वासन मिले अतएव

दूसरे ही दिन शहरयार तैयार होकर भाई को लिवाने आया। परन्तु शाहजमां ने "शरीर अस्वस्थ है क्षमा कीजे, मैं जाने योग्य नहीं हूं" कहकर टाल दिया।

भाई नहीं जाता अस्तु सम्राट शहरयार स्वयं अपने कर्मचारियों सहित बनको चले। शाहजमा किवाड़ बन्द करके खिड़की से जहां से पुष्पवाटिका का अखिल दृश्य भली भांति दृष्टि आता था ढासना लगाकर बैठ गया।

सन्ध्या समय महल का गोप्य द्वार खुला और इक्कीस स्त्रियां जिनमें सम्राज्ञी भी थी, निकलीं। उक्त स्त्रियों को सम्राट् के आखेट चले जाने के कारण वहां किसी के देखने की सम्भावना नहीं थी अत: बड़े आमोद प्रमोद से परस्पर अठखेलियां कर रही थीं उन्हें स्वप्न में भी आशा नहीं थी कि अभागा शाहजमां हमारी निर्लज्ज क्रीड़ा पर टीका टिप्पणी कर रहा है।

शाहजमां ने देखा दस दासियों ने अपने वस्त्र उतार दिये हैं— "अरे! यह तो सब पुरुष हैं!" वह अति विस्मित हुआ जब कि प्रत्येक पुरुष ने अपनी २ प्रेमिका का हाथ पकड़ मनमानी करना प्रारम्भ कर दिया।

अब केवल सम्राज्ञी अकेली खड़ी रही। मसऊद! मसऊद!! दो बार ही पुकारा था कि एक हृष्ट पुष्ट लोहित वर्ण दास पीछे से निकल आया और सम्राज्ञी को हृदय से लगा एक ओर को लिवा ले गया। निदान यह चाण्डाल चोकड़ी आधी रात पर्यन्त केलिक्रीड़ा में मस्त रही पश्चात् सरोवर में स्नानकर वस्त्र पहन उसी द्वार से महल में चली गई। मसऊद वाटिका की ऊँची प्राकार फांदजिधर से आया था उसी ओर चला गया।

शाहजमां यह अपूर्व दृश्य देख सोचने लगा-स्त्रियें नित्य चपल रहती हैं जो कोई इन पर विश्वास करता है वह स्त्रियों के चरित्र क्या

हैं यह मर्म ही नहीं जानता वह महा मूर्ख है। निदान इस घटना से शाहजमां को केवल आश्वासन ही नहीं मिला वरन् समस्त दुःख सुख में परिणत हो गया।

सम्राट् शहरयार आखेट से लौटकर आया तो भाई को अति प्रसन्न पाया उसने विस्मित हो पूछा—"जैसे दुःखावस्था में मैं तुम्हें छोड़गया था आशा नहीं थी कि ऐसा सुखी पाऊँगा अतएव तात ! इस परिवर्तन का कारण बताकर मेरा सन्देह दूर करो।"

थोड़ी देर तक शाहजमां मौन साधे कुछ सोचता रहा वह चाहता था इस रहस्य को भाई पर प्रगट न करूं परन्तु भाई के सौगन्द देने पर उ। मसउद और सम्राज्ञी की घनिष्टता आद्योपान्त कह सुनाने पर बाध्य होना पड़ा। यद्यपि सम्राट् को बात का विश्वास नहीं हुआ उसने सोचा निस्सन्देह भाई को धोखा हुआ। सम्राज्ञी असती है, यह कहना ऐसा है जैसे दिन को रात बताना।

भाई अविश्वास करता है। यह देख शाहजमां ने भाई को पुनः आखेट जाने तथा गुप्त भाव से उक्त शयनागार में आकर स्वयं अपनी आँखों से देखने की प्रार्थना की।

शाहजमां की यह बात युक्ति युक्त है। अस्तु दूसरे दिन प्रातः ही दोनों भाई नगर के बाहर डेरों में जा ठहरे, संध्या पर्यन्त इधर उधर की बातें करते रहे पश्चात् रात्रिको दोनों भाई घोड़ोंपर सवारहो शाहजमां के शयनालय में आगये। सूर्यास्त के समय शहरयार ने देखा सम्राज्ञी बीस दासियों सहित पुष्पोद्यान में आई पूर्ववत् दस दास जो स्त्री वेश में थे वस्त्र उतार अपनी २ प्रेमिका का हाथ पकड़ टहलने लगे, सम्राज्ञी ने भी अपने प्रेमी मसदऊ को सांकेतिक शब्द द्वारा बुला लिया।

यह दुराचार देख शहरयार स्तम्भित रह गया सहस्र वृश्चिक दंशन के समान वेदना होने लगी दीर्घ निश्वास त्याग शाहजमां से कहने लगा—"जीवन क्षण-भङ्गुर है। मान मर्यादा खोकर यहां कालक्षेप

करना अति कठिन है अतएव यही उचित है कि सब-त्यागी बनकर देशाटन करें।

भाई के विरुद्ध उत्तर देना शाहजमां ने उचित न समझा अति विनीत भाव से कहने लगा—"आपकी आज्ञा शिरोधार्य है परन्तु आप बचन बद्ध हों कि जब कहीं कोई मनुष्य हम से अधिक विपद्-ग्रस्त पावें तो तुरन्त लौट आवेंगे···!"

बीच में बात काटकर शहरयार ने कहा—''अच्छा ! मुझे स्वीकार है परन्तु भाई क्या संसार में हम से अधिक भी कोई दु:खी होगा ?' इस प्रकार दृढ़ व्रत दोनों भाई जिधर मुंह उठा चल दिये।

कुछदिनों पश्चात् दोनों भाई नदी तट सघन वृक्ष वेष्टित बनमें जहां दूर २ तक ऊँचे २ सुगंधित वृक्ष आकाश वितान के मध्य अपूर्व शोभा देते थे; पहुँचे। एक वृक्ष के नीचे बैठ कर ससार की असारता पर पारस्परिक परामर्श कर रहे थे कि सहसा एक भयानक शब्द कर्ण गोचर हुआ। वह विस्मित हो चारों ओर देखने लगे हठात् नदी की धारा से एक लोहित स्तम्भ निकल कर आकाश की ओर ऊंचा उठने लगा।

दोनों भाई भयभीत हो भागकर एक सघन वृक्ष पर चढ़ पत्तों की ओट में छिप उस विकट स्तम्भ की प्रतीक्षा करने लगे।

प्रवाहित धारा से स्तम्भ निकलकर पुरुषाकार बन गया पुनः देखते ही देखते एक विशाल भयानकाकार लोहित वर्ण राक्षस बन गया। जिसके सिर पर सुदृढ़ शीशे का बक्स, जिसमें चार बड़े २ ताले लगे थे, रक्खा हुआ था। संयोग वश राक्षस उसी वृक्ष के नीचे आया और बक्स खोला, उस में से एक स्वर्णवत् नवयौवना वस्त्रालंकार से सुसज्जित बाहर निकाली।

बड़े प्रेम से राक्षस ने नवयौवना को पास बैठाकर कहा—"सुन्दरी ! विवाह की रात से मैं तेरे सौन्दर्य्य पर मुग्ध हो उठा

लाया हूं निस्संदेह तू सती साध्वी और परम प्रणयिनी है। प्राणेश्वरी ! इस समय मैं निद्रा से ऐसा वशीभूत हुआ हूं कि इन उन्नत उरोज और कोमल अधरों के रसास्वादन में नितान्त असमर्थ हूँ सुस्थिर रहना असम्भव है इच्छा है थोड़ी देर सो रहूं।"

यह कहकर राक्षस अपने सुदृढ़ सिर को नवयौवना की कमनीय कोमल जंघा पर रख सो गया। राक्षस के पैर नदी तट तक फैले हुये थे, सोने में कण्ठ का भारी शब्द घन की गर्जन के समान भान होता था। दोनों भाई भय से थर २ काँप रहे थे कि अनायास उस युवती की दृष्टी जो वृक्ष पर पड़ी तो दोनों को अपने पास बुलाया। यद्यपि दोनों ने हाथ जोड़ कर—"हमें क्षमा करो !" नय विनय प्रार्थना की, परन्तु युवती ने राक्षस का शिर धरती पर रखकर कहा—"यदि तुम शीघ्र मेरे पास न आओगे तो मैं इस नराहारी राक्षस को सचेत कर आपको यमपुर पहुंचवा दूंगी।

दोनों भाई कांपते हुए नीचे उतर आये। मन्मथ व्यथिता नवयौवना प्रेम से दोनों का हाथ पकड़कर थोड़ी दूर वृक्षों के नीचे ले गयी। यद्यपि दोनों कुटिला के मनोभाव से सहमत न हुये परन्तु प्राण भय से क्रमशः उसकी कामेच्छा तृप्त कर दी। युवती ने दोनों की अंगुलियों से अंगूठी उतरवा ली और एक छोटा बक्स खोलकर सूत्र द्वारा जिसमें अनेक अंगूठियां थीं बांधकर कहने लगी—"इसी प्रकार अट्ठानवे अंगूठी मैं पूर्व में लाभकर चुकी थी इन दोनों के मिलने से पूरी सौ हो गईं। यद्यपि यह राक्षस बड़ी सावधानता से मुझे बक्स में बन्दकर समुद्र के अगम्य जल में रखता है तथापि जब जैसी मेरी इच्छा होती है वैसा ही स्वतन्त्रता पूर्वक करती हूं। यह भली भाँति समझ लो कि जो स्त्री स्वेच्छाचारिणी होगी संसार की कोई शक्ति उसे नहीं रोक सकती।

यह कहकर वह स्त्री दोनों को भाग जाने का संकेत कर राक्षस

के शिर को अङ्क में ले निर्भीक यथापूर्व वहीं जा बैठी, यह दोनों भाई भी बेचारे आपत्ति के मारे जिस मार्ग से आये थे लौट पड़े।

मार्ग में शाहजमां ने कहा—"अनुज वत्सल सम्राट! आपने देखा? यह स्त्री दुष्टाचरण में कैसी चतुर थी राक्षस का भय अणुमात्र भी न था फिर भी वह राक्षस उस के सतीत्व की मुक्ति कण्ठ से प्रशंसा करता था सत्य है—"स्त्रियश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं देवो न जानाति कुतो मनुष्य" क्या इस राक्षस की विपत्ति हमारी आपदा से कम है? उचित यही है कि राजधानी को लौट चलें क्योंकि पतिव्रता नारी आजकल मिलना ही असम्भव है।"

निदान् सम्राट शहरयार ने राजधानी में प्रवेश कर मंत्री को सम्राज्ञी के प्राण अपहरण की कठिन-आज्ञा दी वरन् उन पापात्मा बीस दास-दासियों को भी अधिक पापकर जीवन कलङ्कित करने को अवशेष न रक्खा। किंवाहुना शहरयार ने प्रतिज्ञा की कि प्रत्येक रात्रि को नवीन नवयौवना के सङ्ग निकाह (विवाह) किया जावे और प्रातः ही पाणिग्रहीता नव-वधू का बध करा दिया जावे।

शाहजमाँ तो अपने नगर समरकन्द को लौट गया परन्तु शहरयार नित्य रात्रिको एक अबला बाला से विवाह करता और प्रातः उसे मरवा दिया करता इस भीषण राजाज्ञा के कारण चहुं ओर हाहाकार मच गया वरन् इस अत्याचार से पीड़ित हो सैकड़ों पुरवासी अन्यान्य देशों को भाग गये।

मंत्री की दो पुत्रियां मुग्धा थी जिन्हें वह प्राणों से भी अधिक प्यार करता था। बड़ी का नाम शहरजाद और छोटी का दुनियाँजाद था। बड़ी पुत्री अति गुणवती शिक्षिता असामान्य सुन्दरी युवती थी वरन् सच तो यह है कि जिन लोगों के तृषित नेत्र रमणी सौन्दर्य के उपासक हैं शहरजाद उनकी आराध्य देवी थी।

एक दिन शहरजाद ने पिता से प्रार्थना की—"मेरी इच्छा है

सम्राट के अत्याचार से अबला मात्र को मुक्त करूं जिसका उपाय केवल यही है कि मेरा विवाह सम्राट से कर दिया जावे तो मैं कला कौशल से ज्ञाति बहिनों का अवश्य उद्धार कर सकूंगी।"

थोड़ी देर तक बज्राहत की भांति मन्त्री के मुखसे कोई शब्द न निकला पुन: दीर्घनिश्वास त्याग बोला—"पुत्री क्या ज्ञान तिरोहित हो गया, राजाज्ञा स्मरण नहीं रही। तेरा विचार सर्वथा निर्मूल है भला जिसके निश्चय को बड़े २ नेता बुद्धिमान् सचिव भङ्ग नहीं कर सके ऐसे दृढ़ पतिज्ञ को एक अबला बाला सन्मार्ग पर ले आवे केवल दुराशा मात्र है।

"पिता ! मैं न मानूंगी मेरी इच्छा पूर्ण करो यदि……

शहरजाद को बीच में रोक कर मन्त्री ने कहा—"तू निस्सन्देह मृत्यु का आह्वान करती है जो कोई बिना सोचे समझे किसी कार्य में हस्तक्षेप करता है वह उस गधे की तरह अज्ञान वश विपद् ग्रस्त हुआ दु:ख भोगता है !"

शहरजाद ने पूछा—"पिता, उस गधे की कथा क्या हैं क्या मैं सुन सकती हूं ?"

"अच्छा सुनो।" मन्त्री कहने लगा—

गधा बैल तथा उनके पालक की कथा।

पूर्व समय में एक धनवान् व्योपारी था। अनेक ग्रामों में कृषि सम्बन्धी पशु शाला इत्यादि उसके अधिकार में थी। अनायास एक दिन वह व्योपारी सकुटुम्ब निकटस्थ ग्राम में पशु देखने गया और पशुशाला में जहां एक गधा और बैल बँधा था जाकर बैठा। उसने देखा, दोनों पशु परस्पर कुछ परामर्श कर रहे है। व्योपारी प्रत्येक पशु पक्षी की भाषा जानता था ध्यान पूर्वक उनकी वार्ता सुनने लगा।

गधे से बल ने कहा:—"तू बड़ा भाग्यशाली है सदैव आनन्द से कालक्षेप करता है तेरी अपेक्षा मैं कितना कठिन परिश्रम करता हूं प्रात: से सन्ध्या पर्यन्त हल जोतता हूं। तनक ही चूकने में हरवाहा दण्ड देता हैं और आँकुस की मार से शरीर आपाद थरथराने लगता है, हल चलाते और बोझा ढोते २ मेरा कन्धा आहत हो अति पीड़ा करता है। इस पर भी मारा धारा जब मैं रात्री को आता हूं तो सूखा सड़ा भुस मेरे आगे डाल देते हैं। रात्रि भर क्षुधा तृषा से व्याकुल मूत्र गोबर में पड़ा भगवान से मृत्यु कामना की प्रार्थना किया करता हूँ वरन् तेरे आनन्द विभव और स्वच्छावास को देख ईर्षा उत्पन्न होती है।"

गधे ने कहा----"वास्तव में तेरा कहना अक्षरश: सत्य है परन्तु तू स्वयं आनन्द से रहना नहीं चाहता कठिन परिश्रम करते २ यदि प्राणान्त भी हो जावे यह लोग कभी तुझ पर दया न करेंगे। एक उपाय है यदि तू उसका अवलम्बन करे तो सुख भोग सकता है अर्थात् तू अपने को रोगी बना ले, भूसा इत्यादि कुछ भी न खा, रुग्ण थानावश्लिष्ट रह।"

व्यापारी दोनों की वार्ता सुनकर अपने शयनालय को चला गया। दूसरे दिन प्रात: हरवाहे ने रीत्यानुसार बैलको हल में चलाने के निमित्त खोलना चाहा परन्तु उसने रात को भूसा नहीं खाया कास रोगी के समान श्वास चल रहा है। यह देख हरवाहेने व्यापारी को सब वार्ता कह सुनाई।

व्यापारी ने कहा—"बैल रुग्ण है तो आज गधे को हल में चलाओ।"

हरवाहे ने स्वामी की आज्ञानुसार गधे को हलमें जोता कठिन श्रम के कारण गधा मृत्युप्राय हो गया। सायं समय उस में चलने की भी शक्ति नहीं रही परन्तु बैल का दिन बड़े आनन्द मङ्गल से बीता गधे को थान पर आया देख कर बैल ने शतश: धन्यवाद दिये परन्तु गधा निपतित

हो थान पर गिरकर अपने को कोटि २ धिक्कारने लगा।

उपर्युक्त कथा सुनकर मन्त्री ने कहा—"व्यर्थ क्यों गधे की तरह विपत्ति आह्वान करती है ?"

दीर्घनिश्वास त्याग शहरजाद ने कहा—"मैं कदापि न मानूंगी आप की कल्पना व्यर्थ है।"

मन्त्री ने क्रुद्ध हो कहा—"यदि तू अपनी हठ न छोड़ेगी तो अधिक दुःख यातना भोगनी पड़ेगी वरन् जिस प्रकार व्यापारी ने हठ वश अपनी भार्या को ताडित किया उसी प्रकार तुझे भी दण्ड दिया जायगा।'

बीच में रोककर शहरजाद बोली—"पिता जी, बेचारे गधे पर क्या बीती, बैल का क्या हुआ, भार्या को क्यों दण्ड दिया ? पहिले यह जानने की बड़ी उत्कण्ठा है।"

"अच्छा सुनो" मन्त्री कहने लगा—

व्यापारी और हठी भार्या ?

दूसरे दिन फिर वह व्यापारी सपत्नीक भोजन इत्यादि से निवृत्त हो पशु शाला में गधे और बैल के सन्निकट जा बैठा और उनकी वार्त्ता सुनने लगा—गधे ने कहा—"बताओ भाई वृषभ ! कल क्या करोगे ?"

बैल बोला—"वही आपकी बताई युक्ति का साधन करूंगा।"

दीर्घ निश्वास त्याग गधे ने कहा—"सावधान कहीं कल भी ऐसा न करना क्योंकि सायं समय लौटती बार मैंने सुना है स्वामी ने निर्दय चर्मकार को बुलाने की आज्ञा दी है वह कहते थे बैल रुग्ण है अस्तु इस का मांस और चर्म बेच डालो।" यह सुन बैल प्राण भय से कांप उठा।

गधे की चतुरता देख व्यापारी हठात् खिल खिलाकर हँस पड़ा।

अपने पति को हँसते देख पास बैठी भार्या अति विस्मित हुई हँसने का कारण पूंछने लगी।

व्यापारी ने कहा—"यह बात बताने की नहीं है गधा और बैल की वार्त्ता सुनकर हँसी आ गई।

भार्या बोली—'इस रहस्य को मुझे अवश्य बताओ मैं भी पशु पक्षियों की बातें समझा करूँ।"

व्यापारी ने समझाया कि इस रहस्य के प्रकट करने से मैं जीवित न रहूंगा। परन्तु "क्यों मुझे धोखा देते हो किसी बात के कहने मात्र से कहीं प्राणान्त नहीं हो जाता! क्या जिसने तुम्हें बताया वह मर गया स्मरण रक्खो यदि तुम्हारी जिह्वा से ना निकला तो मैं प्राण गंवा दूंगी।" यह कहकर वह भार्या घर में जा खट. पाटी लेकर सो रही और सैकड़ों ही अनंकही अपने पति को सुनाती रही।

व्यापारी ने बहुत सान्त्वना दी, स्वजनों ने भी यथा शक्ति समझाया कि जिस गूढ़ रहस्य के प्रकट करने से मृत्यु भय है व्यर्थ पूंछकर क्यों अपने को कलङ्कित करती किंवा जन समाज में थू २ करा वैधव्य भोगने पर उतारू हुई है। परन्तु भार्या ने एक न सुनी मुंह सिकोड़ अनठन साध बैठ रही।

बेचारे व्यापारी को कोई उपाय न दीखा जो पत्नी को सुपथ पर ले आता इसी असमंजस में वह द्वार पर आ कुक्कुट क्रीड़ा देखने लगा सहसा एक स्वामि भक्त कुत्ता जो व्यापारी का पालित तथा अति प्रिय था मुर्ग की ओर झपट अनेक धिक्कार देने लगा 'आः! स्वामी विपद ग्रस्त है और तू सुख सम्भोग में निरत है। स्वामि पत्नी स्वामी से उस रहस्य को पूंछती है जिसके बताने में निस्सन्देह वह कराल काल का कवल बनते हैं और न बताने में स्वामिनी प्राण विसर्जन करती है। यही कारण है जो समस्त स्त्री पुरुषों के क्रन्दन से घर किरात पुरी बना हुआ है।

मुर्ग ने उपहास से उत्तर दिया—"स्वामी मूर्ख है जो एक स्त्री

को भी वशमें नही रख सकते मैं पचास स्त्री (मुर्गी) रखता हूं जिनपर मेरा पूर्णाधिकार है। स्वामी को उचित है द्वार बन्द करके ताड़ना दें पूर्वजों ने कहा है कि मार के आगे भूत भागता हैं अर्थात् बीती बिसर जाती है।

व्यापारी मुर्ग की शिक्षा उपयोगी देख दण्ड देने पर उतारू हुआ और मोटी लाठी द्वारा स्त्री को मारने लगा। जब वह मर्माहत हो निपतित होगई तो हठ छोड़ स्वामी के पैरों में पड़ अति विनीत भाव से कहने लगी—"बस २ दया करो अब मैं कभी हठ न करूंगी।"

मन्त्री उपर्युक्त कथा सुनाकर कहने लगा—"यदि तू भी हठ न छोड़ेगी तो मुझे दण्ड प्रयोग करने पर बाध्य होना पड़ेगा।"

शहरजाद बोली—"अपना पक्ष सिद्ध करने को मुझे भी सैकड़ों कथा गाथा याद हैं परन्तु आपका समय नष्ट न करूंगी आप मेरी विनय स्वीकार करलें नहीं मैं सम्राट से प्रार्थना करूंगी।"

शहरजाद हठ नहीं छोड़ेगी—यह जान शोकोन्मत्त मन्त्री सम्राट की सेवा में पहुंच पुत्री अंगीकार करने की प्रार्थना करने लगा।

"स्मरण रक्खो तुम्हारा पक्ष कर मैं अपनी प्रतिज्ञा भंग न करूंगा।" विवाह करने से सम्राट ने बहुत मना किया परन्तु शहरजाद हठ पूर्वक एक रात्रि के लिए राजमहिषी बनने में अपना गौरव समझती है अस्तु मन्त्री के कहने से सम्राट ने स्वीकार कर लिया। वरन् बड़े समारोह से विवाह होकर शहरजाद राजप्रासाद में पहुंच गई।

रात्रि को सम्राट शहरयार ने शहरजाद का घूंघट खोला तो उसके रूप सौन्दर्य में मोह गया। विक्षिप्त की तरह कोमल कपोलों पर आँसुओं का आश्लेष देख पूछने लगा—प्राणेश्वरी! रोती क्यों हो?

शहरजाद सम्राट को प्रेम रज्जु में जकड़ा देख कटाक्ष से बोली, "प्राणेश्वर! मेरी एक छोटी बहिन हैं मैं उसे हृदय से प्यार करती हूं और वह भी मुझे अनन्य मन से चाहती है हम दोनों में हार्दिक प्रेम

है। अस्तु मेरे जीवन का दीपक प्रातः ही बुझ जायगा यदि आप आज्ञा दें तो मैं उसे भी यहां बुला लूं।

सम्राट की आज्ञा से दुनियाजाद भी आ गई। शहरजाद ने सम्राट के संग ऊंची शय्या पर शयन किया और दुनियाँजाद शय्या के नीचे लेट गई। जब रात्रि एक घड़ी अनुमान शेष रही तो बहिन की आज्ञानुसार जो पूर्व ही विदा के समय समझा चुकी थी, कहने लगी—"बहिन, यदि जागती हो तो कोई शिक्षाप्रद कथा ही सुनाओ चित्त अति व्याकुल है!"

शहरजाद ने सम्राट की आज्ञा लेकर दैत्य और व्यापारी की कथा कहना प्रारम्भ की—

दैत्य और व्यापारी की कथा।

पूर्व काल में एक सुप्रसिद्ध व्यापारी अति व्यवसायी धनी मानी था। यद्यपि बहुत से कर्म्मचारी व्यापार सम्बन्धी प्रत्येक कोठी गोदाम इत्यादि में नियत थे परन्तु स्वयं भी यदा कदा व्यापारार्थ पर्यटन किया करता था। एक बार उसे कहीं दूर देश जाना पड़ा। चौथेदिन जब वह लौटा तो ग्रीष्म ऋतु की उष्णता वश दो पहर की तप्त धूप से व्याकुल हो विश्राम के लिये स्थान ढूंढने लगा। सहसा कुछ ही आगे स्वच्छ सरोवर के तट सघन वृक्षों का निकुंज देख घोड़े से उतर पड़ा और कुछ छुहारे जो घर से झोली में भरकर लाया था, खाने लगा, गुठलियाँ उनकी इधर उधर फेंक दी पुनः शुद्धता पूर्वक निमाज (ईश्वराराधना) पढ़ी। सहसा एक वयो वृद्ध विराटकाय दैत्य निशित कृपाण लिये व्यापारी की ओर झपटा और क्रुद्ध हो कहने लगा—"इधर आ दुष्ट! छुरिका से तेरी अभ्यर्थना करूं!"

व्यापारी भयानकाकार पिशाच देख बज्राहत की भाँति स्तम्भित रह गया—"मुझ निरपराधी दीनातिदीन क्षुद्र व्यापारी के साथ आपको उपहास शोभा नहीं देता।"

दैत्य ने दांत पीसकर कठिन उत्तर दिया—"नृशंस ! तूने मेरे पुत्र का वध किया है उसी गुरुतर अपराध के कारण तुझे प्राण दण्ड देता हूँ।

मैंने आपके पुत्र रत्न को देखा तक नहीं है। दया कीजिये व्यापारी हाथ जोड़ चरणों में गिर पड़ा।

दैत्य ने शोक प्रकट कर कहा—"तू अपना मार्ग छोड़ यहाँ आया और छुहारे खाए। जब तू उनकी गुठलियाँ अपने चतुर्दिक फेंक रहा था तब एक गुटली मेरे पुत्र की आँख में ऐसे वेग से लगी जिसके कारण प्राण पखेरू अस्थिपञ्जर को त्याग स्वर्ग सिधार गया।"

थर २ काँपते हुए व्यापारी ने कहा—'मैंने जानकर गुठली नहीं फेंकी यदि भूल वश अपराध भी हुआ तो क्षमा कीजिये दया भाव रखिये।

"क्षमा और दया इन दो शब्दों का प्रयोग ही मैं नही जानता मैं अवश्य तेरा बध करूंगा।" यह कह कर दैत्य निर्दयता से व्यारारी को धराधाम पर पछाड़ प्राणान्त करने पर उद्यत हुआ। परन्तु पुत्र कलत्र को स्मरण करते व्यापारी के क्रन्दन से पाषाण प्राण भी द्रवीभूत होता था दैत्य ने भी हाथ रोक लिया।

+ + + +

प्रभात हो गया है। यह देख शहरजाद चुप हो गई। सम्राट शहरयार इस रोचक वार्ता को सुन कर अति प्रसन्न हुआ वरन् जब तक यह कथा समाप्त न हो शहरजाद मारी न जावेगी। यह निश्चय कर सन्ध्योपासन से निवृत्त हो राजसभा में चला गया।

मन्त्री, दुहिता शोक सन्तप्त रात भर नहीं सोया था प्रातः जब

सम्राट नें बधकी आज्ञा नहीं दी तो अति विस्मित हुआ।

सम्राट दिन भर राजकीय देश तथा सैन्य प्रबंध में व्यस्त रहा रात्रि को सुख से शहरजाद के संग शयन किया। जब एक घड़ी रात शेष रही तो दुनियाँजाद ने अनिद्र हो विनय पूर्वक कहा—'बहिन, प्रभात होने तक उस कथा को पूर्ण करदो।" सम्राट ने भी बाध्य किया, यह देख शहरजाद ने इस प्रकार कहना आरम्भ किया।

+ + + +

व्यापारी ने देखा कि दैत्य मुझे अवश्य संहार करेगा तो वह अति विनीत भाव ले प्रार्थी हुआ-प्रभो इतना सावकाश मुझे प्रदान करो कि मैं अपने स्त्री पुत्रों से साक्षात् कर अपनी सम्पत्ति का यथेष्ट उत्तराधिकारी बना आऊँ जो मेरे पीछे परस्पर कुछ विरोध न करें।

दैत्य को कुछ दया आई उस ने पूछा—"तू कब तक लौट आवेगा ?

व्यापारी ने ईश्वर की साक्षी देकर कहा—"एक वर्ष पश्चात्।"

निदान दैत्य व्यापारी की प्रार्थना स्वीकार कर अन्तर्द्धान हो गया

व्यापारी घोर विपत्ति से मुक्त हो जब अपने घर पहुँचा तो स्त्री पुत्रादि स्वजन अति प्रसन्न हुए परन्तु व्यापारी मर्म पीड़ा से अति रुदन करता था पहिले तो सब ने समझा कि कुछ व्यापार में धन हानि हुई है। परन्तु जब व्यापारी ने अपना और दैत्य का दुखद वृत्तान्त सुनाया तो समस्त पुत्र कलत्र के क्रन्दन से घर किरातपुरी दर्शाने लगा किंबहुना वह दिन सबके रोने पीटने में बीता दूसरे दिन व्यापारी ने अपना ऋण चुकाया, मित्र बांधवों को बहुमूल्य वस्तुएं उपहार में दी और सब सम्पत्ति पुत्रों में बांट दी गृहिणी को भी बहुत द्रव्य दिया याचक और सुपात्रों को समुचित दान तथा दास दासियों को मुक्त कर दिया निदान इसी प्रकार एक वर्ष बीत गया।

व्यापारी वचन बद्ध होने के कारण सब को रोता छोड़ उसी

भयानक वन में पहुंच दैत्य की प्रतीक्षा करने लगा। सहसा एक वृद्ध पुरुष मृगी सङ्ग लिये वहाँ आ पहुंचे और प्रणाम कर पूछने लगे—"ऐसे निविड भयानक वन में जो नराहारी राक्षसों का अवास स्थल है, तुम्हारा आना कैसे हुआ ? शीतल सघन वृक्ष देख प्राय: लोग धोखे में आकर इसके नीचे विश्राम लेते तथा हिंसक प्रेतों द्वारा दण्ड भोगते हैं।"

"यह अक्षरश: सत्य है।" व्यापारी ने अपनी समस्त दु:ख कथा आद्योपान्त कह सुनाई।

नवागत वृद्ध अति विस्मित हो प्रशंसा करने लगा, "तुम धन्य हो तुम्हारे समान सत्यनिष्ठ संसार में बिरला ही होगा।" यह कह अति सहानुभूति प्रकट कर व्यापारी की अन्तिम दशा देखने निमित्त वहीं बैठ गया। अभी वह परस्पर कुछ परामर्श कर रहे थे कि एक वयोवृद्ध सज्जन जिनके साथ दो लोहितवर्ण श्वान थे. पधारे और प्रणाम कर दोनों का वृत्तान्त पूछने लगे ! परन्तु जब पहिले वृद्ध ने व्यापारी की शोकप्रद कथा कह सुनाई तो इन्हें भी परिणाम देखने की उत्कण्ठा हुई वह इन दोनों के पास ही विराजमान हो गये।

अभी नवागत वृद्ध ने अपना परिचय नहीं दिया था कि एक तीसरे वृद्ध और खिच्चर लिए आ उपस्थित हुए। अभी यह महानुभाव बैठे ही थे कि सहसा वन के एक पार्श्व में प्रचण्ड धुआं दृष्टगत हुआ जो बिडूर के समान ऊंचा हो अन्तरिक्ष में विलीन हो गया पीछे एक कृष्णकाय दैत्य नग्न कृपाण लिए व्यापारी को लक्ष्य कर विषाद पूर्ण हृदय विदारक हास्य करके कहने लगा—'छि: ! जिस प्रकार तूने मेरे पुत्र का प्राणान्त किया है तुझे मैं उसी प्रकार वध करूँगा !"

दैत्य की बात सुनकर सब काँपने लगे। पूर्वागत वृद्ध ने जिसके पास हिरनी थी व्यापारी को निर्दयता से मारते देख दैत्य के चरण स्पर्श कर अति विनीत प्रार्थना की—"दैत्य सम्राट ! क्रोध शान्त करो मैं अपनी और इस हिरनी की अपूर्व कथा सुनाना चाहता हूं यदि आपको

रुचिकर और आश्चर्य प्रद भान हो तो कृपया मेरी ओर से इस व्यापारी के अपराध का तृतीयांश क्षमा कर देवें ।"

थोड़ी देर तक कुछ सोच कर अन्त में दैत्य ने स्वीकार किया । अस्तु वृद्ध इस प्रकार कहने लगा—

—:o:—

वृद्ध और मृगी की कथा

दैत्यराज ! यह हिरनी मेरे चचा की पुत्री और मेरी पाणिग्रहीता है जब मेरा विवाह हुआ इसकी आयु बारह वर्ष की थी । यह मेरी बड़ी सेवा सुश्रुषा किया करती थी परन्तु प्रेममय दो हृदय मिलकर भी विमल सुख में न रहने पाये । जब विवाह हुए कई वर्ष बीत गये और कुछ सन्तान लाभ न हुई तो मैंने एक दासी क्रय की बहुत दिनो पश्चात् उसने एक पुत्र प्रसव किया । मेरी पत्नी नव जात शिशु और उसकी माता से मौखिक प्रेम रखती थी पर हृदय में अति द्वेष भरा हुआ था परन्तु शोक कि हृदयङ्गम सौतमत्सरकी गरलता मुझे चिरकाल पर्यन्त प्रकट न हुई । जब पुत्र की आयु दस वर्ष की हुई तो अनायास मुझे कहीं दूरदेश जाना पड़ा । यात्रा के पूर्व मैंने पुत्र और उस पत्नी को अपनी भार्या को सौंप कर समझा दिया कि मैं एक वर्ष में लौट आऊँगा इसी अवसर में इन दोनों को यत्नपूर्वक सुख से रखना ।

कठोर प्राण गृहिणी के कलुषित हृदय में जब से द्वेष जागरूक हुआ मानव-प्राणपशु-पर्याय में परिणत करने की प्रेत चक्राराधना (यक्षिणी विद्या) सीखना प्रारम्भ कर दिया था । जब वह उक्त विद्या में पारङ्गत हुई तो मेरी अनुपस्थिति में सबके पूर्व मेरे अङ्ग जनित पुत्र को बच्छ और उसकी माता को गाय बना डाला । किन्तु उसी समय रामा-

धीन आभीर के घर जो अति पुरातन स्वामिभक्त सेवक था, गोशाला में भेज दिया ।

कुछ काल पश्चात् जब मैं लौटा तो पुत्र और उसकी माता को घर में न पाया पूछने पर मेरी पत्नी पश्चात्ताप कर कहने लगी—"दासी तो कालवश हुई और दो महीने से गया हुआ पुत्ररत्न आज तक नहीं लौटा न जाने कहाँ गया ।"

यह सुनकर मुझे अति खेद हुआ जिस पुत्र पर जीवन निर्भर है कदाचित् खोजने से मिल जावे ! कुछ आश्वासन मिला । परन्तु आठ महीने तक खोजने पर भी उसका कुछ पता न लगा । अब ईद का दिन आया मैंने चाहा कि प्रभु इब्राहीम खलीलुल्लाहकी सुन्नत विहित बलि प्रदान करूँ अतएव रामाधीन आभीर को एक मोटी गाय लाने की आज्ञा दी ।

रामाधीन एक बलिष्ठ गाय जो वास्तव में मेरी उपपत्नी थी, ले आया अस्तु जब मैं गाय के पैर बाँध कर बलि करने को उद्यत हुआ तो करुणा से गाय के नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगी यह देख मुझसे गोकण्ठ पर छुरी न चल सकी न जाने उसे देख क्यों दया आती थी हृदय द्रवीभूत होता था मैंने अहीर से कहा "इसे ले आओ न जाने क्यों इसे देखकर चित्त डावांडोल होता है और कोई दूसरी गाय ले आओ ।" परन्तु मेरी पत्नी क्रुद्ध हो कहने लगी—"कैसी अच्छी हृष्ट-पुष्ट गाय है क्यों नहीं इसका बलि करते इससे भली गाय गोशाला में कोई है ही नहीं ।" निदान पत्नी के धिक्कारने पर मैं पुनः बलि देने को उद्यत हुआ परन्तु इस बार गाय और अधिक अश्रु बहाने और चिल्लाने लगी । उसकी करुणार्द्र दशा देख मेरे हाथ से छुरी गिर पड़ी तब मैंने एक निर्दय सेवक द्वारा बलि समाप्त कराया परन्तु गाय में, जिसे स्मरण कर आज भी कोमल हृत्पण्ड फकड़ने लगता है अस्थि चर्म के अतिरिक्त मांस किंचितमात्र न निकला वह जादू के बल से मोटी दीखती थी ।

मांस हस्तगत् नहीं हुआ यह देख मैं अति विस्मित हुआ मैंने अहीर से गाय से बदले एक मोटा बछरा लाने को कहा आभीर आज्ञानुसार एक गो शिशु जो देखने में अति सुन्दर था, ले आया यद्यपि मुझे उस बछड़े का कुछ भी समाचार ज्ञात नहीं था तथापि उसे देखते ही न जाने क्यों हृदय में अपार स्नेह उत्पन्न हुआ। उधर बछड़ा भी मुझे देखते ही रस्सी तोड़ मेरे पैरों पर गिर अविप्रान्त अश्रु बहाने लगा। इस व्यवहार से उसकी ओर और अधिक श्रद्धा बढ़ गई। अस्तु ! मैंने विवश हो अहीर को उसे गोशाला में बांधकर और कोई बछड़ा बाले प्रदानार्थ लाने को कहा।

मेरी स्त्री बाधा देकर बोली—"ऐसे हृष्टपुष्ट बछड़े को क्यों नहीं बलि देते।"

यद्यपि मैंने स्त्री को बहुत समझाया परन्तु वह बार २ उसके बध का हठ करती रही निदान् विवश हो मैं बलिदान को उद्यत हुआ परन्तु बछड़े को निरन्तर अश्रु बहाते देख करुणा से छूरिका हाथ से गिर पड़ी। "आगामी ईदुज्जुहा पर इसे बलि देंगे।" यह कहकर मैंने बछड़ा अहीर के घर भिजवा दिया।

दूसरे दिन निराले में अहीर ने आकर मुझसे कहा—"प्रभो ! मैं कुछ कहना चाहता हूं आप सुनकर अति विस्मित होंगे। मेरी पुत्री कुछ जादू जानती है कल जब मैं इस बछड़े को अपने घर ले गया तो वह मुस्कराई और रोई। मैंने हास्य और रोदन दो विलोम साध्यों का प्रयोग एक समय में देख कारण पूछा तो उसने कहा—"यह बच्छ हमारे स्वामी का पुत्र है इसे जीवित देख मैं आनन्दित हुई परन्तु हा ! इसकी माता जो गौ रूप में थी बलि दे दी गई यह स्मरण कर मुझे खेद हुआ। सौतमत्सर के कारण दुष्टा स्वामि-पत्नी ने इन्हें गौ और बच्छ रूप में परिणत कर दिया है।"

आभीर मुख से यह षडयंत्र सुनकर मानों वज्रपात हुआ सिर घूमने और पैरों के नीचे की धरती चक्र देने लगी। थोड़ी देर में जब मैं सचेत हुआ तो झटित अहीर के घर पहुँचा। सब के पूर्व मैं गौशाला में जहाँ मेरा पुत्र बच्छ रूप में बँधा था, गया।

बच्छ मुझे देखते ही कूदने-फाँदने लगा। निदान उसकी आकृति देख मुझे विश्वास हो गया कि निस्संदेह मेरा पुत्र ही है। तब मैंने आभीर कुमारी से कहा—"किसी प्रकार तू इसे मनुष्याकार बना सकती है।"

आभीर कुमारी कुछ देर सोचकर बोली—"यदि आप वचन बद्ध हों कि मेरे साथ ही इसका विवाह करेंगे, तथा पामर गृहिणी को भी यथोचित दण्ड देना स्वीकार करें तो मैं सहर्ष पूर्ववत् मनुष्य बना सकती हूं?"

मैंने प्रसन्न हो दोनों बातें स्वीकार कर लीं। अब इसने एक पात्र में जल भर कर कुछ मंत्र पढ़ा और बछड़े के ऊपर छिड़क कर कहने लगी—"हे भगवन्! यदि प्रियतम मंत्र बल से बच्छ रूप में परिणत हुए हैं तो शीघ्र मुक्त एवं मानवाकार में परिवर्तन कर सुख सौभाग्य प्रदान करो।"

२। ४ ही बार छींटे दिये होंगे कि हठात् बच्छ मानवाकार बन गया। मैंने स्वरित आनन्द मग्न हो स्नेह ममता से उसे कण्ठ लगा लिया। अनेक बार मस्तकाघ्राण और मुख चुम्बन कर कहने लगा—'ईश्वर ने इस देवी द्वारा तुझे घोर विपत्ति से मुक्त किया है। इसे धन्यवाद दो और पत्नी स्वरूप अङ्गीकार करो। मैं वचन दे चुका हूं।"

ऐसा रमणी-रत्न चराचर में बड़े सौभाग्य से मिलता है पुत्र ने सहर्ष उसे स्वीकार कर लिया। जब विवाह निश्चित हो गया तो सर्व गुणगणमय आभीर कुमारी ने मंत्रबल से मेरी पत्नी को मृगी रूप उत्पन्न बना दिया। परन्तु विबाह पश्चात् प्रेममय दो हृदय मिलकर भी विमल सुख में न रहने पाये सुतरां कुछ ही दिनों पश्चात् पुत्र बधू का प्राण

वियोग हो गया। पत्नी वियोग सन्तप्त पुत्र घर बार छोड़ विदेश चला गया। अब कई वर्षों से मुझे उसका कुछ समाचार नहीं मिला। अस्तु, उसी की खोज में मारा २ फिरता इधर आ निकला हूं। किसी पर विश्वास नहीं था अतः इस हिरनी को भी अपने-संग लिए फिरता हूं।

यह मेरी और हिरनी की गूढ़ कथा है आप स्वयं विचार सकते हैं कि कितनी आश्चर्य प्रद है ?

दैत्य ने कहा—"वास्तव में तुम्हारी जीवन घटना अति अपूर्व है मैंने सहर्ष व्यापारी के अपराध का तृतीयाँश क्षमा किया।"

उपरोक्त कथा सुनकर शहरजाद ने दूसरे बृद्ध की कथा जिसके संग दो काले कुत्ते थे इस प्रकार कहना आरम्भ किया।

दो श्याम श्वान और वृद्ध की कथा

दैत्य सम्राट् ! यह दोनों श्वान मेरे सहोदर भ्राता हैं। पिता जी ने स्वर्गवास के समय हम तीनों को सहस्र २ मुद्रा पैतृक सम्पत्ति प्रदान की थी। अस्तु उसी धन से हम तीनों व्यापार करने लगे। कुछ दिनों पश्चात् बड़े भाई अपना सब अटाला विक्रय कर कहीं अन्यत्र चले गये।

व्यवसाय करते हमें पूरा एक वर्ष बीत गया सहसा एक दिन एक भिक्षुक मेरी दुकान पर आ आशिष दे कहने लगा—"ईश्वर तेरा भला करे ?"

मैंने कहा—"ईश्वर तेरा ही भला करे।'

दीर्घ निश्वास त्याग भिक्षुक बोला—"तात ! क्या तुम मुझे भूल गये ?"

भिक्षुक को ध्यान पूर्वक देखकर मैंने उसे कंठ से लगाया और

23248

विस्मित हो पूछने लगा—"भाई क्या मैं स्वप्न देख रहा हूं अथवा जागृत आपके समक्ष............।"

मुझ अभागे को देख स्वयं अनुभव कर सकते हो कि किस दशा में रहा हूं।" निदान मेरे अनुरोध करने पर अपनी मानहानि की दुखद कथा भाई ने कह सुनाई।

भाई की दशा देख मुझे अति खेद हुआ उस समय मेरे कोष में अनुमान दो सहस्त्र मुद्रा व्यापार से लाभ हुई थी अस्तु एक सहस्त्र मुद्रा भाई को देकर पुनः दुकान खुलवा दी।

भाई समस्त दुःख विस्मरण कर आनन्द से कालक्षेप करने लगा परन्तु अब छोटे भाई ने समस्त अटाला विक्रय कर देशाटन करना चाहा। मैंने बहुत समझाया बड़े भाई की दुर्दशा का दृष्टान्त दिया परन्तु उसने एक न मानी, विदेशी व्यापारियों के संग चला ही गया। ठीक एक वर्ष पश्चाद् वह भी बड़े भाई की तरह पैतृक सम्पत्ति की आहुति दे भिखारी बना मेरे पास आया, निदान उसे भी मैंने एक सहस्त्र मुद्रा देकर पुनः व्यवसायी बना दिया।

थोड़े दिनों पश्चात् दोनों भाइयों ने मुझे व्यापारार्थ पर्यटन करने पर बाध्य किया। बहुत अनुरोध करने पर मैं बहुत सा अटाला क्रय विक्रय पर चलने को उद्यत हुआ। पूर्व में दो सहस्त्र मुद्रा जो भाइयों को मैंने दी थीं असावधानता से सब व्यय कर डालीं इस सर्वनाश पर मैंने कुछ न कहा। मेरे पास कोष में छः सहस्त्र मुद्रा थीं पारस्परिक परामर्श से यह निश्चय किया कि तीन सहस्त्र मुद्रा व्यापार में लगावें और तीन सहस्त्र मुद्रा यहीं भूमि-गत कर चलें, जो भाग्य-वश धनहानि होने पर पुनः व्यापार चला सकें। अस्तु एक एक सहस्त्र मुद्रा परस्पर बांट समुद्र मार्ग से एक सुदृढ़ जलयान द्वारा अनुकूल वायु में चल पड़े। भाग्यवशात् एक मास में ही हमारा प्रवेश ऐसे नगर में हुआ जहां माल अधिक लाभ से बिका, एक से दस हो गये परन्तु लौटती बार हमें समुद्र

तट पर एक असामान्या सुन्दरी युवती दृष्टि पड़ी, यद्यपि उसका सुकोमल शरीर मलिन वस्त्र-आच्छादित था तथापि वह बदली में छिपे चन्द्र के समान भान होता था। युवती के सुरूप में मोहकर मैं कुछ कहने ही को था कि उसने प्रणाम कर दासी स्वरूप ग्रहण करने की मुझ से प्रार्थना की। पहिले तो मैंने विशेष ध्यान न दिया परन्तु जब उसने अति विनीत भाव से अधिक अनुरोध किया तो मैंने स्वीकार कर उसे गृहिणी बनाने में अपना परम सौभाग्य समझा और नवीन वस्त्रालंकार से सुसज्जित कर अपने साथ ले चला।

पति प्राणा युवती ने अपनी सेवा सुश्रुषा से मेरा चित्र अपने प्रेम में आकृष्ट कर लिया था। परन्तु दम्पति सुख में मग्न देख दोनों भाई मन ही मन ईर्षा से जलने और गोप्य शत्रु भाव रखने लगे। अस्तु एक रात सुयोग पा सुप्तावस्था में हम दोनों को निर्दयता से समुद्र में गिरा दिया।

मेरा पत्नी जो वास्तव में मानवी वेश में स्वर्गीय-अप्सरा अनिन्द्य किन्नरी थी उसे समुद्र जल से लेश मात्र भी दुःख न पहुँचा वरन् मुझे भी डूबने से बचा निकटस्थ एक शुष्क दीप में उठा ले गई।

मेरे भाइयों की दुष्टता पर उस किन्नरी ने प्राण दण्ड निर्माण किया। कैसे उन्हें दंड दिया जावे इसके लिए उसने अपना परिचय दिया।

मैं किन्नरी का परिचय पा अति-विस्मित हो शतशः धन्यवाद दे कहने लगा—"जीवनदायिनी प्राणाधिके ! यद्यपि भाइयों ने मेरे प्राण संकट में डाले हैं तथापि ससार की समस्त वसुधा लाभ करके भी सोदर भ्राता नहीं मिलता इस कारण प्राण दंड से वंचित··········"

"नहीं २, यह मैं कदापि न मानूंगी भला जो अपने प्राणों का ग्राहक है उसके प्रति इतनी दया माया ! वह अश्वमेव बध करने योग्य है।" निदान् ज्यों २ मैं भाइयों के प्रति सहानुभूति प्रकट करता था किन्नरी का रोष प्रबल होता जाता था। बहुत अनुरोध करने पर तब

उसने कहीं स्वीकार किया और मुझे उठाकर बड़ी सुगमता से घर की छत पर जा छोड़ा।

मैं सावधान हो किन्नरी से कुछ कहना ही चाहता था कि वह अन्तर्द्धान हो गई।

तीन सहस्र मुद्रा जो पूर्व में भूमिगत की थी निकालकर पुनः व्यापार प्रारम्भ कर दिया। पहिले ही दिन सायं समय जब मैं दुकान से घर पर आया तो दो श्याम श्वान आँगन में बंधे देख अति विस्मित हुआ। श्वान मुझे देख पूँछ हिलाने और अपना शिर मेरे पैरों में रखने लगे सहसा वह किन्नरी आकाश से उतर मेरे पास आ कहने लगी—"प्राणवल्लभ! यह दोनों श्वान आपके सहोदर हैं। मेरी बहिन ने जलयान समुद्र में डुबोकर उन्हें दस वर्ष के लिए मन्त्र-बल से श्वानाकार बना उचित दण्ड दिया है।" यह कहकर किन्नरी अन्तर्द्धान हो गई।

दैत्यवर्य! वह दस वर्ष अब समाप्त होगये हैं अस्तु इनके उद्धारार्थ उस जीवन दात्री किन्नरी को खोजता फिरता हूं अनायास ही इधर आना हो गया आशा है कि आप…………।"

दैत्य ने वृद्ध की अपूर्व कथा श्रवण कर व्यापारी के अपराध का तृतीयांश क्षमा कर दिया।

तीसरे वृद्ध और खिच्चरी की कथा

दैत्यराज! यह खिच्चरी मेरी पत्नी है। अनायास मुझे एक बार कहीं दूर देश जाना पड़ा। एक वर्ष पश्चात् रात्रि समय मैंने घर में प्रवेश किया सहसा मेरी दृष्टि बार वनिता (पत्नी) पर पड़ी जो एक पद दलित दास के सङ्ग रति क्रीड़ा में मत्त थी। मुझे यह देखकर बड़ी घृणा हुई। अभी मैंने दुश्चरित्रा पत्नी को कुछ दण्ड देना निर्धारित नहीं किया था कि वह एक छोटा सा जल-पात्र उठा लाई और कुछ मन्त्र पढ़कर मेरे ऊपर छिड़कने लगी। देखते ही देखते मेरी आकृति श्वान के

रूप में परिणत हो गई।

पत्नी ने रौद्र रूप धारण कर मुझे घर से भगा दिया मैं गली २ मारा फिरता था परन्तु कहीं पैर रखने को स्थान नहीं मिलता था निदान् क्षुधित तृषित मैं एक बधिक की दुकान पर पहुँचा और अस्थि चर्म खाकर कालक्षेप करने लगा।

एक दिन मैं अनायास उस वधिक के घर जा निकला। वधिक कुमारी मुझे देख झट पर्दे की ओट में जा बैठी। बधिक ने विस्मित हो पूछा—"पुत्री, ओट में क्यों जा बैठी बाहर आकर क्यों नहीं अपना काम सम्पादन करती ?"

पुत्री कर्कश स्वर से बोली—"क्या मैं पर पुरुष के समक्ष निर्लज्ज बनूँ।"

चतुर्दिक तीव्र दृष्टि डालकर बधिक ने कहा—"यहाँ तो कोई है नहीं।"

पुत्री ने सन्मुख भ्रूक्षेप कर कहा—"पिता यह वास्तव में पुरुष है दुष्टा पत्नी द्वारा जादू से श्वान दीखता है।" यह कह कर बधिक पुत्री ने थोड़ा जल अभिमन्त्रित कर मुझ पर छिड़क दिया, मैं तत्क्षण पूर्ववत् मनुष्य बन गया।

मैंने बधिक पुत्री को कोटि २ धन्यवाद दे और अपनी श्लाघ्नीया पत्नी को दण्ड देने निमित्त थोड़ा सा जल उससे माँग, अपने घर पहुंचा। वह दुष्टा सुप्तावस्था में अचेत थी, यह सुअवसर देख मैंने वह सब जल उस पर छिड़क दिया निदान् जब वह सचेत हुई तो खिच्चरी रूप थी।

दैत्य ने खिच्चरी को सम्बोधन कर विस्मय से पूछा—"क्या यह सत्य है ?"

खिच्चरी ने "हां" सांकेतिक शिर हिलाकर साक्षी दी तो दैत्य ने व्यापारी के अपराध का शेष-तृतीयांश भी क्षमाकर जीवन प्रदान किया।

शहरजाद इस कथा को सुनाकर कहने लगी—"वहिन मछुवे

की कथा से यह अधिक आश्चर्य-प्रद नहीं है ।"

सम्राट् शहरयार को चुप पाकर "मौनं सम्मति लक्षणम्" के अनुसार दुनियांजाद ने कहा—"अभी तो बहिन रात बहुत पड़ी है मछुवे की कथा ही आरम्भ कर दो ।

शहरजाद इस प्रकार कहने लगी—

मछुवे की कथा

पूर्वकाल में एक वृद्ध यवन मछुवा बड़ी कठिनता से कालक्षेप करता था । दरिद्र महाशय का ऐसा प्रादुर्भाव हुआ कि कठिन परिश्रम करने पर भी यदा कदा बाल बच्चों को निराहार रहना पड़ता था । वह नियम पूर्वक प्रतिदिन सूर्योदय के पूर्व नदी तट पर जाता, और चार बार उसमें जाल डाला करता था । एक दिन उसने ब्रह्ममुहूर्त्त में नदी के किनारे पहुंच जाल डाला । खींचने पर अति बोझिल देख मछुवे ने सोचा कोई भारी मछली फंसी है, परन्तु जब जाल ऊपर आया तो एक गधे का शव निकला । यन्त्र ठीक करके मछुवे ने पुनः नदी में डाला परन्तु इस बार कीचड़ और मिट्टी में अटक गया । "ओह ! मैं बड़ा मन्दभागी हूं," यह कह दुखित हृदय से मछुवे ने तीसरी बार फिर जाल डाला परन्तु गुठली और कंकड़ों के अतिरिक्त कुछ भी हस्तगत न हुआ ।

सूर्य्य-उदय हो गया है यह देख वृद्ध मछुवे ने निमाज पढ़ ईश्वर से प्रार्थना की—"भगवन् ! मैं नदी में प्रतिदिन केवल चार बार ही जाल डाला करता हूँ जिसमें तीन बार डाल चुका हूं अब केवल एक बार डालना शेष है यदि अब भी कुछ हस्तगत न हुआ तो सकुटुम्ब निराहार रहना पड़ेगा ।" यह कहकर मछुवे ने पुनः चौथी बार जाल डाला और धीरे २ खींचने लगा ऊपर आने पर जाल में एक पीतल का लोटा निकला । लोटा भारी देख मछुवे ने अनुमान किया कि इसमें अवश्य कोई खनिज पदार्थ गोप्य है । लोटे का मुख शीशे से बन्द तथा कोई मुहर

अङ्कित थी। मछुवे ने कहा—"यदि इससे कुछ लाभ न हुआ तो लोटे को ही विक्रय कर काम चलाऊंगा, अस्तु मछुवे ने अपनी छुरिका से लोटे का मुख खोला परन्तु उसमें कुछ न निकला आश्चर्यित हो लोटा नीचे रख दिया, सहसा लोटे में से धुँआ निकलना प्रारम्भ हुआ। मछुआ भयभीत हो कई पग पीछे हट गया।

आकाशाच्छन्न धुंआ शनैः २ नदी तट पर फैल गया। मछुवे के आश्चर्य का पारावार न रहा जब उसने देखा कि समस्त धुंआ एकत्रित हो विराटाकाय श्याम वर्ण भयङ्कर दैत्य बन गया है। यद्यपि मछुवे ने भागने का प्रयास किया परन्तु भय से पैर न उठ सके।

आकाश की ओर हाथ जोड़ दैत्य ने प्रार्थना की—"प्रभो सुलेमान! मेरा अपराध क्षमा करो, यावज्जीवन आपकी आज्ञा भंग न करूंगा।"

प्रार्थन सुनकर मछुवे ने दृढ़ता पूर्वक पूछा—"दैत्यराज क्य स्वप्न देखते हो सुलेमान को संसार यात्रा किये १८०० वर्ष से अधिक बीत गये। क्या तुम अपना परिचय दे सकते हो?

दैत्य ने घृणा से मछुवे की ओर देखकर कहा—"सभ्यता से बातें नहीं करता, दैत्य २ किसे कहता है?"

मछुवे ने दृढ़ता पूर्वक कहा—"वास्तव में मैं तुझे उलूक अथवा गधा कहता तो उपयुक्त होता।"

क्रुद्ध हो दैत्य ने कहा—"सावधान! पूर्व इसके कि मैं तुझे बध करूँ सभ्यता से बातें कर!"

विस्मित हो मछुवे ने कहा—'मैंने क्या अपराध किया है, जो ध करेगा, मैंने तो तुझे बन्धन से मुक्त किया है।

दैत्य ने उत्तर दिया—"यद्यपि तूने मुझे मुक्त किया है परन्तु तेरे ध से इसका सम्बन्ध क्या? केवल तेरी यह इच्छा पूर्ण कर सकता हूँ क जिस प्रकार तू कहे उसी प्रकार बध करूंगा।

"यह उपहास आपको शोभा नहीं देता मुझ निरपराधी को मारकर अपने को क्यों कलङ्कित·········,"

मछुवे की बात काटकर दैत्य ने कहा—"मैं उन सौख्य प्रवर असुरों में हूँ जो आस्तिक नहीं हैं वरन् ईश्वर की सृष्टि मोहनी रचना के विरोधी हैं। यद्यपि प्रभु सुलेमान का समस्त सुरासुर पर आधिपत्य है परन्तु दुर्भाग्य से मैं और साकर उनके भक्त न थे प्रत्येक बात में उनके विरुद्ध पक्ष लेते थे अतएव प्रभुने क्रुद्ध हो बरखियात्मज आसफ द्वारा हमें पकड़वा मंगाया और शरअ (शास्त्र) विहित सचरित्र बनाने का सदुपदेश दिया परन्तु हमने भूल वश अभिमान किया उनकी अपार शक्ति का अणु मात्र भी ध्यान न किया। अस्तु ! उन्होंने अप्रसन्न हो मुझे इस लोटे में बन्दीवान किया, वरन् उसका मुख भली भाँति सीसे से बन्दकर ढकने पर महा मन्त्र की मुहर लगादी, और एक विकट निशाचर द्वारा समुद्र के अगम्य जल में डलवा दिया।

जब मैं समुद्र में डलवा दिया गया तो मैंने प्रण किया कि जो कोई मुझे एक शताब्दि के भीतर निकालेगा तो उसे इतना धनवान बनाऊँगा जो वह यावज्जीवन सुख से काल क्षेप कर सके परन्तु २०० वर्ष बीत गये और किसी ने मुझे न निकाला। मैंने पुनः प्रण किया कि जो कोई मुझे आगामी शताब्दि में स्वतन्त्र करेगा मैं उसे संसार की समस्त वसुधा समर्पण करूंगा। परन्तु शोक कि मुझे किसी ने भी न निकाला। अब मैंने तीसरीबार प्रतिज्ञा की कि, जो कोई मुझे इस शताब्दि में बन्धन से मुक्त करेगा मैं उसे सम्राट बनाऊंगा और प्रतिदिन सेवा में उपस्थित रह उसकी तीन इच्छाएँ पूर्ण करूंगा। परन्तु यह अवधि भी बीत गई तब मैंने क्रुद्ध हो कसम खाई कि अब जो कोई मुझे निकालेगा मैं उसका बध करूंगा। अतएव बाट देखते देखते आज वह समय उपस्थित हुआ है।"

उपरोक्त वार्ता सुनकर मछुवा स्तम्भित रह गया। ओह मैं बड़ा

मन्दभागी हूं जिसकी प्राण रक्षा करूं वही मुझे मारने को उद्यत हो, यही पश्चात्ताप कर कहने लगा—"स्वामिन् ! अपनी सौगन्ध लौटाकर बाल बच्चों पर दया करो मुझ दीनातिदीन के शरीर में मांस भी नहीं है। प्रभो मेरा अपराध क्षमा करो।"

दैत्य ने सिर हिला कर उत्तर दिया—"मैं तुझे कदापि न क्षमा करूंगा।"

मछुवे ने देखा दैत्य किसी प्रकार नहीं मानता तो उसने उसी महा मन्त्र को अवलम्बन कर कहा—"महाशय ! मैं बड़े असमन्जस में पड़ा हूं भला आप जैसा विराटकाय दैत्य इस छोटे से लोटे में कैसे समाया होगा। यदि आप अपने दीर्घ चरण कमल लोटे में प्रविष्ट करें तो कदापि न समा सकेंगे।

यद्यपि दैत्य ने लोटे में समा जाने की सौगन्ध खाई तथापि मछुवे का अविश्वास दूर न हुआ वरन् स्वयं अपने सन्मुख लोटे में प्रविष्ट होने की प्रेरणा की। निदान जिस प्रकार तू चाहेगा उसी प्रकार बध करूंगा, दैत्य वचन बद्ध हो चुका था। अस्तु बिना सोचे विचारे धुम्रांकार बन शनैः २ लोटे में प्रविष्ट होने लगा।"

थोड़ी देर में लोटे में से शब्द निकला—"मछूआ ! अब भी तुझे विश्वास आया किंवा नहीं देख ले मेरा समस्त शरीर लोटे में ही है।'

मछूवे ने कुछ भी उत्तर न दे ढकना लोटे के मख पर रख दिया और प्रसन्न हो बोला—"कहो मित्र, अब तुम्हें मैं कहाँ डालूं। निस्सन्देह तू समुद्र में डाले जाने योग्य है वरन् समुद्र तट पर मैं घर बना कर रहूंगा। यदि भूला भटका कोई पथिक इधर आ निकले तो यहां नराहारी राक्षस रहता है। प्रत्येक को सूचित कर सकूंगा, सत्य है—"दुष्ट न छोड़े दुष्टता केतो हूं सुख देत। धोये हूँ सौ बेर के काजर होत न सेत।

Pertap Library

अपने को लोटे में विवश पा दैत्य बहुत व्याकुल हुआ लोटे से

बाहर निकलने के अनेक प्रयत्न किये परन्तु सब विफल मनोरथ । अब दैत्य अति विनीत भाव से प्रार्थना करने लगा, मित्र मैं तो उपहास करता था शोक कि तुमने मैत्री उपहास को सत्य समझा ।

मछूवे ने कर्कश स्वर से उत्तर दिया—"पामर तू बाहर ही भयंकर दीखता था अब तू समझ ले नदी धारा ही तेरा आवास स्थल होगा तेरे षडयन्त्र में फंसना महा मूर्खता है ।

दैत्य ने नय विनय प्रार्थना की—"यदि तू मुझे बन्धन से मुक्त करेगा तो तेरे संग अनेक उपकार करूंगा ।

मछुवा बोला—"नृशंस, तेरा मुझे कुछ भी विश्वास नहीं व्यर्थ तुझे छुड़ाकर क्यों विपत्ति का आह्वान करूं क्योंकि मैं जानता हूँ तू छूटते ही जैसा सम्राट ग्रीक ने दूंवा के प्रति अप्रतिकार किया, मेरे साथ करेगा । सुन…………

दूबां वैद्य की कथा

पारस देशान्तर्गत रूमाँ नगर में राजा ग्रीक कुष्ठ रोग ग्रस्त अति दुखी था । स्थानीय कुष्ठिचिकित्सकों ने अनेक औषधियों के प्रयोग किये परन्तु रोग नष्ट न हुआ अनायास एक दिन वैद्य-विद्या-पारंगत-दूवां वैद्यराज ने उस नगर में प्रवेश किया । जब उसे रुग्ण ग्रीक के समाचार मिले तो दर्बार में उपस्थित हो बिना औषधि पान तथा मर्दन किये स्वास्थ्य लाभ कराने की प्रार्थना की । राजा सुनकर अति प्रसन्न हुए उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया ।

दूवां वैद्य विदा हो अपने घर आया और औषधियों के प्रयोग से एक गेंद और बल्ला बना राजा को अर्पण कर प्रार्थना की—"आप नियमित रूप से घोड़े पर चढ़कर गेंद खेलिये निदान जब आप थक जावें और पसेवाच्छादित शरीर ग्लानि उत्पन्न करे तो त्वरित उष्ण जल से स्नान कर डालें और आनन्द से सो रहें । ईश्वरेच्छा से कल ही

आप निरोग हो जावेंगे ।।"

वैद्य की आज्ञानुसार राजा गेंद खेल स्नानकर सो रहे । दूसरे दिन रोग समूल नष्ट होगया । राजा बहुत प्रसन्न हुआ वस्त्रालंकार से सुसज्जित हो राज सभा में पधार दूबां वैद्य की अति प्रशंसा करने लगा । संध्या समय वैद्य को स्वर्ण खचित वस्त्र और दो सहस्त्र मुद्रा पारितोषिक दीं परन्तु इस पर भी राजा को संकोच था कि मैंने औषधि की अपेक्षा वैद्य का उचित्त सत्कार नहीं किया अस्तु वह प्रतिदिन वैद्य राजको उपहार स्वरूप बहुमूल्य बस्त्राभूषण और मुद्रा इत्यादि दे सम्मानित करने लगा ।

राजमंत्री बड़ा द्वेषी था । वैद्य के प्रति अति सहानुभूति देख ईर्षा से चाहता था परस्पर वैमनस्य करादें । एक दिन निरनिराले में राजा से कहने लगा—"स्वामिन् ! एक प्रदेशी का इतना विश्वास करना नीति विरुद्ध है आपको मालूम नहीं यह बड़ा धूर्त्त आपके प्राणों का ग्राहक है ।"

राजा ने विस्मत होकर कहा—"मन्त्री, व्यर्थ दोषारोपण कर क्यों कलंकित करता है वैद्य रत्न दूबां बड़ा सच्चरित्र है ।"

"राजन् ! मैंने बहुत खोज करके विश्वास पात्रों द्वारा अनुसन्धान कर यह रहस्य मालूम किया है । वास्तव में दूवां वैद्य ग्रीस से इसी अभिप्राय से यहाँ आया है ।" निदान इसी प्रकार मन्त्री ने अनेक बातें दूवां वैद्य के विरुद्ध कहीं । राजा ने विरक्त होकर कहा—"तेरे कहने पर मुझे विश्वास नहीं होता पीयूषपाणि दूवां सरीखे धर्मनिष्ठ संसार में विरले ही होंगे यदि उसका दुष्ट संकल्प होता तो ऐसे कठिन रोग से क्यों मुझे मुक्त करता इस उपलक्ष में आज से मैं उसे एक सहस्र मुद्रा मासिक बेतन नियत करता हूं । यदि मैं सर्वस्व भी उसको अर्पण कर दूं तो भी उऋण न हो सकूंगा । तू निस्सन्देह उसकी मान हानि चाहता है । मुझे राजा सिन्दबाद की कथा जिसके मन्त्री ने पुत्र वध से

वञ्चित रक्खा था, भली भाँति स्मरण है।"

मन्त्री ने पूंछा—"क्या सेवक को उक्त कथा सुनाने की आप कृपा करेंगे।"

राजा ने कहा—"सिन्दबाद की सासु युवराज के प्रति व्यर्थ मिथ्या दोषारोपण कर मरवा डालना चाहती थी, राजा बिना विचारे ही सासु के षडयंत्र में फंस मारने को उद्यत हो गया बध की आज्ञा भी दे दी परन्तु मन्त्री ने बाधा देकर कहा—"कहीं आपको शीघ्रतावश सत्पुरुष की तरह पश्चात्ताप न करना पड़े।" सुनिये—

सत्पुरुष की कथा

"पूर्व समय में एक सत्पुरुष अपनी पत्नी के, जो अति लावण्यवती थी ऐसा प्रेम पाश में वंधा हुआ था कि एक घड़ी का वियोग भी असह्य होता था। संयोगवश उसे किसी नगर को जाना पड़ा। जहाँ अनेक प्रकार के पक्षी बिकते थे अस्तु उसने मनुष्य की तरह प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दाता सुन्दर एक शुक क्रय किया। घर में जो कुछ होता स्वामी के पूंछने पर शुक यत्र तत्र कह सुनाने में अति निपु था। कुछ दिनों पश्चात् उक्त सत्पुरुष को पुनः विदेश जाना पड़ा अ उसने तोते का पिंजड़ा प्राण प्रिया पत्नी के शयनालय में टँगवा, सम दिया कि किसी प्रकार का कष्ट न हो।

जब वह लौटकर घर आया तो अद्यावधि शुक ने समस्त वृ कह सुनाया। सत्पुरुष ने २, ४ बातें प्रतिकूल सुनकर पत्नी के कठोर वाक्य वाण प्रहार कर कुछ अश्रद्धा प्रकट की।

पत्नी ने समझा किसी दासी ने कहा है परन्तु जब ए सौगन्ध खाई तो अनुमान से उसने जाना यह सब माया शु की है। अब आगे पति विश्वास न करें, यह धारणा कर वह प्रतीक्षा करने लगी।

दीवार फट गई और पन्नगवररत्न जटित वस्त्राभरण से सुसज्जित सौन्दर्य्य वयस्क एक लावण्यवती छड़ी हाथ में लेकर मत्स पात्र के सन्निकट खड़ी हो मृत मछलियों से कहने लगी—"मत्स्य ! बचन बद्ध मत्स्य !! तू अपने प्रण पर दृढ़ है।" निदान जब लावण्यवती ने पुनः कहा तो चारों मछलियां सजीव हो कहने लगीं-"सत्य है। जब तुम्हें हमसे प्रेम और श्रद्धा है तो क्यों न हम तुम्हारी अनन्य भक्त बनेंगी। जब तुम अपना ऋण चुकाओगी तो हमें भी उऋण पाओगी।

यह सुनकर वह सुन्दरी पात्र उलटकर अन्तर्द्धान होगई। और दीवार पूर्ववत् समान दृष्टि आने लगी रसोइन इस अपूर्व घटना वश अचेत होगई थोड़ी देर में जब सचेत हुई तो मछलिएं जलकर राख होगईं हैं यह देख वह रोने लगी—यदि मैं राजा से उस अपूर्व घटना का वर्णन करूं तो वह काहे को विश्वास करेंगे। सहसा मन्त्री ने आकर पूछा "मछलियां पक गईं ?"

रसोइन ने समस्त घटना आद्योपान्त कह सुनाई। मन्त्री सुनकर अति विस्मित हुआ। राजा अप्रसन्न होंगे यह समझ कर मन्त्री नें मछवे को बुला आज्ञा दी कि शीघ्र इसी प्रकार की चार मछलियाँ उपस्थित करो ?

मछवे ने कहा—"आज तो क्षमा कीजे कल अवश्य ला दूंगा।" निदान दूसरे दिन जब मछलियां आगईं तो मन्त्री ने अपने सन्मुख बनवाई।

रसोइन ने मछली शोध कर पूर्ववत् घृत में भूनने को छोड़ीं निदान जब एक ओर भुन गईं तो मन्त्री को सचेत कर दूसरी ओर को पलटीं हठात् पातशाला की दीवार फटी और वही सुन्दरी छड़ी हाथ में लिए मछलियों के समक्ष पूर्वोक्त प्रश्नोत्तर कर अन्तर्द्धान होगई। यह देख मन्त्री अति विस्मित हुआ उसने समस्त घटना राजा को कह सुनाई।

राजा साहब भी सुन कर अति आश्चर्यित हुए इस सार गर्भित

जटिल रहस्य के जानने की उन्हें अति उत्कण्ठा हुई। त्वरित मछुवे को बुलाकर उसी प्रकार की चार मछलियां शीघ्र लाने की आज्ञा दी।

तीसरे दिन मछुवे ने वैसी ही मछलियां लादीं। राजा ने इस बार भी चार सौ स्वर्ण मुद्रा मछुवे को प्रदान की। राजा ने अपने सन्मुख एक निर्जन गृह में मछलियां पकवाईं। मन्त्री ने द्वार बन्द करके मछली घी में छोड़ीं, जब वह एक ओर भुन गईं तो राजा को सचेत कर दूसरी ओर पलटीं सहसा पीछे की ओर दीवार फटकर एक राक्षस सेवक वेष में छड़ी लिये निकल आया और मत्स्य पात्र के समीप आकर छड़ी द्वारा अति भयानक शब्दों में कहने लगा—"मछलियो! तुम अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहो।"

मछलियों के मुख से—"हाँ" केवल यही शब्द निकला था कि उसने मत्स्य पात्र उलट दिया और स्वयं उसी दीवार में समाकर अन्तर्द्धान होगया।,

उपरोक्त आश्चर्य व्यापार देख राजा स्तम्भित रह गया। बड़े उद्वेग से इस रहस्य को जानने के निमित्त मछुवे को बुलाकर पूछा—"तू कौनसे सरोवर से मछली लाया है?"

मछुवे ने सरोवर की समस्त व्यवस्था कह सुनाई। मन्त्री ने विस्मित हो राजा से कहा—"मैं ६२ वर्ष से उधर ही मृगया को जाया करता हूँ सब कुछ मेरा देखा हुआ है परन्तु मैंने यह सरोवर आज तक नहीं देखा।"

मछुवे को सम्बोधन कर राजा ने पूछा—"सरोवर यहां से कितनी दूर है?"

"कोई तीन घड़ी का मार्ग है।" नम्रता पूर्वक मछुवा कहकर राजाज्ञा की प्रतीक्षा करने लगा।

मार्ग इत्यादि पूछकर राजा ने सब दल बल सरोवर की ओर

पयान किया। थोड़ी ही देर में मछुवे के कथनानुसार सरोवर पर पहुंच गये सब ही आश्चर्य से सरोवर की विकटता देख रहे थे।

राजा ने वहीं डेरा लगवा मन्त्री को आज्ञा दी—"मुझे इस सरोवर का रहस्य जानने की बड़ी उत्कण्ठा है। मैं जाता हूं मेरी अनुपस्थिति में कुछ विघ्न न पड़े वरन् मेरे जाने का समाचार ही किसी से न कहना, सम्भव है प्रजा जन व्यर्थ के आन्दोलन किंवा किम्वदन्तियों से अविश्वास फैलावें। जब तक मैं न लौटूं तू निरन्तर यहीं रहना।" यह कहकर राजा ने रात्री के समय गोप्य कृपाण हाथ में ले पर्वत श्रेणी की ओर पयान किया। थोड़ी देर मे राजा श्रेणी के दूसरी ओर उतर गया। जिधर बड़ा उद्यान था राजा उसी ओर प्रभात होते तक चला किया। सूर्योदय के समय दूर से र से एक उच्च अट्टालिका दृष्टि आई सम्भव है यहीं अपना अभीष्ट सिद्ध हो अस्तु जब वह निकट पहुँचा तो एक विशाल महल और लोहित प्रस्तर का उच्च दुर्ग स्वच्छ लोह पत्र परिवेष्टित दृष्टिगत हुआ। यद्यपि द्वार खुला हुआ था परन्तु राजा ने करतल ध्वनि तथा कर्कश स्वर से सम्बोधित कर थोड़ी देर तक किसी के आने तथा उत्तर पाने की प्रतीक्षा की जब कुछ उत्तर न मिला तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ इन्द्रपुरी की अनुहार विशाल दुर्ग परन्तु निर्जन! अस्तु। वह ड्योढ़ी में पहुंच पुनः दीर्घ स्वर से—"कोई भीतर है।" सम्बोधन करने लगा। अब भी कुछ उत्तर न मिला राजाने महल में प्रवेश किया यद्यपि वहाँ सुनसान देवका राज्य था परन्तु सामने के बड़े दालान में बुशायर का गलीचा बिछा हुआ देख राजा अति विस्मित हुआ, चहुं ओर महल लोहित-वर्ण वस्त्र-वेष्टित था प्रत्येक छोटा बड़ा द्वार श्याम मखमली पर्दे जिनमें स्वर्ण और रौप्य फूल पत्र अङ्कित थे, पड़े हुये थे एक बारहद्वारी के बीचों बीच स्वच्छ जल पूरित कुण्ड बना हुआ था जिसके चारों कोनों में स्वर्ण के सुन्दर सिंह बने हुये थे प्रत्येक सिंह के मुख से फौवारे छुटते थे वरन् प्रति समय वह फौवारे अर्क

गुलाब उद्‌गिरण करते ऐसे प्रतीत होते थे मानों मोती बिखेर रहे हैं। कुण्ड के मध्य भाग से वायु प्रेरित एक सुरभि परिमल घ्राण गोचर हुआ। उस गन्ध से मत्त राजा आगे को बढ़ा। दुर्ग के तीन ओर पुष्पोद्यान था जो अनेक पुष्प वृक्ष और लता प्रतान से आच्छादित तथा संगीत ध्वनि के समान अनेक पक्षियों के कलरव से प्रतिध्वनित था राजा ने सोचा समस्त दुर्ग इसी सुगन्ध से आमोदित हो रहा है।

राजा प्रत्येक वस्तु बड़े ध्यान से देखता प्रसन्न होता एक ओर सुरम्य वाटिका में बैठ सैर करने लगा सहसा एक भयानक शब्द कर्ण-गोचर हुआ। राजा ने पीछे का पर्दा उठाकर देखा—एक नवयुवक सिंहासनारूढ़ धाड़ें मार मार रो रहा है। राजा ने सन्मुख जाकर प्रणाम किया।

सिंहासनासीन नवयुवक ने क्षमा प्रार्थनाकर कहा—"क्षमा करना मैं अपाहज आपका कुछ स्वागत नहीं कर सका!"

राजा ने कहा—"नहीं २ इसकी आवश्यकता नहीं, तुम्हारी दशा देखकर शोक होता है क्या मैं आपकी कुछ सहायता कर सकता हूं? परन्तु पहले इस सरोवर की मछलियों तथा अपने रुदन का कारण बता सको तो अति कृपा हो?"

नवयुवक ने चीत्कार कर वस्त्र उतार अपना नग्न शरीर दिखलाया। "राजा ने देखा अधाभाग पुरषाकार और कटि से आपाद पाषाण है वह अति विस्मित हो कहने लगा—"यद्यपि यहां की सब ही बातें विचित्र दीख पड़ती हैं परन्तु तुम्हें देखकर मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा कृपा कर शीघ्र मेरा सन्देह दूर करो?"

यद्यपि मेरी दुःखद कथा केवल शोक जनक और दुखावह है परन्तु आपको सुनने को अति अभिलाषा है अस्तु सुनिये! निदान नवयुवक ने इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया—

———— —

श्यामद्वीप नरेश की कथा

मैं राजपुत्र हूं। मेरे पिता महमूदशाह श्यामद्वीप नरेश चार मुख्य पर्वतों के स्वामी थे जहां अब सरोवर है पूर्व में वहीं राजधानी थी। जब मेरे पिता का स्वर्गवास हुआ तो राज्य पर मेरा पूर्ण प्रभुत्व हो गया। चचा की बेटी के साथ मेरा विवाह पूर्व ही हो चुका था। पांच वर्ष पर्यन्त हमने सुलभ दाम्पत्य सुख में कालक्षेप किया परन्तु शनैः २ पत्नि प्रेम में विक्षेप होने लगा।

एक दिन पत्नी स्नान करने गई इस अवकाश में मैं शयनालय में जा लेटा। दो दासी मेरी शय्या के इधर उधर आ बैठीं और परस्पर कुछ परामर्श करने लगीं। मैं ध्यान विसर्जन कर उनकी वार्ता सुनने लगा।

एक बोली—"रानी अति निर्दय है जो ऐसे वीर, सौन्दर्य में कन्दर्प के समान राजा को प्रेम समर्पण नहीं करती।"

दूसरी बोली—"बहिन, यह तो सत्य है। न जाने यह रानी राजा को अचेतकर कहां जाया करती है?"

पहिली परिचारिका समर्थन कर बोली—"क्या तुम नहीं जानतीं महारानी शर्बत में भंग इत्यादि कोई मादक द्रव्य राजा को पिला देती है। और रात भर अपने प्रेमी के पास रह प्रातः ही राजा को सचेतकर लेती है।

परिचारिकाओं की वार्त्ता सुनकर मुझे बड़ा दुःख हुआ रात्रि को जब मैं सपत्नीक भोजनकर शयनालय में पहुंचा तो नियमानुसार रानी शर्बत बनाकर लाई। मैंने उसकी दृष्टि बचाकर पृथ्वी पर फेंक दिया और सानन्द दोनों सेजशायी होगये।

रानी मुझे सोता समझ शय्या से उठी और उच्च-स्वर से मन्त्र पढ़कर कहने लगी—"प्रभो! जब तक मैं लौटूं यह इसी प्रकार सुसा-

वस्था में अचेत मिले !" मन्त्रपूत जल मेरे ऊपर छिड़क और नवीन वस्त्र धारण कर कमरे से बाहर निकल निकल गई। राजा भी निशित कृपाण लिए पीछे २ हो लिया। रानी ने मन्त्र बल से कई द्वार खोलकर वाटिका में प्रवेश किया जो सघन झाड़ियों से परिवेष्ठित तथा सुगन्धित पुष्पों से सुशोभित थी। एक पुरुष जो पूर्व से ही वहाँ टहल रहा था रानी उससे इस प्रकार कहने लगी—"मकरध्वज के कुसुमशर के भय से मेरा शरीर कांपने लगा है। रोमान्चरूपी कर प्रसारण पूर्वक आपको आलिंगन करने की अभिलाषा हो रही है। मुझे बड़ा दुःख है कि दुराचारी मन्मथ ने एक शांत मूर्ति के प्रति मुझसे प्रीति प्रकाश कराके कैसा दुर्घट कर्म कराया है। मैं कैसी मूर्ख हूँ कि यह भी नहीं समझती कि किससे प्रीति करना उचित है और किससे नहीं। कहाँ तेज पुन्ज साधु-व्रत सच्चरित्र और कहाँ में सामान्य जन सुलभ दुश्चरित्रता स्त्री। काम का कैसा प्रभाव है ! उसके कारण कितनी शत कन्या कुल-मर्यादा परित्याग कर अपने प्रीतम की वामांग-भागिनी होती है। (हाथ जोड़कर) प्यारे मैं प्राणपण से तुम पर आसक्त हूं परन्तु तुम मुझसे घृणा करते हो इसका क्या कारण है ? यदि तुम्हें मेरी प्रेम परीक्षा लेनी हो तो मैं इसके लिये भी सहर्ष उद्यत हूं ! क्या तुम मेरे छलवल को नहीं जानते ? यदि तुम कहो तो मैं सूर्योदय के पूर्व ही इस वृहत् नगर को क्षार २ कर भयानक पशु पक्षियों का आवास बना दूं।" यह कहकर रानी अपने प्रेमी का हाथ पकड़ उस स्थान पर आई जहाँ मैं खड़ा उनके चरित्र देख रहा था। मेरे समीप आकर दोनों लौटे रानी आगे-आगे और पीछे उसकी प्रेमी किसी विचार में निमग्न नीचा शिर किये चला जाता था।

क्रोध से मेरा शरीर कांपने और बाहुद्वय फड़कने लगे उसी अवसर में जब उसका प्रेमी दूसरी बार मेरे समीप आकर लौटने लगा तो मैंने लक्ष्य कर तलवार का वार कर दिया, एक हृदय-विदारक चीत्कार से गृह, उद्यान और आकाश कम्पित हो उठा। मैं विद्युत समान लम्फ

देकर नीचे कूद शयनालय में जा लेटा। परन्तु रानी को कुछ न मालूम हुआ यद्यपि रानी का प्रेमी मर्माहत हो निपतित हो गया, तथापि मरा नहीं, रानी सेवा सुश्रूषा कर मेरी शय्या पर आ लेटी।

नियमानुसार मैंने प्रात: प्रक्रिया से निवृत्त हो राजसभा में प्रवेश किया सन्ध्या समय जब मैं लौटकर आया तो रानी को सूतक-प्रद मलिन-वस्त्र पहिने पाया, मुझे देख केश खसोट क्रन्दन कर कहने लगी—"स्वामिन् ! मुझे आज तीन दु:खद समाचार मिले हैं माता रोगवश, तथा पिता रणभूमि में आहत हो, और भाई छत से गिर कर तीनों सुरपुर सिधारे !" यह सुन मुझे कुछ दु:ख न हुआ मैं सब कुछ जानता था साधारणत: पत्नी को आश्वासन दे नित्य नियम में प्रवृत्त हुआ।

इस प्रकार सूतक पातक में दु:ख सन्ताप सहते रानी को एक वर्ष बीत गया। एक दिन निरनिराले में रानी कहने लगी "महल के अन्तर्गत यदि एक समाधि बनवाने की आप आज्ञा दे दें तो जब कभी अधिक क्लेश से कोमल हृत्पिण्ड फड़कने लगे, मैं वहाँ जाकर अश्रु विसर्जन कर आऊँ।"

रानी की इच्छानुसार समाधि मन्दिर बन गया। वह अपने प्रेमी को उसी में ले आई। योग्य भिषग्वरों की संमति से कुछ ऐसी उत्तमोत्तम औषधियों का प्रयोग कराया कि दिन प्रतिदिन रोगी की दशा सुधरने लगी। सूदकालय में किसी को प्रवेश करने की आज्ञा नहीं थी केवल रानी ही उसके पास जाकर दर्शनों का सुख भोगती थी।

एक दिन मैं गुप्त रूप से सूदकालय में जा छिपा। बड़े प्रेम से रुग्ण प्रेमी का कर चुंवन कर रानी कहने लगी—"हृदयेश्वर ! मैं हरिण में आपके दोनों नेत्र, चन्द्रमा में उज्ज्वल मुख, सूर्य में तेज पुंज और गजराज में आपकी चाल देखती हूं। परन्तु हाय मैं क्या करूं, आपके समान एकत्रस्थित सारा रूप दूसरा कहीं नहीं है। अस्तु आपके एक एक अङ्ग की उपमा तो संसार में मिल सकती है पर आपके सारे

रूप की तुलना किसी से भी नहीं हो सकती । जिसे देखकर में कुछ धैर्य धारण करूं । (दीर्घनिश्वास त्याग) प्यारे मैं घण्टों तेरी सेवा में उपस्थित रह तेरे सुख चैन की अनेक चेष्टा करती हूँ सब कुछ अर्पण करने को उद्यत हूँ परन्तु आपके·········!"

उसी दिन महल में पहुँच रानी को अतिशग दुखित और क्लेशासक्त बायें हाथ पर कपोल रक्खे मलिन मुख रोते पाया । जब मैंने समझाना प्रारम्भ किया तो विषन्न हो रानी कहने लगी—"बस, आप अपनी शिक्षा बन्द रक्खें मैं सब कुछ जानती हूं मुझे कुछ अज्ञ और उपदेष्टव्य नहीं है ।" यह कह कर रानी और अधिक रुदन करने लगी ।

दो वर्ष और बीत गये । एक दिन मैं पुनः सूदकालय में गया । रानी कह रही थी—"अब तीसरा वर्ष प्रारम्भ हुआ । आप बहुत कुछ स्वास्थ्य लाभ कर चुके हैं परन्तु आः, मैं जिस पर प्राण समर्पण करूं वह मेरी ओर देखने में भी घृणा करता है । ओह मेरे प्रेम ने आपके कष्ट सहिष्णु हृत्पिण्ड पर किंचित प्रभाव न डाला ।"

रानी का कटु भाषण-प्रेमालाप मेरे लिये असह्य होगया मैं बाहर आ उद्विग्नता से चीत्कार कर कहने लगा—"अपावन गृह ! इस नराधम और विश्वास घातिनी बार वनिता सहित क्यों नहीं गिर पड़ता ओह ?·········"अभी मैंने इतना ही कहा था कि रानी क्रोध कम्पित अधरों पर दांत पीसती बाहर आ विपन्न हो कहने लगी—"मन्दभागी क्या तू ने ही विपत्ति डाली है निस्सन्देह तेरी दुष्टता वश ही मेरे प्रेमी को अपार कष्ट भोगना पड़ा है ।"

"हां दुष्टा ! मैंने ही उसे आहत किया है ।" यह कह मैंने तलवार खींच चाहा कि इसे यमपुर पहुंचा निश्चिन्त होऊं ।

परन्तु मेरे वार करने के पूर्व हं उसने कुछ मन्त्र पढ़कर कहा—

"अधो भाग पाषाण तथा अर्द्ध मानवाकार यथावत रहे ।"

रानी के श्राप देते ही मेरा अधोभाग पत्थर का हो गया दुःख

से अचेत हो गया । थोड़ी देर में जब मैं सचेत हुआ तो अपने को इस स्थान में पाया उस समय से जीवन्मृत इस दशा में पड़ा भगवान् से मृत्यु कामना की प्रार्थना किया करता हूं । आह ! मैं अपना दुःख किन शब्दों में वर्णन करूं पहले तो मैंने कई दिनों तक यही सोचा कि आत्मीय जन मेरी रक्षा करेंगे परन्तु जब उस दुष्टा ने यह दुःखद सम्बाद सुनाया कि "मैंने नगर सरोवर रूप में और नागरिक मत्स्य रूप में परिणत कर दिये हैं, लाल हिन्द, श्वेत यवन, श्याम कृष्टान, और पीत यहूदी जाति की मछलियां हैं । देशान्तर्गत चार द्वीपों को पर्वताकार बना सरोवर के चतुर्दिक स्थित कर दिया है । परन्तु इस पर भी उस दुष्टा को आश्वासन नहीं मिला वह नियमित रूप से प्रतिदिन सौ बेंत मेरी पीठ में आकर मारा अरती है यद्यपि उस मर्माहत पीड़ा से मै नपतित हो जाता हूं, समस्त शरीर से रुधिर धारा बहने लगती है । परन्तु उसे दया नहीं आती । मारन ताड़न पश्चात् बकरी के बालों का दुर्गन्धमय मोटा कम्बल मेरे ऊपर डाल उसके ऊपर से सुन्दर रौप्य खचित वस्त्र पहना देती हैं ।"

राजा सुनकर अति विषन्न हुआ उसने पूछा—"उस दुष्टा तथा उसके प्रेमी का आवास कहाँ है ।

आहत नवयुवक ने कहा—मुझे उसका वास-स्थान मालूम नहीं है कदाचित् उसका प्रेमी तो उसी शोकालय में पड़ा रहता है । सुतराम वह दुष्टा मेरे पास प्रतिदिन आती अवश्य है ।

आगत राजा यह दुखद कथा सुन अति विषन्न हुआ । नवयुवक मर्म वेदना तथा मन्त्र बल से रात भर नहीं सोया परन्तु राजा लेटते ही घोर निद्रा के वश हो गया ।

दूसरे दिन आगत राजा गुप्त भाव से शोकालय में पहुंचा जो पन्नगवर रत्न-मंडित सैकड़ों स्वर्ण दीपकों के प्रकाश से रत्नमय दीखता था, राजा अति विस्मित हुआ यह कैसा शोकालय, किसी राजा का प्रमोद मन्दिर है ।

व्रणाङ्कित प्रेमी नेत्र मूंदे पड़ा है यह देख राजा ने एक ही बार में उसे यमपुर पहुंचा दिया और उसका शव निकटस्थ कुए में डाल स्वयम् उसी शय्या पर जा लेटा। प्रतीक्षा करते देर नहीं हुई थी कि नवयुवक के क्रन्दन से दुर्ग किरात पुरी दर्शने लगा राजा ने समझा दुष्टा निर्मंदारा रानी नवयुवक की दुर्गति बना रही है।

थोड़ी देर में वह दुष्टा अपने प्रेमी के पास आ अति विनीत कहने लगी—"प्राण प्यारे! आपके मौन रहने से मैं मृत प्राय हो रही हूँ, प्यारे प्रेम भिक्षा..............

राजा ने दीर्घ कण्ठ स्वर से प्रेम पूर्वक कहा—"ईश्वर सर्व शक्तिमान् है।"

"हैं मुझे भ्रम तो नहीं हुआ? नहीं २ प्यारे क्या कहा।" "नहीं २ तू मेरे योग्य नहीं है।" इतना कहकर राजा रानी का मुख निहारने लगा।

दीर्घ निश्वास त्याग रानी बोली—"प्यारे, मुझसे क्या अपराध हुआ है?"

छद्मवेशी प्रेमी ने क्रुद्ध हो कहा—"तेरे पति के चीत्कार से मैं रुग्ण सेजशायी हूँ मेरी नींद उचट गई है अन्यथा कभी का स्वास्थ्य लामकर चुका होता। यही कारण तेरे प्रति घृणा का है।

"आपकी यही इच्छा है तो मैं उसे अभी मुक्तकर आपकी आज्ञा का पालन करती हूँ यह कहकर दुष्टा रानी अपने पति के पास पहुंची और मत्र पूत जल छिड़क कर उसे यथावत् मनुष्य बना दिया, यदि प्राण बचाना चाहे तो कभी भूलकर भी यहां न आना।"

नवयुक वहां से चल दिया और निकटस्थ किसी उद्यान के सघन पार्श्व में छिपकर ईश्वर और राजा को कोटि २ धन्यवाद देने लगा। उधर रानी अपने प्रेमी के समीप पहुंच कटाक्ष से कहने लगी—आज्ञानुसार मैंने उस दुष्ट को मुक्त कर दिया अब कभी यहां न आवेगा। आशा है अब आप मुझ प्रेम-पिपासा-कुलित-चातकी को प्रेम की रूप

सुधा पिलाकर संतुष्ट करेंगे ।

प्रेमी (राजा) ने दीर्घ-निश्वास त्याग कहा—"तेरे एक मात्र अपने पति को मुक्त करने से आश्वासित नहीं हूं अरे, सरोवर में मत्स्य रूप जितने स्त्री पुरुष हैं उनके तप्त श्वांस मुझे भस्म किये देते हैं।"

रानी ने उसी समय स्त्री पुरुष गृह उपनिवेश इत्यादि समस्त यथेष्ट रूप में परिणतकर दिये। जिसने जो जहां छोड़ा था तद्वत् पा लिया मानों घोर निद्रा से सचेत हुये हैं। सब ही अपने २ कार्य में प्रवृत्त हुये। अब रानी अपने प्रेमी के पास पहुँच प्रसन्न हो कहने लगी—"प्यारे आपकी आज्ञानुसार मैंने सब कुछ कर दिया और भी जब जैसी इच्छा होगी प्रयोग में आवेगा, प्राणेश्वर! मैं सत्य कहती हूं वसुन्धरा में आपकी समानता करने वाला कोई बिरला ही होगा इन्द्रोपम महल, अमूल्य वस्त्राभरण दास दासी इच्छातीत सब आपके अर्पण हैं आमोद प्रमोद के लिये मैं सेवा में प्रति समय उपस्थित रहूंगी। कृपया अब तो कर चुम्बन.........."

"अच्छा आगे को बढ़ आओ।" निदान् जब मन्मथ व्यथित रानी शय्या के निकट आ गई तो राजा ने तीव्र शोणित छूरिका हृदय में आमूल बेध क्रुद्ध हो कहा—दुष्कर्मानुरक्त पामर, इसे भोग यह है तेरे दुष्ट कर्मों का प्रतिफल।

रानी का शव कुएं में फेंक राजा नवयुवक को खोजने लगा। वह एक सामान्य कमरे में बैठा था राजा को देखते ही चरणों में गिर पड़ा। राजा ने उठाकर उसे हृदय से लगा लिया और प्रसन्न हो कहने लगा—"अब किञ्चित् भय न करो दुष्टा रानी इस लोक में नहीं है, वह प्रेमी सहित नर्क रौरव में यातना भोग रही होगी। अब तुम आनन्द से राज काज में प्रवृत्त होओ। चलो अब हम अपने डेरे को चलें वहीं भोजन करना।

नवयुवक ने चरण स्पर्श कर कहा—"क्या आप अपना डेरा

यहां से निकट समझते हैं यह सब उस दुष्टा की धूर्तता है जो आपके नगर के समीप सरोवर इत्यादि स्थित किए अन्यथा यहां से आपकी राजधानी अनुमान एक वर्ष का मार्ग है। परन्तु कुछ द्विविधा नहीं मैं आपकी सेवा सुश्रुषा के निमित्त प्रति समय संग रहूंगा।'

राजा ने विस्मित हो कहा—"जब देश इतनी दूर है तो तुम्हारे साथ चलने की कुछ आवश्यकता नहीं है वरन् मैं अपुत्रक हूं पोष्य पुत्र स्वरूप तुम्हें अपने राज्य का उत्तराधिकारी बनाने की एक मात्र इच्छा और है "

निदान् राजा तीन सप्ताह पर्यन्त वहां रह बड़े समारम्भ से नवयुवको साथ लिये अपने देश को लौटा जब वह नगर के समीप पहुंचे तो नागरिक लोग अपना कार्य परित्याग कर स्वागत को आये। कामिनियां खिड़कियां में प्रफुल्लमुख कमल की आभा दिखा विमोहितकर रहीं थीं उनके चरण की महावर लगने से सीढ़ियें पल्लबमय दीखती थीं ॥ इति ॥

तीनकलंदर और पंचपत्नी की कथा

सम्राट् हारूं रशीद के शासन से एक चारु हासित वाचाल श्रमजीवी बुगदाद का रहनेवाला अति रसिक प्रिय था एक दिन वह प्रातःकाल बाजार में इस आशा पर खड़ा था कि कोई उसे भार उठाने के लिये बुलावे। सहसा एक सुन्दरी पट से चन्द्रानन छिपाये उसके पास आ पूछने लगी 'क्या मेरे साथ चलोगे ?"

"बहुत अच्छा चलिए।" यह कह सिद्ध-हस्त श्रमजीवी सुन्दरी के पीछे २ होलिया। मनमें अति प्रसन्न था कि आज बड़े सौभाग्य से परम-लावण्यवती युवती से साक्षात् हुआ है,

कुछ ही आगे बढ़कर सुन्दरी ने एक बद द्वार खटखटाया हठात् एक वृद्ध ईसाई ने अति सुगन्धित मदिरा सुन्दरी को अर्पण की। अब सुन्दरी बाजार में पहुँची और अनेक प्रकार के सुस्वादु फल क्रयकर

श्रमजीवी के टोकरे में भर दिये। टोकरा खूब भरा देखकर अट्टहास से श्रमजीवी ने कहा—"यदि मैं इतना अटाला जानता तो अपने साथ घोड़ा अथवा ऊँट लाता।" निदान इसी प्रकार सुन्दरी को हंसाता श्रमजीवी एक विशाल हवेली, जिसका द्वार बड़े स्तम्भों पर स्थित तथा हाथी दांत के सुदृढ़ पट से आच्छादित था, पहुंचा। सुन्दरी ने सम्बोधन कर कहा कि कोई आकर द्वार खोले श्रमजीवी के चित्त में अनेक कल्पना उत्पन्न हुई क्या यह स्वामिनी है अथवा दासी। नहीं २ दासी कर्म के योग्य नहीं यह अवश्यमेव किसी बड़-भागी की पाणिग्रहीता है।" अभी इस प्रश्न का समर्थन नहीं हुआ था कि एक षोडषवर्षीय नवयुवती ने आकर द्वार खोल दिया।

जिस स्त्री ने द्वार खोला था बालिका सुलभ सरल स्वभाव होने पर भी भला बुरा निर्वाचन करने की शक्ति उसमें पूर्ण रूप से विद्यमान थी। उसकी मुखच्छवि देखने से राजतनया का आभास मिलता था। श्रमजीवी उसके सौन्दर्य को देखकर स्तम्भित रह गया। संभव था श्रमजीवी के शिर से बोझा गिर पड़ता परन्तु उक्त सुन्दरी ने 'अरे, यह बोझ से दबा जाता है शीघ्र घर में लेजाकर उतरवालो।" यह कह कर हाथ का सहारा दे श्रमजीवी को घर में पहुंचा दिया।

घर उत्तम वस्तुओं से सुसज्जित था बीचों बीच एक सिंहासन बिछा हुआ था जिसपर बड़े आतंक से एक (तीसरी) सुन्दरी सुशोभित थी उसके सरस अरुण-अधर कुछ खुले हुये थे, उनके बीच से मोती जैसे सुन्दर दाँतों की छटा दिखाई दे रही थी। यद्यपि श्रमजीवी बोझ से निपतत हो गया था परन्तु इस सुन्दरी युवती को देखकर जिसका नाम "जबीदा" था, मुग्ध होगया। क्या ईश्वर ने जगत् की सारी सुन्दरता इसी को प्रदान कर दी है (प्रथम ही जो सुन्दरी श्रमजीवी को बाजार से लिवाकर लाई उसका नाम 'अमीना' तथा जो द्वार खोलने आई उसका नाम "साफी" था) बोझा उतरवा कर जबीदा ने एक मुद्रा श्रमजीवी को पारतोषिक दी।

श्रमजीवी प्रसन्न हो लौटने ही को था कि अमीना ने चन्द्रानन खोल दिया । श्रमजीवी स्तम्भित रह गया इतनी सुन्दरी युवती उसने आजन्म देखी ही न थी वह बार २ मुख सरोज के देखने से तृप्त न होता था ।

श्रमजीवी को खड़ा देख जबीदा ने अमीना से कहा—"इसे कुछ और देकर विदा करो !"

"मैंने आशा के विरुद्ध अधिक पारतोषिक लाभ किया है अब मुझे कुछ आकांक्षा नहीं है परन्तु किसी पुरुष को आपकी समाज में नहीं देखता यह बड़े आश्चर्य की बात है । आशा है इस रहस्य को बताकर आप सन्देह दूर करेंगी ।" निदान श्रमजीवी ने अपने सम्भाषण से सबको प्रमुदित कर एक लोकोक्तिका उल्लेख किया जिसका उद्देश्य यह था कि जब तक चार अनुगत मनुष्य न हों भोजन करना निषेध है इस समस्या का अभीष्ट यह था कि तीन तो स्वयम् सुन्दरी हैं चोथे श्रमजीवी को भोज्य में सम्मिलित कर लिया जावे ।

जबीदा श्रमजीवी की बातों पर हँसी न रोक सकी वह प्रसन्न हो कहने लगी—"भाई तुम अजनवी हो और हम अपनी गुप्त बातों में किसी को हस्तक्षेप करने का अवसर नहीं देतीं । वरन् हम बड़ी सावधानता से रहती है कि कोई हमारा रहस्य न जान सके ।"

धनिकों की सेवा सुश्रुषा के लिए ही दीन दरिद्रियों का अस्तित्व है अस्तु चापलूसी के ढङ्ग पर श्रमजीवी ने कहा—"आप बड़ी चतुर, मर्मज्ञा और कर्मनिष्ठ हे । यद्यपि पूर्वजों के सद्वाक्य मुझे भी बहुत कंठाग्र हैं परन्तु भाग्य में दरदर की भीख लिखी है क्या करूं अन्यथा मैंने अनेक ऐतिहासिक पुस्तकें अवलोकन की हैं । यदि आप आज्ञा दें तो अपना अनुभव वर्णन करूं ? बुद्धिमानों से किसी रहस्य को छिपाना उत्तम को घर में बन्द कर देने के समान है ।

जेबीदा ने सोचा—"श्रमजीवी दारिद्रय-वश इस निकृष्ट वृत्ति के करने पर बध्य है; सुतरां आदमी अनुभवी तथा दूरदर्शी अवश्य

है। इसे भोज्य में सम्मिलित करना उपयुक्त होगा। अस्तु वह उपहास से कहने लगी—'बड़े श्रम से स्वयम् हमने सुस्वादु भोजन बनाया है यदि तू खाना चाहता है तो जेब खाली कर क्योंकि छछा किन पूछा।"

श्रमजीवी ने पुनः चले जाने का विचार किया परन्तु अमीना ने अनुरोधकर कहा—"ऐसे चारुहासित बाचाल को रात्रि के समय बिलग करना कौतुक रहित होना है।"

"मैं ऐसा मनुष्य नहीं हूं कि आपका उपकार भूल जाऊं अथवा आपकी इच्छा के विरुद्ध कुछ उपकार करूं।" यह कहकर श्रमजीवी ने वही मुद्रा जो पूर्व में पारतोषिक लाभ की थी जबीदा के आगे रख दी।

जबीदा मुस्कराकर मुद्रा लौटा प्रमुदित हो कहने लगी—"यदि तू वचन दे कि हम जो कुछ करेंगी उसे न पूछेगा तो निस्संदेह यहां रह सकता है।"

अमीना ने अनेक प्रकार के खाद्य पदार्थ सुरादेवी महाप्रसाद अन्यान्य वस्तु यथा स्थान चुनकर प्रेम भोज्य प्रारम्भ किया। तीनों सुन्दरी तथा श्रमजीवी चतुर्दिक बैठ गये। जब थोड़ा २ भोजन कर चुके तो अरब की रीत्यानुसार अमीना ने एक गिलास सुगन्धित मदिरा पहले स्वयम् पिया फिर दोनों बहिनों ने एक २ गिलास खाली किया। पश्चात् एक गिलास भर कर श्रमजीवी को दिया।

श्रमजीवी संगीत में अति निपुण था उसने मधुर स्वर में एक मनोहर गीत प्रारम्भ किया। तीनों बहिनें आनन्द मग्न हो स्वयम् गाने लगीं। रात्रि अधिक बीत गई है यह देख साफी श्रमजीवी से कहने लगी—"भोजन और गीत वाद्य हो गये अब केवल सो रहना शेष है अस्तु अब तुम्हारा यहां से चला जाना ही ठीक है।"

श्रमजीवी ने अति विनीत प्रार्थना की—"दयार्द्र-स्वामिनी इतनी रात गये घर से निकालती हो। यहीं कहीं कोने में पड़ रहूंगा।

दयाकर अमीना ने कहा—"सत्य है बेचारा अंधेरे में कहां मारा फिरेगा।

जबीदा वाली—"यदि यह अपनी प्रतिज्ञा भङ्ग न करे तो यहां रहने में हमारा कुछ हर्ज नहीं हैं।

श्रमजीवी ने पुनः सौगन्ध दी तो जबीदा ने शिर हिलाकर कहा—"कुछ तेरे साथ ही हमारा यह बर्ताव नहीं है वरन् व्यक्ति विशेष सर्व साधारण के लिये है। द्वार का शिला लेख देख—यदि कारण वशात् कोई यहां रात्रि वास करे तो उसे हमारे किसी कार्य में वाधा देने का अधिकार न होगा वह जिस बात को नहीं जानता उसके पूछने का अनुरोध करेगा तो प्राणदंड भोगेगा।"

श्रमजीवी ने वचन वद्ध हो कहा—"चाहे आप कुछ ही क्यों न करें। मैं तो कदापि न बोलूंगा।"

और तो सब भोजन करने लगे परन्तु अमीना ने अनेक रजत-दीप प्रज्वलित कर २। ४ मनोरंजक पद पढ़ना आरम्भ किया सहसा द्वार खटखटाने का अस्फुट शब्द कर्णगोचर हुआ।

साफी द्वार खोलने बाहर गई। आगत मनुष्यों का नाम ग्रामादि पूछ आकर कहने लगी—"श्रमजीवी की नाईं तीन कलन्दर एक सी आकृति और रंग रूप के जो सीधी आंख से काने हैं, द्वार पर खड़े रात बसने की प्रार्थना करते हैं। उन्होंने इसी समय बुगदाद में प्रवेश किया है गीतवाद्य सुनकर यहां अटक गये हैं। निःसन्देह यदि रात भर रहेंगे तो हमें हँसावेंगे खूब ही; अतएव जैसी सम्मति हो उन्हें कह आऊं।

जबीदा ने हँसकर कहा—"अमीना ने श्रमजीवी रक्खा है तू कलन्दर बुलाले।"

भीतर प्रवेश कर तीनों कलन्दरों ने प्रणाम किया। यथा योग्य अभिवादन पश्चात् इन तीनों को भी भोज्य में सम्मिलित कर लिया।

तीनों कलन्दर श्रमजीवी की ओर देखकर कहने लगे—"कदाचित् यह अरबी यवन भान होता है अस्तु शरअ (स्लामी शास्त्र) के विरुद्ध मदिरा·······।"

"परोपदेशे पाण्डित्यम्। तुम स्वयम् दाढी, मूँछ मुडा, विकृत,

औरों को दोष लगाते हो।" श्रमजीवी कुछ कहने ही को था कि तीनों सुन्दरियों ने झगड़ा मिटा सन्धि करा दी।

जब कलन्दर भोजन कर चुके तो गाने और नृत्य का विशेष अनुरोध किया। वीणा बाँसुरी और मृदंग इत्यादि बजना प्रारम्भ हुआ। ऐसा प्रतीता होता था मानों प्रत्येक के कर्ण कुहर में सुधा बरसने लगी। सहसा उसी कोलाहल में किसी ने पुनः द्वार खटखटाया।

साफी ने द्वार पर जाकर देखा तीन मनुष्य और खड़े हैं।

शहरजाद ने शहरयार से कहा—"जो मनुष्य द्वार पर खड़े थे उनमें स्वयम् सम्राट खलीफा हारूं रशीद, जाफर सचिव और प्रधान चर मसरूर थे क्योंकि उक्त सम्राट का दैनिक नियम था भेष बदल कर रात्रि के समय प्रजा के सुख दुःख की विवेचना किया करते थे। जब यह तीनों व्यापारी वेश में उस गली में पहुँचे तो संगीत ध्वनि सुन सम्राट मन्त्री से कारण पूछने लगे।

मन्त्री ने कहा—"स्त्रियों का कण्ठ-स्वर बोध होता है। सम्भव है भोजन करके कुछ मदिरा पीली हो और उन्मत्त हो गा बजी रही हों अस्तु ऐसी दशा में आपका भीतर जाना उचित नहीं है कदाचित कोई कुछ कह बैठे।"

परन्तु सम्राट ने स्वीकार न कर भीतर जाने का बहुत आग्रह किया। मन्त्री ने विवश हो द्वार खटखटाया। अस्तु साफी ने बाहर आकर द्वार खोल दिया। मन्त्री ने अति विनीत भाव से कहा—"सुन्दरी, हम तीनों मोंसिल रहिवास व्यापारी तीन दिन बीते कि व्यापारार्थ महार्घ वस्तुएं लेकर यहाँ आये हैं। एक व्यापारी ने आज की रात्रि में हमें निवेद देकर बुलाया अस्तु सायं समय से ही हम उसके घर पहूंच गये और बड़े आनन्द से भोजन किया तथा बढ़िया २ मदिरा पी और गान वा नृत्य प्रारम्भ हुआ जब रात बहुत बीत गई सब ही उन्मत्त हो अनेक कौतुक करने लगे। उसी कोलाहल में कोतवाल महाशय आ पधारे कई को तो उन्होंने पकड़ लिया परन्तु हम भाग आए। जिस सराय में

हम ठहरे हुए हैं अंधेरे में मार्ग पा लेना अति कठिन है अस्तु आशा है आप हमें एक कोने में पड़ा रहने की आज्ञा प्रदान करेंगी।

नय विनय पर साफी ने तीनों व्यापारियों को भी भीतर घर में बुला लिया और द्वार का शिला लेख दिखाकर श्रमजीवी की नाईं इन्हें भी समझा दिया।

तीनों व्यापारियों ने वचन बद्ध हो कहा—"सुन्दरी हम ऐसे कृतघ्न नहीं हैं जो आपके किसी कार्य में बाधादें। आप निश्चिन्त रहें।"

भोज्य समाप्त हो चुका अस्तु साफी ने तीनों कलन्दर और व्यापारियों को निकटस्थ दूसरे कमरे में चले जाने का आवेदन किया और श्रमजीवी को बाँह ऊँची चढ़ाकर अपने पीछे २ आने का संकेत किया। अत्र अमीना ने एक चौकी कमरे में बिछ दी और श्रमजीवी को अपने संग ले जाकर कमरे से सटी कोठरी में से दो काली कुतियाँ जो कण्ठ में सुदृढ़ लोह साँकल द्वारा बंधी हुई थी, खिचवा लाई।

जब एक कुतिया जबीदा के समीप लाई गई तो कुष्ट और चीत्कार कर चरणों में गिर पड़ी। जबीदा ने बेंत द्वारा उसे मारना प्रारम्भ किया जब वह मारते २ थक गई कास रोगी के समान श्वांस चलने लगा तो कुत्ती को पैरों के बल खड़ा कर बार बार मस्तकाघ्राण और मुख चुम्बन किया अंगोछे से आंसू पोंछे।

पहिली कुतिया को कोठरी में बन्द कर दूसरी के प्रति वही क्रूर बर्ताव किया और पीछे वही आंसू पोंछ प्यार कर उसे भी वहीं कोठरी में बंधवा दिया।

तीनों कलन्दर और व्यापारी इस जटिल घटना से अति विस्मित हुए। खलीफा के आश्चर्य का कुछ पारावार न रहा बहुत कुछ सोचने पर भी इस प्रश्न की निवृत्ति न हुई। सहसा अमीना अति सुन्दर कारचोबी काम का हरित साटन वेष्टित एक छोटा सा बक्स उठा लाई और एक बांसुरी निकाल अपनी बहिन को दे दी।

बांसुरी में साफी ने एक ऐसा वियोगान्त गीत गाया कि सबके

मोह गये। वही बांसुरी साफी ने अमीना को दे दी। उसने भी स्वर मिलाकर एक विरह रागनी छेड़ी सब ही सुनकर विह्वल होगए वरन् आनन्द से स्वयम् वह भी राग समाप्त न कर सकी मूर्छित हो गिर पड़ने ही को थी कि सहसा जबीदा और साफी ने संभाल लिया।

दीर्घ निश्वास त्याग अमीना ने वस्त्र उतार दिये। सुन्दरी के दोनों कन्धे काले पड़ गये थे, आह किस निर्दय ने ऐसी कोमलाङ्गिनी को आहत किया है। अस्तु एक कलन्दर ने दुखित हो कहा—"अच्छा होता यदि हम कहीं वन में विश्राम लेते।शोक कि सब कुछ अपनी आँखों देखते हुए भी पूछने का साहस नहीं कर सकते।

खलीफा ने कलन्दर से पूछा—"क्या तुम इन सुन्दरी और कुतियों के कुछ थोड़े बहुत समाचार जानते हो?"

कलन्दर ने आश्चर्यित हो उत्तर दिया—"मैं कभी इस घर में नहीं आया स्वयम् मेरे आश्चर्य का पारावार नहीं।"

निदान खलीफा ने विस्मित हो श्रमजीवी इत्यादि सब से ही यह प्रश्न किया परन्तु सबने ही अज्ञानता प्रकट की। खलीफा ने परस्पर परामर्श से निश्चय किया कि श्रमजीवी पूछे। हम सात पुरुष और यह केवल तीन स्त्रियां हैं यदि विवश करें तो अवश्यमेव बतानेपर बाध्यहोंगी।

यद्यपि जाफर ने खलीफा को बहुत समझाया परन्तु वह ऐसे उद्विग्न हो रहे थे कि एक न मानी। एतएव जबीदा ने क्रुद्ध हो पूछा—"तुम लोग प्रतिज्ञा भंग कर परस्पर क्या परामर्श कर रहे हो।"

श्रमजीवी ने अति विनीत भाव से कहा—"दयानिधे, उपरोक्त घटना ऐसी संघटित हुई है कि सब ही विवर्ण और विमर्ष हो रहे हैं सबको ही इस रहस्य के जानने की बड़ी उत्कण्ठा है यदि कृपया……।"

अभी श्रमजीवी यही कहने पाया था कि तीन बार करतल-ध्वनि कर जबीदा ने बल पूर्वक पृथ्वी में पदाघात किया। हटात् एक द्वार खुल गया और सात मनुष्य बलिष्ट निशित कृपाण लिये विद्यमान हो पुछने लगे स्वामिन् यदि आज्ञा हो तो इन दुष्टों का शिर भङ्ग कर

यमपुर पहुंचा दें।"

"ठहरो ! पहले इन सबका वृतान्त पूंछ लेने दो।" यह कह कर जवीदा ने पूछना प्रारम्भ किया।"

सबके पूर्व श्रमजीवी ने इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया।

श्रमजीवी की संक्षिप्त कथा

सुन्दरी, मुझ भार ग्राही के आने का यह है कि आज प्रातः मैं अपना टोकरा लिये बाजार में इस आशा पर खड़ा था कि कोई भार उठाने निमित्त बुलावे सहसा आपकी बहिन ने मुझे बुलाया और वस्तु क्रय कर अपने संग यहां लिवा लाईं। अस्तु आपने जैसी दया माया का प्रचुर निदर्शन दिया है सम्भव नही अब प्राण............।"

"अच्छा तुम्हें क्षमा किया परन्तु अब यहां आने का साहस न करना।" यह कह जवीदा ने कलन्दरों से अपना वृत्तान्त सुनाने का आग्रह किया।

पहिले कलंदर (योगी की) कथा

सुन्दरी, मैं एक बड़े सम्राट का युवराज हूं। मेरे एक चचा थे वह भी पिता की नांई अधीश्वर थे और पिता के साम्राज्य के सन्निकट ही अपनी राजधानी बना शासन करते थे। उनके भी एक पुत्र मेरे समकालीन था सुतरां हम दोनों में बड़ी प्रीति तथा भ्रातृ-स्नेह था। मेरा नियम था कि वर्ष में एक बार चचा के यहाँ जाया करता और एक दो महीना वहां रहकर स्वदेश लौट आया करता था। एक बार मैंने अपने भाई को बड़े आमोद प्रमोद में अति प्रसन्न पाया। पूर्व की अपेक्षा बड़ी धूम-धाम और उछाह से मेरा स्वागत किया प्रेम-भोज्य दिया और अभ्यर्थना कर कहने लगा—"भाई अबकी बार मैंने एक बड़ा सुन्दर महल बनवाया है वरन् आज की रात ही उसमें प्रवेश करने का शुभ मुहूर्त है निस्सन्देह तुम उसे देखकर अतिप्रसन्न होगे परन्तु वचन बद्ध होओ कि इस रहस्य को किसी पर प्रकट न करोगे क्योंकि......।"

तुम्हारे विरुद्ध स्वप्न में भी कुछ नहीं करूँगा। जब सौगन्ध देकर मैंने उसे विश्वास दिला दिया तो वह बाहर चला गया थोड़ी देर में जब उसने पुनः प्रवेश किया तो सुरादेवी की कृपा से उसका मुख लाल हो रहा था साथ में एक परम लावण्यवती युवती थी।

युवती के अंगों की सुन्दर सुखमा का क्या कहना माधुर्य्य और सौन्दर्य सभी स्वाभाविक। बारीक कपड़े में से सुन्दरी के सुगठित शरीर का रोम २ प्रति भासित होता था, यद्यपि हम तीनों बड़ी देर तक सुरादेवी का अनुष्ठान करते रहे परन्तु मैं सुन्दरी के स्वरूप में ऐसा मोह गया जो नाम इत्यादि पूंछने का भी साहस न हुआ।

"अब यहां अधिक समय न नष्ट करना चाहिये।" यह कहकर भाई ने श्मशान पथ बताकर नवयोवना सहित अमुक गोलाकार समाधि के निकट ठहरने का अनुरोध किया। मेरे आश्चर्यित होने पर नवीन महल का वही गुप्तद्वार बताया।

अभी मैं नवयौवना सहित उक्त स्थान पर पहुंचा ही था कि जल पात्र तथा चूने से भरा टोकरा लिये भाई वहां टहलता मिला। समाधि की मिट्टी खोद और पत्थर हटाकर एक गुप्त द्वार निकाला। भाई के संकेत पर नवयौवना तो नीचे उतर गई परन्तु भाई ने मुझसे कहा—"हमारे आमोद-प्रमोद को देख आप व्यर्थ ही सकुचावेंगे यही अच्छा है कि आप फिर किसी समय के लिए देखना वञ्चित रक्खें परन्तु भाई, इस रहस्य को भूलकर भी किसी पर प्रकट न करना अब मैं जाता हूँ तुम यहां की मिट्टी एक सी करते जाना।"

"भाई कहाँ जाते हो ?" मैंने बहुत अनुरोध किया परन्तु उसने कुछ उत्तर न दिया। निदान् मैं विवश हो लौट आया उस समय मैं शिर पीड़ा से अकुला रहा था जाते ही सो गया। प्रात:काल उठकर उन सब बातों को मैंने भ्रम और स्वप्न समझकर सेवक से पूछा। परन्तु उसने—"राजकुमार रातसे न जाने कहां चले गये हैं।" यह सुनाया तो विश्वास हो गया निस्संदेह भाई रात्रि से तलगृह में ही आमोद प्रमोद में निमग्न

हैं । निदान् मैं प्रातः से ही भाई के खोजने में व्यस्त रहा परन्तु अधिक परिश्रम करने पर भी मैं उस तलगृह का द्वार न पा सका । क्रमशः चार दिन पर्यन्त उसकी खोज में समय बीता परन्तु विफल मनोरथ । यद्यपि चचा मृगया को गये हुये अभी तक नहीं लौटे थे परन्तु वहां मुझे एक २ पल पहर समान भान होता था अस्तु मैं मन्त्री से क्षमा प्रार्थना कर अपने नगर को चला आया ।

मैं आन्तरिक दुःख से विपन्न जब अपने महल के द्वार पर पहुंचा तो राजविद्रोही कहकर मुझे पकड़ लिया । मेरी अनेक प्रार्थना करने पर दयाकर, एक सैनिक ने सहानुभूति प्रकट कर कहा—"तुम्हारे पीछे राजा का स्वर्गबास होगया अस्तु वह-सम्मति से मन्त्री को राजपद ग्रहण करने की घोषणा की गई । जब किसी ने अपना स्वत्व प्रकाशित न किया तो बड़ी धूमधाम से मन्त्री का राज्यारोहणोत्सव मनाया गया और··· ।"

सैनिक की बात सुनना मुझे असह्य होगया । मेरा शिर घूमने पैरों के नीचे धरतीचक्र देने लगी मैं वज्राहत की भांति स्तम्भित रह गया । मन्त्री मुझसे बहुत द्वेष रखता था क्योंकि बाल्यावस्था में मैं गुलेल खेलने का बड़ा प्रेमी था एक दिन मैं अपनी छत पर गुलेल चला रहा था अनायास एक गिल्ला मन्त्री की आंख में, जो अपनी छत पर टहल रहा था बड़े वेग से लगा । एक आंख फूट गई । यद्यपि मैंने बहुत क्षमा प्रार्थना की परन्तु उसके क्रूर हृदय से द्वेष न निकला ।

जब मुझे वह सैनिक निर्दय मन्त्री के पास ले गया तो सब के पूर्व झपट कर उसने मेरी सीधी आंख में अङ्गुली घुसेड़ कर बाहर निकाल ली । मैं मर्म-भेदी पीड़ा से अचेत होगया ।

सचेत होने पर मुझे एक पिंजड़े में बन्दकर दांत पीसते हुये मन्त्री ने आज्ञा दी—"नगर बाहर ले जाकर इस पामर का बध करो और बव, स्यार, गिद्धों को खिला आओ ।"

चण्डाल चौकड़ी मुझे घसीट कर नगर के बाहर ले जा मारने को उद्यत हुई । परन्तु एक चण्डाल जो पिता के समय का था और

सके साथ मैंने बहुत उपकार किये थे मेरे रोदन और नय विनय पर उसे दया आई वह मुझे बध करने के मिस से दूर लिवा ले गया और समझाकर कहने लगा—"कहीं दूर देश चले जाओ, भूलकर भी इधर आने का साहस न करना नहीं तो……"

प्राणदान पाकर मैं आतुरता पूर्वक एक ओर को अति गोप्य चल पड़ा। कुछ दिनों पश्चात् मैं अपने चचा की राजधानी में पहुंच गया। मेरी दुखद कथा सुन चचा शोक से उन्मत्त प्राय होगये—"प्रभो ! पुत्र वियोग ही क्या कम था, कि कुसमय भाई ने भी संसार यात्रा की आह !……" निदान् वह देर तक अश्रु-धारा से अपना वक्षस्थल भिगोते रहे।

चचा के मर्मभेदी क्रन्दन से वज्रहृदय भी द्रवीभूत होता था मुझे भाई की सौगन्ध का किञ्चित् ध्यान रहा वह जो कुछ पूछते गये मैंने निःसंकोच समस्त वार्ता कह सुनाई।

चचा ने सुनकर कुछ भी आश्चर्य न किया क्योंकि वह पूर्व से ही भाई का चरित्र भली भांति जानते थे। दूसरे दिन मुझे लिवाकर चचा उसी समाधि के खोजने को चले, थोड़ी ही दूर गये होगे कि वही समाधि मिल गई फिर उसमें लोहे का द्वार जो भीतर से बन्द किया हुआ था मिला बड़ी कठिनाई से उसे खोला।

मकान में प्रवेश करते ही बड़ी दुर्गन्ध आई शनैः जब हम नीचे पहुंचे तो पर्दा उठाकर भीतर झांका—एक सुकोमल शय्या पर भाई और नवयौवना गाढ़ालिगन किये पड़े थे परन्तु भगवत्कोप से भस्म होगये थे। मैं यह दशा देखकर अति भयभीत हुआ। परन्तु चचा किंचित विचलित न हुए वरन् घृणा से भाई के मुख पर थूक दिया। और अति विषन्न हो कहने लगे—"पापियसी, तूने संसार में ही पाप का दंड पा लिया परलोक में न जाने तेरी क्या गति होगी।" यह कहकर चचा ने कई जूते उसके मुंह पर मारे।

चचा के इस व्यवहार से मुझे अपार दुःख हुआ विषन्न हो मैंने

कहा—"ऐसा क्या गुरु अपराध किया है जो पुत्र शव के प्रति ऐसा क्रूर बर्ताव करते हैं?"

क्रुद्ध हो चचा ने कहा—"यह कुल कलङ्क इससे भी अधिक घृणा का पात्र है--यह बाल्यकाल से ही अपनी सहोदरा भगिनी को अति प्यार करता था शनैः २ जब दोनों ने युवावस्था में पदार्पण किया तो प्रणय भी दिन दूना बढ़ने लगा। आह, जो सारी पृथ्वी में कुमार कुल गौरव समझे जाते हैं वह ऐसे लम्पट दुष्कर्म्मानुरक्त हों तो मान मर्यादा की रक्षा कहां, अस्तु इस प्रकार दोनों को अकार्य्य में प्रवृत्त देख मैंने बड़े यत्न से पृथक् २ रहने की सुविधा कर दी परन्तु मोह से ज्ञान तिरोहित हो जाता है। यद्यपि वे परस्पर मिल नहीं सकते थे तथापि दोनों ही प्रेम रज्जु में जकड़े हुए थे। दुष्ट कन्दर्प को कोई कर्म असाध्य नहीं है उसने अति गोप्य यह तल गृह निर्माण कराया और जब मैं मृगया को गया तब सुअवसर पा प्रेमिका भगिनी सहित यहां आ गया। चिरकाल पर्यन्त सुख सम्भोग में रत रहें अतएव समस्त आवश्यकीय वस्तु यहां एकत्रित कर रक्खी थीं परन्तु ईश्वर ने उसकी आकांक्षा पूर्ण न की।" निदान उपरोक्त घृणोत्पादक कथा वर्णन कर चचा अति दुखी हुए।

तल गृह से बाहर निकलकर चचा ने मुझे हृदय से लगा लिया और रुद्ध कण्ठ तथा भग्न स्वर से दुःख प्रकाश करते हुए पोष्य पुत्र स्वरूप मुझे अपने राज का उत्तराधिकारी बनाने का प्रस्ताव छेड़ा। अभी हम मार्गमें ही थे सहसा रणबाजों का अस्फुट शब्द कर्णगोचरहुआ।

चचा के पूछने पर विदित हुआ कि वही मन्त्री जो पिता के सुविस्तीर्ण राज्य का स्वयम् राजा बन बैठा है चचा के राज्य को भी छीन लेना चाहता है अस्तु इसी अभिप्राय से सदल बल बहुत सी सेना लेकर आक्रमण कर दिया है। पिता के राज्य के अन्तर्गत ही चचा का राज्य था बहुत थोड़ी सेना रहती थी सहज ही शत्रु ने विजय पाली यद्यपि संग्राम स्थल भयंकर किया परन्तु वह सेना की अधिकता वश पराजित हो शत्रु के हाथ से मारे गये। कुछ देर पर्यन्त मैंने भी सामना

किया किन्तु एक अवसर पर चचा की नाईं मेरा भी यमपुर पयान होता परन्तु एक सैनिक ने दयाकर मुझे निका दियाल । मुझे कोई पहचान न सके अतएव प्राण भय से साधुवेश में मैंने दूर देशों में पर्यटन प्रारम्भ कर दिया दुर्भाग्य से आज ही इस नगर में प्रवेश कर कहाँ रात्रि व्यतीत करूं इस विचार में ही था कि अनायास इस योगिराज से साक्षात् हुआ । प्रथम ही दण्ड प्रणाम पश्चात् विदित हुआ कि उक्त महात्मा भी मेरी नाईं अपरिचित अभी ही इस नगर में पधारे हैं । सहसा तीसरे महात्मा जी ने भी पदार्पण किया । हम तीनों ही महान् दरिद्री सुविशाल सम्राट हारूंरसीद के राज्य में जीविका निर्वाहन हेतु आये हैं । ईश्वर माया के संयोग से हम तीनों ही सीधी आंख से काने तथा एक सी दशा में प्रविष्ट हैं । सराय में जाकर विश्राम लेते सो गाँठ में कुछ धन नहीं था अस्तु हमने परस्पर निश्चय किया कि किसी धनी के यहाँ रात्रि व्यतीत करें । दयानिधि ईश्वर को कोटि २ धन्यवाद है कि उसने आपके मङ्गल धाम में पहुंचा दिया ।

दूसरे कलंदर (योगी) की कथा

सुन्दरी ! बाल्यकाल में मुझे विद्या प्रेमी पाकर माता पिता ने बड़े बड़े शास्त्रज्ञ पंडितों के आधीन कर दिया । मेरी विलक्षण बुद्धि देख अध्यापक लोग चमत्कृत और उत्साहित होकर बड़े प्रेम से पढ़ाते थे । निदान मैंने समुचित ध्यान प्रदान पूर्वक थोड़े दिनों में ही अनेक विद्या सीखली शब्द शास्त्र राजनीति, व्यायाम कौशल अस्त्र और संगीत विद्या काव्य, इतिहास, वैद्यक, इत्यादि अनेक विद्या कंठस्थ होगई सुन्दर स्वच्छ लेखन में तो अद्वितीय था निदान जब मेरे गुणों की ख्याति दूर देशों तक पहुंची तो भारत सम्राट मुझे देखने को अति लालायित हुए । एक सुज्ञ को वहुमूल्य वस्तुएं उपहार स्वरूप देकर पिता के पास, मुझे बुलाने को पत्र भेजा ।

पिता ने प्रसन्न हो मुझसे कहा—'पुत्र ! राजकुमार को देशाटन

से अनुभव तथा विदेशीय राजाओं के आचार व्यवहार सीखना परमावश्यक है और भारत सम्राट आधुनिक शासन कर्त्ताओं में सर्व मान्य गण्य नृपति हैं तुम्हारे जानेसे अधिक प्रीति और घनिष्टताका कारणहोगा।

निदान मैं अपने पिता की आज्ञा से कुछ दास दासी साथ ले धावन के साथ चल दिया। कुछ दिनों पश्चात् सहसा मार्ग में अस्त्रशस्त्रों से सुसज्जित पचास बटमारों ने हमें घेर लिया वह जानते थे हमारे पास भारज सम्राट की भेंट निमित्त बहु मूल्य वस्तुओं से लदे हुए दस घोड़े हैं। यद्यपि हमारे साथियों ने बड़ी वीरता से उसका सामना किया परन्तु अन्त में सब पराजित हो मारे गये सम्भव है भारत सम्राट की ओर से प्रतिनिधि बनने में ठग भयभीत हो भाग जावें परन्तु वह और अधिक क्रुद्ध हो सम्राट के प्रति अपशब्दों का प्रहार कर अपनी कूटनीति दर्शाने लगे। स्वयम् मैंने भी यथा साध्य उन्हें निवारण करने का प्रयत्न किया परन्तु मैं अकेला और वह ४०-५० सशस्त्र, निदान मैंने भी उनकी दृष्टि बचा कहीं भाग जाने में ही कुशल देखी।

जब मैं घोड़े को भगाते हुए दूर निकल आया तो ईश्वर को सहस्रश: धन्यवाद दे घने बन में कुछ विश्राम लेने को ठहर गया। मेरे उतरते ही घोड़ा धड़ाम से गिर पड़ा निकट ही सरोवर था। जब तक मैं पानी लेकर लौटूं घोड़े ने तड़प २ कर प्राण त्याग दिये।

अश्व वियोग असह्य हो गया। ठगों की मार से समस्त शरीर आहत निर्जन बन में क्षुधित तृषित इधर उधर भटकने लगा। रात्रि होने पर पर्वत श्रेणी के तट छोटी सी कंदरा में बिना अन्न जल पड़ रहता भाग्य से मदि कहीं कुछ फल फूल मिल जाते उन्हीं को खाकर मन्तोष करता, किंबहुना महीने प्रश्चात् एक बड़े नगर में जो धन जन से परिपूर्ण था प्रवेश किया यद्यपि नगर की स्वच्छता देख मुझे बहुत आश्वासन मिला तथापि मलीन वस्त्र, पदत्राण हीन आदि के कारण जर्जरित मन में बहुत सकुचाता था परन्तु यहां से स्वदेश कहां और कितनी दूर है यह जानने की उत्कंठा से एक सूचीकार की

दूकान पर पहुँचा। मेरी दशा देख दया कर दरजी ने पास बैठा कर नाम ग्रामादि पूछा।

सूचीकार की सहानुभूति देख मैंने अपना सब वृत्तान्त आद्योपान्त कह सुनाया। सूचीकार आश्चर्यित हो मेरा मुख घूरते हुए भय दिखाकर कहने लगा—"भूलकर भी यहां अपना वृत्तान्त किसी स न कहना यहाँ के राजा साहब तुम्हारे पिता के परमशत्रु हैं यदि किसी प्रकार तुम्हारा हाल उन्हें मालूम हो गया तो निस्सन्देह वह घोर अत्याचार करेंगे।"

उपर्युक्त भय दिखा कर सूचीकार मेरे लिये भोजन लाया वरन् उसी समय से मेरे रहने के लिए अपने घर में एक कोठरी रहने को दे दी। जब दो चार दिन बीत गये तो सूचीकार ने मुझसे पूछा—"तुम्हें कोई काम ऐसा भी आता है जो जीविका निर्वाहन कर सको?"

'मैं अनेक विद्या और कला कौशल पारगामी हूँ।"

सूचीकार हँसकर बोला—"भाई इस नगर में विद्यावान का कुछ सत्कार नहीं हो सकता यदि तुम बन से जलाने की लकड़ी लाया करो तो बड़े आनन्द से कालक्षेप कर सकोगे क्यों कुल्हाड़ी रस्सी मँगा दी जावे!" निदान मै विवश हो भारग्राही निकृष्ट कर्म करने पर बाध्य हुआ। प्रतिदिन लकड़हारों के सङ्ग बन से लकड़ी लाता और विक्रय कर एक सोने का टुकड़ा लाभ करता। एक वर्ष में ही मेरे पास बहुत धन हो गया और फिर भी लकड़ियों का अभाव बना ही रहा मैं अपने उपार्जित धन में से प्रतिदिन ही सूचीकार को कुछ कुछ दे दिया करता था।

एक दिन में बन में दूर निकल गया जब मैंने एक वृक्ष काट कर उसकी जड़ खोदना आरम्भ किया तो सहसा मुझे लोहे का बन्द द्वार दृष्टि पड़ा। बड़े परिश्रम से मैंसे उसे खोला।

द्वार खुलते ही नीचे जाने को सीढियाँ दृष्टिगत हुई अस्तु मैं बड़ी सुगमता से कुल्हाड़ी और रस्सी सहित नीचे उतर गया। आगे समभूमि में एक विशाल महल इन्द्रपुरी की अनुहार बना हुआ था। प्राकार से आगे श्याम और उप ललित प्रस्तर के स्तम्भ तथा ऊपर से

नीचे तक स्वर्ण पत्र वेष्टित एक लम्बा वरण्डा जिस में रति की प्रतिकृति एक नवयौवना बैठी दृष्टि पड़ी । भला प्रकृति सौन्दर्य को देखकर कौन मोहित नहीं होगा ? युवती का कटाक्ष से देखना मानों सुन्दरता का तरङ्ग छुटकर युवा लकड़हारे को विव्हल किये देता था वह थके तैराक की नाईं डूबते उछलते हृदय से जहां का तहां खड़ा रह गया ।

युवती ने आंख उठाकर देखा तो वह भी उसके स्वरूप में मोह गई । दीर्घनिस्वास त्याग पूछने लगी—"तुम कौन हो ?"

"मैं एक क्षुद्र मनुष्य हूं ।"

आश्चर्यित हो युवती ने कहा—"यहां कैसे तुम आये ! पच्चीस वर्ष से अधिक बीते मैं इसी स्थान में रहती हूं परन्तु तुम्हारे अतिरिक्त आज पर्यन्त किसी मनुष्य के दर्शन नहीं हुये ।"

सुवती के सौन्दर्य पर ऐसा मुग्ध हुआ कि वाक् शक्ति रहित होगया । बड़ी देर पीछे मैंने कहा—"बाले ? तुम्हें देखकर सब दुख विस्मरण हो आल्हाद से गद्‌गद् हो गया हूं । मैं प्रण करता हूं कि तुम्हें इस घोर दुःख से शीघ्र मुक्त करूंगा ।"

विषन्न हो तुवती ने कहा—"मुझे भी इस बन्धन में रहना कदापि स्वीकार नहीं है परन्तु विवश हूं । तुमने सुना होगा कि सम्राट अबूतैमरस नामक आबूनी द्वीपाधिपति हैं जहां आबनूस की लकड़ी उत्पन्न होती है मैं उसी की एक मात्र सन्तान हूं । पिता ने मेरा विवाह समारम्भ से अपने भतीजे के साथ कर दिया था पूर्व इसके कि मैं सुसराल पहुँचती एक पिशाच मुझे उड़ा लाया । भयानकाकार पिशाच देख मैं अचेत हो गई । थोड़ी देर में जब मैं सचेत हुई तो अपने को इस जादू भवन में पाया । मेरे दुःख की सीमा नहीं है विवश यहां पड़ी २ ईश्वर से मृत्यु कामना की प्रार्थना किया करती हूं । पिशाच नियमित रूप से दाशाहिक केवल एक रात्रि को मेरे पास आता है उसकी पाणिग्रहीता पत्नी अभी तक जीवित है उसी भय से निरन्तर सदैव मेरे पास रहने का साहस नहीं करता । यदि कार्य वश दश दिन के भीतर ही उसे

बुलाने की आवश्यकता आपड़े तो मैं उक्त पैशाचिक गृह जो मेरे शयनागार से सटा हुआ है स्पर्शमात्र से उसे बुला लेती हूं। चार दिन हुए जब वह यहां आया था अब छटवें दिन आवेगा अस्तु पांच दिन पर्यन्त मैं तुम्हें निर्भीक अपने पास रख सकती हूं वरन् सदैव ही नौ दिन तो यहां रहो और दसवें दिन बाहर चले जाया करना।"

मैंने युवती का कहना सहर्ष स्वीकार कर लिया किंबहुना बड़ी देर तक हम दोनों परस्पर परामर्श करते रहे।

युवती मुझे स्नानागार में लिवा लेगई। जब मैं बाहर आया तो अयुत्तम वस्त्र पहिना एक बड़े दालान में जो सब प्रकार अलंकृत और सुसज्जित था बड़े तकिये के सहारे ले जाकर बैठाया। अनेक सुस्वादु व्यञ्जन, यथाविध थालों में लगे हुए थे। भोजन कर युवती के शयनालय में जा विश्राम किया दूसरे दिन प्रात: कालीन स्वादिष्ट पाक के साथ २ सुगन्धित मदिरा पिलाई जब मादकता विशिष्ट हुई तो मैंने कहा—"प्यारी राजनन्दिनी चिरकाल से तुम जीवन्मृत्त इस पैशाचिक काण्ड में ग्रसित अपार कष्ट भोग रही हो मेरे साथ न चलो देखूं मेरे जीवनकाल में तुम्हें कौन कुदृष्टि से देख सकता है?"

दीर्घनिश्वास त्याग युवती बोली—"हैं! हैं!! क्या बकते हो प्यारे राजकुमार, यहां से भागने की आशा केवल दुराशा है यही अच्छा है नौ दिन तक सुखपूर्वक यहां रहो केवल दशम दिवस उस दुष्ट के लिये वञ्चित रहने दो।"

एक दिन युवती उस पिशाच के पास रहेगी यह सुन मुझे बड़ा दु:ख हुआ—"बरारोहे, तुम इतना पिशाच से क्यों डरती हो मैं इस नश्वर जादू को क्षणमात्र में छिन्न भिन्नकर दूंगा। तनक उस दुष्ट से साक्षात् तो होने दो (रोष से) यह छूरिका जब तक उसका लहू न पीलेगी शांत नहीं होगी।"

अग्रशोची युवती ने मुझे समझाया कि भूलकर भी ऐसा विचार न करना इस जादू को कदापि न छू लेना अन्यथा दोनों के प्राण सङ्क

में पड़ जायेंगे। परन्तु सुरादेवी के माहात्म्य से ऐसा ज्ञान तिरोहित हुआ कि भले बुरे का कुछ बोध ही न रहा। लोह पत्र संगठित जादू यन्त्र में मैंने बल पूर्वक पदाघात किया। ऐहिक निविड़ यन्त्र सड़ी लकड़ की तरह चूर २ हो गया हठात् भुकम्प की तरह समस्त महल थर थर कांपने लगा चतुर्दिक घोर अन्धकार छा गया किन्तु घन गर्जन के समान अस्फुट शब्द और दामिनी की दमक के सदृश आग की चिनगारियों का वर्षाव होने लगा। यह भयानक दृश्य देख मै घबरा गया।

सुन्दरी यह दशा देख बिषन्न हो कहने लगी—"आः, तुमने बड़ी भूल की यथासम्भव यहां से शीघ्र भाग जाओ।"

निदान में प्राण भय से रस्सी और कुल्हाड़ी वहीं छोड़ भाग निकला अभी मैं पहिली सीढ़ी तक ही पहुँचा था कि वह दुष्ट पिशाच विद्यमान हो कहने लगा—"इस समय मुझे क्यों याद किया है ?"

युवती भयभीत हो विनीत-भाव से बोली—"आज मैंने थोड़ी सी मदिरा पी ली थी उसके नशे में जादू यन्त्र से पैर टकरा गया आशा है क्षमा करेंगे।"

क्रोधित पिशाच कर्कश स्वर से कहने लगा—"दुष्टा बारवनिते, क्या मुझे धोखा देती है। अवश्यमेव तूने किसी को आत्म समर्पण किया है। कुछ इस रस्सी और कुल्हाड़ी को पैर नहीं थे इन्हें कौन लाया ?"

युवती लजा गई पुनः साहस कर बोली—"मैं नहीं कह सकती कहाँ से आईं। सम्भव है जल्दी में कहीं से तुम्हारे साथ लगी चली आई हों ?"

यह सुन पिशाच ने युवती को मारना प्रारम्भ किया। युवती ने दुःख से कातर हो मर्म भेदी क्रन्दन से घर किरात पुरी बना दिया।

आह मेरे कारण ही कोमलाङ्गी को असह्य-वेदना सहनी पड़ी है धिक्कार है मुझे। निदान में अन्यमनस्क बाहर आ पूर्ववत् द्वार बन्दकर लकड़ियों का गट्ठर शिर पर धरे नगर में आया। सूचीकार मुझे देखकर अति प्रसन्न हुआ "कल से तुम नहीं लौटे कहीं रहस्य प्रकट होकर

राजा ने तुम्हें बन्दी न बनाया हो यह आशङ्का थी।"

गत रात्रि जो घटना संघटित हुई थी मैंने सूचीकार को कुछ भी न बतायाबरन न् चुपचाप अपनी कोठरी में जा लेटा अभी मैं किवाड़ भी बन्द नहीं कर सका था कि हटात् सूचीकार ने मुझे सम्बोधन कर कहा—"एक अपरिचित वयोवृद्ध तुम्हारी कुल्हाड़ी और रस्सी लिये द्वार पर खड़े हैं वह कहते हैं मार्ग में मुझे पड़ी पाई है। तुम्हारा कोई साथी जान पड़ता है परन्तु वह तुम्हारे अतिरिक्त और किसी को देना नहीं चाहता।"

यह सुन मैं सिर से आपाद थर २ कांपने लगा सहस्र वृश्चिक दंशन के समान वेदना होने लगी। सूचीकार यह दशा देख अति विस्मित हुआ वह कुछ कहना ही चाहता था कि सहसा मेरी कोठरी की दीवार फट गई और वही पिशाच कुल्हाड़ी और रस्सी हाथ में लिये क्रोध से भोंहें तानते हुए बोला—"मैं पिशाच सम्राट अबलीस का दौहित्र हूँ। मुझसे झूठ बोलकर कोई सुख से कालक्षेप नहीं कर सकता अस्तु सच २ कहो यह कुल्हाड़ी और रस्सी तुम्हारी ही है ना।

मैं बड़े असमन्जस में पड़ गया अभी मैंने कुछ उत्तर नहीं दिया था कि वह पिशाच मेरा हाथ पकड़ कर बाहर खींच लाया और देखते ही देखते अकस्मात् बड़े वेग से आकाश की ओर ले उड़ा वह एक क्षण में ही इतना ऊंचा हो गया कि कोई यत्न पूर्वक महीनों में भी नहीं पहुंच सकता। शनैः २ वह पिशाच पृथ्वी पर उतरा। बल पूर्वक पदाघात करने पर सहसा वही विशाल महल निकल आया।

पिशाच ने मुझे पकड़े हुऐ महल में प्रवेश किया। सन्मुख ही वही परिचिता राजकुमारी आसन्न मृत्यु, अति मलीन, वस्त्रहीन बैठी दिखाई दी मर्म भेदी क्रन्दन तथा ठौर २ रक्त श्रव देख अति अमङ्गल का बोध होता था।

पिशाच मेरी ओर संकेत कर राजकुमारी से बोला—'निर्लज्ज यही तेरा प्रणयी है ?"

"मैं तो इस बेचारे को जानती भी नहीं क्यों उपहास कर व्यर्थ

कष्ट देता है। कहकर राजकुमारी और अधिक रुदन करने लगी।

"दुष्टा, मैं तेरे षडयन्त्र को भली भांति जानता हूं। निस्सन्देह यही तेरा प्रेमी है और वास्तव में तू इसे नहीं जानती तो यह ले खंग इसका शिर काट दे।" यह कह कर पिशाच ने तीव्र खङ्ग युवती के आगे रख दिया।

"मुझ में हाथ उठाने की भी शक्ति नहीं है और फिर एक निरपराधी का वध करना घोर पाप है। मुझे क्षमा कीजिये" यह कह कर युवती ने खड्ग दूर फेंक दिया।

पिशाच ने खड्ग उठाकर कर्कश स्वर से कहा--"मैं भली भांति जान गया क्यों बहाना बनाती है। (मेरी ओर देखकर) ले तू ही इसका शिर काट दे?"

युवती राजकुमारी ने भ्रूक्षेप कर इंगित से कहा—"अपने प्राण बचाने के निमित्त मुझ आसन्न मृत्यु का निस्संदेह शिर काट दे।" परन्तु मैंने युवती का सत्य प्रेम देखकर खड्ग दूर फेंक दिया—"ओह, जिसे मैं जानता नहीं क्यों कर उसके प्राण विच्छिन्न कर सकूंगा। और विशेष कर ऐसे रमणी रत्न के जो घड़ी पल ही संसार यात्रा करने वाली है। मैं तेरे आश्रित हूं जो उचित समझे दंड दे परन्तु यह मुझसे कदापि न होगा।"

हम दोनों की ओर से ऐसा कठिन उत्तर पाकर पिशाच अति विषन्न हुआ क्रोध कम्पित अधरों पर दन्तरोपण करने लगा निर्दयी ने उस कोमलांगी के दोनों हाथ काट डाले वह निपतित हो उसी क्षण स्वर्ग सिधार गई। यद्यपि युवती की प्राण वायु देह पिञ्जर को परित्याग कर गई थी किन्तु तब भी वह देहलावण्य विहीन नहीं हुई थी, निर्दय पिशाच ने हाथ काट प्राण विच्छिन्न कर दिये थे किन्तु उस समय भी उसका पूर्ण सौन्दर्य हरण करने में समर्थ नहीं हुआ था। इसी से लावण्यवती को देखकर अनुमान होता था कि वह स्वर्ग राज्य के किसी निष्कण्टक स्थान में आत्मविस्मृत होकर प्रगाढ़ निद्रा में निमग्न हो गई है।

यह देख मेरा शरीर थर २ कांपने लगा पैरों के नीचे धरती धक्क देने लगी आंखों में अंधेरा छा गया मैंने पिशाच से अपने प्राणान्त को अनेक प्रार्थना की, परन्तु उसने अङ्गीकार न किया । पैशाचिक नियमानुसार जिस स्त्री को कुलटा पाया जाता है प्राणदण्ड दिया जाता है परन्तु उसके मनोनीति प्रेमी को यही दण्ड पर्याप्त है कि उसे पशु बनाकर छोड़ दियाजावे अस्तु बता तुझे किस पर्याय (कलेवर) में परिणत करूँ ।

मैंने अति विनीत भाव से अनेक प्रार्थनाकर कहा—'प्रभो जब आपने प्राण भिक्षा दी है तो कृपा पूर्वक मनुष्य शरीर में ही बना रहने दीजिये मैं आपके गुणानुवाद आजन्म गाया करूँगा । स्वप्न में भी अब मुझसे ऐसा अपराध न होगा आपको उचित है कि जिस प्रकार एक भद्र पुरुष ने अपने कलह प्रिय द्वेषी पड़ोसी के दुष्टाचरण विस्मरणकर उपकार किया उसी प्रकार आप भी क्षमा करेंगे ।"

पिशाच ने विस्मित हो पूछा—"वह क्यों कर ?"

अस्तु मैंने इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया ।

देवी और भद्र पुरुष

एक बड़े नगर में दो मनुष्य वास करते थे । दोनों के घर आमने सामने थे परन्तु इनमें एक अतिद्वेषी था उसका जिसमें पड़ौसी का सर्वथा अनिष्ट हो यही एक मात्र कर्तव्य था । निदान् भद्र पड़ौसी दुखी हो किसी दूसरे नगर में जा बसा । साधारणत: एक निर्जन गृह जिसमें छोटी सी वाटिका तथा जीर्ण भग्नावशेष अन्धकूप था, क्रय कर रहने लगा कुछ ही दिनों के एकान्त वास से भद्र पुरुष के चित्त में वैराग्य उत्पन्न हुआ । वहीं एक छोटी सी कुटी बनवा साधु सन्यासियों के सत्संग से आध्यात्मिक-प्रक्रिया का विधान करने लगा । देवानुष्ठान, मनोहर प्रभावशाली वक्तृता एवम् निष्पक्ष भलाई और सदुपकार देख सर्वसाधारण बड़े सन्मान से मिलने लगे वरन् कीर्ति सुनकर दूर २ से लोग दर्शनों को आने और सत्संग से लाभ उठाने लगे । परन्तु जब ऐसी

सुख्याति द्वेषी के कर्ण कुहर तक पहुंचती तो उसे बड़ा दुःख हुआ किन्तु उसकी निन्दा एवम् मृत्यु कामना पर तत्पर हो कुटी पर पहुंचा ।

पड़ोसी को देखकर भद्र पुरुष ने सम्मान पूर्वक उसे आसन दिया कुशल क्षेम पूंछी । परन्तु द्वेषी ने अवसन्नता दिखाकर कहा—"मुझे आपसे निरनिराले में कुछ कहना है ।"

परस्पर परामर्श करते हुये जब दोनों अन्धकूप के पास आये तो द्वेषी ने सुअवसर पा भद्र पुरुष को कुए में ढकेल दिया । और स्वयम् छिपकर घरको भाग गया वह अति प्रसन्न था कि सदैव को ही निवटारा होगया परन्तु भद्र पुरुष बड़ा भाग्यशाली था उस कुये में परी (अप्सरा) रहती थी उन्होंने उसे सावधानी से एक ओर बैठा दिया ।

भद्र पुरुष ने सोचा कुए के गिरने में भी विशेषत्व है क्योंकि अन्तरिक्ष से अवतरण कर महन से भी महत्पुरुष का प्राण अपहरण करने वाली मृत्यु का आघात निवारित करने या उसे आयत करने का आयोजन भद्र पुरुष में पूर्ण रूप से विद्यमान था । किस सुकोमल कर ने मुझे आश्वासित किया है । इधर उधर देखने पर कुछ दिखाई न दिया । वह अति विस्मित हुआ परन्तु उसी कोमल स्वर में "क्या तुम इन सिद्ध पुरुष को पहिचानती हो ?" श्रवण गोचर हुआ किसी ने कोमल स्वर में उत्तर दिया—'नहीं ।"

अब पुनः पहिला कण्ठ स्वर कर्णगत हुआ—"बहिन यह बड़े सत्पुरुष हैं इसी मकान में इनकी आध्यात्म विद्या की पताका गगन स्पर्श करती सदर्प लहरा रही है । द्वेषी पड़ोसी के कारण अपना नगर त्याग भगवदाराधना में सन्तुष्ट था कि उस दुष्ट ने यहां आकर भी पीछा न छोड़ा बेचारे को कुए में ढकेल दिया यदि हमारी सहायता न मिलती तो निस्सन्देह कराल काल का कवर होगया होता । परन्तु बहिन कुछ और भी तुमने सुना है—कल यहां का राजा इन्हीं महात्मा के पास आकर अपनी रुग्ण पुत्री के स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना करेगा ।"

बीच में रोककर दूसरी ने पूछा—"राजकुमारी किस संघातिक

रोग में ग्रस्त है जो राजा सरीखे·····?"

पहिली ने बात काटकर कहा—"राजकुमारी असामान्य सुन्दरी युवती है डिम् डिमात्मज मैमों पिशाच उसपर अनुरक्त है। यही कारण है जो बड़े २ वैद्यवर तुष्टि का उपादान अद्यावधि नहीं कर सके एक उपाय है यदि यह उसका अवलम्बन करें तो निस्संदेह राजकुमारी निरोग होकर सम्मान का कारण बनेगी। उक्त महात्मा के यहां एक काली बिल्ली है उसके पूंछ के सिर पर एक श्वेत चिन्ह है, यदि यह उसके सात बाल उखाड़कर अपने पास रखलें और यथावकाशबहिर्मुख प्रक्रिया के साथ २ राजकुमारी की नासिका में उक्त बाल जलाकर धुंआं दे दें तो तत्क्षण स्वस्थ हो जावेगी।

प्रभात होने पर महात्मा भद्र पुरुष खन्दकों में पैर रखते हुये सुगमता से ऊपर चढ़ आये। निदान् महात्मा जी को सकुशल कुटी पर आया देख सबही अति प्रसन्न हुये। थोड़ी देर पश्चात् जब बिल्ली कुटी में आई तो भद्रपुरुष सात बाल उखाड़ राजा के आने की प्रतीक्षा करने लगे। सहसा उसी समय प्रधान कर्मचारियों सहित राजा ने कुटी में प्रवेश किया उचित अभिवादन पश्चात् राजा को उच्चासन पर विराजमान किया।

आश्वासित हो राजा ने कहा—'महात्मन् योगवल से आपको मेरे आने का कारण ज्ञात होगया होगा। यदि आपके आशीर्वाद से राजकुमारी निरोग हो जावे तो जीवन सफल हो।"

भद्र पुरुष ने कहा—"राजन्, यदि आप राजकुमारी को यहाँ बुलवालें तो सम्भव है ईश्वर के अनुग्रह से रोग समूल नष्ट हो जावे।"

राजाज्ञा से उसी समय राजकुमारी बुलाई गई। राजचेरी ने कुमारी का मुख इस प्रकार छिपाया था कि सहसा किसी की दृष्टि न पड़े।

भद्र पुरुष ने वही सात बाल अग्नि में डाल धूनी दी। राजकुमारी की नासिका में धुंआं प्रवेश करते ही मैमूं पिशाच ने वड़ा

कोलाहल मचाया वरन् "जला २" कहता हुआ त्वरित भाग गया।

राजकुमारी निरोग होकर बड़े विस्मय से पूछने लगी—'यहाँ कौन मुझे लाया है ?"

राजा ने प्रसन्न हो कुमारी को हृदय से लगा लिया बार बार मुख चुम्बन और मस्तकाघ्राण पश्चात् भद्र पुरुष के कर कमल पर शान्ति चुम्बन प्रदान कर कहने लगा—"मैं इस महान् उपकार से क्यों कर उऋण होऊंगा ?"

सब ने बहु सम्मति से उत्तर दिया—'इसका प्रत्युपकार यही है कि राजकुमारी केअमूल्य कर का इन महात्मा जी को भागीबनाया जावे।"

निदान राजा ने सहर्ष राज सुता भद्र पुरुष को विवाह दी कुछ दिनों पश्चात् जब वहाँ का प्रधानमन्त्री कालवश हुआ तो भद्र पुरुष को ही उस पद के उपयुक्त समझा गया परन्तु ईश्वर इच्छा थोड़े ही दिनों में राजा भी स्वर्ग सिधारे और अब जामाता भद्र पुरुष अतिरिक्त और कोई राज्य का उत्तराधिकारी अवशिष्ट न था अस्तु बड़े समारम्भ से भद्र पुरुष का राज्यारोहणोत्सव मनाया गया।

जब समस्त राज्य पर भद्र पुरुष का स्वत्व होगया तो वह एक दिन राजकर्मचारियों सहित कहीं को जा रहा था कि सहसा अपने चिर शत्रुद्वेषी पड़ोसी को देख मन्त्री द्वारा अपने पास बुला कहने लगा—"मित्र तुम्हें देख मुझे अति प्रसन्नता हुई एक सहस्र मुद्रा तथा बीस गठरी बहुमूल्य वस्त्राभरण आपके अर्पण है।"

सुन्दरी, जब मैंने उपरोक्त कथा कह कर पिशाच से अपराध क्षमा की प्रार्थना की तो उसने क्रुद्ध हो मुझे पकड़ लिया। और ऊपर को उड़ कर उच्च पर्वत श्रेणी पर छोड़ दिया और एक मुट्ठी मिट्टी पर कुछ मन्त्र पढ़ कर मेरे ऊपर डाल दी। अस्तु मैं उसी क्षण बानर बन गया।

पिशाच तो अन्तर्द्धान हो गया परन्तु मेरी बड़ी बुरी दशा हुई क्या करूं किधर जाऊं, यहाँ से मेरा देश किस दशा में कितनी दूर है

निदान इसी प्रकार पश्चात्ताप करता भाग्य को कोसता एक ओर को चल पड़ा पर्वत से उतर कर मैं एक देश में आया और एक मास पर्यन्त पर्यटन: पश्चात् समुद्र तट पर पहुंचा। सामने ही कूल पर जहाज देख चाहा किसी प्रकार यान तक पहुंच जाऊँ तो संभव है कुछ सुविधा हो जावे अस्तु मैं एक वृक्ष से लकड़ी तोड़ धसीटता हुआ किनारे पर लेगया और उसको समुद्र में लेकर जहाज के पास पहुंच गया सब पथिक मुझे इस रूप में देख अति विस्मित हुए परन्तु जब रस्सी पकड़ कर ऊपर चढ़ गया तो सव घृणा कर कहने लगे—"इस बन्दर के कारण निस्सन्देह कोई विपत्ति आने वाली है यथा सम्भव शीघ्र इसे दूर करो" एक बोला "अभी २ लठ मारकर यमपुर भेजे देता हूं।" दूसरा बोला रह जाओ मैं अभी बाण से लक्ष्य बनाता हूं। तीसरा बोला अरे मैं अभी समुद्र में डाले देता हूं। निदान सब ही व्याधि की नाईं तुझे मार डालने को उद्यत थे यद्यपि मुझ में वाक्शक्ति न थी तथापि मैं कप्तान के चरणों में गिर कर अपनी पीड़ा संकेत द्वारा विदित कर रोने गगा।

कप्तान को दया आई उसने सब को समझा दिया अस्तु फिर किसी ने मुझ से कुछ नहीं कहा। यद्यपि मैं वाक्शक्ति रहित था निदान पचासवें दिन यान एक बड़े बन्दर में जो व्यापार का केन्द्र था। पहुंचा

जलयान के लङ्गर देते ही सैकड़ों मनुष्य अपने सम्बन्धी मित्र बान्धवों को बधाई देते आए। प्रधान राजा की ओर से आकर कहने लगा—"आपके स्वागत के लिए राजा साहब ने मुझे भेजा है और यह कागज दिया है तुम में से जो कोई स्वच्छ शुद्ध लेखक अनुभवी विद्वान् हो इस पर लिख दे क्योंकि जब से प्रधानमन्त्री का देहान्त हुआ है कोई ऐसा मनुष्य जो सर्व गुण सम्पन्न ही नहीं मिला जो मन्त्री पद के उपयुक्त हो ?"

प्रधान के मुख से यह सुन मैंने वह कागज ले लिया। यह देख सब कोई कहने लगे-ओह, यह परीक्षा पत्र है या तो बन्दर इसे फाड़ देगा अथवा समुद्र में फेंक देगा परन्तु कप्तान नें देखा कि वह कुछ लिखने

का संकेत करता है अस्तु मैंने लेखनी उठाकर पाण्डित्य पूर्ण चार सुललित काव्य ऐसी युक्ति से लिखे कि कोई विरला ही लिख सके निदान जब प्रधान ने मेरा लेख राजा को दिखाया तो वह अति प्रसन्न हुआ तुरन्त आज्ञा दी—"जैसा सुसभ्य मनुष्य मैं चाहता था ईश्वरेच्छा से वैसा ही मिल गया अमूल्य वस्त्र और दिव्य आभरण सहित घोड़े पर सवार करा शीघ्र उपस्थित करो।"

प्रधान ने मुस्करा कर कहा—"श्रीमान् इस पत्र का लेखक मनुष्य नहीं वरन् बानर है।"

राजा सुनकर अति विस्मित हुआ—"शीघ्र ऐसे अपूर्व बन्दर को मेरे पास लाओ!"

निदान एक प्रधान जहाज पर आकर मुझे सम्मानपूर्वक राजा के समीप ले गया। मार्ग में नागरिक मुझे देखकर हंसते थे। जब मैं राज सभा में पहुंचा तो रीत्यानुसार दण्ड प्रणाम पश्चात् सभ्यता से एक ओर खड़ा हो गया। सब कोई मुझे बड़े 'विस्मय से देखते थे। यद्यपि बानर प्रकृति चतुर होते हैं परन्तु चातुर्य के अतिरिक्त मैं शिक्षित सुसभ्य था अतएव प्रत्येक आश्चर्यित हो, मुख ताकता रह जाता था।

राजा सबको बिदाकर भोजनालय में पहुंच उत्तमोत्तम भोज्य आस्वादन करने लगा। मुझे भी संकेत किया अस्तु मैं भी एक ओर बैठ भोजन करने लगा। भोजन से निवृत्त हो मैंने भावोत्पादक मनोहारी कविता में प्रशंसा पत्र लिख राजा को समर्पण किया। चित्ताकर्षक कविता अवलोकन कर राजा मुग्ध हो गया राजा ने शतरंज मंगा मेरे साथ खेल प्रारम्भ किया पहिली बार तो मैं हार गया परन्तु दूसरी और तीनरी बार मैं जीता। पराजित होकर राजा कुछ दुखित हुआ यह देख मैंने एक सामयिक पद निर्मित कर राजा को दिखाया तो वह पूर्व की अपेक्षा और अधिक प्रसन्न हुआ। राजा ने अपनी पुत्री मलिका हुसन को बानर के अपूर्व कर्त्तव्य निरीक्षणार्थ बुलाया। जब वह राजा के पास आई तो झट घूंघट निकाल एक ओर खड़ी हो कहने लगी—"आप

अपरिचित मनुष्य के समक्ष मुझे बुलाकर निर्लज्ज करते हे ?

राजा ने इधर उधर देख विस्मय से पूछा—"पुत्री तुम्हारे सिवाय यहां कोई नहीं है ।"

राजकुमारी ने उत्तर दिया—"यह बन्दर वास्तव में मनुष्य एक बड़े राजा का पुत्र है। जादू वश बानर रूप में दृष्टि आता है । मैंमू पिशाच ने राजकुमारी अबूनी को मार कर इसे बनचर रूप मे परिणित कर दिया है ।"

राजा ने पूछा—"तुमने यह रहस्य कैसे जाना ?"

राजकुमारी बोली—"पिता जी विस्मरण न हुआ होगा जब मुझे दूध छुड़ा कर एक वृद्धा धाय को दिया गया तो उसने मुझे जादू सिखाना प्रारम्भ किया। अल्पकाल ही में उसने मुझे ७० अध्याय जादू के शिक्षण कराये मुझमें इतनी शक्ति है कि आपकी राजधानी उठाकर समुद्र में डाल दूं। जो कोई भी जादु द्वारा अभिमंत्रित हैं मुझे उनकी व्यवस्था भली भाँति विदित है ।"

राजा ने पूछा—"क्या बेटी, तुम में इतनी सामर्थ्य है कि इसे असली रूप में ला सको ? मै प्रधानमन्त्री पद देकर तुम्हारे साथ विवाह कर दूंगा ।"

यह सुनकर राजकुमारी एक छड़ी ले आई उस पर इब्रानी भाषा में कोई मंत्र अंकित था उसने बताया कि सेवक सहित राजा और बन्दर किसी सुरक्षित स्थान में जा बैठें। निदान हम सब बरण्डा में जो उस मकान के चतुर्दिक बना हुआ था छिप कर बैठ गये, राजकुमारी ने मकान के बीचों बीच वृत्ताकार कुछ खींचकर इब्रानी भाषा में कोई मन्त्र उच्चारण प्रारम्भ किया ! थोड़ी देर में चतुर्दिक अन्धकार छा गया प्रलय काल का समय दृष्टि आने लगा। यह भीषण समय देख हम एक दूसरे का मुख निहारने लगे सहसा मैंमू पिशाच भयानक सिंह रूप में वृत्त के सन्निकट दृष्टिगत हुआ राजकुमारी सिंह के समीप आ कहने लगी—"पापी श्वान तुझे उचित था कि गोहान पड़ता न कि उलटा

भयानकाकार सिंह बन डराने की चेष्टा करता है।

गर्ज कर सिंह ने उत्तर दिया—"ओह तूने मनुष्य और पिशाच के एक दूसरे के सहानुभूति रखने एवम् किसी प्रकार का कष्ट न देने की दृढ़ प्रतिज्ञा को भुला दिया।"

राजकुमारी ने कठोरता से उत्तर दिया—'दुष्ट अन्यात तूने ही प्रतिज्ञा भंग की है।"

"तूने बड़ा साहस किया जो मुझे यहां बुलाया।" यह कहकर सिंह ने मुख फाड़ राजकुमारी को निगलना चाहा परन्तु वह पीछे हट गई और अपने शिर का एक बाल तोड़ कुछ मन्त्र पढ़ा हठात् वह तलवार बन गया। राजकुमारी ने उग्रवल से सिंह के दो खंड कर दिये परन्तु ओह दोनों ही अन्तर्द्धान! यह लो अब शिर का तो दंश उठाये बिच्छू बन गया राजकुमारी सर्प बनकर लड़ने लगी। बिच्छू पक्षी बनकर उड़ा सर्प ने भी उड़ना प्रारम्भ कर आक्रमण किया। अब दोनों ही अन्तर्द्धान होगये। थोड़ी देर में हमारे आगे की धर्ती फट गई और दो बिल्ली निकल आईं परन्तु काली बिल्ली काला भेड़िया बन दूसरी श्वेत पर दौड़ी अतः वह छोटासा कीड़ा बनकर एक अनार में जो उसी समय वृक्ष से नदी तटपर गिरा था, जा छिपा। अनार बढ़ते २ कद्दू के समान होगया और वायु में उड़कर बरंडे के बराबर से नीचे गिरकर फट गया। उसके अनेक छोटे २ खंड होगये परन्तु उसी समय मेनाद बनकर उसने अनार के दाने शीघ्रः २ निगलना प्रारम्भ कर दिया। जब सब दाने खा लिए तो पर फैलाकर हमारी ओर आया उसके इस व्यापार का उद्देश्य यही था कि अब और कोई दाना तो अवशिष्ट नहीं है सहसा उसे एक दाना नदी तट पर पड़ा हुआ दृष्टगत हुआ। वह दौड़कर उसे भी निगलना ही चाहता था कि वह दाना नदी धारा में प्रविष्ट हो छोटी मछली बन गया। मेनाद भी नदी धारा में कूद पड़ा दो घड़ी अनुमान दोनों जल क्रीड़ा में निमग्न रहे पुनः कुछ कालानन्तर में एक भयानक शब्द श्रवण गोचर हुआ और पिशाच तथा राजकुमारी प्रत्येक मुख से

आग वर्षाते एक दूसरे पर आक्रमण करते बाहर निकल आये। पाँच फन वाले सांपों की नांई एक दूसरे पर कराघात करते थे। लड़ते २ स्वांस की गति बिषधर की फुसकार के समान हो गई पिशाच हमारी ओर आ अग्निवाण प्रहार करने लगा। हम भय से थर २ काँपने लगे सम्भवतः हम जलकर भस्म हो जाते कि राजकुमारी ने उसे वारण कर रक्षा कर दी फिर भी एक सेवक जलकर राख हो गया। राजा का मुखझुलस गया। एक चिनगारी मेरी आंख में आकर गिरी जिससे सीधी आंख मारी गई हम अति भयभीत महाप्रलय का दृश्य देखते जीवन से हाथ धो बैठे थे परन्तु राजकुमारी पिशाच को जीतने की प्राणपण से चेष्टा कर रही थी उसकी वीर मूर्त्ति देखने से जान पड़ता था कि क्रोध ही देह धारण कर भीषण युद्ध कर रहा है सहसा जय २ कार शब्द प्रतिध्वनित हुआ पिशाच जलकर भस्म हो गया और मलिकाहुसन अपने मोहनी रूप में हमारे पास आई उसने थोड़ा सा जल अभिमन्त्रित कर मुझपर छिड़क दिया हठात् मैं मनुष्य रूप होगया। सीधे नेत्र के अतिरिक्त जो जल गया था समस्त शरीर पूर्ववत् बन गया। परन्तु राजकुमारी ने विषन्न होकर कहा—"यद्यपि मैंने जय पाई परन्तु मेरा बचना अति कठिन है। मेरा शरीर जलकर अभी भस्म हुआ जाता है।"

अभी राजकुमारी इतना ही कहने पाई थी कि "जली २" दो बार चीत्कार कर राख का ढेर हो गई। अच्छा होता यदि मैं यावज्जीवन बन्दर ही बना रहता परन्तु जीवन दायिनी राजकुमारी की तो यह दशा न होती। राजा तो मर्म भेदी क्रन्दन से अचेत हो गया था बड़ी कठिनाई से उसे सावधान किया। राजा ने पिशाच की राख तो वायुद्वार छिन्न भिन्न करा दी और राजकुमारी की राख बहुमूल्य वस्त्र की थैली में बन्दकर वहीं गढ़वा दी और ऊपर से एक विशाल समाधि निर्मित्त करादी। राजा महीने भर तक पुत्री शोक से सन्तप्त रहा अभी वह स्वस्थ नहीं हुआ था कि विषन्न हो मुझसे कहने लगा—"तेरे कारण ही यह विपद पड़ी है आः! तेरे पीछे प्राणों से प्यारी पुत्री स्वर्ग सिधारी

(अश्रु डबडबा कर) एक दास भस्म होगया किंबहुना सैकड़ों ही दुःख पहुँचे । अस्तु यही अच्छा है कि तू इसी समय यहां से चला जा मैं तेरा मुःख देखना नहीं चाहता । यदि तू फिर कभी यहां आवेगा तो मैं बहुत दण्ड दूंगा

निदान् मैं उसी समय वहां से चल दिया परन्तु जिधर जाता था लोग मुझे मारडालने को उद्यत होते थे अस्तु विवश हो मैंने दाढ़ी मूंछ मुड़ा सन्यासी रूप में भ्रमण करना प्रारम्भ किया । मैं अपने दुर्भाग्य को कोटि २ धिक्कारता था आह मेरे कारण दो अप्सरा विनिन्दित राजकुमारी कालवश हुईं । मैं अनेक नगर ग्रामादि में घूमता अन्त यही निश्चय किया कि बुगदाद में चलकर सम्राट् खलीफा हारूं रसीद से अपनी दुःख कथा कहनी चाहिये वह अवश्यमेव दया करेंगे अतएव मैं रात ही यहां आया हूं पहिले पहल इन योगीराज से साक्षात हुआ जैसा कि अभी अपनी कथा में इन्होंने वर्णन किया है ।"

निदान् जबीदा ने उसकी दुःखद कथा सुनकर अपराध क्षमा कर दिया "जहां तेरा जी चाहे चलाजा ।" यह कहकर तीसरे कलन्दर को अपनी कथा सुनाने की आज्ञा दी ।

तीसरे कलंदर (योगी) की कथा

दयार्द्र युवती ! मेरी आंख स्वयम् अपनी मूर्खता से फूटी है । मेरा नाम अजब है और बड़े प्रतापशाली राजा कसब का एक मात्र पुत्र हूं । पिता के स्वर्गवास पश्चात समस्त प्रजा पर मेरा स्वत्व होगया । पिता के जीवन काल से दुर्ग रक्षार्थ जल थल सैन्य विविध युद्धोपकरण पचास जलयान व्यापारार्थ अनेक छोटी बड़ी नौका नगर समीप लङ्गर किये प्रति समय उपस्थित रहा करते थे । अस्तु, मैंने विचार किया कि बड़े २ नगर उपनिवेश जो धन जन से परिपूर्ण मेरे शासन में है, जाकर देखूं, वहां की प्रजा को धैर्य दूं, कला-कौशल और व्यापार का विस्तार कर उन्नत तथा प्रजा तन्त्र मेंटकर लोगों को राजभक्त बनाऊं । निदान्

मैंने एक बड़े यान में सवार हो दश छोटे जहाज अपने साथ ले अनुकूल वायु में पयान किया। इकतालीसवें दिन वायु प्रतिकूल हो बड़े वेग से चलने लगी सबही विपत्ति में फंस गये। ईश्वरेच्छा दूसरे दिन वायु का वेग कम हुआ तो निकटस्थ एक द्वीप में अनाज इत्यादि क्रयार्थ हम दो दिन के लिए वहां ठहर गये।

तीसरे दिन पुनः पर्यटन प्रारम्भ हुआ आशा थी कि दसवें दिन किसी द्वीप में जा पहुँचेंगे परन्तु वायु के प्राबल्य से सब दिशा भूल गये यह नहीं मालूम देता था कि हम किधर जारहे हैं। कप्तान (सञ्चालक) ने दिग्प्रदर्शक नाखुदा को मस्तूल पर चढ़ाया उसे चतुर्दिक पानी ही पानी दृष्टि आता था बहुत ध्यान देने पर दूर श्याम घटा समान अन्धकार दृष्टगत हुआ। वह शिर पीटता हाय २ करता नीचे उतरा—"स्वामिन्! बचने का कोई उपाय नहीं हम सब कराल काल का कवर हुये।" निदान् दिक् प्रदर्शक के क्रन्दन से सबकी जीवनाशा नष्ट हो गई मैंने विषन्न हो पूछा "क्या आपत्ति आने वाली है?"

कप्तान ने विषन्न हो उत्तर दिया—"राजन् हमारा जहाज ऐसे केन्द्र में आया है जो कल मध्यान्ह के समय सन्मुख के श्याम पर्वत-चुम्बक पत्थर के समीप पहुँचेगा। जब निरन्तर सीध में आ जायगा तो समस्त कील, लोहपत्र पर्वत से जा चिपटेंगे। और जहाज डूब जायगा क्योंकि चुम्बक पत्थर लोहे को आकृष्ट कर लेता है यही कारण है जो शिखर से आपाद लोहे के चिपट जाने से पर्वत श्यामवर्ण दृष्टि आता है। पर्वत बहुत ऊँचा है। शिखर पर पीत स्तम्भ वेष्टित एक गोलार्द्ध है। सबके ऊपर पीत अश्व पर पीतल का मनुष्य सवार है और काले अक्षरों में कोई मन्त्र मनुष्य के हृदय पर अङ्कित है। प्रायः यात्री लोग कहा करते हैं कि इसी संघातिक मूर्त्ति के कारण प्रतिवर्ष सैकड़ों अमूल्य नर-देह नष्ट हुआ करती है। निदान् उपर्युक्त घटना वर्णन करते २ कप्तान के नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगे। यह देख सब मनुष्यों ने एक साथ रोना प्रारम्भ किया। सबके आर्त्तनाद से यान किरातपुरी दर्शता था।

लेखनी में शक्ति नहीं जो उनके निस्तब्ध क्रन्दन को वर्णन कर सके ।

मुझे विश्वास हो गया कि मेरी आयु इतनी ही थी निस्सन्देह मृत्यु का काल चक्र यहां खींच लाया है । अस्तु मैंने सबसे कहा--"मरण निश्चय है इसमें कुछ सन्देह नहीं यदि भाग्यवश हममें से कोई जीवित रहें तो वही सबका उत्तराधिकारी हो ।"

प्रत्युत दूसरे दिन यान उक्त काले पहाड़ के सन्निकट पहुंच गया । मध्यान्ह के समय जैसा कि कप्तान ने बताया था यान खण्ड २ हो डूब गया । पर्वत ने बल पूर्वक कठिन घन की चोट से जड़ा हुआ लोहा खींचकर अपने में प्रविष्ट कर लिया ।

ग्यारहों जहाज खण्ड २ हो डूब गये किसी मनुष्य का चिन्ह मात्र न रहा । परन्तु मेरे भाग्य में अभी कुछ दिनों और दुःख भोगना अवशिष्ट था एक तख्ता मेरे हाथ लग गया अस्तु उसी के सहारे शनैः २ बहते हुये उसी संघातिक पर्वत के तट शुष्क टीले पर जा ठहरा । भगवान् को अनेक धन्यवाद देते हुये साहस पूर्वक पर्वत के ऊपर चढ़ना प्रारम्भ किया । छोटा अमिट दुर्गम मार्ग बड़ी कठिनाई से पार किया । जब मैं ऊपर पहुंचा रात्रि का घोर अन्धकार प्रतिक्षण बढ़ता जाता था अतएव मैं उसी गोलार्द्ध में सो रहा । स्वप्न में मैंने देखा कि एक वयोवृद्ध महात्मा उपदेश दे रहे हैं कि—"जब तू सचेत हो तो अपने नीचे थोड़ा सा खोदियो वहां तुझे एक कमान पीतल की और तीन बाण सीसे के मिलेंगे उन बाणों से शिखर की पीतल की मूर्तिको लक्ष्य बनाना । इस प्रकार मूर्ति तो समुद्र में गिर जायगी परन्तु घोड़ा तेरे पास आ जायगा उसे प्रतीचा सहित यहीं भूमिगत कर देना । इस अवसर में समुद्र का जल प्रचण्ड लहरों द्वारा बहुत उंचा होकर इस गोलार्द्ध के ठीक बराबर आ जायगा । कोलाहल बन्द होने पर एक छोटी सी नौका जिसे पीतल का अपूर्व केवट खेता हुआ तेरे पास लावे तू निस्संकोच उसमें सवार हो जाना वह तुझे निरापद ९–१० दिन पश्चात ऐसे सुरक्षित स्थान में पहुँचा देगा जहांसे तुझे स्वदेश पहुंचना अति सुलभ होगा ।

परन्तु सावधान मार्ग में कभी भूलकर भी ईश्वर का नाव जिह्वा पर न लाना अन्यथा प्राण बचना अति दुरूह होंगे।"

मैंने जाग्रत हो वृद्ध महात्मा के आदेशानुसार पृथ्वी खोद धनुष बाण निकाल पीतल की मूर्ति को लक्ष्य कर समुद्र में गिरा दिया अश्व मेरे पास आगया उसे मैंने वहीं गाढ़ दिया थोड़ी देर पश्चात् समुद्र का जल ऊँचा होकर विचित्र पीतल का निर्जीव केवट नौका लेकर मेरे पास आ मेरे बैठने की प्रतीक्षा करने लगा।

मैं नौका में सवार होगया नौ दिन बड़े आनन्द से कट गये कल ही मैं सब आपदाओं से मुक्त हो घर पहुंच जाऊँगा मेरे आनन्द की सीमा न रहेगी इस उछाह में मेरे मुख से भगवान इतना ही निकला था कि हठात् चक्र देकर नौका डूब गई। मैं अचिन्त्य बल से जल के ऊपर आ डूबते उछलते इधर उधर तैरने लगा। रात्रि के अन्धकार में कुछ सुझाई नहीं पड़ता था हाथ पैर मारते २ देह अवसन्न होगई थी सहसा वायु के प्रचण्ड वेग ने लहर द्वारा मुझे थोड़े २ जल में पहुँचा दिया थोड़ी देर में छब में सचेत हुआ तो बाहर निकल कपड़े सुखा मार्ग खोजने में व्यस्त हुआ कुछ ही आगे प्राकार रूप अनेक वृक्षों की बाढ़ दृष्टि गोचर हुई अस्तु मैंने अनुमान किया धन जन से परिपूर्ण कोई उपनिवेश है। परन्तु आगे जहां तक दृष्टि जाती थी निर्जन बन के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं देता था भयानक बन देख शिर चकराता था सहसा एक छोटा जहाज पाल खोले बड़ वेग से इधर को आता दृग्गत हुआ। न जाने इसमें कौन है? मैं ऊँचे वृक्ष पर चढ़ प्रतीक्षा करने लगा थोड़ी देर में जहाज वहीं आकर ठहर गया।

जहाज में से अनेक पदार्थ लिये कई सेवक वहाँ आ एक शिला हटा खटखट नीचे उतर गये। पीछे एक सभ्य वयोवृद्ध, १४-१५ वर्ष वयस्क अति स्वरूपवान् नवयुवक को साथ लिये उस तलगृह में प्रविष्ट होगये। थोड़ी देर पीछे और तो सब बाहर आ यान द्वारा जिधर से आये थे उधर चले गये परन्तु नवयुवक उसी तलगृह में रहा।

“मैं इसे मुक्त करूंगा” यह कहता हुआ वृक्ष से उतर उसी तलगृह में पहुंचा । जाकर देखा, एक विशाल हवेली बनी हुई है एक सुसज्जित दालान में बुशायर के गलीचे पर वही नवयुवक बैठा स्वयम् पङ्खा से हवा झल रहा है सुस्वादु पदार्थ तथा भोग विलास की सामिग्री सन्मुख उपस्थित हैं । अनायास ही मुझे देख नवयुवक डर गया परन्तु मैंने सान्त्वना देकर कहा—“तुम निर्भीक रहो मैं भी राजा हूं तुम्हें इस दशा में देख सहायता किया चाहता हूं क्या तुम अपना परिचय देने की कृपा करोगे ?”

नवयुवक ने पास बैठाकर इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया ।

‘राजनन् ! मेरी दशा अति विचित्र है ! मेरा पति प्रसिद्ध रत्न पारखी है बाहु बल से उसने अधिक धनोपार्जन किया है विशाल हवेली, इच्छातीत दास दासी निदान समस्त राजसी ठाट बाट था परन्तु दुख यही था कि कोई सन्तान नहीं थी । एक रात्रि पिता ने स्वप्न देखा कि पुत्र उत्पन्न हुआ है परन्तु वह अल्पायु होगा । कई दिनों पीछे मेरी माता ने गर्भ धारण करने के शुभ समाचार पिता को सुनाये । नव महीना पश्चात् प्रसव समय आया और मेरा जन्म हुआ तो सबही अति प्रसन्न हुए परन्तु पिता दुःस्वप्न के कारण अधिक सुखी न हुये । अस्तु पिता ने बड़े बड़े ज्योतिषियों को बुला दीर्घायु होने का उपाय पूछा ।

पण्डितों ने ग्रह शोध उत्तर दिया—“चौदहवें वर्ष में इसको मारकेश हैं । कसवात्मज अजब नामक राजा काले पर्वत की पीत मूर्त्ति विध्वंस कर अनायास ही पचासवें दिन आकर प्राण नाश का कारण होगा । यदि आपने उस समय रक्षा करली तो फिर पूर्णायु भोगेगा ।”

मेरे लालन पालन में पिता बहुत सावधानी करने लगे अब मुझे चौदहवां वर्ष प्रारम्भ हुआ । पण्डितों ने आकर कहा—“२० दिन बीते कि अजब ने उस पीतल की मूर्त्ति को नष्ट कर दिया है, अब ४० दिन के लिये किसी सुरक्षित स्थान में पुत्र रखने का प्रबन्ध कर लो ।”

पिता ने पूर्व से ही एक तलगृह समस्त आवश्यकीय पदार्थों से

परिपूर्ण कर रक्खा था अस्तु मुझे ४० दिन के लिए यहाँ भेजदिया है।"

जब वह नवयुवक अपनी अपूर्व कथा सुना चुका तो मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ मैं क्यों एक निरपराधी का वध करूँगा। अस्तु धैर्य देकर मैंने कहा—"तुम कुछ भय न करो ईश्वर ने तुम्हारी रक्षा एवम् सेवा सुस्रूषा के लिए ही मुझे यहां भेज दिया है। ४० दिन पर्यन्त तुम्हारी देख रेख में यहीं रहूंगा जब तुम्हारे पिता यहाँ आवेंगे तो मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा।"

नवयुवक को मैंने अपना परिचय नहीं दिया था कदाचित वह भयभीत हो मुझे रखनेपर बाध्य न हो। मैं सदैव मनोहर गल्प सुनाकर उसका चित्त बहलाया करता था हम दोनों में परस्पर ऐसा सौहार्द्र हो गया था कि क्षण मात्र का वियोग असह्य हो जाया करता था। निदान ३९ दिन बड़े सुख से बीत गये।

४० वें दिन नवयुवक प्रात: उठ स्नानादि से निवृत्त हो पिता के आने की प्रतीक्षा करने लगा। वह बार २ कहता था—"मैं, मेरे पिता-आपके आजन्म चिरकृतज्ञ रहेंगे।" यह कह कर नवयुवक शय्या पर लेट गया और सेव खाने की इच्छा प्रकट की अतएव मैं सेव लाकर छीलने की छुरी पूछने लगा।

"मेरे सिरहाने ताक में धरी है।" अस्तु मैं छुरी लेने को उचका परन्तु चिकने गलीचा के कारण सहसा मेरा पैर फिसल गया। छुरिका हाथ से छूट कर नवयुवक का हृदय वेधती पार निकल गई।

नवयुवक सदैव को शान्त होगया। मेरे दु:ख का क्या कहना पश्चात्ताप अश्रु धारा से वक्ष:स्थल भिगोता था आह? आज का दिन और बीत जाता, क्यों मैं यहां आकर रहा, ज्योतिषियों ने सत्य ही कहा था। मैंने बड़ी भूल की।"

वह दिन मेरा रोते हुए बीता जब थोड़ा दिन शेष रहा तो मैं मृत देह वहीं छोड़ बाहर आ द्वार बन्द करने लगा सहसा वही जहाज इधर आता दृष्टिगोचर हुआ। मैं निकटस्थ सघन वृक्षपर चढ़कर छिपरहा।

वृद्ध रत्न पारखी दास-दासियों सहित वहाँ आया पर तलगृह में जाकर देखा तीव्र छूरिका पुत्र हृदल में आमूल विद्ध हुई है वह वज्र हत की भाँति स्तम्भित रह गया। "अ: जिस पर सब आशायें अवलम्बित थीं वही चल बसा ईश्वर मुझे भी.........।" यह कहकर वृद्ध मूर्छित होगया। दास दासी सावधान करने को उसी वृक्ष के नीचे ले आए परन्तु दु:ख सन्ताप ने बेचारे को ऊपर की ओर भ्रूक्षेप का भी ज्ञान न रहने दिया। वरन् पुत्र का अन्त्येष्टि कर्म करा सब अटाला ले घर को ओर पयान किया।

मैं दिन रात रुदन करता मृत्यु कामना की भगवान् से प्रार्थना किया करता था। दिन भर मार्ग खोजता और रात्रि को उसी तलगृह में आकर सो रहता। इस प्रकार एक महीना बीत गया ऋतु की उष्णता वश नदी का पानी भी शनै: २ सूखने लगा। जब पिंडलियों के बराबर रह गया तो बड़ी कठिनाई से मैंने उसे पार किया आगे चल कर मुझे प्रचण्ड अग्नि प्रज्वलित दृष्टि पड़ी मुझे आश्वासन मिला संभवतः यह प्रकाश मनुष्य स्थिति सूचक हो परन्तु बहुत दूर चलने पर एक विशाल दुर्ग लाल तांबे का बना दिखाई दिया। रजत निघूर्त कँगूरों पर जिस समय प्रभाकर की उज्ज्वल किरणों पड़ती थीं आंखों में चकाचौंध छा जाता था परन्तु दूर से देखने पर प्रज्वलित अग्नि का प्रकाश जान पड़ता था। मैं दुर्ग के समीप ही एक ओर बैठ गया सहसा सौन्दर्य परिपूर्ण दस युवक गढ़ से बाहर निकले परन्तु आश्चर्य यह है कि सब ही दाहिने नेत्र-विहीन एकाक्षी थे। उक्त-युवकों के साथ उच्चाकार वयोवृद्ध एक महात्मा भी थे।

मुझे इस अपूर्व मंडली तथा दुर्ग वृत्तान्त जानने की बड़ी उत्कंठा थी कि वे सब मेरे पास आ प्रणाम कर पूछने लगे—"यहां क्यों कर आपका आना हुआ?"

मैंने समस्त कथा आद्योपान्त कह सुनाई। वे सुन कर अति आश्चर्यित हुए और मुझे दुर्ग के भीतर ले गये। मैं महल देख कर अति

विस्मित हुआ अनेक ग्रहोपग्रह चित्रित बहुमूल्य वस्तुओं से सुसज्जित दृग्गत हुए आगे चलकर एक बारहद्वारी में उक्त वृद्ध महात्मा उच्चासन पर विद्यमान थे। दसों युवक भी इधर उधर वहीं बैठ गये और मुझे भी बैठने का संकेत कर कहने लगे—'हमारे किसी कार्य में तुम्हें हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं और न हमारी सीधी आंख क्यों फूटी यही पूछने का उद्योग करना वरन् मौन साधे बैठे रहना अन्यथा दुःख सहने के अतिरिक्त बड़ी विपद् में पड़ोगे।''

प्रतिज्ञा बद्ध होने पश्चात् मैंने देखा वही वृद्ध महाशय सब के लिए भोजन ला कई भागों में विभक्त कर सबको बांट रहे हैं एक भाग मुझे भी दिया।

भोजन आस्वादन पश्चात् बोतल बासिनी सुरादेवी विद्यमान हुईं। थोड़ा २ महाप्रसाद पाकर सबने मेरी क[illegible]न श्रवण की और भी अनेक हास्य गल्प परस्पर कह सुनकर बृद्ध महाशय से बोले—'निद्रा देवी का साम्राज्य प्रारम्भ होने को है परन्तु अभी तक नैमित्तिक कर्तव्य की ओर आपका ध्यान आकर्षित नहीं हुआ।'' यह सुनते ही वृद्ध दस थाली नील वसनाच्छादित निकटस्थ कोठे से उठा लाये और प्रत्येक के आगे एक २ दीपक सहित रख दीं।

युवकों ने वस्त्र उठाया तो उसमें राख कोयला तथा बुझा हुआ काला दीपक रक्खा था सबने वही राख अपने २ मुख पर मल ली। अस्तु जैसे वह पूर्व में सुन्दर दीखते थे वैसे ही भयानक दृष्टि आने लगे। अब सबने चीत्कार कर रुदन प्रारम्भ किया। उनके निमेष शून्य नेत्र देख भय लगता था। युवक बार २ अपना सिर पीटते और कहते थे—"यह हमारी मूर्खता और अमितव्ययता का फल है।" निदान् सब ही बहुत रात गये तक रोते चिल्लाते रहे। वृद्ध ने सबके पास जल पात्र रख दिया। अस्तु प्रत्येक मुख धो वस्त्र बदल अपने शयनागार को चले गये। मैं यह दशा देख अति विस्मित हुआ अनेक बार चाहा कि इस रहस्य को पूछूं परन्तु वचन बद्ध होने के कारण मौन साधे बैठा रहा। वरन्

इसी असमञ्जस में रात भर नींद न आई। दूसरे दिन प्रातः ही जब हम सब वायु सेवनार्थ बाहर निकले तो जैसी प्रायः नई बात जानने की सब को उत्कण्ठा होती है मैंने अति विनीत प्रार्थना की—"महाशय, आप सब देखने में अति चतुर और बुद्धिमान हैं परन्तु रात्रि की घटना से मैं ऐसा आश्चर्यित हूं कि मौन रहना कठिन होगया है। आपके रात्रि के मर्म भेदी क्रन्दन से मैं भी द्रवित हुआ हू क्या आप इस रहस्य के खोलने की कृपा न करेंगे।

"यदि तुमको यहां रहना स्वीकार है तो कुछ न पूछो।" यह कहकर युवक लौट आये। रात्रि को भोजन करने पश्चात् सबने पुनः मुख काला कर रात्रि की नांई रोदन इत्यादि कार्य्य किये। उस समय मुझसे नहीं रहा गया मैंने विपन्न हो कहा— "या तो आप मुझे स्वदेश पहुंचा दीजिये अथवा इस रहस्य को बताइये मुझे सन्तोष नहीं होता।"

एक युवक ने धैर्य्य देकर कहा—"हम मित्रता वश रहस्य प्रकट करना उचित नहीं समझते कहीं तेरी दशा भी हमारी तरह दुःख में परिणत न हो जावे। यदि तू नहीं मानता हमारे दुर्भाग्य का अनुभव स्वीकृत है तो निस्सदेह तुझे बता देंगे परन्तु फिर भी हम समझाते हैं इस जटिल रहस्य के जानने की इच्छा न कर, भाग्यवश यदि तेरी सीधी आंख मारी जावे तो हमारे पास न आना क्योंकि यहां दस मनुष्यों के रहने का ही प्रबन्ध है।

कैसी ही विपद् क्यों न सहन करना पड़े। आप अपना मर्म अवश्य प्रकट करदें? किंबहुना मेरी अधिक हठ देख एक भेड़ मार उसकी खाल तथा तीव्र छूरिका मुझे देकर समझाया—"हम तुमको इस खाल में बन्दकर आगे उच्च सम भूमि में छोड़ आवेंगे, वहां एक बहुत बड़ा पक्षी शरभ जाति का प्रतिदिन आया करता है, मांस गंध पा अपने सुदीर्घ पंजे में वकोट भर ऊपर को उड़ जायगा इस व्यापार से तुम किञ्चित् विचलित न होना। शरभ पर्वत शिखर पर ले जाकर तुम्हारे खाने

की चेष्टा करेगा उस समय तुम खाल फाड़कर बाहर निकल आना अस्तु वह देखते ही भाग जायगा। यह छूरिका उसी समय के लिये है यदि खाल फाड़कर शीघ्र बाहर न निकल आओगे तो सम्भव है कि शरभ नखाघात से आहतकर अधःपतित करदे। शरभ भाग जावे तब तुम आगे बढ़ जाना थोड़ी ही दूर एक विशाल दुर्ग शिखर से नीचे तक स्वर्ण पत्र और बहुमूल्य रत्न वेष्ठित, अति अपूर्व मिलेगा तुम निर्भीक उसमें प्रवृष्ट होजाना। सीधी आंख मारे जाने का कारण तथा और भी सब रहस्य वहाँ पहुँचते ही स्वयम् प्रकट हो जायगा।

युवक जब समझा चुका मैं छुरी लेकर खाल में बन्द हो गया। मुझे बहुत देर प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी झपट्टा मार पक्षी एक क्षण में पर्वत की ओर ले उड़ा। पर्वत के ऊपर रखते ही मैं खाल फाड़कर बाहर निकल आया। शरभ मुझे देखकर उड़ गया। वहां से थोड़ी दूर चलने पर मध्यान्ह के समय वह दुर्ग दिखाई दिया।

दुर्ग में प्रवेशकर मैंने देखा ९९ द्वार चन्दन के और एक स्वर्णका है अस्तु चन्दन द्वार से अनेक मकानों में होता हुआ मैं एक बारहदरी में पहुंचा।

बारहद्वारी में चालीस असामान्य सुन्दरी युवती विराज रही थीं। मुझे देखते ही वे सब स्वागत के लिए उठ खड़ी हुईं और प्रसन्न हो कहने लगीं—"हम सब आपके दर्शनों से कृतार्थ हुईं। ईश्वर को सहस्रशः धन्यवाव है कि अति मनोनीत रसिक प्रिय कामदेव की प्रतिकृति, सर्वगुण सम्पन्न, महानुभाव के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ।"

मैं धन्यवाद भी नहीं दे सका था कि वह मुझे परम रमणीक स्फटिक महल में ले जा हाथ जोड़ कहने लगी—"आज से आप हमारे स्वामी पति प्राणेश हुए हम सब पत्नी स्वरूप आपकी दासी हैं।"

मेरे आनन्द का पारावार न रहा उक्त सुन्दरियों में से एक उष्ण जल ला पद प्रक्षालन कर चली गई। दूसरी सुगन्धित जल मेरे हाथों पर डालने लगी, किसी ने नवीन वस्त्र धारण कराए कोई अनेक सुस्वादु

भोजन मेरे आगे रख गई, कोई बढ़िया मदिरा ले आई निदान वे सब उत्साह और प्रेम से मेरी सेवा सुश्रूषा करने लगीं । मैं ऐसा मुग्ध हुआ कि सब दुःख भूल गया वरन् अपने को परम-ऐश्वर्यवान इन्द्र की नांई समझने लगा । भोजन इत्यादि से निवृत हो उन्होंने मेरा परिचय लिया। जब मैं अपनी समस्त कथा सुना चुका तो सूर्य भगवान् क्रमशः अस्त हो चुके थे अस्तु एक युवती ने दीपक प्रज्वलित कर भांति २ के मिष्ठान मेवा फलादिक से मञ्च अलंकृत किया कई युवतियों सहित मैं भोजन करने तथा सुरापान में निमग्न हुआ और कई युवतियों ने नृत्य प्रारम्भ किया ।

अर्द्ध रात्रि तक गीत वाद्य रहा पश्चात् एक लावण्यवती अनुरोध पूर्वक कहने लगी—"आज ही आप आए हैं थक गए होंगे शय्या तैयार है हम में से जिसको आज्ञा हो वही आपको अपने सरस सौन्दर्य का आस्वादन करावे, आत्म समर्पण कर परितृप्त करे ।"

मैं बड़े असमंजस में पड़गया एक से एक अधिक सुन्दरी हैं मैं किसको उपयुक्त समझूं । अस्तु मुझे मौनधारण किये देख वही युवती बोली—"आप निस्सङ्कोच एक का हाथ पकड़ लीजे हमें परस्पर कुछ द्वेष नहीं है" क्रमशः एक न एक दिन हम चालीसों ही आपके स्वर्गीय सुख का आनन्द भोगेंगी" अतएव मैंने विवश हो उसी सुन्दरी की ओर हाथ बढ़ा दिया ।

सुन्दरी मेरा हाथ पकड़कर एक सुसज्जित कमरे में ले गई। एक सुकोमल शय्या पर बैठ सुन्दरी अनेक बार उमंग से चुम्बन पर चुम्बन लेने लगी वरन् देर तक चुम्बन और आलिंगन ही चलता रहा । सुन्दरी के माधुर्य और आकांक्षा प्रदीप्त कुटिल कटाक्ष पात से मेरी नसों में उल्लास स्रोत बेग से चलने लगा मैं उन्मत्त होगया । इन्द्रियां बश में न रहीं । सुन्दरी के आग्रह चुम्बन और प्रगाढ़ आलिंगन में अपने को छोड़कर स्वर्ग सुख उपभोग करने लगा वरन् सच तो यह है कि उस सुख की तुलना नहीं हो सकती ।

रात भर स्वर्गीय सुख सम्भोग कर प्रातः स्नानादि से निवृत्त हुआ नवीन वस्त्र धारण किये। पश्चात् उन उन्तालीसों युवतियों ने आकर मुझे प्रेम पूर्वक प्रणाम किया। सुतराम् वह दिन भी आमोद प्रमोद में बीता। रात्रि को पुनः मैंने एक युवती का हाथ पकड़ लिया। गत रात्रि की नाईं आज भी वही भोग विलास में रत रहा। निदान एक वर्ष पूरा मुझे सुख उपभोग करते बीत गया। परन्तु जिस प्रकार युवतियें सदैव की भाँति हासित मुझे प्रणाम करने आतीं आज विपरीत रोती हुई आईं और विषन्न हो कहने लगी—"प्यारे राजकुमार, अब हम तुमसे बिदा होती हैं।"

जब मेरी उद्विग्नता अधिक बढ़ी आधार हीने लगा तो वह कहने लगीं—"कदाचित् हमारा तुम्हारा यही अन्तिम मिलाप हो क्योंकि आप की नाईं अनेक सभ्य यहाँ आए और अन्त वियोग की दारुण यातना में हमें छोड़ गए हम चालीसों राजकुमारी हैं वर्ष में ग्यारह महीना यहां रहती हैं, केवल एक महीने के लिये अपने २ घर जाती हैं। कल वर्ष पूरा हो गया है। अतएव आज हम सब आपसे बिदा होने आईं हैं। पीछे आपको कुछ कष्ट न-हो अस्तु पाकशाला और कोष इत्यादि की कुञ्जी आपको सोंप जाती हैं यदि आपको हमारे सहवास की इच्छा हो तो इस स्वर्णद्वार को भूलकर कभी न खोलना एकमात्र यही वियोग का कारण है। परन्तु तुम्हें इतना धैर्य होना दुरूह है हमारी अनुपस्थिति में नई बात की खोज की लालसा एवम् निर निराले में चित्त विनोदार्थ तुम अवश्य इस द्वार को खोलोगे और स्वयं विपद आह्वान कर हमको सदैव के लिये वियोग से उत्पीड़ित करोगे। यदि तुमने असन्तोष कर हमारी बात पर ध्यान दिया तो कुछ चिन्ता नहीं है हम इन सब इन्द्रोपम विभूति सहित आपकी हैं।" यह कहकर उन्होंने कुञ्जियों का गुच्छा मेरे आगे रख दिया। करुणा से सबका हृदय द्रवित था। अनिवार्य प्रेमाश्रु बहाते गाढ़ालिगन पश्चात् प्रत्येक विदा हो चली गईं।

मैं अकेला रह गया। एक वर्ष पर्यन्त जो स्वर्गीय सुख उपयोग किया था स्मरण कर चित्त विह्वल होता था। कहीं असह्य वियोग वश चित्त की भ्रान्ति मतवाला न बना दे, अस्तु स्वर्ण द्वार के व्यतिरिक्त जिसे न खोलने का वे आग्रह कर गईं हैं क्रमशः औरों को खोलकर तो देखूं कुछ तो जी बहलेगा अतएव मैंने पहिला द्वार खोला तो अति विशाल पुष्पोद्यान दृष्टिगत हुआ। फल फूल सहित अपरिमित सघन वृक्ष समूह और अनेक लता प्रतान आकाश वितान के मध्य सुशोभित अन्य किसी उपवन में हों ऐसा विश्वास करने को मैं आज भी तैयार नहीं हूँ। मैं विस्मित रह गया वृक्षों में जल सिंचन का विचित्र ही प्रयोग था छोटी २ नहरें बड़ी नहरों को काटकर इस प्रकार निकाली थीं कि प्रत्येक वृक्ष में इच्छित जल वर्षण स्वयम् हो जाया करता था। निदान बहुत देर तक सैर करने पश्चात् मैंने वह द्वार बन्द कर दूसरा खोला इसमें केवल सुगन्धित पुष्प ही थे संसार में बिरला ही पुष्प वृक्ष होगा जो इस वाटिका में न हो। शीतल सुगन्धित वायु सेवन से थोड़ी देर के लिए वियोग वेदना विस्मरण हो आनन्द मग्न हो गया।

तीसरा द्वार खोला। यह चिड़िया घर था। सुन्दर पक्षियों का कलरव, मधुर कण्ठ स्वर शस्य श्यामा वसुन्धरा को उल्लसित कर रहा था पक्षियों को दाना पानी देने निमित्त १०० मनुष्य भी उपयुक्त न थे परन्तु वहां ऐसा उत्तम प्रबन्ध था कि किसी मनुष्य की आवश्यकता न थी ऋतु अनुकूल फलने वाले वृक्षों के आश्रय ही पक्षी आनन्द से कालक्षेप करते थे। सूर्यास्त के समय द्वार बन्द कर मैं अपने शयनागारमें सोरहा।

दूसरे दिन प्रातः नित्य नियम से निवृत्त हो मैंने चौथा द्वार खोला इसमें एक विशाल कमरा था जिसमें चालीस द्वार खुले हुए थे। प्रत्येक द्वार से नीचे उतरने की सीढ़ियां बनी हुई थीं। जब मैं नीचे उतर कर पहुंचा तो अपरिमित कोष कुबेर के समान दृष्टि आया एक कोठा केवल मोतियों से भरा हुआ था जो कपोत के अंडे के समान थे। एक में बहुमूल्य रत्न हीरा लाल इत्यादि तीसरे में नीलमणि चौथे में सोने

की ईटें पांचवे में स्वर्ण मुद्रा छटे में चांदी की ईटें, सातवें में रुपये निदान इसी प्रकार चालसों कोठे अपरिमित धन परिपूर्ण थे । मै विस्मित रह गया । ओ हो मैं कितना भाग्यशाली हूं कि इतना कोष और चालीस रतिकी प्रतिकृति सुन्दर युवतियाँ मेरे अधिकार में हैं सुतराँ उन ९९ मकानों के देखने में मेरे ३९ दिन बीत गये केवल एक ही सौवाँ स्वर्ण द्वार रह गया जिसके खोलने की वह मनें कर गई थी चालीसवें दिन मेरा ऐसा ज्ञान तिरोहित हुआ चित्त में यही बार २ आता था कि इसमें निस्सन्देह कोई अपूर्व वस्तु है । इतनी इच्छा प्रबल हुई कि झट वह द्वार खोल लिया उसमें से ऐसी सुगन्ध निकली कि मैं मुग्ध हो गया । थोड़ी देर पश्चात् जब मैं उस घर में प्रविष्ट हुआ तो चकित रह गया घास की नाईं उसमें केशरि बिछी हुई थी, बड़े २ पात्रों में गुलाब जल भरा हुआ था तथा सामने ही एक मुश्की घोड़ा बँधा हुआ था मैं साहस कर घोड़े को बाहर निकाल लाया वह देखने में अति सुन्दर सौम्य जान पड़ता था मैंने प्रसन्न हो उस पर आसन जमा दिया परन्तु अनेक चेष्टा करने हर भी एक पग आगे न बढ़ा तब विषन्न हो मैंने एक चाबुक मार दिया घोड़ा भयानक हिनहिनाहट के साथ अपने पैरों को फैला पक्षी की को नाईं वायु में उड़ने लगा । मैंने भय से उसकी गदन पकड़ ली । थोड़ी देर में वह शनैः २ नीचे उतरते २ एक पीतल के दुर्ग की छत पर पहुंचा पूर्व इसके कि मैं उसकी पीठ से उतरूं वह स्वयम् इस प्रकार थरथराया कि मैं नीचे गिर पड़ा हटात् उसने अपनी पूँछ मेरी सीधी आँख में मार दी आंख फूट गई, मैं पीड़ा से विह्वल होगया परन्तु घोड़ा उसी समय ऊपर आकाश में विलीन हो गया । मैं एक हाथ से आंख दाबे छत से नीचे उतरा । युवकों का आदेश स्मरण कर अति व्याकुल हुआ जब नीचे पहुंचा तब पहिचाना कि यह वही दस युवकों का आवास है जहाँ से शरभ लेकर मुझे उड़ा और स्वर्ग सदन तक पहुंचाया । थोड़ी देर में वही महाशय दस युवकों सहित वहां आये परन्तु मेरी ओर उन्होंने भ्रूक्षेप भी न की क्रुद्ध हो कहने लगे—"अब तुम यहां नहीं रह सकते यही अच्छा है कि तुम बुगदाद चले जाओ वहां ऐसे मनुष्य से

साक्षात् होगा जो तुम्हारा सब कष्ट दूर कर देगा ं तुम आनन्द से कालक्षेप कर सकोगे ! अस्तु मैं उसी समय से साधुवेश में चल दिया । आज सन्ध्या समय यहाँ पहुंचा था कि यह दोनों योगी मिल गये आनन्द से रात व्यतीत हो परस्पर यही परामर्श कर रहे थे कि सहसा गीत वाद्य सुन तुम्हारे आनन्द भवन में प्रविष्ट हुए जितना सुख हमें मिला है हम धन्यवाद नहीं दे सकते ।”

जब तीसरा कलन्दर अपनी कथा सुनाचुका तो जबीदा ने उसका अपराध भी क्षमा कर दिया । और खलीफा जाफर तथा मसरूर को अपनी २ कथा सुनाने का संकेत किया ।

जाफर कहा—“सुन्दरी हम तो अपनी कथा पूर्व ही वर्णन कर चुके हैं, हम तीनों मौसिल रहिवासी व्यापारी हैं ।

जबीदा ने विश्वास कर इन तीनों का अपराध भी क्षमा कर दिया । निदान सातों मनुष्य त्वरित घर से बाहर निकल आये । खलीफा ने तीनों कलन्दरों से पूछा—“तुम लोग अजान अभी आये हो हमारे पीछे २ चले आओ ?” यह कह कर जाफर को समझा दिया कि तुम इनको अपने घर ले जाना और कल प्रातः ही राजसभा में उपस्थित करना । खलीफा अपने शयनालय में सेजशायी हुए परन्तु जबीदा अमीना और साफी एवम् दोनों कुतियों के हाल जानने की लालसा में नींद नहीं आई । प्रातः दरबार में पहुंच जाफर मन्त्री और तीनों सुन्दरियों को उपस्थित करने की आज्ञा दे दी ।

थोड़ी देर में तीनों सुन्दरी कुतियों सहित आगई उन्हें खलीफा ने अपने पीछे बैठने की आज्ञा दी और आग्रहपूर्वक उन्हें अपना समस्त वृत्तान्त सुनाने पर बाध्य किया ।

“रात मैंने व्यापारी वेश में तुमसे भेंट की थी परन्तु अब मैं अब्बास वंशज सातवां खलीफा हूं । यद्यपि हमारे कारण तुम्हे रात को बहुत कष्ट पहुंचा था परन्तु तुमने क्षमा कर दिया, तुम्हारी सौजन्यता मुझे कभी न भूलेगी ।”

खलीफा का आग्रह देख सबके पूर्व जबीदा ने अपनी कथा इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया ।

जबीदा की कथा

यवन नेता सत्यनिष्ठ सम्राट मेरा वर्णन अति विचित्र है । यह दोनों काली कुतियाँ सहोदरा तथा यह दोनों सौतेली बहिनें हैं । जिसके कंधों पर काले २ चिन्ह हैं वह अमीना है दूसरी 'साफी' और मेरा नाम 'जबीदा' है । पिता के स्वर्गवास पश्चात् समस्त पैतृक सम्पत्ति हम पाँचों ने परस्पर बाँट ली । हम तीनों तो वहीं अपनी माता के पास रही आईं और यह दोनों अपना २ भाग लेकर अपनी माय के चली गईं ।

थोड़े दिनों पीछे जब हमारी माता ने संसार यात्रा की तो उसके संचित धन से एक २ सहस्र मुद्रा हम तीनों के भाग में और आए । इच्छानुसार धन पाकर दोनों बहिनों ने जो मुझसे बड़ी थीं अपना विवाह कर लिया और पति के पास रहने लगीं थोड़े दिनों पश्चात् बड़ी बहिन के पति ने सब अटाला विक्रय कर बहिन सहित अफ्रीका की ओर पयान किया परन्तु अपरापत्ति के दिन व्यवसाय हीन अपरिमित व्यय ने शीघ्र ही निर्धन कर दिया बड़ी बहिन के वस्त्राभरण भी विक्रय कर दिये, जब कुछ भी पास न रहा तो बहिन के भरण पोषण की द्विविधा अटकी तब दुष्टा असती बता मेरी बहिन को परित्यक्त कर घर से निकाल दिया वह बहुत दिनों तक अनेक कष्ट सहती थकित श्रमित बुगदाद पहुंची और अति दीनातिदीन रूप में महा दरिद्र बन मेरे पास आई । अपनी विथा पति की कठोरता दीर्घ-निश्वास त्यागते और अश्रुधारा से वक्षस्थल भिगोते अति दुखित चित्त से कह सुनाई । मुझे बड़ा क्लेश हुआ अस्तु उसे स्नान करा उत्तम वस्त्र पहिना भोजन कराये । तुम मेरी बड़ी बहिन माता स्वरूप हो । तुम्हारे जाने पश्चात् ईश्वर अनुकम्पा से रेशम के व्यापार में मुझे अधिक लाभ हुआ है जो कुछ मेरे पास है वह सब तुम्हारा ही है । प्रायः हम दोनों अपनी तीसरी मझली बहिन को स्मरण

कर सोचा करती थीं न जाने वह कहां होगी । थोड़े दिन पश्चात् मँझली बहिन भी महा दुर्दशा ग्रस्त मेरे पास आई वह भी पति द्वारा सब धन की आहुति दे दर २ की भिखारिनी बनी हुई थी सुतरां उसको भी मैंने अपने में सम्मिलित रक्खी यद्यपि मैंने दोनों को सुखी रखने की अनेक चेष्टा की तथापि कुछ ही दिनों पश्चात् उन्होंने यह प्रस्ताव उपस्थित किया कि—"हमारे रहने में तुम्हें व्यर्थ कष्ट होता है हम चाहती हैं अपना अधिक भार तुम पर न डालें पुनर्विवाह ...."

पुनर्विवाह सुनते ही मुझे बड़ा पश्चात्ताप हुआ मैंने उन्हें समझाया ईश्वर कृपा न हमारे पास जीविका निर्वाहन योग्य बहुत धन है तुम्हें कष्ट न उठाना पड़ेगा । ओह इतने कष्ट सहने पर भी तुम्हें पुनर्पति करने की आकाँक्षा है मैं अति विस्मित हुई मैं पुनः अनुरोध करती हूं पति का नाम जिह्वा पर न लाओ। समय अति विषम है परन्तु उन्होंने यह कहकर टाल दिया कि इस प्रकार से तू हमको दासीवत् अनुमान करने लगेगी । परन्तु जब मैंने विश्वास दिलाया कि हम परस्पर बड़े प्रेम और सौहार्द्र से रहेंगी तब वह कुछ शान्त हुईं । एक वर्ष बीत गया ईश्वर ने मेरे व्यापार में इतनी वृद्धि की कि मैंने सामुद्रीय व्यवसाय की उत्कण्ठा से अनेक वस्तु जहाज पर लाद दोनों बहिनों सहित बुगदाद से वऊ नगर को प्रस्थान किया। अनुकूल वायु थी मैं शीघ्र पारस्य के मुहाने में जा पहुंची और वहाँ से सीधा मार्ग भारतवर्ष को लिया । बीसवें दिन मेरा जहाज एक द्वीप में जो पर्वत श्रेणी के तट पर था, पहुंचा इस द्वीप में एक नगर धन जन परिपूर्ण अति रमणीक था मुझे उसके देखने की बड़ी उत्कंठा हुई अस्तु जहाज का लंगर होते ही एक नौका द्वारा मैं चल दी दोनों बहिनों ने अनेच्छा प्रकट की वह जहाज में रही आईं ।

नगर के समीप जाकर मैंने देखा रक्षक गण अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित नगर के द्वार से सटे बैठे हैं कुछ खड़े भी हैं परन्तु न जाने क्यों सबकी आकृति ऐसी भयानक है जो पास जाने की इच्छा नहीं होती ।

निस्सन्देह यह दैत्य दानव है । परन्तु जब मैं उनके पास पहुंच गई तो अति विस्मित हुई क्योंकि वह सब निर्जीव पाषाण के थे । अब मैंने नगर में प्रवेश किया जिधर दृष्टि जाती थी पाषाण ही पाषाण दिखाई देता था । ओह सृष्टि ही पाषाण मय है । मकान दुकान सब बन्द हैं । नगर के मध्य सम भूमि में एक विशाल फाटक स्वर्ण-पत्र-वेष्ठित तथा सुलभ रेशमी पर्दों से आच्छादित दृष्टिगत हुआ एक बड़ी हांडी प्रकाशार्थ मध्य में लटक रही थी जिसे देख कर अनुमान होता था कि निस्सन्देह यह द्वार राज महल का है । पर्दा हटा कर जब मैं प्रासाद में पहुँची तो वहां भी कोई दिखाई नहीं दिया द्वारपाल इत्यादि अनेक कर्मचारी दृष्टि आये परन्तु सब पाषाण के पाकशाला शयनागार, सभा भवन इत्यादि सब शून्य । एक बड़े दालान में जो बहुमूल्य वस्तुओं से अलंकृत थी, पाषाण निर्मित एक रमणी शिर पर मुकट धरे कण्ठ में माला सुपारी के सामान गजमुक्ता धारण किये बैठी है । वही साम्राज्ञी है अनुमान कर मैं आगे बढ़ी । एक निर्जन गृह में मणिमय स्वर्ण सिंहासन देदीप्यमान था सिंहासन के फर्श में से ऐसा अलौकिक प्रकाश निकल रहा था जो रश्मिप्रकाश विभाषित होता था आंखें चुंधिया जाती थीं । मैंने विस्मित हो सिंहासन पर चढ़ कर देखा तो एक तिपाई पर बड़ा सा हीरा दृष्टि आया इसी से प्रकाश निकल रहा था परन्तु सिंहासन के चतुर्दिक अनेक दीपक प्रज्वलित थे अस्तु मैंने अनुमान किया कदाचित् यहां किसी से साक्षात हो क्योंकि दीपक स्वयम् नहीं जल सकते । किंबहुना घूम फिर कर मैंने शास्त्रागार, भांडार इत्यादि समस्त दुर्ग देखा भाला परन्तु मनुष्य मात्र का कहीं चिन्ह दृष्टिगत न हुआ वरन् निर्जीव पाषाण मात्र देखने में मैं अति आश्चर्यित था अपने जहाज और बहिनों का किंचित ध्यान न रहा । जब सन्ध्या होगई अंधकार प्रतिक्षण बढ़ने लगा अतः जिस मार्ग से मैंने प्रवेश किया था अनुसन्धान करने पर भी नहीं मिल सका । अतु मैं जहां सिंहासन था पहुंच शयन किया चाहती थी सहसा उस निस्तब्ध अर्द्ध रात्रि में ईश्वर स्तुति का सुमधुर शब्द कर्णगोचर हुआ । कौन मनुष्य ऐसे

उत्तम स्वर से धर्मग्रन्थ पढ़ रहा है। मैं लालायित हो एक दीपक उठा शब्द की ओर चल पड़ी। थोड़ी दूर पर एक छोटी मसजिद मिली प्रथम मैंने ईश्वर को धन्यवाद देने निमित्त नमाज़ पढ़ी। मैंने ध्यानपूर्वक देखा कि एक युवक अति स्वरूपमान धर्मग्रन्थ पढ़ने में व्यस्त है। मसजिद में दो मोमबत्ती जल रही थीं उनके प्रकाश मे सब कुछ दिखाई देता था मैं बड़े असमन्जस में पड़ गई यह मनुष्य क्यों पाषाण होने से बचा ? ईश्वर भक्त है केवल इसी से अथवा और कोई रहस्य है ?

युवक का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने को मैंने एक पद (प्रार्थना स्वरूप) पढ़ना आरम्भ किया—"भगवन् ? आपको अनेक धन्यवाद है कि मेरी यात्रा सफल करी आशा है अब मैं शीघ्र अपने नगर को सकुशल पहुँचूंगी !"

युवक ने मेरी ओर देखकर पूंछा—सुन्दरी तू कौन है ! कैसे इस जन शून्य भयानक नगर में प्रवेश किया है !"

मैंने युवक के अनिन्द्य सौन्दर्य्य पर मुग्ध हो अति विनीत प्रार्थना कर कहा —"अच्छा हो यदि पहले आप ही अपना परिचय दें !"

युवक ने धर्मग्रन्थ ऊपर ताक में विराजमान् कर मुझे सादर अपने पास बैठा, दीर्घनिश्वास, त्याग इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया—"यह नगर मेरे पिता की राजधानी थी। राज्य अति विस्तीर्ण था परन्तु खेद है यहां के समस्त रहिवासी अग्निपूजक थे और नारदीन की जो पूर्व समय में दैत्यों का अधिपति था, पूजा क्रिया करते थे केवल एक मैं ही भगवान् का भक्त था। शिशुकाल में मेरी धाय ने जो धर्मानुरागी थी मुझे उपदेश दिया एक ईश्वर ही जगत्कर्ता पूजनीय है। उसी की अनुकम्पा से मुझे इब्रानी भाषा की शिक्षा मिली धर्मग्रन्थों का ज्ञाता हुआ। निदान् गुप्तरूप से धाय ने भली भांति धर्म का मर्म हृदयस्थकर दिया था। ईश्वर का अस्तित्व चित्त में अंकित था ही अस्तु धाय के मरण पश्चात भी मैं धर्म पर दृढ़ रहा अग्नि पूजकों से निरन्तर घृणा करता और पाखण्डी जानता रहा। जब अग्निपूजकों का अधिक प्राबल्य

हुआ तो ईश्वर की ओर से अहर्निश तीनवर्ष पर्यन्त यहां आकाशवाणी हुई—"नास्तिको ! नारदीन एवम् अग्नि की पूजा छोड़कर ईश्वर की बन्दना करो वह दयालु है तुम्हारा अपराध क्षमा कर देगा।" परन्तु किसी ने ध्यान न दिया वरन् और अधिक अकार्य में प्रवृत्त हुये। तीन वर्ष पश्चात् एक दिन प्रातः ही सब मनुष्य दैवी कोप ग्रसित हुये जो जिस स्थान में जिस रूप में था तद्वत् पाषाण बन गया। मेरे माता पिता भी जिन्हें तुमने महल में देखा होगा पाषाण बन गये। एक मात्र मैं ही कोप से बचा हूं। सदैव धर्मग्रंथ पढ़ना, ईश्वर की भक्ति में मग्न रहना यही मेरा अवलम्बन है कदाचित् मुझे अकेला जान ईश्वर ने तुम्हें मेरे पास भेजा है।"

यह सुन मुझे अति हर्ष हुआ। प्रेमपूर्वक मैंने कहा—"मेरा यान उपस्थित है। मैं बुगदाद की रहने वाली हूं जितना धन यान में है उतना ही घर छोड़ आई हूँ आप आनन्द से मेरे साथ चलिये।"

युवक ने सहर्ष स्वीकार किया। अस्तु दूसरे दिन प्रातः ही महल से अपने जहाज के पास पहुंची। रात को महल में रह जाने के कारण दोनों बहिनें अति चिन्तातर थीं। उन्हें आश्वासन देने पश्चात् सेवकों द्वारा जहाज खाली करा और महल में से जितनी धन सम्पति जहाज में समा सकी भराकर राजकुमार सहित बुगदाद की ओर पयान किया।

मार्ग में मेरी बहिनें राजकुमार को अति स्वरूपवान् देख ईर्षा करने लगीं। मेरा असीम स्नेह देख दोनों ने पूछा—"बहिन ! बुगदाद पहुंचकर इस युवक को कहां रक्खोगी ?"

मैंने साधारणतः उत्तर दिया—"बुगदाद पहुंचकर मैं राजकुमार के साथ विवाह करूंगी।"

मैंने विवाह के लिये कह तो दिया परन्तु राजकुमार को स्वीकार न हो अस्तु मतलब भरी निगाह से राजकुमार की ओर देख मैंने कहा--"प्राणेश्वर, क्या आपको दासी स्वरूप ग्रहण करना अंगीकार है।"

राजकुमार ने प्रसन्न हो उत्तर दिया—"हृदयेश्वरी ! तुम्हारा

कहनी शिरोधार्य ! यही प्रार्थना करने की स्वयम् मेरी इच्छा थी मैं तुम्हारी दोनों बहिनों के सामने वचन बद्ध होता हूं कि अवश्य तुम्हारे साथ विवाह कर अलौकिक सुख का भागी बनूंगा न जाने वह शुभ दिन कब आवेगा जब हम तुम दोनों सदा के लिये एक प्राण हो जावेगे।

हम दोनों को प्रेम निरत देख मेरी बहिनें अति दुखी हुईं सर्वनाश का उपाय खोजने लगीं। अभी हमारा जहाज पार्श्व के मुहानें तक पहुंचा था यदिअनुकूल वायु रहती तो हम दूसरे दिन प्रातः ही वो शहर पहुंच जाते। परन्तु हम दोनों को सुप्तावस्था में अचेत पा मेरी दोनों बहिनों ने सहसा समुद्र में ढकेल दिया। राजकुमार तो डूब गया परन्तु मैं तैरते २ एक भग्नावशेष निर्जन द्वीप में जा पहुंची जहाँ से वह नगर दस कोस दूर था। मैं अपने वस्त्र सुखा और कुछ फल-फूल खा एक वृक्ष के नीचे लेट रही हटात् एक बहुत बड़ा सर्प पहिले मेरी सीधी कुक्ष की ओर फिर वाम ओर आ जिह्वा निकाल देखने लगा। मैंने जाना कि इसे कुछ कष्ट पहुंचा है सहसा मेरी दृष्टि एक दूसरे सर्प पर जो उससे बहुत बलिष्ठ था पड़ी वह पहले सर्प की पूंछ मुख में दावे उसे निगल जाने की चेष्टा कर रहा था मैंने दयाकर निर्भय हो एक बड़ा पत्थर सर्प के मुख पर दे मारा उसका शिर चूर्ण हो गया। पहिला सर्प मुक्त हो ऊपर उड़ गया। मैं अति विस्मित हो दूसरे स्थान पर जा सोई। जब मेरी आंख खुली तो एक युवती हरित वस्त्र धारण किये दो कालो कुतियों को पकड़े अपने सिरहाने बैठी देखी। मैंने खड़े होकर उससे पूछा—तू कौन है ?"

वह बोली—"दयार्द्र भगिनी ? मैं वही सर्प हूं जिसे तुमने अभी अभी शत्रु से मुक्त कर जीवन दान दिया है। मैंने चाहा कि किसी प्रकार आपके उपकार से उऋण होऊं। अतएव मैं तुम्हारे जहाज पर पहुँची और मंत्रबलसे तुम्हारी दोनों बहनों को काली कुतिया बना समस्त अटाला जहाज से उतार और तुम्हारे घर रख, जहाज को डुबो आपकी सेवा में उपस्थित हुई हूं।" यह कहकर युवती परी ने दोनों कुतियों सहित मुझे घर पहुंचा दिया। जहाज में मेरा जो कुछ धन-धान्य था वह

मैंने अपने घर में तद्वत प लिया।

बिदा होते समय परी ने मुझसे कहा—"तुम्हारी बहिनों को उचित दण्ड नहीं मिला मैं ईश्वर के आदेशानुसार तुम्हें समझाए देती हूं तुम सदैव प्रत्येक रात्रि को इनमें से प्रत्येक को सौ २ चाबुकमारा करना कदापि इसमें भूल न करना। हम समस्त परी "तुम्हारे वश में हैं जब याद करोगी तत्क्षण तुम्हारी सहायता को उपस्थित हो जावेंगी।"

उसी दिन से अहर्निश मैं इन दोनों को मारा करती हूँ। यह मेरी बहिन हैं स्मरण कर दुःख स कातर हो मैं स्वयम् रोने लगती हूँ और इनके अश्रु पोंछ प्यार से कण्ठ लगा लेती हूं। यही मेरी कथा है शेष हाल मेरी बहिन अमीना वर्णन करेगी।

अमीना की कथा

पिता के स्वर्गवास पश्चात् मेरी माता एक निर्जन गृह में जा रही जहाँ शान्ति से वैधव्य काट सके। मेरा विवाह एक धनवान् से यहीं का रहने वाला था कर दिया था परन्तु सुख से एक वर्ष भी न बीता था कि मेरा पति कालवश हुआ उसकी सम्पत्ति से ९० सहस्त्रमुद्रा मुझे हस्तगत हुईं। मैं उसी के आश्रय आनन्द से कालक्षेप करने लगी। ६ महीना बीतने पर मैंने नवीन रेशमी वस्त्र के १० जोड़े एक २ सहस्त्र मुद्रा के अपने लिये सिलवाए, और एक वर्ष पश्चात उन्हें पहनना प्रारम्भ कर दिया।

एक दिन मैं अपने घर में उदास बैठी अपनी क्षण भंगुर दशा की उपेक्षा कर रही थी सहसा एक दासी ने आकर मेरे विचार में विक्षेप किया—'एक वृद्धा द्वार पर खड़ी आपसे मिलने की प्रतीक्षा कर रही है यदि आज्ञा हो तो भीतर बुला लाऊँ'।

मेरे कहने पर दासी वृद्धा को मेरे पास लिवा लाई। वृद्धा ने बड़ी सभ्यता से प्रणाम कर अति विनीत प्रार्थना की—मैंने आपकी अधिक प्रशंसा सुनी है। मेरे पास एक अनाथ बालिका है। आज की

रात उसका विवाह होगा परन्तु यहां मुझे कोई नहीं जानता यत्नपूर्वक अति प्रतिष्ठित धनिक पुत्र के साथ मैंने उसका पाणिग्रहण स्वीकार कराया है। जबकि वर के साथ कौटुम्बिक अनेक स्त्रियां वस्त्राभूषण से सुसज्जित पधारेंगी ऐसी दशा में उनके स्वागत के लिये तुम जैसी रमणी रत्न ही सम्मान योग्य उचित अभ्यर्थना कर सकती है। (दीर्घ निश्वास त्याग कर) तुम्हारे अतिरिक्त यहां मेरा कोई नहीं है।" यह कहकर वृद्धा अश्रुधारा से अपना वक्षस्थल भिगोने लगी।

वृद्धा के रोने पर मुझे तरस आ गया मैंने सायं समय उसके घर चलने का वचन दे दिया।

"ईश्वर तुम्हें सौभाग्यवती बनावे। मैं सन्ध्या समय स्वयम् आकर तुमको अपने साथ लिवा जाऊंगी।" यह कहकर वृद्धा अनेक आशीष देती चली गई।

मैं सन्ध्या के पूर्व ही वस्त्राभरण से अलंकृत हो वृद्धा के आने की प्रतीक्षा करने लगी। सूर्य्यास्त के समय वृद्धा आ मुझे अपने साथ ले चली। एक अति संकीर्ण गली में घुसकर मुझे वृद्धा ने एक बड़े द्वार पर ले जाकर खड़ा कर दिया। द्वार के अधो भाग में, मोटे २ शब्दों में 'सुख भवन" लिखाहुआ था। थोड़ीदेर में द्वार खोलते ही मैंने घरमें प्रवेशकिया एक परम सुन्दरी युवती ने आकर मेरा स्वागत किया और कंठ से लगा एक कमरे में रत्नजटित उच्च सिंहासन पर लेजाकर मुझे बिठाया। युवती सुन्दरी ने मुझसे पूछा—"क्या तुम विवाह के कोहबरका आनन्द उपभोग करने आईहो? परन्तु औरों के विवाहमें सुख-सम्भोग कहां। आप स्वयम् वही सुख उपलब्ध करें। हे रमणीरत्न! विवाहका रहस्य यह है कि अति सुन्दर सच्चरित्र, रसिक एक मेराभाई है वह तुम्हारे सौन्दर्य पर ऐसा मुग्ध हुआ है जो अनेक चेष्टा करने पर भी तुम्हें नहीं भूल सका। यदि तुम उसका प्रेम स्वीकार न करोगी तो वह प्राण दे देगा। मैं ईश्वर की साक्षी देकर कहती हूं जैसी तुम रति की प्रतिकृति हो वैसा ही मेरा भाई सुन्दर गौर वर्ण, विशाल वक्षस्थल आजानुबाहु और सर्वाङ्ग सुन्दर है

देखने में दूसरा कामदेव प्रतिभान होता है । जब से तुम्हें देखा है घर की अनिन्द्य कामिनियों को छोड़ तुम्हारी प्रतीक्षा किया करता है वे सब स्त्रियां कहा करती हैं इनके (भाई) समान दूसरा प्रिय दर्शनीय पुरुष नहीं है वह काम कला में अति प्रवीण है । युवतियां सदैव उसकी इच्छा रखती हैं । मैं सत्य कहती हूं उसके समान रसिक प्रिय पति आपको खोजने से न मिलेगा । यदि तुम कहो तो मैं उसे सम्वाद सुना आऊं । उसे एक २ पल पहर समान भान होता होगा ।"

यद्यपि पुनर्पति करने की मेरी इच्छा न थी परन्तु सुन्दरी ने अपने भाई की ऐसी मुक्तकंठ से प्रशसा की कि उसका प्रस्ताव अस्वीकार करने का साहस ही न हुआ । मैं चुप होगई ।

'मौनं सम्मति लक्षणम्" के अनुसार सुन्दरी ने अपने भाई को सम्बोधन किया सहसा एक युवक सौन्दर्य वयस्क दूसरे कमरे से निकल मेरे पास आ बैठा ।

युवक को देखकर मैं अति प्रसन्न हुई परस्पर वार्तालाप से मैंने उसे शिक्षित और सुमस्य पाया । उसी समय काजी (धार्मिक पंडित) ने आकर निकाह पढ़ एक प्राण बना दिया । आचरित पत्र पर चार मनुष्यो के साक्षी स्वरूप हस्ताक्षर कराये । पुनर्पति ने स्वयम् वचन बद्ध हो मुझसे प्रतिज्ञा कराई "पति के अनिरिक्त स्वप्न में भी पर पुरुष चितवन न करूंगी । किसी से व्यर्थ बातचीत करना भी दोष समझूंगी ।" अस्तु मैं उसी समय से राजसी ठाठबाट से वहीं रहने लगी ।

एक मास पश्चात् कुछ आवश्यकीय वस्त्रक्रय करने की इच्छा से पति से चौक जाने की आज्ञा मांगी बुगदाद में उस समय धनिक पत्नी स्वयं बाजार जाकर क्रय विक्रय किया करती थीं यही प्रचार था न कोई बाधा देता था न किसी को आक्षेप था । अस्तु मैं दो दासी और उसी वृद्धा सहित जो मेरे पास ही रहा करती थी, बाजार गई । बजाजे में पहुंच कर वृद्धा ने कहा—"यहां एक नवयुवक की दुकान अच्छी है उसे मैं जानती भी हूं वह असत्य-भाषी भी नहीं है ।" निदान मैं वृद्धा के

पीछे २ उसी दुकान पर पहुंची नवयुवक ने अनेक थान रेशमी दिखाये ।

मैंने एक थान छांट कर वृद्धा से उसका मूल्य पुछवाया क्योंकि मैं पर पुरुष से बात न करने की पति से प्रतिज्ञा कर चुकी थी । कामांध युवक ने कहा—"केवल चुम्बन मात्र इसका मूल्य है ।" यह कह वह थान बेठन में लपेट मेरे आगे रख दिया ।

मैंने विषन्न हो वृद्धा से कहा—"युवक बड़ा ढीट निर्लज्ज है ।" परन्तु वृद्धा ने लालच के वश हो मुझे आश्वासन दे समझाया—"सुन्दरी दोष क्या है वह तुम्हारी प्रतिज्ञा भंग नहीं करता, न उसकी कुछ इच्छा ही है एक मात्र कपोल चुम्बन······।"

अज्ञानता वश मैंने यह बात वृद्धा की मानली मेरी प्रकृति ही किसी की बात अस्वीकार करने की नहीं है । इस अनिष्ट को कोई देखे न अस्तु । दासी और वृद्धा मेरे चतुर्दिक खड़ी होगईं मने सकुचाते हुए पट खोल कपोल युवक की ओर कर दिया । उस दुष्ट ने बलपूर्वक मुझे काट लिया । रक्त श्राव और असह्य वेदना से में अचेत होगई । युवक उसी समय दुकान बन्द कर चला गया ।

जब मै सचेत हुई तो वृद्धा हाथ जोड़ कहने लगी—"इस दुष्ट की दुकान पर मैं ही तुम्हें लिवाकर लाई । मेरे ही कारण तुम्हें उत्पीड़ित होना पड़ा परन्तु मैं ऐसा कदापि नहीं जानती थी, स्वामिनि ! मुझे क्षमा करो । घर पहुंचते ही मै ऐसी औषधि लगा दूंगी जो तीन दिन में चिन्ह तक न रहेगा ।

मैं बड़ी कठिनाई से घर पहुंच अपने शयनालय में जा लेटी रात्रि को मेरे पति ने आकर अस्वस्थता का कारण पूछा यद्यपि मैंने सिर पीड़ा मिस से मुख छिपा रखा था परन्तु मेरे कपोल को आहत देख उसे सन्देह होगया—"यह घाव कैसा है ।" पूछने पर मैंने दीर्घ निश्वास त्याग उत्तर दिया "आपको स्मरण होगा आज मैं चौक गई थी वहां सहसा एक श्रमजीवी लड़कियों का गट्ठा सिर पर धरे मेरे पास होकर निकला । गली अति संकीर्ण थी एक लकड़ी का खरोंचा मेरे गाल पर लग गया ।"

पति ने क्रुद्ध होकर कहा—'मैं कल सब लकड़हारों को फांसी दिलवा दूंगा।"

मैं अति विषन्न हुई। व्यर्थ ही मेरे कारण इतने निरपराधी फांसी पर लटकाये जावेंगे। अतएव मैंने पति से लकड़हारों की ओर से अनेक क्षमा प्रार्थना की परन्तु उसने एक न सुनी अन्त में मुझे कहना पड़ा—"लकड़हारे निर्दोष हैं।"

अब पति ने भय दिखाकर पूछा—"सत्य २ बता तेरा कपोल कैसे आहत हुआ"

मैंने कहा—"प्राणेश्वर! वास्तव में एक कुम्हार मिट्टी के पात्र गधे पर भार किये जा रहा था सुतरां गधे का ऐसा धक्का लगा कि मैं गिर पड़ी और एक टुकड़ा कांच का मेरे गाल में समा गया।

पति ने क्रोध प्रकट कर कहा—"यदि यह सत्य है तो महामंत्री जाफर द्वारा समस्त कुम्हारों का बध करा निश्चिन्त होऊंगा।"

मैंने सोचा यह भी वही हुआ अस्तु मैंने अति विनीत प्रार्थना की—"जीवितेश्वर! मैं तो उपहास से कहती थी अन्य वास्तविक घटना यह है कि मार्ग में उष्णता वश मेरा शिर घूम गया और मैं अचेत हो गिर पड़ी यदि विश्वास न हो तो अचेतनावस्था में कपोल आहत होते की व्यवस्था आप इन दोनों दासियों से जो मेरे साथ गईं थीं पूछ सकते हैं।"

यह सुन मेरे पति के नेत्र आरक्त और भृकुटी दीर्घयत हो गईं क्रोध कम्पित अधरों पर दन्तारोपण होने लगा उसे ऐसा अविश्वास हुआ कि संकेत द्वारा तीन सेवक बुला उन्हें आज्ञा दी—"शीघ्र इस पामर का बध करो! दुष्टा का देह नदी में फेंक आना। मैं इसका मुख देखना नहीं चाहता यह मानवी रूप में राक्षसी है।"

एक सेवक ने मुझे एक ओर ले जाकर कहा—"यह तुम्हारा अंतिम समय है किसी को देखना, अथवा कुछ करना धरना हो कह सुन लो।"

मैं थर २ कांप रही थी। पति से कुछ क्षमा प्रार्थना करना चाहती थी परन्तु मुख से एक शब्द न निकला। पति ने दया माया विसार शीघ्र नाश की आज्ञा दे दी। मैं निमाज पढ़ना चाहती थी परन्तु सेवकों ने इतना अवकाश न दिया मेरे वध के लिये छूरिका उठाई ही थी कि सहसा वही वृद्धा जिसने मेरे पति को अपना दूध पिलाया था चरणों में गिर कर कहने लगी—"मैं अपने दुग्धपान के बदले इस सुन्दरी का प्राणदान मांगती हूं मेरे ऊपर दया कर इसे जीवन भिक्षा दे दो। ईश्वर तुम्हारा भला करेगा।"

वृद्धा के रोने पीटने पर उसने मुझे क्षमा कर दिया। परन्तु एक सेवक को आज्ञा दी कि सौ चाबुक इसके कंधों पर मार कर घर से निकाल दो।

निर्दय सेवक ने मुझे इतना मारा कि मैं अचेत हो गई मेरा सब माँस उड़ गया। न जाने मुझे कौन कहाँ ले गया जब मैं सचेत हुई तो एक हवेली में शय्या पर पड़े पाया। थोड़े दिनों में वृद्धा की सेवा सुश्रूषा एवम् औषधि प्रयोग से मैं स्वस्थ हो गई।

मैंने अपने पहिले पति के घर को जो धन धान्य से परिपूर्ण था खोजा परन्तु अनेक चेष्टा करने पर उसका कोई चिन्ह तक न मिला क्योंकि दूसरे पति ने रुष्ट हो मेरा घर खुदवा दिया था। मुझे कोई अपना न दृष्टि आता था अन्त सन्तोष कर मैं अपनी प्यारी बहिन जबीदा के घर चली आई जबीदा ने मुझे सम्मान से सादर अपने पास रक्खा। उसे मैं कहां तक धन्यवाद दूं। मेरी छोटी बहिन साफी भी माता के स्वर्गवास पश्चात् मेरे पास आ रही। हम तीनों बहिनें प्रेम पूर्वक रहती स्वयम् ही घर का काम काज कर लेती हैं किसी की सहायता की हमें आवश्यकता नहीं है।

खलीफा उनका विचित्र हाल सुन कर विस्मित रहगया उसने आश्चर्यित हो पूछा कि--"वह परी जो सर्पाकार मिली थी और तुम्हारी बहिनों को कुतिया बना गई थी अब कहाँ है।"

जबीदा ने वह विदा होते समय उसने कुछ बाल देकर मुझे समझाया—"यदि किसी समय कोई विपत्ति आ पड़े तो तुम इन बालों को अग्नि में डालदेना मैं जहां कहीं, जिस दिशा में होऊंगी तत्क्षण तुम्हारे पास विद्यमान हो जाऊंगी।"

यह कहकर जबीदा ने एक बक्स खोल बालों का गुच्छा खलीफा के आगे रख दिया।

परी के देखने की खलीफा को इतनी इच्छा प्रवल हुई कि उसी समय बाल आग में डलवा दिये। हटात् वही परी खलीफा के संमुख उपस्थित हो कहने लगी—"राजन्, क्या आज्ञा है ? जबीदा ने मेरे ऊपर बड़ा उपकार किया है मैं उचित ऋण परिशोध नहीं करसकी। मैंने इसकी बहिनों को कुतिया बना दिया था यदि आज्ञा हो तो उन्हें पूर्वाकृति में परिणित करदूं ?"

खलीफा ने कहा—"यदि तुम ऐसा करो तो मैं अति कृतज्ञ होऊंगा। परन्तु कितना पश्चात्ताप है कि पति द्वारा चाबुक आघात से अमीना के कंधे काले पड़ गए परन्तु शोक कि मेरे शासन में होते अनुसंधान करने पर भी उसका नाम मालूम न हुआ तुम अन्तर्यामी हो उसका परिचय देकर आभारी बनाओ ?"

परी ने एक पात्र अभिमंत्रित जल दोनों कुतियों के ऊपर छिड़क दिया वह तुरन्त स्त्री रूप हो गईं। उसी जल द्वारा अमीना के कन्धे स्वच्छ पूर्ववत होगए। तब परी ने हाथ जोड़कर कहा सम्राट् ! अमीना का दूसरा पति छोटा राजकुमार "अमीन" है। पहले तो उसके सौन्दर्य पर मुग्ध हो घर बुला निकाह किया पश्चात् सन्देह वश ताड़ित कर घर से निकाल दिया अमीना वास्तव में निर्दोष सच्चरित्रा स्वच्छ दर्पणवत् है।" यह कहकर परी अन्तर्द्धान होगई।

खलीफा ने अपने छोटे पुत्र अमीन को अमीना सौंपकर विश्वास दिलाया कि यह पतिव्रता है। राजकुमार प्रसन्न हो अमीना को महलों में लेगया और प्रेम से दोनों दम्पति सुख उपभोग करने लगे।

खलीफा ने जब से जबीदा को देखा उसके रूप सौन्दर्य का पूर्ण अधिकार उसके कोमल हृदय पर होगया था अस्तु उसके साथ खलीफा ने स्वयम् अपना विवाह किया और साफी तथा जबीदा की दोनों सहोदर बहिनों का विवाह तीनों कलन्दरों के साथ जो वास्तव में राजा थे, कर दिया गया।

खलीफा ने प्रत्येक के लिये पृथक २ विशाल महल बनवा दिये और उच्च पदवियों पर विभूषित किया।

सिन्दवाद जहाजी की कथा

उल्लिखित सम्राट खलीफा हारू रसीद के शासन काल में हिन्दवाद नामक अतिदीन श्रमजीवी बुगदाद नगर में वास करता था। एक दिन वह ग्रीष्म ऋतु में भारी बोझ सिर पर धरे नगर के इस ओर से दूसरी ओर जा रहा था परन्तु मार्ग में थकित हो थोड़ी देर विश्राम लेने के अभिप्राय से अपना बोझा एक गली में जिसमें प्रति समय अर्क गुलाब उद्गीरण होता था, शीतल सुगन्धित वायु प्रवाह देख एक विशाल महल के सन्मुख, जिसमें से मनहरण इत्रों की सुगन्ध आ रही थी, बैठ गया। अनेक सुन्दरियों के गीतवाद्य का शब्द, मिष्ट-भाषण पक्षियों का कलरव, नाना प्रकार के सुस्वादु भोजनों की मनोहर सुगन्ध विह्वल किये देती थी। कदाचित आज किसी का भोज्य है इसी कौतूहल में दास दासी द्वार पर खड़े किसी के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं? यह दृश्य देख श्रमजीवी ने विस्मित हो पूछा--“इस विशाल महल का अधिपति कौन है ?”

सब ने आश्चर्यित हो कहा—“ओह तू बुगदाद में रहकर इतना नहीं जानता यह नभ चुम्बित विशाल महल नन्दन कानन की भांति सिन्दवाद जहाजी का है। उसने समस्त समुद्र और नदियों की यात्रा किंबहुना पृथ्वी की परिक्रमा की है इसी से उसे जहाजी नामसे सम्बोधन करते हैं। वह कुबेर की नाईं धनवान है।

श्रमजीवी अति आश्चर्यित हुआ वह आकाश की ओर देख दीर्घ

निश्वास त्याग कहने लगा—"सर्व शक्तिमान् जगदीश ! सिन्दवाद और हिन्दवाद में क्या अन्तर है ? दिन भर कठिन श्रम कर अपने कुटुम्ब को जौ की रोटी भी उपार्जन नहीं कर सकता, और सिन्दवाद राजसी सुख सम्भोग करता है ।" यह कह श्रमजीवी ने दुखित हो पृथ्वी में पदाघात किया वह अपने मन्द भाग्य को कोटि २ धिक्कार रहा था । सहसा एक सेवक ने महल में से निकल उसका हाथ पकड़ कहा—"शीघ्र मेरे साथ चलो स्वयम् सिन्दवाद ने तुझे बुलाया है ।"

हिन्दवाद भय से कांपने लगा । कदाचित् सिन्दबाद ने मेरा उत्ताप श्रवण कर दण्ड देने को बुला भेजा है ? अस्तु वह विनयपूर्वक कहने लगा—"महाशय मैं न जाऊंगा देखो मेरा बोझ पड़ा हुआ है मैं अति दीन भारग्राही हूं मुझे क्षमा करो ।"

"तुम्हारा बोझ कोई न छूयेगा तुम्हें मेरे साथ अवश्य चलना होगा ।" यह कहकर सेवकों ने अनेक प्रलोभन दिखा उसे सग चलने पर वाध्य कर दिया ।

विवश हो हिन्दवाद सेवक के साथ २ चल दिया । एक बड़े कमरे में प्रवेश कर उसने देखा--अनेक मनुष्य एक बड़े दस्तरखान (भोजन करने का वस्त्र) के चतुर्दिक बैठे परस्पर परामर्श कर रहे हैं मध्य में उच्चासन पर एक वयोवृद्ध सभ्य सिन्दवाद जिनकी बड़ी दाढ़ी हृदय का आश्लेश किये हुए है, राजसी ठाठ से आनन्दपूर्वक बैठ मेरे आने की प्रतीक्षा कर कर रहे हैं । सभ्य के पीछे अनेक अनुचर हाथ जोड़े खड़े हुए थे ।

यह दृश्य देख श्रमजीवी विस्मित रह गया । उसने सिन्दवाद को साष्टांग प्रणाम किया । प्रणाम का उत्तर देकर सिन्दवाद ने मुझे अपने दक्षिण की ओर बैठने का संकेत किया अच्छे २ सुस्वादु भोजन स्वयम् उठा २ कर मेरे आगे रख दिये अति बढ़िया मदिरा पिलाई ।

भोजन आस्वादन पश्चात इब्रानी रीत्यानुसार श्रमजीवी से नाम पूछा । "मेरा नाम हिन्दवाद है मैं अति दीन भारग्राही हूं ।"

सिन्दवाद ने प्रसन्न हो कहा—"हम सब तुम्हारे मिलने से

अति संतुष्ट हुए हैं परन्तु जो कुछ तुमने द्वार पर कहा है उसके सुनने की पुनः इच्छा है।"

हिन्दवाद ने लजाकर कहा—"ग्रीष्म ऋतु की उष्णता वश मस्तिष्क ठीक न था संभव है प्रलाप में कोई दुर्वचन मेरे मुख से निकल गया हो अब पुनः उसका उल्लेख करना मूर्खता है आशा है कि आप क्षमा करेंगे।"

तुम्हें कुछ कष्ट हो मेरा यह विचार नहीं है वरन् मैं यह दिखाना चाहता हूं कि मैं जो बिना परिश्रम धनोपार्जन कर सुख भोग रहा हूं यह समझना भ्रम है। मैंने अनेक आपदायें सहन की हैं। सात बार समुद्र यात्रा की है कई बार मरते २ बचा हूं। मेरी यात्रा सुनकर आप विस्मित होंगे।" यह कहकर सिन्दवाद ने हिन्दवाद का बोझा इच्छित स्थान पर पहुँचा अपनी पहिली यात्रा इस प्रकार वर्णन की।

सिन्दवाद की प्रथम यात्रा

मैं तरुणावस्था में ही पैतृक सम्पत्ति की आहुति कर दरिद्रता ग्रसित हुआ। साधारण व्यय चलना भी दुरूह होगया। मैं अपनी मूर्खता वश अपव्यय का स्मरण कर दिन रात कुढ़ा करता था। दरिद्रता से तो जीवित समाधिस्थ हो जाना ही श्रेय है, यह सोच जो कुछ अटाला अवशिष्ट था विक्रय कर उन व्यापारियों के पास गया जो थोड़ी पूंजी से जल यात्रा द्वारा धन उपार्जन करते थे उन्होंने मुझे उचित मंत्रणा दे थोड़ा सा व्यवसायी माल क्रय करा अपने साथ एक जहाज में बंदर बांसरे की ओर चलने का आदेश किया।

हमने भारत के पश्चिम और पासिफक समुद्र के दक्षिण ओर जो समुद्र पारस देश के निकट था उसी में भ्रमण प्रारम्भ किया। समुद्र अनुमान २० मील चौड़ा, तथा २५०० मील लम्बा क्षेत्र में था इसके पूर्व ओर कालापानी और दूसरी ओर अवासीन से मिला हुआ था। मार्ग में समुद्रीय वायु वश मैं कई दिनों तक रुग्ण रहा पश्चात स्वस्थ

हो गया अनेक द्वीपों में जो मार्ग में पड़े अपना माल क्रय विक्रय कर अधिक लाभ उठाया ।

एक दिन हमारा जहाज वायु के समान अति वेग से चला जा रहा था सहसा एक द्वीप परम रमणीक दृष्टि आया अस्तु कप्तान ने सेवकों द्वारा समस्त पाल खुलवा दिये—"जिसकी इच्छा हो द्वीप में सैर कर आवे ।" कप्तान के कहने ही में और कई व्यापारी अपना २ भोजन इत्यादि ले द्वीप में जाने को उद्यत हुये । थोड़ी ही दूर चलने पर कई बार भूकम्प हुआ । यह देख कप्तान ने चीत्कार कर कहा—"यथा सम्भव शीघ्र जहाज पर चढ़ आओ अन्यथा कराल काल के कवर बनोगे वास्तव में यह कोई द्वीप नहीं है वरन् काल रूप एक बड़ी मछली की पीठ है ।'

कप्तान की घोषणा सुन सब बज्राहत की भांति स्तम्भित रह गये । कई शीघ्रगामी तो भागकर पनसुइयों पर, कितने तैर कर जहाज पर चढ़ गए केवल मैं ही उस मछली की पीठ पर रह गया । मत्स्य अगम्य जल में गोता लगा गया । मैं उस लकड़ी द्वारा जिसे जलाने के लिये जहाज पर से अपने सँग लाया था, पानी के ऊपर तैरने लगा कप्तान ने देखा मेरे अतिरिक्त सब जहाज पर पहुंच गये हैं मेरे बचने की कोई आशा नहीं है अस्तु उसने जहाज का लङ्गर उठा दिया ।

मैं एक दिन और रात तैरता रहा दूसरे दिन इतना थक गया था कि शीघ्र ही डूब जाता सहसा एक लहर ने मुझे किनारे पर डाल दिया । बड़ी कठिनाई से धराधाम के दर्शन प्राप्त हुए । उस दिन मैं मृत प्राय एक वृक्ष के नीचे पड़ा रहा । जब मैं चैतन्य हुआ और क्षुधा अति प्रबल हुई तो घुटनों के बल खिचड़ते हुये निकटस्थ हरित भूमि में जहां अनेक वृक्ष थे, उनके फल खा और झरना से जल पी सन्तुष्ट हुआ । कोई नगर समीप में हैं । यह देखने को इधर उधर घूमने लगा । थोड़ी ही दूर आगे एक घोड़ा घास चरते दिखाई पड़ा जो लोहे की खूंटी से बँधा हुआ था । घोड़ा हृष्ट पुष्टांग देखने में अति सुन्दर था । मैं उसके पास पहुंचा ही था कि पृथ्वी के भीतर से कुछ शब्द हुआ और त्वरित एक

मनुष्य बाहर आकर पूछने लगा—"तुम कौन हो ?"

मैंने अपनी समस्त दुखद कथा कह सुनाई। दयाकर वह मुझे तलग्रह में ले गया जहाँ कई मनुष्य बैठे मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे।

वे मुझे देखकर अति विस्मित हुये बड़े सम्मान से मुझे भोजन कराया। भोजन स्वादन पश्चात् मैंने पूछा—"ऐसे निविड़ निर्जन कानन में रहने का क्या कारण है ?"

"हम सब महाराज के साईस है। प्रति वर्ष हम बहुतसी घोड़ी लेकर दरियाई घोड़ों से गर्भ धारण कराने यहाँ लाया करते हैं। घोड़ी समुद्र तट पर बांध दी जाती है यथा समय दरियाई घोड़ा निकल कर घोड़ी के साथ मैथुन कर बध करना चाहता है यदि हम तलगृह से निकल कोलाहल न मचावें तो वह निस्सन्देह घोड़ी को मार डाले। इस प्रकार घोड़ी गर्भिणी हो शहर में भेज दी जाती है। उसका गर्भजात बच्चा दरियाई बनता है जो महाराज की सवारी के काम आता है केवल एक घोड़ी शेष है अस्तु कल हमारा यहाँ से जाने का विचार है।

अश्व-पालक अभी कुछ और कहना चाहता था कि दरियाई घोड़े ने घोड़ी के साथ मैथुन कर उसे बध करना चाहा कि सब ने कोलाहल मचा उसे भगा दिया।

दूसरे दिन वे सब घोड़ी लेकर नगर में आये। मैं भी उनके साथ २ आया। जब वे लोग मुझे अपने राजा के पास ले गये तो वह मेरा परिचय पाकर अति विस्मित हुआ अपने कर्मचारियों को आज्ञा दी कि इस परदेशी को किसी प्रकार का कष्ट न हो।

मैं बड़े सुख से रहने लगा। प्रायः व्यापारियों की संगति में मेरा समय अधिक बीतता था। प्रत्येक नवागत पथिक से जो वहाँ आकर ठहरता मैं बुगदाद के समाचार पूछा करता। मेरी आन्तरिक इच्छा थी कि किसी प्रकार बुगदाद पहुंचू। यद्यपि नगर धन जन से परिपूर्ण था परन्तु मैं सदैव दूर देशों से आने वाले जहाजों की ही देख रेख में रहता था। भारतवासियों से मि[illegible] मुझे बड़ी प्रसन्नता होती थी। अनेक

प्रधान कर्मचारी तथा विदेशीय राजाओं से साक्षात् हुआ वह मेरे और मैं उनके आचार व्यवहार पूछा करता था।

उक्त महाराज के शासन में एक कसील नामक द्वीप है जिसमें यह विचित्रता है कि रात भर नक्कारे का अस्फुट शब्द हुआ करता है। अनुसन्धान से विदित हुआ है कि इस द्वीप मे दज्जाल नामक नास्तिक जो प्रलय काल में विद्यमान हो निवास करता है उसी का कुछ षडयन्त्र रचा हुआ है उक्त प्रशंसा सुनकर मुझे इस द्वीप के देखने की बड़ी उत्कंठा हुई। सुभीता देख मैं कुछ पथिकों के साथ उक्त द्वीप की ओर चलदिया। मार्ग में मैंने अनेक विराटकाय मत्स्य ४०, ५० और १००। १०० गज लम्बे देखे परन्तु वे अति डरपोक जहाज देखते ही भाग जाते थे। एक ऐसी अपूर्व मछली देखी जिसका मुख उलूक पक्षी के समान था परन्तु उसकाआकार एकहाथ जैसा विशाल था एक दिनमें उक्त द्वीप के सुप्रसिद्ध बंदर पर खड़ा पथिकों की व्यापारिक क्रीड़ा देख रहा था प्रत्येक व्यापारी अपनी २ गठरी उतार विक्रयार्थ नगर में ले जाने का उद्योग कर रहा था सहसा मेरी दृष्टि एक बेठन पर, जिस पर मेरा नाम लिखा हुआ था पड़ी, मैंने पहचान लिया कि वास्तव में मेरी गठरी है जो बांसरे से मैंने जहाज में लादी थी। मैं प्रसन्न हो कप्तान के पास जा पूछने लगा—महाशय? यह किसकी गठरियां हैं।"

कप्तान ने दीर्घ निःश्वास त्याग कहना प्रारम्भ किया—"यह गठरी सिन्दबाद नामक व्यापारी की है। मार्ग में वह कई व्यापारियों के साथ एक द्वीप में जो वास्तव में बड़ी मछली की पीठ थी, सैर करने को उतरा, और तो सब शीघ्रता से जहाज पर चढ़ गये केवल सिन्दबाद ही समुद्र में डूब गया। अब मैं उसका सब माल इसी नगर में बेचूंगा जो कुछ लाभ होगा मूल सहित बुगदाद पहुंच कर उसके कुटुम्बियों को सौंप दूंगा।"

मैंने कप्तान से आल्हादित होकर कहा—"महाशय, वह सिन्दबाद मैं ही हूं यह सब गठरियां मेरी हैं।"

कप्तान ने विस्मित हो कहा—"कदापि नहीं मैं कैसे विश्वास करूं स्वयम् मैंने उसे समुद्र में डूबते देखा है तू निस्सन्देह कोई छद्मवेशी है।"

मैंने कप्तान को अपनी समस्त दुखद कथा तथा गठरियों के भीतर गुप्त वस्तुओं का चिन्ह बताया तो उसने आश्चर्यित हो ध्यानपूर्वक मेरी ओर देखा। थोड़ी देर पश्चात् मुझे पहिचान कर कण्ठ से लगा लिया और बधाई दे कहने लगा—"ओह ? तुमने अपार कष्ट सहन किया वास्तव में यह सब गठरियां तुम्हारी ही हैं गिन लो ? तुम्हें अधिकार है चाहे बेचो या बदल लो। यह कह कप्तान ने सब अटाला मेरे आगे रखवा दिया।

सत्यनिष्ठ कप्तान की सौजन्यता देख मैं अति प्रशंसा करने लगा मेरी आकांक्षा थी कि कुछ थोड़ा भाग उसमें से कप्तान भी लेलें परन्तु उसने स्वीकार न किया। विवश हो मैंने बहुत सी अमूल्य वस्तुएँ महाराज की सेवा से समर्पण की उन्होंने विस्मय हो पूछा—"यह सब अटाला तुमने कहां से पाया ?"

मैंने अपना जहाज पा जाने तथा कप्तान की सत्यता कह सुनाई। वह सुनकर अति प्रसन्न हुये। भेंट स्वीकार कर उसके उपलक्ष में मुझे द्रव्य प्रदान किया। मैं महाराज से विदा हो अपने पुरातन जहाज पर सवार हुआ अपना माल चन्दन कर्पूर जायफल लवंगादि से बदल लिया था।

अनेक उपनिवेशों में क्रय विक्रय कर हम बांसरे पहुंचे इस यात्रा से मुझे एक लक्ष मुद्रा लाभ हुई थीं।

घर आकर मैं मित्र बांधवों से मिला। अनेक दासदासी बड़ी हवेली ग्राम इत्यादि क्रय कर सुख पूर्वक रहने लगा।

सिन्दबाद ने १००) पारितोषिक दे हिन्दबाद को कल दूसरा भयानक भ्रमण सुनाने के लिये बुलाया।

सिन्दबाद की दूसरी यात्रा

महाशय ! प्रथम यात्रा में जैसा कि आपको कल विदित हो चुका है मैं अति विपत्ति ग्रसित हुआ था अब मैंने अपने चित्त में दृढ़ संकल्प कर लिया था कि कभी भूलकर भी यात्रा का नाम न लूंगा आनन्द से बुगदाद में ही कुछ व्यवसाय कर कालक्षेप करूंगा परन्तु उद्योग नास्ति दारिद्रयम् के अनुसार जब पास कुछ न रहा तो पुनः यात्रा करने पर बाध्य होना पड़ा ।

मैंने उचित व्यापारिक वस्तु क्रयकर जिन व्यापारियों का मुझे विश्वास था एक सुदृढ़ जहाज निश्चय कर बुगदाद से पयान किया ।

मार्ग से अनेक द्वीपों में क्रय विक्रय करते हम एक द्वीप में जो हरित भूमि संकुलित और सघन वृक्षवेष्टित था जहाज से उतर कर गए । परन्तु वह द्वीप जन शुन्य निविड़ उजाड़ था । मेरे साथी तो मेवा तोड़ तोड़ एकत्रित करने लगे मैं निश्चिन्त एक छोटे झरने पर जाकर बैठ गया और भोजन जो अपने साथ लाया था खाने लगा । भोजन स्वादन पश्चात् मदिरा पीकर मैं वहीं सोगया ।

आह ? जब मैं जागृत हुआ वहां सुनसान था अपना कोई साथी दृष्टि न आया । जहाज बहुत दूर निकल गया था । मैं वज्राहात की भांति स्तम्भित रह गया सम्भव था प्राणान्त हो जाता परन्तु मैं केवल आधे दिन तक अचेतनावस्था में रहकर जब सावधान हुआ अपने को कोटि २ धिक्कारता था प्रथम यात्रा की ही आपदा क्या कम थी जो पुनः यात्रा करने को उद्यत हुआ । मैं अपने चित्त में अनेक ढाढस बंधाता परन्तु ऊपर आकाश और चतुर्दिक अगम्य जल के अतिरिक्त कुछ सुझाई न पड़ता था मैं दुःख से कातर हो इधर उधर घूमने लगा सहसा दूर से श्वेत गोलाकार कोई समाधि दृष्टि आई । जब मैं समीप पहुंचा तो उसे अति विशद और उज्वल पाया मैंने विस्मृत ही उक्त गोला की परिक्रमा

की परन्तु कोई द्वार दृष्टि न आया उसका क्षेत्र फल अनुमान ५०, ६० पग होगा।

सूर्य अस्त हो चुका था प्रति क्षण अन्धकार बढ़ता जाता था मैं विस्मित हो आकाश की ओर देखने लगा सहसा एक विराटकाय पक्षी मेरी ओर उड़ता दृष्टगत हुआ मैं भय से बहुत पीछे हट गया। उस समय मुझे जहाज वालों का कहना स्मरण हुआ वह कहते थे एक पक्षी शरभ (रुख गरुणाकार) बहुत बड़ा है अब मुझे ध्यान आया यह श्वेत गोला इसी पक्षी का अण्डा है।

मेरा विचार ठीक निकला, शरभ उड़ता हुआ अण्डा सेने को उसके ऊपर आ बैठा उसका पैर मेरे पास आकर पड़ा वृक्ष की जड़ के समान उसके नख थे, मैंने सोचा यदि मैं अपनी पगड़ी द्वारा इसके नखों में बँध जाऊं तो सम्भव है यह मुझे किसी सुरक्षित स्थान में पहुंचा दे। मैंने ऐसा ही किया। दूसरे दिन शरभ वहां से आकाश की ओर बहुत ऊंचा उड़ा पृथ्वी दृष्टि न आती थी। मैं अति व्याकुल हो रहा था कि थोड़ी देर में वह पृथ्वी पर उतरा। मैं शीघ्रतापूर्वक उसके नख से अलग हो गया। ईश्वर ने बड़ी रक्षा की यदि मैं सावधानता से पृथक् न हुआ होता तो कराल काल का कवर बनता, शरभ बहुत बड़े अजगर सर्प के ऊपर गिरा था अजगर उसके आक्रमण से न बच सका वह उसे चोंच में दाब ऊपर उड़ गया।

शरभ ने मुझे अति गहरी पर्वत कन्दरा में छोड़ा था चारों ओर ऊँचे २ श्रेणीबद्ध पर्वत थे, मनुष्य की क्या सामर्थ जो ऊपर चढ़ सके मैं बहुत घबराया यह स्थान पूर्व की अपेक्षा और अधिक भयानक था। परन्तु मैंने वहां अनेक बड़े बड़े हीरों के टुकड़े चतुर्दिक पड़े देखे। ओह ऐसे भयानक स्थानमें इतनी अमूल्य वस्तु ? ईश्वर की माया विचित्र है। मैंने बड़े २ टुकड़े एकत्रित कर वस्त्र में बांध लिये। परन्तु वहां अजगर सर्पों का अधिक प्राबल्य था। वह इतने दीर्घाकार थे कि छोटा सर्प भी हाथीको निगल सकता था। परन्तु वह शरभ के भय से दिनमें बाहर कम

निकलते थे। मैं दिन भर वहां घूमता रहता रात्रि को किसी गुफा में जा छिपता, बड़े २ पत्थरों से गुफा का मुख भली भांति बन्द कर लेता अब क्रमशः सर्प निकलते और परस्पर ऐसा भयानक शब्द करते कि मुझे नींद न आती थी।

प्रभात होने पर मैं गुफा से निकल कुछ भोजन कर सो रहा था सहसा कोई भारी वस्तु मेरे पास आकर गिरी। मैंने ध्यान पूर्वक देखा मांस का टुकड़ा है वरन् इस प्रकार बहुत मांस चतुर्दिक पड़ा दृष्टि गत हुआ।

मैंने सुना था कि कहीं हीरे की खानि है बहुधा व्यापारी उस पर्वत पर जाकर हीरा लाया करते हैं। व्यापारी लोग बड़े २ माँस के टुकड़े वहाँ गहरी कन्दराओं में डाल देते हैं, जिनमें हीरा चुपट जाते हैं और बढ़े २ गृद्ध जो आकार में हाथी से भी अधिक सुदीर्घ एवम् बलवान होते हैं मांस के टुकड़ों को उडाकर अपने घोंसलों में ले आते है। इस प्रकार व्यापारियों को घोंसलों में से हीरा हस्तगत् होते हैं!

मैंने ईश्वर को अनेक धन्यवाद दे एक बड़ा थोबड़ा माँस का अपने शरीर हर लपेट लिया। चर्म थैली जिसमें हीरा भरे हुए थे अपनी कटि से जकड़ ली। मुझे प्रतीक्षा करते थोड़ी ही देर हुई थी कि एक विराटकाय गृद्ध मुझे ऊपर ले उड़ा और सावधानी से अपने घोंसले में जा रक्खा। व्यापारी जन मुझे देख अति कोलाहल मचाने लगे। गृद्ध तो उड़ गया परन्तु व्यापारियों का कौतूहल कम न हुआ।

मैंने उन्हें विश्वास दिलाकर कहा मेरे पास जो कुछ है सब आपका ही है। मैं अति विपत्ति ग्रसित हूँ मेरी रक्षा करो" यह कहकर मने वही चर्म थैली उन्हें दिखा दी। सब व्यापारी एकत्रित हो मेरी दुःखद कथा सुन अति विस्मित हुए वह दया कर मुझे अपने वास स्थान पर ले गये।

व्यापारी मेरे हीरा देखकर विस्मय से कहने लगे—"यद्यपि इसी व्यवसाय में हमने इतनी आयु बिताई है परन्तु ऐसे बड़े हीरा हमने

आजन्म नहीं देखे।"

जिस व्यापारी ने मुझे आदर पूर्वक अपने पास रक्खा था उसे मैंने थैली देकर कहा—"जितनी इच्छा हो इसमें से ले लो।" परन्तु मेरे बहुत अनुरोध करने पर उसने एक बड़ा और कुछ छोटे २ टुकड़ा हीरा ले लिये। क्योंकि उनका नियम था परस्पर १-१ घोंसला के बांट लिया करते थे जो कुछ हीरा प्रत्येक के भाग में आते वह उसी में सन्तुष्ट रहते थे।

उस रात्रि को मैंने वहीं शयन किया दूसरे दिन सब व्यापारियों सहित मैं रूहा द्वीप में पहुँचा। वहां वृक्षों से जो बहुत बड़े होते हैं कपूर निकला करता है वृक्ष की एक लता छुरिका द्वारा चीर देते हैं, और नीचे कोई पात्र रख देते हैं, जो रस निकलता है सूखने पर कपूर हो जाता है।

इसी द्वीप में एक बलिष्ठ पशु हाथी से छोटा और भैंसा मे बड़ा होता है इसे गेंड़ा कहते हैं नासिका के अग्रभाग में एक हाथ अनुमान शृङ्ग निकला होता है। गेंडा प्राय: हाथी के पेट में अपना सींग प्रविष्ट कर उसे ऊपर उठा लेता है। परन्तु हस्ती के पेट विदारने से रक्तस्राव के कारण उसके नेत्र बन्द हो जाते हैं वरन् वह अन्धा हो जाता है। उसी दशा में हाथी सहित गेंडे को शरभ पक्षी ले उड़ता है इस प्रकार कई दिनों तक उसका भोज्य चल जाता है। निदान् मैं अनेक द्वीपों में भ्रमण कर अपने नगर में आया बड़े आनन्द उल्लास से अपने घर पहुंचा दीन अनाथों को दान और मित्र बांधवों को भेंटें दे आनन्द से रहने लगा।

सिन्दवाद ने आज भी कल की नाईं १०० मुद्रा श्रमजीवी को पारतोषिक दे कल अपनी तीसरी यात्रा का वृत्तान्त सुनाने को बुलाया।

सिन्दवाद की तीसरी यात्रा

दोनों यात्राओं में मुझे जो अपार कष्ट भोगने पड़े थे वह सब विस्मरण हो गए। मैं जितना अधिक धनी होऊँगा उतना ही

आनन्द से जीवन व्यतीत कर सकूँगा। अस्तु मैंने तीसरी यात्रा प्रारम्भ की बुगदाद से चलकर बांसरे पहुंचा और विश्वस्त व्यापारियों के साथ एक जहाज निश्चय कर उत्तर की ओर पयान किया।

हम कई द्वीपों में माल बेचते और लाभ करते चले जाते थे। एक दिन हमारा जहाज विपद् में पड़ा प्रचन्ड वायु ने कहीं का कहीं पहुँचा दिया। जहाज की दशा अति शोचनीय थी खाने पीने की वस्तु एक दम कम होगई थी बड़े यत्न से एक द्वीप में पहुंचे। जहाज का लंगर होते ही कप्तान ने अति विषन्न हो कहा—"यह द्वीप बनमानसों की बस्ती है इनसे प्राण रक्षा होना अति दुरूह है यदि स्वयम् अपनी रक्षा करते हुये कोई अर्द्ध–वन्य आहत हो जावे तो फिर सबके सब प्राण लेवा बन जाते हैं।"

अभी कप्तान ने अपनी वक्तृता समाप्त न की थी कि एक यूथ नाटे सवा गज आकार के बनमानसों का जिनके शरीर लाल लाल बालों से आच्छादित थे हमारी ओर दौड़े और समुद्र में तैरने लगे। उनकी भाषा हमारी समझ में न आती थी। देखते ही देखते हमारा जहाज घेर लिया। लंगर की रस्सी काट जहाज किनारे पर खींच ले गये और बल-पूर्वक हम सबको उतारकर द्वीप में ले गये। यद्यपि वहां मेवा इत्यादि अनेक पौष्टिक पदार्थ थे परन्तु हम प्राण भय से प्रबल क्षुधा वश कुछ थोड़ा सा ही खाकर सन्तुष्ट रहते थे। जब हम मेवा खा चुके तो वही बनमानुस हमें घेरकर एक बड़े मकान के सदन में ले गये जो वास्तव में श्मशानरूप मनुष्यों के अस्थि-पिञ्जर से परिपूर्ण दैत्य पिशाचों का आवास था। अनेक लोहे की शलाका मांस भूनने को इधर उधर पड़ी हुई थीं। सब यह दृश्य देख स्तम्भित रह गए।

सूर्यास्त के समय मकान का द्वार खुला और एक लोहित वर्ण अति भयानकाकार दैत्य ताड़ वृक्ष के समान सुदीर्घकाय बाहर निकला। दैत्य के विकट नेत्र अग्नि के समान लाल २ दमक रहे थे, आगे के दांत सिंह की नाईं मुख से बाहर निकाले हुये, नीचे का ओष्ठ छाती

तक लटकता हुआ, एवम् दुर्गन्धमय अधर रत श्वान की नाईं ठौर २ टपकता जाता था हाथी के समान कान चौड़े टेढे, उलूक की नाईं गोल नख थे। हम सब इस दैत्य को देखकर अचेत हो गये। जब सचेत हुये तो देखा दैत्य हममें से प्रत्येक को उठा २ कर परीक्षा कर रहा है जिस प्रकार बधिक सबल और निर्बल बकरियों का शिर पकड़ और उठा कर देखता है, सबके पूर्व उस निदय दैत्य ने मुझे देखा परन्तु मेरे शरीर में अस्थि चर्म के अतिरिक्त मांस बहुत ही थोड़ा था अस्तु मुझे छोड़ दिया। इस प्रकार सबकी परीक्षा करने पश्चात् कप्तान को जो वास्तव में हृष्ट पुष्ट था अग्नि प्रज्वलित कर भूना और खाकर आनन्द से ड्योढ़ी में जा शयन किया। सोने में उसका कण्ठ स्वर घन गर्जन के समाग था। प्रातः सूर्योदय के पूर्व न जाने वह कहां चला गया।

हम सब रातभर अनिद्र रह भगवान से मृत्यु कामना की प्रार्थना करते रहे। जब दैत्य दूर निकल गया हम सबने पुनःरुदन प्रारम्भ किया। यद्यपि हम सब कई थे और दैत्य अकेला परन्तु कोई उपाय ऐसा दृष्टि न आता था जो प्राण बच सकें। निदान दिनभर मेवा इत्यादि खाते रहे पुनः रात्रि को उसी किरातपुरी में बन्दकर दिये गये दैत्य पुनः आया और साथियों में से एक को भूनकर खा गया। जब वह आनन्द से ड्योढ़ी में सो रहा था कई साथियों ने समुद्र में डूब मरने का संकल्प किया परन्तु आत्म-घात महान पाप है यह सोच सबने ईश्वर-इच्छा पर विचार त्याग दिया।"

मैंने कहा—"समुद्र तट पर अनेक लकड़ियां, तख्ते, नारियल की जटाएं इत्यादि नौका बनाने की सामिग्री उपलब्ध हो सकती हैं, ३।४ नौका बनाकर किसी रक्षित स्थान में बांध दें। अवकाश के समय उनमें बैठ भाग चलेंगे सम्भव है इस युक्ति से प्राण रक्षा हो सके।"

युक्ति संगत देख सबने स्वीकार कर लिया और प्रातः से ही गकर ४।५ नौका बनाली। उन्हें सुरक्षित कर विवश उसी किरातपुरी में आ बन्द होगये। रीत्यानुसार उस दैत्य ने हम में से एक आज भी

खा लिया।

हम दस मनुष्यों ने जो साहसी थे एक २ लोहे की सलाका आग पर रख दी जब वह लाल होगईं तो क्रमशः उस दैत्य की आंखों पर रख दीं। सुतराम् वह अंधा हो गया।

दैत्य चक्षु पीड़ा से अति व्याकुल हुआ चीत्कार कर कोलाहल मचाने और इधर उधर हाथ फैला पकड़ने की चेष्टा करने लगा परन्तु हम सब दूर भाग गये थे। वरन् नौकाओं में बैठ उन्हें खेना प्रारम्भ कर दिया सूर्योदय के समय दो दैत्य उसी अन्धे का हाथ पकड़े तथा और भी अनेक दैत्य आगे पीछे समुद्र तट पर हमारी ओर दौड़े परन्तु हम सब बल-पूर्वक अपनी २ नौका लेकर उनकी सीमा से बाहर होगये थे अस्तु उनसे और तो कुछ न बना बड़े बड़े पाषाण हमें लक्ष्य कर फेंकने लगे निदान् सब नौका अगम्य जल में पाषाण द्वारा डूब गईं केवल एक नौका जिनमें दो साथियों सहित मैं बैठा हुआ था बच रही। जब हम बहुत दूर निकल गये तो समुद्र में प्रचण्ड लहरें उठने और तीव्र वायु के कारण एक दिन और रात्रि पर्यन्त कभी इधर और कभी उधर बहते रहे।

दूसरे दिन ईश्वर कृपा से एक द्वीप में सुस्वाद मेवा खाकर वहीं समुद्र तट पर सो रहे सहसा अर्द्ध रात्रि के समय खड़खड़ाहट का शब्द सुनकर मेरी आंख खुल गई। एक भयानककार अजगर हमारे एक साथी को तोड़ मरोड़ निगल जाने की चेष्टा कर रहा था मैं भय से थर थर कांपने लगा। यद्यपि मैं साथी सहित दूर भाग गया था। परन्तु वहाँ भी हड्डियों के तोड़ने का स्फुट शब्द कर्ण कुहर तक पहुंचा प्राणों को छटपटाता था निदान वह रात्रि बड़े असमञ्जस में कटी दूसरे दिन भी भय से हमारी बुरी दशा थी। सन्ध्या समय हम एक उच्च सघन वृक्ष पर चढ़ गये मैं ऊँची लताओं में छिपा हुआ था और साथी मोटे गुद्दे पर लेट रहा था। थोड़ी देर पश्चात् मैंने सर्प की भयानक बोली सुन नीचे की ओर देखा, अजगर ने मेरे साथी को भी निगल लिया था।

थर २ कांपते हुये वह रात्रि उसी वृक्ष पर बितादी कल निस्सन्देह यह सर्प मुझे भी निगल जायगा। अतएव विवश हो समुद्र में डूबने के विचार से मैं तट पर पहुंचा परन्तु अभी आयु शेष थी एक जहाज दूरसे आता दृष्टि पड़ा मैंने अपनी पगड़ी घुमाई और चिल्लाया।

" कप्तान को दया आई एक छोटी सी नौका भेज मुझे जहाज पर बुला लिया। पथिक विस्मित हो पूछने लगे—कैसे इस विकट उजाड़ में तुम्हारा आना हुआ? हमने सुना है इस द्वीप में नराहारी राक्षस और सर्प रहते हैं तुम कैसे जीवित रहे!

मैंने अपनी दुःखद कथा आद्योपान्त कह सुनाई। सब ही आश्चर्यान्वित हुये दया कर मेरे भोजन और वस्त्र का भी उन्होंने प्रबन्ध कर दिया।

हम द्वीपों में होते हुये सिलहट आये जहां चन्दन के वृक्ष उत्पन्न होते हैं जब व्यापारी अपना २ माल उतारने लगे तो कप्तान ने मुझसे कहा—'एक व्यापारी का माल बहुत दिनों से हमारे यहां रक्षित है। वह तो कालवश हुआ, मेरी इच्छा है बुगदाद पहुँचकर उसके कुटुम्बियों को सौंप दूं। यदि तुम क्रय विक्रय कर लाभ करो तो मैं तुम्हें दे दूं उसके कुटुम्बियों से तुम्हारे अनुरूप धन दिला दूंगा।"

मैंने अनेक धन्यवाद दे कृतज्ञता प्रकट की। कप्तान ने मुनीम को बुला आज्ञा दी—सिन्दबाद का माल इन्हें दे दो?"

मैं अपना नाम सुन चकित रह गया बार २ कप्तान का मुख निहारने लगा मुझे निश्चय हुआ कि निस्सन्देह मेरी दूसरी यात्रा में यही प्तान था, यह सब माल मेरा ही है। इसने मुझे अमुक द्वीप में सोया ड़ा था। अस्तु मैंने कप्तान से पूछा—"क्या आपको विश्वास है कि न्दबाद अकस्मात मारा गया?" कप्तान ध्यान पूर्वक देखने लगा। देर पश्चात् मुझे कण्ठ से लगा गद्गद् हो कहने लगा—"ईश्वर को नुकोट धन्यवाद है कि तुमसे पुनः भेंट हुई।" यह, कह कप्तान ने सब माल सौंप दिया।

इस द्वीप में कुछ मच्छ-अपूर्व ही देखने में आये प्राय: कच्छ ५०। ६० हाथ आकार के और मच्छ गाय के समान दूध देने वाली थी एक मछली उष्ट्र के समान देखी।

निदान इसी प्रकार भ्रमण करते हम बाँसरे पहुंचे पुन: वहां से बुगदाद आए। इस यात्रा में मुझे अपार धन प्राप्त हुआ।

सिन्दबाद ने पूर्ववत् १०० मुद्रा हिन्दबाद को उपहार दे, कल चौथी यात्रा का वृतान्त सुनने को बुलाया।

सिन्दवाद की चौथी यात्रा

भोग विलास में रत हो मैं तीनों यात्राओं का दुख भूल गया, धनोपार्जन और नवीन नगरों की अपूर्व घटनाएं देखने को चित्त अति लालायित हुआ अस्तु व्यापारार्थ अनेक वस्तु क्रय कर पारस की ओर पर्यटन प्रारम्भ किया मार्ग में अनेक नगर देखते भालते एक बन्दर में पहुंचा और जहाज में सबार हो तीरा फिर्मा इत्यादि पूर्वी बन्दरोंकी ओर जा निकला।

एक दिन सहसा वायु का प्रचण्ड झोका जहाज को लगा कप्तान ने सब पाल खुलवा दिये और उपद्रव उठने की आशंका से सबको सावधान कर दिया परन्तु सब विफल मनोरथ। अनेक चेष्टा करने पर भी जहाज की रक्षा न हो सकी। सब पाल फट गये और जहाज बालू में धस कर खण्ड २ हो गया। इस यात्रा में प्राण और धन धान्य सब नाश हो गए केवल मैं और १०।२० व्यापारी तखतों के सहारे बच रहे जो बहते बहते ईश्वर अनुकम्पा से एक द्वीप में पहुंचे।

श्रमित थकित द्वीप में पहुंच कुछ फलाहार कर वहाँ सो रहे। कोई अपने मन्द भाग्य वो धिक्कारता कोई अपनी यावज्जीवन सञ्चित सम्पति की स्मृति और कोई स्त्री पुत्र को स्मरण कर अश्रुधारा से वक्षस्थल भिगोता था। दूसरे दिन हम निर्भीक स्थान पाने की लालसा में इधर उधर घूम रहे थे कि अनेक राक्षसों ने घेर लिया और परस्पर

बाँट कर पशु की तरह हमको अपने घरों में घाँग ले गए।

मैं अपने पांच साथियों सहित एक निर्जन गृह में बन्दी वान हुआ। राक्षस ने हमारे सामने कुछ हरित शाक रखकर खाने का संकेत किया। मेरे निषेध करने पर भी साथियों ने वह शाक खा लिया। उसमें कोई ऐसी मादक वस्तु मिश्रण की थी कि खाते ही सबका ज्ञान तिरोहिन हो गया।

सबको विह्वल देख राक्षसों ने नारियल के घृत में परिपक्व शाल्यान्न हमें खाने को आग्रह किया। सार्थी तो मादकता वश संतुष्ट होकर भोजन करने लगे परन्तु मैं जानता था नराहारी राक्षस हैं मांस अधिक उपलब्ध हो इसी कारण हमें पौष्टिक भोजन देते हैं अतएव अति क्षुधा होने पर मैं अति स्वल्प भोजन किया करता था इसी कारण मैं अति दुर्बल हो जाता था। निदान राक्षस ने पांचों साथियों को हृष्ट पुष्ट देख मार कर खा लिया मुझे दुर्बल देख किसी दूसरे समय के लिये संचित रक्खा वरन् मुझे अकेला जान स्वतन्त्र कर दिया।

एक दिन राक्षसों का परस्पर भोज्य था। एक वृद्ध के व्यतिरिक्त वहाँ कोई न रहा। यह सुअवसर देख मैं वहां से भाग निकला। घड़ी दो घड़ी फल इत्यादि खाने को कहीं ठहर जाता और श्वासपूर्ण होने पर पुनः भागना प्रारम्भ कर देता इस प्रकार एक सप्ताह पर्यन्त मैं भागा आठवें दिन मैं कालेपानी के पास पहुंचा वहां मैंने काली मिर्च बीनते अनेक मनुष्योंको देखा। मेरे आनन्द की सीमा न रही मुझे देख वह सब मेरेपास आ अर्बी भाषा में मेरा परिचय लेने लगे।

स्वदेशी भाषा सुन मैं आल्हाद से गद्गद होगया। मैंने अपनी दुखद कथा कह सुनाई। वह अति विस्मित हो कहने लगे—"धन्य है जो नराहारी राक्षसों से प्राण बचा लाये?"

मैं उक्त व्यापारियों के साथ हो लिया। कुछ दिनों पश्चात् जब वह मिर्च लाद कर अपने घर पहुँचे तो मुझे अपने राजा की सेवा में उपस्थित किया।

राजा ने मेरी कथा सुन अति आश्चर्य किया और दया कर अपने यहां आदरपूर्वक मुझे रख लिया।

द्वीप अति विस्तीर्ण व्यापारिक स्थान था। व्यापारियों को यहां आते जाते देख मुझे अति हर्ष हुआ सम्भव है कोई बुगदाद का जहाज यहां आ निकले और मैं आनन्द से घर पहुँच जाऊं।

राजा ने मेरी सेवा सुश्रूषा से प्रसन्न हो अपना मुख्य कर्मचारी पद प्रदान किया। वहां के आबाल वृद्ध वनिता से मेरा ऐसा बन्धुत्व हो गया था कि मुझे कोई विदेशी न समझता था।

मैंने वहां अश्वारोही सैन्य प्रजागण और स्वयम् राजा को बिना जीन और लगाम के घोड़े पर सवार होते देखा वह जानते ही न थे जीन क्यों कर व्यवहृत होता है। अस्तु मैंने एक चर्मकार द्वारा लकड़ी का माप समझा कर कोठी तथा रकाब और लगाम इत्यादि लुहार से बनवाईं पश्चात् मखमल और अतलसाच्छादित जीन राजाको भेंटदिया।

राजा अति प्रसन्न हुआ उपहार स्वरूप मुझे बहुत धन दिया। मैंने कई जीन बनवा मन्त्री इत्यादि को दिये उन्होंने भी मेरा बहुत सम्मान किया सैकड़ों रुपये की वस्तुएं दीं। एक दिन राजा ने निरनिराले में मुझे बुलाकर कहा "मैं जो कुछ तुम्हें कहूँ करना होगा इसके लिए तुम बचन बद्ध हो तो मैं........"

"भला मैं अस्वीकार कर सकता हूं आपकी आज्ञा शिरोधार्य" यह कहकर मैं उनकी आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगा।

राजा ने कहा—"मैं चाहता हूं तेरा विवाह करदूं। फिर कभी यहां से तेरे जाने की सम्भावना ही न रहेगी।

मैंने स्वीकार कर लिया। राजा ने अपने कुटुम्ब की परम सुन्दरी युवती के साथ बड़े समारोह से मेरा पाणिग्रहण कर दिया। मैं बिवाह कर बड़े सुख से सपत्नीक रहने लगा वरन् मैं उसके प्रेम में ऐसा मुग्ध हुआ कि अपने स्त्री पुत्र को भी भूल गया बहुत काल बीतने पर मेरे एक पड़ोसी की स्त्री मर गई मैं शिष्टाचार को उसके घर गया

और सान्त्वना देने लगा—"ईश्वर तुम्हें दीर्घायु करे ।"

पड़ोसी विषन्न हो बोला—"महाशय आपका आशीर्वाद मेरे लिये शुभकारी नहीं मेरी आयु पूर्ण हो चुकी । यहां यह नियम है कि स्त्री के देहान्त पर पुरुष और पुरुष के देहान्त पर स्त्री मृतक के साथ जीवित समाधिस्थ किये जाते हैं अस्तु यहां के नियमानुसार कोई मुझे बचाने की चेष्टा न करेगा ।"

यह कुरीति सुनकर मैं स्तम्भित रह गया सहस्र वृश्चिक दंशन के समान वेदना होने लगी सहसा पड़ोसी के मित्र बान्धव आकर मृतक को स्नान करा वस्त्रालंकार से सुसज्जित कर खुली अर्थी में रख बड़े उत्साह से ले चले पीछे पीछे वही पड़ोसी शोक चिन्ह धारण किये सन्तप्त चला जाता था ।

जब यह चांडाल चौकड़ी पर्वत के निकट पहुंची तो वहां एक गहरी कन्दरा के मुख से भारी शिला उठा अर्थी सहित शव उसमें डाल दी । पश्चात् वही पड़ोसी सबसे क्षमा प्रार्थना कर एक घड़ा तथा सात रोटियों सहित उसी कन्दरा में धकेल दिया गया और पूर्ववत् शिला रख कर प्रत्येक अपने २ घर चले गये ।

मैं इस कुरीति को देख अति दुःखित हुआ एक दिन मैंने राजा से कहा—"स्वामिन्, मैंने अनेक देशों में भ्रमण किया है परन्तु ऐसा अत्याचार कहीं देखने में नहीं आया ।"

दीर्घ निश्वास त्याग राजा ने कहा—"यह परिपाटी यहाँ चिरकाल से है मैं भी इससे वञ्चित नहीं हूं । ईश्वर न करे यदि सम्राज्ञी आज स्वर्ग सिधार जांय तो मुझे भी सब का अनुकरण करना पड़ेगा ।"

अति विषन्न हो मैंने प्रार्थना की—"प्रभो ! यह अपावन रीति मुख्य नागरिक के लिये है विदेशियों पर तो प्रचलित नहीं है ?"

राजा ने कहा—"देशी विदेशी, स्त्री हो वा पुरुष सब के लिये एक ही नियम है ।

मैं अति दुःखी हुआ यदि आज मेरी स्त्री मर जावे तो मुझे भी

जीवित उसी नर्क कन्दरा में धकेल दिया जावेगा, ईश्वर की माया कि कुछ ही दिनों पीछे मेरी स्त्री रुग्ण हो कराल काल की भेंट हुई।

आह मेरे दुःख का क्या कहना अच्छा होता यदि राक्षसों ने मुझे खा लिया होता। सहसा स्वजनों सहित राजा मेरे घर आया और भी अनेक कर्मचारी एवम् प्रजागण आ मृत स्त्री को स्नान शृङ्गार तथा वस्त्राभूषण से अलंकृतकर उसी नारकी कन्दरा की ओर ले चले। रीत्यानुसार पीछे २ रोता हुआ मैं भी चल दिया जब उस कन्दरा के पास पहुँच गये मैं। अति विनीत प्रार्थना की—"प्रभो ! मैं विदेशी हूं दया करो स्वदेश में मेरे स्त्री पुत्र हैं वह........।"

परन्तु किसी को दया न आई एक घड़ा जल और रोटियों सहित मुझे उसी कन्दरा में उतार दिया।

कन्दरा में प्रवेश कर मैंने देखा अनुमान ५० हाथ गहरा गढ़ा है परन्तु ऐसी दुर्गन्ध मस्तिष्क में पहुंची मैं विह्वल हो दूर भाग गया और पृथ्वी पर गिरकर अश्रु धारा से वक्षस्थल भिगोने लगा। ओह दुर्दैव ! परन्तु देव जो कुछ करता है भला ही करता है। निदान कभी मैं रुदन करता और कभी ईश्वर भरोसे मौन धार लेता। जव क्षुधा अति प्रवल हुई तो नासिका बन्द कर अर्थी से घड़ा जल और रोटी उठा लाया कई दिनों तक खाने पश्चात् सब निराहार रहने लगा तो ऊपर से शिला हटाने का शब्द हुआ। लोगों ने पुरुष शव के साथ एक जीवित स्त्री को गड्ढे में डाल दिया है, मैं क्षुधा से अति व्याकुल हो रहा था एक कङ्काल के पैर की हड्डी उठा बलपूर्वक उस स्त्री के मुख पर दे मारी। वह अचेत हो गिर पड़ी मैंने उसकी रोटी और जल लेकर प्राण पोषण किये ओह एक समय के भोजन के लिये मैंने भीषण हत्या की जिसे स्मरण कर शरीर रोमांचित होता है दूसरे दिन मृत स्त्री के साथ जीवित पुरुष डाला गया फिर तो उस नगर में ऐसी महामारी फैली कि अहर्निश ही १।२ शव के साथ जीवित उस गड्ढे में डाले जाते मैं सबका जल और रोटी छीन लिया करता।

एक दिन मैं एक स्त्री का आहार जल लारहा था सहसा किसी के श्वांस लेने का शब्द कर्ण गोचर हुआ। मैं उसी ओर चलने लगा कोई धुप धुप करता एक ओर दौड़ा जा रहा था मैं उसका पीछा किए ही चला गया। आगे कुछ प्रकाश दृष्टि आया जब मैं समीप पहुंच गया तो वहाँ एक बड़ा छिद्र दृगगत हुआ। मैं उसी में होकर बाहर निकला गढ़े से सटी नदी धारा कल २ शब्द करती बह रही थी। सम्भवतः कोई जल जन्तु मांस खाने गढ़े में घुसा है उसी ने यह छिद्र किया है। ईश्वर को सहस्र: धन्यवाद है कि उक्त छिद्र नगर वासियों को दृष्टि न आ सकता था क्योंकि नगर की ओर ऊँचा पर्वत था दूसरी ओर नदी धारा।

ईश्वर को अनेकानेक धन्यवाद हैं। मैं उस गढ़े से रोटी और रत्न जटित अमूल्य आभरण निकाल आया और गठरियों में बांध नदी तट पर रहने लगा। ईश्वर कृपा से २।३दिन पश्चात् एक जहाज उधर आता दृष्टिगत हुआ मैंने चीत्कार कर अपनी पगड़ी घुमाई पथिकों को दया आई उन्होंने नौका भेजकर मुझे जहाज पर बुला लिया।

जहाज पर पहुंचते ही विस्मत हो कप्तान ने मेरा परिचय लिया मैंने अपनी दुखद कथा आद्योपान्त वर्णन की और वह आभरण जो गढ़े में से लाया था उसे देना चाहे। परन्तु बहुत आग्रह करने पर भी उसने अङ्गीकार न किये।

अब हम क्रमशः अनेक द्वीपों में होते हुये नील द्वीप में जो लंका से दस दिन के मार्ग पर है गए और वहां से कलि द्वीप में पहुंचे जिसमें भारतवर्ष की अनक वस्तुएं कपूर, ईख इत्यादि उत्पन्न होती थी। कलि द्वीप का शासक बड़ा प्रतापशाली राजा था। उसका आधिपत्य नील द्वीप तक था। परन्तु यहाँ के रहिवासी मानव माँसाहारी थे। किंबहुना हम अनेक द्वीप और बन्दरों में होते हुये सानन्द बुगदाद पहुँच गये। इस यात्रा में भी मुझे अपार धन हस्तगत हुआ।

घर आकर मैंने बहुत दान दिया। कई मसजिद और धर्मशालाएँ बनवाई उनमें सदाव्रत का प्रबन्ध किया। स्वजनों को अनेक

अमूल्य वस्तुएं उपहार दीं।" यह कहकर सिन्दबाद ने १०० मुद्रा हिन्दबाद को पारितोषिक दे पाँचवी यात्रा का वृत्तान्त सुनने को पुनः बुलाया।

सिन्दबाद की पंचम यात्रा

कुछ ही काल सुख से बीतने पश्चात् मैंने पुनः जलयात्रा का का विचार किया कुछ व्यापारिक वस्तु क्रयकर गाड़ियोंमें लाद उस बन्दर की ओर जो बुगदाद के सन्निकट था पयान किया। अब की बार स्वयम् अपना यान बनवा अनेक व्यापारियों सहित कालेपानी से भ्रमण करना प्रारम्भ किया कुछ दिनों पश्चात् हमारा यान एक निविड़ निर्जन टापू में पहुँचा हम सब अति उत्साह से द्वीप की सैर करने लगे। निकट ही हमने शरभ पक्षी का एक अण्डा देखा जो प्रथम और द्वितीय यात्रा में ऊपर वर्णित है। अण्डे में बच्चा परिपूर्ण हो निकलने के समीप ही था परन्तु साथियों ने कुल्हाड़ियों द्वारा अण्डा तोड़कर खण्ड २ कर दिया वरन् सबने मिलकर उस बच्चे को भूनकर खा लिया। सहसा मेघाछन्न दो पक्षी द्रुतगति से हमारी ओर आते दृष्टिगत हुये।

कप्तान मेरा सेवक था यह दृश्य देख चीत्कार कर बोला "यथा सम्भव शीघ्र जहाज पर चढ़ आओ जिस बच्चे को तुमने काटकर खाया है उसके माता पिता आ रहे हैं। वह किसी को जीवित न छोड़ेंगे।" हठात् हम सब भागकर जहाज पर पहुंच गये। यथा साध्य कप्तानने अति तीव्र वेगसे जहाज को चलाया परन्तु शरभ अपने अण्डे को न देख अति कोलाहल मचा हमारी ओर अग्रसर हुये हम थर २ कांपने लगे। शरभ थोड़ी दूर उड़कर शिला अपने पंजों में दबाकर जहाज पर फेंकने लगे, परन्तु कप्तान ने बड़ी बुद्धिमत्ता से जहाज घुमा दिया, शिला नदी में गिर पड़ी।

शिला गिरने से बड़ा भयानक शब्द हुआ पानी उथल पुथल हो गया। परन्तु शरभ ने लक्ष्य दर उससे भी अधिक बड़ी शिला पुनः

जहाज पर दे मारी।

जहाज खण्ड २ हो गया सब मनुष्य नदी में डूब गये पहिले तो मैं भी डूब गया परन्तु जब ऊपर उछला तो एक तख्ता जो पास ही बह रहा था पकड़ लिया। तख्ते का अवलम्ब पा एक हाथ से तैरने लगा निदान जब एक हाथ थक जाता दूसरे से तैलने लगता इस प्रकार बहते बहते २ मैं किनारे जा लगा। बड़ी कठिनता से शुष्कस्थल में पहुंचा। थोड़ी देर विश्राम कर शरीर कुछ स्वस्थ हुआ तो मैं आश्रित स्थान की खोज में इधर उधर घूमने लगा। वहां अनेक सघन वाटिका मेवा के वृक्ष तथा स्वच्छ जल पूरित झरना देखे। कुछ मेवा खा और जल पी सन्तुष्ट हुआ।

सूर्य–अस्त हो गया था अतएव मैं वहीं पड़कर सो रहा परन्तु भय से रात भर जागृत ही रहा। प्रातः सूर्योदय के पूर्व ही मैंने इधर उधर घूमना प्रारम्भ कर दिया। सहसा एक वयोवृद्ध जिसका निचला धड़ पङ्गु था एक छोटे झरने पर बैठे दृष्टि पड़े। मेरी तरह वह भी विपत्ति ग्रसित हैं अस्तु निकट पहुँचकर मैंने प्रणाम किया परन्तु वह मुख से कुछ न बोले क्या यह मूक है ? अन्यथा मौन धारण करने का क्या कारण ? मैंने पूछा—"महाशय किस विचार में निमग्न यहां विराज रहे हैं ?" परन्तु अब भी कुछ उत्तर न दिया वरन् कन्धे पर चढ़ाकर मैं उस पार कर दूँ ऐसा संकेत करने लगे।

मेने उसे कन्धे पर चढ़ा लिया। जब मैं दूसरी ओर ले जाकर उतारने को उद्यत हुआ तो उस दुष्ट ने जिसे मैं अति दुर्बल वृद्ध समझता था अपने पैर मेरी ग्रीवा में लपेटगर इस प्रकार कंठ दबाया कि श्वांस रुककर प्राण निकलने में कुछ सन्देह न रहा मैं अचेत हो धराशायी हो गया परन्तु उसने एक पैर मेरे पेट में गाढ़ पदाघात कर मुझे वृक्षों में घसीटना प्रारम्भ किया। निदान इस दुष्ट को कन्धे पर चढ़ाये मैं कई दिन इस नारकी यन्त्रणा से विदग्ध रहा।

मैंने वहां अनेक कद्दू पड़े देखे। अस्तु मैने एक बड़े कद्दू को

शुद्ध कर उसमें अंगूर निचोड़ना प्रारम्भ कर दिया जब वह भर गया तब मैंने उसे एक ओर रख दिया कई दिनों पश्चात् उस दुष्ट को कन्धे पर धरे मैंने उसी ओर प्रवेश किया ओर वही रस पिया वह अति तीव्र मदिरा बन गया था। उस दिन मैं अहर्निश उसे व्यवहार में लाता अस्तु मुझे उस दुष्ट का कष्ट कुछ न व्यापता वरन् नशे में मग्न हो यदा कदा गाने और नाचने लग जाता।

मुझे मग्न देख दुष्ट ने मदिरा पीने की इच्छा प्रकट की मैंने वही कद्दू उसे दे दिया। एक श्वास में वह सब पी गया। थोड़ी देर में ही वह उसके मद में विह्वल हो मेरे कन्धे पर डिग मिगाने लगा। यह सुअवसर देख मैंने उस दुष्ट को पृथ्वी पर दे मारा और बड़े पाषाण से शिर भङ्गकर सदैव को शान्त कर दिया।

इस विपत्ति से मुक्त हो मैं नदी की ओर जारहा था। कि सहसा मार्ग में कई मनुष्यों से जो मिष्ट जल लेने जहाज से आ रहे थे साक्षात् हुआ। वह मुझे देख अति विस्मित हो कहने लगे—"वृद्ध पिशाच से तुम क्योंकर मुक्त हुए ?"

मैंने अपनी समस्त कथा कह सुनाई। वह दयाकर मुझे जहाज पर ले गये। एक व्यापारी की मुझसे अति सहानुभूति हो गयी थी निकटस्थ द्वीप में पहुंचकर उसने एक टोकरा मुझे दे कहा—"हमारे सेवकों के साथ २ रहकर बन से नारियल लाया करो ?"

मैं बहुत से सेवकों के सङ्ग २ बन की ओर चल दिया वहां अति ऊँचे और चिकने नारियल के बृक्ष थे जिन पर चढ़ना अति कठिन था भला मेरी क्या सामर्थ्य है जो नारियल तोड़ सकूं। अभी मैं इसी विचार में निमग्न था कि वहां अनेक वानर आ वृक्षों पर कूदने फाँदने इत्यादि क्रीड़ा करने लगे। मेरे साथियों ने पाषाण एकत्रित कर उन्हें मारना प्रारम्भ कर दिया। वानर भी क्रोधित हो नारियल तोड़ तोड़ हमें मारने लगे। देखते ही देखते चतुर्दिक नारियलों का ढेर लग गया। बड़ी सुगमता से अपने २ टोकरे भर लिये। सुतरां वहां इससे उत्तम अन्न

उपाय नारियल प्राप्त करने का न था।

मैं टोकरा भरे हुए उस व्यापारी के पास ले गया। उसने प्रसन्न हो मुझे मूल्य देकर कहा—"इसी प्रकार तुम नारियल एकत्रित करते रहोगे तो कुछ ही काल में तुम इतना धन उपार्जन कर सकोगे जो सुगमता पूर्वक अपने घर पहुंच सको।"

निदान उसी दिन से मैं अहर्निश नारियल लाने लगा। कुछ ही दिनों में मेरे पास अधिक नारियल और धन होगया।

थोड़े ही दिनों पीछे वहां एक जहाज आया। मैं व्यापारी को अनेक धन्यवाद दे विदा हो अपने नारियल उस जहाज पर लाद वहाँ से चल दिया। अब मैं उस द्वीप में आया जहां काली मिर्च उत्पन्न होती है। वहां नारियल विक्रय और काली मिर्च क्रय कर कुमारी द्वीप में पहुंचा जहां के बासी मदिरा पीना अधर्म समझने तथा सत्य भाषी होते हैं वहां से आबनूस और चन्दन क्रय किया और बहु सम्मति से समुद्र से मोती निकलवाये। ईश्वर माया कि औरों की अपेक्षा मुझे अधिक मुक्ता लाभ हुए। निदान वहां से मैं बन्दर बाँसरे पहुंचा और बाँसरे से बुगदाद आ गया।

घर आकर मैंने चन्दन, मुक्ता एवं काली मिर्च विक्रय कर अधि लाभ उठाया लाभ का दस भाग मेने दान कर दिया।

यह कहकर सिन्दवाद ने ०१०मुद्रा हिन्दवादको पारितोषिक दे कल छठी यात्रा का वृत्तान्त सुनाने को वुलाया।

सिन्दवाद की छठी यात्रा

एक वर्ष बीतने पर मैंने पुनः छठी बार सामुद्रिक यात्रा का विचार किया। यद्यपि मित्र बान्धवों ने यात्रा न करने का अधिक अनुरोध किया परन्तु मैं दृढ़ प्रतिज्ञा कर चुका था पारस देश की ओर चल दिया और पुनः वहाँ से विशाल सुदृढ़ जलयान में सवार हुआ कप्तान का विचार कई देश पर्यटन कर व्यापार लाभ करने का था। अनेक उपवि-

देशों में भ्रमण करने पश्चात् आकस्मिक एक दिन जहाज द्रुतगति से चलने लगा सहसा कप्तान ने यात्रा सम्बन्धी दिक् प्रबोध नामक पुस्तक दूर फेंक दी और सिर पीट अश्रुधारा से अपना वक्षस्थल भिगोने लगा।

हम सब भयभीत हो कप्तान से पूछने लगे। उसने विषन्न हो कहा—"नदी धारा-प्रवाह जहाज को बहाये लिये जाता है थोड़ी देर में सब मारे जावेगे।

यद्यपि कप्तान ने सब पाल खुलवा दिए परन्तु भंवर में पड़कर सब रस्सी टूट गईं और पर्वत से टकरा कर जहाज चूर्ण हो गया। हम परस्पर एक दूसरे को कंठ से लगा अपने मन्दभाग्य पर अश्रु बहानेलगे।

पर्वत के नीचे अनेक खंड यान मानव कंकाल एवम् अनेकपदार्थ चतुर्दिक फैले पड़े थे। यह दृश्य देख हम वज्राहत की भांति स्तम्भित रह गये जीवनाशा नष्ट होगई। वह कई नदियों का संगम था एक जोगहरे तथा अन्धकारमय गढ़े में प्रविष्ट हो लोप हो जाती थीं परन्तु वहां लाल, बिल्लौर इत्यादि अमूल्य रत्नों की खानि थी और एक प्रकार की राल पर्वत से नदी में टपकती थी प्रायः मछलियाँ उसे निगल जाया करती थीं एवम् थोड़ी देर पीछे वमन द्वारा उसे उगल दिया करती थीं। वही वमन अम्बर बन किनारों पर बहने लगती थी ऊद के वृक्ष भी वहीं बहुतायत से थे। पर्वत से निकट ही ऐसा विकट भंवर पड़ता था जो कोसों दूर से जहाजं को खींच लाता था और धारा-प्रवाह का ऐसा तीव्र था कि जहाज बच जाना असम्भव था पुनि पर्वत शिखर अति उच्च विशाल था प्रयत्न कर भी कोई चढ़ नहीं सकता था। निदान अब हम सब इस पर्वत के नीचे जीवन से निराश हो रहने लगे। भोज्य पदार्थ जो कुछ जहाज से लाये परस्पर बांट लिया यदि भाग्यवश कोई कालवश होता तो उसे वहीं गाढ़ देते। गाढ़ने का भार मैंने ले रक्खा था। जो कुछ भोजन मृतक का शेष रहता वह सब मुझे मिल जाता था किंबहुना कुछ ही समय में सब साथी चल बसे केवल मैं ही रह गया क्योंकि गत पांच यात्राओं में दुःख सहते और परिताप की अग्नि में जलते २ सहन

शीलता आ गई थी।

निर्जनता से घबरा कर मैं अपने को कोटि २ धिक्कारता था स्वजनों की शिक्षा और प्राणों को छटपटाती थी आह! अपार कष्ट भोग कर जो धन उपार्जन किया है उसे कौन भोगेगा। मैं निस्सन्देह कराल काल का कवर होऊंगा।

एक दिन मैंने सोचा जब कि कई दरिया इस गढ़े में प्रवेश करते हैं तो पृथ्वी के गर्भ में विलीन हो नहीं सकते निसन्देह कहीं न कहीं धरा धाम पर बहते होंगे अस्तु यह धारणा कर मैंने एक छोटी सी नौका बनाई और बड़े बड़े अमूल्य रत्न लाल बिल्लौर और धन धान्य एकत्रित कर नौका धारा में छोड़ दी। अन्धकार के कारण कुछ दृष्टि न आता था धारा प्रवाह स्वयम् नौका बहाये लिये जाता था। शीतल वायु लगने के कारण मैं निद्रा के ऐसा वश हुआ कि कहां जाऊंगा क्या होगा इत्यादि परिणाम का अणुमात्र ध्यान न रहा। जब मेरी आंख खुलीं तो नौका नदी तट पर नगर के नीचे बँधी पाई। कई मनुष्य इधर उधर खड़े विस्मय से मेरी ओर देख रहे थे। मैंने प्रणाम किया। यद्यपि उन्होंने मेरी अभ्यर्थना की परन्तु मैं उनकी भाषा न समझ सका।

एक महाशय जो अर्बी भाषा जानते थे मेरे निकट आ कहने लगे "तुम विस्मित न हो हम सब इसी नगर के बासी कृषक जन हैं। खेती सींचने आये थे परन्तु नदी के मुहाने से पानी ही नहीं निकलता कोई नौका अटकी हुई है। अस्तु हमने नौका निकाली तो उसमें तुम्हें सोता पाया। तुम्हारे जगने की प्रतीक्षा कर यहां नौका बांध दी है क्षमा कीजे।"

मैं अति क्षुधित तृषित हूं कुछ भोजन हो तो अपना परिचयदूं।" मेरे कहते ही उन्होंने उसी समय भोजन का प्रबन्ध कर दिया।

भोजनास्वादन पश्चात् मैंने अपनी दुःखद कथा कह सुनाई। वह अति विस्मित हो कहने लगे—"तुम्हारी अपूर्व जीवनी सुनकर हम अति आश्चर्यित हुए हैं। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो राज सभा में तुम्हें ले

चलें राजा तुम्हारा अधिक सत्कार करेगा।"

मैंने सहर्ष स्वीकार कर लिया अस्तु वे मुझे एक घोड़े पर चढ़ा सरन द्वीप नरेश की राज सभा में ले गये। मैंने राज नियमानुसार साष्टांग प्रणाम किया। राजा ने आदर पूर्वक मुझे अपने पास बिठा नाम इत्यादि पूछने पश्चात् सरन द्वीप आने का कारण पूछा—

मैंने अपनी समस्त कथा आद्योपान्त कह सुनाई। राजा अति विस्मित हुए अपने लेखक को आज्ञा दी—"सिन्दबाद की अपूर्व जीवनी लिख कर इतिहास में सम्मिलित कर दो।

जीवनी सुनते पश्चात् मेरी गठरी खोली गई। राजा बड़े रत्न और अंबर देख अति प्रसन्न हुआ। मैंने कहा—"प्रभो यह सब आपके अर्पण है। परन्तु बहुत आग्रह करने पर भी राजा ने स्वीकार न किया सब मुझे लौटा दिये वरन् अपने यहां के अनेक रत्न मुझे उपहार स्वरूप और प्रदान किये और अपने प्रधान को आज्ञा दी कि सिन्दबाद को सुख पूर्वक अपने यहाँ रखो जो कुछ व्यय हो हमारे कोष से लो।"

मैं बड़े सुख से रहने लगा। अवकाश के समय वहां की अपूर्व वस्तुऐं देखने जाया करता परन्तु राज सभा में क्रमशः प्रति दिन ही उपस्थित हुआ करता था।

सरन द्वीप ठीक भूमध्य रेखा के नीचे स्थित है! अस्तु वहाँसदैव प्रत्येक ऋतु में दिन रात समान होते हैं। नगर ८० मील चौड़ा तथा इतना ही लम्बा चतुर्दिक बड़ी २ पर्वत श्रेणियों से रक्षित है। समुद्र वहाँ से तीन दिन की मार्ग पर है। यहां रत्नों की भी खानि है। करंड प्रस्तर जिससे हीरा काटते हैं यहीं उत्पन्न होता है। और वह पर्वत जहां प्रभु आदम स्वर्ग से निकाले जाने पश्चात रहे थे यहीं है। मैंने उसकी यात्रा कर दर्शन लाभ किये। वास्तव में द्वीप नन्दन कानन के समान अति रमणीक है।

थोड़े दिनों पश्चात् मैंने राजा से स्वदेश जाने की आज्ञा मांगी। राजा ने अनेक वस्तु देकर विदा किया और प्रेम पूर्वक एक पत्र और

कुछ अमूल्य भेंट सम्राट खलीफा हारूं रशीद को दीं। और जहाज में सवार हो कप्तान को आज्ञा दी "सिन्दवाद को मार्ग में किसी प्रकार का कष्ट न हो।

मैंने जहाज में बैठकर पत्र खोलकर पढ़ा वह किसी पक्षी के चर्म पर लिखा हुआ था जो अलभ्य था। पत्र पीत वर्ण के चर्म पर लाजवर्द से इस प्रकार हिन्दी भाषा में लिखित था।–"पत्र भारत नरेश की ओर से जिसकी सवारी के आगे एक सहस्र हस्ती यूथ झूमते चलते हैं एवम् जिसने अपने आवास स्थान का महल अति रमणीक बनाया है जिसकी छत में एक लक्ष अमूल्य लाल जटित तथा स्वर्णपत्र वेष्ठित हैं योग्य खलीफा हारूं रशीद के हेतु यह अल्प भेंट भेजते हैं—जिस प्रकार भाई भाई को अथवा मित्र मित्र को उपहार स्वरूप समर्पण करता है। अतएव हमारी इच्छा है कि तुम भी हमसे मैत्री भाव रक्खो। अधिक प्रणाम।"

उपहारी वस्तुओं में एक प्याला पौन ग्रह दल का लाल मणि का बना हुआ अमूल्य मुक्ता झालर वेष्ठित आधे तोले अनुमान अति अलौकिक था। एक सर्प की खाल थी जिसके ऊपर शयन करने से मनुष्य निरोग हो स्वास्थ्य लाभ करता था। तीसरे वस्तु ५० सहस्र मुद्रा की ऊद का लकड़ी थी। चौथी वस्तु २० दाने कपूर के पिस्ता के समान और पांचवां उपहार एक असामान्या सुन्दरी युवती थी निदान मेरे भाग्य से वह जहाज सकुशल बन्दर बांसरे पहुंच गया। पश्चात् थल मार्ग से मैं बुगदाद अपने घर आगया। सबके पुर्व मैं सरनद्वीप नरेश का उपहार ले खलीफा की सेवा में उपस्थित हुआ और समस्त वार्ता कह सुनाई।

खलीफा ने पूछा—"क्या वास्तव में सरन द्वीह नरेश ऐसा ही प्रताप शाली है?"

मैंने कहा—"निस्सन्देह वह बड़ा प्रतापशाली राजा है उसका महल भूमण्डल पर स्वर्ग सदन है। जब उसकी सवारी निकलती है दोनों ओर मित्र बान्धव हाथियों पर सवार श्रेणी बद्ध चलते हैं। पीछे से एक

मनुष्य बल्लम लिये चलता है जिसके सिरे पर पौन गिरह मोटा नील मणि जटित है। एक सहस्र, अङ्गरक्षक दल जो बहुमूल्य वस्त्रों से सुसज्जित हाथियों पर सवार जिनके हौदे इत्यादि का वर्णन अकथनीय है इस प्रकार कहता है—"यह सम्राट भारतवर्ष का है जिसके मर्त्यलोकीय स्वर्ग महल में एक लक्ष लाल बड़े हुये हैं तथा बीस सहस्र हीरों के मुकुट आन्तरीय कोष में हैं।"

पिछले प्रधान के कह चुकने पर आगे दूसरा प्रधान कहता है—"यद्यपि सम्राट विचित्र दिव्य महल लक्षमणि जटित एवम् बीस सहस्र मुकुट रखता है परन्तु वह एक दिन अवश्यमेव कराल काल का कवर बनेगा। मरण निश्चय है अतएव सबको उचित है कि जो अजर अमर है जिसके शासन में कोई किसी पर अन्याय नहीं कर सकता परस्पर प्रेम से काल क्षेप करते हैं, उसी को प्रणाम करो।"

सरनद्वीप नरेश अति बुद्धिमान और नीतिज्ञ है यह सुन खलीफा अति प्रसन्न हुये। यह कह सिन्दवाद ने १०० मुद्रा हिन्दवाद को पारितोषिक दे कल अपनी अन्तिम सप्तम यात्रा का वृत्तान्त सुनाने को बुलाया।

सिन्दवाद की सप्तम यात्रा

षष्ठम यात्रा पश्चात् मैंने प्राण किया कि अब कभी यात्रा का नाम न लूंगा। वरन् यावज्जीवन आनन्द से घर रहकर कालक्षेप करूंगा। परन्तु एक दिन खलीफा ने मुझे बुलाकर आज्ञा दी कि—"तुम मेरी ओर से पुनः सरनद्वीप नरेश की सेवा में मेरा पत्र और भेंट अर्पण कर आओ जिस प्रकार राजा मे अपना स्नेह प्रकट विया है उसी प्रकार मैं भी मैत्री भाव दर्शाना चाहता हूं।"

मैंने अति विनीत प्रार्थना की—"प्रभो! मैं असीम यातना सहनकर यात्रा न करने की प्रतिज्ञा कर चुका हूं आशाहै आप मुझे क्षमा कर यह महत्कार्य किसी अपने प्रधान द्वारा सम्पादन करावेंगे।" इसके

व्यतिरिक्त मैंने गत छहों यात्राओं का दुःखद वृत्तान्त संक्षेप में कह सुनाया परन्तु सहानुभूति दर्शाते हुये खलीफा ने एक बार और यात्रा करने पर बाध्य किया वरन् यात्रा सम्बन्धी व्यय के लिये बहुत धन प्रदान किया। निदान विवश हो खलफा से पत्र और भेंट ले सरनद्वीप की ओर पयान किया।

सरनद्वीप पहुँचकर मैंने राजा को अपने आने की सूचना दी। राजा ने मुझे देखते ही पहचान लिया बड़े आदर सन्मान से पास बैठा कुशल क्षेम पूछी।

मैंने राजा को अनेक धन्यवाद दे खलीफा का पत्र और उपहारी वस्तुओं में—स्वर्ण विछावन जो अनुमान एक सहस्र मुद्रा मूल्य का था, अलेकजेण्डरिया केरू इत्यादि देशों की बनी ५० अपूर्व गउन तथा एक प्याला नील मणि का एक अंगुल मोटा जिस पर मनुष्य का चित्र इस प्रकार अंकित था कि धनुष वाण लिये व्याघ्र को लक्ष्य बना रहा है, सबके अतिरिक्त एक सिंहासन प्रभु सुलेमान का समर्पण किया। पत्र अबदुल्लाह हारूशीद की ओर से जो ईश्वर की अनुग्रह से खलीफा नाम गुरुजनों की उपाधि से विभूषित है महा प्रतापशाली सरनद्वीप नरेश को प्रणाम पहुँचे।"

आपका प्रेम पत्र मिला। आल्हादित किया। उत्तर में निवेदन है कि जिस प्रकार आपने मित्रता स्वरूप उपहार भेजा है उसी प्रकार मैं यह स्वल्प भेंट अर्पण करता हूं। शेष किमधिकम्!"

सरनद्वीप नरेश पत्र पढ़कर अति प्रसन्न हुआ सुअवसर देख मैंने शीघ्र ही घर लौटने की आज्ञा मांगी। यद्यपि राजा कुछ दिन रहने का आग्रह करता था परन्तु मैंने अधिक अनुरोध कर आज्ञा लेली। राजा ने पारितोषिक दे मुझे विदा कर दिया।

मैं राजा की अनुमति से जहाज में सवार हो चल दिया परन्तु दुर्भाग्य से चौथे दिन ही डाकुओं ने हमारा जहाज घेर लिया। यथा सम्भव उनसे बचने की प्राण पण से चेष्टा की परन्तु सब पराजित

होगये । सब अटाला लूटने पश्चात् हम सबको दास बना लिया । वरन् नग्न कर केवल एक धोती मात्र गजी की पहिना दी और बहुत दूर एक द्वीप में ले जाकर हम सबको बेच दिया ।

मुझे एक धनिक व्यापारी ने क्रय कर अपना दास बना लिया । एक दिन व्यापारी ने पूछा—"क्या तुमको शर बेधना आता है ?"

मैंने कहा—"बाल्यकाल में मैंने धनुर्विद्या सीखी है मैं भलीभाँति वाण चलाना जानता हूँ ।"

व्यापारी ने मुझे धनुषवाण देकर अपने संग हाथी पर बिठा भयंकर बन की ओर पयान किया । और बनमें पहुंच मुझे एक सघन वृक्ष दिखाकर कहा—"आनन्द से वृक्ष पर बैठ जाओ और जो हाथी इधर होकर निकले उसे लक्ष्य बनाओ यदि कोई हाथी मारा जावे तो शीघ्र मुझे सूचित करो ।"

व्यापारी मुझे भोजन दे स्वयम् लौट गया और मैं अकेला वृक्ष पर जा बैठा । रात्रि को कोई हाथी उधर होकर न निकला । दूसरे दिन प्रातः ही हाथी आना प्रारम्भ हुये । मैंने कई एक बाण छोड़े परन्तु केवल एक हाथी ही आहत हो गिरा शेष सब भा गये ।

मैंने त्वरित नगर में जा व्यापारी को सूचना दी वह अति प्रसन्न हो प्रशंसा करने लगा । दूसरे दिन व्यापारी ने बन में जा हाथी गढ़वा दिया । "जब अस्थि चर्म गल जावे तो इसके दाँत निकाल लेना ।" यह कहकर व्यापारी नगर को चला गया निदान् दो मास पर्यन्त मेरा यही क्रम रहा आया ।

एक दिन मैं प्रातःकाल वृक्ष पर बैठा हाथी आने की प्रतीक्षा कर रहा था सहसा एक हस्ती दल मेरे वृक्ष का प्रश्लेष कर भयानक चीत्कार करने लगा । वरन् मेरी ओर देखकर अपनी सूंड़ वृक्ष में लपेट उखाड़ने का प्रयत्न करने लगा, यह भीषण दृश्य देख भय से मेरा शरीर कांपने लगा । धनुष वाण हाथ से छुटकर नीचे गिर पड़े । जीवनाशा नष्ट होगई । बार बार के प्रयास से हाथियों ने वृक्ष उखाड़ कर पृथ्वी

पर गिरा दिया। हाथियों ने कुछ आपत्ति नहीं की बड़ी सुगमता से एक हाथी ने जो सबसे बड़ा था मुझे अपनी पीठ पर बिठा लिया और सब हाथी उसके पीछे २ हो लिए। वह मुझे थोड़ी दूर ले जाकर अपनी पीठ से उतार सब चले गये। जब वह अदृश्य हो गये तो मैं वहाँ से नगर की ओर चला परन्तु वहाँ एक विशाल गड्ढा हस्ती अस्थी एवम् दांतों से परिपूर्ण दृष्टिगत हुआ। मैं अति विस्मित हुआ निस्सन्देह यह हाथी मानुषिक शक्ति रखता है बड़ा बुद्धिमान है। मैं दांतों के कारण ही बध करता हूं यह सोचकर उसने दन्त भण्डारागार मुझे बता परिश्रम से मुक्त कर दिया है।

मैं निश्चिन्त हो व्यापारी के पास पहुँचा और हाथी की बुद्धिमत्ता वर्णन की तो वह अति प्रसन्न हुआ और मेरे साथ चल कर बहुत से हाथी दांत अपनी सवारी के हाथी पर लाद लाया। थोड़े ही दिनों में दांतों से घर भर गया।

व्यापारी ने प्रसन्न हो मुझसे कहा—"मैंने तुझे मुक्त किया तेरी इच्छा हो वहां जा तेरे कारण मुझे अपार धन उपलब्ध होगा। ईश्वर तुझे चिरायु करे। अब कुछ ही दिनों में यहाँ कोई जहाज आवेगा तो हम तुझे घर पहुंचवा देंगे।"

मैंने व्यापारी को अति धन्यवाद दे कृतज्ञता प्रकाश की, जब वहां कई जहाज आये तो व्यापारी ने आधे हाथी दांत मुझे दिये और भी वहां की अनेक वस्तु तथा खाने पीने का उचित प्रबन्ध कर दिया। निदान मैं वहां से बिदा हो अनेक द्वीपों में भ्रमण एवम् अनेक वस्तु क्रय बिक्रय करते बुगदाद पहुंचा।

सबसे पूर्व मैं खलीफा के पास गया और सब वृत्तान्त आद्योपान्त वर्णन किया। खलीफा हाथी की बुद्धिमत्ता सुन अति विस्मित हुआ। पत्र पहुंचाने के उपलक्ष में खलीफा ने मुझे बहुत पारितोषिक दिया। उस दिन से निरन्तर मैं अपने घर रहता हूं।

बन्धुवर हिन्दवाद! मेरे धनवान होने का यह रहस्य है क्या

तुमने किसी को इतनी विपत्ति एवम् कष्ट भोगने में सहनशील पाया है ? यही कारण है जो पहिला सब दुःख सुख में परिणित हो गया है। अस्तु स्वर्गीय सुख निरत व्यर्थ ही तुमने अपने भाग्य को कोसा यह कह सिन्दवाद ने यथा क्रम आज भी शत्त मुद्रा सिन्दवाद को पारितोषिक दीं और परिश्रम को छुड़ा अपना मित्र बना लिया।

हिन्दवाद ने कह—"वास्तव में आपका कहना अक्षरशः सत्य है जितना अधिक परिश्रम और दुःख आपने झेला है, कौन समर्थ है । मेरा भ्रम था जो आपको वरन् ईश्वर को अनुचित शब्दों में स्मरण किया क्षमा कीजिये ईश्वर आपको कुशल मंगल रखे।

उस दिन से निरन्तर सिन्दवाद और हिन्दवाद परस्पर मैत्रीभाव से आनन्दपूर्वक रहने लगे।

षड्यन्त्र द्वारा मृत्यु प्राप्त गृहिणी की कथा

सम्राट् हारूं रशीद रात्रि को वेश बदल कर नागरिक प्रजा के सुख दुःख का अनुसन्धान स्वयम् किया करता था एक दिन जाफर सचिव तथा मसरूर प्रधान सेवक सहित घूमते हुए एक संकीर्ण गली की ओर जा निकला। वहां एक दीर्घकाय मनुष्य छाती तक दाढ़ी फुहराए, जाल सिर पर धरे और नारियल के पत्तों का टोकरा कन्धे पर लादे लाठी टेकता चिन्तातुर चला जा रहा था यह दशा देख खलीफा ने अनुमान किया कि यह किसी चिन्ता में निमग्न नैराश्य घर जा रहा है।

राजाज्ञा से मन्त्री ने पूछा—"तू कौन, कहां जा रहा है ?"

मैं मछुवा हूँ आज मध्यान्ह के पूर्व से टक रस सरिता में मछली पकड़ने गया था परन्तु दुर्भाग्य वश खाली हाथ लौटने पड़ा । एक स्त्री और कई छोटे २ बालक हैं आह कहां से उनको भोजन।" यह कहकर वृद्ध मछुवा अश्रु बहाने लगा।

खलीफा ने दयाकर कहा—"भाई एक बार हमारे कहने से और जाल डालो चाहे कुछ निकले अथवा न निकले हमतुझे १०० मुद्रादेंगे।"

अन्धा क्या चाहे दो नेत्र—मछुवा त्वरित नदी की ओर चल दिया थोड़ी देरमें नदी तट पहुंच मछुवाने जाल डालदिया बलप्रयोग करने पर बड़ी कठिनता से जाल खींचा देखा उसमें कोई बक्स अटक रहा है।

मछुवा को १०० मुद्रा दे बिदा कर दिया और बक्स ले जाकर अपने महल में खोला। बक्स में कोई भारी वस्तु लाल डोरा में सिली एवम् चटाई में लिपटी हुई थी। छुरी से टांके काटने पश्चात् गौर वर्ण की एक स्त्री का शव खण्ड २ किया हुआ मिला।

खलीफा ने विषन्न हो मन्त्री से कहा—"क्या तुम ऐसा ही प्रबन्ध करते हो ? आह यह भीषण हत्याकाण्ड ! शव बक्स में बन्द कर नदी में बहा दें और तुम्हें कुछ भी मालूम न पड़े। अत्याचार निरपराधी का रक्त, ईश्वर तू मुझे कैसे क्षमा करेगा। मन्त्री तुझे तीन दिन का अवकाश देता हूँ यदि अपराधी न खोज निकाला तो मैं तुझे तेरे चालीसों कुटुम्बियों सहित फाँसी दिला दूंगा।"

मन्त्री ने पुलिस कर्मचारियों सहित स्वयम् अपराधी खोजने की चेष्टा की परन्तु सब विफल मनोरथ। निदान खलीफा ने चौथे दिन मंत्री को ४० कुटुम्बियों सहित फांसी की रस्सी कण्ठ में डलवा दी और नगर में ढिढोरा पिटवा दिया सहसा एक युवक ने आकर मन्त्री से कहा मैं अपराधी हूं परन्तु उसी समय एक वृद्ध ने भी अपने को अपराधी सिद्ध करने की चेष्टा की। मन्त्री बड़े असमंजस में पड़ गया। किंबहुना दोनों ही खलीफा के सन्मुख उपस्थित किये गये।

"दोनों को फांसी दी जावे।" यद्यपि खलीफा ने आज्ञा दे दी परन्तु अपराधी कौन हैं यह जानने को मन्त्री ने बीच में बाधा देकर समस्त व्यवस्था पूछना चाही। अस्तु युवक ने इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया—

युवक की कथा

प्रभो ! मृत रमणी मेरी पत्नी और इस वृद्ध की एकमात्र पुत्री

है ।"यह मेरे चचा हैं बारह वर्ष की अवस्था में मेरा विवाह हुआ था इन ग्यारह वर्षों में मेरे तीन पुत्र हुए जो इस समय जीवित हैं वास्तव में मेरी स्त्री अति शुद्ध पति परायण थी । मैं सदैव ही प्रसन्न रहूं यह मनोज्ञ धारणा प्रति समय उसके हृदय में जागरुक रहती थी । मैं भी उसे प्राणों से अधिक प्यार करता था सुतरां हम दोनों दम्पति सुख में निरत आनन्द से कालक्षेप करते थे ।

एक महीना बीता जब मेरी स्त्री कठिन रोग ग्रसित हो मृत्यु शय्या शायिनी हुई यथा शक्ति स्वास्थ्य लाभ करने की अनेक चेष्टा की परन्तु निरोग होने से पूर्व उसने मुझसे कहा—"मेरा मन सेव खाने को बहुत है । यद्यपि यह मेवा कुऋतु का है परन्तु न पाने की दशा में रोग बढ़ जाने की अति सम्भावना है ।"

मैंने सेव खोजने का अधिक प्रयास किया परन्तु कहीं भी न मिला एक वृद्ध माली ने कहा—"बांसरे में राज पुष्पोद्यान है उसमें सब ही वृक्ष कुऋतु में फलने फूलने वाले हैं वहां जाओगे तो अवश्य अभीष्ट सिद्ध हो जायगा ।

निदान पन्द्रह दिन पर्यन्त ढूंढ़ खोज कर तीन सेव ले घर आया और स्त्री को समर्पित किये वह अति प्रसन्न हुई अशक्ति के कारण सूंघ कर शय्या के नीचे रख दिये ।

गृहिणी की दशा सुधरते देख मैं अपनी पुरातन ;दुकान पर जो चौक बजाजे में थी जा बैठा । थोड़ी देर पीछे मैंने देखा एक बड़ा सेव कोई सेवक उछाले चला जा रहा है अस्तु मैंने विस्मित हो पूछाख"तूमने यह सेव कहां से पाया है ?"

सेवक ने मुस्कराते हुये उत्तर दिया—"मेरी परम प्रणयिनी उपपत्नी ने उपहार स्वरूप मुझे दिया है बहुत दिनों पश्चात् आज अनायास ही उसे देखने गया था वह रुग्ण थी तीन सेव उसके पास रक्खे हुए थे कदाचित् उसका पति कहीं दूर से लाया बताता था । अस्तु हम दोनों ने परस्पर कुछ भोजन किया और गाढ़ालिगन पश्चात् एक

सेव ले मैं विदा हुआ।

सेवक के मुख से उपरोक्त वार्ता सुन मुझे बड़ा दुःख हुआ तुरन्त दुकान बन्द कर घर चल दिया।

घर जाकर देखा पत्नी की शय्या के नीचे दो सेव धरे हैं मैंने विषन्न हो पूछा—"तीसरा सेव कहां गया ?"

"यहीं कहीं होगा मैंने देखा नहीं है कदाचित् कोई बच्चा उठा ले गया हो ? अशक्ति के कारण और उससे अधिक बोला न गया। परन्तु मुझे सन्देह हो गया था उसके मौन धारण से उक्त सेवक की बात पर पुष्टि होगई। सुतरां क्रोधित हो मैंने तीक्ष्ण छुरी उसके कंठ में मार दी। वह अति दुर्बल तो थी ही, २।४ श्वास त्याग सदैव को शान्त हो गई प्राण विछिन्न करने पर मेरा क्रोध शान्त न हुआ मृत शरीर को मैंने खण्ड २ कर दिया। खंडित शव वस्त्र में बांध चटाई में लपेट, लाल डोरे से सीं एवम् सन्दूक में बन्द कर टकरस नदी में डाल आया।

घर आकर देखा दो छोटे-बालक सो रहे हैं और बड़ा पुत्र द्वार पर खड़ा रो रहा है। कदाचित् अपनी माता को याद कर रो रहा है अस्तु मैंने सान्त्वना दे चुप करना चाहा परन्तु वह विषन्न हो कहने लगा—"पिता जी, आज प्रातः माता की शय्या के नीचे मैंने तीन सेव रक्खे देखे। यद्यपि मुझे माता की अभिरुचि सेव खाने की पूर्व से ही ज्ञात थी जानता था आप बड़े परिश्रम से लाये हैं परन्तु थोड़ी भाइयों को बहला कर फिर यहीं रख जाऊंगा यह विचार मैं माता की बिना आज्ञा के एक सेव लेकर यहीं द्वार पर खेलने लगा सहसा एक लोहित वर्ण सुदीर्घ सेवक इधर आ निकला और मेरे हाथ से सेव छीन कर ले भागा। मैंने दौड़कर उससे सेव लेने की बहुत चेष्टा की कितने परिश्रम से किस लिये यह सेव पिताजी लाये हैं उसे बताया परन्तु उस निर्दई ने मेरी एक बात न सुनी न जाने किधर लोप होगया।"

पुत्र के मुख से यह सम्वाद सुन मैं वज्राहत की भाँति स्तम्भित रह गया। चराचर में ऐसा रमणी रत्न बड़ी प्रारब्ध से मिलता है।

मुझ जैसा दुष्ट पापी उसके योग्य न था आह, ऐसी पतिव्रता साध्वी पत्नी को एक दुष्ट सेवक के मिथ्या आक्षेप वश स्वयम् बध किया इससे अधिक कौन पाप है मुझे स्वप्न में भी शान्ति न मिलेगी। निदान इसी यन्त्रणा में दग्ध ईश्वरसे मृत्यु कामना की प्रार्थना कररहा था सहसा यही मेरे चचा अपनी रुग्ण पुत्री की कुशल पूछने आये। मैंने समस्त वार्ता कह सुनाई। चचा भी दुःख से अश्रु बहाने लगे प्रभो, यही कारण है जो हम दोनों मर जाने में सुख समझते स्वयम् अपराध स्वीकार करते हैं। आशा, है आप फांसी की आज्ञा दे मृत्यु विभीषिका से मुक्त करेंगे एक २ पल पहर के समान भान होता।

“इस अभियोग में सेवक के कारण भीषण हत्या हुई है अस्तु वह बध करने योग्य है।” खलीफा ने अप्रसन्न हो मन्त्री से कहा—‘उस दुष्ट सेवक को उपस्थित करने को तीन दिन का अवकाश दिया जाता है है नहीं तुझे प्राण दण्ड भोगना पड़ेगा।

मन्त्री अति विशन्न हो घर पहुंचा। अबकी बार प्राण बचने अति कठिन हैं क्योंकि यहां सहस्रों मनुष्य दासवृत्ति आजीविका से निर्वाहन करते हैं अपराजी का मिलना असम्भव है।

तीन दिन उसकी खोज में बीत गये परन्तु कुछ पता न लगा। चौथे दिन मन्त्री प्राण दन्ड भोगने को तैयार हुआ अपनी पुत्री का मुख चुम्बन करते हुए कंठ में कुछ गोल २ बँधा देख पूछने लगा—‘यह क्या है ?”

रेहान सेवक से मैंने सेव मोल लिया है इस पर हमारे खलीफा का नाम अंकित है अतएव अभीं मैंने खाया नहीं है।” पुत्री के मुख से अपराधी का नाम सुन अति विस्मित हो रेहान सेवक को बुलाया।

रेहान ने कहा—“स्वामिन्, यह सेव न तो आपका और न खलीफा का वरन् कई दिन बीते एक गली में लड़के खेल रहे थे यह सेव मैंने उनसे छीन लिया है। यद्यपि एक लड़के ने मेरा पीछा किया परन्तु मैं भाग आया।”

मन्त्री ने दुःख प्रकाश कर सेवक खलीफा के सम्मुख उपस्थित किया उसने जो कुछ मन्त्री से कहा था यत्र तत्र कह सुनाया।

खलीफा ने मुस्कुराते हुए कहा—"यह जटिल घटना तुम्हारे सेवक के कारण संघटित हुई है अतएव उसे कठिन प्राण दण्ड की आज्ञा दी जाती है।"

मन्त्री ने कहा—"आपका कहना सत्य है मैं भी सहमत हूं परन्तु नूरुद्दीन और बदुरुद्दीन हसन की कथा जो मिश्राधिपति सचिव की है यदि कुछ उपदेष्टित एवम् रहस्यमय हो तो आशा है आप मेरे सेवक का अपराध क्षमा करेंगे।"

खलीफा ने कहा—"तथास्तु।"

अस्तु जाफर सचिव ने इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया—

नूरुद्दीन और बदरुद्दीन हसन की कथा

पूर्वकाल में सम्राट् मिश्र का मन्त्री सुचतर, प्रजापालन में तत्पर अति बुद्धिमान था। उसी के सदृश अति प्रवीण तरुण, वक्षस्थल पुष्ट आजानुबाहु दो पुत्र रत्न थे। बड़े का नाम सम्शुद्दीन मुहम्मद तथा छोटे का नाम नूरुद्दीन अली था। जब मन्त्री ने संसार यात्रा की तो सम्राट ने दोनों भाइयों को बुलाकर शोक प्रकाश करने पश्चात् मन्त्रि-पद पर विभूषित किया।

दोनों भाई सम्राट् से विदा हो अपने घर गये और एक महीना पर्यन्त शोक चिन्ह धारण किये रहे। पश्चात् अपने काम पर पहुंच गये। सम्राट् जब आखेट को जाते एक भाई को क्रमशः अपने साथ ले जाते दूसरा राजकीय प्रबन्ध में व्यस्त रहता।

एक दिन सायं समय बड़ा भाई शम्सुद्दीन सम्राट के संग मृगया को जाने को उद्यत था। भोजनास्वादन पश्चात् निरनिराले में परस्पर परामर्श करने लगे कि—"जिस प्रकार हम दोनों सौहार्द्र से रहते हैं उसी प्रकार किन्हीं दो धनिक कुमारियों के साथ एक दिन ही विवाह

करें वरन् जगन्नियन्ता ऐसा करे कि विवाह पश्चात् दोनों पत्नी एक ही साथ गर्भ धारणकर नव मास पश्चात् एक साथ ही तुम्हारी स्त्री पुत्र और मेरी पुत्री प्रसव करे जो पीछे कौमारावस्था प्राप्त परस्पर विवाह सूत्र में बांध दिये जावें ।"

नूरुद्दीन अली ने प्रसन्न हो कहा—'ईश्वर मनोवांच्छा पूर्ण करें मुझे सहर्ष स्वीकार है आप देखेंगे कि मेरा पुत्र आपकी पुत्री को कितने आदर और प्रेम से रक्खेगा ।"

शम्सुद्दीन ने कहा—"निस्सन्देह ऐसा ही होगा परन्तु विवाह के उपलक्ष में तुम्हें मेरी पुत्री को तीन सहस्र मुद्रा तीन सुविस्तीर्ण ग्राम और तीन दासी सेवा सुश्रूषा निमित्त विवाह व्यय के अतिरिक्त और देनी पड़ेगी ।

नूरुद्दीन ने विपन्न हो कहा—"कदापि नहीं । भला दायजा रूप तुम्हें मेरे पुत्र को ग्रामादि देने होंगे कि उलटे मुझे ।"

यद्यपि नूरुद्दीन ने साधारणतः उत्तर दे दिया था परन्तु शम्सुद्दीन को अति कटु वचन जान पड़ा उसने विपन्न हो कहा—"मुझे ऐसा उत्तर पाने की आशा नहीं थी मैं नहीं जानता था तुम मेरी मान हानि कर ऐसा अपमानित करोगे मैं कभी तेरे पुत्र के साथ अपनी पुत्री का पाणिग्रहण न करूंगा वरन् प्रातःही सम्राट् से कह तुझे समुचित दंड दिलाऊंगा ।" यह कहकर शम्सुद्दीन रुष्ट हो अपने घर तथा नूरुद्दीन अपने शयनागार को चला गया ।

शम्सुद्दीन प्रातः ही सम्राट् की सेवा में जो निकटस्थ कानन में मृगयार्थ गया हुआ था, चला गया । और नूरुद्दीन ने एक खिच्चर पर थोड़ा सा धन एवम् भोज्य पदार्थ भरकर "मैं केवल २।३ दिन को बाहर जाता हूं" इस मिस से अरब देश की ओर पयान किया ।

मार्ग में नूरुद्दीन का खिच्चड़ रुग्ण हो गया अस्तु उसे पैदल भ्रमण करना पड़ा । कोई अश्वारोही सवार बांसरे को जाता था दया कर उसने नूरुद्दीन को अपने पीछे बिठा लिया ।

बांसरे पहुंचकर नूरुद्दीन सवार को अनेक धन्यवाद दे कोई मकान खोजने आगे बढ़ा। मार्ग में देखा बड़े समारम्भ से किसी की सवारी आ रही है नागरिक झुक २ कर प्रणाम करते और स्वागत के लिये श्रेणीबद्ध इधर उधर खड़े हो जाते हैं। नूरुद्दीनने भी प्रणाम किया क्योंकि वह महामन्त्री की सवारी थी।

महामन्त्री ने नवागत नूरुद्दीन की ओर देख विस्मय से पूछा—"तुम कौन, कहां से आ रहे हो?"

नूरुद्दीन ने अति विनीत भाव से कहा—"मैं मिश्रदेश रहवासी हूं केरू में मेरा घर है कारणवश भाई से रुष्ट हो स्वदेश त्याग यहां आया हूँ परन्तु यावज्जीवन घर लौटने का विचार नहीं है इसी प्रकार पर्यटन कर देश विदेश का अनुभव प्राप्त करूंगा।"

"पुत्र! ऐसी धारणा उपयुक्त नहीं, प्रदेश में सुख लेशमात्र नहीं है घर न जाने का उद्देश्य तो यहां रहकर भी सिद्ध हो सकता है। यदि तुम मेरे पास रहोगे तो तुम्हें कुछ दुःख न होगा।" यह कहकर मन्त्री सम्मान पूर्वक नूरुद्दीन को अपने साथ लिवा गये। और पुत्र की नाईं उसके साथ व्यवहार रखने लगे।

एक दिन निरनिराले में मन्त्री ने नूरुद्दीन से पूछा—"पुत्र, मैं अति वृद्ध मरण समीप हूं। ईश्वर ने मुझे एक पुत्री रत्न प्रदान किया है अब वह विवाह योग्य हुई है अनेक धनिक पुत्र उसके पाणिग्रहण के लिये लालायित हो रहे हैं परन्तु मैंने अभी कुछ निश्चय नहीं किया, मैं चाहता हूं जामाता सदैव मेरे ही पास रहे। सम्राट से कह कर उसे अपना मन्त्रि पद भी दिलाऊंगा अतएव मैं तुमको प्राणों से अधिक प्रिय अपनी पुत्री के उपयुक्त समझता हूं आशा है तुम स्वीकार करोगे। सम्राट भी सहमत हैं वरन् उनके द्वारा ही विवाह सम्बन्ध सुसम्पन्न होगा।"

नूरुद्दीन के स्वीकार करने पर मन्त्री ने प्रतिष्ठा प्राप्त नगर के धनी, राजकर्मचारी गण एकत्रित कर विवाह संस्कार प्रारम्भ किया। उपस्थित महाशयों को भोजन कराया। पश्चात् निकाह द्वारा दोनों

विवाह सूत्र में बद्ध एक प्राण होगये ईश्वर माया कि उसीक्षण शम्सुद्दीन मुहम्मद का निकाह पढ़ा गया।

नूरुद्दीन के बांसरे चले आने पर शम्सुद्दीन एक मास पर्यन्त सम्राट के संग आखेट में रहा। घर लौटने पर उसने देखा कि अनुज उसी दिन से न जाने कहाँ चला गया है उसने अनेक मनुष्य भाई को खोजने भेजे वे दमिश्क और हलब तक गये परन्तु कहीं कुछ पता नहीं चला निदान विवश हो भ्रांति निवारणार्थ शम्सुद्दीन ने अपना विवाह एक धनिक कुमारी के संग ठीक उसी समय जबकि नूरुद्दीन का विवाह हुआ कर लिया। विधि की गति कुछ जानी नहीं जाती इच्छानुसार शम्सुद्दीन के घर पुत्री और नूरुद्दीन के पुत्र उत्पन्न हुआ। मन्त्री दौहित्र होने से अति प्रसन्न हुआ। बड़े समारम्भ से नाम करण संस्कार कर बदरुद्दीन हसन नाम रक्खा।

थोड़े दिनों पश्चात् महामन्त्री ने सम्राट से कहकर अपने पद पर नूरुद्दीन को नियुक्त करा दिया। उसी दिन से निरन्तर नूरुद्दीन राज काज में व्यस्त रहने लगा। उसने अपनें सदाचार से सबका चित्त अपनी ओर आकृष्ट कर लिया था।

अभी बदरुद्दीन केवल चार वर्ष का था कि महामन्त्री ने परलोक यात्रा की। बड़े उत्साह से नूरुद्दीन ने मृतक संस्कार किया।

सात वर्ष की आयु में बदरुद्दीन का विद्यारम्भ हुआ। थोड़े दिनों में समुचित ध्यान प्रदान पूर्वक सम्पूर्ण विद्या शब्द शास्त्र राजनीति व्यायाम कौशल इत्यादि धार्मिक शिक्षा सीख कुरानशरीफ कण्ठस्थ कर लिया। बदरुद्दीन के वदन की प्रभा मार्त्तण्ड के समान प्रदीप्त थी सौंदर्य और लावण्य की यह दशा थी मानों साक्षात् षडानन बालक रूप धारण कर माता के उदरस्थ हुआ है जो जितना देखता उतना ही सुन्दर पाता।

बदरुद्दीन ने जब युवावस्था में पदार्पण किया तो नूरुद्दीन अपने साथ राज सभा में ले गया। सम्राट देखकर अति प्रसन्न हुआ। परन्तु नूरुद्दीन कठिनतर रोग ग्रसित हो मरण समीप हो गया। अस्तु बदरुद्दी

को पास बिठाकर इस प्रकार शिक्षा दी—"रूप, गुण, पांडित्य, कुल शील सबका विचार रखना लोग लोभवश दुष्कर्म को सुकर्म पशुधर्म को रसिकता भ्रष्टाचार को प्रभुत्व और मृगयाको व्यायाम समझते हैं। पुत्र ! तुम दुरवगाह नीति प्रयोग और दुस्तर राज्य शासन का बोझ (मंत्रिपद का) अपने सिर लोगे अस्तु बहुत सावधान रहना ऐसा न हो कोई किसी प्रकार निन्दा करे। अपना रहस्य किसी पर भूलकर भी प्रकट न करना। तुम ऊर्ध्व लिखित धनेश्वर की भांति न हो जाना। अर्थ अनर्थ का मूल है मिथ्या अभिमान अकिंचन अहङ्कार और वृथा धृष्टता प्रायः अर्थ से उत्पन्न होते हैं पुत्र ! यह भलीभांति समझ लो कितना ही कष्ट सहन करो कोटि यत्न करो परन्तु लक्ष्मी एक स्थान पर स्थिर नहीं रहती। पुत्र मेरी इस अन्तिम शिक्षा पर अधिक ध्यान रखना अर्थात् मेरे मरण पश्चात् एकअश्रु न बहाना क्योंकि मरण सिद्धहै। अब कंठ घिरताआताहै अस्तुतुम्हें वंशावली और सुनाये देताहूं। वास्तवमें मैं मिश्रदेशान्तर्गत केरू नगरका रहिवासी हूं मेरे पिता वहांके महामंत्री थे पिताके स्वर्गवास पश्चात मैं और मेरा बड़ा भाई शम्सुद्दीन मुहम्मद जो अभी जीवित है हम दोनों मन्त्री मिश्र के हुये परन्तु कारणवशात् हम दोनों में वैमस्य हो गया अस्तु मैं रुष्ट हो यहां चला आया।" उचित उपदेष्टव्य समाप्त कर नूरुद्दीन ने कोई पत्र जिसको वह बड़ी सावधानी से अपने पास रखता था निकालकर बदरुद्दीन को दिया इसमें जन्म कुण्डली इत्यादि अनेक वंशज बातें वैमनस्य का कारण जो कथारम्भ में वर्णित है लिखी हुई थीं।

नूरुद्दीन ने प्राण त्याग दिये। बदरुद्दीन ने विधिवत् मृतक संस्कार किया। पिता के परलोक वास पर बदरुद्दीन को लोग बांसराई कहने लगे परन्तु पिता के शोक में बदरुद्दीन बहुत दिनोंतक घर से बाहर न निकला लोगों की अप्रशंसा करने से सम्राट भी अप्रसन्न होगये किसी दूसरे मनुष्य को मन्त्री पद पर नियुक्त कर दिया वरन् बदरुद्दीन के ग्राम मकान धन धान्य समस्त छीनने और बदरुद्दीन को बन्दी करने की आज्ञा दी।

मन्त्री कुछ सेना लेकर मृत मन्त्री के घर चला परन्तु एक सेवक

ने सब वार्ता बदरुद्दीन से कह सुनाई ।

बदरुद्दीन ने सेवक से पूछा—"क्या मैं कुछ धन यहां से ले जा सकता हूं ?"

"नहीं २ इतना अवकाश कहां मन्त्री जी की हवेली के नीचे आगया है।" यह कह सेवक और बदरुद्दीन पिछवाड़े होकर श्मशान की ओर भाग गये। अन्धकार वश मार्ग दिखाई न पड़ता था अस्तु वह पिता की समाधि में चला गया।

समाधि मे कोई यहूदी बैठा कुछ पुरश्चरण कर रहा था बदरुद्दीन को देखकर विस्मित रह गया।

बदरुद्दीन इस प्रकार कहने लगा मैंने पिता को स्वप्न में इस प्रकार रुष्ट देखा मानो उनकी समाधि खंडित हुई है—वही देखने यहां भागा आया हूं।"

यहूदी ने ढंग बदल अति विनीत भाव के कहा—'तुम्हारे पिता बड़े प्रतापशाली थे उनका समस्त वाणिज्य मेरे ही द्वारा सुसम्पन्न होता था एक मात्र मैं ही प्रबन्धक था। अन्तिमावस्था में उन्होंने कई जहाज दूर देशों को भेजे थे। यदि आप यहां सबके पूर्व पहुंचने वाले जहाज का सौदा करें तो मैं अभी एक सहस्र मुद्रा आपको भेंट करूं बदरुद्दीन ने इसी को धन्य समझा विक्रय पत्र लिखकर एक सहस्र मुद्रा ले लीं।

यहूदी के चले जाने पर बदरुद्दीन नैराश्य सागर में निमग्न ठन्डी हवा लगने से वहीं सोगया थोड़ी देर बीती थी कि कि एक दैत्य जो कुछ दिनों से वहां रहता था आया और बदरुद्दीन को देखकर उसके रूप सौन्दर्य पर मुग्ध हो गया—"वास्तव में यह मनुष्य नहीं वरन् आकाशचारी देव है।" यह धारणा कर कर दैत्य आकाश मार्ग से अति प्रसन्न जा रहा था कि एक अप्सरा से साक्षात् होगया दैत्य ने कहा—"सुन्दरी यदि तू मेरे साथ चले तो तुझे मैं एक अलौकिक सुन्दर युवा दिखाऊं। सम्भव नहीं जो पृथ्वी पर खोजने से उसके समान युवक मिल सके।"

दैत्य के साथ अप्सरा उसी समाधि स्थान में आई जहां बदरुद्दीन सुप्तावस्था में अचेत था ।

अप्सरा विस्मित हो कहने लगी—“जैसा यह युवक कामदेव का अवतार है उसी प्रकार रति की प्रतिकृति एक युवती मैंने देखी है जो केरू रहिवासी शम्सुद्दीन की पुत्री है इस समय उसकी आयु २२ वर्ष की है । रूप लावण्य की प्रशंसा सुन सम्राट मिश्र ने उसके संग विवाह करने के लिये शमसुद्दीन को विवश किया परन्तु—“नूरुद्दीन को वचन दे चुका हूं गत चौथे दिन सुना है कि वह एक पुत्र छोड़ परलोक गत हुआ है । आशा है आप मुझे क्षमा करेंगे आपको अनेक लावण्यवती असामान्या युवती मिल सकती हैं ।” यद्यपि शम्सुद्दीन ने अति विनीत प्रार्थना की थी परन्तु सम्राट ऐसे क्रोधित हुए उसी समय प्रतिज्ञा की कि शम्सुद्दीन की पुत्री की विवाह किसी अस्पृश्य सेवक के साथ जो वृद्ध अपाहज और कुरूप हो किया जावे ।” निदान सम्राट ने उसी दिन एक सेवक को जो अश्वपालकों में एक नीच वृत्ति दास अति कुरूप कुबड़ा एवम् पंगु था विवाह के लिए नियुक्त किया वरन् उसी रात पुरोहित को विवाह कराने की कठिनाज्ञा दी ।

मन्त्री को विवश हो राजाज्ञा पालनी पड़ी । रात को समस्त सेवक दल मशाल हाथ में लिये पंगु महाशय को स्नान कराकर उपयोगी वस्त्र पहना विवाहने चले । उधर शम्सुद्दीन के घर भी अभिनय हो रहा था ।

आंह ! क्या ऐसी परम सुन्दरी युवती ऐसे निकृष्ट कुरूप को विवाही जावेगी । क्या अप्सरा के संसर्ग को लंगूर और काक चोंच में अंगूर ! विधि की गति कुछ जानी नहीं जाती ।’ यह कहकर अप्सरा ने दैत्य से इच्छा प्रकट की ‘इस सौन्दर्य मार्त्तण्ड से रूप रश्मि को मिला देना ही श्रेय वरन् हमारा मुख्य कर्त्तव्य होगा किसी प्रकार दुष्ट पंगु को वर्जित कर इस युवक को प्रविष्ट कर दिया जावे तो सहज ही अभीष्ट सिद्ध होजायगा । पीछे राजा का क्रोध भी शान्त हो जावेगा ।”

निदान दैत्य बदरुद्दीन को पंगु की बरात में ले गया । परन्तु बदरुद्दीन भय से भागने की चेष्टा कर रहा था सहसा दैत्य ने संक्षेप में समझा रुपयों से भरी थैली देकर बताया "अपने चतुर्दिक गायन और पुरोहित इत्यादि को खूब धन दीजो किसी से डरियो न मैं तेरे पीछे २ सहायक रूप प्रति समय उपस्थित रहूँगा ।" सब समझा बुझा कर एक मशाल बदरुद्दीन के हाथ में दे दी । वह बेरू रहवासी सेवकों में ऐसे मिल गया कि किसी को कुछ सन्देह न हुआ । जब किसी से साक्षात् होने की सम्भावना होती बदरुद्दीन रुपये बखेर देता सुतरां इस रहस्य को कोई न जान सका । इस प्रकार बखेर करते बदरुद्दीन शम्सुद्दीन के घर पहुंच गया परन्तु राजसेवकों ने द्वार पर सबको रोक दिया केवल पंगु महाशय ही भीतर प्रविष्ट हुए । यहां अप्सरा ने एक ऐसी चाल चली कि गायन स्त्रियों ने "यह तो हमारा ही आदमी है ।" कह कर बदरुद्दीन को भीतर खींच लिया और राजाज्ञा भंग कर बदरुद्दीन के साथ सचिव कुमारी का पाणिग्रहण समाप्त करा दिया । बदरुद्दीन ने सबको अधिक पारितोषिक दिया ! वह अशीष दे सप्तरागों द्वारा युवक को सात जोड़ा वस्त्र धारण करा और मिश्र रीत्यानुसार वधू के वस्त्र, बदल विलास भवन की प्रक्रिया में निमग्न हुई ।

बदरुद्दीन के पास बधू बैठी देख पंगु क्रुद्ध हो कहने लगे "अरे तू कौन, यहां कैसे आय । ?"

परन्तु बदरुद्दीन बिना उत्तर दिये नव वधू का हाथ पकड़ विलास भवन में प्रविष्ट हुआ ।

"नव वधू विस्मत हो पूछने लगी—"महाशय क्या आप मेरे पति के मित्र या कोई सम्बन्धी हैं ?"

नहीं मैं स्वयम् तुम्हारा पति ही हूं । क्या तुमने ध्यान नहीं दिया मेरे साथ तो तुम्हारा विवाह हुआ ही है––"यह कह बदरुद्दीन नववधू को गाढ़ालिङ्गन कर सुख शय्याशायी हुए ।

आहा ! दोनों के सुख का क्या कहना बड़े दिनों की गुप्त मनो-

कामना सुफल हुई। प्रेमवासना रूप तरङ्गें दम्पति हृदय सागर में लहराने लगीं।

दैत्य और अप्सरा उस कुबड़े पंगु को डराने लगे। दैत्य ने बिल्ली ने ऐसी भयानक दृष्टि से घूरा कि पंगु स्तम्भित रह गया अब बिल्ली फूत्कार गधे के समान बन गई। पंगु थर २ काँपते हुये भागने की चेष्टा करने लगा परन्तु दैत्य भैंसा बनकर ऐसा अस्फुट शब्द करने लगा कि पंगु ने भय से मुँह छिपा लिया और कम्पित कण्ठ स्वर से कहने लगा—'प्रभो! चरण सेवक का अपराध क्षमा करो मैं अ·· ति···।' कण्ठ रुद्ध होगया आगे एक शब्द भी न कह सका।

दैत्य ने दीर्घस्वर से कहा—"तू मेरी प्रणयिनी को परखने आया है मैं तुझे कदापि जीवित न छोड़ूँगा।"

"स्वामिन्! क्षमा करो मुझसे भूल हुई। यह कर पंगु चरणों में गिर पड़ा।"

"सूर्योदय के पूर्व ही तू यहां से भाग जाना और फिर कभी भूल कर भी इधर न आना। नहीं मैं शृङ्ग बल से अति निर्दयता पूर्वक तेरे प्राण संहार करूँगा। इस समय मौन साधे यहीं पड़ा रह!" निदान दैत्य ने बेचारे पंगु को उलटा करके दीवार के सहारे खड़ा कर दिया।

असंख्य चुम्बन तथा प्रगाढ़लिङ्गन रत क्रीड़ा में मत्त रहने पश्चात् बदरुद्दीन अपने वस्त्र और वही थैली जो यहूदी व्यापारी से लाभ की थी एक चौकी पर रख और शयन वस्त्र धारण कर निश्चिन्त सो रहा। जब थोड़ी रात अवशिष्ट रही दैत्य और अप्सरा ने यह विचार कर कि प्रातः सम्राट कुछ अत्याचार न करे बदरुद्दीन को चुपके से उठा दमिश्क की जुम्मा मसजिद के द्वार पर ले जा कर लिटा दिया।

प्रातः जब ईश्वराराधना के लिये लोग मसजिद से आये द्वार पर बदरुद्दीन को सुप्तावस्था में देख अति बिस्मत हुये कदाचित् यह विवाह की रात्रि अपनी पत्नी से रुष्ट हो भाग आया है। कोई सुरादेवी का उपासक बता निन्दा करता। कोई कुछ कहता निदान अनेक मनुष्य बड़ी

उत्कन्ठा से बदरुद्दीन के जागने की प्रतीक्षा करने लगे ।

बदरुद्दीन ने जागृत हो बड़े विस्मय से पूछा—"महाशय मैं कहाँ हूँ आप क्यों खड़े हुए हैं ?"

"यह दमिश्क की जुम्मा मसजिद का द्वार है तेरी विचित्र दशा देख हम सब तेरा परिचय लेने खड़े हैं ।"

विक्षिप्त बदरुद्दीन ने कहा—"विधि की गति जानीं नहीं जाती कल सायं समय में बाँसरे में था रात्रि को केरू देश में मेरा विवाह हुआ। और प्रातः दमिश्क में आ गया कैसी विचित्र घटना है ।"

सब लोग हंसने लगे यह निस्सन्देह विक्षिप्त है अथवा स्वप्न में यह घटनायें देखीं हैं । यद्यपि बदरुद्दीन सौगन्ध देकर विश्वास दिलाने का प्रयास करता था परन्तु उपहास कर सब उसे पागल बताते थे ।

बदरुद्दीन विषन्न हो नगर की ओर चला परन्तु अनेक मनुष्य पागल २ कहते करतल ध्वनि करते पीछे चल दिये ।

बदरुद्दीन घबराकर एक हलवाई की दुकान पर चढ़ गया । सब मनुष्य इधर उधर भाग गए क्योंकि पूर्व में हलवाई अरब के डाकुओं का प्रधान था यद्यपि जब उसने सब दुष्कर्म त्याग दमिश्क में दुकान करली थी तथापि अपने सदाचार से निरन्तर सबको प्रसन्न रखता था बहुत लोग अभी तक भय भी करते थे । यही कारण था जो दुकान पर कोई न जा सकता था ।

हलवाई बदरुद्दीन के रूप सौन्दर्य पर मुग्ध होगया । बदरुद्दीन की कथा सुनकर सभय कहने लगा—"तुम भूलकर भी अपना परिचय किसी को न देना नहीं यहां की न्याय धारा अनुसार तुझे प्राण दंड भोगना पड़ेगा हाँ एक उपाय है यदि तू उसका अवलम्बन करे अर्थात् मैं अपुत्रक हूं यदि पोष्यपुत्र स्वरूप तू मेरे यहां रहना स्वीकार करे तो तेरा बाल बांका न होगा ।"

यद्यपि बदरुद्दीन को दत्तक पुत्र बनना स्वीकार न था परन्तु वहां आजीविका निर्वाहन का अन्य उपाय भी न था अस्तु विवश हो

हलवाई के यहाँ रहने पर बाध्य हुआ ।

हलवाई बदरुद्दीन को स्वच्छ वस्त्र पहना रीत्यानुसार कोतवाल के पास ले गया । वहां पोष्य पुत्र पुत्रिका पर बदरुद्दीन के हस्ताक्षर तथा दो साक्षी करा हलवाई अपने घर लिवा लाया ।

सचिव कुमारी हुस्ना जागृत हुई तो अपने पति की शैय्या सूनी पाई कदाचित् शौच इत्यादि से निवृत्त होने बाहर गया हो यह सोच पति के आने की प्रतीक्षा करने लगी ।

बहुत दिन चढ़ा देख शम्सुद्दीन मुहम्मद कलुषित चित्त से अश्रु विसर्जन करता पुत्री के पास गया । हुस्ना ने बड़े सुख और प्रेम से पुलकित पिता की अभ्यर्थना की । शमसुद्दीन जानता था मेरी नाईं हुस्ना भी अश्रु बहाते मिलेगी परन्तु उसे प्रसन्न देख शमसुद्दीन ने कहा—“निर्लज्ज ! इतनी मानहानि विरुद्ध कुरूप नीच सेवक पति पा तू सुखी है ? धिक्कार है ।”

हुस्ना ने कहा—“आप व्यर्थ दोषारोपण कर दुखी होते हैं मेरा विवाह तो ऐसे सुन्दर युवक के साथ हुआ है जो जन्माजन्म तपस्या करने पर भी लाभ न कर सकती ।”

शमसुद्दीन ने विस्मित हो पूछा—“क्या तेरा विवाह पंगु कुबड़े दास के साथ नहीं हुआ ?”

हुस्ना ने कहा—“कदापि नहीं । मेरा पति वास्तव में कामदेव का अवतार है अभी थोड़ी देर में आता होगा आप स्वयम् देख कर अति प्रसन्न होंगे ।

शमसुद्दीन बाहर आ जामाता की प्रतीक्षा करने लगे सहसा सामने की दीवार से उल्टा लटका वही पंगु दृष्टिगोजर हुआ शमसुद्दीन ने पास जाकर पूछा—“अरे यह क्या ?”

कण्ठ स्वर पहचान कर पंगु ने घृणा और भय से कहा—“धन्य है आपको यह उपहास शोभा नहीं देता । भैंसा की पत्नी के संग मेरा विवाह करते थे महाशय आपकी पुत्री एक राक्षस पर अनुरक्त है ।”

शमसुद्दीन ने उसकी बात पर विश्वास न कर सीधे होने को कहा परन्तु वह चीत्कार कर बोला—"नहीं २ सूर्य्योदय के पूर्व मैं कदापि सीधा न होऊँगा। मुझे भैंसा जीवित न छोड़ेगा।" परन्तु शमसुद्दीन ने उसे सीधा कर ही दिया हठात् वह पंगु बलपूर्वक वहां से भागा और सीधा सम्राट के पास पहुँच उसने समस्त दु:खद कथा वर्णन की वह भी अति विस्मित हुये।

शमसुद्दीन पुन: अपनी पुत्री के पास पहुँच कहने लगा—"वास्तव में तेरा पति पंगु नहीं है ?"

"पिता जी ! आपको विश्वास दिलाने के लिये मैं अपने पति प्राणेश्वर के वस्त्र जो सोने के पूर्व उसने उतार कर चौकी पर रख दिये हैं आपको दिखाती हूँ" यह कहकर हुस्ना ने वस्त्र और थैली शमशुद्दीन को दिखाई।

शमसुद्दीन मुहम्मद प्रथम पगड़ी देखकर अति प्रसन्न हुआ क्योंकि वह बहुधा मिश्री वर्ग के बाँधने के ढंग की थी कोई उच्च कोटि का मनुष्य है यह धारणा कर शमसुद्दीन पगड़ी में बंधे पत्र को बड़ी सावधानी से खोलकर पढ़ने लगा। यह वही पत्र था जो मृत्यु आसन्न नूरुद्दीन अली ने बदरुद्दीन हसन को दिया था जिसमें वंशावली तथा वैमनस्य होने का कारण इत्यादि वर्णित था।

पत्र पढ़कर शमसुद्दीन अचेत हो गया। जब चैतन्य हुआ हुस्ना से कहने लगा—"जैसी इच्छा थी वही हुआ, बड़े सौभाग्य की बात है तुम्हारा विवाह चचेरे भाई से ही हुआ है। यह कह कर शमसुद्दीन ने अनेक बार भाई का पत्र चुम्बन किया। ठीक जिस दिन शमसुद्दीन ने विवाह किया उसी दिन नूरुद्दीन ने तथा एक ही दिन पुत्र पुत्री का जन्म हुआ! अहा, यह दुरभि सन्धि ईश्वर माया विचित्र है समशुद्दीन ने वस्त्र और पत्र सम्राट को दिखाये वह भी अति प्रसन्न हुए।

शमसुद्दीन ने एक सप्ताह पर्यन्त भतीजे (बदरुद्दीन) के आने की बाट देखी परन्तु वह लौटकर न आया। अनेक मनुष्य देश प्रदेश खोजने

भेजे परन्तु कुछ चिन्ह न मिला। बदरुद्दीन ने वस्त्र और थैली किसी सुरक्षित स्थान में रखवा दिये गये।

ईश्वरानुग्रह, नवमास पश्चात् हुस्ना ने पुत्र प्रसव किया शमसुद्दीन अति प्रसन्न हुआ नामकरण करा अजब नाम रक्खा।

बड़े सुख से अजब का लालन पालन होने लगा। जब वह सात वर्ष का हुआ तो विद्यारम्भ कराया। यद्यपि अजब की विलक्षण बुद्धि थी परन्तु सहपाठियों के प्रति उसका बर्ताव अच्छा नहीं था गुरू की आज्ञानुसार सब विद्यार्थी अजब की प्रतिष्ठा किया करते थे। शनैः २ अजब का आचरण बिगड़ने लगा वह सहपाठियों के प्रति अति दुराचार करने लगा। अस्तु सब कोई उससे घृणा करने लगे। गुरूजी ने अजब को बहुत समझाया परन्तु ऐसे दुराचारी रोकने से और अधिक कुकार्य में प्रयत्त होते हैं निदान विवश हो गुरूजी ने एक युक्ति बता दी। दूसरे दिन जब सब विद्यार्थी छुट्टी लेकर खेल कूद में प्रवृत्त हुए तो गुरू जी की युक्ति का अवलम्बन कर परस्पर कहने लगे—'खेल प्रारम्भ होने के पूर्व प्रत्येक अपना और अपने पिता का नाम बतावे अन्यथा उसे खेल में सम्मिलित न किया जावेगा।" इस प्रकार प्रत्येक विद्यार्थी अपना नाम इत्यादि बताता गया जब अजब की बारी आई उसने कहा—"मेरा नाम अजब माता हुस्ना और पिता का नाम शमशुद्दीन मुहम्मद है।"

अजब के मुख से नामावली सुनकर सब हंस पड़े-"वाह शमसुद्दीन तो तुम्हारे नाना हैं तुम उनके दौहित्र हो न कि पुत्र अतएव पिता का नाम बताओ।"

अजब कुछ न कह सका सहपाठियों ने उसे बहुत खिजाया उसी समय गुरू जी भी वहां आगये—"पुत्र अजब निस्सन्देह शमसुद्दीन तुम्हारे पिता नहीं वरन् नाना है प्रायः लोग ऐसा कहते कि सम्राट ने अप्रसन्न हो तुम्हारी माता का विवाह किसी निकृष्ट सेवक के संग कराना चाहा था परन्तु किसी राक्षस ने सेवक को निकाल स्वयम् अपने साथ विवाह कर लिया। अधिक क्या कहें तुम्हें उचित है कि सब के साथ

नम्र बर्ताव करो ।

अजब अति विषन्न रोता हुआ अपनी माता के पास पहुंचा । हुस्ना ने देखा उसका अजब टेसू जैसी लाल आंखें किये क्रुद्ध चला आता है निदान उसे यह समझने में कुछ भी देर न लगी पाठशाला में विद्यार्थियों ने चिढ़ाया है ।

अजब ने माता से पूछा—"पिता का क्या नाम है ?

यद्यपि हुस्ना सब समझ गई परन्तु अजब को कहलाने के मिस से कहने लगी—"तेरे पिता शम्सुद्दीन मुहम्मद हैं जिन्होंने पालन कर तुझे इस योग्य किया है ।"

अजब ने दीर्घ निश्वास त्याग कहा—'कदापि नहीं वह तो तुम्हारे पिता हैं ।"

पुत्र के मुख से अप्रकाश्य पिता का नाम पूछने की हठ देख हुस्ना भी दुखित हुई वह विवाह की रात्रि को स्मरण कर अश्रु धारा से वक्षस्थल भिगोने लगी सहसा शम्सुद्दीन ने घर में प्रवेश किया । पुत्र माता दोनों को अश्रु बहाते देख कारण पूछा । हुस्ना ने कहा—"बड़े दुख से कहना पड़ता है कि आबाल वृद्ध सब ही व्यर्थ दोष लगाते हैं ।"

शम्सुद्दीन को भी अति बुरा प्रतीत हुआ वह राजसभा में जा सम्राट से कहने लगा-प्रभो ! बहुधा लोग अजब पिशाच सन्तान है ऐसा दूषण लगाते हैं--मेरा विचार है देश विदेश पर्य्यटन कर जामाता को को खोज निकालूं वह केवल आपके भय से कहीं छिपा हुआ है ।

सम्राट ने सहर्ष आज्ञा देदी और घोषणा करदी कि जहां कहीं बदरुद्दीन हसन मिले शीघ्र शम्मुद्दीन के पास पहुंचा देने वाले को पारितोषिक दिया जावेगा ।

शम्सुद्दीन अपने पुत्री और दौहित्र सहित नगर से चल दिया १० । २० दिवस पश्चात् दमिश्क पहुंचा और नदी तट डेरा खड़े कर साथियों को नगर में जा इच्छानुकूल क्रय विक्रय की आज्ञा देदी ।

अजब भी सैर करने के वास्ते नगर में गया नागरिक उसे देखकर

अति प्रसन्न हुए अजब देखते भालते बदरुद्दीन की दूकान पर पहुंचा बदरुद्दीन दत्तक पुत्र था हलवाई के मरण पश्चात् उसे बहुत धन मिला था अस्तु हलवाइयों में वह अति गण्यमान्य था। अजब को देखते ही पितृ प्रेम ने बदरुद्दीन को विह्वल कर दिया वह सब काम भूल गया।

अजब के पास आ अति दीन भाव से जलपान करने की प्रार्थना करने लगा। अजब के हृदय में भी स्वतः प्रेम उत्पन्न हुआ वह अंग रक्षक के मने करने पर भी दुकान पर बैठ गया।

बदरुद्दीन हसन अति प्रसन्न हो कहने लगा—"मैं मलाई अति स्वादिष्ट जमाता हूं यदि आज्ञा हो तो उपस्थित करूं। थोड़ा जलपान अवश्य कर लीजिये मेरे और मेरी माता के अतिरिक्त इस प्रकार कोई मलाई जमा नहीं सकता यह कह बदरुद्दीन ने मलाई परोस अनार अर्क और चीनी डाल अजब के आगे रख दी।

अजब खाकर अति सन्तुष्ट हुआ अङ्गरक्षक ने भी अति प्रशंसा की। यदि मेरी स्त्री होती तो ऐसा ही पुत्र रत्न में लाभ करता। यह सोच दीर्घ निश्वास त्याग अजब के यहां आने का कारण पूछने लगा। परन्तु अंग रक्षक की आतुरता वश अजब बिना उत्तर दिये ही अपने डेरे की ओर चल दिया।

बदरुद्दीन भी पीछे २ चलने लगा जब नगर बाहर पहुंचे अंगरक्षक ने कहा—"अब तुम क्यों हमारे साथ आते हो?"

"नहीं महाशय इधर मेरा कुछ काम है।" यह कह बदरुद्दीन डेरे तक पहुँच गया। कदाचित् नाना अप्रसन्न हों अस्तु अजब ने बदरुद्दीन के मस्तक पर पत्थर दे मारा वह आहत हो घर को लौट गया।

शमशुद्दीन ने तीन दिन रहकर आगे को पयान किया वह बांसरे पहुंच सम्राट से मिला।

सम्राट ने कहा—"नूरुद्दीन परलोक गत हुआ दो महीने से बदरुद्दीन का भी कुछ पता नहीं है। उसकीमाता अभी अवश्य जीवित है।"

जब बदरुद्दीन का कुछ पता न चला तो नरुद्दीन की विधवा

पत्नी (बदरुद्दीन की माता) को मिश्र ले जाने की सम्राट से आज्ञा ले ली। और नूरुद्दीन के घर पहुंच कर शमशुद्दीन ने द्वार पर लिखे नाम को कई बार चुम्बन किया बदरुद्दीन के विवाह के सुसम्वाद वर्णन किये अजब और उसकी माता हुस्ना से भेंट कराई। वह वधू और पुत्र को जिसकी आकृति बदरुद्दीन से बहुत मिलती जुलती थी देखकर अति प्रसन्न हुई हृदय से लगा बदरुद्दीन को स्मरण कर अश्रु बहाने लगी।

सबको एक जगह मिश्र में रहने का आग्रह कर नूरुद्दीन की बहू को साथ ले शमसुद्दीन ने पुनः दमिश्क की ओर पयान किया।

दमिश्क पहुंच कर अजब पुनः सैर करने चला—"हलवाई जो मेरे पत्थर लगने से आहत हुआ था अब उसकी क्या दशा है? मैं एक बार उसे देखना चाहता हूँ।" यह कह कर अजब फिर दोषी द्वार से होता हुआ सायं समय उसकी दुकान पर पहुंचा। और बदरुद्दीन को प्रणाम कर पूछने लगा—"क्या आप मुझे जानते थे?"

अजब की सहानुभूति देख बदरुद्दीन के मरु-हृदय में प्रेमांकुर प्रकट हुआ उसने बड़े आदर और श्रद्धा से अजब से थोड़ी देर दुकान पर बैठने का आग्रह किया।

"यदि तुम बचन-बद्ध हो हमारा पीछा न करो तो हम बहुत देर तुम्हारी दुकान पर बैठें वरन् जब तक यहां रहेंगे प्रतिदिन तुम्हारी दुकान पर आया करेंगे।" यह कहकर अजब वहीं बैठ गया।

"मैं नहीं चाहता कि मेरी किसी बात से आपको दुःख हो आपकी आज्ञा शिरोधार्य।" यहकर बदरुद्दीन ने बहुत उत्तम स्वादिष्ट मलाई अजब के आगे रख दी। यद्यपि अजब ने बदरुद्दीन को अपने साथ बिठा लिया परन्तु आतिथ्य सत्कार के कारण वह कुछ खा न सका।

अजब मलाई खा चुका तब स्वच्छ अंगोछा से हाथ पुछवा सुगन्धित शर्बत पिलाया सुतरां अजब और अंग रक्षक बदरुद्दीन को अनेकानेक धन्यवाद दे सहर्ष बिदा हुए।

डेरे पर पहुँचकर अजब रक्षक सहित अपनी दादी के पास गया।

वह अजब को कंठ लगा आशिष दे कहने लगी—"ईश्वर तुम्हारे पिता से शीघ्र साक्षात् करावे।" जब अजब बाहर जाने को उद्यत हुआ तो दादी ने भोजन करने का आग्रह किया।

अजब की अनिच्छा प्रकट करने पर दादी ने थोड़ी मलाई खाने को दी—"ऐसी मलाई मेरे अतिरिक्त और कोई जमा नहीं सकता।" परन्तु अजब ने किंचित ध्यान न दिया वह हाथ जोड़ कहने लगा—"अपराध क्षमा हो आज एक हलवाई की दुकान पर मैंने ऐसी स्वादिष्ट मलाई खाई है कि—

प्रथम तो इस व्यापार से दादी अप्रसन्न हुई—"क्यों रे शावान! तू कैसा रक्षक है जो मेरे बालक को भिक्षुकों की नाईं दुकान र मलाई खिलाता फिरता है।"

शावान ने कहा—'वास्तव में! हम एक हलवाई की दुकान पर विश्राम लेने बैठ गये थे मलाई नहीं खाई।"

अजब ने अप्रसन्न हो कहा—"नहीं हमने मलाई खाई है यह भूठ बकता है।"

, दादी शावान पर अति क्रोधित हुई शमशुद्दीन द्वारा उसे दंड दलाया तब विवश होकर शाबान ने कहा—"स्वामिन् वास्तव में हमने मलाई खाई है निसन्देह हलवाई की मलाई अति स्वादिष्ट थी।"

दादी ने कहा—"तू भूठ बकता है मेरी मलाई से अच्छी बदरुद्दीन के अतिरिक्त कोई बना ही नहीं सकता। हाथ कंगन को आरसी क्या तू अभी जाकर उसकी दुकान से थोड़ी मलाई ले आ।"

शावान मलाई ले आया अजब की दादी उसे खाते ही अचेत हो गई। यह दशा देख शमसुद्दीन अति व्याकुल हुआ मुख पर जल के छींटे देने इत्यादि प्रयोग से जब वह सचेत हुई तो कहने लगी—"निस्सन्देह यह मलाई बदरुद्दीन के हाथ की बनी हुई है।"

जब शम्सुद्दीन को विश्वास हो गया तो अपनी भावज और पुत्री को धैर्य रखने का अनुरोध कर कहा—"मैं अभी उसे बुलवाता हूँ तुम

उसे पहचान लेना मैं उसे केरू ले चलूंगा जब वहां परीक्षा हो जाय तब तुम उससे मिलकर बातें करना अन्यथा नहीं।" अस्तु शमसुद्दीन ने पचास सैनिकों को आज्ञा दी "तुम लाठी लेकर शावान के साथ जा हलवाई को पकड़ लाओ, जो कुछ उसकी दुकान में मिले तोड़ फोड़ फेंक आओ परन्तु यह ध्यान रखना हलवाई को कुछ कष्ट न हो।

सैनिक बदरुद्दीन की दुकानपर पहुंचे जो कुछ उन्हें मिला खण्ड२ कर फेंक दिया। बदरुद्दीन के पूछने पर सैनिकों ने कहा—"तुम्हारी बनाई मलाई अच्छी नहीं निकली उसी अपराध में तुम्हें बन्दी बना लिए चलते हैं।"

बदरुद्दीन हसन शम्सुद्दीन के सम्मुख उपस्थित किया गया। वह हाथ जोड़ अति विनीत प्रार्थना करने लगा—"प्रभो! किस अपराध में मेरी दूकान लुटवाई और मुझे बन्दी किया है।

"जिससे मेरेसेवक के हाथ मलाई बेची वह कठिन दण्डभोगेगा।" यह कहकर बदरुद्दीन को एक काष्ट बक्स में बन्द करा शम्सुद्दीन सम्राट के पास पहुंच कहने लगा—"जिस मनुष्य की मुझे खोज थी आपके अनुग्रह से मिल गया है अस्तु आप अपने कर्मचारियों को आज्ञा दे दें कि वह इस अभियोग में कुछ हस्तक्षेप न करे वरन् यथा साध्य सहायता दें।"

उपरोक्त शम्सुद्दीन और बदरुद्दीन की वार्तालाप के समय माता और भार्या पहिचान कर भेंट करने के लिये व्याकुल थीं परन्तु वचनबद्ध होने के कारण मौन साधे बैठी रहीं।

दूसरे दिन शम्सुद्दीन ने घर की ओर पयान किया। बदरुद्दीन को बक्स में बन्द कर ऊंट पर रख लिया।

केरू पहुँच कर शम्सुद्दीन ने बदरुद्दीन के सामने एक काष्टकार को शूली बनाने की आज्ञा दी बदरुद्दीन ने कांपकर पूछा—"शूली का क्या कीजिएगा?"

शमसुद्दीन ने कहा—"यह सब तुम्हारा ही प्रबन्ध है तुम्हें इस

शूली पर बैठा नगर में फिरा कर यह घोषणा कराऊंगा कि जो कोई मलाई में काली मिर्च मिलावेगा वह ऐसे ही कठिन दण्ड का भागी होगा ।"

बदरुद्दीन प्राण विभीषिका से उन्मत्त प्राय: सा होगया। यद्यपि उसने बहुत क्षमा प्रार्थना की परन्तु शमसुद्दीन ने कुछ ध्यान न दिया। आह ! ऐसे थोड़े अपराध पर प्राण दंड। यही सोचते वज्राहत की भाँति स्तम्भित रह गया।

शमसुद्दीन ने अचेत बदरुद्दीन को बक्स में बन्द कर अपनी पुत्री हुस्ना को समझाया जिस प्रकार विवाह के दिन विलास भवन सुसज्जित था उसी प्रकार आज भी समस्त सौख्य पदार्थों से अलंकृत हो, बदरुद्दीन के वस्त्र तथा थैली चौकी पर रख दी जावें। हुस्ना को अपने पर्य्यङ्क पर शान्तिपूर्वक लेटने की आज्ञा दी यदि बदरुद्दीन कुछ आश्चर्य प्रकाश करे अथवा और कुछ कहे प्रात: ही मुझसे अथवा अपनी सास से कह देना।" इस प्रकार समझा बुझा हुस्ना को वही विवाह की रात्रि के वस्त्र पहना शय्या पर लिटा दिया।

बदरुद्दीन प्राण भय से बक्स में अचेत पड़ा हुआ था अस्तु सुगमता पूर्वक उसे विवाह की रात्रि जैसे वस्त्र पहना कर विलास भवन के द्वार पर छोड़ दिया जब उसे चेत हुआ बड़े ध्यान से अपने वस्त्र और भवन देखने लगा। उसकी दृष्टि चौकी पर धरे वस्त्र और थैली पर गई वह अति विस्मित हो प्रत्येक वस्तु देखने लगा—"निस्सन्देह पंगु के स्थान यहीं मेरा विवाह हुआ।" अस्तु उसने अपने तृषित नेत्र कई बार मिले—"नहीं २ यह स्वप्न नहीं है।" हठात् हुस्ना ने सिर ऊंचा कर बदरुद्दीन को सम्बोधन किया—"प्राणेश्वर ! आओ सुख शय्या पर शयन करो आज प्रात: जब आपको शय्या पर न पाया तो मैं अति दु:खित हुई।"

बदरुद्दीन अति विस्मित हुआ। आल्हाद से सब दु:ख विस्मरण होगये शरीर रोमांचित हो उठा युवती गृहिणी को वैसा ही सुन्दर पाया

जैसा कि विवाह की रात्रि को देखा परन्तु मुझे दमिश्क में रहते दस वर्ष बीत गये और यहाँ की एक ही रात हुई यह क्या रहस्य है । अब हुस्ना ने पुनः सम्बोधन किया—"जीवितेश्वर ! किसी विचार में निमग्न हो ? एक ही दिन में आपकी क्या दशा हो गई ?"

"प्यारी ! यह तुम क्या कहती हो यहां से अन्तर्धान होकर दस वर्ष पर्यन्त मैं दमिश्क में रह आया हूं और तुम केवल एक ही दिन... हृदयेश्वरी आज से दस वर्ष पूर्व ऐसे ही वस्त्र पहिने मैं दमिश्क की जुम्मा मसजिद के द्वार पर सोता था मेरी कथा सुन कर मनुष्य उपहास करते थे बड़ी कठिनाई से एक हलवाई की शरण ली ईश्वर माया कि वह अपुत्रक था मुझे अपना पोष्य पुत्र बनाया उसके मरण पश्चात् जब सब पर मेरा स्वत्व हो गया तो मैं सुख से कालक्षेप करने लगा । अभी कोई धनी दमिश्क में गया था उसके पुत्र को देख न जाने क्यों मेरे हृदय में अपार प्रेम उत्पन्न हुआ मैंने उसे मलाई खिलाई । धनिक पुत्र ने अपने पिता से मलाई की अति प्रशंसा की तो उसने थोड़ी सी मलाई मगा कर स्वयं खाई यद्यपि मेरी मलाई अति स्वादिष्ट थी परन्तु उस दुष्ट ने काली मिर्च डालने के अपराध में मुझे प्राण दण्ड की आज्ञा दी वरन् घर आकर मेरे लिए शूली भी बनवा ली अतएव मैं दुःख से सन्तप्त अचेत होगया जब सचेत हुआ तो अपने को इस स्वर्ग सदन में पाया ।

हुस्ना ने हंसकर कहा—"सम्भवतः तुमने कोई भारी अपराध किया है जभी यह विपत्ति सहन करनी पड़ी ।"

सम्राट शहर यार बदरुद्दीन की बातों पर बहुत हँसा । उसने शीघ्र इस कथा के समाप्त करने को कहा । अब तक २४५ रात्रि बीत चुकी थीं ।

बदरुद्दीन बड़े असमंजस में था मैं जागृत हूँ किंवा सुप्तावस्था में स्वप्न देख रहा हूं । निदान उसकी अपूर्व दशा थी कभी सुख से परम सुन्दरी युवती को गाढ़ालिगन करता और कभी विस्मित हो उस भवन को देखता । निदान इसी प्रकार दिन निकल आया ।

प्रातःकाल शम्सुद्दीन ने वहीं आकर बदरुद्दीन को प्रणाम किया। ओह आपने ही तो मेरे लिये शूली निर्मित कराई है ! "यह कह बड़े आश्चर्य से बदरुद्दीन देखने लगा।"

वास्तव में मैंने ही तेरे लिये शूली बनवाई और अपनी पुत्री का विवाह किया है तुम्हें खोजने को ही बांसरे और दमिश्क गया था। यह कह कर शम्सुद्दीन ने बदरुद्दीन को हृदय से लगा लिया। और बड़े प्रेम से कहने लगा—"प्रिय पुत्र अनायास ही अपना कुटुम्ब माता स्त्री और पुत्र पा प्राणान्त न हो जावे इस कारण तुम्हें ऐसी दशा में लाना पड़ा आशा है तुम क्षमा करोगे। तुम्हारी माता और अंग जनित जिसे तुमने दमिश्क में अपनी दुकान पर विठा मलाई दिखाई थी तुम्हें देखने को अति व्याकुल हो रहे हैं यदि कहो तो उन्हें भी बुला लिया जावे।"

निदान माता स्त्री और पुत्र समस्त कुटुम्ब से मिलकर बदरुद्दीन को जो प्रसन्नता हुई वह अकथनीय है।

बदरुद्दीन के मिलने का समाचार शम्सुद्दीन ने सम्राट मिश्र से कहा वह अति प्रसन्न हुए। लेखकों को आज्ञा दी कि यह अपूर्व कथा इतिहास में सम्मिलित की जावे।

शम्सुद्दीन मुहम्मद ने बड़े समारम्भ से सबको भोज दिया कई दिनों तक गान नृत्य इत्यादि मांगलिक उत्सव मनाया गया।

समस्त कथा वर्णन पश्चात् जाफर ने सम्राट खलीफा हारूं रशीद से अपने सेवक रैहाँ के अपराध की क्षमा प्रार्थना की।

सम्राट ने सेवक का अपराध क्षमा कर दिया वरन् उस युवराज को भी जिससे भूलवश अपनी स्त्री का बध किया था अपराध क्षमा कर उच्चपदाधिकारी बनाया।

शहरजाद ने सम्राट शहरयार से कहा—"यदि प्राण भिक्षा मिले तो इससे भी अधिक उत्तम कथा कल वर्णन करूंगी आशा है आप अति प्रसन्न होंगे। कथा अति रोचक और उपदेष्टव्य है।"

सम्राट ने कहा—"तथास्तु।"

अलफ-लैला

अथ

सहस्र—रजनी—चरित्र

द्वितीय भाग

दूसरे दिन सम्राज्ञी शहरजाद ने रात्रि के पिछले पहर में कारुणिक उद्गार का मूल कारण एक घटना इस प्रकार घटना इस प्रकार वर्णन की—'पूर्व समय में एक सूचीकार तातार देशान्तर्गत काशगर रहिवासी अपनी दुकान पर बैठकर कपड़े सिया करता था । एक दिन सायं समय सहसा एक कुबड़ा गान्धर्व मृदंग लिये उसकी दुकान के नीचे बैठकर गाने लगा । ताल-लय संयुक्त संगीत लहरी दुकान में गूंजने लगी गले के उतार चढ़ाव का कभी मध्यम में पहुंचना, कभी पंचम तक स्वर खींच ले जाना मधुवर्षण करता हुआ सूचीकार के हृदय को उल्लसित करने लगा। धीरे २ वह संगीत लहरी जब कुब्ज के कण्ठ में लीन हो गई तब सूचीकार ने दुकान बन्द कर कहा—"यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मेरे घर चलकर सांगीत-प्रिय, पत्नी को अपने गीत वाद्य से प्रमुदित करो ?"

कुबड़े ने प्रसन्न चित्त स्वीकार कर लिया है यह—देख सूचीकार उसे संग लिये अपने घर पहुंचा और अपनी स्त्री से जिसे वह प्राणों से अधिक प्यार करता था, कहने लगा "प्रिये सुचतुर गन्धर्व जिसका कण्ठ स्वर, शस्य श्यामा वसुन्धरा का उल्लसित करता है, तुम्हें संगीत लहरी सुनाने के लिए लिवा लाया हूं । परन्तु पहिले शीघ्रता से भोजनलाओ !"

भोजन आने पर पति पत्नी गान्धर्व सहित आस्वादन करने

लगे उस दिन सूचीकार-पत्नी ने अति स्वादिष्ट मछली पकाई थीं । कुबड़े गान्धर्व ने ऐसी असावधानी से खाई कि कोई मछली का कांटा कंठ में छिद गया ओह ! इसका तो श्वांस बन्द हो गया । यद्यपि गांधर्व के पुनरुज्जीवन के अनेक उपाय किये गये परन्तु सब विफल मनोरथ, गान्धर्व का शरीर शिथिल होकर शान्त होगया । यह दशा देख सूचीकार भय से कांपने लगा । यदि किसी राज कर्मचारी ने सुन पाया तो प्राण दण्ड भोगना पड़ेगा । कदाचित वैद्य को दिखाने से स्वास्थ्य लाभ कर सके ? अस्तु यह धारण कर सूचीकार मृत प्रायः गान्धर्व को निकटस्थ यहूदी वैद्य के घर ले गया वैद्य का द्वार बन्द था अतएव सब द्वार पर छोड़ सूचीकार सीढ़ी के मार्ग से ऊपर चढ़ गया । २-३ बार सम्बोधन करने पर एक दासी बाहर आई सूचीकार ने उसे पांच रुपये देकर आसन्न मृत्यु गान्धर्व की शीघ्र चिकित्सा करने की प्रेरणा की । जब दासी वैद्य को बुलाने भीतर चली गई तो उसे निरनिराले मनोविकार अधिक सताने लगे सूचीकार का समस्त शरीर थर २ कांपने लगा । न जाने वैद्य कितनी देर में आवे उसे वहां ठहरना असह्य होगया वह भय भीत हो अपने घर को भाग आया ।

वैद्य लोभवश अंधेरे ही में द्वार पर आया जब उसने किवाड़ें खोलीं तो मृत गान्धर्व जिसे सूचीकार ने द्वार के सहारे खड़ा कर दिया था लुढ़कता २ सीढ़ियों के नीचे आ रहा । वैद्य बड़े असमंजस में पड़ गया वह कुछ भी न जान सका कि यह क्या पदार्थ था नीचे जाकर जब उसने देखा तो मानब शव पर हाथ पड़ा । वह अति विषन्न हो सूचीकार की नाईं सोचने लगा अवश्य मेरे कारण ही मृत्यु हुई है यहीसब विश्वास करेंगे मुझे निस्सन्देह राजदण्ड भोगना पड़ेगा निदान वैद्य शव उठा कर भीतर घर में अपनी स्त्री के पास ले गया और उसकी सहायता से उसे रस्सी से बांध पिछवाड़े फेंक दिया।

वैद्य के घर के पिछवाड़े राजा का मोदी रहता था वह प्रायः शाल्यान्न तैल इत्यादि अपने यहां रखा करता था । चूहे उसका धान्य

खा जाया करते थे। उस दिन अनायास अर्द्ध रात्रि के समय मोदी घर आया लालटेन के प्रकाश में बुखारी में किसी मनुष्य को खड़ा देख चोर समझ कहने लगा—"मैं जानता था चूहे अन्न खा जाते हैं आज ज्ञात हुआ यह धूर्त सदैव चुरा ले जाया करता है। यह कह मोदी ने लट्ठ प्रहार किया। २-४ लाठियों के आघात से ही वह गिर पड़ा। मोदी ने पास जाकर देखा शरीर ठडा पड़ा है। श्वास नहीं चलता। वह अति भयभीत हो उसे कंधे पर लाद बाजार में ले गया और अन्धकार में एक दुकान के सहारे खड़ाकर चुपचाप अपने घर को लौट आया।

थोड़ी देर पश्चात् कोई गोरा फिरंगी व्यापारी जो धनी होने के अतिरिक्त राजमहल का प्रधान शिल्पकार था किसी वार वनिता के घर से निकल कर स्नानागार में जा रहा था दुकान के पास किसी को खड़ा देख चोर २ चिल्लाने एवम् पदाघात से उसे आहत करने लगा। पास ही पुलिस कर्मचारी पहरे पर नियुक्त थे, झटिति दौड़े आये और क्रुद्ध हो फिरंगी से पूछने लगे—"क्यों इसे मारे डालते हो ?"

यह चोर है चाहता था कण्ठ दबाकर प्राण विच्छिन्न करे। "निदान बड़ी कठिनाई से एक ने फिरंगी का हाथ पकड़ कर खींचा" अरे मार डाला बेचारे का समस्त शरीर ठण्डा पड़ गया श्वास और नाड़ी की गति बन्द है, ओह, यह उद्दन्डता यह कह फिरंगी को हथकड़ी बेड़ी डाल कर कोतवाल के पास ले गये।

कोतवाल ने शव सहित फिरंगी को न्यायाधीश की सेवा में भेज दिया परन्तु फिरंगी प्रधान शिल्पकार था अस्तु उसका चालान राजदरबार को किया गया। प्राथमिक रिपोर्ट राजा को सुनाई गई। राजा ने पूछा—"इस अपराधी को न्याय विहित क्या दण्ड देना चाहिए ?"

थोड़ी देर कुछ सोचने और दण्ड संग्रह ने २-४ पृष्ट इधर उधर पलटने पश्चात् न्यायाधीश ने कहा—"प्राणदण्ड"

किम्बहुना राजाज्ञा से फांसी की लकड़ी चौराहे पर खड़ी की गई और नगर में घोषणा करा दी कि—'कुबड़े को मारने के अपराध

में अमुक फिरंगी को फांसी दी जावेगी ।"

घोषणा सुनकर मोदी को बड़ा कौतूहल हुआ—"ओह ! मेरे कारण एक निरपराधी प्राणदण्ड भोगेगा ? यद्यपि मेरे विरुद्ध कोई प्रमाण नहीं है परन्तु उस अन्तर्यामी—"सच्चे न्यायाधीश के समक्ष प्रमाण की आवश्यकता ही नहीं है प्रलय के दिन कुवड़ा जीवित होकर स्वयम् मेरा हाथ पकड़ेगा । यदि इस समय में मौन रहा तो अपराध द्विगुणित हो जायगा । यह सोचता हुआ मोदी भाग कर चौराहे पर आया और बीच में बाधा देकर बोला—"राजन् फिरंगी निर्दोष है वास्तव में इस कुबड़े का प्राणान्त मैंने किया है ।

जब न्यायाधीश ने मोदी की वास्तविक कथा सुन ली तो फिरंगी को छोड़ मोदी के कण्ठ में फांसी डालने की आज्ञा दी ।

अभी श्वपच ने मोदी के कंठ में प्राण घातक रज्जु डाली ही थी कि यहूदी वैद्य ने हांपते हुए आकर कहा—"इस कुवड़े का घातक में हूं मोदी निरपराधी है ।"

अभी वैद्य ने अपना समस्त वृत्तान्त नहीं सुनाया था कि सहसा सूचीकार ने बाधा देकर कहा—"कुवड़े का बध मेरे द्वारा हुआ है ।" निदान सूचीकार ने समस्त कथा आद्योपान्त कह सुनाई । न्यायाधीश अति विस्मित हुआ सबको छोड़ सूचीकार को फांसी की आज्ञा दी गई ।

चाँडाल सूचीकार के कंठ में फाँसी डालता ही था कि सम्राट का भेजा दूत आया। फिरंगी वैद्य मोदी और सूचीकार को अपने साथ राज सभा में लेगया क्योंकि कुबड़ा सम्राट का विदूषक था ।

इस विचित्र घटना से विस्मित हो सम्राट ने चारों अभियुक्तों से पूछा—"क्या तुम्हें इससे अपूर्व अकारण ही कोई और कथा याद है ? यदि इस घटना से तुम्हारा कथा अधिक आश्चर्य प्रद होगी तो मैं तुम्हें क्षमा कर प्राणदन्ड से मुक्त करूंगा ।"

सबके पूर्व प्राण भिक्षा माँगकर फिरंगी ने इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया ।

फिरंगी की कथा

राजन् ! मैं केरू राजधानी मिश्र का रहिवासी हूँ । मेरे पिता दलाली किया करते थे इस व्यवसाय में वह ऐसे सिद्धहस्त थे कि अल्प समय में ही उन्होंने बहुत धन उपार्जन कर लिया था सुविख्यात धनिकों में उनकी गणना थी । उनके स्वर्गवास पश्चात् समस्त वसुधा पर मेरा प्रभुत्व हो गया मैंने अपना वही पुरातन दलाली व्यवसाय प्रारम्भ किया ।

एक दिन मैं बाजार में धान्य विक्रेताओं के पास गया मुझे देखते ही एक युवक ने तिलों की बानगी दिखाकर भाव पूंछा ।

मैंने तिल देखकर कहा—"प्रति मन शत दिरहम (एक प्रकार का सिक्का) आज दिन भाव है कल की राम जाने ।"

युवक वे कहा—"मुझे यह सौदा स्वीकार है, मैं फतह दरवाजे के निकटस्थ सराय में ठहरा हूं । जब आप मेरे पास आवेंगे सब तिल अनायास ही तोल दूंगा ।" यह कहकर युवक चला गया ।

मैंने तिल कई व्यापारियों को दिखाकर प्रतिमन एक सौ दस दिरहम भाव पर सौदा पक्का कर दिया । मैं प्रसन्न था कि प्रतिमन दस दिरहम मुझे बचेंगे आशातीत लाभ होगा निदान मैं व्यापारी सहित युवक के पास सराय में पहुंचा ।

युवक ने मुझे देखते ही गोदाम में लेजाकर सब तिल जो १५०) मन थे तुलवा दिये । व्यापारी ने १६५००) दिरहम युवक के आगे रख दिया उसने १५००) दिरहम मुझे लौटाकर कहा—'यह आप लीजे ।" वरन् १५०००) दिरहम अपने भी मुझे देकर कहा—"इन्हें भी आप ही रख लें मुझे जब आवश्यकता होगी मंगा लूंगा ।"

मैं सब दिरहम लेकर अपने घर चला आया । एक मास पश्चात् पुनः उस युवक से साक्षात् हुआ वह बोला—"हमारी धरोहर तुम्हारे पास है ।

मैंने कहा—"यदि आज्ञा हो तो अभी लादूं । कृपया थोड़ी देर

यहीं ठहरिये कुछ भोजन..........................।"

"पुन: सावकाश होने पर मैं आपके पास आऊंगा इस समय मैं कार्यवश ठहर नहीं सकता।" यह कहकर युवक चला गया।

तीन महीने पश्चात् मैंने युवक को बाजार में देखा परन्तु फिर भी टाल दिया। किंबहुना ठीक एक वर्ष पीछे बहुमूल्य वस्त्राभरण से सुसज्जित स्वयम् मेरे घर आया। मैंने आतिथ्य सत्कार स्वीकार करने का आग्रह किया।

"यदि मेरे रहने से आपको कुछ परिश्रम न करना पड़े तो मुझे स्वीकार है मुझे व्यर्थ आडम्बर से घृणा है।"

निदान् जो कुछ भोजन घर में बना था मैंने ला उपस्थित किया युवक ने प्रसन्नतापुर्वक बाम हाथ से भोजन आस्वादन, किया।

मैं अति विस्मित हुआ। भोजनोपरान्त जब मैं युवक सहित दालान में जाकर बैठा तो युवकने पान इलायची भी डेरे हाथ से लिया। यह देख मैंने..."वाम कर व्यवहृत करना कहां की प्रथा है" मीमांसा की तो युवक ने दीर्घनिश्वास त्याग अपना सीधा हाथ दिखा दिया। वह कटा हुआ था मैंने विस्मित हो कारण पूछा।

युवक ने अश्रु—विसर्जन कर इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया—"मैं बुगदाद का रहने वाला हूं मेरा पिता एक विख्यात धनी मानी था। मैंने व्यापारियों से मिश्र की अति प्रशंसा सुनी थी अस्तु मैंने उसके देखने की उत्कठा से अनेक बार भ्रमण करने का उद्योग किया परन्तु पिता ने स्नेहवश मुझे न जाने दिया। जब पिता ने संसार यात्रा की तो उनका अन्त्येष्ठि संस्कार कर अनेक वस्तु बुगदाद और मूसल की क्रय कीं और शीघ्र ही केरू पहुँच सुप्रसिद्ध सराय खान मसरूर में जाकर ठहरा। कपड़े इत्यादि विक्रयार्थ वस्तुएं एक गोदाम में रक्खीं दूसरे दिन मैं २-३ थान बढ़िया लेकर चौक बाजार में पहुंचा वहां दलालों ने मुझे घेर लिया। दलालों द्वारा मेरे दोनों थान बिक गये वरन् थोड़ा २ माल प्रतिदिन ही बिकने लगा। परन्तु मेरे घर से चौक दूर था मार्ग व्यय

अधिक पड़ता था अस्तु दलालों की अनुमति से मैंने सब माल बजाजों को बाँट दिया। सप्ताह में दो बार चन्द्र और वृहस्पतिवार को मैं बाजार जाता जो कुछ माल बिकता बजाजों से मूल्य ले आता

एक दिन मैं बदरुद्दीन बजाज की दुकान पर बैठा था कि अनेक दासियों सहित एक असामान्या सुन्दरी युवती कुच भार से आगे को झुकी मेरे पास आकर बैठ गई। मैं देखकर चकित रह गया। मोतियों की माला जो हृदय पर विराजमान थी वह दोनों कुचों के बीच में ऐसी छवि दे रही थी मानों दो सुमेरुओं के बीच में सुरसरी की धारा लहरें दे रही हैं इस काम-सुन्दरी, लावण्य केलि कृशोदरी को विधाता ने बड़े सावकाश में रचा होगा इसके अंग २ से नवीन यौवन की छटा फटी पड़ती थी मेरा मन नेत्रों के मार्ग से सुन्दरी के हृदय में प्रविष्ट होगया, कुसुमायुध ने धनुष वाण तान मुझे वश्य कर लिया, मैं बार २ देखकर भी तृप्त न होता था मन चाहता था कि समस्त शरीर नेत्र हो जावे तो जीभर के एक बार ही देख लूं।

सुन्दरी ने बदरुद्दीन से कुशल पूछी और एक थान रौप्य खचित जरवाफ का मांगा बदरुद्दीन ने ११०० दिरहम मूल्य का थान सुन्दरी को दिखाया।

सुन्दरी प्रसन्न हो कहने लगी—“निस्संदेह थान बहुत अच्छा है क्या मैं इसे ले जा सकती हूँ मूल्य कल भेज दूंगी।

“आप निस्संकोच थान ले जा सकती थीं परन्तु क्या करूं यह थान मेरा नहीं है वरन् मुझे अंगुली से बताकर इस युवक का है।” यह कह बदरुद्दीन मेरी ओर देखने लगा।

“नहीं २ मैं कल ही रुपया भेज दूंगी।” यह कह सुन्दरी ने थान ले चलने की एक दासी को आज्ञा दी।

बदरुद्दीन ने कहा—“अजी मूल्य की क्या बात है धन आपकी जिह्वागत है कल नहीं तो २-४ दिन पीछे आजायगा परन्तु आज सोमवार होगया रुपये की बड़ी आवश्यकता है।”

ओह यह रूक्षता ! इतना अविश्वास तुम—"यह कह थान दुकान पर फेंक क्रुद्ध हो चल दी ।"

दुकान से उतर मैंने कहा—"चित्तवित्तोभयहारिणी यहां तो आओ !" सुन्दरी मेरी ओर कटाक्ष से देख लौट पड़ी । मैंने सुन्दरी को थान भेंटकर बदरुद्दीन से कहा—"शत दिरहम आढ़त स्वरूप अपने लाभ के हिसाब में लिख दो सहस्र दिरहम का मैं रसीद दिये देता हूं ।

निदान रसीद देकर मैंने सुन्दरी से कहा—'मैं और थान सब कुछ आपको समर्पित है मूल्य भेजने की कोई आवश्यकता नहीं केवल एकमात्र मोहनी मूर्ति के दर्शन पाने की लालसा है ।"

सुन्दरी ने मेरी मनो वेदना समझ इस प्रकार आनन से जाली हटाई कि मैं देखते ही विमोहित होगया ज्यों २ मैं मुखच्छवि देखता इच्छा अधिक प्रबल होती जाती थी । सौन्दर्य देखकर कौन नहीं फँसता, सुन्दर चित्र अवलोकन कर चित्त डांवाडोल हो जाता है किंबहुना मेरा मन उस मनमोहिनी में जा बसा सौन्दर्य के साथ २ जो सुन्दरियों में चित्ताकर्षक की शक्ति रहती है उस पर भी दामिनीद्युति सम हास्य, बांसुरी के शब्द समान वचन किसी प्रकार स्थिर नहीं रहने दे सकते ।

जब सुन्दरी मुझे अघमुग्ध कर चली गई तो मैंने बदरुद्दीन से पूछा—"बन्धु ! सुन्दरी कौन है किस बड़भागी की पाणिग्रहीता है ? चराचर में ऐसा रमणी रत्न बड़ी प्रारब्ध से मिलता है ।"

बदरुद्दीन ने धैर्य देकर कहा—"महाशय ! यहसुन्दरी एक सुप्रसिद्ध धनी की पुत्री है पिता अपार धन छोड़ मरा है ।"

नैराश्य सागर में डूबा मैं सराय में पहुंचा क्या भगवान ने सारी सुन्दरता इसी को प्रदान करदी है निस्संदेह यह कोई देवांगना नहीं २ स्वर्ग राज्य की अधिष्ठात्री है । आह, एक बार देखते ही मन हाथ से निकल गया । निदान रात भर दीर्घ निश्वास त्यागने और करवट बदलने में बीती दूसरे दिन प्रातः ही मैं बदरुद्दीन की दुकान पर पहुँचा । एक घड़ी न बीती होगी कि उक्त सुन्दरी अपनी दासियों सहित वहां आ मेरी

ओर कटाक्ष से देख प्रेमपूर्वक कहने लगी—"यह लीजे अपने रुपये।"

"कुछ आवश्यकता न थी" अनुरक्त भावों से उत्तर दे मैंने पुनः दर्शन लाभ की आकांक्षा प्रकट की। परन्तु वह बिना कुछ कहे सुने मेरी ओर कटाक्ष से देखकर चल दी।

"क्या मुझसे घृणा हुई? नहीं, अभी २ जब उसने मुझे कटाक्ष से देखा अनुराग टपकता था परन्तु उसने उत्तर क्यों न दिया।" निदान ऐसे ही अनेक मनोविकार सताने लगे। मैं उसी समय अज्ञात मार्ग से जिधर मुंह उठा चल पड़ा। थोड़ी ही दूर गया हूंगा कि किसी ने मेरी पीठ पर हाथ रक्खा। पीछे फिर कर देखा तो उक्त सुन्दरी की एकदासी को पाया। "स्वामिनी आपको बुला रही हैं।" दासी के कहते ही मैं उसके पीछे हो लिया। कुछ ही आगे जाकर देखा सुन्दरी एक दुकान में बैठी मेरी बाट देख रही है।

मुझे देखते ही सुन्दरी प्रसन्न हो मेरा हाथ पकड़ कहने लगी—"प्यारे घबराओ न, प्रेम में मेरी बुरी दशा है बदरुद्दीन के कारण मैं कुछ नहीं कह सकी थी अब आप चाहे अपने घर चलिये अथवा मेरे घर को पवित्र कीजे।

"मैं नवागत पथिक हूं सराय में ठहरा हूँ वह स्थान श्रीचरणों के पधारने योग्य नहीं यदि कुछ आशंका न हो तो आप ही अपन इन्द्रोपम केलि भवन में प्रविष्ट होने की आज्ञा कीजे मैं चलने को उद्यत हूँ।"

"अच्छा कल बुधवार है इवाकी नमाज (वन्दना) के पश्चात् मेरे घर जो अमुक गली में है आजाना।' यह कहकर सुन्दरी चली गई।

मैं विक्षिप्त की नाईं सराय में पहुँचा। आज का शेष दिन मेरा इसी सोच विचार में थके तैराक की भांति डूबते उछलते पूर्ण हुआ। तमोवती रात्रि उपस्थित हुई परन्तु वह सुन्दरी कौन है मुझसे वास्तविक प्रेम है वा मौखिक, निदान इसी प्रश्न की मीमांसा में दिन निकल आया। प्रातः क्रिया और उबटन स्नान और गन्ध-लेपन से निवृत्त हो पचास स्वर्णमुद्रा की एकथैली जेबमें रख सुन्दरीके घरकी ओर चलदिया।

जब मैं द्वार पर पहुंचा तो दो कनिष्ठ दास मुझे देख कहने लगे—''आइये प्रभो ! कल से आपके वियोग में स्वामिनी ने रो २ कर घर भर दिया है' निदान वे मुझे एक सुसज्जित घरमें लेगये । थोड़ी ही देरमें वही वार विलासिनी सुन्दरी बहुमूल्य वस्त्राभरण से अलंकृत मेरे पास आकर बैठ गई । एक दासी ने भोजन उपस्थित किया बोतल-बासिनी सुरादेवी भी मंगाई गई, निदान् सुन्दरी सहित मैंने अनेक सुस्वादु फल मेवा इत्यादि आस्वादन किये, कुछ लावण्यवती रमणी रत्न मनोरम नृत्य दिखाने लगीं, थोड़ीदेर पीछे मैं औरसुन्दरी सुख शय्यापर बैठ कलोलें करने लगे कभी मैं उसे अंक में भरता और कभी वह मुझे आलिंगन करती निदान बड़े आमोद प्रमोद से काम केलि में रात व्यतीत हुई । प्रातः ही मैं वह थैली (५० मुद्रावाली) सुन्दरी के सिरहाने रख सराय को लौट आया उस दिन से बराबर मेरा यही नियम था दिन सराय में और रात सुन्दरी के केलि भवन में बिताता और प्रतिदिन ही ५० मुद्रा की थैली सुन्दरी के सिरहाने छोड आता ।

थोड़े ही दिनों में मेरे पास कुछ धन नहीं रहा अतः मैंने सुन्दरी के घर जाना छोड़ दिया ।

एक दिन मैं राज प्रासाद देखने चला गया वहां सैकड़ों मनुष्य इधर उधर दौड़ रहे थे बड़ा कौतूहल था । कारण जानने की उत्कण्ठा से मैं भीड़ में घुस गया देखा एक अश्वारोही युवक बड़े यत्न से आगे को जा रहा है एक थैली सुवर्ण मुद्रा पूरित जीन में लटक रही है सहसा एक मनुष्य लकड़ियों का भारी गट्ठर लिये युवक के समीप होकर निकला अस्तु युवक घोड़े को बचाकर भीड़ में ले गया अनायास ही थैली मेरे हाथ से छू गई मैंने तुरन्त खींचकर कमर में बांध ली युवक ने बिगड़ कर छूरिका का ऐसा हौला मारा कि मैं गिर पड़ा यद्यपि अनेक मनुष्यों ने मेरे प्रति सहानुभूति प्रकट की परन्तु—''यह चोर हैं कहकर युवक ने पुलिस बुला मुझे पकड़वा दिया । पर्यवेक्षण पर पुलिस ने मेरी कमर से थैली निकाल ली और युवक के बताये अनुसार संख्या कौन किस संवत

की कितनी मुद्रा है यथावत् पाईं।

पुलिस मुझे न्यायाधीश के पास ले गई। अस्तु न्यायाधीश विहित अपराध सिद्ध होने पर उसी समय मेरा हाथ कटवा दिया गया। परन्तु यह चोर का दण्ड था झूठ बोलने के अपराध में मेरा एक पैर काटने की भीषण आज्ञा दी मैं दुःख से कातर निपतित हो अश्वारोही युवक के पैरों में गिर पड़ा तब दयाकर युवक ने मुझे मुक्त करा दिया वरन् वह थैली भी मुझे देकर कहने लगा—"निस्संदेह तू चोर नहीं है कारण वशात् तूने विवश हो अपराध किया है जा मैंने तुझे क्षमा किया। निदान वह युवक बड़े आग्रह से मुझे थैली दे चला गया। मैं उपस्थित मण्डली से आश्रित सराय पहुंचा। रक्त श्राव के कारण मैं अति निर्बल होगया था थोड़ी सी मदिरा पीने से संतुष्ट हुआ। सेवकों में से कोई न मिला सब ही भाग गये थे अस्तु यही धारणा हुई कि सुन्दरी के घर जाऊं परन्तु वह मेरी दशा देख अति दुःखी होगी। ओह मै अपना दुःख किन शब्दों में वर्णन करूंगा परन्तु वहां जाने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं। निदान मैं अति गोप्य सुन्दरी के घर पहुंचा। हाथ कटने के कारण मैं दुःख से उत्पीड़ित था जाते ही पड़ रहा। मुझे सेज़शायी देख सुन्दरी ने कारण पूछा।

यद्यपि मैं शिर पीड़ा मिस से मुख ढांक कर सोगया परन्तु सुन्दरी मेरी बुरी दशा देख कहने लगी—"प्यारे तुम क्यों मनोवेदना छिपाने का प्रयत्न कर रहे हो। (शरीर स्पर्श कर) ओह, आपका शरीर तो बड़ा गर्म हो रहा है।"

मैंने मन में कहा—"आह रमणी का मन कैसे पवित्र उपादानों से सुगठित है निस्संदेह स्वामी से बढ़कर स्त्री को कोई प्रिय वस्तु नहीं वह पति के हित साधन से कभी पराङ्-मुख नहीं हो सकती (अश्रु-विसर्जन कर प्रत्यक्ष) प्राणोपमे कहते लाज आती है सुनकर तुम्हें अति क्लेश होगा। आह, मैं अपनी विपद किन शब्दों में वर्णन करूं।

सुन्दरी ने पहले भोजन करने का आग्रह किया यद्यपि मैंने कई

कारण उपस्थित कर अवहेलना की परन्तु रमणी के अनुरोध ने मुझे विवश कर दिया क्योंकि उसने केवल थोड़ी सी मदिरा पी लेने को कहा था ।

मैंने वामहस्त से मदिरा पी ली यह देख सुन्दरी ने दक्षिण हस्त देखने की इच्छा प्रकट की परन्तु मदिरा कंठ से उतरते ही मैं अचेत होगया था अतएव सुन्दरी ने स्वयं वस्त्र हटाकर मेरा भग्न हाथ देख लिया ।

जब मैं सचेत हुआ तो सुन्दरी को अश्रु बहाते अति विषन्न देखा । मैंने घर जाने की विदा माँगी तो सदरी ने दुखित हो मेरे पैर पकड़ कर कहा यद्यपि आपने अपनी कथा कुछ वर्णन नहीं की परन्तु मुझे विश्वास है कि मरे कारण ही यह सब आपदा आपको झेलनी पड़ा है ओह मेरा कैसे निस्तार होगा मुझे आशा है आपके अपरिमेय प्रणयऋण से उऋण न होऊंगी । अब मैं इस नश्वर शरीर को न रक्खूंगी मेरी अवश्य २ मृत्यु होगी यह कह सुन्दरी ने नगर के धनी मानी एवं राज कर्मचारी गण एकत्रिक कर अपनी समस्त वसुधा मुझे समर्पण कर दी एक बड़े बक्स में वे थैलिया जो मैं नित्य प्रति सुन्दरी के यहाँ छोड़ आया करता था धरी मिलीं । परन्तु शोक कि सुन्दरी उसी दिन से रुग्ण हो सेजशायी हुई वरन् २-३ सप्ताह में ही प्राणान्त होगया । यद्यपि मुझे बहुत दुःख पहुंचा तथापि दुःखित हो मैं उसका अन्तिम संस्कार कर सब अटाला ले स्वदेश बुगदाद आगया । यह तिल जो अभी २ तुमको बेचे हैं सुन्दरी की धान्य सम्पत्ति में से थे । उपरोक्त कथा सुनकर युवक ने कहा—',न जाने तुम्हारे प्रति इतनी श्रद्धा और प्रेम क्यों होगया है वह दिरहम जो तुम्हारे पास हैं मेरी इच्छा है व्यापार में लगाऊं यद्यपि मैंने अब घर पर ही रहना निश्चय कर लिया है परन्तु तुम जैसे उद्यमी सदाचारी ने मेरा मन निश्छल प्रेम में आकृष्ट कर लिया है अभी एक वर्ष और व्यापारार्थ तुम्हारे प्रति व्यतीत करूंगा जो लाभ होगा परस्पर बांट लेंगे ।

मैंने युवक को सहस्रशः धन्यवाददिया वर नृशुभ मुहूर्त में व्यापार भी प्रारम्भ कर दिया। मीरा मपोटो और पारस इत्यादि अनेक स्थानों में क्रय विक्रय कर अधिक लाभ उठाया एक वर्ष पश्चात् परस्पर धन बांट युवक तो स्वदेश रह गया और मैं घर चला आया।

फिरङ्गी उपयुक्त कथा सुनाकर पूछने लगा—"राजन् क्या कुबड़े की मृत्यु से मेरी कथा अपूर्व नहीं है?"

सम्राट् ने क्रुद्ध हो कहा—"यह एक साधारण गल्प है। तुम्हें प्राण दण्ड अवश्य भोगना पड़ेगा।"

बीच में बाधा देकर मोदी ने कहा—'राजन मेरी कथा और सुनने की दया कीजे यदि रुचि कर हो तो हम चारों का अपराध क्षमा कर दीजे।"

मोदी की कथा

राजन्! कल मैं एक धनिक पुत्री के निकाह विवाहोत्सव में निमन्त्रित था नागरिक सब ही धनी मानी सम्मिलित हुए थे। जब वैवाहिक रीतें समाप्त हो चुकीं तो एक विशाल भवन में सब का भोज्य हुआ प्रत्येक इच्छानुकूल भोजन करने लगा। समस्त पदार्थों में परिपक्व लहसून अति स्वादिष्ट था केवल एक युवक के अतिरिक्त जो पात्र के सन्निकट बैठा था, सब कोई लहसून ही खाते थे।

युवक की घृणा का कारण पूछा तो उसने कहा—"महाशय! पूर्व में मने एक बार यही लहसून खाया था जिसके कारण बड़ी विपद् में पड़ा वरन् उस दुर्घटना को स्मरण कर आज भी शरीर रोमांचित होता है।

गृह स्वामिन् ने उपहास समझ दृढ़ता पूर्व कहा—"महाशय वास्तव में उक्त लहसुन बड़े परिश्रम से बनाया है और सब ही बड़े आनन्द और स्वाद से खाते हैं यदि आप थोड़ा सा भी चखेंगे तो सब सन्देह जाता रहेगा।"

युवक ने विनय पूर्वक कहा—"महाशय ! मैं लहसुन खाने से विवश हूँ प्रतिज्ञा कर चुका हूं किसी प्रकार खाऊँ तो चालीस बार अमुक तृण की राख से और अनेक बार साबुन से हाथ शुद्ध करूँ ।"

गृहस्वामी ने मुस्कुराकर कहा—"आतिथ्य सत्कार रूप हम आपकी प्रतिज्ञा के विरुद्ध कुछ न करेंगे आप लहसुन खावें हाथ धोने के लिये साबुन और राख अभी उपस्थित की जाती है ।"

सबके आग्रह वश युवक ने घृणापूर्वक चार अंगुलियों से एक फांक लहसुन की मुख में रखली । ओह ! युवक अंगुष्ठ विहीन है यह देख गृहस्वामी ने विस्मित हो पूछा—"महाशय ! आपका अंगूठा क्या हुआ ?"

युवक ने कहा—"पूर्व में एक ऐसी ही घटनासंगठित हुई कि मेरे हाथ और पैर के चारों अंगूठे काट डाले गए। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मैं संक्षेप में अपनी कथा कह सुनाऊँ ।" निदान युवक ने इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया ।

अंगुष्ठविहीन युवक का वर्णन

श्रोताओ ! मैं बुगदाद रहिवासी हूं । मेरे पिता और व्यापारियों की अपेक्षा धनी होने के अतिरिक्त सम्राट् हारूं रशीद के दरबारियों में प्रमुख सदस्य और नेता समझे जाते थे परन्तु वह थे अपरिमित व्ययी, अतएव प्राय: उनके काम संकीर्ण हुआ करते थे वह अपने अन्तिम काल में बहुत ऋण छोड़ मरे थे जिससे उऋण होने में बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। परन्तु ईश्वर अनुकम्पा से मेरी दुकान अच्छी चलती थी बड़े आनन्द से कालक्षेप करता था।

एक दिन मैं प्रात: ही दुकान खोलकर बैठा था कि एक सुन्दरी खिच्चर पर सवार एक सेवक और अनेक दासियों सहित मेरी दुकान के आगे आकर खड़ी होगई । सेविका ने रमणी को खिच्चर से उतार कर कहा—"स्वामिनी ! आपने आतुरता की, देखो ना ! अभी कोई दुकान

खुली नहीं है। निदान वह सुन्दरी मेरी आज्ञा ले दुकान पर बैठ गई। उस समय मेरे और उसी सेवक के व्यतिरिक्त अन्य कोई पुरुष वहाँ नहीं था। अस्तु सुनसान देख सुन्दरी ने अपने चन्द्रानन से पट हटा दिया।

ऐसी सुन्दरी युवती मैंने कभी नहीं देखी थी नवयौवन का विकास सुन्दरी के अंग प्रत्यंग से फटा पड़ता था। निस्सन्देह सौन्दर्य्य चूड़ान्त था। जिस प्रकार दिन दोपहर सूर्य्य के प्रकाश से आकाश सुनील निर्मल स्वच्छ दृष्टि आता है उसी प्रकार नवयौवना के सौन्दर्य्य विकास से दुकान जगमगा उठी थी। यद्यपि वह वर्षा गुल्मलतादि से आच्छादित हरे भरे प्रौढ़ पत्तों तथा परिपक्व स्वादिष्ट फलों के बोझ से अपने भार को संभालने में असमर्थ विशाल विटप तो नहीं थी किन्तु खलित कोमल स्निग्ध पल्लवों से सुशोभित मुकुलित वसन्त तरुवरसी चित्त मुग्ध करती थी किम्बहुना उसका रूप देखते ही आंखों में समा गया मैं एक टक देखता का देखता ही रह गया अति कोमल शरीर सुन्दर गठित सघन केशराशि, पन्नगी जैसी पृष्ठ तथा कटि प्रदेश पर अपूर्व शोभा पा रही थी।

सूर्य देव के दर्शन देते ही अनेक मनुष्यों का कोलाहल प्रति क्षण बढ़ने लगा अस्तु सुन्दरी ने पुनः मुख कमल पटकी ओट कर लिया और कटाक्ष से मेरी ओर देख कहने लगी—"मुझे बहु मूल्य रौप्य खचित (जरवाफ) वस्त्र की आवश्यकता है यदि हो तो दिखाने की कृपा कीजे?"

मैंने विनय पूर्वक कहा—"यह मेरे मन्द भाग्य की गति है कि जैसे थान आपको आवश्यक हैं मेरी दुकान में नहीं है यदि आप आज्ञा दें तो मैं और दुकानों से लाकर शीघ्र उपस्थित करूं।"

सुन्दरी ने मेरी प्रार्थना स्वीकार करली वरन् बड़ी देर तक अपने मिष्ट भाषण से मुझे विमोहित करती रही।

मैं कई दुकानों से अनेक थान उठा लाया सुन्दरी ने थान छांट-

कर मूल्य पूछा। अतएव मैंने सूद जोड़कर ५ सहस्र दिरहम मूल्य बता दिया।

सुन्दरी थान लेकर अपने घर चली गई मेरा नयन खञ्जन रमणी सौन्दर्य तरुवर पर जा बैठा था मूल्य लेने अथवा नाम इत्यादि का परिचय लेने का भी मुझे ध्यान न रहा। निदान सुन्दरी के चले जाने पर मैं अति चिन्ता मे पड़ा भला इतना धन बजाजों को कहां से लाकर दूंगा वरन् रात भर डूबते उछलते पैराक की नाईं धन और यह रमणी कौन है इसकी मीमाँसा में लगा रहा प्रात: ही बजाजों से एक सप्ताह की आज्ञा लेली परन्तु आठवें दिन सबसे आग्रह पूर्वक मांग प्रारम्भ करदी फिर भी कहने सुनने से लोगों ने थोड़ा समय और दे दिया। दूसरे दिन वही सुन्दरी खिच्चर पर सवार दास दासियों सहित मेरी दुकान पर आ कहने लगी—"मैंने तुम्हारी बड़ी बाट देखी परन्तु तुम अपना मूल्य लेने न आये विवश हो मुझे ही आना पड़ा।" यह कहकर सुन्दरी ने सब दिरहम मुझे दे दिये। मैंने उसी समय सब बजाजों को चुका दिया। इस प्रकार बजाजों की दृष्टि में मैं और अधिक विश्वासपात्र बन गया।

सुन्दरी ने एक सहस्र थान वही रौप्य खचित और मांगे अस्तु मैंने बिना सोचे बिचारे झटित बजाजों से ला दिये। सुन्दरी थान लेकर चल दी परन्तु प्रेम वश अब भी मैंने नाम इत्यादि कुछ न पूछा।

घर आकर मैं पुन: चिन्ता निमग्न हो रात भर अनिद्र रहा ज्यों त्यों प्रभात हुआ अस्तु मैंने उस सुन्दरी का नाम और वास स्थान खोजने की उत्कण्ठा से चतुर्दिक घूमना प्रारम्भ किया परन्तु शोक कि यह महीना पर्यन्त खोजने पर भी मैं निराश ही रहा।

बजाजों को आग्रह देख मैंने अपनी दुकान का अटाला विक्रय कर बजाजों को देना प्रारम्भ कर दिता सहसा एक दिन सुन्दरी मेरी दुकान पर विद्यमान् हो मूल्य चुका अनेक प्रश्न करने लगी अन्तिम और अभीष्ट प्रश्न उसका यह था कि तुम्हारा विवाह हुआ है अथवा नहीं।"

अभी नहीं हुआ। यह सुनते ही सुन्दरी मुसकुरा गई उसी समय

सुन्दरी का सेवक मुझे अलग लिवा ले जाकर कहने लगा— 'यद्यपि तुम सुन्दरी की सुठाम देह और कमनीयता पर हृदय से अनुरक्त और प्रेम पाने के लिये लालायित हो रहे हो परन्तु यह बड़ी कठिन समस्या है कि तुमने अपने मुख से एक शब्द भी नहीं कहा सुन्दरी अधीर हो उठी है। प्रथमही जब तुमसे थान लेकर गई है खान पान बिसार एक मात्र तुम्हारे नाम को ही जपती रहती है। यह समझो कि वह तुम्हारी दुकान पर केवल थान लेने ही नहीं आती वरन् तुम्हारा प्रेम ही खींच लाता है।"

सेवक के मुख से सुन्दरी प्रेयसी की प्रेम कथा श्रवणकर जो आनन्द मुझे हुआ अकथनीयहै जब मैं दुकानपर आया तो सुन्दरी अपनी दासियों को कुछ संकेत कर स्पष्टतया मुझसे कहने लगी— 'प्रीतम, यह सेवक जो कुछ प्रार्थना करे स्वीकार करना।" निदान सुन्दरी तो यह कहकर चली गई। उधर मैंने सब बजाजों का मूल्य चुकाया। दूसरे दिन उक्त सेवक आकर कहने लगा—"भाई तुम बड़े भाग्यशाली हो सैकड़ों मनुष्यों ने इसके पानेकी इच्छा की परन्तु सब निराश रहे यह तो तुम्हारी प्रीति में बावरी हो रही है।"

मैंने सुन्दरी का परिचय लिया तो सेवक कहने लगा—"यह जेबीदा खातून सम्राज्ञी खलीफा हारूँ रशीद की अति विश्वास पात्री सेविका है स्वयम् सम्राज्ञी ने ही इसका पालन पोषण किया है यही विशेषत्व है जो सब इसकी आज्ञा का पालन करते हैं। सब अधिकार रक्षित हैं साम्राज्ञी ने कई बार विवाह के लिये कहा तब इसने तुम्हारा नाम ले अपनी इच्छा प्रकट की है अतएव सम्राज्ञी ने तुम्हें देखने को बुलाया है परन्तु खलीफा ने अन्तःपुर में हर किसी के न जाने की कठिनाज्ञा दे रक्खी है बड़े कौशल से हम तुम्हें ले चलेंगे। तुम मसजिद में जो सम्राज्ञी ने अमुक नदी तट पर नई बनवाई है मेरे आने की बाट देखना।"

सेवक कहकर चला गया। मेरा शेष दिन स्नान गन्ध लेपन और उबटन इत्यादि में व्यतीत हुआ। सायं समय मैं उसी मसजिद में

पहुंच गया थोड़ी ही देर में वही सेवक एक छोटी सी नौका लिये वहां आ पहुंचा। नौका में कई काष्ठ बक्स रखे हुए थे उक्त सेवक ने मुझे एक बड़े बक्समें बन्द कर दिया और पुनः नौका ले चला। यद्यपि मैं इस प्रकार जाने में संकुचित था परन्तु मेरी प्रेयसी भी आगई थी मैं उसका कहना कैसे टालता।

थोड़ी देर में नौका अन्तःपुर के द्वार से जा लगी बक्स उतरवा कर सुन्दरी प्रेयसी जमादार के घर लेगई क्योंकि बिना पर्यवेक्षण कोई वस्तु अन्तःपुर में प्रविष्ट नहीं हो सकती थी यद्यपि प्रेयसी ने सम्राज्ञी के अन्तःपुर में बक्स पहुंचाने की आतुरता की परन्तु सेवक सब जमादार के आधीन थे सब के पूर्व वहीबक्स जिसमें मैं था जमादार के पास जा धरा। मैं मन ही मन भय से कांपने लगा अब बक्स खुला और मेरा जीवन नष्ट हुआ परन्तु प्रेयसी ने किसी को बक्स से हाथ भी न लगाने दिया इसमें सम्राज्ञी के बहुमूल्य आभरण बन्द हैं जो कोई खोले वह अपने भरोसे, मैं उत्तरदाई नहीं हूं और इसमें कई शीशे रत्न मणि निर्मित रखे हुए हैं तनक ही ठेस लगने से चकनाचूर हो जावेंगे तब सम्राज्ञी तुम्हें मनमाना दन्ड देकर भी न अघावेंगी।

जमादार ने भय से कुछ बाधा न दी सब बक्स सम्राज्ञीके विशाल अन्तःपुर में पहुँच गये। परन्तु दुर्भाग्य से सहसा स्वयम् सम्राट खलीफा हारूं रसीद वहां आगये और बकसों के देखने का आग्रह किया यद्यपि प्रेयसी ने बहुत मने की परन्तु खलीफा ने एक न सुनी अब उसने प्रत्येक बकस खोलकर दिखाना प्रारम्भ किया उस समय काटो तो मेरे शरीर में रक्त नहीं मैं भय से थर २ कांपने लगा परन्तु चातुर्य पटु प्रेयसीनिर्भीक सब बकस दिखाती गई जब केवल वही एक बकस रह गया तो कहने लगी—"इसमें ऐसी ही कुछ वस्तुएं होंगी इसकी कुंजी स्वयं सम्राज्ञी के पास है मुझे इसके खोलने का अधिकार नहीं है।"

जब खलीफा वहां से चले लगे तो कुछ आशा हुई प्रेयसी उक्त बकस अपने घर लिवा लेगई। जब निरनिराला हुआ वहां कोई न रहा

तो मुझे बकस से निकाल लिया और ऊपर कमरे में मुझे बिठा ताला लगा स्वयं ऊपर से नीचे उतरी ही थी कि वहां खलीफा पुनः आगये और उसी पर जिसमें मैं बन्द था आकर बैठ गये प्रेयसी से अनेक समाचार पूछते रहे।

जब खलीफा शयनागार को चले गये तो सुन्दरी मेरे पास आ कहने लगी—"जीवितेश्वर, यह सब आपदा आपको मेरे कारण विवश झेलनी पड़ी है आशा है आप क्षमा करेंगे परन्तु अब किसी प्रकार का भय नहीं है आप निर्भीक रहें मैं कल किसी समय आपको सम्राज्ञी से भेंट कराऊंगी।"

अब हम दोनों ने परस्पर बैठकर भोजन किया और बहुत रात बीते तक पारस्परिक अपना २ प्रेम दर्शाते रहे। प्रेयसी की इच्छानुसार मैंने एक सुसज्जित शयनालय में बड़े आनन्द से शयन किया। प्रभात को सुन्दरी मुझे राजकीय नियम बताकर सम्राज्ञी के पास ले चली।

थोड़ी दूर चलने पश्चात् अति विशाल भवन में मुझे खड़ा कर सुन्दरी तो चली गई परन्तु बीस युवतियां बहुमूल्य वस्त्राभरणासे सुसज्जित रत्नमणि निर्मित सिंहासन के सम्मुख आकर खड़ी होगईं। थोड़ी देर पीछे बीस असामान्या सुन्दरी युवतियों के आगे २ अभिमाननी राजमहिषी जबीदा खातून रत्नजटित वस्त्राभूषण से अलंकृत मत्तगजवत् शनैः इठलाती चाल से आ सिंहासनारूढ़ हुई। संग की लावण्यवती युवतियां यथा स्थान अपने २ कार्य में प्रवृत्त हुईं प्रेयसी मेरी ओर कटाक्ष से देख सम्राज्ञी के दक्षिण की ओर सिंहासन पर जा बैठी।

एक दासी ने मेरी ओर संकेत कर आगे बढ़ जाने को कहा मैं सन्मुख आ साष्टांग प्रणाम कर एक ओर खड़ा होगया।

कुशल मङ्गल पश्चात सम्राज्ञी कहने लगी—"मेरी इच्छा है कि इस अबोध बालिकाके साथ तुम्हारा विवाह कर दिया जावे तुमसावधानता से यहीं रहे आओ आज से दसवें दिन विवाह कार्य निस्पादन होगा।

मैं दस दिन पर्यन्त अन्तःपुर के एक गोप्य पार्श्व में रहा आया

इन दिनों में प्राय: सुन्दरी मेरे पास आती जाती रही। दसवें दिन बड़े समारम्भ से निर्विघ्न मेरा विवाह समाप्त हुआ। सायं समय स्नान इत्यादि वैवाहिक रीतियों से निवृत्त हो अनेक सुस्वादु भोजन उपस्थित किये गये समस्त पदार्थों में एक पात्र इस लहसुन का था, जिसका आग्रह पूर्वक अभी तुमने मुझे रसास्वादन कराया है। उस दिन मैंने इसी लहसुन को बड़े स्वाद से खाया था परन्तु दुर्भाग्य से मुख और हाथ भली भांति न धो सका केवल अंगोछे से पोंछकर रह गया। रात्रि होने पर सौभाग्य रूप सुन्दरी सहित एक कमरे में बन्द कर दिया जब मैंने सून्दरी को आलिंगन करने को हाथ बढ़ाया तो सहसा सून्दरी अप्रसन्न हो दूर हट गई और चीत्कारकर समस्त अन्त:पुर में कोलाहल मचा दिया अनेक दास दासी वहां दौड़ आये।

मैंने विनयपूर्वक सन्दरी से कारण पूछा तो वह क्रोधितहो कहने लगी—"तू बड़ा दुष्ट है निर्धिनी लहसुन खाकर हाथ तक नहीं धोये दूर हो मेरे सामने से मारे दुर्गन्ध के मेरा मस्तिष्क घूम रहा है।

सुन्दरी ने कई सेवकाओं को मेरे हाथ पैर बांध कटीली लकड़ी से आहत करने की आज्ञा दी। कहने की देर थी मनमानी मार लगा, कहने लगी—"इसका हाथ काट देना चाहिए।" कुछ कष्ट सहिष्णु सेविकाओं ने कहा—"यद्यपि इसने बहुत बड़ा अपराध किया है परन्तु यह गंवार है आपकी कोमल प्रकृति का इसे अणुमात्र भी ध्यान नहीं आता तथापि इसे बहुत दंड मिल चुका अब क्षमा करना ही श्रेय है।" परन्तु सुन्दरी ने किसी का कहना न माना—"इसे ऐसा दंड मिलना चाहिए जो आजन्म स्मरण रहे।"

उस समय तो सून्दरी चली गई परंतु वह उसी दिन से रुग्ण सेजशायी हो अति कुश होगई। एक दिन मैंने सुना सुन्दरी स्वास्थ्य लाभ कर चुकी है स्नानागार को आवेगी।

दूसरे दिन सुन्दरी मेरे पास आई और पुन: बंधवा कर अति निर्दयता से उस्तरा हाथ में ले मेरे हाथ पैर चारों अंगूठे काट डाले

यद्यपि एक स्त्री ने उसी समय किसी वृक्ष की जड़ घिस कर लगा दी तथापि रक्त श्राव के कारण मैं अचेत हो गया। जब चेत हुआ मुझे थोड़ी सी मदिरा पिलादी तब मैंने सुन्दरी के समक्ष प्रतिज्ञा की कि—“यदि संयोग वश अब कभी लहसुन खाऊँगा तो १४० बार जल साबुन और अमुक तृण की राख से हाथ धोऊँगा।”

मुझे प्रतिज्ञा बद्ध देख सुन्दरी ने प्रसन्न हो कहा—“अब मैं तुझे अपना पति समझूंगी तेरे ही पास रहूंगी।”

सुन्दरी की आज्ञा से सेवकों ने बुलसान तेल क्षतों पर मर्दन करना प्रारम्भ किया।

अब हम दोनों दम्पति अति सुख से कालक्षेप करने लगे केवल अन्तःपुर में गोप्य रहना मात्र ही दुःख था अतएव सुन्दरी ने सम्राज्ञी से पृथक रहने की आज्ञा लेली एक दिन मैंने देखा सुन्दरी सेवकों पर स्वर्ण मुद्रा भार कराये चली आ रही है। समीप आकर उसने कहा—“यहां रहने से आपको कष्ट होता है अस्तु सम्राज्ञी ने पचास सहस्र मुद्रा प्रदान की हैं आप दस सहस्र मुद्रा लेकर कोई अच्छा सा मकान ले लें।”

मकान मोल लेकर हम उसी में आ रहे परन्तु शोक एक वर्ष भी सुख से न बीता सुन्दरी का देहान्त हो गया। मैं दूसरी स्त्री के साथ विवाह कर वहीं (बुगदाद) रहा आया सहसा उस स्त्री ने भी संसार यात्रा की फिर तीसरा विवाह किया वह भी परलोकगत होगई चौथा किया वह भी बैकुण्ठ सिधारी। मैंने उस मकान को निकृष्ट समझ बेच डाला और व्यापारिक वस्तु क्रय कर पारस गया और समरकन्द इत्यादि भ्रमण करते हुए यहां आकर रहने लगा हूं।

मोदी ने सम्राट से कहा—“राजन् ! यह वह कथा है जो बुगदादी व्यापारी ने निमन्त्रित सज्जनों के सन्मुख कही थी।”

बीच में बाधा देकर सम्राट ने कहा—“हां, यह कुछ विचित्र है परन्तु कुबड़े के नाईं अपूर्व नहीं है।”

अब यहूदी वैद्य ने प्रार्थना की—“महाराज दास को भी अपनी

कथा कह सुनाने की आज्ञा प्रदान की जावे। सुनकर आप अति प्रसन्न होंगे।"

यहूदी वैद्य का वर्णन

राजन्! वैद्यक में पारगामी होने के कारण दमिश्क में मेरी बड़ी प्रतिष्ठा थी। एक दिन मुझे एक उच्च-राजकर्मचारी ने बुलवा कर कहा—"एक रोगी दिखाने के लिये तुम्हें कष्ट दिया है। आशा है तुम शीघ्र आरोग्य कर दोगे।" यह कह कर उसने मुझे निकटस्थ निर्जन गृह में लेजाकर सेजशायी रुग्ण युवक को दिखाया मेरे प्रणाम करने पर रोगी ने कुछ उत्तर न दे आभारी रूप शिर हिला दिया।

मैंने नाड़ी देखने के लिए रोगी को सम्बोधन किया तो उसने मर्म वेदना से दीर्घनिश्वासत्याग कर अपना वाम् हस्त उपस्थित किया। मैंने विस्मित हो शरीर और नाडी निरीक्षण कर औषधि का प्रयोग बता दिया।

क्रमशः, नौ दिन पर्यन्त मैं उस रोगी को देखने गया जब वह स्वास्थ्य लाभ कर चुका तो कर्मचारी ने मुझे बहुत धन पारितोषिक रूप प्रदान किया और सदैव के लिए अपना वैद्य नियुक्त किया।

जब कभी उस रोगी से साक्षात् होता तो बड़ी भक्ति और प्रेम से मेरा सत्कार करता। एक दिन वह मुझे अपने साथ स्नानागार को लिवा ले गया वस्त्र उतारने पर मैंने देखा उसका एक हाथ कटा हुआ था वरन् यही कारण रुग्ण होने का विदित हुआ न जाने क्यों मुझसे छिपाया। मुझे बड़ा शोक हुआ।

युवक मुझे विषन्न देख कहने लगा—"आप मेरा कटा हाथ देख आश्चर्य न करें मेरी कथा विचित्र है। यदि मुझे वायुसेवनार्थ बाग में जाना हानिप्रद न हो तो मैं मार्ग में आपसे अपना वृत्तान्त कहूंगा।" निदान् युवक सेवकों को भोजन बनाने की आज्ञा दे स्वयम् मेरे साथ एक सघन वृक्ष वेष्ठित उपवन में पहुंचा। इधर उधर घूम फिर कर हम भ्रम-

लता की शीतल छाँह में जहां पूर्व से ही कालीन बिछा हुआ था, बैठ गये । तब युवक ने अपनी कथा इस प्रकार कहना प्रारम्भ की—

कर विहीन युवक का वर्णन

मैं मूसल प्रदेश रहिवासी उच्च-वंशीय धनिक पुत्र हूं । मेरे पिता १० भाई थे यह सबसे बड़े थे । मेरे चचा सब अपुत्रक थे एक मात्र मैं ही सन्तति स्वरूप था । पिता ने मेरे पठन पाठन का अच्छा प्रबन्ध कर दिया था अस्तु शुशिक्षकों की प्रेरणा से मैं शीघ्र ही अनेक भाषा और कला कौशल में कुशल होगया ।

शुक्रवार के दिन मेरे पिता और चचा मूसल की बड़ी मसजिद में निमाज पढ़ने गये । आराधना पश्चात् बड़े २ सुरम्य नगरों की प्रशंसा प्रारम्भ हुई तब एक मनुष्य ने कहा— 'नील नदी के तट मिश्र देश अति रमणीक है समस्त पृथ्वी पर कोई नगर उसका समानता नहीं कर सकता ।"

मिश्र की प्रशंसा सुनकर सबने ही अनुमोदन किया अतएव मुझे उसके देखने की बड़ी उत्कण्ठा हुई यदि मैं स्वतन्त्र होता उसी समय चल देता ।

कुछ दिनों पश्चात् मेरे चचाओं ने मिश्र देखने की इच्छा प्रकट की । पिता को संग चलने के लिए बाध्य किया मैं अहर्निश मिश्र देखने को लालायित, समय की प्रतीक्षा करता था यह सुअवसर देख पिता से आज्ञा मांगने गया परन्तु "अभी तुम अबोध बालक हो ऐसे भ्रमण करने से स्वास्थ पर बुरा प्रभाव पड़ेगा ।" कहकर टाल दिया । परन्तु मैंने चचाओं से हठ पूर्वक बहुत कहा सुना तो पिता ने केवल दमिश्क तक जाने की आज्ञा दी ।

दमिश्क पहुँचकर देखा जायगा अभी से शिर हिलाना उचित नहीं है । मैंने सहर्ष स्वीकार कर लिया ।

अब मैं अपने पिता और चचा के साथ मेसोपोटामियां पहुंचा वहाँ

से अपरलश, हलब और तब दमिश्क पहुंचा। नगर की शोभा गगन-स्पर्शी उच्च-अट्टालिका चौड़ी २ सड़कें सरम्य पुष्पवाटिका कूप तड़ागादि देख मैं अति प्रसन्न हुआ निदान् बहुत दिनों तक हम एक सराय में ठहरे रहे जब चचा ने आगे जाने का विचार किया तो मेरा सब माल वहां बेच दिया। मुझे ५ रुपया प्रति सैकड़ा से अधिक लाभ होगया, इसप्रकार मेरे पास बहुत धन होगया। अब मेरे पिता और चचा मुझे वहीं छोड़ आगे जाने को उद्यत हुये। मैंने कुछ बाधा न दी। उनके चले जाने पश्चात् मैं अति मितव्ययी बन गया एक पैसा भी निरर्थक न उठाता।

मैंने एक बड़ी हवेली श्वेत प्रस्तर की, जिसके आगे विशाल पुष्पोद्यान, अनेक फौवारे जो प्रति समय अर्क गुलाब उद्गिरण करते थे, किराये पर ले रक्खी थी। उक्त हवेली पूर्वमें अब्दुरहीम नामक एक सभ्य के आधिपत्य में थी परन्तु अब कोई रत्न पारखी मोल लेकर किराये पर चलाता था मैं दो मुद्रा मासिक देता था और प्रत्यक्ष रूप से धनिकों की नाईं कालक्षेप करता था कभी २ अपने मित्र वर्गों को भोज्य देता और बदले में स्वयं उनके यहां खाने जाया करता था। निदान मैं पिता और चचाओं की अनुपस्थिति में दमिश्क में ही रहा आया। लोग मेरे पास आते और मेरे आवश्यकीय कार्य सुसम्पादन करते थे।

एक दिन मैं द्वार पर वायु सेवनार्थ बैठा हुआ था कि एकसुन्दरी युवती वस्त्राभरण से सुसज्जित मेरे पास आ—"क्या तुम कपड़े बेचते हो ?" कहकर हवेली में घुस गई। मैं द्वार बन्द कर भीतर पहुंचा और सुन्दरी को एक कमरे में लेजाकर कहने लगा—"सुन्दरी आपके योग्य मेरे पास बहुत से थान थे परन्तु शोक कि इस समय दिखाने से......हूं।"

सुन्दरी ने अपना मुख खोल दिया और प्रेम पूर्वक कहने लगी—"प्यारे ! मैं केवल तुमसे भेंट करने आई हूं सायं समय लौट जाऊंगी। कृपया इस समय कुछ भोजन का प्रबन्ध कर दीजे।"

मैं सुन्दरी को देखते ही मुग्ध होगया। आज्ञानुसार अनेक प्रकार की मदिरा उत्तमोत्तम खाद्यपदार्थ मेवा इत्यादि झट उपस्थित किया गया

जो हम दोनों ने बड़े आनन्द से एक साथ बैठकर आस्वादन किया। निदान यह रात स्वर्गीय सुख उपभोग करते कामकेलि में बीती। प्राय: मैंने दस मुद्रा सुन्दरी प्रेयसी को देना चाहीं परन्तु उसने मुझे लौटाकर कहा—'प्राणेश्वर मैं मुद्रा लेने नहीं आई वरन् प्रेम उपहार······!" किंबहुना सुन्दरी हठ पूर्वक उलटी दस मुद्रा मुझे दे और तीन दिन पश्चात् पुन: दर्शन देने का वचन ले अपने घर चली गई।

मैं तीन दिन पर्यन्त सुन्दरी के वियोग में अति व्याकुल रहा। निदान वह सुन्दरी तीसरे दिन आई। मैं बड़े उत्साह से भीतर लिवा ले गया, यद्यपि मैं सुन्दरी के नाम से अपरिचित था परन्तु इसमें कुछ सन्देह नहीं कि वह थी अलवेली नायिका, मैं आनन्द से उन्मत्त हो उठा मेरी इन्द्रियां वश में न रही! मैं उसके आग्रह चुम्वन और प्रगाढ़ालिङ्गन में अपने को छोड़ स्वर्ग सुख उपभोग करने लगा। अहा! उसके चुम्बन की तुलना नहीं हो सकती तमाम रात सुन्दरी के पीन पयोधरों से अपनी छाती लगाने सुन्दर सरस ओठों का मधुर-रस चखने और सुरभि-निश्वास की सुगन्ध लेने में ही बीत गई। सुन्दरी असहनीय काम पिपासा से सब कुछ भूलकर हृदय से सटी हुई थी सहसा किसी विचार के आते ही दीर्घ-निश्वास त्याग कहने लगी—"प्यारे! मैं बिना सोचे विचारे ही आत्म-समर्पणकर चुकी हूं किसी सुन्दरी को देखकर अपनी प्रतिज्ञा भङ्ग न कर देना।"

मैंने दृढ़तापूर्वक कहा—"प्राणेश्वरी, यदि यह देह है तो तुम प्राण हो मैं हृदय से तुम पर अनुरक्त हूँ, भला तुम जैसी अनुपम रमणी रत्न को पाकर मैं किसी की ओर भ्रूक्षेप करूंगा ऐसा स्वप्न में भी विश्वास न करिये! चराचर में तुम जैसी असामान्या सुन्दरी युवती बड़ी प्रारब्ध से मिलती है तुम्हें पाकर सन्तुष्ट हूँ।"

"अच्छा, कल एक युवती को, जो तुम्हारे दर्शनों को लालायित हो रही है अपने संङ्ग लाऊंगी देखूंगी तुम अपनी प्रतिज्ञा पर कहां तक दृढ़ रहते हो?" यह कहकर प्रेयसी ने विदा हो पचास मुद्रा आगत

युवती के सत्कारार्थ भोजन इत्यादि के लिए वे अपने घर की ओर पयान किया।

दूसरे दिन यथा-सम्भव मैंने घर झाड़ पोंछ स्वच्छ कर दिया देखता हूं प्रेयसी एक नव यौवना को अपने साथ ला रही है। जब वह मेरे पास आकर बैठ गई तो मैंने देखा नवागता युवती पूर्व परिचिता सुन्दरी से दश अंश अधिक सुन्दरी है। यदि एक बार मेरी दृष्टि पहिली सुन्दरी पर पड़ती थी तो अनेक बार नवयुवती के अछूते सौन्दर्य पर टकराती थी अनायास चित्त उसी की ओर आकर्षित होता था। तथापि मैं और नवागता पहिली सुन्दरी के भय से एक दूसरे को भलीभांति प्रेम-दृष्टि से देखते हुए सकुचाते थे परन्तु—"छिपत न नैन लगे। उघरि परत सब जान जात हैं घूंघट मेंन खगे!' प्रेयसी ताड़ गई वह क्रुद्ध हो कहने लगी—"तुम मेरी प्रेमिका सखी को कुदृष्टि से देखते हो ओह, इतनी जल्दी प्रतिज्ञा विस्मरण कर............।'

मैंने मुस्करा कर कहा—"तुम व्यर्थ दोषारोप मुझे लगाती हो मैं तो तुम्हारे नाते ही..........।'

परन्तु थोड़ी देर में ही सुरादेवी की कृपा से ऐसा ज्ञान तिरोहित हुआ कि मैंने नवागत का हाथ चूम लिया। अस्तु प्रेयसी ईर्षानल से जलने लगी वह क्रोध से कांपते हुए—"मैं अभी आती हूं।" कहकरबाहर चली गई मैं यह सुअवसर देख नवागता के पास जाकर बैठ गया परन्तु उसका कण्ठ रुंध गया मुखच्छवि मलीन पड़ गई। वह कुर्सी से गिर पड़ने ही को थी कि झटित मैंने संभाल लिया परन्तु उसकी आंखें पथरा गईं और देखते ही देखते प्राण-त्याग दिये।

यह दशा देख मेरा मस्तिष्क घूम गया पैरों के नीचे धरती चक्र देने लगी मैंने बाहर निकल घबराकर सेवकों से पूछा—"सुन्दरी कहां गई?"

'वह सामने की गली में जाती दृष्टि पड़ी थी।' सेवकों के कहने से मुझे विश्वास होगया कि यह सब धूर्तता इसी की है पिछले ग्लास में

उसने कोई तीव्र विष मिला कर पिला दिया है निदान मैं इस दुर्घटना से अति भयभीत हुआ न जाने क्या विपत्ति उठानी पड़े ! इस विषम यन्त्रणा से दग्ध हो बड़ी देर तक मेरा शिर घूमता रहा अंत मैंने सदन में ही क़ब्र खुदवा कर उसे गढ़वा दिया और सब अटाला कमरों में बन्द कर केरो जाने के लिए उद्यत हुआ । गृहस्वामी रत्न पारखी को मैंने पूर्व ही एक वर्ष का किराया चुका दिया था ।

थोड़े दिनों पश्चात् मैं केरो पहुंच गया । चचा मुझे देख कर अति विस्मित हुए—"तुम कहां से आये ?"

मैंने बात बनाकर उन्हें विश्वास दिला दिया कि केवल आपके दर्शनार्थ दमिश्क से चला आया हूँ । निदान मैं पुनः उसी सरायमें जहां वह सब थे जा ठहरा । यहां पिता से साक्षात् हुआ वह मुझे देख अप्रसन्न हुए परन्तु चचा ने उन्हें शान्त कर दिया । अब मेरे पिता और चचा अपना माल विक्रय कर मूसल की ओर जाने को उद्यत हुए । परन्तु मैं अभी केरो की शोभा भलीभांति न देख सका था अस्तु गुप्त रूप से मैं दूसरी जगह चला गया वरन् जब तक वे मूसल की ओर न गये मैं घर में ही छिपा रहा । यद्यपि उन्होने मेरी बहुत ढूंढ़ खोज की परन्तु मुझसे साक्षात् न हुआ । कदाचित वह लज्जावश लौट गया यह सोच कर वे दमिश्क की ओर चल दिये ।

उनके चले जाने के पश्चात् मैं तीन वर्ष पर्यन्त औररहा दमिश्क के रत्न पारखी को अपने घर का किराया प्रति वर्ष आगामी भेजता रहा परन्तु यहां ऐसी कोई घटना संघटित न हुई जिसका उल्लेख किया जावे । निदान जब मैं केरो से दमिश्क में आया तो पहिले उसी रत्न पारखी के पास गया वह मुझे देखकर अति प्रसन्न हुआ । हवेली जिसे मैं बन्द कर गया था यथावत पाया ।

एक दिन मेरे सेवक को मकान झाड़ते हुए वहुमूल्य मुक्ता जड़ित एक स्वर्णमाला मिली । वह मेरे पास लाया मैंने पहिचाना निस्सन्देह यह वही माला है जिसे मैंने नवागतके श्रीकण्ठमें मरने के पूर्व देखा था ।

माला देखते ही सुन्दरी को स्मरण कर मैं बड़ी देर तक अविश्रान्त अश्रु धारा से वक्षस्थल भिगोता रहा निदान इसी प्रकार रहतेसहते दमिश्क में बहुत दिन बीत गये जब मेरे पास कुछ धन न रहा तो मैंने वही माला एक दलाल द्वारा बेचने को दी उसने बाजार में दिखाकर कहा—"महाशय, यद्यपि यह माला दो सहस्र मुद्रा की है परन्तु आवश्यकता वश पचास मुद्रा से अधिक कोई दाम नहीं लगाता।"

मेरे पास कुछ नहीं रहा था अस्तु स्वल्प मूल्य ही में बेच देने को दलाल को माला दे दी। निदान दलाल माला लेकर रत्न पारखी के पास पहुंचा—"सौदा पट गया आप ५० मुद्रा में ही ले लीजे।"

अभी दलाल ने माला नहीं दी कि रत्न पारखी ने उसे पकड़ लिया और घसीट कर कोतवाल के पास ले जा कहने लगा—"बहुत दिनों से यह माला चोरी गई थी बड़े अनुसन्धान से आज चोर हाथ लगा है।"

दलाल के बयान लेकर कोतवाल ने मुझे पूछा—"यह माला तुम्हारी है?"

कोतवाल उत्तर पाने की प्रतीक्षाकर मेरी ओर कोपदृष्टि से देखने लगा अभी मैंने कुछ उत्तर देना निश्चय नहीं किया था कि कोतवाल की आज्ञा से कराघात-प्रहार प्रारम्भ हुआ। मैं भय से थर २ काँपने लगा विवश मुझे चोरी का अपराध स्वीकार करना पड़ा।

अपराध स्वीकार करने पर निर्दय कोतवाल ने मेरा हाथ कटवा दिया और माला छीन ली गई।

तीन दिन पर्यन्त मैं असह्य वेदना से कातर घर में पड़ा रहा। कोतवाल के भय से समस्त सेवक मुझे छोड़कर भाग गये। तीसरे दिन कई पुलिस वालों के संग वही रत्नपारखी जिसने चोरी का अपराध प्रमाणित कर मेरा हाथ कटवाया था मेरे घर में घुस आया और रस्सी से बाँधकर मुझे न्यायाधीश के पास ले गया क्योंकि इस माला के साथ२ उनकी पुत्री भी अन्तर्द्धान होगई थी।

जिस समय मैं न्यायाधीश के सम्मुख उपस्थित किया गया तो वह दयापूर्वक देखने के साथ ही मुझे बन्धन से मुक्त कर कहने को कहा—"यह कभी चोर नही हो सकता जिस रत्नपारखी की साक्षी से अपराधी प्रमाणित हुआ है उसे प्राणदण्ड की आज्ञा दी जाती है।" न्यायाधीश मुझे निरनिराले से लेजाकर कहने लगा—"पुत्र सत्य बताना यह माला तुझे मिली क्योंकर ?"

न्यायाधीश की सहानुभूति देख मैंने पहिली सुन्दरी का प्रेम तथा दूसरी की मृत्यु घटना आद्योपान्त कह सुनाई।

न्यायाधीश सुन कहने लगा—"ईश्वरेच्छा वलीयसी वत्स ! तेरी विपत्ति सुनकर मुझे बड़ा पश्चाताप हुआ अकारण ही कोतवाल ने तुझे दण्ड दिया। वह दोनों सुन्दरी वास्तव में मेरी ही अंगजनित पुत्रियां थीं पहिली जो तेरे यहां गई ज्येष्ठ पुत्री थी मैंने उसका विवाह केरो निवासी अपने भतीजे के साथ कर दिया था परन्तु थोड़े ही दिनों में उसकी मृत्यु होगई अस्तु वैधव्य दुःख भोगती कई वर्ष पर्यन्त मिश्र में रही परन्तु यौवन काल निरपेक्ष न बिता सकी कुत्सित में पड़ कर अवगुण निकेत बन गई। मिश्र में प्रेमियों की संख्या बढ़ जाने के कारण सुखी न रह सकी यहीं आगई मेरी मँझली पुत्री बड़ी सच्चरित्र थी अभी पूर्ण यौवन का विकाश नहीं हुआ था कि दुष्टा ज्येष्ठा की कुसंगति का प्रभाव पड़ने लगा शनैः शनैः वह भी कुमार्ग में प्रवृत्त होने लगी जिस दिन उसकी विष से मृत्यु हुई उसके दूसरे दिन ही मैंने बड़ी पुत्री से कारण पूछा परन्तु वह अति सौहार्द्र दर्शा कर अश्रु बहाते हुए कहने लगी...'न जाने बहिन किस लोक को चली गई कल इसी समय उक्त माला पहिन तथा शृङ्गार कर गई है।'

मैंने बहुत ढूंढ़ खोज की परन्तु कुछ पता न चला परन्तु बड़ी पुत्री अपनी दुष्टता बिस्मरण न कर सकी शीघ्र ही रुग्ण हो नर्क सिधारी।" यह कहकर न्यायाधीश ने अपनी तीसरी छोटी पुत्री का विवाह मेरे संग करने का प्रस्ताव छेड़ा।

मैंने विवाह करना सहर्ष स्वीकार कर लिया क्योंकि न्यायीश की अगाधि सम्पत्ति की वही तीसरी पुत्री ही एक मात्र उत्तराधिकारणी थी ।

थोड़े दिनों पश्चात् ही मेरा विवाह होगया अब मैं बड़े आनन्द से कालक्षेप करने लगा ।

कल एक मनुष्य मूसल से आया था चचा ने लिखा—"तुम्हारे पिता का स्वर्गवास हो गया है शीघ्र चले आओ परन्तु मैंने लिख दिया—"मेरा आना नहीं हो सकता यहां मैं आपके अनुग्रह से अति सुखी हूं मै अपनी समस्त सम्पत्ति आपको समर्पण करता हूँ ।"

निदान कर विहीन युवक ने वैद्य को अपनी दुःखद कथा वर्णन कर घर की ओर पयान किया ।

यहूदी वैद्य ने काशगराधिपति सम्राट से पूछा—'प्रभो, उक्त कथा मूसल के व्यापारी की है आशा है आपको···।"

बीच में बाधा देकर सम्राट ने कहा—"यद्यपि तुम्हारा कथन अपूर्व है परन्तु कुबड़े की मृत्यु से अधिक कोई विचित्रता नहीं है तुम्हें प्राण दण्ड भोगना पड़ेगा ।"

सूचीकार ने प्रार्थना की—'प्रभो ! थोड़ा समय मुझे भी प्रदान किया जावे यदि मेरा कथन कुबड़े की मृत्यु से विचित्र न हो तो निस्सन्देह प्राण दण्ड की आज्ञा दी जावे ।"

सूचीकार का वर्णन

परसों प्रातः समय यहां के एक धनी व्यापारी ने अपने मित्र बान्धवों का निमन्त्रण किया सुयोग से मुझे भी सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । अनुमान बीस मनुष्य मुझे वहाँ बैठे हुए मिले । गृह स्वामी अपने किसी मित्र को लिवाने बाहर गए हुये थे बड़ी देर पश्चात् एक पंगु युवक को संग लिवाकर आये पंगु युवावस्था वाला अति सुन्दर देखने में दूसरा कामदेव प्रतिभान होता था । हम सब निमंत्रित

मनुष्य गृह स्वामी और पंगु को देखकर स्वागत के लिये उठ खड़े हुये ।

उचित अभिवादन पश्चात् गृह स्वामी ने पंगु सभ्य से उच्चासन पर विराजने का प्रेरणा की । पंगु यथास्थान बैठने ही को था कि सहसा एक नाई को देखकर भाग जाने को उद्यत हुआ । गृह स्वामी ने बाधा देकर कहा—"बिना भोजन किये मैं आपको कदापि न जाने दूंगा ।"

पंगु बड़े असमञ्जस में पड़ गया दीर्घ निःश्वास त्याग कहने लगा—"ईश्वर के लिए मुझे सकुशल यहां से चले जाने दो इस दुष्ट नाई के रहते मेरा ठहरना असम्भव है ।"

सब कोई नाई को देखकर अति विस्मित हुये कोई कारण भय का दृग्गोचर न हुआ । सबने ही इस अपूर्व घटना को जानने के लिए पंगु से बहुत आग्रह किया ।

पंगु ने क्रुद्ध होकर कहा—"मैं इस नाई की दुष्टता से पंगु हुआ हूं और भी अनेक भीषण यातनायें झेलनी पड़ी हैं । अस्तु जहां यह रहेगा वहां मैं कदापि न ठहरूंगा वरन् इस नगर को ही त्याग दूंगा । इसी दुष्ट के कारण घर-बार छोड़ यहां आया परन्तु इससे पीछा न छुटा ।"

गृह स्वामी नाई को वहीं छोड़ हम सबको दूसरे गोप्य भवन में लिवा ले गया । भोजनस्वादन पश्चात् नाई की कथा श्रवणार्थ पंगु से अत्यनुरोध किया । पंगु इस प्रकार कहने लगा;..!"

पंगु का वर्णन

मेरा पिता बुगदाद में रहता था हम बड़े आनन्द से आजीविका निर्वाह करते थे । पिता के एक मात्र मैं ही सन्तान था । अपने जीवन काल में ही उन्होंने सब कार बार मुझे सौंप दिया था पिता के स्वर्गवास पश्चात मैं मान मर्यादानुकूल बड़े शिष्टाचार से रहने लगा मेरे सदाचार से बुगदाद रहिवासी अति प्रसन्न थे । युवावस्था में पदार्पण करने पर भी मैं स्त्री नाम से परिचित न था । आवश्यकता पड़ने पर स्त्रियों से

साक्षात् हो जाता तो मैं अपना अभीष्ट सिद्ध न कर सकता।

एक दिन मैं कहीं जा रहा था सामने से बहुतसी स्त्रियां आ रहीं थीं उनसे बच जाने के कारण से एक संकीर्ण गली में चला गया जब यह स्त्रियें इस मार्ग से चली जावेंगी तब मैं लौटकर घर चला जाऊँगा। यही धारणा कर गली में बिछे हुये एक तख्त पर बैठ गया। सामने उच्च-अट्टालिका के अधोभाग में एक खिड़की बनी हुई थी। और तख्त के चातुर्दिक कुछ फुलवाड़ी लगी हुई थी मैं सुगन्धित जल प्लावित पुष्पों की शोभा देखने लगा सहसा अट्टालिका की खिड़की खुली और एक लावण्यवती युवती बयक्रम अनुमान १५।१६ वर्ष होगा, निर्मल शशिकला की भांति उसका प्रदीप्त सौन्दर्य देखकर रति भी लज्जित होती थी, सर निकाल मेरी ओर कटाक्ष से देखने और दीर्घनिश्वास त्यागने लगी।

अहा, सुन्दरी की आह की क्षमता तो देखो जो चित्त अनेक सुन्दर स्त्रियो से साक्षात् कर विचलित न हुआ था वह आज एक आह के साथ ही गर्म तवे पर जल विन्दु की नाईं विलीन हो गया।

मैं देखते ही मुग्ध होगया। सुन्दरी मेरी ओर देखकर मुस्कुराई और पराधीनतावश किवाड़ बन्दकर अन्तर्पट होगई। मैं बड़ी देर तक वहीं बैठा रहा। थोड़ी देर पश्चात् न्यायाधीश बड़े समारम्भ से आकर उसी घर में चले गये। मैंने अनुमान किया कदाचित् यही सुन्दरी के पिता हैं।

ज्यों त्यों कर घर आया और मुख ढांप विक्षिप्त की नांई खाट पर पड़ रहा। स्वजन मेरी ऐसी दशा देख अति व्याकुल हो वैद्य को लिवा लाये। वैद्य ने मुझे औषधि दी, परन्तु रोग दिन २ बढ़ता ही गया। थोड़े दिनों में ही शरीर अति कृश हो गया उठने बैठने की शक्ति जाती रही।

एक दिन कोई वृद्धा मुझे देखने आई अकारण ही ऐसी दशा देख तथा अनेकबार सिर से आपाद निहार सबको हटा निरनिराले में मेरे

निकट आ कहने लगी—"पुत्र, कोई रोग तो तुझे है नहीं, निस्संदेह किसी युवती के कटाक्षबाण से आहत हुआ है। मुझे तेरी प्रेयसी का नाम विदित होता तो मैं यथाशक्ति तुझसे भेंट कराने का उद्योग करती ?"

मैंने सजल नेत्रों से वृद्धा की ओर देखा, लज्जावश मुख से कोई शब्द न निकला दीर्घनिश्वास त्यागकर रह गया परन्तु वृद्धा ने ऐसा आश्वासन दिलाया कि विवश हो मुझे सब कुछ कह देना ही पड़ा।

"भाई तुम्हारी प्रेयसी बड़ी अभिमाननी है वह न्यायाधीश की पुत्री है जो बड़ी दुष्ट प्रकृति का मनुष्य है। वह अपनी स्त्रियों को कभी घर से बाहर नहीं निकलने देता।" यह कहकर वृद्धा अनेक सान्त्वना दे चली गई।

२। ३ दिवस पश्चात् वृद्धा पुन: आकर कहने लगी—वास्तव में तुम्हारी प्रेयसी प्रति ढीठ और गर्विता है। मैंने उसे सन्मार्ग पर लाने की अनेक चेष्टा की परन्तु सब विफल मनोरथ, जब तक मैं तुम्हारी रुग्णता वर्णन करती रही वह ध्यान पूर्वक सुनती रही पर मैंने जब दर्शन देने की प्रार्थना की तो भृकुटी दीर्घायित हो गई। क्रुद्ध हो कहने लगी—'आगे कभी ऐसी बात मुखसे न निकालना। ओह, क्षुद्रता ! मुझसे ऐसी आशा रखना केवल दुराशा है।"

मैं यह दु:ख सम्वाद सुनकर नैराश्य सागर में निमग्न हो विरह व्यथा में दग्ध होने लगा। कभी २ वही वृद्धा कुछ आश्वासन दे जाती थी एक दिन सहसा वृद्धा ने कहा—"कल मैं उस अभिमानिनी के पास गई थी तुम्हारा दुखदर्द ऐसे शब्दों में वर्णन किया कि उसके कष्ट सहिष्णु हृदय में दयाका सञ्चार हुआ अस्तु वह हँसकर कहने लगी—"वास्तव में प्रेम ऐसी ही वस्तु है मुझे स्वयम् इसका अनुभव है, यदि मुझे देखने और वार्तालाप से ही युवक का जीवन निर्भर है तो कहदेना वह देख सकता है। परन्तु उसे देखने मात्र से ही सन्तुष्ट होना पड़ेगा यदि हां, पिता स्वीकार करे और मेरे साथ विवाह करदें तो मैं दासी और वह जीवन सर्वस्व होंगे। देखो वृद्धा ! शुक्रवार को पिता

मसजिद में जाया करते हैं केवल उसी समय मिलाप हो सकता है अन्यथा........"

अभीष्ट सिद्ध हो चुका था अतएव मैंने अधिक छेड़छाड़ न की सहस्रशः धन्यवाद दे सुसमाचार सुनाने तुम्हारे पास दौड़ी आई हूं।

उक्त शुभ सम्वाद सुन मैं अति प्रसन्न हुआ उसी समय एक सहस्र मुद्रा वृद्धा को पारितोषिक दीं।

प्रेयसी के दर्शनों की लालसा में दिन बिताना कठिन हो गये ज्यों त्यों कर शुक्रवार मिला। प्रातः क्रिया से निवृत्त उबटन गन्ध इत्यादि के लिए उद्यत हुआ। मैंने किसी चतुर नाई के बुलाने को सेवक भेजा। संयोग वश सेवक इसी दुष्ट नाई को जो यहाँ उपस्थित है बुला लाया।

नाई ने आते ही प्रणाम कर कहा—"आपकी मुखच्छवि मलीन देखने से बोध होता है कि हृदय में कोई असहनीय वेदना है। कृपया पहिले यह बता दीजे मुण्डन होगा अथवा स्फोटन।"

मैंने क्रुद्ध हो कहा—"स्फोटन किस लिये, तू शीघ्रता से मेरी हजामत बना दे मुझे मध्यान्ह के समय विशेष रूप से कहीं बाहर जाना है।"

मेरे क्रुद्ध होने पर भी नाई हजामत बनाने को उद्यत न हुआ वरन् एक यन्त्र द्वारा सूर्य रश्मि देख प्रसन्न हो बोला—"आज शुक्रवार आठवीं तारीख महीना सफर सन् ५० हिज्री तदनुसार ७३२० स्कन्दरी है। अहा! क्या अमावस्या और व्यतीपात का संयोग हुआ है और अश्वनी नक्षत्र! सच तो यह है हजामत बनवाने के लिये इससे उत्तम समय उपलब्ध होना अति कठिन है आपको प्रसन्न होना चाहिए यदि दुर्भाग्य से दो घड़ी समय बीत गया तो फिर विपरीत फल होगा। दूसरे लग्नेश शोधने से मुझे ज्ञात हुआ है कि आज के दिन आप घोर विपत्ति में फंस अपार कष्ट भोगेंगे वरन् यह विपत्ति आपको आजन्म स्मरण रहेगी। यदि आप मुझे अपने सङ्ग रक्खेंगे तो यथा समय में आपको

अनेक साहाय्य देता रहूंगा ।"

नाई की वक्तृता सुनकर मुझे क्रोध हो आया मैंने विषण्ण हो कहा—"दुष्ट पामर ! मैंने तुझे मुण्डनार्थ बुलाया है अथवा उचितानुचित मन्त्रणा और ग्रहशान्ति के लिये, यदि तूने अब बकवाद किया तो मैं दूसरे नाई को बुला लूंगा ।"

नाई ने किञ्चितमात्र भी ध्यान न दिया वरन् हँसकर कहने लगा—"महाशय मुझ जैसा सर्वगुण सम्पन्न नाई आपको खोजे भी न मिलेगा मैं संक्षेप में सुनाये देता हूं । वैद्यक, ज्योतिष, व्याकरण में बाचाल, नर्क स्वर्ग रहस्य विवेकी, गणितज्ञ, ग्रहाग्रह का पुरश्चरण भी करता हूं इनके अतिरिक्त भूत, भविष्य के प्रतिभाशाली सम्राट सुधारक जातीय नेतागण सुतराम् संसार का समस्त इतिहास जिह्वाग्र है वरन् ऐसा कोई विषय नहीं जिसमें मैं पारगामी न होऊँ । आपके स्वर्गीय पिता, जिन्हें स्मरण कर मैं प्रायः रो उठता हूं मेरी योग्यता से भली-भांति परिचित थे वे मुझ जैसे दूरदर्शी मर्मवेत्ता को छोड़ कभी कहीं अकेले नहीं जाया करते थे । अस्तु आज मैं आपके साथ भी रहकर अपने कौशल से प्रसन्न कर निरापद लौटा तो पारितोषिक लाभ करूंगा ।"

नाई की युक्ति असंगत वक्तृता सुनकर यद्यपि क्रोध से मेरा शिर घूम रहा था तथापि मुझे हंसी आगई—"दुष्ट बक्की, कब तक बक २ करेगा ।"

नाई मुख सकोड़ कर कहने लगा—"आप मुझे बक्की कहते हैं महाशय मेरे सहोदर छः भाई हैं बड़े का नाम बकबक, बकबारह, दूसरेका तीसरा बूबक, चौथा अलकोज, पाँचवां अनिश्चर और छठे का शाहबकबक है । यद्यपि ये सब बाचाल है परन्तु मैं सब में छोटा अल्प-भाषी मौनी प्रसिद्ध हूँ ।"

महाशय, आप विचारें तो इतने आग्रह पर भी, दुष्ट ने बक २ बन्द नहीं की और कहता है मैं मौनी प्रसिद्ध हूँ । निदान मैंने विवश हो

अपने सेवक को सौ मुद्रा नाई को देकर बिदा की आज्ञा दी।

नाई ने अति विनीत भाव से कहा—'स्वामिन् मैं आप की आज्ञा के विरुद्ध नहीं आया हूं मैं शपथ देकर कहता हूं हजामत बनाये बिना मैं कदापि न जाऊंगा ओह, आपके पिता मेरी योग्यता से भलीभांति परिचित थे स्फोटन क्रिया की जब कभी उन्हें आवश्यकता होती तो ढूंढ़ खोजकर मुझे ही बुलाते थे अपने सङ्ग भोजन कराते, वह मेरी गवेषणापूर्ण वक्तृता सुन प्रसन्न ही न होते वरन् शिक्षा ग्रहण करते थे वे कहा करते थे तुम जैसा नीतिज्ञ संसार में खोजे न मिलेगा एक बार फस्द (स्फोटन प्रक्रिया) खोलने के उपलक्ष में शत मुद्रा प्रदान की थीं मैं आज पर्यन्त स्मरण कर उनके नाम पर अश्रु विसर्जन करता हूं।"

इतना बक झक कर भी नाई चुप न हुआ अतएव मैंने अति मृदु स्वर से क्षौर बनाने का पुनः आग्रह किया। परन्तु शिर हिलाकर वह कहने लगा—"मैं भलीभांति जानता हूं आपको कोई कठिन कार्य उपस्थित है मैं विश्वास दिलाता हूं यदि आप मुझसे कह देंगे तो मैं आपके कार्य में बहुत सुविधा कर दूंगा किन्तु आप मुझे सदैव अपने सङ्ग रक्खा करें जिस प्रकार आपके सुनाम धन्य पिता कोई काम मेरे परामर्श बिना नहीं करते थे आप भी वही गांठ बांध लें।"

मैंने विषण्ण होकर कहा—"तेरे बकवाद में मेरे कई काम बिगड़ गये परन्तु तेरा मुख न थका।"

"आप अप्रसन्न न हों अभी हजामत बनाये देता हूं" यह कहकर नाई ने मेरा शिर भिगो मूंड़ना प्रारम्भ किया। अभी कुछ ही बाल कटे होंगे कि सहसा कुछ सोचकर कहने लगा—"ओह, भय है, आप अभी मध्यान्ह होने में तीन घड़ी अवशिष्ट हैं आप व्यर्थ ही आतुर हो रहे हैं। आप बिना विचारे ही किसी काम में हस्तक्षेप न कर बैठें जो पीछे पछिताना पड़े। कृपाकर पहिले आप मुझे अपना काम तो बतावें फिर देखिये मैं आपको कितनी २ शिक्षाएं देता हूं।"

अब मैंने उस दुष्ट से पीछा छुड़ाने को यह धोखा दिया कि प्रायः

मेरे मित्र वर्गों ने प्रेम भोज्य का प्रबन्ध किया है वे सब मेरे अनुपस्थित रहने से घबरा रहे होंगे।

नाई यह सुनकर उछल पड़ा गद्गद् हो कहने लगा—"ईश्वर आपको दीर्घायु करे आपने अच्छी याद दिलाई मैंने गतदिवस ४।५ अपने मित्रों को निमन्त्रण दिया था परन्तु आपकी हजामत के कारण मुझे ध्यान ही न रहा। अब तक कुछ प्रबन्ध नहीं हुआ।"

यह सुअवसर देख मैंने कहा—"कोई आवश्यकता नहीं है तुम सब सामिग्री यहां से ले जाना सो यदि तुमने भलीभांति मेरी हजामत बनादी तब अन्यथा नहीं।"

मैं बहुत अच्छी तरह आपकी हजामत बनाऊँगा पर पहिले मैं देखलूं कितना भोजन बना है।" यह कहकर नाई पाकशाला की ओर चल पड़ा।

अरे मूर्ख वहां क्या देखने जाता है मैं तुझे सब यहां ही बताये देता हूं देख एक बकरा, ६ मुर्गनर और १२ मुर्गियां हैं जो अस्सी मनुष्यों के योग्य हैं इसके अतिरिक्त बुढ़िया सुगन्धित मदिरा तुझे और दी जावेगी। यह सब बताकर मैंने अपने सेवक को उक्त खाद्य पाक नाई को दे देने की आज्ञा दे दी।

परन्तु उस कुलाधम नृशंस ने फिर आधा घंटा पाक देखने मात्र में ही बिता दिया। किंबहुना मुझे अति विषन्न देख केश बनाना आरम्भ किया सो भी यदि एक बाल काटता तो दश निरर्थक बातें बकता था। आधे अनुमान बाल बनाकर बड़े पश्चात्ताप से कहने लगा—"शोक महाशोक यदि आपके पिता जीवित होते तो मैं काहे को निर्धन होता परन्तु ईश्वर को कोटानुकोटि धन्यवाद है कि आपने भी उचित सत्कार कर मुझे सदैव को आभारी बनाया सौगन्ध देकर मैं कहता हूं आपके घर के अतिरिक्त आज तक मैंने किसी से कुछ याचना नहीं की वरन् मेरी दशा ठीक "जनौट" के सदृश है जो नाइयों में दलाली किया करता था अथवा 'शाल्ये' की नाईं, जोगलियों में भुने चने बेचा करता अथवा

"सातूर बाकला" विक्रेता के तुल्य, सन्तरा बेचने वाले की भांति अथवा "अबूबकर" खलीफा के समान् जो जल छिड़का करता था जिससे मार्ग में धूल न उड़े अथवा 'कासिम' जो खलीफा का अङ्ग रक्षक था सादृश्य हैं। वे बड़े सुख से कालक्षेप करते थे नृत्य गान और आमोद प्रमोद में समय बिताते थे बुगदाद रहिवासी इनका बड़ा आदर करते थे। इन सब में यह बड़ा गुण था कि मेरी नाईं अल्प भाषज्ञी थे। अब मैं एक गीत जनौट विरचित आपको सुनाता हूं देखिये कैसा सरस और भाव पूर्ण है।" यह कहकर उस दुष्ट ने गाना और नाचना प्रारम्भ कर दिया। जनौट का अनुकरण करते देख मैंने अति क्रुद्ध होकर कहा—'दुष्ट वाचाल, तुझे उपहास सूझता है और मेरे कई काम बिगड़ रहे हैं उत्तम यही है कि अब तुम मौन धारण करलो अन्यथा……… ।"

नाई किसकी सुनता है वह बड़े अभिमान से कहने लगा—"उपर्युक्त महानुभावों को अभी निवेदन भेजता हूं और कृपाकर आप भी पधारें क्योंकि यहां रहने से आपके मित्र वर्ग व्यर्थ बक २ कर प्रलाप उत्पन्न करेंगे वरन् आपके पुनर्रुग्ण होने की आशंका है कि आप मेरे घर चले चलें।"

मैंने विषन्न होकर कहा—'अनेक बार कहने पर भी अवहेलना कर तू व्यर्थ वादापवाद में समय नष्ट कर रहा है अतएव आज मैं कहीं जा नहीं सकता तेरा आवेदन स्वीकार है किसी और समय अवश्यमेव चलूंगा अब तू अपनी बातों को और समय के लिये वञ्चित कर शीघ्र हजामत बना दे।"

नाई ने आग्रह पूर्वक कहा—"नहीं २ महाशय शिर न हिलाइये एकबार अवश्यमेव मेरे घर पधारकर कृतार्थ कीजिये देखिये आनन्द और उल्लास से आपका हृदय कैसा अभिभूत होता है। और यदि आप मेरे घर न जा सकें तो मुझे अवश्य अपने साथ ले चलिये, आपके प्रदानित पाक घर देकर शीघ्र लौट आऊँगा। आप प्रसन्न हों अथवा विषण्ण मैं आपको अकेला कदापि न जाने दूंगा।"

मैंने अति क्रोधित हो कहा—"तू शीघ्र क्षौर बना दे मैं अपने साथ किसी को न लिवा जाऊँगा।

नाई ने अक्लान्त भाव से कहा—"आपको यह उपहास शोभा नहीं देता जब आपके मित्रों का भोज्य है तो मैं अवश्य सम्मिलित होऊँगा वे सब मुझे देखकर कृतार्थ हो आपको सहस्रश: धन्यवाद देंगे।"

नाई की हठ देखकर मैं बड़े असमञ्जस में पड़ गया सहसा मसजिद में से पहिली अजान (स्वस्ति-वाचन) का अस्फुट स्वर कर्ण गोचर हुआ उस समय आतुर होने से तब दुष्ट ने कहीं हजामत समाप्त की।

मैंने भोजन देकर नापित बिदा किया इस अवसर में, मैं स्नान गन्ध लेपन और नवीन वस्त्र धारण कर दूसरी अजान सुनने की प्रतीक्षा करने लगा।

नाई भोजन घर देकर गली में आ छिपा, जब मैं प्रेयसी के घर की ओर जाने लगा तो वह त्वरित मेरे पीछे २ हो लिया न्यायाधीश के घर पहुंचकर मैंने पीछे घूमकर देखा दुष्ट नाई विद्यमान् है।

नाई की धृष्टता देख क्रोध से मैं मारने को उद्यत हुआ परन्तु कुछ कहने सुनने का अवसर नहीं था लहू का घूंट पीकर रह गया।

न्यायाधीश का द्वार खुला हुआ था अस्तु वही पूर्व परिचित वृद्धा मुझे बड़े सन्मान से प्रेयसी के पास ले गई।

प्रेयसी को देखकर चिरवांच्छा सफली भूत हुई मैंने दौड़ कर नव प्रणयिनी को हृदय से लगा लिया।

मनुष्य का हृदय अपने प्रेम पात्र को रूप गुण सौन्दर्य आदि से अलंकृत देखकर उसकी ओर स्वभावत: आकृष्ट होता है वरन् सौन्दर्य का प्रभाव सबसे अधिक मानव हृदय पर पड़ता है, लावण्यमय मनोहर मूर्ति को देखकर हृदय में प्रीत स्रोत बहने लगा, हम दोनों काम पिपासा से अभिभूत एक दूसरे को गाढ़ालिगन कर परस्पर चुम्बन ले रहे थे सहसा अनेक मनुष्यों का अस्फुट कोलाहल कर्ण गोचर हुआ।

कोलाहल जानने की उत्कण्ठा से हम दोनों निकटस्थ खिड़की से नीचे को झांकने लगे। सबके पूर्व न्यायाधीश जिस तख्त पर बैठकर प्राथमिक मैंने प्रेयसी का दर्शन लाभ किया था, बैठे दृष्टिगत हुये।

यह दृश्य देख मैं अति भयभीत हुआ कभी न्यायाधीश और कभी उस मर्कट नाई का ध्यान आकर व्याकुल करने लगा। परन्तु प्रेयसी ने पूर्व ही दूरदर्शिता से मेरे लिये एक स्थान गोप्य निश्चय कर रक्खा था सुगमता से मुझे उसी में छिपा दिया।

न्यायाधीश ने अन्तःपुर में प्रवेश किया। एक सेवक ने कुछ अपराध किया था उसे देखते ही शरीर कांपने लगा क्रोध कम्पित अधरों पर दन्तारोपण होने लगा। थोड़े ही देर में करावात का पटापट शब्द मेरे कानों में गूंजने लगा।

सेवक ने ऐसा कोलाहल मचाया कि समस्त गली सिर पर उठाली। नाई ने समझा न्यायाधीश ने मुझे ही आहत किया है मैं ही रुदन कर कोलाहल मचा रहा हूँ। अस्तु यह समझ नाई ने अपने सब वस्त्र फाड़ डाले वरन् चीत्कार कर गली रहवासियों को सहायतार्थ एकत्रित कर लिया। इसी पर सन्तोष नहीं किया, मेरे घर दौड़ा गया और सबको उक्त भीषण सम्बाद सुना आया। सब ही बड़ी २ लाठियां लेकर न्यायाधीश के घर दौड़े आये और सबने मिलकर बाहर का द्वार तोड़ डाला।

न्यायाधीश ने कारण पूछा तो नाई बिगड़ कर कहने लगा—"तुमने हमारे स्वामी के साथ ऐसा कटु बर्त्ताव क्यों किया है?"

न्यायाधीश ने विस्मित होकर पूछा—"मैं तुम्हारे स्वामी को जानता ही नहीं मैंने कभी देखा तक नहीं। यदि तुम्हें विश्वास न हो तो घर में जाकर देखलो?"

नाई ने धृष्टता से कहा—"इस रहस्य को मैं भली भांति जानता हूँ—सीधे क्यों नहीं कहते तुम्हारी पुत्री स्वामी से अनुरक्त है। ठीक मध्याह्न के समय तुम्हारे घर में प्रविष्ट हुये हैं। इस प्रकार उद्दन्डता से

ताडित करने में क्या प्रयोजन ! यह तो होता नहीं कि विवाह करदें न होगा बांस न बजेगी बांसुरी ।''

निदान न्यायाधीश के आदेशानुसार मित्र बान्धवों ने नाई के पीछे २ घर में प्रवेश किया । मै एक काष्ट बक्स में छिपा हुआ था नाई ने देख भालकर वही बक्स सिर पर धर लिया और छोटी सी खिड़की द्वारा मकान के पिछवाड़े गली में जा निकला ।

पट खुला रहने के कारण में बक्स से निकल कर आगे को भागा अनेक मनुष्य मेरा पीछा करते भागे आते थे । दुष्ट नाई सबके आगे २ बकता चला आता था सहसा एक नाली फांदने में मेरा पैर फिसल गया टांग में बहुत चोट आई में लगड़ा होगया । परन्तु फिर भी अनेक मनुष्य अट्टहास्य से करतल ध्वनि करते पीछे २ भागे आते थे जब उक्त दल मेरे बहुत ही समीप आजाता तो मैं १-२ मुट्ठी रुपये बखेर देता । जब तक वे रुपया बटारते मैं दूर निकल जाता इस क्रम के रुपया बखेरता लँगड़ाता जब दूर निकल गया तो सब पिछड़ गए परन्तु नाई बराबर पीछा करता कहता चला आता था—'आपको मेरी स्वामि भक्ति का परिचय मिला ! आज आप मेरे कथनानुसार मेरे अधिक श्रम से ही जीवन्मुक्त हुये हैं । इसी प्रकार अनेक बातें कहता गली २ मुझे अपमानित करता चला आता था । सहसा आगे एक सराय का द्वार खुला दृष्टिगोचर हुआ ।

शीघ्रता से सराय में प्रवेश कर मैंने गृह स्वामी से कहा "जैसे हो सके मुझे इस दुष्ट नाई से मुक्त करो !" निदान गृह स्वामी ने नाई को फटकार कर निकाल दिया ।

श्वास पूर्ण होने पर मैंने अपनी समस्त कथा आद्योपान्त कह सुनाई उस । दयाकर मुझे एक कमरा दे दिया । उसने कई बार घर जाने का अनुरोध किया परन्तु अपयश का टीका लगा इस प्रकार घर रहना मैंने अस्वीकार किया ।

कुछ दिनों सराय में रहकर जब मैं स्वस्थ हुआ तो बहुत सा धन

एकत्र कर बगदाद छोड़ यहां चला आया। मुझे विश्वास था कि अब दुष्ट नाई का क्रूर मुख न देख सकूंगा परन्तु इसने यहां भी पीछा न छोड़ा।

श्रोतागण आप विचारें तो इस दुष्ट के कारण मुझे कितना कष्ट और कैसी असामान्या सुन्दरी युवती पूर्ण वयस्का जो विवाह का वचन दे चुकी थी लाभकर स्वर्गीय उपभोग करता।" यह कह पश्चात्ताप कहता पंगु युवक वहां से उठकर चला गया।

पंगु के चले जाने पर सबने उस नाई से कहा—"यदि यह घटना सत्य है तो तू अति घृणा का पात्र है।"

नाई ने शिर उठाकर कहा—'निस्सन्देह यह घटना अक्षरशः सत्य है परन्तु आप विचारें तो यदि मैं सहायता न देता तो कैसे बचता। बड़ी कुशल हुई कि केवल उसकी टांग ही टूटी पंगु होगया अन्यथा जीवन संकटापन्न था प्राण बचना दुर्लभ थे। इस पर मुझसे घृणा करता है मैं समझता था कभी साक्षात होने पर आशातीत पारितोषिक लाभ करूंगा आप विश्वास रखिये मैं अति अल्प भाषी हूं आप मेरी कथा सुनने की कृपा करेंगे तो स्वयं अनुभव हो जायगा।"

निदान नाई ने इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया :—

नाई की कथन

खलीफा के शासन में जो अति न्यायी-धर्मात्माओं का चिरसंगी शासक था, दस डाकू प्रजा का माल अपहरण करने में पराकाष्ठा दिखला रहे थे यह अत्याचार देख खलीफा ने कोतवाल से कहा—"इन दसों डाकुओं को शीघ्र बन्दी करके आगामी बकर-ईद तक उपस्थित करदो अन्यथा तुम्हें कुप्रबन्ध वश, प्रजा पीड़न अभियोग में प्राण-दण्ड भोगना पड़ेगा।"

कोतवाल ने यत्नपूर्वक बकर-ईद से एक दिन पहले दसों डाकुओं को पकड़ लिया और जल मार्ग से नौका में बैठा बन्दीग्रह को भेजदिया।

मे प्रदेश में था और ईद करने पर आना अत्यावश्यक था बिना कुछ कहे सुने मैं भी नौका में बैठ गया ।

जब हम नौका से उतरे तो प्रहरीगण घेर कर खड़े हो गये और उसी समय कठिन बन्धन में बांध खलीफा के सन्मुख लेगये ।

खलीफा बहुत दिनो से डाकुओं से अप्रसन्न था झट चाण्डाल बुला दसों के शिर भंग की आज्ञा दे दी । सब के पीछे मैं बैठा था चांडाल जब दस डाकुओं के शिर काट चुका तो मेरी ओर देख कर रह गया ।

खलीफा ने दीर्घ स्वर से कहा—"क्यों नहीं इस दशवें का भी शिर काट देता ।"

चांडाल ने हाथ जोड़कर कहा—"प्रभो, दस का शिर काटचुका यह ग्यारहवां है ।"

खलीफा ने शिर गिनकर मुझसे पूछा—"क्या तुम भी डाकुओं के साथ पकड़े हुए थे ?"

मैंने हाथ जोड़ अति विनीत कांपते हुए कहा—"प्रभो ! मैं भूल से इन डाकुओं के साथ नौका में बैठ गया था उतरने पर प्रहरी गण मुझे भी बांध लाये । मै निरपराध अल्प भाषी आपका नाई हूं ।"

मेरे मौन रहने से खलीफा बहुत हंसा वह विस्मित हो कहने लगा—"अभी तुम्हारा जीवन शेष था यदि चांडाल न गिनता तो तुम्हें भी यमपुर पहुंचा देता ।"

"राजन् ! मैं अपने छः भाइयों की अपेक्षा विपरीत अति अल्पभाषी हूँ मैं देख चुका हूँ, बहु भाषण वश उन्हें अनेक कष्ट सहने पड़े हैं ।

खलीफा ने कहा—"भला भाई भाइयों में सादृश्य न हो यह कैसे सम्भव है ?"

मैंने कहा—"महाराज ! वह अति बक्की हैं रंगरूप एवम् प्रकृति भी प्रतिकूल है । एक कुब्ज, दूसरा पोपला, तीसरा एकाक्षी, चौथा जन्मान्ध, पांचवां बूंचा और छटा बैडाल की भांति उचक २ कर चलता

है। निदान इन छओं की जीवनी अति विचित्र रहस्यपूर्ण है आप थोड़ी देर सुनने की कृपा करें।"

नाई के कुब्ज ज्येष्ठ भ्राता—

बकबक की कथा

मेरा ज्येष्ठ भ्राता बकबक कुब्ज था। वह कपड़े सींकर आजीविका चलाया करता था। उसने एक दुकान पनचक्की वाले व्यापारी के सन्निकट ले रक्खी थी भाई निर्धन परन्तु व्यापारी धनी था।

एक दिन भाई दुकान पर बैठा सीं रहा था सहसा उसकी दृष्टि व्यापारी की भार्या पर पड़ी जो अपनी उच्च अट्टालिका के एक पार्श्व में खड़ी रूप छटा से दर्शकों के नेत्रों को चुंधिया रही थी। भाई देखते ही मुग्ध होगया।

रमणी पतिव्रता थी भाई की कुदृष्टि देख अति विपन्न हुई परन्तु भाई उसके रूप लावन्य पर ऐसा आसक्त हुआ कि खान पान बिसार उसी की प्रतीक्षा में निमग्न रहने लगा रमणी ने भाई को सन्मार्ग पर लाने का उपाय सोचा। उसने बहुमूल्य वस्त्र देकर एक दासी को भाई के पास भेजा।

भाई ने थान लेकर इच्छित वस्त्र सीं दिये दूसरे दिन दासी भाई के पास से वस्त्र लेने आई। उसने मुस्करा कर कहा—"सुन्दरी ने पूछा है तुम्हारी रात कैसे बीती है वह तो रात भर व्याकुल रही है।"

भाई ने कहा—'सुन्दरी के प्रेम में आज चार दिन से अनिद्र हूं सच तो यह है जिस दिन से आंख लगी है रात बीत जाती है परन्तु एक पल को भी आँख नहीं लगती।"

दूसरे दिन दासी ने भाई से आकर कहा—"सुन्दरी तुम्हारी सिलाई देख अति प्रमुदित हुई है आज उसने यह साटन भेजी है अच्छी-सी सिलवार बना दो।

भाई सिल्वार बनाने लगा चारु-हासित सुन्दरी खिड़की से झांक भाई की ओर संकेत कर और अधिक विमोहित करने लगी ।

भाई ने सिल्वार भी बनाकर दे दी परन्तु निराहार रहने पर भी सिलाई कुछ न मांगी उधार सुधार कर कुछ भोजन का प्रबन्ध किया दूसरे दिन वही दासी आकर कहने लगी—"गृह स्वामी (व्यापारी) ने तुम्हें बुलाया है । वह कुछ सिलवायेंगे सुन्दरी ने कहा है चलो इसी भांति तुम्हारा आना जाना हो जावे ।"

भाई अति प्रसन्न हुआ दासी के संग व्यापारी के घर चलागया । व्यापारी ने बड़े आदर से एक थान देकर बीस कमीजें सिलवाईं ।

भाई ने ६-७ दिन में कमीजे सींकर भेज दी । यद्यपि व्यापारी ने सिलाई देने के लिये भाई को बुलाया परन्त उसी दासी ने शिर हिलाकर कुछ न लेने दिया । व्यापारी ने यह समझ कर कि पीछे सिलाई देगे एक थान की सिल्वारें और बनवाईं ।

वह भी भाई ने सीं दीं परन्तु दासी के मने करने से सिलाई कुछ न मांगी क्योंकि दासी ने यह कह दिया—"यदि सिलाई ले जाओगे तो मनोरथ सफल न होगा ।" सिलाई तो भाड़ में गई भाई ने सूत के दाम तक न लिए, वह मेरे पास आ कहने लगा—"कई कारणों से अनेक धनी लोगों के पास मेरी सिलाई रुकी हुई है मेरे पास कुछ है नहीं, तुम दोचार दिनके लिये कुछ रुपये देदो तो भोजन का प्रबन्ध हो सके ।"

बहुत कहने सुनने से मैंने भाई को कुछ पैसे दे दिये ।

एक दिन भाई उसी व्यापारी के यहां गया उस समय भी वह सिलाई देने को उद्यत हुआ परन्तु दासी की बात याद कर उसने नम्रता पूर्वक कहा—"महाशय मैं सिलाई लेने नहीं आया केवल कुशल क्षेम पूछने आया हूँ ।" निदान भाई क्षुधित तृषित दुकान पर लौट आया ।

सुन्दरी ने सिलाई न देने का दण्ड ही भाई को देना उचित समझा था परन्तु वह अभी सन्मार्ग पर न आया तो उसने समस्त वार्ता

अपने पति (व्यापारी) को कह सुनाई । व्यापारी अति विषण्ण हुआ उसने सुन्दरी भार्या से परामर्श कर सन्ध्या समय भाई को बुला भेजा ।

भाई के आने पर व्यापारी ने बड़े प्रेम से परन्तु मौखिक भोजन कराया । भोजन आस्वादन पश्चात् मेवा और मदिरा उपस्थित की । इस प्रकार जब रात्रि का पहिला पहर बीत गया तो व्यापारी ने भाई के सोने का वहीं प्रबन्ध कर दिया ।

असमञ्जस में पड़ा भाई अभी सोने नहीं पाया था कि व्यापारी ने आकर कहा—"भाई मेरा खिच्चर कल से रुग्ण है और मुझे प्रातः ही आटा देना है यदि थोड़ी देर को तुम चक्की पीस दो तो बड़ी कृपा हो ।"

भाई ने चक्की चलाना स्वीकार कर लिया अस्तु व्यापारी ने एक कठिन रस्सी कमर में बांध दी और चाबुक पीठ में मार जल्दी २ घूमने का आग्रह किया ।

मार खाकर भाई ने कहा—'क्या करते हो ?'

"इस क्रम से तुम सुचतुर और अति शीघ्रगामी बनोगे । यह कहकर व्यापारी ने शीघ्रता से चक्की चलाने का अनुरोध किया ।

भाई ने ५ । ४ चक्र अति शीघ्रता से किये और थक कर बैठ गया ।

भाई को बैठा तथा कमर से रस्सी खोलने की चेष्टा करते देख व्यापारी ने अति निर्दयता से एक दर्जन चाबुक से भाई की पीठ आहत कर कर्कशस्वर से कहा—"शीघ्रता से यह सब गेहूं समाप्त करदो ?"

रात भर चक्की चलाते भाई की बुरी दशा होगयी वह क्या जानता था आनन्द घन निरानन्द के झकोरे में उड़ जायेंगे । कठिन परिश्रम के कारण नेत्र आरक्त और देह फूली रोटी के समान उष्ण हो रही थी ।

सूर्योदय के पूर्व वही दुष्टा दासी आकहने लगी—"सुन्दरी तुम्हारी यह दशा देख अति विषण्ण हुई हैं बुलाकर मुझे भेजा है कि तुम्हें . . ।"

व्यथित भाई बन्धन से मुक्त हो धराशायी होगया कास रोगी कि समान श्वास चलने लगा बात करने की शक्ति न रही पीठ पर हाथ फेरा जो चाबुकों की मार से रक्तारक्त हो रहीं थी। वह चुपचाप अपने घर को चल दिया उसने न तो दासी को बोलने दिया और न कुछ उत्तर ही दिया।

खलीफा ने कथा सुनकर कहा—"अब तुम भी पारितोषिक लाभ कर घर को जाओ।"

परन्तु मैंने कुछ भी ध्यान न दे इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया।

नाई के दूसरे भाई

बकबारह की कथा

प्रभो! मेरा दूसरा भाई बकबारह पोपला था। एक दिन वह वायु सेवनार्थ नगर की किसी गली में होकर जा रहा था सहसा एक वृद्धा ने भाई से कहा—"मैं तुम्हें पुत्र स्वरूप एक उपदेश दिया चाहती हूं यदि तुमने ध्यान दिया तो अधिक लाभ कर सकोगे।"

भाई ने कहा—"आपकी आज्ञा शिरोधार्य, मैं भी माता के समान तुम्हें समझता हूं।"

वृद्धा ने कहा—"मैं तुम्हें अपने संग एक विशाल भवन में ले चलूंगी जिसकी स्वामिनी एक असामान्या सुन्दरी युवती है। वह तुम्हें पाकर फूली अंग न समानेगी। और इतना धन देगी जो शीघ्र ही तुम्हारी गणना नागरिक गण्य मान्य धनिको में हो जावेगी परन्तु सुन्दरी युवती में एक बड़ा दोष यह है कि वह चारु हासित है वह तुम्हारे साथ आमोद प्रमोद एवम् खेल कूद में समय बितावेगी"

निदान भाई ने वृद्धा की बात स्वीकार करली वरन् वृद्धा के

आग्रह से उसी समय उसके साथ चल दिया।

वृद्धा भाई को एक विशाल प्रासाद में ले पहुंची कई कमरे कोठरी पार करने पश्चात् भाई को एक पार्श्व में छोड़ स्वामिनी को लिवाने चली गई।

अति विस्मित हो भाई वहाँ के राजसी कौतुक देखने लगा। थोड़ी देर में अनेक रमणियों की पद झंकार श्रवण गोचर हुई। जब सब पास आगईं तो भाई को देख ठहाका मार हँसने लगीं।

अनेक स्त्रियों का विहँस शब्द वायु मण्डल में गूंजने एवम् उच्च भवन की प्रतिध्वनि से भाई को भी हँसाने लगा।

उक्त रमणी समूह के मध्य जो अनुमान से दासी विदित होती थी. एक अप्सरा विनिन्दन सुन्दरी बहुमूल्य बस्त्राभूषण से सुसज्जित भाई की ओर देखकर हँसने लगी।

भाई ने कर बांध सुन्दरी को प्रणाम किया। हँसी रोक सुन्दरी ने उचित अभ्यर्थना पश्चात भाई को उच्चासन पर बैठाया। थोड़ी देर में भोजन उपस्थित हुआ। अस्तु एक ओर भाई और दूसरी ओर सुन्दरी बैठ आस्वादन करने लगे।

भोजन आस्वादन के लिये जब भाई ने अपना मुख खोला तो एक साथ सब खिलखिलाकर हँसने लगीं। परन्तु सुन्दरी ने सबको वर्जनकर उत्तमोत्तम पाक भाई के सम्मुख रख खाने की प्रेरणा की। इस व्यापार से भाई ने अनुमान किया कि सुन्दरी निस्सन्देह अनुरक्त है मेरे सहवास से प्रमुदित हो मुस्कुराती है।

भोजन पश्चात सुन्दरी की आज्ञा से अनेक कोकिल कण्ठ विनिन्दित दासियों ने गीतवाद्य प्रारम्भ किया वरन् उन्हें नृत्य करते देख आनन्द मग्न स्वयम् भाई भी उनके साथ २ नाचने लगा।

सुन्दरी ने बोत्तल वासिनी सुरादेवी से एक गिलास भर स्वयम् पिया और दूसरा भाई को दिया।

भाई ने प्रेम पूर्वक सुन्दरी का कर चुम्बनकर एक श्वास में ही

गिलास खाली कर दिया। सुन्दरी ने भाई को अपने पास बैठ जाने का संकेत किया। अस्तु बड़े आनन्द से भाई सुन्दरी की सुकोमल देह से सटकर बैठ गया।

सुन्दरी ने कटाक्ष से देख भाई के कण्ठ में चम्पे जैसी कोमल बांह डालदी और दूसरे हाथ से भाई के कपोल आहत करने लगी। इस व्यापार से भाई ने समझा मेरे समान संसार में प्रिय दर्शनीय पुरुष अन्य नहीं है मैं अति भाग्यशाली हूं। किन्तु मादकता से सुन्दरी के गन्य प्रादेश को चुम्बन और मर्दन करने के लिए उद्यत होगया सहसा सुन्दरी ने बल-पूर्वक थप्पड़ लगाना प्रारम्भ कर दिया था अतएव भाई अप्रसन्न हो दूर जा बैठा।

वृद्धा के वारण करने पर भाई पुनः सुन्दरी के पास जा बैठा। परन्तु अब उसकी यह दुर्गत की गई—कोई कान खींचती और कोई नाक में अंगुली ठूंसती कोई चुम्बन मिस से कपोल खींचती और अधर रस से सान जाती। कोई अंगूठा दिखा परस्पर हंसती खेलतीं।

भाई विषन्न हो वृद्धा की ओर देखने लगा परन्तु सुन्दरी ने भाई का हाथ दबाकर कहा—"ओह, तुम व्यग्र चित दीखते हो अब जानो मैं तुम्हें स्वर्गीय सुख उपभोग कराना चाहती हूं परन्तु तुम ...."

बीच में रोककर भाई ने कहा—"मैं आपको अप्रसन्न करना नहीं चाहता आप जो आज्ञा दें मैं करने को उद्यत हूं।"

सुन्दरी बहुतसा इत्र भाई के शरीर और बसन पर स्वयम् मलकर कहने लगी - "यदि तुम हमारे जैसे रूप में परिणत हो जाओ तो निर्भीक आनन्द भोग सको और हमारी काम पिपासा तृप्त हो सके।"

भाई ने बिना सोचे समझे ही स्वीकार कर लिया और एक दासी के साथ दूसरे कमरे में चला गया।

कमरे में पहुंचकर भाई ने पूछा—"यहां क्या करना होगा?"

"कुछ नहीं यही पोरुषेय चिन्ह नष्ट भ्रष्ट कर तुम्हें नारी वेश में

स्वामिनी के पास ले जाऊँगी।" यह कहकर दासी ने आपत्ति करने पर भी भाई की दाढ़ी मूछें मूंड डालीं क्योंकि वृद्धा के प्रलोभन षडयन्त्र में फँस भाई ज्ञान नष्ट कर चुका था।

दासी ने भाई की भौंहों में भी एक बाल न छोड़ा वरन् कई रंग तथा कृत्रिम पीन पयोधर स्थित कर उसी प्रमोद भवन में ले गई।

सुन्दरी भाई को स्त्री-वेश में देख हंसते २ लौट गई। दासियों के कुचक्र में फँस भाई भी उनकी नाईं नांचते और हाथ मटकाने लगा।

वृद्धा ने भाई के कान में कहा—'बस अब इतिश्री समझो केवल इतना रहा है कि जिस दिन सुन्दरी मदिरा पीती है। काम पिपासा से भागने लगती है। यदि तुम मौनी बने बैठे रहे तो कुछ न कर सकोगे अस्तु तुम सर्वाङ्ग नग्न होकर दिगम्बर रूप में सुन्दरी के पीछे २ भागो इस व्यापार से कामेच्छा इतनी प्रबल होगी कि सुन्दरी स्वयम् नग्न होकर तुम्हारे अंग से लिपट जायगी असंख्य चुम्बन और प्रगाढ़ालिंगन में अपने को छोड़कर तुम माँगोगे वही देदेगी देखते ही देखते क्षणमात्र में धन कुबेर बन जाओगे और स्वर्गीय आनन्द उपभोग करोगे वह व्याज में।"

भाई ने वृद्धा के कथनानुसार वस्त्र उतार दिये लाजवश केवल एक सिलवार पहने रहा। नग्न होकर सुन्दरी के पीछे पीछे भागने लगा।

सुन्दरी ने पीन पयोधर खोल दिये दुपट्टा कधे पर डाल इधर उधर भागी। पश्चात् एक छत्ते में जो तिमिराच्छादित अति संकीर्ण था छिप रही। भाई ने अन्धकार में २-३ चक्र लगाये परन्तु सुन्दरी न मिली सहसा आगे का द्वार खुल गया। भाई शीघ्रता से उसी द्वार में होकर निकला झटित द्वार बन्द होगया। भाई ने जिस गली में चर्मकार-अस्पर्श जाति रहती थी अपने को खड़ा पाया।

भाई की विचित्र दशा देख अनेक लोग घिर आये। एक चारुहासित कहीं से गधा भी पकड़ लाया और बल प्रयोग कर भाई को उस पर चढ़ा दिया। नग्न शिर में जूतों से अभ्यर्थना करते बाजार में

ले पहुंचे ।

जब यह कौतुक न्यायाधीश ने देखा तो अति क्रुद्ध हुए "अजी यह स्त्री-वेश से घरों में घुसकर चोरी किया करता है ।" सबने वह कर भाई को अपराधी प्रमाणित कर दिया ।

न्यायाधीश ने उसी समय १०० बेत लगवा और उसी गधे पर चढ़ा नगर से बाहर निकलवा दिया ।

अभी कथा समाप्त न हुई थी कि मैंने तीसरे भाई का वर्णन आरम्भ कर दिया ।

नाई के तीसरे भाई—

बूबक की कथा

राजन् ! मेरा तीसरा भाई बूबक जन्मान्ध होने से भिक्षा कर आजीविका निर्वाहन करता था । वह सदैव गलियों में घूमा करता था और प्रत्येक द्वार खटखटा २ कर मौन साधे भिक्षा की प्रतीक्षा में खड़ा रहा करता था । गृहस्वामी मौनी बाबा कहकर भिक्षा डाल देता तो ले लेता परन्तु अपने मुख से कुछ न कहता था ।

क्रम से एक दिन भाई ने किसी का द्वार खटखटाया गृहस्वामी ने कई बार पूछा—"कौन है ? परन्तु भाई ने कुछ उत्तर न दिया ।

गृहस्वामी ने द्वार खोलकर देखा कोई अभिमानी अन्धा मिलुक है । उसने खिन्न होकर कहा— "हाथ निकाल ।"

भाई ने हाथ फैल दिया । गृहस्वामी हाथ पकड़े ऊपर छत पै चढ़ा लेगया । और तब हाथ छोड़ पूछने लगा—"तू कौन है ?"

मैं भिक्षुक हूं । अन्न वस्त्र मांगता हूं । ईश्वर तेरा भला करेंगे । यह कहकर भिक्षार्थ भाई ने हाथ फैला दिया ।

"तुम कौन हो मैं केवल यही पूछता था भिक्षा में यहां से कुछ न मिलेगा ।" यह कहकर गृहस्वामी नीचे उतरने लगा ।

भाई से विषन्न होकर कहा—"यदि यही पूछना था तो नीचे

ही कह दिया होता । कृपया, जिस प्रकार ऊपर चढ़ा लाये हो नीचे तो पहुंचा दो ईश्वर तुम्हारा भला करेगा—

“बस ठन् २ निमजाओ । यह कह कर गृहस्वामी नीचे उतर आया ।

भाई सीढ़ी टटोलते २ आधी दूर उतर आया सहसा उसका पैर फिसला और लुढ़कते २ धड़ाम से नीचे आ पड़ा ।

भाई के सिर और कमर में बहुत चोट आई । वह गृहस्वामी को कोसता चला जा रहा था सहसा मार्ग में उसको दो मित्र मिल गये । यह भी अंधे थे । परस्पर कंठ परिचय पश्चात् भाई से अनिष्ट का कारण पूछने लगे ।

भाई ने अपनी दुःखात कथा आद्योपान्त वर्णन कर कहा—आज इतनी चोट लगी है किसी दिन प्राणान्त हो गया तो तुम्हारा ऋणी रहूंगा । अस्तु: अभी चलकर तुम अपना रुपया संभाल लो ।

जो मनुष्य भाई को छत पर चढ़ा ले गया था वह चोर था चोट खाकर भाई क्या करेगा यह देखने के लिए पीछे हो लिया । धरोहर की बात सुनकर विशेष रूप से गोप्य हो भाई के पीछे चलने लगा ।

निदान भाई के पीड़ित होने से अज्ञात रूप में चोर घर में प्रविष्ट हो एक ओर बैठ गया ।

भाई ने अपने मित्र को घर देखने पश्चात् द्वार बन्द कर आने को कहा । अस्तु घर में चारों ओर लाठी घुमा द्वार बन्द कर दिया परन्तु चोर दूरदर्शिता से पूर्व ही छत में लटकती रस्सी पकड़ कर लटक गया था इसी कारण लाठी घुमाने में कुछ बाधा न हुई ।

भाई ने अपने पास से गुदड़ी निकाल मित्रों के आगे रख कर कहा—“जिस प्रकार हो सका अब तक मैंने तुम्हारा धन रक्षित रखा परन्तु अब विवश हूं तुम अपना २ रुपया गिन लो ।”

नहीं २ गिनने की कोई आवश्यकता नहीं हमें आपका विश्वास है । गुदड़ी में किस ओर मेरी थैली, टंगी हुई है यह बता देना ही

पर्याप्त है ।

थैली खोलने के पूर्व कुछ भोजन लाओ क्षुधा अति प्रबल है । भाई के कहने से मित्रों ने अपनी झोली में से रोटी पनीर और मेवा इत्यादि निकाल आगे रख दी ।

रोटी टटोल २ तीनों ही खाने लगे । चोर भी आगे बढ़ कर खाने लगा । भाई ने चौथे मनुष्य के चबाने का शब्द अपरिचित जानकर झटित हाथ पकड़ लिया और कराघात एवम् "चोर २" चीत्कार कर कुलाहल मचाने लगे । इसी भांति सबको वारण करता चोर, "चोर २" पुकारने लगा ।

"चोर २,, कुलाहल सुनकर प्रति वासी द्वार तोड़ भीतर घुस आये और क्यों परस्पर लड़ रहे हो ?" कारण पूछने लगे ।

भाई ने चोर को धकेल कर कहा—"यह पक्का चोर है हमारा माल अपहरण करने को कहीं से सेंध लगाकर भीतर घुस आया है ।"

चोर अपने नेत्र बन्द कर कृत्रिम अन्ध बध कहने लगा—महाशय मैं भी इन्हीं का एक संगी हूं । अनेक षडयन्त्रों से धनोपार्जन कर हम इनके पास जमा कर देते हैं । आज ही यह व्यवच्छेद हुआ है दुष्टता से परस्पर परामर्श कर मेरे भाग को हड़पना चाहते हैं ।

प्रतिवासी चोर की वार्ता सुनकर चारों को कोतवाल के पास ले गये ।

कोतवाल के सन्मुख उपस्थित होने पर चोर कहने लगा—"प्रभो मैं निरपराधी हूं । यह तीनों चिरकाल से द्यूत चोरी वंचकता में अति निपुण हैं मैं थोड़े दिनों से अन्धा बना हूँ न्यायतः हम चारों ही....= ।"

चोर इतना ही कहने पाया था कि कोतवाल ने आज्ञा दी—यह बहुत बकबक करता है पहिले इसी में २० बेंत लगा दो ।

अभी दस बेंत ही लगे होंगे कि चोर ने जो कृत्रिम अन्धा बना हुआ था, दोनों नेत्र खोल दिये ।

कोतवाल दोनों नेत्र खुले देख अति विस्मित हुआ सहसा चोर

कोतवाल के पैर छूकर कहा—"प्रभो हम चारों इसी प्रकार कृत्रिम अन्धे बने हुये हैं। चारों अभियुक्त एक प्रकार के अपराध सूत्र में ग्रथित हैं। आप मारें अथवा क्षमा करें बात तो यह है।"

चोर के कहने से तीनों पर मार पड़ना प्रारम्भ हुए परन्तु वह वास्तव में अन्धे थे बेचारे नेत्र कैसे खोलते यह दृश्य देख चोर ने कहा—"आप कितना ही क्यों न दण्ड दें परन्तु यह नेत्र न खोलेंगे बीसों प्रपञ्चों से जन्मान्ध ही प्रमाणित करने का प्रयत्न करेंगे यह बड़े प्रतारक हैं। दस सहस्र दिरहम जो इन्होने छिपाये हैं उनमें २५०० मेरे हैं वे मुझे दे दिये जावें शेष आप अपने पास रक्खें जो कोई नेत्र खोलता जावे उसी को २५०० दिरहम देते जाइये। इस क्रम से अपना धन लेने को सब नेत्र खोल देंगे।"

निदान कोतवाल ने चोर के साथ दूत भेजकर वही गुदड़ी उठवा मंगाई उसमें ठीक दस सहस्र दिरहम पा २५०० चोर को दे शेष स्वयम् रख लिये और तीनों अन्धों को मार पीटकर निर्वासन दण्ड दिया यद्यपि कोतवाल को पीछे चोर की धूर्तता प्रकट होगई परन्तु चोर और कुछ आपत्ति न करे वह चुप हो गये।

खलीफा इस कथा को सुनकर बहुत हंसा वह चाहता ही था कि पारितोषिक देकर मुझे बिदा करे सहसा मैंने अपने चौथे भाई की कथा इस प्रकार कहना प्रारम्भ करदी।

नाई के चौथे भाई

अलकोज की कथा

राजन्, मेरे चौथे भाई का नाम अलकोज़ था वह एकाक्षी था। सदैव बाघन-कसाई का काम किया करता था वह भली बुरी भेड़ बकरी पहचानने में अति पटु था। मेंढ़ा लड़ाया करता था। अनेक धनी कौतुक देखने आया करते थे। निदान वह बड़े आनन्द से आजीविका निर्वाहन करता था।

एक दिन भाई दुकान पर बैठा था कि एक वृद्ध हृदय तक श्वेत दाढ़ी फुहराये आया और ६ सेर मांस क्रयकर चला गया। रुपया सब नये थे। भाई ने किसी बक्स में रख दिये। वृद्ध पांच मास पर्यन्त क्रमशः प्रतिदिन छः सेर मांस ले जाता और उसी भांति रुपया भाई को दे जाया करता था जिन्हें वह एक बक्स में रखता जाता था।

पांच मास बीतने पर भाई ने रुपयों से भेड़ बकरी क्रय करना चाहीं बक्स खोलकर देखा रुपयों के स्थान में श्वेत कागज की रिक्त पुड़ियां हैं। भाई शिर पीटने लगा अपने प्रतिवासियों को समस्त कथा कह सुनाई सहसा वही वृद्ध सन्मुख से आता दृष्टिगत हुआ। अस्तु भाई ने उसे दौड़ कर पकड़ लिया।

वृद्ध ने विषण्ण होकर कहा—"यदि कुशल चाहता है तो मुझसे अपराध क्षमा करा अन्यथा मैं तुझे किसी योग्य न छोड़ूंगा।"

भाई ने कहा—"तेरी दुष्टता भलीभांति जानता हूं। बस उत्तम यही............।"

वृद्ध ने कहा—"ओ नृशंस ? भेड़ बकरी के स्थान पर मनुष्य का मांस बेचकर सबका धर्म नष्ट करता है।

भाई ने कहा—"क्यों व्यर्थ दोषारोपण कर धर्मात्मा बनने की चेष्टा करता है मैं तुझे सहज नहीं छोड़ने का।"

निदान सबके कहने से वृद्ध का हाथ पकड़े भाई अपनी दुकान पर आया देखा वास्तव में एक मनुष्य का गला कटा हुआ लटक रहा है।

ओह, यह क्या ! अवसन्न हो भाई जहां का तहां खड़ा रह गया। भाई ने स्वयम् भेड़ काटकर दुकान पर लटकाई थी। परन्तु यह किसी को ध्यान न आया कि यह कोई माया है जिस प्रकार कागज की पुड़ियां मायावश रुपया दीखती थीं उसी प्रकार भेड़ मानव रूप में दृष्टि आने लगी है।

सब ही भाई को धिक्कार देने लगे उस वृद्ध कुहकी ने भाई को इतना मारा कि एक आंख फूट गई। सब ही भाई को पकड़ कर माया

मनुष्य सहित न्यायाधीश के पास ले गये।

प्रत्यक्ष प्रमाण पा न्यायाधीश ने नाई को निर्वासन दन्ड दिया और यह घोषणा करादी कि जो कोई अपराधी को आश्रय देगा उसे कठिन प्राण दण्ड भोगना पड़ेगा।

निदान भाई नगर से बाहर भीषण वन में कहीं छिपा रहा वह रात्रि को चलता और दिन में कहीं छिपा रहता। एक रात वह किसी नगर में पहुंचा था कि हठात् अनेक घोड़ों की टाप का अस्फुट शब्द कर्णगत हुआ। न जाने किस विपत्ति में पड़ना पड़े अस्तु वह एक घर में घुस गया सहसा दो बलिष्ठ सेवकों ने आकर उसे पकड़ लिया—"रात तू भाग गया था बता कहां जायगा! हम तुझे और तेरे साथी चोरों से भली भांति परिचित हैं। परसों धन तो सब तुम चुरा ही ले गये अब कदाचित् स्वामी के प्राण अपहरण करने आये हो। अब तो तू बड़ा भोला भाला बोध होता है रात को ही छूरिका दिखाकर भयानक सिंह बना हुआ था। निस्सन्देह अब भी कोई न कोई शस्त्र तेरे पास अवश्य होगा, और कुछ नहीं तो रात वाली छूरिका तो अवश्य ही कहीं छिपी रक्खी होगी।" यह कहकर सेवकों ने पर्यवेक्षण पश्चात् भाई की कमर से छूरिका निकाल ली जो मांस काटने की थी।

छूरिका लिये हुये दोनों सेवक भाई को न्यायाधीश के पास ले गये यद्यपि भाई ने अनेक नय विनय कर दया की प्रार्थना की परन्तु कन्धों पर कोड़ों की मार का चिन्ह देख प्रकृत चोर समझ वहां से भी निर्वासन दन्ड मिला।

देर हो जाने से खलीफा पारितोषिक दे मुझे बिदा करने ही को था कि हठात् मैने पांचवे भाई की जीवन घटना इस प्रकार प्रारम्भ करदी।

नाई के पाँचवें भाई

अलंसचर की कथा

प्रभो मेरे पांचवें भाई का नाम अलंसचर था वह अति आलसी निरुद्यमी पुरुष था निर्लज्जता से भिक्षा मांग २ कर उदर पूर्ति करता था। जब हमारे पिता का स्वर्गवास हुआ तो पैतृक सम्पत्ति ७००) दिरहम में १००|१०० दिरहम परस्पर बांट लिये। परन्तु अलंसचर ने आजन्म १००) दिरहम पास न रक्खे थे वह सोच में पड़ गया इस अपार धन को किस व्यवसाय में लगाऊं।" निदान उसने कई कांच पात्र क्रयकर एक टोकरा में भर लिए और किसी सूचीकार की दुकान के पास बैठ विक्रय करने लगा।

अभी कोई पात्र नहीं बिका था कि भाई ने सूचीकार को सम्बोधन कर मनमोदक बनाना प्रारम्भ किया—"मैं यह सब पात्र २००) दिरहम को बेचूंगा फिर २००) के लेकर ४००) को बेचूंगा इस क्रम से थोड़े दिनों में ही मेरे पास चार सहस्र की सम्पत्ति हो जावेगी तब मैं रत्न पारखी बनूंगा अच्छे बहुमूल्य रत्न हीरा, पन्ना, मणि मुक्ता इत्यादि क्रय विक्रय करूंगा। इस प्रकार जब मेरे पास अधिक धन हो जावेगा तो मैं एक विशाल भवन निर्माण करा अनेक दास दासी घोड़े इत्यादि क्रयकर धनिकों की नाईं आनन्द से कालक्षेप करूंगा मेरी प्रशंसा सुनकर अच्छे २ गान्धर्व स्त्री पुरुष मेरे घर आया करेंगे जब मेरा व्यापार लक्ष मुद्रा का हो जायगा तो मैं महामन्त्री की पुत्री के संग विवाह का प्रस्ताव उपस्थित करूंगा यदि उसने स्वीकार कर लिया तो सचिव पुत्री को विवाह की रात को ही एक सहस्र मुद्रा दूंगा और १० सेवक क्रय करूंगा जो मेरे घोड़ेके आगे पीछे चलेंगे इस प्रकार राजसी ठाटबाट से मैं प्रधान मन्त्री के घर जाऊंगा। जब मैं सचिव के अन्तःपुर में प्रविष्ट होऊंगा तो प्रत्येक मेरा अतुल विभव देख बड़े शिष्टाचार से महामन्त्री के पास ले जावेंगे। मन्त्री अभ्यर्थना पश्चात् मुझे उच्चासन

पर बैठा स्वयम् कर बांध मेरे आगे बैठ जावेंगे । महामन्त्री मुझ जैसा धनी जामाता पाकर फूले अङ्ग न समावेंगे । तब मैं दो सहस्र मुद्रा महामन्त्री को देकर कहूँगा -- "एक सहस्र मुद्रा मेहर (यवनों की विवाह प्रथा) का है और एक सहस्र मुद्रा अपनी उदारतावश और अधिक आपको देता हूँ ।" निदान मेरी इस उदारता से सब ही परस्पर चर्चा करेंगे, नगर में ही नहीं वरन् समस्त वसुन्धरा में मेरा यश व्याप्त हो जायगा, अब मैं अपने घर लौट आऊँगा अतएव मेरी स्त्री सचिव सुता अपने किसी प्रधान को मेरे पास भेजेगी मैं प्रधान को उत्तम वस्त्र और पारितोषिक दे विदा कर दूंगा और यदि सचिव सुता प्रणय स्वरूप कुछ उपहार भेजेगी तो मैं स्वीकार न करूंगा और मैं क्षण क्षण नवीन स्वर्ण खचित बहुमूल्य वस्त्र धारण करूँगा । जब मैं सचिव सुता के सङ्ग सहवास करूँगा तो चुपचाप शय्या पर जा बैठूंगा किसी ओर भ्रूक्षेप न करूंगा । मेरी स्त्री वस्त्रालंकार से सुसज्जित मेरे सामने आकर खड़ी होगी परन्तु मैं शिर उठाकर भी न देखूंगा तब उसकी सहचरी मेरे पास शय्या पर बैठ जाने की आज्ञा मांगेगी परन्तु अनेक बार प्रार्थना करने पर भी मैं कुछ उत्तर न दूंगा तो वह समझेगी कदाचित नव वधू पूर्ण अलंकारों से शोभित नहीं है अस्तु वह शीघ्रता से पुनः शृङ्गार कर मेरे पास लावेगी परन्तु मैं पीठ फेरकर सो रहूंगा ।

प्रातःकाल उठकर सचिव सुता अपनी माता से मेरे अभिमान का उल्लेख करेगी अस्तु उसकी माता मेरे पास आकर चुम्बन कर कहेगी—"प्यारे जामाता, अपनी भार्या के प्रति उपेक्षा बुद्धिमानी से विरुद्ध है । बेचारी उपालम्भि, आपकी सेवा सुश्रुषा में कोई त्रुटि न करेगी वह प्राणों से अधिक आपको प्यार करेगी ।" निदान मेरी सासु अनेक नय विनय करेगी परन्तु मैं फिर भी मौन रहूंगा ।

अब मेरी सासु चरण स्पर्श कर कहेगी—'हे कामदेव के अवतार इस नवीन यौवन और सुन्दर वेष तथा पूर्ण चन्द्र के समान मुख वाली स्त्री के प्रति उपेक्षा आपको शोभा नहीं देती आप प्रसन्न हूजिये कहीं

आपके मौन रहने से बिचारी छोटी हरिणी के समान चंचल नेत्रों वाली रति की अनुहार नव वधू के चित पर आघात न पहुंचे।" इसी प्रकार अनेक प्रार्थना करेगी परन्तु मैं कुछ उत्तर न दूंगा। तब मेरी सासु सुगन्धित मदिरा पूरित स्वर्ण पात्र अपनी पुत्री को देकर मेरे पास भेजेगी।

मेरी स्त्री मदिरा पात्र लिये मेरे पास आ कांपते २ कहेगी "प्राणेश्वर अपराध क्षमा करो। सुन्दरता, कुलीनता, यौवन तथा और भी जिसमें गुण है ऐसी दासी को स्वीकार कर लीजिये। हे विभो! परस्पर मिले हुये जोड़े के सुरति क्रीड़ा के श्रम से निकलते हुये पसेव बिन्दु वक्ष:स्थल में पहिने हुये हार की शोभा को लज्जित करते मुक्ता फलों की प्रभा धारण करेंगे परन्तु मैं अब भी मौन रहूंगा जब वह कई बार कहेगी तो मैं एक थप्पड़ लगा ऐसी ठोकर मारूंगा कि वह नीचे जा गिरेगी।"

भाई मनमोदक बनाने में ऐसा लीन था कि सन्मुख रखे हुये टोकरे का उसे किंचित् ध्यान न रहा कहने के साथ ही पैर की ठोकर मारी तो टोकरा उलट गया और सब कांच पात्र टूट फूट गये।

सूचीकार निकट बैठा सब सुन रहा था। पात्र टूटे देख खिलखिलाकर हँस पड़ा—"ऐसी सुन्दरी युवती को तिरस्कृत किया, दुष्ट! तुझे यही दण्ड मिलना उचित था यदि महामन्त्री के स्थान में मैं तेरा श्वसुर होता तो १०० कोड़े और लगाता।"

भाई पात्र टूट जाने से शिर पकड़ कर बैठ गया उसका आर्त्तनाद सुन समस्त प्रतिवासी एकत्र होगए। भाई का क्रन्दन सुन कोई धनिक भार्या जो निवाज़ पढ़ने जा रही थी लौट पड़ी। दयाकर उसने भाई को पांच सौ मुद्रा प्रदान कीं।

अलंसचर धनिक भार्या को सहस्रश: धन्यवाद देता अपने घर चला गया वह अपने भाग्य को कोटि २ सराहता था। सहसा एक वृद्धा ने घर में पदार्पण कर कहा—"पुत्र निमाज का समय होगया है यदि

थोड़ा जल देदो तो मुख धोकर निमाज पढ़ लूं।"

भाई ने जल दे दिया वृद्धा नमाज पढ़ने में निमग्न हुई। भाई ने सब मुद्रा एक हिमयानी में भरकर कमर से बांध लीं।

वृद्धा निमाज समाप्त कर अनेक आशीष दे भाई के चरणों में गिर पड़ी। भाई ने दो मुद्रा उसे देनी चाही परन्तु उसने न लीं। भाई ने न लेने का कारण पूछा तो वृद्धा कहने लगी—"एक युवती रमणी मुझे बहुत देती लेती है आप देखेंगे तो विस्मित रह जायेंगे।"

भाई ने पूछा—"क्या मैं देख सकता हूँ।"

वृद्धा बोली—"देख ही नहीं सकते वरन् विवाह सकते हैं वह तुम जैसे प्रिय दर्शनीय पुरुष को देखकर मुग्ध हो जायगी। अतएव तुम अभी मेरे संग चले चलो।"

भाई मुद्रा कमर से बांध वृद्धा के संग चल दिया थोड़ी दूर चलने पश्चात् वृद्धा ने एक विशाल हवेली के द्वार को खटखटाया त्वरित एक ग्रीक युवती ने आकर द्वार खोल दिया अस्तु भाई को सम्मान पूर्वक वृद्धा आगे कर एक सुसज्जित भवन में ले गई।

प्रतीक्षा करते देर न हुई थी कि एक युवती रमणी वस्त्रालंकार से सुसज्जित भाई को दूसरे कमरे में ले जा प्रेम दर्शाने लगी—"मैं अभी आती हूं।" कहकर युवती भीतर चली गई।

भाई युवती के आने की प्रतीक्षा कर रहा था सहसा एक बलिष्ठ पुरुष खड्ग लिये विद्यमान हो कहने लगा—"यहां तेरा क्या काम ?"

भाई कुछ उत्तर न दे सका भय से थर २ कांपने लगा। आगन्तुक पुरुष तीव्र दृष्टि से घूरता भाई की ओर झपटा और नग्न कर कमर से हिमयानी खोल ली वरन् कई बार खड्ग प्रहार कर भाई को गिरा दिया।

भाई गिरकर निपतित हो गया श्वास गति मन्द पड़ गई बलिष्ट पुरुष ने समझा प्राणान्त हो गया अस्तु वह थोड़ा सा लवण घाव पर

मल चला गया। थोड़ी देर में वही राक्षस वृद्धा आई और भाई को घसीटकर एक गढे में डाल आई यद्यपि लवण से भाई को असहनीय वेदना सहनी पड़ी परन्तु उससे घाव भर आए रक्त श्राव बन्द हो गया कुछ बल का सञ्चार हुआ वह गढ़े से निकलकर कहीं छिप रहा और अवकाश पा रात्रि समय द्वार खोल बाहर निकल गया।

भाई मेरे पास आगया एक मास पश्चात् जब वह स्वस्थ हुआ तो अपना बदला लेने के अभिप्राय से एक बड़ी थैली ले उसमें कांच के टुकड़े भरकर अपनी कमर से बांध ली एक तीव्र छूरिका भी कहीं छिपाली तब बृद्धा स्त्री का रूप बना उस मानवी वेष में राक्षसी वृद्धा की खोज में निकला। सहसा एक गली में उससे साक्षात् हो गया।

भाई ने कण्ठ बदलकर वृद्धा से कहा—"यदि थोड़ी देर को कहीं से तराजू दिला दो तो आपका बहुत उपकार हो। मैं पारखी हूं अभी ही यहाँ आई हूँ। मेरे पास ५०० मुद्रा हैं मैं चाहती हूं तुला पश्चात् कहीं धरोहर कर दूं।"

मायावी वृद्धा ने कहा—"यहां तुम्हें मुझसे अधिक कोई विश्वस्त धार्मिक न मिलेगा मेरा पुत्र रत्न पारखी है। जैसी तुम्हारी इच्छा होगी तोल नाप देगा।"

निदान वृद्धा भाई को उसी पूर्व परिचित घर में ले गई इङ्गित पा वही ग्रीक युवती आ द्वार खोल गई घर में प्रविष्ट हो वृद्धा भाई को बैठा अपने पुत्र को लिवाने चली गई।

थोड़ी ही देर में वही राक्षस आ पहुंचा और प्रणाम कर नम्रता पूर्वक कहने लगा—"वृद्धा माई मेरे संग आओ निदान भाई राक्षस के पीछे २ चलने लगा जहां पूर्व में उसे आहत किया था। मार्ग में अवकाश पा भाई ने कपड़ों से छूरिका निकाल ऐसी गर्दन में मारी कि उसका सिर कटकर नीचे आ पड़ा।

शिर गिरने की आहट पा ग्रीक युवती कर्त्तव्यतानुकूल एक पात्र में लवण ले उपस्थित हुई परन्तु भाई को छुरिका लिये रौद्र रूप में देख

पात्र फेंक उलटी भागी। भाई के एक ही वार से ग्रीक युवती ने भी यमपुर पयान किया।

शव गढ़े में डालने के पीछे वही वृद्धा पधारी। भाई ने उसे पकड़ कर पूछा—"दुष्ट श्लाघ्नीया! क्या तू मुझे नहीं पहचानती देख? मैं वही हूं जिसके घर अमुक दिन जाकर तूने कपट नमाज पढ़ी थी।"

वृद्धा कम्पित शरीर से भाई के चरणों में गिर पड़ी परन्तु भाई ने किंचित दया न कर उसके चार खंड कर डाले।

किम्बहुना इन सबके मारने पश्चात् घर में केवल वही सुन्दरी युवती अवशिष्ट रही। भाई ने उसे भी खोज लिया यद्यपि रमणी भय से थर २ कांपने लगी परन्तु भाई ने सौहार्द्र कर उससे पूछा—"तुम किस प्रकार इनके पैशाचिक कांड में फंसी हो?

रमणी कहने लगी—"महाशय मैं एक सुप्रसिद्ध व्यापारी की गृहिणी हूं उक्त वृद्धा यदा कदा मेरे घर आया करती थी एक दिन कुछ वैवाहिक रीति सम्पादन के लिये मुझे यहां पिशाचपुरी में लिवा लाई। बस उसी समय से एक नार पिशाच ने मुझे बल प्रयोग कर अपने पास रख लिया है।"

भाई ने पूछा—"सुन्दरी! यहां कितना धन होगा?"

"कुबेर की नाईं अपार धन है।" यह कहकर सुन्दरी रमणी भाई को एक भवन में लिवा ले गई जहां अनेक बक्स रुपये तथा स्वर्ण-मुद्रा से परिपूर्ण रखे हुए थे।

भाई देखकर अति विस्मित हुआ। रमणी के कहने से भारग्राही लिवाने बाहर चला गया थोड़ी देर में १०-१२ मनुष्य अपने संग लिवा लाया परन्तु जैसे ही कि भाई ने घर में प्रवेश किया न तो कोई बकस मिला और न वह सुन्दरी ही, कोई अनुमान ५०० मुद्रा का सामान इधर उधर पड़ा था। भाई ने उसी को धन्य समझा सब भार करा अपने घर आया। प्रतिवासी भाई को अदालत ले जाते एवं सुनसान देख सब वार्ता न्यायाधीश से कह आये।

दूसरे दिन भाई प्रातः उठकर बाहर निकलने को था कि सहसा २०-२५ पुलिस कर्मचारियों ने आकर घेर लिया और बन्दी कर न्यायाधीश के पास ले गये ।

न्यायाधीश ने पूछा—"यह अटाला तुम कैसे लाये ।"

भाई ने समस्त कथा आद्योपान्त कह सुनाई परन्तु न्यायाधीश ने कुछ ध्यान न दिया क्रुद्ध हो भाई को नगर से निकलया दिया ।

भाई दुःखित हो और किसी नगर में बसने जा रहा था। परन्तु डाकुओं ने मार्ग में ही लूट लिया । पश्चात् बड़ी कठिनता से ढूंढ खोजकर मै भाई को घर लिवा लाया ।

नाई के छटे भ्राता—

शाह बकबक की कथा

राजन् ! मेरे छटे भाई का नाम शाहबकबक था उसकी ओष्ठ गति बिडाल के समान थी । प्रथम १०० दिरहमों से जो पैतृक सम्पत्ति से भाग मिला था, अधिक धन उपार्जन किया परन्तु पीछे निर्धन हो गया । उसने यह नियम कर रखा था कि धनिकों के सेवक द्वारपाल इत्यादि को वचन से धन से जैसे बनता सत्कार कर अपने अनुकूल कर लेता तब उसके स्वामी से मिलकर किसी न किसी मिस से बहुत धन मांग लेता ।

एक दिन भाई किसी के यहां गया । सेवकों से पूछने पर ज्ञात हुआ कि यह विशाल भवन बरमकी का है जो अति विख्यात कुवेर की नाईं धनाढ्य है । निदान भाई बरमकी के पास पहुंचा । सुरम्य पुष्पवाटिका तथा सुसज्जित भवन देख भाई अति विस्मित हुआ । सन्मुख वही बरमकी श्वेत दाढ़ी फुहराये उच्चासन पर विराज रहे थे ।

कुशल प्रश्न पश्चात् बरमकी ने भाई से पूछा—"क्या चाहते हो ?

प्रणाम कर भाई ने कहा—"मैं निराश्रय, दीनहीन..."

बीच में ही बात काटकर बरमकी ने कहा—"ओह हमारे होते

भी कोई दरिद्री रहे ! हमें स्वप्न में भी विश्वास न था ।"

भाई ने सौगन्ध देकर कहा—"प्रभो ! आज मैं प्रातः से निराहार हूं ।"

"यद्यपि मुझे तुम्हारी दशा देख दुःख होता है परन्तु विश्वास रक्खो अब तुम्हारे दुःख का अन्त होगया ।" यह कहकर बरमकी ने एक सेवक को जल लाने के लिये सम्बोधन किया । परन्तु हैं ! कोई जल लेकर आया नहीं और बरमकी इस प्रकार हाथ चलने लगा मानों कोई ऊपर से जल छोड़ रहा है ।

हाथ मलते हुए बरमकी ने भाई से कहा—'तुम भी हाथ धो डालो ।"

जिस प्रकार दीन जन धनिकों के चित्तरंजन मे धर्माधर्म का विचार नहीं करते उनकी हां मिलाना ही एकमात्र कर्त्तव्य समझते हैं इसी नियम का पालन करने में भाई भी झूठमूठ हाथ मलने लग गया, वरन् "भोजन उपस्थित हैं ।" कहकर बरमकी हाथ से ग्रास बना मुख में डालने और चबाने का पटपटा शब्द कर भाई से कहने लगा—"आओ तुम भी भोजन कर लो ।"

भाई क्षुधा से अति व्याकुल हो रहा था विषन्न होकर बोला—"मुझे क्षमा कीजे इस प्रकार कल्पना से उदरपूर्ति होना दुरूह है ?

बरमकी ने पूछा—क्या तुम्हें क्षीर स्वादिष्ट नहीं लगती ?"

भाई ने कहा—"क्षीर है न नीर ।" परन्तु बरमकी अप्रसन्न न हो वह भी मुख चलाने लगा।

बरमकी ने कहा—"छोकरे, दूसरे प्रकार के भोजन उपस्थित कर (भाई की ओर देखकर) आहा, क्या सुस्वादु भोजन हैं । इसी प्रकार बरमकी अनेक पदार्थों के क्रमशः नाम लेने और झूठमूठ आस्वादन करने पश्चात् अति प्रशंसा करने लगा कल्पित मदिरा भी पान करली ।

भाई भी बरमकी नाईं प्रशंसा कर कहने लगा—"क्या ही उत्तम भोजन है कि खाते-खाते मुख थक गया परन्तु पेट ज्यों का त्य शून्य है ।"

कल्पित मदिरा पानकर भाई ने दो बार बरमकी ओर हस्तक्षेप किया। तीसरी बार बरमकी ने भाई का हाथ पकड़ लिया। भाई ने हाथ जोड़कर कहा—"नशा से ऐसा हुआ क्षमा कीजे इसीलिए शास्त्र मदिरा पान का विरोध करती है।"

बरमकी हंसकर कहने लगा—"चिरकाल से मैं जैसे मनुष्य की खोज में था ईश्वर अनुकम्पा से आज तुम्हें पाया है। मित्र अप्रसन्न न होना मूर्खतावश इतना समय नष्ट नहीं किया इसमें भी कुछ रहस्य था। यह कहकर बरमकी ने सेवक को भोजन लाने की आज्ञा दी।

सेवकों ने वही भोजन जो बरमकी कल्पना कर चुकाथा उपस्थित किये। भाई ने सन्तुष्ट हो भोजन कर सुगन्धित मदिरा पान की। अब कई युवतियां वस्त्राभरण से सुसज्जित गीत वाद्य तथा नृत्य दिखाने लगीं।

भाई के सहवास से बरमकी अति प्रसन्न हुआ। नवीन वस्त्र मंगाकर भाई को पहिनवाये। वरन् थोड़े दिनों में ही भाई का पूर्ण विश्वास होगया।

बड़े आनन्द में बरमकी के पास उसके २० वर्ष बीत गये भाई ने अमित धन उपार्जन किया जो सब बरमकी के पास ही जमा कर रखा था। ईश्वर माया कि बरमकी रुग्ण हो स्वर्ग सिधारा। सन्तानहीन होने से उसका धन संपत्ति राजकोष के आधीन होगई। किम्बहुना भाई पूर्ववत् निर्धन होगया।

संयोगवश कुछ दिनों पश्चात् बहुत से यात्री मक्के की ओर जा रहे थे भाई भी उनके साथ हो लिया। मार्ग में बद्दू बटमारों ने यात्रियों को लूटकर अपना दास बना लिया।

भाई भी एक बद्दू का दास बना वह (इतना द्रव्य दे दे तो स्वतन्त्र करदें) कहकर अनेक कष्ट देने लगा। परन्तु—"मेरे पास कुछ नहीं है।" उत्तर पाकर बद्दू और अधिक उत्पीड़न करने लगा।

एक दिन भाई ने कहा—"चाहे प्राणान्त हो जावे परन्तु मेरे पास से कुछ हस्तगत न होगा मेरा कोई ऐसा सम्बन्धी अथवा मित्र

भी नहीं है जो याचित धन दे सके।

ऐसा उत्तर पाकर बद्दू अति क्रुद्ध हुआ छुरिका उठा भाई के दोनों ओष्ठ चीर दिये इस पर भी कठिन परिश्रम लेता रहा।

बद्दू जब लूट मार को जाता तो भाई को अपनी स्त्री के पास छोड़ जाता था। यद्यपि वद्दू भार्या भाई से अनुरक्त थी परन्तु भय से भाई उसकी कामेच्छा तृप्त न कर सकता था वह भाई को प्रसन्न करने की अनेक चेष्टा किया करती थी। एक दिन बद्दू रमणी ने अपने पति के आगे ही भाई की ओर प्रेम दृष्टि से देखकर कुछ संकेत किया। उसी समय से बद्दू को खटका होगया उसने समझा भाई ने उसकी स्त्री को दुराचारिणी बना दिया है। मेरी अनुपस्थिति में निस्सन्देह परस्पर काम क्रीड़ा सुख उपभोग करते होंगे। यह धारणा कर बद्दू भाई को खराबाद उच्च पर्वत शिखर पर छोड़ आया। परन्तु वहाँ से बुगदाद को जाने का मार्ग था। अनेक यात्री भाई की दरिद्रावस्था देख दयाकर कुछ भोजन इत्यादि दे दिया करते थे।

बहुधा पथिकों ने भाई की दुर्दशा मुझसे वर्णन की अस्तु मैं बड़े यत्न और कष्ट से पर्वत शिखर पर पहुँच भाई को घर लिवा आया।

सम्राट खलीफा हारूं रशीद कथा सुनकर अति प्रसन्न हुआ और पारितोषिक दे मुझे बिदा किया वरन् 'मौनी' उपाधि से विभूषित कर यह आज्ञा दी—"अब तुम इस नगर में न रहो।"

निदान् मैं दूसरे नगर चला गया अब जब सुना खलीफा ने संसार यात्रा की तो मैं पुन- बुगदाद में आया परन्तु शोक इस अवसर में मेरे भाई भी सब स्वर्ग सिधार गये किसी से साक्षात् न हुआ केवल इस पंगु युवक की सेवा सुश्रूषा में ही दत्त चित्त हुआ था परन्तु मेरा सत्कार करने के स्थान में उपेक्षा करने लगा। ओह ? मुझे बहुभाषी ठहराता है।"

सूचीकार ने सम्राट काशगार से कहा—"प्रभो ! नाई की कथा सुनकर भोजन आस्वादन पश्चात् मैं अपनी दुकान पर चला आया।

सायं समय दुकान बढ़ाकर घर जाना चाहता था सहसा उक्त कुब्ज ने दुकान के आगे बैठकर मृदंग बजा अलापना प्रारम्भ किया । तानलय सङ्गीत ध्वनि चित्त में समा गई । मैं उसे अपने घर लिवा ले गया । उस दिन मेरी स्त्री ने मछली पकाई थी । जैसे ही कि कुब्ज खाने लगा अचेत होकर धड़ाम से नीचे गिर पड़ा यद्यपि मैंने सचेत करने के अनेक उपाय किये परन्तु सब विफल मनोरथ । अतएव मैं भयभीत हो कुबड़े को पीठ पर लाद यहूदी वैद्य के द्वार पर छोड़ आया । वैद्य ने उसे मोदी के यहां और मोदी ने बाजार में ले जा एक दुकान के सहारे खड़ा कर दिया ।

काशगराधिपति सूचीकार की कथा सुनकर अति प्रसन्न हुआ उसने कहा—"शीघ्र उस नाई को उपस्थित करो ।"

आज्ञानुसार थोड़ी देर में उस मौनी नाई को उपस्थित किया गया ।

सम्राट काशगार ने नाई से कहा—"मैंने सुना है तुझे अनेक विचित्र गल्प कण्ठस्थ है । कुछ हमें भी सुनाओ ।"

"यदि आज्ञा हो तो पहिले कुबड़े का शव निरीक्षण कर लूं ।" यह कहकर नाई बड़े ध्यान से शव देखनेलगा कभी नाड़ी और कभी कंठ क्रमशः देखने पश्चात् अट्टहास कर कहने लगा—"राजन् ! कुब्ज अभी जीवित है ।

नाई ने बक्स खोल ग्रीवा पर तैल मर्दन कर जबड़े में से मछली का कांटा खींच लिया । थोड़ी देर में कुब्ज छींका हाथ पैर इधर उधर चलाने लगा ।

कुब्ज ने नेत्र खोल प्रणाम किया । सम्राट नाई की बुद्धिमता से अति प्रसन्न हुआ वरन् उसी दिन से उचित मासिक वेतन नियत कर दिया । बिचारे मोदी, वैद्य और फिरंगी सन्मान पूर्वक स्वतन्त्र कर दिये गये ।

शहरजाद कुब्ज की कथा कहकर मौनावलम्बित हुई सम्राट शहरयार और दुनियाजाद ने बहुत प्रशंसा की ।

शहरजाद कहने लगी—"कल मैं अबुलहसन, बुकारमज तथा

शम्सुन्नहार प्रेयसी सम्राट खलीफा हारूं रशीद के प्रणय की कथा वर्णन करूंगी आशा है उसे सुनकर आप अति प्रमुदित होंगे।"

अबुलहसन और शम्सुन्नहार के—

प्रणय की कथा

सम्राट खलीफा हारूंरशीद के शासन समय बगदाद नगर में ताहिरात्मज अबुलहसन नामक गन्धवणिक धनवान तथा सदाचारी बास करता था। उसकी सौजन्यता से सम्प्रति वहां के खलीफा के अन्तःपुर की राज महिषी परिचारिकाओं द्वारा पन्नगवर नीलमणि इत्यादि रत्न और वस्त्राभूषण इसी गन्धवणिक से क्रय विक्रय किया करती थी।

अनेक नागरिक धनिकों के अतिरिक्त बुकात्मज अबुलहसन जो ईरान का राजकुमार था अधिक सौहार्द रखता था। पहरों गन्धवणिक के पास बैठा रहा करता था वह अति सौन्दर्य वयस्क देखने में दूसरा कामदेव प्रतिभान होता था जो कोई उसे देखता मुग्ध हो जाता था सुन्दरता के अतिरिक्त राजकुमार गान्धर्व विद्या तथा कवित्व में अति कुशल था वह जब गाता था मधुर कंठस्वर प्रत्येक के कर्ण कुहर में सुधा बरसाने लगता था।

एक दिन राजकुमार गन्धवणिक की दुकान पर बैठा था कि सहसा एक रमणी खिच्चर पर सवार अनेक दास दासियों के संग दुकान पर आकर बैठ गई सुन्दरी के लावण्य माधुर्य को कहां तक वर्णन किया जावे वह वास्तव में असामान्या सुन्दरी युवती थी। राजकुमार ने मखमल मण्डित एक तिपाई युवती के श्रीचरणों के पास बिछा दी और बड़ी सभ्यता से प्रणाम कर पास बैठ गया सुन्दरी ने मुख से पट हटा दिया था वह सुन्दरी को देखते ही आसक्त होगया। रहै सदा विकसित विमल धरै वास मृदुमंजु। उपज्यो नहिं पुनिपंक से प्यारी को मुख कंजु। समस्त शरीर की क्या प्रशंसा की जावे वह अकथनीय है प्रति

कठोर कुच कलश सम मुखश्यामता सुभाय । मनो भस्म कर मयन को बैठे ईश चढ़ाय ।

उधर सुन्दरी का मन भी राजकुमार को देखते ही हाथ से जाता रहा था। कदाचित् काम विवश हो कोई अनुचित घटना संघठित होजावे इस भय से सुन्दरी ने गन्धवणिक से राजकुमार का नाम ठाम पूछने पश्चात् प्रार्थना को कि "जिस प्रकार हो सके राजकुमार से भेंट करा दो यदि तुम मेरी दासी के संग २ राजकुमार को अन्तःपुर में लिवा लाओगे तो में तुम्हारी आजन्म चिरकृतज्ञ रहूंगी । यह कहकर सुन्दरी ने राजप्रासाद की ओर पयान किया ।

सुन्दरी के चले जाने पश्चात् राजकुमार की बुरी दशा होगई वह अधीर हो विगत मद मतवारे की नाईं एक टक उधर ही देखता रहा यह दशा देख गन्धवणिक ने बहुत समझाया परन्तु राजकुमार ने कहा—,'सुन्दरी की कमनीयता ने इस योग्य नहीं रक्खा जो संतोष कर मौन धारूँ ।"

"अरे भाई, यह सम्राट खलीफा की परम प्रणयिनी है इसका नाम शमसुन्नहार है । इसे पाना बारिधि बिन्दु पकड़ कर आकाश चढ़ जाने की आकाँक्षा के समान है ।' निदान गन्धवणिक ने राजकुमार को अनेक प्रकार समझा बुझा सन्मार्ग पर लाने की चेष्टा की परन्तु सम्मोहारस्मृतिविभ्रम: प्रेमका प्याला पीकर जो मतवाले होते हैं उन्हें विवेक कहां ? वर्द्धित प्रेम में स्त्री पुरुष दोनों की समान दशा हो जाती है जिस प्रकार चिकने घड़े पर पानी की बूंद नहीं ठहरती उसी प्रकार कामी राजकुमार ने कुछ ध्यान न दिया सहसा शम्सुन्नहार की भेजी दासी दोनों को लिवाने आगई ।

राजकुमार और गन्धवणिक दासी के संग २ अन्तःपुर में पहुंचे । दासी ने दोनों को एक सुसज्जित प्रमोद भवन में जा बिठाया जो इन्द्र के नन्दन कानन के समान स्वर्ग जान पड़ता था । कमरे की स्वच्छता एवम् सुघराई देख शम्स की सुरुचि और विलासता का भली भांति परिचय मिलता था ।

थोड़ी देर में एक रत्न जटित सिंहासन जो इन दोनों के पास ही बिछाया हुआ था, शम्स प्रणाम कर उसी पर आ विराजी। विह्वलता से राजकुमार के मुख से कोई शब्द न निकला। शम्सुन्नहार ने मगला-मुखी सहचरियों को कोई प्रणय गीत गाने की आज्ञा दी।

सहचरियों के एक साथ कंठ मिला नृत्य करते हुए प्रणय पद गाने की मधुर ध्वनि ने राजकुमार का मन और अधिक उत्तेजित कर दिया।

पद का ठीक हमसे सादृश्य है।" मृदुमधुर कंठ से सम्सुन्नहार ने कहते हुये यौवनाभार से लबालब भरे हुये नील कमल जैसे नेत्रों से राजकुमार के प्रणयोन्मत्त सुन्दर मुख मंडल पर दृष्टि डाली।

राजकुमार ने दीर्घनिश्वास त्याग बीन के तार छेड़ वीणा विनन्दित कण्ठ से गाना प्रारम्भ किया। ताल-लय संयोग संगीत लहरी घर में गूंजने लगी। गले में उतार चढ़ाव का कभी मध्यम में पहुंचना और कभी पंचम तक स्वर खींच ले जाना मधुवर्षण करता हुआ शम्स के हृदय को आकुल करने लगा। धीरे २ वह संगीत राजकुमार के श्री कण्ठ में लीन हो गया।

राजकुमार के प्रसन्न करने को शमसुन्नहार ने बीन के तारों पर अपनी चम्पे जैसी उंगलियां चलाते हुये सुरवंधी सप्त स्वरा सुमधुर बीन पर झंकार दी पुनः कोमल और करुणा भरे स्वर में गीत अलापा. पर्दे २ तार २ और जोड़ मोड़ मे उसका कण्ठ मिल गया। शम्स का अमृत भरे कण्ठ से निकलता हुआ गीत सर्वत्र सुधा की धारा बहाते हुये राजकुमार को उन्मत्त करने लगा। अब क्रमशः कोमलतर कल कण्ठ में बिलीन होगया।

शम्स के गुलाबी गाल मानों प्रेमी राजकुमार से चूमे जाने की आशा से लाल भभूका हो रहे हैं वह किंचित मुस्कुराहट के साथ प्रेम राग रञ्जित लाल २ फड़कते हुये होठों के भीतर से मोतियों की पंक्ति जैसी दन्तावली की उज्वल शोभा दिखाते हुये राजकुमार का हाथ पकड़े

दूसरे कमरे में लिवा लेगई। दोनों हीं काम पिपासा से एक दूसरे को गाढ़ालिगन कर अचेत हो गए।

सहचरियों ने अर्क बेद मुश्क इत्यादि प्रयोग कर सचेत किया।

गन्धवणिक सोचने लगा—"यदि खलीफा ने सुन पाई तो हम दोनों को शम्स सहित अभी यमपुर पहुंचा देगा।" सहसा राजकुमार और शम्स ने आकर अनेक धन्यवाद दिये।

अब सबने मिलकर भोजन किया मदिरा पी हठात् एक सहचरी ने आकर कहा—"महाराज का भेजा दूत मसरूर बाहर खड़ा आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।"

यद्यपि राजकुमार और गन्धवणिक दोनों दूत का नाम सुनकर अति विषण्ण हुये परन्तु शम्स ने धैर्य देकर उन्हें निकटस्थ बारहद्वारी में निर्भीक बैठा—मसरूर को बुलाया।

मसरूर ने प्रणाम कर कहा—"महाराज ने अभी आपको देखने की उत्कट इच्छा प्रकट की है आपकी क्या आज्ञा है!"

"महाराज से कहना मैं श्री चरणों की दासी हूं इस प्रकार याद करना मेरे लिये परम सौभाग्य की बात है। यह कहकर शम्स ने सेवकों को बिछवना इत्यादि ठीक करने की आज्ञा दी।

शम्स अश्रु पात करते राजकुमार के पास पहुंची। यह दृश्य देख दोनों ही भय से कांपने लगे सहसा एक सहचरी ने सम्राट के आने की सूचना दी! शम्स ने दीर्घ निःश्वास त्याग उक्त सहचरी को आज्ञा दी—"अमुक उद्यान के टकरस तटस्थ पार्श्व में ले जाकर बहुत सावधानता से इन्हें बाहर निकाल आ" यह कहकर राजकुमार को गले से लगा विदा किया और स्वयम् सम्राट के लिये दूर तक चली गई।

सहचरी राजकुमार को सान्त्वना देकर बाहर देखने चली गई इस अवसर में खलीफा उसी सिंहासन पर आकर बैठ गया! कई मंगलामुखी गणिका वियोगान्त पद सुनाने लगीं।

पद सुनकर शम्स विह्वल होगई सम्भव था वह गिर पड़ती

परन्तु कई सहचरियों ने संभाल लिया । उधर राजकुमार भी यह सुनकर अचेत हो गया अर्क इत्यादि प्रयोग करके राजकुमार को सचेत किया । अब सहचरी दोनों को उक्त भवन में ले जाकर करतल ध्वनि करने लगी हटात् एक छोटी सी नौका किनारे आ लगी ।

दोनों ही पार होगये परन्तु राजकुमार ऐसा आसक्त हो गया था जो घर तक पहुंचना असम्भव था । निदान गन्धवणिक राजकुमार को निकटस्थ अपने किसी मित्र के यहां लिवा लेगया ।

मित्र ने दोनों को व्याकुल देख कारण पूछा अस्तु गन्धवणिक ने बात बनाकर कहा—"एक मनुष्य मेरा ऋणी है आज वह यहां से भागने वाला था उसी की खोज में मैं यहाँ आया था मार्ग में यह महाशय मिल गये यद्यपि इनके कारण मुझे बहुत सुविधा रही परन्तु न जाने कैसे दैवात् रुग्ण हो गये घर पहुंचना कठिन हो गया अतएव तुम्हारा घर निकट पाकर रात बिताने के लिये यहां चले आये हैं । कदाचित् तुम्हें हमारे कारण कुछ कष्ट न उठाना पड़ेगा ।"

निदान गन्धवणिक ने दोनों को एक कमरे में सोने का प्रबन्ध कर दिया । प्रातः ही गन्धवणिक ने अपने घरको पयान किया और दो दिन पर्यन्त राजकुमार को अपने यहां रख इसके घर भेज दिया ।

घर पहुंचकर वियोग में राजकुमार की बुरी दशा हो गई विक्षिप्त की नाईं, दिन रात में बीसों बार अचेत हो जाया करता था ।

उधर शम्स भी वियोगाग्नि में जलती थी एक एक पल पहर समान भान होता था । निदान दोनों ही विरह ज्वाला से दग्ध जीवन्मृत दशा में थे ।

गन्धवणिक ने सोचा यदि खलीफा ने सुन पाई तो मेरे प्राणान्त में कुछ सन्देह नहीं फिर न जाने मेरे पुत्र कलत्र पर क्या विपत्ति आवे । इसी चिन्ता में निमग्न था कि उसके एक मित्र रत्नपारखी ने आकर पूछा—"शमसुन्नहार की सहचरी तुम्हारे पास बहुत आया करती है ।"

पहिले तो गन्धवणिक ने काम काज को आती है कह कर टाल दिया परन्तु रत्न पारखी ने विश्वास दिलाया तो उसने शम्स और राजकुमार के प्रणय का रहस्य कह सुनाया । मैं मध्यस्थ हूं दोनों के पत्र इत्यादि मेरे द्वारा ही आते जाते हैं इस कारण मुझे प्रति समय खलीफा का भय रहा आता है, विवश हो घर छोड़ मैं आज बांसर जाता हूँ ।

दूसरे दिन रत्न पारखी ने देखा गन्धवणिक दुकान बन्द कर चला गया तब उसे राजकुमार की आद्रावस्था पर दया आई । वह राजकुमार के पास पहुंच विश्वास दिला कहने लगा—"मैं आपकी सेवा सुश्रूषा में अपना परम सौभाग्य समझूंगा आप मुझे गन्धवणिक की नांई मित्र पावेंगे ।" सहसा शम्स की भेजी दूती राजकुमार के पास आई । रत्न पारखी वहाँ से हट गया ।

राजकुमार बड़ी देर तक दूती से बातें करता रहा । दूती को विदाकर उसने रत्न पारखी से कहा—"न जाने क्यों दूती को तुम पर सन्देह हुआ है वह कहती थी कि तुम्हीं ने गन्ध वणिक को यहां से भगाया है ।"

निदान रत्नपारखी सन्देह दूरकर राजकुमार को समझा बुझा अपने घर चला आया । दूसरे दिन वही दूती शम्स का पत्र लिये जा रही थी वह मार्ग में गिर पड़ा । दूती पत्र खोजती आरही थी उसने देखा रत्न पारखी उसी पत्र को पढ़ रहा है किम्बहुना थोड़ी देर के वार्त्तालाप में दूती और रत्न पारखी भी परस्पर विश्वास पात्र बन गये ।

दूती राजकुमार से पत्र का उत्तर ले रत्न पारखी को दिखा शम्स के पास पहुंची ।

शम्स ने रत्न पारखी को देखने के लिये महल में बुलाया परन्तु वह भय से जा न सका अस्तु शम्स स्वयम उसके घर आ अनेक धन्यवाद दे चली गई ।

रत्न पारखी राजकुमार के पास पहुंचा और समस्त वृन्तान्त कह सुनाया। राजकूमार अति प्रसन्न हुआ उसने शम्स के दर्शनों की अत्याकांक्षा प्रकट की सहसा उसी समय दूती आ गई। रत्नपारखी ने राजकूमार की वियोग पीड़ा वर्णन की।

"शम्स राजकुमार से अधिक उत्पीड़ित है उसने सायं समय रत्न पारखी के घर आने को कहा है।" यह कहकर दूती भोजन, मदिरा आदि सामिग्री एकत्रित करने को एक थैली स्वर्ण मुद्रा रत्न पारखी को दे लौट गई।

रत्न पारखी ने सोने चांदी के पात्र बिछावन इत्यादि प्रतिवासियों से मांग घर सुसज्जित कर दिया। राजकुमार क्षौर उबटन गन्ध लेपन इत्यादि से निवृत्त हो शम्स की प्रतीक्षा करने लगा।

सायं समय शम्स अपनी परिचारिकाओं सहित उसी मकान में आ गई दोनों प्रेमी एक दूसरे को असंख्य चुम्बन और गाढ़ालिंगन कर अति सुखी हुए। थोड़ा २ भोजन करने पश्चात् मदिरा पी आमोद-प्रमोद में निमग्न हुए सहसा एक सेवक ने भागकर रत्नपारखी के कान में कुछ कहा।

रत्नपारखी ने बाहर की ओर देखा एक सौ अश्वारोही खड्ग लिए द्वार पर खड़े हैं वह भयभीत हो प्रतिवासी के घर कूद पड़ा।

अर्द्ध रात्रि पर्यन्त रत्नपारखी का घर लुटता रहा। जब सन्नाटा छा गया तो रत्न पारखी अपने घर में आया एक सेवक वहां मिला उससे भीषण घटना का कारण पूछा।

सेवक ने दुःखित हो कहा—"प्रभो यह सब डाकू थे कई दिनों बीते जब इसी प्रकार अमुक मुहल्ले में इन्होंने डाका डाला था!"

रत्न पारखी ने भीतर प्रवेश कर देखा सब कुछ लुट जाने के अतिरिक्त राजकुमार और शम्स का भी कहीं पता नहीं है। यह दृश्य देख रत्न पारखी का शिर घूमने और पैरों के नीचे धरती चक्कर देने लगी "गन्धवणिक ने बड़ा अच्छा किया जो बांधके चला गया मैंने स्वयं

विपत्ति का आह्वान किया है देखिये परिणाम कितना भयंकर नहीं होता" यह कह अश्रु धारा से अपना वक्षःस्थल भिगोने लगा।

रत्न पारखी को अश्रु बहाते देख सेवक ने कहा—"राजकुमार और शम्स सम्भवतः अपने २ घर पहुंच गये होंगे रहा माल वह डाकुओं की भीषणता देख प्रतिवासी भी कुछ न कहेंगे।

प्रातः ही प्रतिवासी एकत्रित हो अनेक सान्त्वना देने लगे सहसा सेवक ने आकर कहा—"कोई मनुष्य आपसे भेंट करने को बाहर खड़ा है।" निदान रत्न पारखी सबको विदाकर बाहर आया।

नवागत् ने प्रणाम कर कहा—"मुझे कुछ प्रार्थना करनी है यदि थोड़ी दूर मेरे संग चलने का कष्ट करें।" रत्नपारखी नवागत के पीछे हो लिया वह कई गलियों में घूम फिर टकरस के तट पहुंचे। तब एक नौका द्वारा पार हो अति संकीर्ण गली में पहुंचे। थोड़ी दूर चलने पश्चात् एक द्वार खुला नवागत् रत्न पारखी को भीतर कमरे में लिवा ले गया जहां दस बारह मनुष्य विकटाकाय बैठे हुए प्रतीक्षा कर रहे थे।

उचित अभ्यर्थना पश्चात रत्नपारखी को उच्चासन पर बैठा एक प्रधान ने पूछा—"तुमने कभी हमें पहिले भी देखा है।"

रत्नपारखी ध्यानपूर्वक देखकर कहा—"नहीं नहीं मैंने कभी नहीं देखा।

प्रधान ने पूछा—"क्या तुम अपनी गत रात्रि की घटना सुनाने की कृपा करोगे?"

रत्न पारखी ने कहा—"आपने कैसे जाना।'

प्रधान बोला—"हम ही आपका माल अपहरण करने वाले डाकू हैं परन्तु न जाने क्यों आपके यहां से लाये हुए युवा दम्पत्ति को देख हृदय द्रवित होता है अस्तु उनका वृत्तान्त जानने की बड़ी उत्कण्ठाकांक्षा है।'

रत्नपारखी ने कहा—"युवक पारस देशीय राजकुमार और युवती शम्सुन्नहार खलीफा की परम प्रणयिनी है।"

शम्सुन्नहार का नाम सुनकर डाकू अति विस्मित हुए वे सब राजकुमार और शम्स के पैरों में गिर कहने लगे—"स्वामिन हमें क्षमा करो हमने आपको पहिचाना नहीं अन्यथा इतनी धृष्टता आपके प्रति न होती आशा है आप क्षमा करेंगे।'

डाकुओं ने सब माल जो लूट लाये थे रत्नपारखी को लौटा दिया और राजकुमार शम्स तथा रत्नपारखी को सन्मान पूर्वक टकरस के पार उतार आये।

तीनों बड़े आनन्द से चले जा रहे थे कि सहसा कई अश्वारोही सैनिकों ने आकर बीच में घेर लिया और बन्दीगृह को ले चले परन्तु प्रधान सैनिक ने शम्स को पहिचान बड़े आदर से अन्तःपुर भेज दिया और राजकुमार तथा रत्नपारखी अपने अपने घर चले गये।

रत्नपारखी के स्त्री पुत्र अति दुःखी थे वे उसे सकुशल पाकर अति प्रसन्न हुए परन्तु घर पहुंचकर राजकुमार की बुरी दशा हो गई।

तीसरे दिन रत्नपारखी अपने किसी मित्र के यहां से लौटा आ रहा था कि मार्ग में शम्स की सहचरी से साक्षात् होगया।

सहचरी रत्नपारखी को एक भग्नावशेष मसजिद में ले गई और और शम्स का सब वृत्तान्त कहकर राजकुमार की कुशल पूछने लगी।

रत्नपारखी ने कहा—"राजकुमार सकुशल है परन्तु शम्स की स्मृति उसे विह्वल किये देती है।"

"शम्स ने डाकुओं द्वारा जो तुम्हारी क्षति हुई है बहुत पश्चात्ताप किया है। सहायतार्थ दो सौ मुद्रा भेजी हैं आशा है आप स्वीकार करेंगे।' निदान सहचरी रत्नपारखी को दो थैली देकर बिदा हुई।

रत्नपारखी राजकुमार के पास पहुँचा। देखा दो दिन से राजकुमार ने आहार परिमित नहीं किया मलमूत्र परिष्कार को भी शय्या से नहीं उठा उसे बड़ा दुःख हुआ कई बार सम्बोधन करने पर राजकुमार ने नेत्र खोल धन्यवाद दे कहा—"मेरे कारण आपको बहुत कष्ट सहना पड़ा परन्तु हृदयेश्वरी शम्स की भी कुछ कुशल मिली है।"

"वह आनन्दपूर्वक है।" यह कह रत्नपारखी ने बड़े आग्रह से

राजकुमार को जलपान कराया और सान्त्वना देकर घर लौटा आ रहा था कि मार्ग में वही सहचरी मिली ।

सहचरी की मुखच्छवि अति मलीन थी कास रोगी के समान श्वास चल रहा था उसने दीर्घ निश्वास त्याग कर कहा—“भाई जितनी शीघ्र हो सके तुम इस नगर से भाग जाओ क्योंकि शम्स ने अप्रसन्न होकर अपनी एक परिचारिका को निकाल दिया था न जाने उसने खलीफा से क्या कह दिया कि बीस सशस्त्र सैनिक भेजकर शम्स को पकड़वा बुलाया है अब न जाने शम्स जीवित है अथवा खलीफा ने उसको मरवा डाला मैं तुम्हें सूचित करने भागी आई हूँ।

रत्नपारखी यह दुःख सम्वाद पा स्तम्भित रह गया वह दौड़ा हुआ राजकूमार के पास पहुंचा और समस्त घटना कह सुनाई ।

राजकूमार वज्राहत की भांति स्तम्भित रह गया उसने पूछा—अब क्या करना चाहिए ?”

‘केवल एक उपाय है शीघ्र यहां से अम्बाज की ओर भाग चलें नहीं कोई घड़ी में खलीफा हमें पकड़वा कर निर्दयता से बध करा देगा” यह कहकर रत्नपारखी ने शीघ्र भाग चलने का अनुरोध किया ।

राजकूमार ने उसी क्षण घोड़े मंगवा और बहुत सा धन रत्नपारखी को बंधवा अम्बाज की ओर पयान किया । वे एक दिन और रात बराबर चला दिये । दूसरे दिन मध्यान्ह के समय थोड़ी देर विश्राम लेने सघन वृक्षों के नीचे ठहर गये सहसा डाकुओं ने आकर सब लूट लिया राजकुमार के साथी सेवक सब मारे गये । वरन् रतनपारखी और राजकुमार के शरीर से वस्त्र उतरवा दिगम्बर रूप बना गये ।

राजमारकु ने विपन्न होकर कहा—“मुझ जैसा अभागा संसार में कोई विरला ही होगा यदि आत्मघात पाप न होता तो मैं अभी हृदय में छुरिका भोंक लेता ।”

रत्नपारखी ने आश्वासन देकर कहा—“नहीं २ ऐसा कदापि न सोचना चाहिये । ईश्वरेच्छा सम्भव है इसी में कुछ भलाई हो ।”

निदान राजकुमार अश्रु बहाते और रत्नपारखी सान्त्वना देते निकटस्थ मसजिद में आ पड़े ज्यों त्यों कर प्रभात हुआ।

प्रातः ही कोई मनुष्य नमाज पढ़ने आया एक कोने में इन्हें बैठा देख प्रणाम कर परिचय लेने लगा।

रत्नपारखी ने कहा—"हम बुगदाद रहिवासी पथिक हैं मार्ग में डाकुओं ने सब कुछ छीनकर हमारी यह दुर्दशा की है।"

आगन्तुक ने कहा—"घबराओ नहीं मेरे घर चलो आप......।"
रत्नपारखी ने कहा—"हम नग्न है कैसे चलें।"

निदान आगन्तुक ने थोड़ा सा भोजन और दो दुपट्टा भेज दिये दुपट्टा ओढ़कर दोनों आगन्तुक के यहां जा रहे।

दो चार दिनों में ही राजकुमार की बुरी दशा होगई उसने रत्नपारखी से कहा—"मित्र आज मेरे अन्तिम समय है तुम साक्षी हो शम्स का नाम लेले कर ही मैं अबतक जीवित रहा हूं सब आपदा सुखकर समझी है केवल इतना पश्चाताप है कि मैं अपनी माता के दर्शन न कर सका। प्राणान्त पश्चात् तुम मेरी माता से जाकर कहना मरने के पूर्व तुम्हारे अभागे पुत्र ने यह इच्छा प्रकट की है कि उसका अन्तिम संस्कार बुगदाद में किया जावे।" यह कहकर राजकुमार ने सदैव को नेत्र बन्द कर लिये।

रत्नपारखी रोता धोता बुगदाद आया और राजकुमार के प्राणान्त का दुखद सम्वाद उसकी माता को पहुँचा उसकी इच्छा कह सुनाई।

पुत्र शोक से संतप्त बेचारी दुखिया माता से पुत्र शव लेने अम्बाज की ओर पयान किया। रत्न पारखी अपने द्वार पर वायु सेवनार्थ टहल रहा था कि दुखिनी बाला लोहित वस्त्राच्छादित उसके पास आई। ओह! यह पूर्व वही परिचिता शम्स की सहचरी है।

रत्न पारखी सहचरी को अपने घर लिवा ले गया और शम्स के वियोग में राजकुमार के प्राणान्त की भीषण घटना कह सुनाई!

सहचरी बहुत देर तक शोकित राजकुमार को स्मरण कर क्रंदन तथा शम्स के प्राणत्याग की दुखद घटना वर्णन करने लगी—"जब खलीफा ने शम्स को पकड़वा बलाया तो वह अति विषन्न हुई उसका विलाप देख खलीफा का हृदय द्रवित होने लगा। उसने बड़े प्रेम से शम्स को कण्ठ लगा लिया। निदान बड़े आदर से शम्स अन्त:पुर में आ गई। यद्यपि शम्स मुझसे कह चुकी थी राजकुमार के वियोग में मेरा जीवित रहना अति दुरुह है परन्तु खलीफा ने रुग्णा जान सुयोग्य राजवैद्य द्वारा औषधि सेवन कराई दूसरे दिन चित्त बहलाने के लिये स्वयम् खलीफा अनेक गायन परिचारिकाओं को संग लिये शम्स के पास आया।

शम्स मनोवेदना से अति विह्वल हो रही, थी खलीफा ने प्रेम पूर्वक उसे अङ्क में ले लिया। परन्तु शोक कि उसका शरीर शिथिल होगया। नेत्र ज्योति मन्द पड़ गई। धीरे २ श्वांस की गति मन्द होकर शरीर शान्त हो गया। कदाचित् गाने के प्रभाव से अचेत हो गई यह समझ अनेक चेष्टा की, परन्तु उसने सदैव को नेत्र मूंद लिये सचेत न हुई।

खलीफा ने दु:खित हो सब बाजे तुड़वा दिये आह, थोड़ी देर में ही आर्त्तनाद से वह प्रमोद भवन किरात पुरी दर्शने लगा। खलीफा ने अन्त:पुर के बाहर शम्स को समाधिस्थ किया है मेरी इच्छा है जब राजकुमार का शव यहां आ जावे तो उसे भी समाधि मंदिर में गड़वा दिया जावे जो दोनों प्रेमियों की समाधि पास २ रही आवे।"

रत्न पारखी ने कहा—"भला, उसमें कैसे राजकुमार का अन्त्येष्टि संस्कार हो सकता है?"

सहचरी ने विश्वास दिलाया—"नहीं २ कुछ बाधा नहीं है मैं ही उस समाधि मंदिर की प्रधान रक्षिका हूं आप निस्सङ्कोच राजकुमार को वहां दफन भूमिगत कर सकते है।"

निदान दोनों प्रेमियों की समाधि बराबर ही बनादी गई अब

जो कोई भी वहां आता है उनकी प्रेम कथा सुन समाधि के दर्शन करने अवश्य जाता है और दोनों की आत्मा के शांत्यर्थ भगवान् से अनेक प्रार्थना करता है।

सम्राट ने उक्त प्रेम कथा सुनकर अति प्रशंसा की, तब शहरजाद कहने लगी—"प्राणेश्वर ! कल मैं आपको युवराज कमरुज्जमां के प्रणय की अद्भुत कथा सुनाऊँगी तब आप प्रसन्न होंगे।"

युवराज क़मरुज़्ज़माँ के
प्रणय की कथा

फारस नदी से कोई बीस कोस दूर अति प्रसिद्ध चेल्डर्न खाल्दान नामक द्वीप था जिसमें अनेक जन पूरित उत्तम नगर और सघन वृक्ष वेष्टित उद्यान इत्यादि अति रमणीक थे। पूर्व में वहां सम्राट शाहजमां शासन करता था उसकी चार विवाहित तथा सात अविवाहित स्त्रियां थीं धन, जन, बल आदि किसी शक्ति की कमी न थी परन्तु सबसे अधिक दुख यह था कि सम्राट अपुत्रक था। एक दिन उसने अपने मन्त्री से विषन्न होकर कहा—"आह मेरे पीछे इस विस्तीर्ण राज्य का कोई उत्तराधिकारी नहीं।"

मन्त्री ने सान्त्वना देकर कहा—"तत्पर ह्वै ईश्वर आराधे, पुत्र कलत्र सुख संपति साधे। आप हृदय से भगवदाराधन में निमग्न रहें, सन्तति गुपाल पुरश्चरण से शीघ्र ही आप पुत्र लाभ कर सकेंगे।"

निदान उसी क्षण से पुत्रार्थी सम्राट अपने आराध्यदेव की हृदय से उपासना करने लगे। थोड़े दिनों में राज महषी ने गर्भधारण कर नौ महीना पीछे पुत्र प्रसव किया। सम्राट ने उत्साह से आनन्द मग्न हो अपार धन दान पुन्य और पारितोषक दिया और बड़े समारम्भ से नाम करण संस्कार करा कमरुज्जमां नाम रक्खा।

बड़े प्रयास से राजकुमार का लालन पालन होने लगा। अनुमान १५ वर्ष की आयु में राजकुमार अनेक विद्या नीति और कलाकौशल्य

में विशारद हो गया। सम्राट ने कमरुज्जमां को युवराज पद पर विभूषित कर विवाहोत्सव की इच्छा प्रकट की। युवराज बहुत देर तक मौनावलम्ब इधर उधर देखता रहा वह अनुभ वित रूप देख सम्राट ने मौन साधने का कारण पूछा ?

युवराज ने दीर्घ निश्वास त्याग उत्तर दिया—"आपकी आज्ञा के अपरूप कुछ कहना अविनय है मुझे विवाह से क्षमा कीजिये मैंने स्त्री चरित्र विषयक अनेक पुस्तकें अवलोकन की हैं। मैं आजन्म ब्रह्मचर्य्य व्रत पालन करूँगा विवाह करके व्यर्थ विपत्ति का आह्वान करूँ ऐसा मूर्ख नहीं हूं। आशा है आप भी पुनः वैवाहिक आन्दोलन न छेड़ेंगे।"

ऐसा उत्तर पाकर सम्राट ने युवराज को बहुत समझाया परन्तु उसने एक न मानी। वरन् एक वर्ष का अवकाश देने पर भी युवराज ने अपनी हठ न छोड़ी ! सम्राट विवश होकर युवराज को समुचित दन्ड देने को उद्यत हुये परन्तु महामन्त्री के अनुरोध से एक वर्ष का और सावकाश दिया गया।

युवराज की माता सम्राज्ञी फातिमा ने पुत्र को सन्मार्ग पर लाने की अनेक चेष्टा की, परन्तु उसके दृढ़ निश्चय को कोई भङ्ग न कर सका। तब सम्राट ने विवश हो युवराज को अति जीर्ण भग्नावशेष तिमिराच्छादित ग्रह में बन्दी किया एक सेवक सेवा सुश्रूषा को कुछ वस्त्र और पुस्तकें चित्त विनोदार्थ दे दी गईं।

बन्दीगृह में पहुंचकर युवराज ने पुस्तकें अवलोकन कर दिन व्यतीत किया वह विवाह करने की अपेक्षा बन्दी होना अच्छा समझता था। भोजन करके रात को सो रहा।

बन्दीगृह में एक पुरातन कूप था। संयोगवश मैमूं अप्सरा दिमरत का पुत्री का जो राक्षसों का एक मात्र अधीश्वर था आवास था। अर्द्ध रात्रि को नियमित रूप से अप्सरा बाहर निकल कर चाहती थी कि सृष्टि की अपूर्व मोहनी छटा देखे सहसा युवराज के कमरे में प्रकाश देख

लौट पड़ी ।

मैमूं युवराज को देखते ही मोहित हो गई । ओह,ऐसा अलौकिक सौन्दर्य ! क्या प्रकृति की सारी सुन्दरता इसी के भाग में आई है ? वह युवराज को शिर से आपाद निरीक्षण कर मुग्ध हो गई कोमल कपोल चुम्बन कर आकाश की ओर उड़ गई ।

थोड़ी दूर जाने पर मैमूं अप्सरा को किसी आकाशचारी राक्षस के उड़ने का शब्द कर्णगत हुआ उसने विस्मय से पूछा—कौन है ?”

दैत्य ने उत्तर दिया—“मैं हूं सरशाहात्मज बिनहुश ।”

अप्सरा ने पूछा—“कहां से आरहे हो ?”

बिनहुश ने दीर्घनिश्वास त्याग कर कहा— इस समय मैं सीमान्तर चीन देश से आरहा हूं । वहां गोर नामक नरेश शासन करता है । उसकी एक मात्र सन्तति पुत्री त्न राजकुमारी बदौरा असामान्या सुन्दरी युवती है कदाचित् प्रकृति ने उसके सदृश कोई मनुष्य उत्पन्न नहीं किया अनेक बार देखने पर भी जी तृप्त नहीं होता यही अभिलाषा होती है कि यदि समस्त शरीर नेत्र रूप हो जावे तो एक बार ही जी भर कर देखलें । कतिपय राजा उसके लिये लालायित हो रहे हैं परन्तु उसके पिता गोर ने पुत्री इच्छा पर विवाह बञ्चित रक्खा है। बदौरा बड़ी अभिमानिनी है पुरुष नाम से उसे ऐसी घृणा है कि बहुत समझा । पर भी किसी को अंगीकार नहीं करती गोर ने क्रुद्ध हो उसे बन्दी किया है दस वृद्धा उसकी सेवा सुश्रुषा के लिये नियत हैं । न वह बाहर जा सकती है और न कोई वहां प्रवेश कर सकता है । गोर ने उसे विक्षिप्ता जान यह घोषणा करादी है कि जो कोई इसे स्वस्थ करेगा उसी के संग विवाह कर दिया जायगा ।”

बिनहुश के मुख से ऐसी प्रशंसा सुनकर मैमूं अप्सरा बिगड़ कर कहने लगी—“ओह रे तेरा अलंकारिक भाषण । दुष्ट ? जिस कामदेव के अवतार युवराज को देखकर मैं आ रही हूं यदि तू देख पाये तो

आजन्म प्रशंसा करते न थके ! ऐसी न जाने कितनी बदौरा उसके अलौकिक सौन्दर्य राशि पर निछावर होने को उद्यत होंगी ।

बिनहुशबोला—"मैं कैसे विश्वास करूं क्या मैं उसे देख सकता हूं ?"

मैमों ने कहा—"क्यों नहीं भली भांति देख सकते हो मेरे आश्वास स्थान के सन्निकट ही है । विवाह न करने के अपराध में पिता ने रुष्ट हो उसे बन्दी किया है ।"

विनहुश ने सिर हिलाकर कहा—"यदि मैं देखूं तो अनुमति दे सकूंगा फिर भी मेरा विश्वास है कि रति की प्रतिकृति राजकुमारी बदौरा की समानता करने वाला संसार में कोई न मिलेगा उसकी कमनीयता के आगे सब तुच्छ हैं !

अप्सरा विपन्न हो कहने लगी—"क्यों झक मारता है ! नृशंस ! युवराज के सौन्दर्य पासङ्ग को भी बदौरा न पहुंचेगी ।

निदान बहुत देर तक अप्सरा और दैत्य के प्रति वाद विवाद होता रहा तब बिनहुश ने कहा—"आप अधिक विवाद न करें मैं अभी बदौरा को उठाये लाता हूं । तब तुम्हे स्वयम् विश्वास हो जायगा ।

दैत्य उड़कर तुरन्त चीन पहुंचा और बदौरा को उठा लाया उसे युवराज की शय्या पर बराबर सुला दिया ।

दोनों ही अति सुन्दर एक दूसरे से बढ़कर थे । बहुत देर तक देखने पर भी निश्चय न हो सका कि कौन अधिक सुन्दर है तब एक ऐसे तीसरे मनुष्य की आवश्यकता हुई कि सौन्दर्योपासक हो अस्तु मैमू" अप्सरा ने पदाघात कर कसकस नामक दैत्य जो कुब्ज पंगु एकाक्षी और जिसके शिर पर शृङ्खला बद्ध छः शृङ्ग थे विद्यमान कर पूछा—"उक्त दोनों स्त्री पुरुषों में कौन अधिक सुन्दर है ।"

कसकस बड़े असमञ्जस में पड़ गया दोनों ही एक दूसरे से बढ़ बढ़ कर थे वह किसे अधिक सुन्दर बतावे । अस्तु उसने एक युक्ति

बताई—"यदि क्रमश: दोनों को जगाया जावे तो पारस्परिक प्रेम प्रदर्शन से कदाचित् निश्चय हो सकेगा।

युक्ति संगत है। यह धारणा कर अप्सरा ने युवराज को मच्छर बन कण्ठ में काट खाया। दंश वेदना से जागृत हो और अपने बराबर एक अपामान्या सुन्दरी युवती को देख विस्मित हो एक टक मुखच्छवि देखने और स्पर्श कर स्वर्गीय सुख उपभोग करने लगा निदान बड़ी देर तक प्रगाढ़ालिंगन और असंख्यचुम्बन चलता रहा युवराज ने सोचा यह कदाचित् वही रमणी है जिसके संग मेरा विवाह निश्चय होता था, ओह ! यदि मैं ऐसी सुन्दरी हमणी को देख लेता तो काहे को विवाह की मने करता निस्सन्देह चराचर में ऐसा रमणी रत्न बड़े पुण्य से मिलता है। युवराज ने युवती बदौरा को जगाना चाहा परन्तु माया निद्रावश वह सचेत न हो सकी। तब युवराज ने कर चुम्बन कर उसकी अंगूठी स्वयम् तथा अपनी उसे पहना दी। किस प्रकार सचेत हो यही सोचते २ मायावश स्वयम् अचेत होगया।

युवराज को सुषुप्त देख दैत्य ने राजकुमारी बदौरा के होंट में काटा वह भी जागृत हो विस्मय से युवराज को देख मुग्ध हो गई। सम्भवत: इसी युवक के संग मेरा विवाह होता ? ओह पिता ने भूल की यदि मुझे पूर्व ही दर्शन करा देते तो मैं इतने दिनों तक क्यों स्वर्गीय सुख से वंचित रहती। प्रेम विवश कभी चुम्बन और कभी आलिङ्गन करने लगी। अनेक प्रयास करने पर भी जब वह प्राण प्यारे को सचेत न कर सकी तो हृदय से हृदय सटा विचार में निमग्न हो स्वयम् अचेत हो गई।

अप्सरा ने अंगूठा दिखाकर कहा—"देखले हमारा युवराज ही परम सुन्दर है परन्तु अब तू जहां से लाया है पहुँचा आ।"

निदान विनहुश ने उसी समय बदौरा को यथा स्थान पहुंचा दिया।

प्रभात होने पर युवराज कमरुज्जमा ने जागृत हो अपने चतुर्दिक

बड़े विस्मय से देखा परन्तु रात्रि की सुन्दरी युवती का कुछ चिन्ह दृष्टिगत न हुआ बह अधीर हो सेवक से पूछने लगा—"वह रमणी जो रात मेरी शय्या पर सोई हुई थी वहां गई ?

सेवक ने पूंछा—क्या आपने कोई स्वप्न देखा है जिस कमरे में आप शयन करते हैं प्रति समय ताला बन्द रहता है मच्छर भी प्रविष्ट नहीं हो सकता स्वयम् मैंने प्रातः ताला खोला है । निस्सन्देह आपको भ्रम हुआ है ।"

युवराज ने क्रुद्ध हो सेवक को ताड़ित कर कहा—"दुष्ट नृशंस, पिताजी के आग्रह से तू नहीं बताता । स्मरण रख यदि पुनः तूने बात बनाई तो दूसरे श्वास लेने का अवकाश न देकर अभी यमपुर पहुंचा दूंगा ।"

जब युवराज सेवक को कूर में लटकाने को उद्यत हुआ तो—— "यदि मुझे क्षमाकर कुछ अवकाश दो तो पूंछकर आपको बतला दूंगा।" इस मिस से बाहर आ सम्राट के पास पहुंचा ।

सम्राट ने महामन्त्री को समाचार लेने भेजा । मंत्री के पहुंनने पर युवराज ने उनके प्रति भी वही कठोर बर्ताव किया वह भी भागकर सम्राट के पास पहुंचा तब दुःखित हो स्वयम् सम्राट युवराज के पास आ कहने लगे—

"पुत्र ! रात तुमने क्या स्वप्न देखा है ।"

"पिताजी, स्वप्न नहीं साक्षात एक परम रूपवती रमणी मेरे शय्या पर सोई है। यह देखिये ? मैंने बहुत देर तक प्यार करने पश्चात् उसकी अंगूठी बदल ली है। यह कहकर युवराज ने अंगूठी दिखा दी ।

सम्राट अंगूठी देख अति विस्मित हुये । वह किसी दूर देश की बनी हुई थी उन्होंने सान्त्वना देकर कहा—"पुत्र घबराओ नहीं यथा संभव शीघ्र उस मन मोहिनी को खोजकर तुम्हारे साथ विवाह कर दूंगा ।"

निदान, मन्त्री की अनुमति से युवराज को खिरद द्वीपान्तगत

दुर्ग में जहां बन्दर होने से अनेक दूर देशीय यान व्यापारार्थ आया करते थे, भेज दिया। यदा कदा स्वयम् सम्राट भी युवराज के पास रह, आया करते थे।

प्रिय पाठक ! विगत् मद मतवारे की नाईं युवराज कमरुज्जमां को वियोगाग्नि में जलता छोड़ राजकुमारी बदौरा का वृत्तान्त सुनिये वह प्रातः जागृत हो युवराज को खोजने और निराश हो उस वृद्धा से जो प्रधान सेविका तथा राजकुमारी की धात्री थी, पूछने लगी—"वह युवक जो रात मेरे पास सोया था कहां है ? मैं उसे देखने को लालायित हो रही हूँ।"

धात्री ने कहा—"राजकुमारी कहती क्या हो कहीं कोई दुःस्वप्न तो नहीं देखा ? जिस कमरे में तुम सोती हो वहां मनुष्य तो क्या विहंग भी प्रविष्ट नहीं हो सकता। ईश्वर के लिए ऐसा न कहो यदि महाराज ने सुन पाई तो प्राणों पर आ बनेगी।"

राजकुमारी ने क्रुद्ध हो धात्री का शिर पकड़ खसोटना प्रारम्भ किया धात्री भागकर अन्तःपुर पहुंची।

धात्री के मुख से उक्त भीषण सम्वाद सुन सम्राट और सम्राज्ञी दोनों राजकुमारी के पास दौड़ आये—"क्या पुत्री कोई स्वप्न देखा है ?"

राजकुमारी ने लज्जा से नमित मुख हो दीर्घनिश्वास त्याग कर कहा—"रात कोई अति सुन्दर युवक मेरे पास सोया है मैंने उसे जगाकर नाम इत्यादि पूंछने की बहुत चेष्टा की परन्तु वह जागृत न हुआ। सोने के पूर्व युवक ने मेरी अंगूठी बदल ली थी जो अब तक मेरी अंगुली में है। माताजी मैं उसके प्रेम में विह्वल हो रही हूं। शीघ्र ही उसके संग मेरा विवाह कर दीजिये अन्यथा प्राण खो दूंगी।"

सम्राज्ञी अंगूठी देखकर अति विस्मित हुई वह प्रस्तरवर रत्न जटित बहुमूल्य दूर देश की बनी हुई थी किंबहुना राजकुमारी को यक्ष ग्रस्त जान पैरों में स्वर्ण बेड़ियां डाल दीं और घोषणा कर दी क जो

कोई राजकुमारी को स्वस्थ करेगा वही उसके अमूल्य कर का भागी होगा और निरोग न कर सकेगा तो शिर भङ्ग करा प्राकार पर लटकवा दिया जावेगा ।

घोषणा सुनकर अनेक वैद्य और ज्योतिषी आये परन्तु कोई स्वस्थ न कर सका । एक वर्ष में ही अनुमान १५० चिकित्सक मारे गये ।

जिस वृद्धा धात्री ने राजकुमारी को दूध पिलाया था उसका एक मात्र पुत्र मरजुवां नामक ज्योतिषी था जिसका लालन पालन राजकुमारी के संग हुआ था । बाल्यकाल से ही दोनों में प्रगाढ़ प्रेम था युवावस्था प्राप्त होने पर दोनों पृथक २ हो गये । अस्तु मरजुवां चीन प्रदेश जाकर ज्योतिष विद्या में पारंगत हो भ्रमण करता स्वदेश आया, नगर के बाहर प्राकार पर अनेक मनुष्यों के शिर लटके देख विस्मय से पूछने लगा ।

उसकी माता धात्री ने समस्त घटना अद्योपान्त कह सुनाई मरजुवां ने राजकुमारी को देखने की इच्छा प्रकट की निदान धात्री उसे स्त्री वेश में राजकुमारी के पास ले गई ।

मरजुवां प्रणाम कर राजकुमारी के पास बैठ गया और पांसा निकाल रमल द्वारा राजकुमारी का वृत्तान्त जानना चाहता था कि हठात् राजकुमारी कहने लगी—"भाई, मैं पगली नहीं हूं कोई भूत प्रेत नहीं चिपट ।। "

मरजुवां ने धैर्य देकर कहा —राजकुमारी अधीर न हो मैं आपका समस्त वृत्तान्त सुन चुका हूं । मैं आपको विश्वास दिलाता हूं । ईश्वर भरोसे आपका अभीष्ट सिद्ध कर शीघ्र लौटूंगा ।"

मरजुवां राजकुमारी से विदा हो पुनः देश देशान्तर पर्यटन करने लगा शनैः २ जब वह खिरद द्वीप पहुंचा तो अति प्रसन्न हुआ । अब तक जहां २ वह गया राजकुमारी की कथा ही सबके जिह्वाग्र मिली यहां आकर युवराज के समय का वृत्तान्त श्रवण कर उसे निश्चय हो गया

जिसके वियोग दुःख में राजकुमारी उन्मत्त हुई है वह कदाचित् यही प्रणयोन्मत्त युवराज है।

मरजुवां अपने यान में बैठा दुर्ग की ओर जा रहा था सहसा उसका यान टूट गया और तो मनुष्य डूब गये केवल मरजुवां काष्ठ पर बैठा इधर उधर तैरने लगा। सम्राट शाहजमां दुर्ग में बैठा नदी के कलकल शब्द में पुत्र के स्वास्थ लाभ का उपाय सोच रहा था मरजुवां को डूबते उछलते देख निकलवा बुलाया।

मरजुवां की मुखच्छवि देख सम्राट ने अनुमान किया कि यह भावुक पथिक है सम्भव है इसके सहवास में युवराज का चित्त शान्त रहे।

मरजुवां युवराज के प्रणय की कथा सुन ही चुका था निरनिराले में कहने लगा—"जो रमणी आपकी शय्या पर सोई अथवा जिसकी अंगूठी चिन्ह स्वरूप आपके पास है मैं उसी का भेजा आपके पास आरहा हूँ वह विशाल चीन देश के एक मात्र स्वत्वाधिकारी गोर नरेश की पुत्री राजकुमारी बदौरा है उसे रति भी देखकर लज्जित होती है, वह आपके प्रेम में उन्मत्त हो रही है।" निदान मरजुवां ने राजकुमारी की वियोग पीड़ा और सम्राट गोरकी घोषणा सुनकर चीन देश की ओर चलने का अत्यनुरोध किया।

युवराज प्राणप्रिया का नाम सुनकर आनन्द और उल्लास से गद् २ होगया। और उबटन वसन-भूषण तथा गंध लेपन से निवृत्त हो युवराज राजसभा में प्रविष्ट हो राजकाज में साहाय्य देने लगा।

कुछ ही दिनों में जब युवराज की दशा सुधर गई तो मृगया मिससे अनेक आखेट कुशल मनुष्यों को संग ले बन की ओर चल दिया।

२। ३ दिन आखेट रहा। पश्चात् तीसरे दिन अर्द्धरात्रि के करीब दो घोड़ों पर स्वयं और मरजुवां तथा तीसरा घोड़ा कोतल संग ले चल दिये। थोड़ी दूर जाकर मरजुवां ने युवराज के वस्त्र लोहू में सानकर मार्ग में डाल दिये और तीसरा घोड़ा छोड़ दिया जो प्रातः

खोजते हुये युवराज के साथी वहाँ आ हिंस्र सिंह द्वारा युवराज का वध जान लौट जावें।

युवराजने चीन में प्रवेश किया और ज्योतिषी वेष में राजकुमारी की चिकित्सा को सम्राट की सेवा में आवेदन पत्र भेजा।

सम्राट तथा और भी अनेक मनुष्यों ने युवराज को अति सुन्दर तरुण देख चिकित्सा न करने का अनुरोध किया परन्तु युवराज की हठ ने पूर्व घोषणानुसार सम्राट को वचन वद्ध होने पर बाध्य कर दिया। निदान युवराज को राजकुमारी के पास जाने की आज्ञा मिल गई।

अन्त:पुर में प्रविष्ट हो युवराज ने कहा—"मैं यहीं से राजकुमारी को अच्छा करूंगा! यह कहकर युवराज ने अपने प्रेम पत्र में प्रत्यागमन समाचार के साथ राजकुमारी की अंगूठी भी भेज दी।

राजकुमारी पत्र पा बेड़ी तोड़कर दर्शनार्थ बाहर को दौड़ी और करुणा से "हा प्राणनाथ!" कहते एक दूसरे से लिपट गये।

बड़ी देर तक आलिंगन सुख उपभोग कर धात्री के अनुरोध से दोनों भीतर कमरे में चले गये।

प्रहरीगण यह सौरुय दशा देख सम्राट के पास पहुंचे और राजकुमारी के स्वास्थ्य लाभ की विचित्र घटना कह सुनाई।

सम्राट प्रसन्न हो उसी समय राजकुमारी के अन्त:पुर में आये और युवराज को कण्ठ लगा राजकुमारी का कोमल कर उसके हाथ में देकर बोले बदौरा तुम्हारी हो चुकी उस पर तुम्हें पूर्ण अधिकार हुआ। अब कृपाकर अपना परिचय दो मुझे बड़ी उत्कण्ठा है?"

युवराज ने प्रणाम कर कहा—'अभीष्ट सिद्ध करने के लिये मैंने यह कृत्रिम वेश धारण किया था अन्यथा मैं गेलडर्न खाल्दान द्वीपाधिपति शाहजमाँ का पुत्र युवराज कमरुज्जमा हूं।

निदान कुछ ही दिनों पश्चात् बड़े समारम्भ से युवराज का पाणिग्रहोत्सव मनाया गया। दोनों प्रेमियों के मिलने से जो सुख प्राप्त हुआ वह अकथनीय है सम्राट ने मरजुमां को अकथ श्रम का कोई उच्चपद

देकर अच्छा प्रत्युपकार किया ।

बड़े आनन्द से युवराज चीन में रह मनोमोहनी बदौरा को पा कालक्षेप करने लगा । एक दिन उसने स्वप्न में अपने पिता को आसन्न मृत्यु देखा जो पुत्र शोक से सन्तप्त कमरुज्जमां २ रट लगाये हुये थे ।

युवराज चौंक पड़ा. संयोगवश राजकुमारी भी जग पड़ी वह युवराज को दीर्घनिश्वास त्यागते देख कारण पूछने लगी ।

युवराज का स्वप्न सुन राजकुमारी ने माता पिता से श्वसुराल जाने की एक वर्ष की आज्ञा मांगी ।

सम्राट ने बड़ी कठिनता से आज्ञा देकर अनेक हय गज रथ बाहन वसन भूषण दास दासी इच्छातीत और थोड़ी सी सेना देकर राजकुमारी को विदा किया ।

एक मास पर्यन्त भ्रमण पश्चात् युवराज सदल बल एक अति भीषण कानन में पहुंचा । ग्रीष्म की उष्णता से राजकुमारी ने अपने डेरे में वस्त्र उतार दिये । और कुछ रात बीतने पर मन्द २ शीतल वायु लगने से वह निद्रा देवी की गोद में अचेत होगई ।

युवराज राजकुमारी को स्वप्नावस्था में देख उसी शय्या पर एक ओर लेट गये सहसा उनकी दृष्टि राजकुमारी के पटुका पर जा पड़ी जिसमें रौप्य खचित एक बटुवा लटक रहा था ।

युवराज ने बटुवा खोल लिया । उसमें कोई पैसे के आकार की चित्र-निर्मित लाल वस्तु रक्खी हुई थी । निस्सन्देह कोई बहुमूल्य वस्तु है । परन्तु साधारणतः देखने में कुछ विशेषत्व न ज्ञात हुआ । वह उस लिए हुये बाहर आ ज्योत्स्ना के निर्मल प्रकाश में भली भांति देखने लगा । कदाचित् बटुवे में और कोई वस्तु मिलकर कुछ सूत मिले उस रक्त पदार्थ को नीचे रख बटुवा देखने लगा । सहसा किसी निशाचारी बिहंग ने उसे मांस की डली जान झपट कर चोंच में दबा लिया ।

युवराज बटुवा देखना भूल गया उसे बड़ी चिन्ता हुई । वह पक्षी के पीछे २ दौड़ने लगा । पक्षी कभी इस वृक्ष पर और कभी उस

उस वृक्ष पर बैठता, ग्यारह दिन पर्यन्त पक्षी का आक्रमण करता युवराज दूर निकल गया। अब पक्षी अदृष्ट होगया। युवराज ने चाहा किसी प्रकार अपने कैम्प—(डेरे) को लौट जावें परन्तु मार्ग न मिला। वह बड़े असमञ्जस में पड़ गया। थोड़ी दूर चलकर उसे कोई नगर मिला। परन्तु बहुत दूर तक घूमने पर भी किसी मनुष्य से साक्षात् न हुआ बाहर बस्ती नदी तट पर उसे एक रमणीक बाटिका मिली जिसके द्वार पर कोई बृद्ध मालाकार बैठा बड़े विस्मय से उसी की ओर देख रहा था।

निकट पहुंचने पर माली ने युवराज से कहा—"यहां के रहिवासी सब मूर्ति पूजक हैं। यवनों से अति घृणा करते हैं। संयोग से कहीं यवन किसी के हाथ लग जाता है तो उसे कठिन यातनाएं देते हैं आज त्यौहार है इसीलिये किसी ने बाधा नहीं दी यह तुम्हारा बड़ा सौभाग्य है।"

युवराज मालाकार को अनेकशः धन्यवाद देने लगा। माली ने युवराज की मुखच्छवि मलीन देख दया कर उसे अपने यहां ठहरा लिया।

भोजनोस्वादन पश्चात् युवराज ने अपनी दुःखद कथा रो २ कर माली को कह सुनाई। आर्तनाद पश्चात् बदौरा को स्मरण कर पूछने लगा।

मालाकार ने सोचकर उत्तर दिया—'यहां से कोई एक वर्ष के मार्ग से यवन शासकों का राज्य है परन्तु अबूनी नगर यहां से अति निकट है वहां से तुम्हारे द्वीप को जलयान आया जाया करते है यदि कुछ ही दिनों पूर्व तुम यहां आये होते तो मैं किसी व्यापारी के सङ्ग जलयान द्वारा जो प्रति वर्ष जाता है यहांसे भेज देता अब यदि तुम पुनः यान की प्रतीक्षा करो तो एक वर्ष के लिये मेरे पास रह सकते हो।

"इसके अतिरिक्त अन्य उपाय ही क्या है, विवश आपकी आज्ञा पालनी पड़ेगी।" यह कहकर युवराज ने माली के प्रति कृतज्ञता प्रकाश

को ओर आने की प्रतीक्षा में निमग्न रहने लगा। वह प्राण प्रिया राजकुमारी बदौरा को स्मरण कर अश्रु धारा से अपना वक्षःस्थल भिगोता रहता था।

उधर राजकुमारी ने जाग्रत हो युवराज को न पाया तो वज्राहत की भांति स्तम्भित रह गई। बटुवे को देखा, खुला पड़ा है। उसमें मायावी पट्टी (काष्ठ का टुकड़ा) नहीं है जो विदा होते समय उसको माता ने पति वियोग न होने के कारण दी थी। उसे विश्वास होगया मायावी पट्टी के प्रभाव से कुछ दिनों अवश्य वियोगाग्नि में जलना पडेगा। वह उसे बटुवे में रखने का पश्चात्ताप और उसके आविष्कर्त्ता को जी भरकर कोसने लगी। यद्यपि राजकुमारी की सहचरी कुछ कुछ परिचित थीं परन्तु उनके उद्योग से यह रहस्य किसी पर प्रकट न हुआ।

राजकुमारी ने युवराज भेष बदल लिया और दो दिन बाट देखकर चेल्डान की ओर पयान किया।

जब राजकुमारी युवराज के भेष में अबूनी पहुंची तो अबूनी नरेश अर्मनश ने अतिथि सत्कार स्वरूप उसे अपने यहाँ ठहराया। तीसरे दिन कृत्रिम युवराज ने बिदा मांगी परन्तु अर्मनश ने चतुरता और सौन्दर्य पर मुग्ध हो इस प्रकार कहना आरम्भ किया—"युवराज मेरी वृद्धावस्था है कोई पुत्र नहीं है जो इस विशाल राज्य का उत्तराधिकारी हो केवल एक रति की प्रतिकृति सुचतुर हयातुन्नफस नामक पुत्री है। मैं चाहता हूं किसी सुयोग्य राजकुमार से जैसे तुम हो, विवाह कर दूं और अपने सन्मुख राजसिहासन का उसे स्वामी बना जाऊँ।"

राजकुमारी बदौरा ने सोचा यदि मैं पुरुष होती तो विवाह कर लेती अब तो पहली रात में ही सब रहस्य खुल जायगा और अस्वीकार करने की दशा में सम्भव है क्रुद्ध हो अर्मनश प्राणों का ग्राहक बन जावे। निदान विवश हो छद्यवेशी युवराज ने विवाह अङ्गीकार कर लिया।

अबूनी नरेश अर्मनश युवराज को सहमत पा अति प्रसन्न हुआ। बड़े समारम्भ से राजसुता का पाणिग्रहण हो गया। वरन् विवाहोपरान्त युवराज का राज्यारोहणोत्सव मना उसे समस्त वसुधा का स्वामी बना दिया।

सूर्यास्त पश्चात् दासियों ने राजकुमारी हयात का शृङ्गार कर युवराज के पास प्रमोद भवन में पहुंचा दिया।

युवराज बहुत देर तक ईश्वराधन में निमग्न रहा। पुन: राजकुमारी को सुप्तावस्था में देख शनैः २ एक ओर उसी शय्या पर जा सोया। प्रभात होने के पूर्व ही स्नानादि से निवृत्त हो राज सभा में पहुंच राज काज करने लगा।

अर्मनश ने हयात से पति के प्रेम का उल्लेख किया। परन्तु प्रेम तो कैसा पति मुख से बोला तक नहीं है, यह जानकर उसे बड़ा दुःख हुआ।

दो दिन और बीत गए हयात जैसी सोती वैसी ही उठ बैठती पति घृणा करता है यह समझकर अर्मनश ने कहा—"यदि आज रात भी उसने कुछ बातचीत न की सुख से बंचित रखा तो ऐसे अभिमानी जामाता का प्रभात होते ही शिर चूर्ण करा दूंगा।"

तीसरी रात युवराज ने नियमानुसार ईश्वराधना पश्चात् शयन करना चाहा परन्तु राजकुमारी हयात ने लज्जा त्याग कर कहा— 'आपके मौन रहने से पिताजी दुखी हैं नहीं चाहती कि मेरे कारण तुम्हें कुछ कष्ट हो।"

युवराज स्तम्भित रह गया सहस्र वृश्चिकदंशन के समान वेदना होने लगी। यदि मैं अब रहस्य प्रकट नहीं करता तो निसन्देह प्रातः प्राण दण्ड भोगना पड़ेगा।

युवराज को शोच निमग्न देख हयात ने पूछा आपकी मुखच्छवि अति मलीन देख बोध होता है कि कोई गम्भीर वेदना है।

अश्रु विसर्जन कर युवराज ने कहा—"बहिन! क्षमा करो

यद्यपि मेरा अपराध 'जघन्य है परन्तु तुम जैसी क्षमता शालिनी निच्छला राजकुमारी से क्षमा की ही आशा है मैं तुम्हारी शरण हूँ। वास्तव में जैसी स्त्री तुम हो वैसी ही मैं भी हूं। पति खोजने के कारण पुरुष भेष बनाये हुये हूं।" यह कहकर (राजकुमारी बदौरा) ने आगे से वस्त्र हटा कठोर पीन पयोधर दिखाते हुये समस्त घटना आद्योपान्त कह सुनाई।

राजकुमारी हयातुन्नफस अति विस्मित हुई है यह देख युवराज ने कहा—"बहिन ! तुम भी इस रहस्य को किसी पर प्रकट न करना युवराज कमरुज्जमा जैसे प्रिय दर्शनीय पति को पाकर फूली अंग न समाओगी, अस्तु उनके मिल जाने पर कहना समुचित होगा यह विश्वास रखो कि तुम ही युवराज्ञी बनना मैं तुम दोनों की सेवा सुश्रूषा करने में ही अपना परम सौभाग्य समझूँगी।"

चम्पे जैसे सुकोमल बांह बदौरा के श्री कण्ठ में डाल चिबुक मर्द्दन कर हयात ने कहा—"बहिन तुम निश्चिन्त रहो। मैं बात बना दूंगी। यथा सम्भव युवराज के खोजने का अधिकाधिक प्रयत्न करो ईश्वर ने चाहा तो·····।" निदान प्रभात होते ही हयात ने अपने आत्म समर्पण आमोद प्रमोद की कल्पित कथा सुना कर सबका उद्वेग मिटा दिया।

उधर युवराज माली का काम करके कालक्षेप करने लगा युवराज की पूर्ण साहाय्य से मालाकार को बड़ी सुविधा होगई थी। एक दिन वृद्ध माली ने युवराज से कहा—"आज ही अबोनी जाने वाला कोई जलयान आया हुआ है अस्तु मैं तुम्हारे लिये फलाहार इत्यादि का प्रबन्ध कर आऊँ। यह कहकर माली नदी की ओर चला गया। पीछे युवराज बदौरा को स्मरणकर क्रन्दन से पशुओं पक्षियों को भी रुलाने लगा।

जिस वृक्ष के नीचे युवराज रुदन कर रहा था अनेक चिड़ियां उस पर लड़ रही थीं। थोड़ी देर में एक चिड़िया चोंच और नखाघात

से मर्माहत हो नीचे आ पड़ी। अब दो चिड़ियां नीचे आकर छोटा सा गढ़ा नखों से बनाकर मृत चिड़िया को गाढ़ने लगीं। सहसा दो बलिष्ठ चिड़ियों ने आकर एक चिड़िया को जिसके भीषण नखाघात से बेचारी चिड़िया का जीवन गया था पर नोंच कर नीचे गिरा दिया।

युवराज ने देखा मृत चिड़िया के उदरस्थ कोई लाल २ वस्तु चमक रही है। बड़े यत्न से युवराज ने उसे निकालकर पानी से शुद्ध किया तो उसके हर्ष की सीमा न रही क्योंकि ह वही मायावी पट्टी थी जिसके कारण उन्हें अपार कष्ट भोगना पड़ा था। अब कदाचित् प्राण प्रिया बदौरा से भेंट हो जावे इस उत्साह में वह मग्न था कि माली ने आकर कहा "अमुक वृक्ष सूख गया है अन्तिम बार उसे और काटते जाओ।"

युवराज ने ज्योंही उस वृक्ष को काटा एक पाषाण दृग्गत हुआ अस्तु उसे हटाते ही एक छोटा सा द्वार निकल आया।

युवराज ने भीतर प्रवेश कर देखा ५० पात्र स्वर्ण भस्म से परिपूर्ण धरे हुए हैं। उसने दौड़कर उक्त सूचना माली को दी—"पुत्र ! यह सब धन ईश्वर ने तुम्हें प्रदान किया है। मैं कोई ८० वर्ष से यहां रहता हूँ और मेरे पूर्वज तो न जाने कितनी वर्ष रहे होंगे परन्तु यह धन किसी को न मिला। जिस यान में तुम्हारा जाना निश्चय हुआ है वह परसों जावेगा अस्तु उक्त कोष अपने संग ही ले जाना। परन्तु इन पात्रों में ऊपर से थोड़ा २ जेतून भरलो। जेतून मिस से मार्ग में कोई कुछ बाधा न देगा। अबोनी जाकर जेतून बेच देना वहां दुष्प्राप्य है। स्वल्प मूल्य में विक्रय न करना।"

निदान मालाकार के परामर्श से युवराज ने अधोभाग में स्वर्ण भस्म और ऊपर से जेतून भरदी। एक पात्र में मायावी पट्टी रख ऊपर से कुछ चिन्ह बना दिया। अभी वह इस काम से निवृत्त न हुआ था कि सहसा यान प्रेषक ने युवराज से शीघ्र चलने का अनुरोध किया "थोड़े विलम्ब में ही यान न पा सकोगे।"

युवराज जेतून पात्र यान प्रेषक को सौंप शीघ्र आने का वचन दे मालाकार से विदा होने गया। परन्तु माली की दशा शोचनीय होगई थी देखते ही देखते उसने प्राण त्याग दिये।

युवराज ने बड़ी कठिनता से शव स्नान पश्चात् माली को समाधिस्थ किया। इस अवसर में यान प्रेषक कप्तान ने युवराज की अधिक प्रतीक्षा न कर अबूनी की ओर पयान किया।

युवराज नदी तट पर पहुँचा। यान पूर्व ही जा चुका था वह वज्राहत की भांति स्तम्भित रह गया। ओह! अभी एक वर्ष और यहां रहकर दुःख भोगना पड़ेगा।"

थोड़े दिनों पीछे यान अबूनी पहुंचा। राजकुमारी बदौरा युवराज वेश में इस अभिप्राय से स्वयम् नदी तट पर पहुंची कि कदाचित् किसी से युवराज कमरुज्जमां का कुछ समाचार मिले? अस्तु उसने यान प्रेषक से पूछा—"तुम कहां से आ रहे हो? यान में क्या है?"

प्रेषक ने यथा विहित सबका नाम इत्यादि बता दिया, बदौरा को जेतून अति प्रिय था उसने पात्र राजप्रसाद में पहुँचा देने की प्रेषक को आज्ञा दी।

प्रेषक ने सकुचाते हुए कहा—"राजन्! जेतून का व्यापारी कारणवशात् पीछे रह गया है। ऐसी दशा में......।"

बदौरा में बीच में बात काटकर कहा—"इसमें बाधा ही क्या है हम तुम्हें मूल्य दिये देते हैं साक्षात् होने पर तुम उस व्यापारी को दे देना।" निदान प्रेषक की इच्छानुसार बदौरा ने एक सहस्र दिरहम मूल्य दे दिया।

जेतून महल में आगया तो बिदूरा ने उसे निकलवाया परन्तु प्रत्येक पात्र में आधे में जेतून और अधोभाग स्वर्ण भस्म से परिपूर्ण निकले। वह अति विस्मित हुई। अन्त में जब पचासवां पात्र खोला गया तो सबके नीचे वही मायावी पट्टी निकली।

मायावी पट्टी देखते ही बदौरा अचेत हो गई। अर्क गुलाब

इत्यादि प्रयोग करने पर जब वह सावधान हुई तो यान प्रेषक को बुला जेतून के व्यापारी की आकृति एवम् आवास स्थान इत्यादि पता पूछने लगी।

प्रेषक ने मूर्ति पूजक देश में वाटिका का पता दिया तो असंतुष्ट हो बदौरा ने यान बन्धक करा कठिन आज्ञा दी ''जेतून का व्यापारी हमारा ऋणी है जितना शीघ्र हो सके उसे उपस्थित कर दो अन्यथा तुम्हारा यान नष्ट भ्रष्ट कर दिया जायगा।''

कठिनाज्ञा पा यान प्रेषक उसी समय मूर्ति पूजकों के देश को चल दिया वरन् अति शीघ्र युवराज को पकड़ लौट आया।

यह रहस्य युवराज कुछ न समझ सका दुःखित हो मुख से फेन उद्गीरण करता बन्दी होने का कारण पूछने लगा।

''अबोनी नरेश की आज्ञा से हम तुम्हें पकड़े लिए जाते हैं उन्हीं से कारण पूछ लेना इतना तो हम जानते हैं तुम्हें उनका कुछ ऋण देना है।'' यह कहकर प्रेषक ने अबोनी पहुँच युवराज कमरुज्जमां को राजसभा में उपस्थित किया।

बदौरा देखते ही चरणों में गिरना चाहती थी परन्तु युवराज को मलिन वेश एवम् अपने पद के विचार से बड़ी कठिनता से चित्त के आवेग को रोका। स्नान क्षौर उबटन राजसी वस्त्रालंकार से सुसज्जित कर कमरे में ठहरा दिया।

अकस्मात रात्रि को बदौरा पुरुष वेष में वही मायावी पट्टी लिये युवराज के पास आ कहने लगी—''इस पट्टी के विचित्र लक्षण एक ज्योतिषी ने बताकर किंकर्त्तव्य विमूढ़ बना दिया है। तुम दूर देश से भ्रमण करते आ रहे हो क्या तुम कुछ बता सकते हो?

युवराज अपने को बन्दी और बदौरा को अबोनी नरेश समझता था। डरते २ कहने लगा—''राजन्! यह दूर फेंक देने योग्य दुखद वस्तु है। इसी प्राण घातक पट्टी के कारण अपनी प्राणप्रिया से अलग हुआ बड़े २ कष्ट सहन करता यहां तक जीवन्मृत दशा में आ सका हूँ।

यदि आप समस्त घटना सुनेंगे तो हृदय द्रवित हो जायगा।

अब बदौरा पट्टी वहीं छोड़ बाहर चली गई। युवराज पट्टी ध्यान पूर्वक देखने में निमग्न था। सहसा बदौरा ने वास्तविक नारी वेश में आ युवराज को प्रणाम किया।

युवराज अपनी प्राण प्रिया को अकस्मात् पाकर गद्‌गद् हो शरीर से लिपट गया। प्रगाढ़ालिंगन और चुम्बन पश्चात् वह कहने लगा—"अबोनी नरेश धन्य हैं जिनके कारण मैं खोये रत्न को अनायास ही पा सका।"

बड़ी देर तक परस्पर प्रेम पद वार्तालाप पश्चात् बदौरा ने अबोनी नरेश अर्मनश को बुला भेजा।

कमरे में प्रवेश कर अर्मनश ने विस्मय से पूछा—"हैं यह सुन्दरी कौन? जामाता कहां है?"

बदौरा ने समस्त कथा आद्योपान्त सुनाकर हयात के पाणिग्रहण का अत्याग्रह किया।

थोड़े ही दिनों पश्चात् बड़े समारम्भ से हयात के संग युवराज का विवाह होगया। दोनों राजकुमारी परस्पर प्रेम और सौहार्द्र से रहने लगीं। युवराज दोनों ही को प्राणों से अधिक प्यार करता था।

वर्ष भीतर ही दोनों ने गर्भ धारण कर अति सुन्दर पुत्र प्रसव किये। बदौरा जात का अमजद और हयात के पुत्र का असद नाम रक्खा। शनैः २ दोनों राजकुमारों का संग २ ही लालन पालन होने लगा। ६-७ वर्ष वयक्रम अनुमान विद्यारम्भ करा सुयोग्य अध्यापकों के निरीक्षणत्व में अनेक गुण कला कौशल और राजनीति इत्यादि अध्ययन करा मृगया व्यवसाय प्रारम्भ किया।

यद्यपि युवराज ने दोनों को अलग २ महल बनवा दिये थे परन्तु उनमें परस्पर प्रगाढ़ प्रेम और असीम भ्रातृस्नेह था दोनों पास २ ही रहते थे युवराज ने दोनों राजकुमारों को कूटनीतिज्ञ विलक्षण कौशली पा आज्ञा दे रखी थी कि हम जब कहीं बाहर जाया करें तो अनुपस्थिति

में यही दोनों राज काज किया करें वरन् एक प्रकार से यही अबूनी राजकर्त्ता थे। समस्त राज्य का भार इन्हीं पर अवलम्बित था। दोनों राजकुमारों को स्वजननी की अपेक्षा सौतेली माता से अधिक प्रेम था जो पीछे दु:ख का कारण हुआ।

सौतमत्सर के कारण राजकुमार का बर्ताव दोनों को असह्य हो हो उठा। एक दिन अमजद राजसभा से घर आ रहा था मार्ग में सेवक ने कोई पत्र दिया। वह उसे पढ़कर अति विषन्न हुआ क्रुद्ध हो सेवक का शिर काट दिया। दूसरे दिन इसी प्रकार एक वृद्धा ने असद को पत्र दिया अस्तु उसने भी क्रुद्ध हो वृद्धा का शिर काट दिया। इस पर भी माताओं ने अपने २ पुत्रों को बहुत समझाया। जिस प्रकार सौतेली माता के प्रति वैमनस्य हो अनेक प्रलोभन दिये परन्तु परिणाम में दोनों राजकुमारों ने ऐसी बातें सुनने से घृणा की तो दोनों माताएं क्रुद्ध हो युवराज के आने की प्रतीक्षा करने लगी।

तीसरे दिन युवराज के आने पर क्रमश: दोनों राजकुमारियों ने अपने २ पुत्रों की अति निन्दा की। युवराज अमजद और असद दोनों को बध कराया चाहता था परन्तु अमंनश के अनुरोध से जिन्दर नामक प्रधान को बुला दूर ले जाकर दोनों के बध की आज्ञा दे दी।

जिन्दर दोनों राजकुमारों को रातों रात नगर से बाहर दूर ले गया। भीषण कानन में पहुंच राजाज्ञा वह सुनाई।

अमजद ने कहा—'किस अभियोग में हमें दण्ड मिलता है अपराध प्रमाणित नहीं हुआ तथापि युवराज की प्रसन्नता इसी में है तो हम सहर्ष उद्यत हैं। परन्तु बन्धु पहिले मेरा शीश काट दे जो मैं असद का दु:ख न देख सकूं।"

असद ने भी जिन्दर से वही प्रार्थना की। अतएव वह बड़े असमन्जस में पड़ गया निदान उसने दोनों को वस्त्र में बांधना चाहा एक साथ ही दोनों को बध करे सहसा जिन्दर का घोड़ा बागडोर तोड़ भाग निकला।

जिन्दर घोड़ा पकड़ने पीछे २ भागने लगा। घोड़े के दौड़ने एवम् हिनहिनाहट को सुनकर कोई सिंह झाड़ी में से निकलकर जिन्दर की ओर झपटा और नीचे गिराकर विदारना चाहता ही था कि सहसा अमजद निशित कृपाण लिये सिंह को ललकारने लगा, सिंह जिन्दर को छोड़ अमजद पर झपटा परन्तु उसने एक ही बार में सिंह के दो खण्ड कर दिये।

जिन्दर अचेत पड़ा था कठिनता से अमजद ने सचेत कर खड्ग उसे देते हुए कहा—"अब तुम स्वामी की आज्ञा का पालन कर अबूनी लौट जाओ!"

अमजद ने उग्रबल से सिंह के दो खण्ड कर दिये और असद उसका घोड़ा खोज लाया है यह देख जिन्दर ने कहा—"राजकुमार तुमने मेरी प्राण रक्षा की है। ऐसे वीर जीवनदाता को जितना धन्यवाद दूं थोड़ा है यह कैसे संभव है कि मैं तुम्हारा बध करूं। मेरी धृष्टता क्षमा करो यदि युवराज तुम्हारे बदले मुझे कुटुम्ब सहित निर्वासन दण्ड अथवा बध कर डालें मुझे सहर्ष स्वीकार है। अब तुम कृपा करके अपने वस्त्र मुझे दे दो।"

निदान जिन्दर दोनों के अंगरखा मृत सिंह के रक्त में सानकर अबोनी पहुंचा।

युवराज अंगरखा देख बहुत दुःखी हुआ दोनों राजकुमारों की स्मृति उसे व्याकुल करने लगी। अंगरखा निरीक्षण करते हुए दोनों की जेब से दो पत्र हस्तगत हुए जो उनकी माताओं ने उनको भेजे थे। पत्र पढ़कर युवराज वज्राहत की भांति स्तम्भित रह गया।" ओह, स्त्री-चरित्र! हाय मैं अभागा बड़ा निर्दयी हूं। इस प्रकार किसी ने अपने पुत्रों के कण्ठ पर कुठार प्रहार न कराया होगा। मैं पापी हूं! हाय बधाज्ञा मुख से निकलने के पूर्व ही मेरे मस्तकपर वज्रपात क्यों न हुआ! वास्तव में मेरी दोनों स्त्री श्लाघनीया मानवी वेश में निरन्तर राक्षसी हैं। अब मैं कभी उनका मुख न देखूंगा।" यह धारणा कर युवराज ने

दोनों को बन्दीगृह में भेज दिया।

दोनों भाई अमजद और असद जाङ्गल्य फलाहार से जीवन निर्वाह करते वन ही बन चलकर एक मास पश्चात् पर्वत के तट पहुंचे। ज्यों त्यों कर शिखर पर चढ़ गये यद्यपि दोनों ही थक गये थे परन्तु असद निपतित होगया था। एक सप्ताह बीतने पर पर्वत के नीचे आये।

अमजद को वहीं छोड़ असद भोजन लेने नगर में गया। प्रथम ही असद को एक वयोवृद्ध मिले। उचित अभ्यर्थना पश्चात् उसने बाजार का मार्ग पूछा।

वृद्ध ने कहा—"तुम प्रदेशी जान पड़ते हो। पुत्र! बाजार को पूछकर क्या करोगे?"

"अपने और भाई के लिए कुछ भोजन लाऊंगा।" असद बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये चलने को ही था कि वृद्ध ने मुस्करा कर कहा—आतिथ्य रूप में मेरे घर चलो मैं तुम्हें जितना चाहो भोजन दे दूंगा जो तुम्हारे कई दिनों तक काम आवेगा।

निदान उक्त वृद्ध असद को बातों में भुला अपने घर लिवा ले गया। घर में प्रवेश कर असद ने देखा चालीस वयोवृद्ध प्रज्वलित अग्नि की परिक्रमा किये पूजा विधान कर रहे हैं यह दृश्य देख वह अति भयभीत हुआ सहसा आगत वृद्ध ने दीर्घ स्वर से "गजवान" सम्बोधन किया।

गजवान के आने पर वृद्ध ने कहा—"अति सावधानता से इस युवक को तलगृह में ले जा बन्दी करो बोस्तिना और केवाना से कह देना नियमानुसार प्रतिदिन इसे आहत कर थोड़ा सा जल और रोटी दे दिया करें। ईद पर इसे पूज्य अग्नि पर्वत को भेज कर बलि देवेंगे।

निदान गजवान ने असद को तलग्रह में लेजाकर कठिन बेड़ी डाल बन्दी किया। बोस्तिना और केवाना प्रति दिन उसे निर्दयता से ताड़ित कर थोड़ा जल और रोटी दे आती। आहत हो बेचारा असद

अचेत हो जाता वह अमजद को स्मरण कर दिन रात अश्रु धारा से अपना वक्षःस्थल भिगोता रहता अमजद निरापद है यह सोचकर उसे कुछ आश्वासन मिलता था।

सन्ध्या होगई असद न लौटा अमजद को चिन्ता होने लगी वह रात भर व्याकुल रहा। प्रभात होने पर नगर में आया। नगर अग्नि पूजकों का आवास स्थान आतिश परस्तान था वहां प्रायः सब ही ईश्वर विमुख नास्तिक रहते थे आगे चलकर उसे एक यवन सूचीकार मिला स्वजातीय बन्धु अमजद ने असद के खोने का वृत्तान्त कहा।

सूचीकार ने सहानुभूति प्रकट कर कहा—'यदि तुम्हारा भाई किसी अग्नि पूजक के कुचक्र में पड़ गया तो मिलना अति कठिन है। परन्तु अब तुम अपनी रक्षा करो। यदि मेरे पास रहोगे तो निरापद रह सकोगे मैं हर तरह सहाय्य करूँगा।

निदान भयभीत हो अमजद एक मास पर्यन्त सूचीकार के घर रहा आया एक दिन वह अकेला नगर में घूम रहा था सहसा एक युवती ने कटाक्ष से देखकर पूछा—"प्यारे कहाँ जा रहे हो? ठहरो।"

अमजद युवती के सरस भाव एवम् सौन्दर्य्य पर मुग्ध हो कहने लगा—"अपने घर जाता था परन्तु अब तुम कहो कहां चलूँ!"

"मुझ जैसी स्वतन्त्र रमणी प्रतिष्ठित पुरुषों को अपने घर लेजा अपमानित नहीं करती अतएव में आंपके शुभ गृह चलने को उद्यत हूं। यह कह कर बार बिलासिनी निधड़क अमजद को हृदय लगा चुम्बन करने लगी।

अमजद ने विलासिनी की धृष्टता देख सोचा यदि मैं सूचीकार के घर लिवा जाऊँ तो वह घृणा करेगा मैं यहाँ किसी को जानता नहीं हूं परन्तु रमणी सौन्दर्य में जो आकर्षक शक्ति है भला उसे कौन दमन कर सकता है तथापि स्थानाभाव से अमजद ने कहा—"मुझे क्षमा करो।"

परन्तु विलासिनी ने ऐसी हठ ठनी कि बहुत कुछ मनें करने पर भी उसने पीछा न छोड़ा। बहुत दूर घूम घुमावे देकर थकित होने पर भी विलासिनी छाया की तरह संङ्ग ही रही।

थोड़ी दूर चलकर अम्जद निशक्त होगया। किसी भले मानस के मदन में पड़ी हुई तिपाई पर जाकर बैठ गया विलासिनी भी एक ओर बैठकर पूछने लगी—"क्या आपका घर यही है।"

देर होने के कारण ऊबकर चली जावेगी यह सोच अम्जद ने धोखा देकर कहा—'सेवक कहीं गया है ताली उसी के पास है।

दुष्टा विलासिनी ने झटिति ताला तोड़ डाला और अम्जद का हाथ पकड़ भीतर ले चली।

कमरा अति सुसज्जित था एक ओर मञ्च पर अनेक सुस्वाद भोजन सुगन्धित मदिरा धरी हुई थी। यह देख अम्जद ने अनुमान किया कि यह किसी धनी का प्रमोद भवन है यदि वह आगया तो हमें बन्दी कर अति दुर्गति करेगा। परन्तु उपेक्षा कर विलासिनी कहने लगी—"क्यों जी तुम तो भोजन बना नहीं है कहते थे। मैं जान गई किसी सुन्दरी को प्रेम भोज्य...........(मुसकरा कर) परन्तु मैं कुछ बाधा थोड़े ही दूँगी कदाचित् उसी की प्रतीक्षा में आप अन्यमनस्क हैं परन्तु प्यारे, दो स्त्रियों के होने से आनन्द और उल्लास की वृद्धि ही होगी! लो अब आजाओ क्षुधा अति प्रबल है यह कह कर विलासिनी स्वयम् भोजन करने और अम्जद को आस्वादन के लिये बाध्य करने लगी।

अभी अम्जद ने २—३ ग्रास ही खाये होंगे कि गृहस्वामी आ पहुंचा। उसका बहादुर नाम था। वह राजकीय अश्वशाला का प्रधान निरीक्षक था उसने अपने घर से दूर यह कमरा बनवा रक्खा था अवकाश होने पर मित्र बान्धवों सहित २—४ घड़ी के लिये चित्त विनोदार्थ वहां आ बैठा करता था। आज उसने कई मित्रों को आमन्त्रित किया था कमरे का ताला टूटा देख अति विस्मित हुआ

भीतर प्रवेश कर उसने देखा कोई पुरुष सपत्नीक भोजन करने में निमग्न है।

द्वार की ओर विलासिनी की पीठ थी अस्तु वह कुछ न देख सकी परन्तु अम्जद ने गृहस्वामी को देख लिया अम्जद ने मूत्र परिष्कार मिससे उठकर बहादुर के पास आ सक्षेप में सब वार्ता कह सुनाई।

बहादुर ने मुसकराकर कहा—"राजकुमार यह घर आप ही का है आनन्द से विलासिनी के सग आमोद प्रमोद कर उसकी काम पिपासा तृप्त कर दो। मेरी इच्छा है सेवकों के वस्त्र धारण कर तुम्हादे पास रह तुम्हें आनन्द उपभोग करते देख सुखी होऊं।

अम्जद वारण करने लगा परन्तु बहादुर ने कहा—'मेरी प्रसन्नता इसी में है तुम सेवक नाईं प्रत्येक कार्य-सेवा मुझ से लेना।"

अम्जद भोजन करने में तत्पर हुआ सहसा सेवक वेश में बहादुर आ उपस्थित हुआ। अम्जद ने क्रुद्ध हो कहा—"अरे तू सूर्योदय का गया अब लौटा है दुष्ट!" यह कहकर २—३ बेत शनैः २ उसे मार दिये। परन्तु विलासिनी ने बेंत लेकर उग्रबल से बहादुर को मारना प्रारम्भ किया अम्जद ने बेंत छीन लिया।

सन्ध्या होने पर बहादुर ने दीपक प्रज्वलित कर अम्जद के लिये शय्या बिछा दी और स्वयम् दूसरे कमरे में जा शयन किया।

अम्जद को : आलिङ्गन कर विलासिनी कहने—"दुष्ट सेवक ने बड़ी अवहेलना की यदि तुम उसका शिर काट दो तो मैं जानूं तुम्हें मुझसे प्रेम है।"

"ऐसा सेवक का जटिल अपराध नहीं है। तुम ऐसे सुखमय समय में क्यों व्यर्थ विपत्ति का आह्वान करती हो।" बहुत समझाकर अम्जद ने विलासिनी को सन्मार्ग पर लाने की चेष्टा की परन्तु उसने एक न मानी "मेरी प्रसन्नता इसी मे है।" यह कहकर स्वयम् खड्ग ले शिर काटने चल दी।

विलासिनी आपे में नहीं है यह निस्संदेह बहादुर का प्राणान्त

कर देगी यह सोच कर अमजद ने कहा—"एक सेवक का हत करना क्या बड़ी बात है तुम्हारे लिये मैं प्राण दे सकता हूं। लाओ खडग मुझे दो।"

खड़ग लेकर अमजद ने ऐसा हाथ मारा कि बिलासिनी का शिर कट कर बहादुर के ऊपर जा पड़ा।

बहादुर ने जागृत हो बड़े विस्मय से विलासिनी की हत्या का कारण पूछा परन्तु अमजद से सब वार्ता सुनकर सहस्त्रशः धन्यवाद देने लगा और स्वयम् शव एक गठरी में बांध नदी में डाल आने को उद्यत हुआ।

मैंने हत किया है शव मैं ही डाल आऊँगा।" अमजद ने बाधा देकर कहा परन्तु बहादुर ने न माना और स्वयम् पीठ पर लाद फेंकने को ले चला।

मार्ग में बहादुर को पुलिस कर्मचारी ने पकड़ लिया परन्तु वह अश्वशाला का निरीक्षक था अस्तु उसे सम्राट के पास ले गये।

सम्राट ने क्रुद्ध होकर कहा—"दुष्ट इस प्रकार प्रजा को हत कर धन अपहरण करने में बड़ा सिद्ध हस्त है।" यह कह कर सम्राट ने उसे प्राणदंड की आज्ञा दी।

कोतवाल ने नगर में घोषणा करा दी कि—"अमुक रमणी बध अभियोग में बहादुर को सूली दी जावेगी।

घोषणा सुनकर अमजद अति विषन्न हुआ मेरे बदले एक निरपराधी प्राणदंड भोगेगा। उसे सह्य न हुआ उसने व्यथित हो राजसभा में पहुंच समस्त घटना आद्योपान्त कह सुनाई।

सम्राट सुनकर अति विस्मित हुये। बहादुर को मुक्तकर अमजद को मन्त्रिपद प्रदान किया। सचिव पद विभूषित होकर अमजद ने घोषणा करादी कि कोई असद को खोज लावेगा उसे बहुत पारितोषिक दिया जावेगा। किन्तु अनेक गुप्तचर भी नियुक्त कर दिये परन्तु असद न मिला।

जब ईद आई तो वृद्ध अग्निपूजक ने बहराम नामक यान प्रबंधक को अग्नि पर्वत पर बलि देने के निमित्त असद को उसे सौंप दिया।

बहराम ने असद को एक बक्स में बन्द कर ऊपर से अनेक वस्तु भार करदीं। अस्तु अमजद ने स्वयम् निरीक्षण करने पर भी यान में असद का कहीं चिह्न न पाया। निदान थोड़ी दूर चलने पश्चात् बहराम ने असद को बाहर निकाल पैरों में बेड़ी डाल दी।

कुछ दिनों पश्चात् नदी में भयानक लहरें उठने लगीं वरन् वायु का प्रचण्ड वेग यान को एक ओर बहा ले चला। निदान बड़ी दूर चल कर यान किसी बन्दर में पहुँच गया। बहराम ने देखा यान महारानी मरजीना की राजधानी में आगया है अस्तु वह अति विषन्न हुआ क्योंकि उक्त महारानी किसी अग्निपूजक को अपने देश में आने नहीं देती थी अस्तु बहराम ने असद की बेड़ी काटकर उसे स्वच्छ वस्त्र पहना दिये और समझा दिया—"अब तुम्हें यान लेखक बना दिया है आशा है तुम्हें जो कुछ दुःख भुगतना पड़ा है उसे भूल जाओगे अब तुम्हें बहुत सुख मिलेगा। तुम किसी से कुछ बातें न करना।"

जब असद ने विश्वास दिला दिया तो बहराम उसे संग ले मरजीना के पास पहुंचा और कई बहुमूल्य वस्त्र भेंट कर कहने लगा—"महारानी जी हम व्यापारी हैं दास विक्रय हमारा प्रधान व्यवसाय है, जितने दास हमारे पास थे विक्रय कर चुके (असद को बताकर) यही केवल एक मात्र शिक्षित दास अवशिष्ट रहा है जिसे हमने बहुत धन मिलने पर भी स्वेच्छा से विक्रय नहीं किया क्योंकि हमें एक लेखक की बड़ी आवश्यकता थी आशा है श्रीमती जी, हमें २-३ दिन यहां रहने की आज्ञा प्रदान करेंगी तब हम ·····।"

मरजीना असद को देखते ही मुग्ध होगई थी उसने भेंट अस्वीकार कर बहराम से कहा—‘इस लेखक को मुझे दे दो जितना मूल्य कहो मैं देने को उद्यत हूं।’’ यह कह असद का हाथ पकड़े मरजीना उद्यान में टहलती परिचय लेने के अर्थ नाम पूछने लगी।

असद ने कहा—"मेरे दो नाम हैं पहिला असद और अब बलदेव है।"

मरजीना अति विषन्न हुई उसने बहराम से कहा—"दुष्ट झूठा तू राजकुमार की बलि देने को लिये जाता था। यह अच्छा है अभी यहां से चले जाओ।" यह कह मरजीना असद का हाथ पकड़े उद्यान के एक पार्श्व में बने प्रमोद भवन मे ले गई और असद का परिचय पा उसे मन्त्री बनाने का वचन दिया।

भोजन के सङ्ग दोनों मदिरा अधिक पीकर अचेत हो गये थे जब चेत हुआ तो असद वायु सेवनार्थ उद्यान में टहलने लगा परन्तु अभी सुरादेवी का प्रभुत्व कम न हुआ था अस्तु वह एक सरोवर के तट मुख धोकर पुनः अचेत हो गया।

बहराम ने जल घड़ियाओं से कहा—"अब रात ही गई है चलो रानी के सरोवर से जल भर लावें। प्रातः ही यहां से स्वदेश की ओर पयान करेंगे।

निदान जब जल घड़िया सरोवर में पानी भरने लगे तो उन्होंने पास ही असद को सुप्तावस्था में अचेत देखा बड़े यत्न से उसे बहराम के पास ले आये।

बहराम असद को पाकर अति प्रसन्न हुआ। थोड़ी देर में रात रहते अग्नि पर्वत की ओर पयान किया।

प्रभात होने पर असद को न पा मरजीना अति व्याकुल हुई। अनुसन्धान से विदित हुआ कि बहराम पुनः असद को पकड़ ले गया है। अस्तु वह स्वयं तीव्र गामी जलयान लेकर चल दी। तीसरे दिन बहराम का यान दूर से दिखाई दिया।

बहराम को कोई उपाय न सूझा उसने भयभीत हो असद को नदी में ढकेल दिया भाग्यवश असद पैराक था बड़ी सुगमता से तट पर पहुंचा वस्त्र सुखा ईश्वर को धन्यवाद देता एक ओर को चल दिया।

कई दिनों चलने पश्चात् असद को एक नगर मिला। ओह, यह

तो वही अग्निपूजकों का आवास स्थान है।

रात होगई थी निशानाथ अपनी विमल ज्योत्स्ना से मार्ग खोजने में पथिकों की सुविधा कर रहे थे। थकित असद नगर बाहर यवन समाधि पा अति प्रसन्न हुआ वह लेटते ही निद्रादेवी की गोद में अचेत होगया।

मरजीना अनेक बार पर्यवेक्षण करने पर यान में असद को न पा अति दु:खित हुई क्रुद्ध हो उसने यान लुटवा बहराम को साथियों सहित बन्दी कर लिया।

बहराम अपने कौशल से भागकर अपने नगर में आया परन्तु रात्रि अधिक बीत जाने के कारण नगर का द्वार बन्द होगया था अस्तु उसने निकटस्थ समाधि मन्दिर मे रात बिताना निश्चय किया। इसी मन्दिर में असद सो रहा था बहराम उसे देख मूछों पर ताव देने लगा—तेरे ही कारण मेरी यह दुर्दशा हुई है यह सोच क्रोध कम्पित अधरों पर दन्तारोपण होने लगा। सुप्तावस्था में ही उसने असद के पैरों में बेड़ी भर दीं।

असद ने अनेक नय विनय की परन्तु बहराम ने क्रुद्ध हो कहा—तेरे कारण हमें अनेक विपद सहन करनी पड़ी हैं बोल अब कहां जायगा पवित्र अग्नि देवी की कृपा से ही तुझे पाया है। उनकी इच्छा पूर्ण होगी अब की न सही आगामी वर्ष में तुझे बलि देंगे।

निदान प्रभात होने पर असद को पुन: उसी तलगृह में बन्दी किया गया असद तलगृह देख वज्राहत की भांति स्तम्भित रह गया उसे बोस्तिना और केवाना की निर्दयता याद आकर सहस्र वृश्चिक दंश के समान वेदना होने लगी। असद का आर्त्तनाद सुन बोस्तिना के नीरव नेत्र भी सूखे न रह सके, असद के आंसू पोंछते हुए वह कहने लगी—"आप कुछ चिन्ता न करें मैंने अग्नि पूजा छोड़कर पवित्र यवन धर्म की शरण ली है मेरे होते आपका अब कुछ कष्ट न भोगना पड़ेगा निदान बोस्तिना के कारण असद बड़े सुख से रहने लगा।

एक दिन बोस्तिना ने महामन्त्री अमजद की घोषणा सुनी "जो कोई असद को खोज लावेगा उसे पारितोषिक में इतना धन दियाजायगा कि वह सहज ही धनी होकर आनन्द से जीवन निर्वाह कर गण्य मान्य समझा जाने लगेगा इसके विरुद्ध जो कोई उसे छिपा रखेगा उसे सकुटुम्ब कठिन प्राण दण्ड दिया जायगा।" अस्तु बोस्तिना असद की बेड़ी काट अति गोप्य मन्त्री के यहाँ ले गई।

अमजद ने असद को पहिचान कर हर्ष से गद्गद् हो कण्ठ से लगा लिया असद ने अपना सब दुःख कह सुनाया। अस्तु अमजद ने उसी समय वृद्ध अग्नि पूजक का घर खुदवा दिया और बहराम सहित सबको प्राणदंड निर्माण किया गया परन्तु सबने यवन धर्म स्वीकार कर लिया अतः वे सब मुक्त कर दिये गये।

बहराम ने कहा—"गत वर्ष में अबोनी गया था तुम्हारे पिता कमरुज्जमां को तुम्हारे वियोग में मृत्यु आसन्न देखा था।"

यह सम्वाद पा दोनों भाई अबोनी जाने को उद्यत हुए सहसा किसी ने आकर कहा—"सम्मुख से कोई राजा सैन्य दल लिये आ रहा है।"

इसका भार अमजद को दिया गया। उसने जाकर पूछा तो महारानी मरजीना असद की खोज में आई है जान कर महारानी को अपने संग राजसभा में लिवा आया।

मरजीना असद को पाकर अति प्रसन्न हुई वह असद चुरा लाने की कथा कह रही थी कि दूसरी दिशा से और कोई राजा आक्रमण करता आ रहा है। अस्तु अमजद उनसे भी पूछने को चल दिया—चीन नरेश गोर अपनी पुत्री बदौरा को खोजते २ यहां आये हैं। अमजद अपने नाना के चरणों में गिर कहने लगा—"मैं ही बदौरा का अङ्गजन्ति आपका धेवता हूँ।" यह कह गोर को भी राजसभा में लिवा लाया।

गोर को पाकर राजा अति प्रसन्न हुआ सहसा पुनः समाचार

मिला कि तीसरी ओर से और कोई दल आ रहा है। अस्तु अमजद और असद दोनों देखने चल दिये।

अबोनी नरेश कमरुज्जमां पुत्र वियोग से सन्तप्त खोजते हुये यहां आए हैं। निदान बाप को देखकर दोनों भाई चरणों में गिर पड़े।

कमरुज्जमां दोनों पुत्रों को कण्ठ से लगा कहने लगा—"पुत्र मैं तुम्हारी माताओं द्वारा ठगा गया। पीछे जिन्दर ने तुम्हारे जीवित होने का विश्वास दिलाया तो मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई अतएव मैं तुम्हे उसी दिन से खोज रहा हूँ।

अमजद गोर के आने का सम्वाद सुना कमरुज्जमां को राज सभा में ला रहा था सहसा चौथी दिशा में धूर गगनाच्छादित देख बीच ही मे रुक गया जब यह सैन्य दल निकट आ गया तो अमजद ने आगे बढ़कर पूछा।

मन्त्री ने जो सबके आगे था उत्तर दिया—"चेल्डर्न खन्दान नरेश सम्राट शाहजमां अपने पुत्र 'कमरुज्जमां को खोजते हुये यहाँ आये हैं।"

कमरुज्जमां बाप को देखकर चरणों में गिर पड़ा निदान दोनों पिता पुत्र बड़ी देर तक रोते रहे। कमरुज्जमाँ ने अमजद और असद दोनों पौत्रों को मिलाया। शाहजमां ने दोनों का मस्तक घ्राण और मुख चुम्बन कर बहुत प्यार किया।

निदान तीनों राजा और महारानी मरजीना तीन दिन पर्यन्त नगर में रहे वहाँ के राजा ने सबको प्रेम भोज्य दिया।

कुछ दिनों पश्चात् बोस्तिना के साथ अमजद का और मरजीना के संग असद का बड़े समारम्भ से विवाह हो गया।

— इति —

उक्त कथा सुनाकर शहरजाद ने कहा—"यदि सम्राटने प्राणभिक्षा दी तो मैं कल नूरुद्दीन की कथा जो इससे अधिक रोचक है सुनाऊँगी।

नूरुद्दीन की कथा ।

पूर्व से अर्वाचीन काल तक बांसरा नगर अब्बासी वशजों के आधिपत्य में रहा है। इस समय यहाँ जबेनी नामक प्रधान शासन करता था जो खलीफा हारूं रशीद का चचेरा भाई था। जबेनी ने राज्य भार दो मन्त्रियों के मन्त्रित्व में छोड़ रखा था एक का नाम खाकान, जो प्रजा वत्सल होने के कारण सर्व प्रिय था, दूसरा सूधि परन्तु निर्दय और क्रूरण होने से सब ही उनसे घृणा करते थे। दोनों मन्त्रियों में भी परस्पर वैमनस्य था।

एक दिन जेबेनी ने खाकान को एक ऐसी दासी जो पूर्ण यौवन प्राप्त, सच्चरित्र गान्धर्व विद्या में निपुण, सुरसिक क्रय करने की आज्ञा दी।

खाकान ने घर आकर दलालों द्वारा सर्व गुण सम्पन्न एक दासी हुस्न अफरोज नामक दस सहस्र मुद्रा को क्रय की। रति की प्रकृति दासी पाकर मन्त्री अति प्रसन्न हुआ परन्तु व्यापारी ने समझा दिया था—"४। ६ दिनों पश्चात दासी को राजा की सेवा में अर्पण करना क्योंकि मार्ग में आहार निद्रा का कष्ट एवम् धूरि धूसरित होने से चन्द्रानन पर श्यामता छा गई है थोड़ा ही विश्राम लेने से यौवन का पूर्ण विकास होकर द्विगुणित सौन्दर्य प्रतिबोध होगा।"

हुस्न अफरोज को अन्तःपुर में प्रविष्ट कर मन्त्री ने अपनी भार्या को प्रबोध देकर कहा—"इसे अति सावधानी से रखना ५। ६ दिन पीछे रूप लावण्य विकसित होने पर राजा के पास ले जाने में पारितोषक लाभ की सम्भावना है। देखना कहीं नूर कुछ हस्तक्षेप न करे?"

खाकान मन्त्री का नूरुद्दीन नामक एक पुत्र था जो देखने में अति सुन्दर दूसरा कामदेव प्रतिभान होता था घर में आकर उसने हुस्न अफरोज को देखा दृष्टि मिलते ही दोनों एक दूसरे पर मुग्ध हो गये।

यद्यपि मन्त्री ने हुस्न अफरोज को सतर्क कर दिया था परन्तु सौन्दर्य में जो आकर्षण शक्ति है भला उसे कौन दमन कर सकता है।

निदान दोनों को प्रेमराग रंजित देख मन्त्री भार्या ने प्राणभय दिखा सन्मार्ग पर लाने की चेष्टा की परन्तु बली मन्मथ ने ऐसी पराकाष्ठा दिखाई कि दोनों का चित्त हाथ से जाता रहा यदि एक क्षण भी परस्पर न देखते तो अति व्याकुल होते।

आंखों ही आंखों में पारस्परिक संकेत देख मन्त्री पत्नी ने हुस्न को राजा की सेवा में भेजना निश्चय कर स्नानागार मे भेजा।

हुस्न अफरोज ने स्नान कर मन्त्री-पत्नी को प्रणाम किया वह उसकी सुघराई व अपूर्व सौन्दर्य छटा देख अति विस्मित हुई। क्या स्नानागार से ही इसे सौन्दर्य मिला है यह सोच मन्त्रि-पत्नी हुस्न अफरोज के पास दो बालिका नियुक्त कर स्वयम् स्नान करने चल दी। सहसा उसी समय नूरुद्दीन घर आया। माता स्नानागार में है यह देख वह सीधा हुस्न अफरोज के कमरे में चला गया वरन् बालिकाओं के बाधा देने पर भी उसने भीतर से द्वार बन्द कर लिया। मन्मथ व्यथित दोनों ही समय की प्रतीक्षा में थे अस्तु सहज ही काम पिपासा तृप्त कर नूरुद्दीन बाहर चला गया।

दोनों बालिका मन्त्रि-पत्नी के पास पहुंचीं और सब घटना वर्णन कर रोने लगीं।

विकल मन्त्रि-पत्नी उसी समय भागकर हुस्न के पास आई। हुस्न अफरोज ने कहा—"कुशल तो है आप बिना स्नान किये क्यों चली आईं।"

मन्त्रि-पत्नी ने शिर पीटकर कहा—"कामातुरा, क्या तेरे पास नूरुद्दीन नहीं आया, क्या तूने आत्म-समर्पण नहीं किया ? यदि उसके पिता ने सुन पाई तो प्राणों का ग्राहक बन जायगा ! (दीर्घनिश्वास त्याग कर) क्या तुझे मन्त्री साहब का कहना स्मरण नहीं रहा ?

चरणों में गिरकर हुस्न अफरोज ने कहा—"माता जी मैं भूली

नहीं हूं। नूरुद्दीन इस समय मुझे यह सूचना देने आया था कि अब तुम राजा की सेवा में नहीं जाओगी तुम्हें पिताजी ने मुझे ही दे डाला है। अतएव ऐसी दशा में मैं कैसे अपनी मान रक्षा कर सकती और फिर मैं नूरुद्दीन को प्राणों से अधिक प्यार करती हूं किन्तु मुझे राजमहिषी बनने की आकांक्षा भी नहीं है मैं तो नूरुद्दीन की हो चुकी हूं।

मन्त्रि पत्नी आंसू पोंछ कहने लगी—“भला तुझ जैसी सुज्ञ वधू पाकर कौन संतुष्ट न होगी परन्तु मुझे विश्वास नहीं निस्संदेह नूरुद्दीन ने तुझे ठगा है पिता पुत्र में ऐसी बातें हों निरन्तर असम्भव है।”

हठात् मन्त्री ने घर में प्रवेश किया। भार्या को अश्रु विसर्जन करते देख विस्मय से कारण पूछने लगा:—

मन्त्रि-पत्नी ने सब घटना कह सुनाई। मन्त्री विषन्न हो कहने लगा—“यदि राजा ने सुन पाई तो प्राण दण्ड भोगना पड़ेगा।’

पति को दुःखित देख भार्या कहने लगी--“स्वामिन्, ऐसे क्यों दुःखी होते हो यदि धन नहीं है तो मेरे आभरण विक्रय कर राजा के लिये एक दासी और ले लो। भवितव्यता, अब पश्चात्ताप करने से क्या होना है। यह दासी तो राजा के योग्य नहीं रही।’’

मन्त्री ने दीर्घनिश्वास त्याग कर कहा—“अरी, मैं सूयि से डरता हूं यदि उसने सुन पाई तो वह मुझे अपराधी प्रमाणित कर अवश्य अपमानित करेगा।”

पत्नी ने आश्वासन देकर कहा—“प्राणेश्वर! दूसरे के घर का भेद कौन जान सकता है। आप राजा से कह सकते हैं मैंने दासी क्रय की थी परन्तु वह आपके निरन्तर अयोग्य थी। राजा को अविश्वास हो ऐसा कोई कारण नहीं दीखता यथासाध्य दासी खोज कर शीघ्र उपस्थित कर दो। कोई कुछ न कह सकेगा।’ पति को आश्वासित देख पत्नी शान्त हुई।

नूरुद्दीन पिता के भय से घर में बहुत थोड़ी देर रहता था—
‘:ऐसी सन्तान से अपुत्रक रहना ही अच्छा, मैं नूरुद्दीन को पाऊंगा वध

किये बिना न रहूंगा।' मन्त्री को क्रुद्ध देख पत्नी कहने लगा—"जीवितेश्वर, एकमात्र नूरुद्दीन ही आपकी सन्तान है उसे वधकर वंश नष्ट न करो, यौवनकाल निरपेक्ष बिताना बड़े धीर पुरुषों का काम है। आशा है आप क्षमा करेंगे। आगे फिर ऐसा अपराध न करे इसके लिये कल जब वह बाहर जाने लगे आप छुरिका लेकर आक्रमण करना मैं बीच में बाधा देकर क्षमा प्रार्थना करूंगी इस प्रकार उसके चित्त में भय बना रहेगा।"

भार्या के परामर्श से दूसरे दिन मन्त्री ने नूरुद्दीन को गिराकर मारने का भय दिखाया परन्तु उसकी माता ने छुड़वा दिया। मन्त्री ने कहा—"तेरे कहने से छोड़े देता हूं। जा मैंने हुस्न अफरोज भी तुझे दी परन्तु इसे विवाहिता की नाईं सुख से रखियो।"

निदान नूरुद्दीन माता पिता को अनेकश: धन्यवाद दे बड़े आनंद से कालक्षेप करने लगा परन्तु मन्त्री उसी दिन से रुग्ण हो सेजशायी हुआ। वरन् शनैः २ रोग संघातिक प्राण लेवा होगया।

चालीस दिन पर्यन्त मन्त्री के प्राणान्त का शोक मना नूरुद्दीन स्वतन्त्र हो इच्छानुसार भोग विलास में रत हुआ, हुस्न अफरोज के समझाने पर नूरुद्दीन ने कहा—"मेरे पिता अपने सङ्ग क्या वसुधा ले गये जो मैं धन संचय करूँ जिस प्रकार हो सके क्यों न चित्त प्रसन्न करूं।"

दुष्ट मित्रों की कुत्सित संगति ने नूरुद्दीन को अपरिमित व्ययी बना दिया था। अभी किसी मित्र ने कहा—"आपका अमुक घर अच्छा बना है आज्ञा हो तो मैं उसमें जा रहूं। अस्तु बिना संकोच नूरुद्दीन घर मित्र के नाम लिख देता। इस प्रकार थोड़े ही दिनों में नूरुद्दीन निर्धनी हो गया।

हुस्न अफरोज ने दुःखित हो पूछा—"आपने बिना विचारे सब धन नष्ट कर दिया घर और आभूषण तक दे डाले अब आजीविका किस प्रकार निर्वाहन कर सकोगे?"

नूरुद्दीन ने कहा—"कुछ चिन्ता नहीं है। अपने किसी मित्र से जिन्हें मैंने सहस्रों का धन दिया है कुछ ऋण लेकर कोई व्यवसाय प्रारम्भ करूंगा।"

हुस्न ने दुःखित होकर कहा—"आपके मित्र सबके सब स्वार्थी हैं उनसे कुछ मिलने की सम्भावना नहीं है। आप और कुछ प्रबन्धकरें।

यद्यपि नूरुद्दीन को विश्वास नहीं हुआ वह अपने एक विश्वस्त मित्र के घर पहुंचा अनेक बार सम्बोधन करने पर भी द्वार न खोला वरन् मित्र महाशय ने स्वयम् -'घर नहीं हैं।' यह उत्तर दे दिया तो वह हताश हो घर लौट आया।

हुस्न ने आश्वासन देकर कहा—"घबराओ न, पहिले तुम दास दासी बेच डालो जा कुछ धन मिल सके थोड़ा २ व्यव कर ईश्वराश्रय कालक्षेप करो।"

परन्तु जिस कोष में आय लेशमात्र न हो एक न एक दिन उसका नाश होना प्रकृत सिद्ध है। निदान जब नूरुद्दीन के पास कुछ न रहा तो बुद्धिमती हुस्म अफरोज ने कहा—"आपके पिता ने मुझे दश सहस्र मुद्रा को क्रय किया था। यदि इस समय मुझे बेच दोगे तो पांच सहस्र मुद्रा सहज ही कोई दे देगा जब समय अनुकूल हो तुम्हारे पास धन हो जावे तो पुनः मुझे मोल ले लेना। मुझसे तुम्हारा दुःख देखा नहीं जाता।"

यद्यपि नूरुद्दीन हुस्न अफरोज को बेचने में सहमत न हुआ परन्तु दारिद्रय मनुष्य को हतबुद्धि बना देता है। २-४ दिन ही अन्न वस्त्र से कष्ट पाने पश्चात नूरुद्दीन ने हाजी हसन दलाल को हुस्न अफरोज को बेच देने के लिए सपौं दिया।

हाजी ने हुस्न अफरोज को चौक में बैठा व्यापारियों को दिखाना प्रारम्भ किया। जो कोई उसे देखता अति प्रसन्न होता निदान एक व्यापारी ने चार सहस्र मुद्रा मूल्य लगाया संयोग से सूयि मन्त्री वहां होकर निकला और अनेक मनुष्यों को एकत्रित देख कारण पूछनेलगा।

हाजी हसन ने कहा—"एक दासी विक्रयार्थं आई हुई है उसी को देखने को यह भीड़ लगी हुई है परन्तु चार सहस्र मुद्रा से अधिक मूल्य न देने के कारण सौदा नहीं बना। स्वामी इतने स्वल्प मूल्य में देने को सहमत नहीं है।"

सूयि हुस्न अफरोज को देखकर मुग्ध हो गया। दासी कर्म के तो योग्य नहीं यह किसी बड़भागी की पाणिग्रहीता किम्वा देव बधूटी है—"चार सहस्र मुद्रा देने को मैं उद्यत हूं" यह कहकर मन्त्री ने प्रत्येक को क्रय करने और मूल्य बढ़ने से वर्ज दिया।

हाजी हसन नूरुद्दीन के पास आया और सब घटना कह सुनाई। नूरुद्दीन ने विषन्न होकर कहा—"सूयि कुछ ही मूल्य क्यों न दे वह हमारा कौटुम्बिक शत्रु है। हम उसे कदापि न बेचेंगे।"

हाजी ने सोचकर कहा—"मूल्य होने पर मने करना ठीक नहीं है अब केवल एक उपाय है—जब मैं सूयि को देने लगूं तो तुम धक्का देकर हुस्न अफरोज को छीनते हुए कह देना किसी काम से क्रुद्ध हो मैंने इसे बेच देने मात्र सौगन्ध खाई थी वह पूरी होगई। मुझे इसका किसी को देना स्वीकार नहीं है।"

निदान ऐसा ही हुआ। नूरुद्दीन हुस्न अफरोज का हाथ पकड़ घर की ओर ले चला। सूयिने यह अनुभावित रूप देख क्रुद्ध हो नूरुद्दीन के पीछे घोड़ा डाला, वह चाबुक प्रहार करना ही चाहता था हठात नूरुद्दीन ने ऐसा झटका मारा कि घोड़े से नीचे गिर पड़ा।

दोनों परस्पर द्वन्द्व युद्ध करने लगे परन्तु सूयि वृद्ध था नूरुद्दीन ने आहत कर निपतित कर दिया। रक्तश्राव देख सेवकों ने नूरुद्दीन को पकड़ना चाहा। परन्तु सूयि की कुटिलता वश सब ही अप्रसन्न थे सेवकों को समझा दिया एक ओर स्वयं मंत्री है दूसरी ओर मन्त्री पुत्र। किसी का पक्ष लेने से आज लड़कर कल एक हो जावेंगे तो परिणाम अति भयंकर होगा।

जब नूरुद्दीन हुस्न अफरोज को लिए घर पहुंच गया तो आहत

सूयि सीधा राजा के पास पहुंचा—"राजन् ! मैं घर जा रहा था चौक में पहुंच कर देखा एक लावण्यवती दासी बिक रही है, मेरी इच्छा थी जितने मूल्य में मिले क्रयकर आपके अर्पण करूं। वह उच्च कोटि की रमणी आपके हर्म्य में प्रविष्ट होने योग्य है। परन्तु मूल्य हो जाने पर बलपूर्वक नूरुद्दीन उसे अपने घर ले गया। महाराज का भय दिखाने पर उसने मेरी बड़ी दुर्गति की। कोई चार वर्ष बीते होंगे जब आपने खाकान को दश सहस्र मुद्रा एक दासी क्रय करने को दी थी किम्बहुना यह वही दासी है जो विक्रयार्थ चौक में लाई गई थी यह अब तक नूरुद्दीन के व्यवहार में है। जब खाकान परलोक गत हुआ तो नूरुद्दीन ने दुष्ट मनुष्यों की कुत्सित वेश्या गमन, बहु सुरापान, द्युत इत्यादि अनेक व्यसनों मे सब धन नष्ट कर दिया तब निर्धन होकर उक्त दासी विक्रयार्थ लाई गई।

सूयि की कथा सुनकर राजा ने चार सहस्र सैन्य भेजकर नूरुद्दीन को हुस्न अफरोज सहित पकड़ लाने की आज्ञा दी

सन्जर नामक एक दास जो पूर्व में खाकान के पास रह चुका था दौड़ कर नूरुद्दीन के पास पहुंचा और राजाज्ञा सुनाकर चालीस स्वर्ण मुद्रा दे शीघ्र भाग जाने का अनुरोध करने लगा।

नूरुद्दीन अपने पिछवाड़े से हुस्न अफरोज को साथ ले नगर से बाहर निकल गया। संयोग से कोई यान बुगदाद को जा रहा था यह दोनों उसी मे बैठ गये।

जब यान बुगदाद पहुंचा तो पांच मुद्रा किराया देकर घर की खोज में दोनों घूमने लगे। जब कोई घर न मिला तो थकित हो दोनों सम्राट के पुष्पोद्यान में चले गये और सरोवर में हाथ मुख धो उद्यान के एक पार्श्व मे बैठ परस्पर वार्त्तालाप करने लगे।

शेख इब्राहीम नामक उद्यान निरीक्षक था। दो मनुष्यों को बिना आज्ञा प्रविष्ट देख निकालने को उद्यत हुआ, परन्तु कुछ सोचकर उसने नूरुद्दीन से पूछा—"तुम कहां रहते हो ?"

नूरुद्दीन ने चरण स्पर्श कर इब्राहीम से कहा—"धार्मिक पिता, हम पथिक हैं यहाँ किसी को जानते नहीं हैं आशा है आप रात भर यहाँ रहने की आज्ञा प्रदान करेंगे।"

सदय शेख जी ने सभ्यता पूर्वक कहा—"मैं तुम्हें ऐसी जगह ठहरा दूंगा जहाँ कुछ कष्ट न होगा।"

नूरुद्दीन ने दो मुद्रा निकालकर भोजनार्थ इब्राहीम को दी वह अति प्रसन्न हो उन्हें एक घर में ठहरा स्वयम् भोजन लाने चला गया।

नूरुद्दीन ने ऊपर एक बारह द्वारी को देखा जिसमें ताला पड़ा हुआ था। जब इब्राहीम लौटा तो नूरुद्दीन ने उसे देखने की इच्छा प्रकट की इब्राहीम ने ताला खोल दिया नूरुद्दीन बारह द्वारी देख अति प्रसन्न हुआ भोजन कर वहीं सो रहने के लिये आग्रह करने लगा।

इब्राहीम ने सोचा, यदि आज खलीफा आते तो मुझे अवश्य सूचना देते अस्तु अपना ही घर बताकर इन्हें सो रहने दूं इसमें निरन्तर लाभ ही है। निदान दोनों सानन्द बारहद्वारी में जा ठहरे।

इब्राहीम ने पूछा—"यदि अब और कुछ आकांक्षा हो तो कहो मैं उद्यत हूं। अन्यथा भोजन कर सानन्द शयन करो।"

नूरुद्दीन ने सकुचाते हुये कहा—"थोड़ी मदिरा और चाहिये।"

इब्राहीम ने विस्मय से कहा—"ऐं मदिरा। इसे पीना व पास रखना पाप है। मैंने चार बार हज (मक्का मदीने की यात्रा) किया है स्वप्न में भी मदिरा नहीं देखी भला मैं कैसे ला सकता हूं। मुझे तो स्पर्श मात्र से घृणा है।"

नूरुद्दीन ने दो मुद्रा देकर कहा—"वह सामने गधा बंधा हुआ है आप उसे अपने संग ले जावें कलार स्वयम् दो बोतल उस पर भारकर देगा। निदान इस प्रकार आप बड़ी सुगमता से ले आवेंगे।"

इब्राहीम मदिरा ले आया। नूरुद्दीन ने गधा के ऊपर से दोनों बोतल उतार ली। गधे की देख रेख में इब्राहीम द्वार बन्द करना भूल गया।

नूरुद्दीन और हुस्न अफरोज दोनों ने सुरापान कर गाना प्रारम्भ किया। इब्राहीम संगीत ध्वनि सुन अति प्रसन्न हुआ नूरुद्दीन ने कहा—"शेखजी ! तुम्हें कहाँ तक धन्यवाद दूं वास्तव में तुम बड़े दयालु हो ।"

हुस्न अफरोज ने कहा—"यदि इब्राहीम आपके कहने से मादरा पीले तो अत्युतम अन्यथा तुम तनक लेट रहना तब देखो मैं उसे कैसा वशी करती हूं ।"

नूरुद्दीन ने 'शेख जी ! शेख जी !!" सम्बोधन किया तो इब्राहीम एक ओर आकर बैठ गया। हुस्न अफरोज ने कहा—"महाशय, यह न होगा जो तुम हमसे नीचे बैठो। यहाँ हमारे पास बैठ कृतार्थ करो ।"

इब्राहीम अति प्रसन्न हुआ अहा, ऐसी असामान्या सुन्दरी युवती के पास बैठना बड़ो प्रारब्ध से मिलता हैं अस्तु कुछ मौखिक घृणा कर हुस्न अफरोज के पास जा बैठा ।

नूरुद्दीन ने हुस्न अफरोज से गाने का आग्रह किया। थोड़ी देर में उसने कोई वियोगान्तक गीत छेड़ा । आहा वह मनोहर सांगीत ध्वनि मधु वर्षण करती इब्राहीम के कोमल हृत्पिण्ड को आकुल करने लगा ।

नूरुद्दीन के आग्रह करने पर जब इब्राहीम ने मदिरा न पी तो वह स्वयम पीकर एक ओर लेट गया। और नेत्र मूंद कर ऐसा कृत्रिम भाव दर्शाया मानो घोर निद्रा में हैं। हुस्न अफरोज ने एक सेव काट आधा इब्राहीम को देकर कहा—"सेव खाने में तो कुछ पाप नहीं है ।"

शेख जी ने मदिरा युक्त कोमल हाथों से सेव लेकर खा लिया है यह देख हुस्न अफरोज कहने लगी—"शेख, जी, (नूरुद्दीन की ओर संकेत कर) इनकी कैसी विचित्र प्रकृति है कुछ ही मदिरा पीने से अचेत हो जाते हैं महानुभाव इतनी कृपा और करो यह जब तक सचेत न हों आप मुझे अकेली छोड़कर............।"

नूरुद्दीन सो गया चलो अच्छा ही हुआ अब मैं ऐसी असामान्या सुन्दरी युवती से स्वच्छन्द स्वर्गीय सुख उपभोग कर सकूंगा।

ऐसा भाव देख हुस्न अफरोज ने अपने अलौकिक सौन्दर्य वश उसे ऐसा वशीभूत किया कि उसने चार बार स्वयम् मदिरा पी।

यह दृश्य देख नूरुद्दीन ने नेत्र मलते हुये कहा—"शेखजी मदिरा छूना तो पाप है परन्तु पीना नहीं है।"

"अरे भाई क्या करूं आपकी विश्वमोहिनी सुन्दरी पत्नी के अनुरोध से पीने को बाध्य हुआ हूं। यह कहकर शेखजी ने ३—४ गिलास मदिरा पीने पश्चात झूम २ कर सुरा देवी की प्रशंसा में एक मनोहर गीत गाया।"

निदान अर्द्ध रात्रि पर्यन्त मदिरा सेवन इत्यादि आमोद प्रमोद में शेख जी को व्यस्त देख हुस्न अफरोज ने कहा—"अन्धकार के कारण कुछ सुझाई नहीं देता। ऊपर लटके हुये झाड़ और हांडी क्या भार मात्र है? क्यों नहीं इन्हें प्रज्वलित कर देते।"

इब्राहीम मदिरा वश ज्ञानाहत था हुस्न के देखते ही सब जला दिये। सम्राट खलीफा हारू रशीद राज प्रासादस्थ उच्च अट्टालिका में बैठा उद्यान की ओर देख रहा था। दीपामालिका देख जाफर सचिव को बुला कारण पूछने लगा।

जाफर बड़े असमंजस में पड़ गया। अस्तु विवश हो खलीफा जाकर और मसरूर को संग ले उद्यान में पहुंचा।

द्वार खुला हुआ था खलीफा सुगमता पूर्वक बारहद्वारी के पास पहुंच देखने लगा—"एक सुन्दरी युवती दूसरा कोई भद्र पुरुष और तीसरा शेख इब्राहीम बैठा आनन्द से मदिरा पी रहा है। सम्राट ने जाफर को बुलाकर कहा—"देखो, वृद्ध इब्राहीम कैसा विवेकी सच्चरित्र था ओह इसकी दशा कैसी शोचनीय है।"

अभी खलीफा और जाफर यही परामर्श कर रहे थे कि इब्राहीम ने एक गिलास मदिरा हुस्न अफरोज को देकर कोई गीत सुनाने की

प्रेरणा की।

हुस्न अफरोज प्रणाम कर कहने लगी—"और कुछ नहीं तो बांसुरी ही ले आओ। वदित्र के कारण स्वर भंग नहीं होता।"

बांसुरी आने पर अपनी चम्पे जैसी अंगुली छिद्रों पर रखते हुये हुस्न अफरोज ने वीणा विनिन्दित स्वर से रागनी अलापी। बांसुरी का कोमल शब्द गले का उतार चढ़ाव मधु वर्षण करता आकुल करने लगा। अलौकिक सांगीत ध्वनि सुन खलीफा विमोहित हो कहने लगे—"बांसुरी बजाने में यद्यपि असहाक अति प्रवीण है परन्तु इस विश्व मोहनी की बांसुरी सुन कहना पड़ता है कि इसके सदृश संसार में कोई विरला ही होगा यही इच्छा होती है कि भीतर जाकर थोड़ी देर कुछ सुनूं।"

खलीफा को रोक कर जाफर ने कहा—"राजन्, यदि आप भीतर जावें तो इब्राहीम भय से मृत प्राय हो जायगा तब यह रमणी भी चुप हो जावेगी।

किस मिस से भीतर जाना चाहिये। खलीफा यहीं प्रतीक्षा कर रहे थे कि उन्होंने एक मछुहे को देखा जो द्वार खुला रहने से सरोवर से मछली पकड़ ले जा रहा था वह खलीफा को देख भय से कांपने लगा। परन्तु खलीफा ने दो मछली उससे ले उसके वस्त्र उतरवा शीघ्र चले जाने की आज्ञा दी।

निदान खलीफा मछुहे के वेष में दो मछलियां हाथ में लिये प्रथम जाफर के पास आया। जाफर ने मछुहा समझ उसे भाग जाने की आज्ञा दी परन्तु खलीफा के अट्टहास पर जाफर लज्जित हो कहने लगा—"आप निस्सन्देह भीतर चले जावे इस वेश में आपको कोई पहचान ले यह स्वप्न में भी आशा नहीं है।"

खलीफा ने ऊपर जाकर द्वार खटखटाया नूरुद्दीन ने इब्राहीम से पूछा—"कौन है?"

खलीफा ने भीतर प्रवेश कर कहा—"मैं हूं करीम मछुआ मैंने

सुना था आज आपने मित्र बान्धवों को निमन्त्रित किया है अस्तु मैं दो मछली......... ।"

मछली का नाम सुनते ही नूरुद्दीन अति प्रसन्न हुआ किन्तु मछली देख इब्राहीम से शीघ्र पकवाने का आग्रह करने लगा ।

इब्राहीम ने मछुहे से कहा—"अरे करीम, पाकशाला में जाकर इन्हें पकवा ला ।"

निदान खलीफा मछली बना नीबू सहित एक पात्र में रख बारहद्वारी में पहुंचा । तीनों ही आनन्द मग्न हो आस्वादन करने लगे ।

मछली अति स्वादिष्ट बनी थी । नूरुद्दीन ने सन्जर की दी हुई चौबीस मुद्रा जो व्यय कर अवशिष्ट थीं मछुहे खलीफा को पारितोषिक दे दीं ।

खलीफा ने नूरुद्दीन की उदारता की प्रशंसा करते अति विनीत प्रार्थना की—"बांसरी देखकर ऐसा बोध होता है कि (हुस्न को बता कर) ये गान्धर्व विद्या में भी पारगामी हैं ! अस्तु–

नूरुद्दीन के अनुरोध से हुस्न अफरोज ने सुरबंशी सतसुरा सुमधुर बांसुरी बजाना प्रारम्भ किया । अहा हुस्न अफरोज का वह अमृत भरे कण्ठ से निकला हुआ गाना उस सुनसान मधुर रात्रि में सर्वत्र सुधा की धारा बहाते हुए खलीफा के चित्त को आकुल करने लगा । खलीफा ने उल्लसित होकर कहा—"अहा, कैसा करुणा भरा स्वर है ! निस्संदेह गान विद्या में ऐसा निपुण कोई बिरला ही होगा ।"

जो कोई नूरुद्दीन के अधीनस्थ किसी वस्तु की अधिक प्रशंसा करता तो कैसी ही वस्तु क्यों न हो वह उसे उसी समय दे डालता था यह उसकी सदा की प्रकृति थी अस्तु वह निःसंकोच हुस्न अफरोज खलीफा को देकर अपने वस्त्र पहिन, बिदा हो कहने लगा—हृदयेश्वरी हुस्न को आनन्द पूर्वक रखियो इसे दुःखी देख मुझे स्वर्ग में भी सुख न मिलेगा ।"

"जाते कहां हो क्या वास्तव में तुमने मुझे दे डाला ? कृपया

मेरा अन्तिम निवेदन तो सुनते जाओ ।" यह कहकर हुस्न अफरोज ने दु:खित हो करुणा भरे स्वर में कराल काल की विकराल गति पर एक मनोहर गीत सुनाया । परन्तु नूरुद्दीन के मुख से कोई शब्द न निकला दोनों के नयनों से अश्रु झरने लगे ।

खलीफा ने पूछा—"क्या हुस्न अफरोज पाणिग्रहीता नहीं है दासी स्वरूप है ?"

अश्रु धारा से वक्षस्थल भिगोते हुए नूरुद्दीन ने अपनी समस्त कथा आद्योपान्त कह सुनाई । खलीफा ने असीम दम्पति देख जेवेनी प्रधान बांसरे के नाम पत्र लिख नूरुद्दीन से कहा—"मुझे केवल मछुआ ही न समझना जेवेनी मेरा परम मित्र है मैं जो कुछ कहूंगा वह सहर्ष करने को उद्यत होगा । अतएव तुम मेरे कहने से बांसरे चले जाओ वहां जब तुम सन्मान पा जाओ तो हुस्न अफरोज भी तुम्हारे पास आ जावेगी ।

नूरुद्दीन ने पत्र लेकर बांसरे की ओर पयान किया । हुस्न अफरोज अश्रु धारा से वक्षस्थल भिगोती नूरुद्दीन को द्वार तक पहुंचा दीर्घ निश्वास त्यागती खलीफा के पास आगई ।

नूरुद्दीन के चले जाने पर इब्राहीम ने कहा—"मुद्रा और यह प्रिया भी कुछ तेरी ही नहीं है अर्द्धार्द्ध बांट करलो ।"

खलीफा ने कहा—"मुद्रा तुम ले सकते हो, परन्तु यह रमणी मैं अपने घर ले जाऊंगा ।"

यह अनुभावित रूप देख इब्राहीम ने पास रखे हुए चीनी पात्र को खलीफा के शिर में दे मारा । परन्तु खलीफा हट गया । पात्र भीत में लगकर खंड २ होगया । इब्राहीम क्रुद्ध हो खलीभा को आहत करने लकड़ी की खोजमें बाहर चला गया । इस अवसर में खलीफा जाफर और मसरूर को बुला मुकुट धारण कर बारह द्वारी में विराजमान हो गये ।

इब्राहीम मोटी लकड़ी हाथ में लिए मछुहे को मारने बारहद्वारी

में इधर-उधर खोजने लगा सहसा खलीफा ने प्रबोध देकर कहा—"शेख किसे खोजत हो ?"

इब्राहीम को बड़ा भ्रम हुआ मैं जागृत हूं अथवा कोई स्वप्न देख रहा हूं परन्तु जाफर, मसरूर और स्वयम् खलीफा को शेख चरणों में गिर क्षमा प्रार्थना करने लगा ।

हुस्न अफरोज भी अति प्रसन्न हुई उसे नूरुद्दीन की कुछ चिन्ता न रही उसे विश्वास होगया कि मैं शीघ्र ही बांसरे जाकर प्राणप्यारे से मिलूंगी ।

खलीफा ने प्रसन्न होकर कहा—"मैंने नूरुद्दीन जैसा उदार संयमी कोई विरला ही पाया होगा, मैंने उसे बाँसरे का प्रधान बनाकर भेजा है तुझे भी २-४ दिन पीछे बांसरे भेज दूंगा । निदान खलीफा ने हुस्न अफरोज को सम्राज्ञी जेबीदा खातून के पास पहुंचा दिया ।

नूरुद्दीन ने बांसरे पहुंच कर जेबेनी को पत्र दिया । वह खलीफा की आज्ञानुसार नूरुद्दीन को सिंहासनारूढ़ करने को था कि सहसा सूयि आकर पत्र पढ़ने पश्चात सिरे पर चिन्ह स्वरूप खलीफा के हस्ताक्षर फाड़ कहने लगा—"प्रभो, यह ठगता है यह पत्र खलीफा का भेजा कदापि नहीं है ।

जेबेनी ने सूयि से सहमत हो अभागे नूरुद्दीन को उसी की रक्षा में दे दिया । सूयि प्राण शत्रु था नूरुद्दीन को अपने घर ले आया और बेचारे को ऐसा आहत किया कि वह मृत प्राय हो अचेत हो गया । यदि उसे खलीफा का भय न होता तो बध करने में कुछ सन्देह न था । जबेनी ही वध करावे ऐसी चेष्टा करने लगा । उसने नूरुद्दीन को दुर्गन्ध मय अति संकीर्ण कारागार में बन्दी कर दिया ।

नूरुद्दीन जब सचेत हुआ अपने भाग्य और मछुवे को अनेकशः कोसने लगा । ६-७ दिन इसी प्रकार नारकीय यन्त्रणा सहते बीत गये ।

सातवें दिन जबेनी ने उसके बध की आज्ञा दी निदान सूयि ने नगर में घोषणा करा नूरुद्दीन को बध स्थल में पहुंचा दिया ।

चांडाल ने नूरुद्दीन से पूछा—"यह तुम्हारा अन्तिम समय है कुछ इच्छा हो तो कह दो ?"

कई दिनों से नूरुद्दीन को जल नहीं मिला था कण्ठ सूख रहा था, अस्तु उसने थोड़ा जल मांगा।

सूयि जल को मने कर शीघ्र शिर भङ्ग करने के लिए चांडाल को बाधित कर रहा था। उपस्थित प्रजागण इस निर्दयता से अति विषन्न हो जल लाने दौड़े गये। सहसा सन्मुख से कोई सैन्यदल आते देख जबेनी ने सूयि को समाचार लाने की आज्ञा दी।

"इसी नराधम को देखने लोग आ रहे है।" यह कह सूयि ने चांडाल की ओर तीव्र दृष्टि से देखा।

"नहीं २ ठहरो। पहले जल पी लेने दो। (सन्मुख देखकर) अरे यह तो जाफर सचिव आ रहे हैं।" यह कह अबोनी उठ खड़ा हुआ।

नूरुद्दीन के चले आने पर खलीफा को कुछ स्मरण न रहा एक दिन हुस्न अफरोज कोई वियोगान्त गीत गा रही थी तब उसे नूरुद्दीन का ध्यान आया अस्तु उसी समय खलीफा ने जाफर सचिव को बांसरे भेजा ठीक नूरुद्दीन के वध के समय जाफर बांसरे पहुंचा। यही सैन्य दल जबेनी की दृष्टिगत हुआ।

जबेनी जाफर को देख स्वागत के लिए दूर तक चला गया। जाफर ने सबके पूर्व नूरुद्दीन की कुशल पूछी। निदान सूयि की निर्दयता से रुष्ट हो प्रजा वर्ग नूरुद्दीन को उसी दशा में जाफर के पास ले गये।

जाफर ने क्रुद्ध हो उसी बन्धन में सूयि को रज्जित कर जबेनी तथा नूरुद्दीन सहित बुगदाद की ओर पयान किया।

बुगदाद पहुंचकर खलीफा ने सूयि के वध के लिये नूरुद्दीन को आज्ञा दी परन्तु उसने कहा—"यद्यपि सूयि मेरा प्राण घातक शत्रु है

फिर भी ऐसी भीषण हत्या मुझसे कदापि न होगी ।"

खलीफा ने नूरुद्दीन को बासरे का प्रधान बनाना चाहा परन्तु उसने अंगीकार न किया उसे खलीफा की सेवा में रहना ही स्वीकार था अस्तु खलीफा ने बड़े सन्मान से उसे अपने पास ही रक्खा और बहुत सा धन तथा थोड़ा राज्य उसे दे दिया । सुयि को कठिन प्राणदण्ड की आज्ञा दी गई । निदान नूरुद्दीन और हुस्न अफरोज बड़े आनन्द और राजसीठाठ से बुगदाद में रहने लगे । इति ।

अब दुनियांजाद और सम्राट के आग्रह से शहरजाद ने ईरान नरेश बदर और राजकुमारी जवाहर की कथा कहना प्रारम्भ किया ।

बदर की कथा ।

ईरान देश का क्षेत्रफल विस्तीर्ण होने से वहाँ का अधिपति अतुल वैभवशाली था । अनेक राजा उसके आधीन कर दिया करते थे ।

तेजपुंज ईरान नरेश सब प्रकार सुखी था सौ विवाहिता तथा अनेक अविवाहिता रमणी गण उसके उपभोग में रहा करती थीं परन्तु दुःख यही था कि सन्तान किसी के नहीं थी । राजा अपुत्रक था ।

एक दिन किसी प्रधान सेवक ने राजा से कहा—"प्रभो कोई व्यापारी रति की प्रतिकृति अति लावण्यवती युवती आपको भेंट देना चाहता है ।"

राजाज्ञा से दूसरे दिन व्यापारी ने एक असामान्या सुन्दरी युवती समर्पण की । राजा देखते ही मुग्ध हो गया । ऐसी सुन्दरी युवती राजा ने आजन्म देखी ही न थी अस्तु प्रसन्न हो व्यापारी से मूल्य पूछा ।

व्यापारी मूल्य लेना नहीं चाहता था परन्तु मैं किसी से उपहार नहीं लेता ।" यह कहकर राजा ने दस सहस्र मुद्रा व्यापारी को मूल्य दे विदा किया ।

राजा ने नवागत के लिए बहुमूल्य वस्त्र पन्नगवर रत्न जटित आभूषण इन्द्रोपम महल तथा दास दासी इच्छातीत नियत कर दी ।

दूसरे दिन राजा उसी के महल मे गया वह नवयौवना चन्दबदनी को शृङ्गार युक्त देख मुग्ध हो, रूप सौन्दर्य की प्रशंसा कर कहने लगा—"चित्तवित्तो भयहारिणी यद्यपि महल में एक से एक बढ़कर सुन्दरी विद्यमान हैं परन्तु तेरे समान विश्वमोहिनी युवती कोई नहीं है। मैं सबको त्याग केवल तेरा क्रीत दास बन आनन्द से सुख उपभोग करूँगा। तुझे देखकर जो आग मेरे हृदय में धधक रही है उसे आत्म प्रदान रूपी वर्षा से शीघ्र शांत करदे ! नहीं मेरा तन भस्म कर देगी।"

रमणी सब कुछ सुना की मुख से कुछ न बोली। राजा क्रीड़ा में मत्त हो युवती से मौनावलम्बन का कारण पूँछने लगा परन्तु फिर भी उसने कुछ उत्तर न दिया

राजा ने भर्त्सना कर कहा—"रहने को राज-महल, भोजनार्थ भाँति २ के व्यञ्जन वस्त्रालङ्कार विपुलता से भरे पड़े हैं और भी जो इच्छा हो अभी प्रयोग में आवेगा परन्तु मौन......... ।"

रमणी ने कुछ उत्तर न दिया एक टक लोचन नतमुख कुछ सोचती रही। थोड़ी देर में भोजन उपस्थित किया गया राजा निज कर से उत्तमोत्तम व्यञ्जन युवती के सन्मुख रखते जाते थे परन्तु उसने किञ्चित् भ्रूक्षेप न की। राजा ने अनेक कौतुक नृत्य गान नाना विधान किये परन्तु वह मौन ही रही।

राजा बड़े असमञ्जस में पड़ गया। वह रात भर उसी युवती के संग भोग विलास में रत रहा। युवती की कमनीयता वश राजा का चित्त ऐसा उसके प्रेम में आकृष्ट हुआ कि वह सबको भूल गया। प्रत्येक महल निवासिनी महिला गण को बहुत सा धन देकर जिसका जिससे जी चाहे विवाह कर ले अनुमति देकर विदा कर दिया। केवल कुछ दासी नवागता की सेवा सुश्रूषार्थ रहने दीं।

वर्ष पर्यन्त राजा नवागता के मौन रहने से अति चिन्तित रहा एक दिन उसने युवती से पूछा—"प्रिये ! तेरे कारण मैंने सब को

त्याग तुझे राजमहिषी बनाया है परन्तु समझ में नहीं आता क्या प्राणेश्वरी गूँगी है ? मैं दिन रात भगवान से यही प्रार्थना किया करता हूं कि किसी प्रकार तू पुत्र प्रसव कर मेरा नाम चिरस्थाई करे। मैं सौगन्ध पूर्वक कहता हूँ यदि तुम, अब भी मौन रहोगी तो मैं प्राण दे दूँगा।"

युवती महिषी ने कटाक्ष से देखकर मुस्कराते हुये कहा—. वर्ष भर से मैं अनेक बातें आपसे कहने की चेष्टा करती रही हूं। परन्तु क्या कहूं यह निश्चय नहीं कर सकी अस्तु सब के पूर्व में आपकी असीम दया माया से चिरकृतज्ञ हो हृदय से धन्यवाद देती हूं। (लजाते हुये) जीवितेश्वर ! आपकी वांच्छा सफलीभूत हुई है। मैंने गर्भ......................यह विश्वास रखिये मैं आपको हृदय से प्यार करती हूं।"

रानी गर्भवती है यह जानकर राजा के आनन्द की सीमा न रही महामन्त्री को एक लक्ष मुद्रा दीन अनाथों में वितरण करने की आज्ञा दी। रात्रि को राजा ने पूंछा—"प्राणधिके ! एक वर्ष पर्यन्त मौन रहने का कारण समझ में नहीं आता। क्या तुम अपना परिचय देने की कृपा करोगी ?"

थोड़ी देर कुछ सोच कर रानी ने कहा—"माता, भाई और स्वदेश की स्मृति ही मौनावलम्ब का कारण था, मैं क्रय की हुई दासी हूं यह विचार ही अन्य मनस्क बनाये रहते थे। राजन्, मेरा नाम गुलनार है, मेरा पिता पाताल में समन्दाल देश का अधिपति था, सहसा पिता को सांघातिक रोग ने आ घेरा जीवनाशा नष्ट होगई। मृत्यु आसन्न पिता ने माता की अध्यक्षता में जो कुलीन अतुल वैभवशाली महीपति की राजसुता थी, मेरे भाई युवराज सालह को राज्य-भार सौंप संसार यात्रा की।

कोई शत्रु जो चिरकाल से घात में था पिता की मृत्यु सुन सहसा आक्रमण कर भाई को पराजित कर दिया। सहज ही राज

सिंहासन पर उसका अधिकार होगया। तब अज्ञात रूप से हम वहीं रहने लगे।

एक दिन भाई ने कहा—"शत्रु पर विजय पाने की चेष्टा करने के पूर्व गुलनार को विवाह देना समुचित है। स्वदेश में ऐसा कोई राजा नहीं दीखता जिसे गुलनार को अर्पितकर सन्तुष्ट होऊं ऐसी दशा में किसी मृत्युलोक वासी राजा के सङ्ग विवाह देने से गुलनार की समृद्धि के अतिरिक्त हमें शत्रु विध्वस में साहाय्य मिलने की सम्भावना है।"

माता और भाई का परामर्श सुन मैंने कुण्ठित हो कहा "प्राचीन काल से अर्वाचीन समय तक कोई अतल राजकुमारी मृत्युलोक के सम्राट की पाणिग्रहीता नहीं बनी ऐसी दशा में एक कुलीन स्वाभिमानी राजकुमारी के लिए ऐसा सोचना निरन्तर भूल है।"

सालह ने अनेक प्रलोभन देकर कहा कि यद्यपि मुझे किसी का पक्ष नहीं है परन्तु यह कहना सर्वथा निर्मूल है कि मृत्युलोक वासी अकुलीन और स्वार्थी होते है किन्तु उनकी शिष्ट नीति का सादृश्य पाताल वासी स्वप्न में भी नहीं कर सकते।

भाई का परामर्श सुन मैं अति विषन्न हुई। भाई को किसी काम में व्यस्त देख अज्ञात रूप से नदी से निकल मेहताब द्वीप की ओर चल दी।

द्वीप में प्रविष्ट हो मैं एक सुनसान बन में सो रही यद्यपि मैंने किसी से साक्षात न हो इसकी अधिक सावधानता की, परन्तु मुम्ताज नामक कोई धनी वहाँ आ निकला। मुझे अचेत पा अपने सेवकों द्वारा अपने घर लिवा ले गया उसने अपनी काम पिपासा तृप्त करने की अनेक चेष्टा की परन्तु मैंने अपने कौशल से उसे ऐसा दण्ड दिया कि विवश हो उसने मुझे एक व्यापारी को बेच दिया।

व्यापारी सदाचारी था उसने मेरा नाम तक न पूछा बड़े शिष्टाचार से आपको भेंट दे दिया। वरन् सच तो यह है कि आपकी अतुल

कृपा ने मुझे वश कर लिया यदि आपके हृदय में अनिवार्य प्रेम न होता तो मैं कदापि आपकी होकर न रहती।

ईरान नरेश गुलनार की विचित्र कथा सुनकर अति विस्मय से कहने लगा—"रानी तू कुलीन राजकुमारी है यह जानकर मेरे हर्ष की सीमा न रही। वास्तव में ऐसा रमणी रत्न चराचर में बड़ी प्रारब्ध से मिलता है। अस्तु मैं आज ही तुझे राजमहिषी और तेरे गर्भ जात को युवराज बनाने की घोषणा कराये देता हूं तुझे उचित है कि पतिव्रत-धर्म पालने में सदैव तत्पर रहे।" यह कहकर राजा ने जल में रहने का रहस्य पूछा।

गुलनार ने कहा—"जिस प्रकार आप वायुमंडल में सानन्द विचरते हैं उसी प्रकार हम जल में निवास करते हैं. यहां की नाईं जल में भी अनेक देश प्रदेश हैं जो राजाओं के आधिपत्य में हैं वरन् पृथ्वी से जल क्षेत्र तीन भाग अधिक है। यहां पर मिट्टी के महल प्रायः पाये जाते हैं परन्तु जल में राजप्रसाद श्वेत प्रस्तर, सीप और मूंगा इत्यादि से निर्मित होते हैं। जल अश्व सीप मंडित गाड़ियों में जोते जाते हैं। सामुद्रीय देवियां बड़ी साहसी चतुर और रसिक होती हैं, राजन् मैं अपनी माता और भाई के दर्शनों को लालायित ही नहीं वरन् चिन्तित रहती हूं यदि वे मुझे राजमहिषी पद पर विभूषित देखेंगे तो उनके हर्ष की सीमा न रहेगी।"

राजा ने पूछा—'किसी प्रकार उनसे साक्षात् हो सकता है?" राजा की उत्कण्ठा देख गुलनार ने अग्नि-प्रज्वलित की जब राजा दूसरे कमरे में चला गया तो गुलनार ने चन्दन सुलगाया। धुंआ उठते ही उसने किसी मन्त्र का अनुष्ठान किया। इस प्रयोग से नदी का जल ज्वार भाटे की नांई ऊंचा उठने लगा। जब प्रासाद और नदी का धरातल समान होगया तो स्वयमेव जल फटकर स्वच्छ मार्ग दृष्टि आने लगा।

थोड़ी देर में एक युवक शिर पर मुकुट धारण किये जिसकी मूंछें हरित वर्ण थीं, विद्यमान हुआ, पुनः एक प्रौढ़ा रानी और क्रमशः

उसके पीछे पांच समवयस्का युवतियां निकलीं।

गुलनार सबकी उचित अभ्यर्थना कर अपने कमरे में लिवा ले गई। प्रत्येक आल्हाद से बार २ गुलनार को कठ से लगाते थे।

गुलनार की माता फराशी ने अश्रु डबडबाकर कहा—"पुत्री तुझे देख हमारे आनन्द की सीमा नहीं रही। तेरे भाग जाने से हमें जो दुःख हुआ अकथनीय है। सबके पूर्व संक्षेप में तू अपनी कथा सुनादे।"

गुलनार माता के चरणों में गिर कहने लगी—"वास्तव में स्वेच्छाचारी होकर मैंने अनेक कष्ट सहन किये। अब मुझे अनुभव हुआ है कि थल वासी हमसे कहीं अधिक सभ्य होते हैं।"

बीच में बाधा देकर सालह ने कहा—"बहिन, घर चल कर अपनी कथा सुनाइयो।"

गुलनार ने शिर हिलाकर कहा—"मेरे कारण राजा ने अपनी विवाहित और अविवाहित समस्त स्त्रियों को त्याग मुझे राज महिषी बनाया है। मुझे चार महीने का गर्भ है ऐसी दशा में मैं आपके संग कैसे जा सकती हूँ। यह कहकर गुलनार ने दासियों को भोजन लाने की आज्ञा दी।

जब भोजन आगया तो सालह ने कहा—"हम बिना राजा के कैसे भोजन करें उन्हें बुला लाओ।"

थोड़ी देर में गुलनार राजा को लिवा लाई। राजा ने उचित अभिवादन पश्चात् परस्पर भोजन आस्वादन करना प्रारम्भ किया।

बहिन के प्रति राजा का असीम स्नेह देख सालह ने कहा—"ईश्वर तुम दोनों को चिरायु करे, दाम्पत्य सुख उपभोग करो।"

भोजन पश्चात राजा ने सबको सुसज्जित शयनागार में शयन कराया प्रातः पुनः अनेक सुस्वादु भोजन बनवाये। निदान इस प्रकार राजा ने सबको बहुत दिनों तक बड़े सन्मान से अपने यहां आतिथ्य स्वरूप रक्खा। इस अवसर में गुलनार ने शशि की अनुहार अति सुन्दर पुत्र प्रसव किया।

राजा ने बड़े समारम्भ से नामकरण कर बदर नाम रक्खा रानी फराशी ने रीत्यानुसार षष्ठी के दिन सबको वस्त्रालंकार पारितोषिक दिये।

सालह ने भानजे को अंक में लेकर बहुत प्यार किया और थोड़ी देर इधर उधर घूम फिर कर नदी में कूद पड़ा। ईरान नरेश यह दृश्य देख अति विषन्न हुआ उसे निश्चय हो गया कि अब पुत्र का मुख अवलोकन करना अति दुरूह है।

राज महिषी गुलनार ने राजा को असमंजस में देख धैर्य देकर कहा—"घबराइये नहीं राजकुमार जल थल दोनों स्थानों में रह सके इसी शिक्षा के लिए भाई नदी में कूदा है।

अभी प्रतीक्षा करते देर न हुई थी कि सालह नदी से बाहर निकल कहने लगा—"आपको सन्देह तो अवश्य ही हुआ होगा परन्तु आज से हम इसी प्रकार प्रभो सुलेमान आदेशित महामन्त्र का अनुष्ठान कर नव शिशु को नदी में ले जा पाताल वासी बनाया करते हैं।

निदान सालह ने नवजात भानजे को धात्री को देकर एक छोटा सा बक्स जो वह अपने संग लाया था, खोला उसमें कपोत के अण्डे के समान ३०० माणिक तथा इतने ही अमूल्य लाल, हीरा और प्रत्येक दश २ लड़ी की मुक्ताओं की माला इत्यादि रत्न ईरान नरेश को भेंट कर कहा—"बहिन गुलनार का हमें बहुत दिनों से कुछ समाचार नहीं मिला था अनायास ही बुलाने से हम अपने सङ्ग कुछ न ला सके थे बड़ी सकुच थी यद्यपि यह स्वल्प भेंट आपके योग्य नहीं है तथापि हमारी श्रद्धा देख प्रेमोपहार स्वरूप आप स्वीकार कर आभारी बनावेंगे।

राजा ने बक्स नेत्रों से लगा अनेक धन्यवाद देते हुए कहा—आपके निश्छल प्रेम ने मेरे हृदय पर अधिकार जमा लिया है। मैं सच कहता हूं इतने अमूल्य रत्न यहां किसी चक्रवर्ती के कोष में भी न निकलेंगे।

थोड़े दिन और रहकर सालह बिदा हो अपने देश समन्दाल को

चला गया । यदा कदा बदर को देख भी जाया करता था ।

बदर जब पांच वर्ष का हुआ विद्यारम्भ कराया गया विवेचना शक्ति मनोज्ञ थी थोड़े ही काल मे बदर अनेक विद्या रण कौशल्य, राजनीति इत्यादि में पारगामी हो गया ।

पन्द्रह वर्ष की किशोरावस्था में बदर युवराज पद पर विभूषित हुआ वरन् उसकी न्याय परता देख समस्त राज्य का भार उसी पर डाल दिया ।

राजा सन्तुष्ट हो तीर्थ यात्रा करने लगा परन्तु पर्यटन करने से उसका स्वास्थ्य बिगड़ गया । वह शीघ्र ही स्वदेश लौट आया । नागरिक धनी मानी मन्त्री और प्रधान राज कर्मचारी गण इत्यादि एकत्रित कर बदर के आधिपत्य में राजभक्त रहने का वचन ले संसार यात्रा की ।

बदर ने पिता को समाधिस्थ किया जब राजा की मृत्यु का समाचार सालह ने सुना तो बदर को आश्वासन देने ईरान आया और रात को निराले में बहिन से कहने लगा—"बड़े शोक से कहना पड़ता है कि तुम्हें बदर के विवाह की कुछ चिन्ता नहीं है । कहो तो मैं ही खोज करूं । (बदर की ओर देखकर) सो जावे तो एक राजकुमारी का वृत्तान्त सुनाऊं ।

बदर गहरी नीद में है यह देख गुलनार ने आग्रह पूर्वक पूछा दीर्घ निश्वास त्याग कर सालह ने कहा—"राजकुमारी जवाहिर अभी कहीं विवाही नहीं गई, वह साक्षात स्वर्गराज की अधिष्ठात्री देवी है उसके लिए कतिपय राजा लालयित हो रहे हैं परन्तु उसका पिता बड़ा अभिमानी है अतएव यही कारण सावधानता का है कदाचित बदर सुन पावे और मोहित हो उसे पाने की चेष्टा में विफल मनोरथ हो क्योंकि जवाहिर वास्तव में असामान्या सुन्दरी युवती है (जेब से निकालकर) यह देखो उसका चित्र !

बदर वास्तव में सोया नहीं था वह चुप चाप सब सुना किया

परन्तु बदर कुछ सुने न इस भय से सालह और गुलनार दूसरे कमरे में चले गये। इस अवसर में बदर ने उठकर चित्र देखा। ओह इतना सौन्दर्य! नवीन यौवन की छटा अंग २ से फटी पड़ती है। बदर मोहित हो शय्या पर गिर पड़ा। किस प्रकार राजकुमारी जवाहिर लाभ कर सकूं रात बीत गई परन्तु इस प्रश्न की निवृत्ति न हुई प्रभात होने पर जवाहिर के ध्यान में खान पान सब त्याग दिया।

सालह यह दशा देख कारण पूछने लगा। कदाचित प्यारी के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त कर सकूं यह सोच बदर ने कहा—"मातुल, १-२ दिन आपके संग में मृगया सुख उपभोग करूं यही एक मात्र आकांक्षा है।

निदान सालह और बदर आखेट को चल दिये। मध्यान्ह तक दोनों का संग रहा परन्तु उस भूमि की उष्णतावश एक दूसरे से पृथक हो गये।

बदर ने घोड़ा एक वृक्ष से बांध दिया और वियोग दुःख से उत्पीड़ित हो नदी तट पर बैठ अश्रु धारा से अपना वक्षःस्थल भिगोने लगा।

सालह बदर को न पा खिन्न हो खोजता हुआ नदी तट पर आया बदर को जवाहिर! हृदयेश्वरी जवाहिर!! उच्चारते देख अति विस्मित हुआ—"जान पड़ता है तुमने हमारी रात की गुप्त मन्त्रणा सुन ली है।"

"हां सुना ही नहीं वरन् जवाहिर प्यारी का सुन्दर चित्र भी देख लिया है। मैं सत्य कहता हूं यदि इसी प्रकार कुछ दिन वियोग पीड़ा रही तो उन्माद ही नहीं वरन् मुझे जीवित न पाओगे। उचित यही है मुझे स्वदेश ले चलकर अवा......।" इतना कहते २ बदर का कंठ भग्न होगया, नयनाश्रु झरने लगे।

सालह ने धैर्य देकर कहा—"अपने यहां लिवा जाने में मुझे निरन्तर हर्ष है परन्तु बहिन की आज्ञा बिना......।"

बीच में ही बाधा देकर बदर बहुत हठ करने लगा। । निदान बदर का जीवन संकटापन्न देख सालह ने अपने घर लेजा अपनी माता फराशी से समस्त वृत्तान्त कह सुनाया। यद्यपि माता अति विषन्न हुई परन्तु मदनोन्मत्त बदर की विह्वलता देख उसे दया आई उसने उसी समय सालह को अनेक रत्न देकर समन्दाल की सेवा में भेजा।

सालह के पहुंचने पर समन्दाल ने अभिवादन पश्चात् अर्द्धासन दे कुशल पूछी। सालह ने रत्न मणि भेंट कर अनेक नय विनय पश्चात् अपना अभीष्ट निवेदन किया।

समन्दाल सुनकर अति क्रुद्ध हुआ। उसने सालह के माता-पिता और बदर को घृणित शब्दों में गालियाँ देकर एक प्रधान को आज्ञा दी—"इस पामर का अभी शिर चूर्ण कर दो। यह उपहास कर मुझे नीच कहता और स्वयं कुलीन बनता है।"

उक्त कठिनाज्ञा सुन सालह कौशल से भागकर अपनी सेना में पहुंचा। वरन् सैनिकों के आग्रह से उसी समय समन्दाल पर आक्रमण कर दिया।

समन्दाल की बहुत सी सेना हत हुई और कुछ रणक्षेत्र से भाग गई। सालह ने समन्दाल को बन्दी कर अंतःपुर में प्रवेश किया। परन्तु राजकुमारी जवाहिर पहले ही भयभीत हो कहीं बन में जा छिपी थी।

किसी ने सालह के प्रति समन्दाल का कटु बर्ताव आकर सुनाया तो बदर दुखित हो अपने देश को चल दिया। मार्ग में जहाँ जवाहिर छिपी हुई थी बदर भी प्रेमाकर्षक से उसी बन में पहुंचा वह व्यथित हो एक वृक्ष के नीचे लेटा ही था कि जवाहिर २ प्रिय नाम् कर्णगत हुआ वह विगत मद मतवारे की नाईं उठकर उसी शब्द की ओर चल दिया।

सामने ही जवाहिर को बैठा देख बदर अचेत होगया। जब वह सचेत हुआ तो अति विनीत भाव से कहने लगा—"कल्याणी पहिले

अपना प्रिय नाम बताकर मेरा कुतूहल दूर करें ।

मेरा नाम जवाहिर है मैं समन्दाल की एक मात्र सुता हूं सालह नामक किसी राजा ने पिता को बन्दी कर लिया यह देख मैं यहाँ आ छिपी हूं ।"

मेरे कारण आपको बहुत सुख मिलने की सम्भावना है यह कह कर बदर ने जवाहिर का हाथ पकड लिया ।"

"आपके दर्शन मात्र से सब दुःख भाग गया हृदय में प्रेम का संचार हुआ है । आप मेरी सेवा सुश्रूषा से प्रमुदित होंगे ।" यह कह कर जवाहिर ने बदर का परिचय लिया ।

बदर ने अपनी आत्म कथा कह सुनाई । जवाहिर की मुखच्छवि मलीन पड़ गई । इस विपत्ति का मूल कारण बदर ही है यह सोच शत्रुता का आविर्भाव हुआ परन्तु भाव भंग कर जवाहिर ने अपना कोमल कर बदर की ओर बढ़ाकर कहा—"निरसंदेह तुम मेरे योग्य ही हो यदि पिता तुम्हें देख लेते तो यह काहे को वज्रपात होता ।"

बदर ने जवाहिर का कर चुम्बन किया परन्तु उसने घृणा कर बदर के मुख पर थूक दिया और कुछ मन्त्र पढ़कर कहने लगी—"नराधम तू अभी विचित्र लाल पक्षी बनजा ।"

निदान बदर उसी समय विचित्राकार पक्षी बन गया । जवाहिर ने एक सेविका को आज्ञा दी कि इसे शीघ्र किसी पर्वत शिखर पर छोड़ आ !"

सेविका बदर के सौन्दर्य और शिष्टाचार से प्रवाहित हो उसे उर्वरा द्वीप में छोड़ आई ।"

जवाहिर कहीं न मिली तो सालह ने समन्दाल को बन्द कर अपने घर की ओर पयान किया । उधर गुलनार पुत्र वियोग से आहत अपनी माता के पास आई परन्तु बदर वहाँ भी न मिला । अस्तु माता ने बदर खोजने का वचन और सान्त्वना देकर उसे ईरान लौटा दिया ।

बदर पक्षी बना अति दुःखित दिन को दाने पानी की खोज में

बीच में ही बाधा देकर बदर बहुत हठ करने लगा। निदान बदर का जीवन संकटापन्न देख सालह ने अपने घर लेजा अपनी माता फराशी से समस्त वृत्तान्त कह सुनाया। यद्यपि माता अति विषन्न हुई परन्तु मदनोन्मत्त बदर की विह्वलता देख उसे दया आई उसने उसी समय सालह को अनेक रत्न देकर समन्दाल की सेवा में भेजा।

सालह के पहुंचने पर समन्दाल ने अभिवादन पश्चात् अर्द्धासन दे कुशल पूछी। सालह ने रत्न मणि भेंट कर अनेक नय विनय पश्चात् अपना अभीष्ट निवेदन किया।

समन्दाल सुनकर अति क्रुद्ध हुआ। उसने सालह के माता-पिता और बदर को घृणित शब्दों में गालियाँ देकर एक प्रधान को आज्ञा दी—"इस पामर का अभी शिर चूर्ण कर दो। यह उपहास कर मुझे नीच कहता और स्वयं कुलीन बनता है।"

उक्त कठिनाज्ञा सुन सालह कौशल से भागकर अपनी सेना में पहुंचा। वरन् सैनिकों के आग्रह से उसी समय समन्दाल पर आक्रमण कर दिया।

समन्दाल की बहुत सी सेना हत हुई और कुछ रणक्षेत्र से भाग गई। सालह ने समन्दाल को बन्दी कर अंतःपुर में प्रवेश किया। परन्तु राजकुमारी जवाहिर पहले ही भयभीत हो कहीं बन में जा छिपी थी।

किसी ने सालह के प्रति समन्दाल का कटु बर्ताव आकर सुनाया तो बदर दुखित हो अपने देश को चल दिया। मार्ग में जहाँ जवाहिर छिपी हुई थी बदर भी प्रेमाकर्षक से उसी बन में पहुंचा वह व्यथित हो एक वृक्ष के नीचे लेटा ही था कि जवाहिर २ प्रिय नाम् कर्णगत हुआ वह विगत मद मतवारे की नाईं उठकर उसी शब्द की ओर चल दिया।

सामने ही जवाहिर को बैठा देख बदर अचेत होगया। जब वह सचेत हुआ तो अति विनीत भाव से कहने लगा—"कल्याणी पहिले

अपना प्रिय नाम बताकर मेरा कुतूहल दूर करें ।

मेरा नाम जवाहिर है मैं समन्दाल की एक मात्र सुता हूं सालह नामक किसी राजा ने पिता को बन्दी कर लिया यह देख मैं यहाँ आ छिपी हूं ”

मेरे कारण आपको बहुत सुख मिलने की सम्भावना है यह कह कर बदर ने जवाहिर का हाथ पकड लिया ।”

“आपके दर्शन मात्र से सब दुःख भाग गया हृदय में प्रेम का संचार हुआ है । आप मेरी सेवा सुश्रूषा से प्रमुदित होगे ।” यह कह कर जवाहिर ने बदर का परिचय लिया ।

बदर ने अपनी आत्म कथा कह सुनाई । जवाहिर की मुखच्छवि मलीन पड़ गई । इस विपत्ति का मूल कारण बदर ही है यह सोच शत्रुता का आविर्भाव हुआ परन्तु भाव भंग कर जवाहिर ने अपना कोमल कर बदर की ओर बढ़ाकर कहा—“निस्संदेह तुम मेरे योग्य ही हो यदि पिता तुम्हें देख लेते तो यह काहे को वज्रपात होता ।”

बदर ने जवाहिर का कर चुम्बन किया परन्तु उसने घृणा कर बदर के मुख पर थूक दिया और कुछ मन्त्र पढ़कर कहने लगी—“नराधम तू अभी विचित्र लाल पक्षी बनजा ।”

निदान बदर उसी समय विचित्राकार पक्षी बन गया । जवाहिर ने एक सेविका को आज्ञा दी कि इसे शीघ्र किसी पर्वत शिखर पर छोड़ आ !”

सेविका बदर के सौन्दर्य और शिष्टाचार से प्रवाहित हो उसे उर्वरा द्वीप में छोड़ आई ।”

जवाहिर कहीं न मिली तो सालह ने समन्दाल को बन्द कर अपने घर की ओर पयान किया । उधर गुलनार पुत्र वियोग से दुःखित अपनी माता के पास आई परन्तु बदर वहाँ भी न मिला । अस्तु माता ने बदर खोजने का वचन और सान्त्वना देकर उसे ईरान लौटा दिया ।

बदर पक्षी बना अति दुःखित दिन को दाने पानी की खोज में

बीच में ही बाधा देकर बदर बहुत हठ करने लगा। निदान बदर का जीवन संकटापन्न देख सालह ने अपने घर लेजा अपनी माता फराशी से समस्त वृत्तान्त कह सुनाया। यद्यपि माता अति विषन्न हुई परन्तु मदनोन्मत्त बदर की विह्वलता देख उसे दया आई उसने उसी समय सालह को अनेक रत्न देकर समन्दाल की सेवा में भेजा।

सालह के पहुंचने पर समन्दाल ने अभिवादन पश्चात् अर्द्धासन दे कुशल पूछी। सालह ने रत्न मणि भेंट कर अनेक नय विनय पश्चात् अपना अभीष्ट निवेदन किया।

समन्दाल सुनकर अति क्रुद्ध हुआ। उसने सालह के माता-पिता और बदर को घृणित शब्दों में गालियाँ देकर एक प्रधान को आज्ञा दी—"इस पामर का अभी शिर चूर्ण कर दो। यह उपहास कर मुझे नीच कहता और स्वयं कुलीन बनता है।"

उक्त कठिनाज्ञा सुन सालह कौशल से भागकर अपनी सेना में पहुंचा। वरन् सैनिकों के आग्रह से उसी समय समन्दाल पर आक्रमण कर दिया।

समन्दाल की बहुत सी सेना हत हुई और कुछ रणक्षेत्र से भाग गई। सालह ने समन्दाल को बन्दी कर अंतःपुर में प्रवेश किया। परन्तु राजकुमारी जवाहिर पहले ही भयभीत हो कहीं बन में जा छिपी थी।

किसी ने सालह के प्रति समन्दाल का कटु बर्ताव आकर सुनाया तो बदर दुखित हो अपने देश को चल दिया। मार्ग में जहाँ जवाहिर छिपी हुई थी बदर भी प्रेमाकर्षक से उसी बन में पहुंचा वह व्यथित हो एक वृक्ष के नीचे लेटा ही था कि जवाहिर २ प्रिय नाम कर्णगत हुआ वह विगत मद मतवारे की नाईं उठकर उसी शब्द की ओर चल दिया।

सामने ही जवाहिर को बैठा देख बदर अचेत होगया। जब वह सचेत हुआ तो अति विनीत भाव से कहने लगा—"कल्याणी पहिले

अपना प्रिय नाम बताकर मेरा कुतूहल दूर करें ।

मेरा नाम जवाहिर है मैं समन्दाल की एक मात्र सुता हूं सालह नामक किसी राजा ने पिता को बन्दी कर लिया यह देख मैं यहां आ छिपी हूं ।"

मेरे कारण आपको बहुत सुख मिलने की सम्भावना है यह कह कर बदर ने जवाहिर का हाथ पकड़ लिया ।"

"आपके दर्शन मात्र से सब दुःख भाग गया हृदय में प्रेम का संचार हुआ है । आप मेरी सेवा सुश्रूषा से प्रमुदित होंगे ।" यह कह कर जवाहिर ने बदर का परिचय लिया ।

बदर ने अपनी आत्म कथा कह सुनाई । जवाहिर की मुखच्छवि मलीन पड़ गई । इस विपत्ति का मूल कारण बदर ही है यह सोच शत्रुता का आविर्भाव हुआ परन्तु भाव भंग कर जवाहिर ने अपना कोमल कर बदर की ओर बढ़ाकर कहा—"निस्संदेह तुम मेरे योग्य ही हो यदि पिता तुम्हें देख लेते तो यह काहे को वज्रपात होता ।"

बदर ने जवाहिर का कर चुम्बन किया परन्तु उसने घृणा कर बदर के मुख पर थूक दिया और कुछ मन्त्र पढ़कर कहने लगी—"नराधम तू अभी विचित्र लाल पक्षी बनजा ।"

निदान बदर उसी समय विचित्राकार पक्षी बन गया । जवाहिर ने एक सेविका को आज्ञा दी कि इसे शीघ्र किसी पर्वत शिखर पर छोड़ आ !"

सेविका बदर के सौन्दर्य और शिष्टाचार से प्रवाहित हो उसे उर्वरा द्वीप में छोड़ आई ।"

जवाहिर कहीं न मिली तो सालह ने समन्दाल को बन्द कर अपने घर की ओर पयान किया । उधर गुलनार पुत्र वियोग से संतप्त अपनी माता के पास आई परन्तु बदर वहाँ भी न मिला । अस्तु माता ने बदर खोजने का वचन और सान्त्वना देकर उसे ईरान लौटा दिया ।

बदर पक्षी बना अति दुःखित दिन को दाने पानी की खोज में

रहता रात को किसी वृक्ष पर बसेरा लेता। एक दिन कोई व्याध उधर आ निकला वह बदर को देखकर अति विस्मित हुआ। जाल बिछाकर अनायास ही उसे पकड़ लिया और पिंजरे में बन्द कर चौक में लाया।

ऐसा विचित्र पक्षी देख दर्शकों का कौतूहल बढ़ गया। प्रत्येक उसे क्रय करने की उत्कण्ठा से मूल्य पूछने लगा परन्तु व्याध ने उसे राजा को जाकर भेंट किया राजा कहीं जा रहा था बदर को स्वर्ण-मण्डित पिंजरा में बन्द कर चला गया।

राजा जब लौटकर आया तो पिंजरा खोल बदर को हाथ पर बैठा लिया। पक्षी ने कुछ दाना पानी नहीं खाया, यह जान कर राजा ने उसे भोजन मन्च पर छोड़ दिया।

बदर प्रत्येक पात्र से कूद २ कर खाने लगा। यह दृश्य देख विस्मित हो राजा ने रानी को बुलाया।

रानी ने पक्षी देखकर अपना मुख छिपा लिया—"यह पक्षी नहीं ईरान का राजा बदर है राजकुमारी जवाहिर ने इसे मन्त्र बल से पक्षी बना दिया है।"

राजा ने विस्मय से पूछा—"क्या यह पुनः मानव रूप में आ सकता है?"

"हां अभी आता है" यह कहकर रानी ने मन्त्र पूत जल पक्षी पर छिड़क दिया।

बदर अपने रूप में आ गया वह राजा के चरणों में गिर पड़ा। राजा ने बदर को हृदय से लगा भोजन कराया।

बदर ने अपनी दुःखद कथा आद्योपान्त सुनाकर विदेश जाने की इच्छा प्रकट की। अस्तु राजा ने एक जलयान निश्चय कर दिया।

बदर राजा से विदा हो ईरान की ओर चल दिया। दस दिन पर्यन्त यान निर्विघ्न चला किया। ग्यारहवें दिन यान की रस्सी टूट गई वह एक पर्वत से टकरा कर खण्ड २ हो गया। प्रायः सब ही डूब गये। बदर एक टूटे काष्ठ के अवलम्ब से तट पर जा लगा। बड़ी

कठिनता से वह थल में आया। सहसा अनेक पशु गाय घोड़े इत्यादि बदर के चतुर्दिक खड़े होकर उसे बाहर निकलने से रोकने लगे। ज्यों त्यों कर बदर नगर के द्वार पर पहुंचा वहाँ भी पशुओं ने उसे रोका।

बदर ने नगर में प्रविष्ट हो देखा जनशून्य सुनसान बस्ती है। उसे भय हुआ पशु क्यों रोकते थे? यही सोचते हुए वह बहुत घूमा परन्तु किसी से साक्षात् न हुआ एक दूकान पर कोई वयोवृद्ध मेवा शुद्ध करके भीतर रखते जाते थे वह बदर को देख पूछने लगे—"कहां रहते हो, यहां कैसे आना हुआ।"

बदर ने संक्षेप में अपनी सब कथा कह सुनाई। वृद्ध ने दीर्घ-निस्वास त्याग कर कहा—"पुत्र, यह माया नगर है मन्मथ व्यथित एक राजकुमारी ही यहां हर्त्ता कर्त्ता है। तुम्हारी तरह जब कोई युवक यहां आता है तो राजकुमारी सादर उसे अपने पास बुला लेती है और आत्म समर्पण कर कुछ दिन बड़े सुख से रखती है जब काम पिपासा तृप्त हो जाती है तो पशु बनाकर छोड़ देती है। नगर बाहर जितने पशु तुम्हें मिले है इसी विलासिनी के षडयन्त्र में फंस इस दशा को पहुंचे हैं। वे बेचारे मूक होने से कुछ कह नहीं सकते और न पथिक ही कुछ समझ सकता है।"

वृद्ध के मुख से भीषण सम्वाद सुन बदर स्तम्भित रह गया—"मेरी रक्षा करो।" यह कहकर वृद्ध के चरणों में गिर पड़ा।

वृद्ध ने आश्वासन देकर कहा—"पुत्र, घबराओ नहीं मेरे पास रहने से तुम्हें कुछ कष्ट न भोगना पड़ेगा।"

निदान बदर वृद्ध अब्दुल्ला की दुकान में रहने लगा। जब कोई पूछता वृद्ध अपना भतीजा बता देता। इस प्रकार एक मास पर्यन्त बदर दुकान में रहा आया।

एक दिन राजकुमारी की सवारी वहां होकर निकली—"सब के पूर्व एक सहस्र सैनिक निशित कृपाण लिये निकले। इनके पीछे एक सहस्र अनुमान अश्वारूढ सेवक समूह, इन सबके पीछे अनेक समवयस्का

रमणीगण छूरिका लिए निकलीं राजकुमारी लीप इसी समूह के बीचो बीच बड़े समारम्भ से घोड़े पर सवार थी। जो कोई दुकान के आगे होकर निकलता था बड़ी श्रद्धा से वृद्ध को प्रणाम करता था।

जब राजकुमारी दुकान के समीप आई तो बदर को देखते ही मोहित होगई उसने वृद्ध अब्दुल्ला को प्रबोध देकर पूछा—क्या यह तुम्हारा दास है ?"

वृद्ध ने नम्रतापूर्वक कहा—"यह दास नहीं वरन् मेरा भतीजा है अपुत्रक होने से इसे मैंने अपना पोष्य पुत्र बनाया है मेरी सम्पत्ति का एक मात्र यही उत्तराधिकारी होगा।

विलासिनी राजकुमारी बदर को देखते ही मुग्ध होगई थी एक क्षण का वियोग भी असह्य था वह दीनता पूर्वक कहने लगी—'धार्मिक पिता मैं पवित्र अग्नि की सौगन्ध देकर कहती हूं बड़े सुख से इसे रक्खूंगी।'

यद्यपि वृद्ध ने ग्रामीण असभ्य बताकर क्षमा प्रार्थना की परन्तु राजकुमारी ने कामातुर हो कुछ ध्यान न दिया। अस्तु विवश हो वृद्ध ने कल भेजने का वचन दे इस प्रकार बदर को समझाया—"तुम निर्भीक चले जाना वचन बद्ध होने से यह कुछ कपट न करेगी। यदा कदा मैं भी तुम्हारी सुधि लेता रहूंगा समयासमय सहायता देता रहूंगा।

दूसरे दिन प्रातः ही राजकुमारी दुकान पर आ कहने लगी—"तुम्हारे भतीजे ने ऐसा मेरे हृदय पर अधिकार पाया है कि अनेक चेष्टा करने पर भी नींद नहीं आई एक २ पल पहर समान बीता। जो आग मेरे हृदय में धधक रही है उसके शान्त्यर्थ.........।

वृद्ध ने अग्नि को साक्षी लेकर बदर को उसे सौंप दिया राजकुमारी ने एक सहस्र मुद्रा वृद्ध को देकर नाम पूछा।

वृद्ध ने मुद्रा लौटाकर कहा—"इसका नाम बदर है।"

राजकुमारी ने हठपूर्वक मुद्रा देकर कहा—"बदर ! (चन्द्र) नहीं २ भूल हुई वह तो तमोवती रमणियों को तप्त करने वाला

भानु है ।"

निदान राजकुमारी लीप आगे २ और बदर पीछे पीछे अन्तःपुर पहुंचा मार्ग में जो देखता पश्चात्ताप करता ।

राजकुमारी ने अकुला कर बदर को हृदय से लगा लिया रात्रि को अनेक सुस्वादु भोजन पश्चात् सुगन्धित मदिरा पान कराई और बड़े आमोद से एक ही शय्या पर शयन किया ।

चालीस दिन पर्यन्त बदर बड़े सुख से रहा जिस प्रकार गाय बन में नई नई दूब खोजा करती है उसी प्रकार राजकुमारी की प्रेम वासना शिथिल होगई अब और किसी नवीन पुरुष की कामना होने लगी उसने बदर को पशु रूप में परिणत करने की आकांक्षा में अर्द्ध रात्रि अनुमान शय्या से उठकर अनुष्ठान प्रारम्भ किया । परन्तु बदर जग रहा था राजकुमारी की यह दशा देख उसे चिन्ता होने लगी । हठात् राजकुमारी ने बकस खोल कोई पीतवर्ण चूर्ण निकाला और मन्त्र बल से एक ओर छोटा सा सरोवर उत्पन्न किया । उसी में से थोड़ा जल ले उसने एक पात्र में डाला जिसमें किंचित आटा था । आटा गूंदकर तथा अनेक डिबियों में से न जाने क्या डालकर फेनी समान छोटी सी रोठी बनाई और अग्नि पर फेंक कर एक ओर रखदी और यथा स्थान सब वस्तु रखकर पुनः बदर के संग आ सोई ।

प्रातः शौच स्नानादि से निवृत्त हो बदर ने पूछा—"यदि आप आज्ञा दें तो मैं अपने चचा अब्दुल्ला को देख आऊं ।

निदान राजकुमारी से आज्ञा ले बदर अबदुल्ला के पास आया और वृत्तान्त कर सुनाया ।

अबदुल्ला ने कहा—"तुम भय न करो यही फेनी तुम्हें खिलाने को बनाई है ।" यह कहकर अबदुल्ला ने स्वयम् दो फेनी बनाकर उसे समझा दिया कि जब वह मायावी अपनी फेनी तुझे दे कौशल से उसे छिपाकर इसमें से खा लेना और तब हठ करके पुनः उसी को खिला देना ।

निदान फेनी लेकर बदर लौट आया। "ओह, बड़ी देर की।" राजकुमारी के पूछने पर बदर कहने लगा—"चचा भोजन करने का आग्रह करते थे परन्तु देर होजाने के भय से केवल एक फेनी जिसकी उन्होंने बहुत प्रशंसा की थी लिये आया हूँ ।

"अजी, मैंने भी तुम्हारे लिए एक फेनी बनाई है लो पहले इसे खाओ !" यह कहकर राजकुमारी ने फेनी उपस्थित की ।

"बहुत अच्छा। कहकर बदर ने कौशल से वह फेनी हाथ में रख ली और अपनी खाकर अधिक प्रसंशा की सहसा रालकुमारी ने थोड़ा मन्त्र पूत जल छिड़क कर कहा—"पंगु एक एकाक्षी कुरूप अश्व बन जा ।

बदर पर कुछ प्रभाव न हुआ वह अति विस्मित हुई कदाचित् थोड़ी देर में अश्व बने यही प्रतीक्षा करने लगी ।

बदर ने कहा "आपकी फेनी अति स्वादिष्ट थी अब यह हमारी भी चख लीजे ।

राजकुमारी जानती थी मेरी फेनी बदर खा चुका यह अबदुल्ला की बनाई साधारण फेनी है अस्तु बड़ी प्रसन्नता से उसने खाली । बदर ने थोड़ा जल छिड़क कर कहा—'शीघ्र घोड़ी बन जा !"

कहने की देर थी राजकुमारी त्वरित घोड़ी बन गई । वह बदर के पैरों पर शिर रख क्षमा प्रार्थना करने लगी परन्तु बदर असमर्थ था वह उसे अबदुल्ला के पास ले गया ।

वृद्ध अबदुल्ला ने सब वार्ता सुन राजकुमारी को अनेक धिक्कार दी और लगाम चढ़ा—"थोड़ी देर को भी किसी को न देना न अकेली छोड़ना ।" इत्यादि समझा कर बदर को स्वदेश लौट जाने पर बाध्य किया ।

बदर ने उसी घोड़ी पर चढ़ शीघ्र पयान किया । तीसरे दिन किसी नगर मे पहुंच कर एक वृद्ध से साक्षात हुआ । वृद्ध ने बदर को बातों मे लगाये रखा सहसा एक वृद्धा वहां आकर रुदन करने लगी ।

करुणा से बदर ने कारण पूछा तो वह वृद्धा क्रंदन कर कहने लगी—"मेरे पुत्र की घोड़ी मर गई है वह साक्षात् ऐसी ही थी यदि तुम इसे मुझे बेच दो तो आजन्म तुम्हारी कृतज्ञ रहूंगी।

बदर ने कहा—"वृद्धा माता मैं इसे बेच नहीं सकता।"

'नहीं २ पुत्र शिर न हिलाओ मैं और मेरे पुत्र के प्राण इसी पर निर्भर हैं।" यह कहकर वृद्धा अश्रुधारा से अपना वक्षस्थल भिगोने लगी।

वृद्धा की दरिद्रावस्था देख बदर ने टालने के मिस से कहा—"भाई इसका मूल्य तुमसे न दिया जावेगा मैं एक सहस्र मुद्रा से कम न लूंगा।"

वृद्धा ने उसी समय एक सहस्र मुद्रा वहीं ढेर लगा दीं बदर अति विस्मित हो कहने लगा—"वास्तव मे मैं उपहास करता था इसे किसी मूल्य पर बेचना स्वीकार नहीं है।" परन्तु निकट खड़े हुए वृद्ध ने बदर को मुद्रा लेकर घोड़ी दे देने पर बाध्य कर दिया। निदान विवश हो बदर को घोड़ी देनी ही पड़ी।

बदर मुद्रा उठा नहीं चुका था कि वृद्धा ने घोड़ी पर जल छिड़क उसे राजकुमारी बना दिया।

बदर राजकुमारी को देख वज्राहत की भाँति स्तम्भित रह गया। वास्तव में उक्त वृद्धा राजकुमारी की माता थी पुत्री को घोड़ी रूप में देखकर अति विषन्न हुई।

वृद्धा ने पदाघात कर पश्चिम दिशा में एक विराटकाय दैत्य विद्यमान किया आज्ञानुसार दैत्य एक ओर बदर को और दूसरी ओर राजकुमारी लीप को आकाश की ओर ले उड़ा और क्षणमात्र में राजकुमारी के अन्तःपुर मैं जा उतरा।

राजकुमारी ने बदर को घृणा से देखकर कहा—"दुष्ट तेरे चचा ने मेरे संग जैसा कपट किया देख मैं तुझे कैसा दण्ड देती हूं। यह कह कर राजकुमारी ने बदर को उल्लूक पक्षी बना एक दासी को पिंजरे में

बन्द करने की आज्ञा दी कुछ अन्न जल न देना इसके लिये सतर्क कर दिया।

दासी दयाकर अन्न जल देती रही उसने अबदुल्ला को भीषण काण्ड की सूचना कर दी।

अबदुल्ला ने मन्त्र बल से बर्क नामक दैत्य विद्यमान कर बदर उलूक रूप में है उसकी प्राण रक्षा एवम् दासी को ईरान गुलनार के पास पहुंचाने की आज्ञा दी।

बर्क ने ऐसा ही किया। ईरान पहुंचकर दासी ने गुलनार से बदर का समस्त वृत्तान्त आद्योपान्त कह सुनाया।

गुलनार ने सालह को बुला बदर के छुड़ाने का आग्रह किया अस्तु सालह ने अपनी सेना भेजकर माता और बहिन सहित माया नगर की ओर पयान किया।

माया नगर में प्रवेश कर सालह ने राजकुमारी लीप तथा और भी अनेक नास्तिक अग्नि पूजकों को प्राणदण्ड दे पिंजड़े पर जल छिड़क बदर को वास्तविक मानव रूप बना दिया।

बदर सबसे मिलकर अति प्रसन्न हुआ अस्तु अब सब कोई वृद्ध अबदुल्ला के पास पहुंचे। सेविका को क्या पारितोषिक दें, जो ईरान गई थी। अबदुल्ला ने कहा—'इसका उचित पुरस्कार यही है कि बदर के सङ्ग विवाह कर दिया जावे।"

बदर ने स्वीकार कर कहा—"वृद्ध अबदुल्ला की आज्ञा शिरोधार्य परन्तु मेरा विवाह जवाहिर के सङ्ग अवश्य हो।"

सालह अति प्रसन्न हुआ उसने मन्त्रबल से समन्दाल को बुलाया, समन्दाल प्रधान कर्मचारियों सहित उसी समय उपस्थित होगया।

बदर ने चरण स्पर्श कर प्रार्थना की—"मातुल सालह ने जो पूर्व में आपसे प्रार्थना की थी वह ईरान नरेश बदर सन्मुख विद्यमान है अब दयाकर राजकुमारी जवाहिर के अमूल्य करका मुझे भागी बनाइये।

समन्दाल ने सहर्ष स्वीकार कर एक कर्मचारी को आज्ञा दी—

जवाहिर जहां मिले अभी उपस्थित करो ?"

प्रधान उसी समय जवाहिर को खोज लाया, समन्दाल ने पुत्री को कण्ठ से लगाकर कहा—"मैंने तेरा विवाह बदर के संग कर दिया है आशा है ऐसा वैभवशाली प्रिय-दर्शनीय पति पाकर अपने को सौभाग्यवती समझेगी। ईश्वर तुम्हें चिरजीव रक्खे, दाम्पत्य सुख उपभोग कर अपसे प्रेम और सदाचार के पति प्राण होकर रहो।"

जवाहिर ने अपना अपराध जो क्रोधवश निष्पादन हुआ बदर से क्षमा करा लिया पश्चात् बड़े समारम्भ से विवाह होगया।

जब सब जाने लगे तो बदर की प्रेरणा से सालह ने राजकुमारी के बनाये पशु मन्त्र से वास्तविक मानव रूप में परिणत कर दिये वे सब सालह के चरण स्पर्श कर विदा ले अपने २ घर को चले गये।

—०—

अलफ-लैला

अर्थात्

सहस्र--रजनी--चरित्र

तृतीय भाग

गानव की कथा

सस्पृह सम्राट शाहजमा और दुनियाजाद की प्रेरणा से रात के पिछले पहर में शहरजाद ने अपरिणीत उदविगनी फितना और गानम

के प्रणय की कारुणिक घटना इस प्रकार वर्णन की कि—पूर्व समय में दमिश्क रहिवासी अबू अय्यूब नामक एक धनी व्यापारी था। अति सुन्दर सुरसिक गानम पुत्र रत्न तथा अलफनम्ब नामक रति की प्रकृति पुत्री यही दो सन्तानें थीं। उस समय वहां खलीफा हारूं रसीद के आधीनस्थ सुलेमानात्मज मोहम्मद जेनेबी राज करता था, राजधानी दमिश्क ही थी।

जब गानम ने युवावस्था में पदार्पण किया तो सहसा उक्त व्यापारी ने अगाध सम्पत्ति छोड़ संसार यात्रा की। अस्तु—

अन्त्येष्टि संस्कार पश्चात् एक दिन गानम ने गोदाम में जाकर देखा ११० गठरियां बहुमूल्य वस्तुओं से परिपूर्ण रखी हुई हैं और उन सबके ऊपर मोटे अक्षरों से बुगदाद लिखा हुआ है।

गठरियां देखकर गानम ने अपनी माता से बुगदाद लिखे जाने का कारण पूछा।

माता ने दीर्घ निश्वास त्याग कर कहा—"पुत्र, तेरे पिता का यह नियम था कि वह जब कहीं व्यापारार्थ पर्यटन करता तो इसी प्रकार गठरियां बना जिस देश जाना होता उसका नाम लिख दिया करता था।

गानम ने माता को अन्यमयस्क देख उस समय कुछ न कहा, २-४ दिनों में जब उसका चित्त शान्त होगया तो उसने पिता का व्यवसाय प्रारम्भ कर उक्त गठरियां बुगदाद ले जाने का प्रस्ताव उपस्थित किया।

परन्तु माता को गानम अति प्रिय था उसने सिर हिला कर कहा—"पुत्र, अभी तुम अबोध बालक हो भ्रमण से स्वास्थ्य पर तुम्हारे प्रभाव पड़ेगा। फिर अभी तेरे पिता का दुःख विस्मरण नहीं हुआ कि तेरा वियोग··बस प्राणघातक होकर मुझे चिर दुःखिनी बना देगा। अस्तु अभी थोड़े ही लाभ पर सन्तोष कर यहां के व्यापारियों को ही सब गठरियां बेच दो।"

परन्तु गानम ने हठ करके माता से आज्ञा ले ही ली और अनेक

दास तथा १०० ऊंट क्रयकर ५-६ व्यापारियों के संग बुगदाद का ओर पयान कर दिया। सगुन अच्छा होने से थोड़े ही दिनों में सानन्द बुगदाद पहुंच गया और सब व्यापारी तो सराय में ठहरे परन्तु गानम ने एक विशाल भवन किराय पर लेकर धनिकों की नाईं रहना प्रारम्भ किया।

एक दिन गानम कई रौप्य रचित अंकुश लेकर बाजार में गया व्यापारियों ने अभिवादन पश्चात उच्चासन पर बैठाया वरन् उसी समय सब अटाला मोल ले लिया। इस प्रकार गानम को आशातीत लाभ होगया।

२-४ दिनों पीछे गानम पुनः बाजार की ओर गया परन्तु सब दुकानें बन्द मिलीं उसने विस्मित हो हड़ताल का कारण पूछा।

एक वणिक ने कहा—"आज एक व्यापारी सहसा कालवश हो परलोकगत हुआ है इसे समाविस्थ करने सब गये हुए हैं।"

गानम ने पूछा—"आत्म शांत्यर्थ मृतक के लिए किस मसजिद में प्रार्थना की जावेगी?"

वणिक ने संक्षेप में मार्ग बता दिया अस्तु थोड़ी दूर चलकर गानम ने देखा सब कोई प्रार्थना पश्चात अरथी श्मशान की ओर लिये जा रहे हैं अस्तु वह भी सङ्ग हो लिया गोलाकार नवीन समाधि के निकट अनेक डेरा स्थित हैं। अस्तु वहां पहुंच कर प्रथम मृतक समाविस्थ किया और तब सब मनुष्य डेरों में बैठकर प्रार्थना करने लगे। इस अवसर में रात होगई। गानम ने घर लौटने का विचार किया हठात भोजन मंच पर चुना गया तब गानम को विदित हुआ कि सब कोई इन्हीं डेरों में रात्रि बितावेंगे।

गानम बड़े असमंजस में पड़ गया उसने सोचा कहीं सेंध लगा कर चोर जार किंवा स्वयम् मेरे दास ही सब धन अपहरण कर कहीं भाग न जावें। निदान यही धारणा कर गानम दृष्टि बचा अपने घर की ओर चल दिया परन्तु रात्रि का अन्धकार प्रतिक्षण बढ़ता जाता था मार्ग भूलकर दूसरी ही ओर जा निकला।

ओह, नगर का द्वार बन्द हो गया है ! यह देख गानम बहुत घबड़ाया वह विवश हो निकटस्थ श्मशान में चला गया परन्तु इधर-उधर अस्थि पिन्जर स्यार उलूक के भयानक शब्द तथा भीषण सुनसान के कारण स्थिर न रह सका वह बाहर निकल कर टहलने लगा सहसा दूर से उसे कुछ प्रकाश दिखाई दिया वह भयभीत हो सघन नारियल के वृक्ष पर चढ़कर पत्तों में बैठ उसकी प्रतीक्षा करने लगा ।

थोड़ी देर में तीन सेवक—एक के हाथ में लालटेन और दो भारी बक्स कन्धों पर भार किये उसी श्मशान में आये और गहरा गड्ढा खोदकर बक्स गाड़ चले गये ।

गानम ने सोचा कदाचित् किसी धनी ने कारण वशात् अपना धन यहां रक्षित किया है परन्तु जब सेवक चले गये तो गानम ने बक्स खोदकर निकाला और बड़े कौशल से ताला खोलकर देखने लगा ।

ओह, बक्स में कोई असामान्या सुन्दरी युवती प्रगाढ़ निद्रा में निमग्न है परन्तु हैं ! इसमें सन्चालन शक्ति नहीं है क्या युवती की प्राण-वायु देह पिंजर को परित्याग कर गई । नहीं २ प्राण निकलने पर कमनीयता कहां ! इसी प्रकार सोच निमग्न गानम युवती के सौंदर्य पर मुग्ध हो स्थिर न रह सका उसने बड़ी सावधानता से युवती को स्वच्छ भूमि में लिटा दिया ।

थोड़ी देर में शीतल वायु लगने से अर्द्ध निद्रित युवती ने कहा—"कि जुहरा वस्तान् शाहे सफरम मिरकलां कासए बोस नूरुन्नहार, मोही और नजहजुज्जमा, तुम सब कहां हो ।"

परन्तु जब कुछ उत्तर न मिला तो युवती ने अपने चतुर्दिक नेत्र खोलकर देखा । सहसा गानम ने प्रणाम कर कहा यद्यपि मैं अपरिचित हूं परन्तु निस्संदेह आपकी रक्षा के लिये ही ईश्वर ने मुझे यहाँ भेजा है ।

युवती मुख छिपाकर श्मशान में आने का कारण पूछने लगी । तीन सेवक बक्स में बन्दकर उसे भूमिगत कर गये है—यह जानकर उसने

गानम को सहस्रशः धन्यवाद देते हुए कहा—'प्रभात होने पर तुम कोई खिच्चर नगर से किराये कर लाना मैं पुनः इसी बकस में लेटी जाती हूं तुम इसे खिच्चर पर भार कर अपने घर ले चलना। तब मैं अपनी दुःखद कथा वर्णन करूंगी।

युवती की इच्छानुसार गानम बकस में बन्द कर अपने घर ले आया युवती को सेजशायी कर अपने सेवकों द्वारा गानम अनेक सुस्वादु पाक, मिष्ट फल सुगन्धित मदिरा इत्यादि बाजार से आया।

युवती के आग्रह से दोनों ने मिलकर भोजन आस्वादन किया सहसा गानम की दृष्टि युवती के तट पर पड़ी जिसमें "सम्राट खलीफा हारूं रशीद की परम प्रणयिनी फितना" अंकित था। अस्तु गानम ने घबरा कर परिचय पूछा।

युवती ने धैर्य देकर कहा—"मेरा नाम फितना है मैं वास्तव में खलीफा की परम प्रणयिनी हूं बुगदाद में ऐसा कोई नहीं है जो मेरे नाम से परिचित न हो। खलीफा ने मेरे लिये इन्द्रोपम महल, वस्त्राभरण विपुलता से तथा दास दासी इच्छानीन नियत करदी थीं मैं बड़े आनन्द से कालक्षेप करती थी परन्तु खलीफा का अनिवार्य प्रेम देख सम्राज्ञी जेबीदा खातून मुझसे ईर्षा करने लगी बड़ी सावधानता से रहने पर भी खलीफा की अनुपस्थिति में अवकाश पा कल मेरी एक दासी को सम्राज्ञी ने अपना लिया और शर्बत में मुझे कोई मादक द्रव्य पिला दिया जिससे मैं अचेत होगई तब उसने सुअवसर देख मुझे बकस में बन्द कर जीवित ही गढ़वा दिया। परन्तु ईश्वर को कोटानुकोट धन्यवाद है कि आप जैसे दयालु द्वारा मेरी प्राण रक्षा हुई। यदि अब भी सम्राज्ञी को मेरा समाचार मिले तो तुम्हारे प्राणों की ग्राहका बन जावे अतएव जब तक खलीफा न लौटें मैं तुम्हारे घर में ही रहूंगी। तुम इस रहस्य को किसी पर प्रकट न करना, सम्भव है खलीफा सुन कर क्रुद्ध हों।"

यह सुन गानम अति घबराया परन्तु फितना ने धैर्य देकर कहा—"जब तक स्वयम् तुम कुछ न कहो कोई किसी के घर का क्या

हाल जान सकता है।"

गानम को कुछ चिन्ता न रही वह आश्वस्त हो बाजार से दो दासी क्रय कर लाया।

यद्यपि दोनों ही सस्पृह एक दूसरे पर अनुरक्त थे किन्तु वार्तालाप के अतिरिक्त स्पर्शमात्र के भी अपराधी न थे।

उधर सम्राज्ञी जेबीदा खातून अहर्निश इसी चिन्ता में निमग्न रहती थी कि न जाने खलीफा आकर फितना के लिये क्या कुछ न करेंगे अस्तु उसने अपनी धात्री को बुला सब समाचार कह सुनाया। वृद्धा धात्री बड़ी धूर्त्ता थी वह थोड़ी देर सोचकर कहने लगी—'तुम एक काष्ठ प्रति मूर्ति बनवा मंगाओ मैं उसे यथा विहित वस्त्रों से आच्छादित कर शव रूप में परिणत कर दूंगी तब तुम शोक चिन्ह धारण कर मृतक रूप राजकीय श्मशान में उसे भूमिगत करा देना और किसी वास्तु विद्या नैपुण्य कर्मचारी द्वारा विशाल समाधि निर्माण करा देना और हां एक मूर्ति जिसके चरणों में फितना का नाम अङ्कित हो और बनवा देना, इस क्रम से खलीफा को कुछ सदेह न होगा।"

किम्बहुना सम्राज्ञी ने ऐसा ही किया। फितना का शोक समस्त बुगदाद रहिवासियों को हुआ गानम ने उक्त विद्रूथ समाचार फितना को भी सुनाया।

फितना ने उपहास कर कहा—"अच्छा ही है कि जब मैं जीवित खलीफा की सेवा में उपस्थित हो सब समाचार कहूंगी तो सब विस्मित और सम्राज्ञी तथा उपदेष्टा धात्री अति लज्जित होंगी। खलीफा तुमसे अति प्रसन्न होगा मैं अपरिणीता हूं संभव है खलीफा मुझे तुम्हारी पाणिग्रहीता……बना दे।"

गामन ने अपना भाव छिपाकर कहा—"तुम्हारी प्रसन्नता ही मुझे उचित पुरस्कार है पूर्वजों ने कहा है—जो वस्तु राजा की योग्य है प्रजा को उसमें पूज्य बुद्धि रखनी चाहिए।

तीन महीना पश्चात खलीफा बुगदाद में आया वह सबके पूर्व

प्रेयसी फितना को देखने अन्त:पुर में प्रविष्ट हुआ, ओह ! वह सबको शोक चिन्ह धारण किये देख विस्मय से कारण पूछने लगा।

सम्राज्ञी जबीदा ने दीर्घ निश्वास त्यागकर कहा—"शोक कि आपके पीछे फितना स्वर्ग सिधार गई।"

ओह, फितना परलोकगत् हुई यह सुन खलीफा अचेत हो गिर पड़ने ही को था कि जाफर मन्त्रि ने संभाल लिया जब खलीफा सचेत हुआ तो फितना की समाधि देखने चल दिया।

समाधि देखकर खलीफा को बहुत दुःख हुआ परन्तु एक मूर्ति लोहित वस्त्र—आच्छादित, जिसके इधर उधर दिन दोपहर में अनेक मोमबत्तियाँ प्रज्वलित हैं, देखकर बड़े असमंजस में पड़ गया, कदाचित फितना न मरी हो संभव है सम्राज्ञी ने अवकाश पाकर उसे अन्त:पुर से निकाल कहीं गिरिगुहा में छिपा दिया हो ? यह धारणा होते ही उसे बड़ा संदेह हुआ वह समाधि खुदवाने पर उतारू हुआ परन्तु कर्म्मकाण्डी विद्वानों ने शरअ के विरुद्ध कह कर रोक दिया। चालीस दिन पर्यन्त खलीफा ने शोक मनाया वह प्रतिदिन अनेक कर्मचारियों सहित देखने जाया करता था। उसने कई हाफिज (जिन्हें कुरान शरीफ कंठाग्र होता है) नियत कर दिये थे।

फितना को स्मरण कर खलीफा अश्रुधारा से अपना वक्षःस्थल भिगोता रहता था एक दिन वह शय्या पर पड़ा फितना के ध्यान में ऐसा निमग्न हुआ कि पैर चप्पी करने वाली नूरुन्निहार और निगहत ने निद्रित जान परस्पर परामर्श प्रारम्भ किया। अतः इनके दीर्घस्वर से खलीफा के विचार में विक्षेप हुआ उसने क्रुद्ध हो पूछा—"तुम फितना २ क्या बक रही हो ?"

नूरुन्निहार ने कहा—"प्रभो, मैंने सुना है अभी फितना जीवित है। सन्ध्या समय मुझे उसका एक पत्र मिला है जो वैचित्र्य घटना···।"

बीच में रोककर खलीफा ने कहा—"वह पत्र कहां है ?"

उपरने से खोलकर नूरुन्निहार ने फितना का पत्र खलीफा को

दिखाया, खलीफा ने अधीर होकर पत्र पढ़ा।

पत्र में फितना ने संक्षेप में अपना समस्त वृत्तान्त लिखा था—“ओह, मेरी प्रेयसी चार महीना पर्यन्त गानम नामक किसी युवक के पास रही है! सम्भव नहीं कि दोनों यौवन काल सच्चरित्रता से बिता सके हों। घी और अग्नि का समावेश होने से अग्नि तीव्र होना सिद्ध ही है। अरी फितना! मैंने तेरे लिए कितना कष्ट सहा और तू आनन्द से आत्म समर्पण कर औरों के संग सुख सम्भोग में रत रही।” यह सोचता खलीफा क्रुद्ध हो बाहर आया और जाफर सचिव को कठिन आज्ञा दी कि—“अभी चार सहस्र सशस्त्र सैनिक संग ले जाकर गानम और फितना को पकड़ लाओ वरन् गानम का घर तक खुदवा डालो।”

सचिव ने सेना ले जाकर गानम के घर का आश्लेष कर लिया। इस समय गानस और फितना दोनों भोजन कर रहे थे सेना देखकर भय से कांपने लगे तब फितना ने साहस कर गानम से कहा—“प्रियतम! तुम दास बन, मुख और हाथों मे धूरि मल तथा भोजन पात्र शिर पर रख कर यहां मे निकल जाओ ढंग अच्छा नहीं दीखता। उक्त वेश के कारण पाकशाला का भृत्य समझ कोई कुछ बाधा न देगा।”

गानम उपर्युक्त वेश में बड़ी सुगमता से बाहर निकल गया। सचिव ने अनेक सैनिकों सहित घर में प्रवेश किया। घर धन धान्य से परिपूर्ण था। जब सचिव ने राजाज्ञा कह सुनाई तो फितना भय से कांपते हुए कहने लगी—“गानम एक महीना हुआ—“कि व्यापारार्थ दमिश्क की ओर गया हुआ है मैं उपस्थित हूं।”

सचिव ने सब अटाला कोषाध्यक्ष के पास भेज दिया, और घर खुदवा कर फितना को संग लिये खलीफा के सन्मुख उपस्थित कर दिया।

खलीफा ने फितना की ओर भ्रूक्षेप भी न की क्रुद्ध हो मसरूर को आज्ञा दी—“फितना को अमुक तलगृह में ले जाकर बन्दी कर आओ?”

गानम दमिश्क की ओर गया हुआ है यह सुन क्रोधान्वित खलीफा ने मोहम्मद जेबेनी शासक दमिश्क के नाम इस प्रकार पत्र लिखा— "भाई तुम्हारे यहां गानम नामक व्यापारी यहां से अपराध करके भागा है दुष्ट दम्भी महल रहिवासिनी फितना को अपने षडयन्त्र में फांस भगाना चाहता था परन्तु रहस्य प्रकट हो गया। अस्तु पत्र पाते ही यत्न पूर्वक खोजकर हथकड़ी बेड़ी डाल कोड़ों की मार से आहत करते हुये तीन दिन पर्यन्त नगर में घुमाना और साथ ही दण्ड की घोषणा कराते जाना अभियोगी के कुटुम्ब में माता, पिता, भाई बहिन और कोई हों उनको भी उपरोक्त दण्ड देना वरन् उनके प्रति जो कोई सहनुभूति प्रकट करे उसको भी यही दन्ड है। तब गानम को बन्दीकर मेरे पास भेज देना !"

खलीफा ने पत्र देकर धावन के सङ्ग एक कबूतर भी कर दिया। क्योंकि उस समय एक प्रकार के ऐसे कपोत होते थे जो महीनों के मार्ग को दिनों में पूर्ण कर इच्छित स्थान को लौट आया करते थे।

पत्र पा मोहम्मद जेबेनी कई कर्म्मचारियों को संग ले गानम के घर पहुंचा। परन्तु गानम की माता को बहुत दिनों से पुत्र का समाचार न मिला था संग गये हुए व्यापारी भी जब लौटकर आ गये थे अस्तु उसने समझा गानम इस लोक में नहीं है दुःखित हो उसने घरमें ही गानम की समाधि बनवा ऊपर उसका चित्र रख दिया था और दिन रात वहीं बैठी मां बेटी दोनों गानम को स्मरण कर अश्रु बहाया करती थीं वरन् उनका मर्म भेदी क्रंदन सुन निर्दय प्रतिवासियों का हृदय भी द्रवित होता था सब ही उन्हें सान्त्वना देकर शान्त करते थे परन्तु बेचारी दुःखिनी गानम को क्षणमात्र को भी न भूलती थीं जब देखो पुत्र शोक से सन्तप्त अश्रु धारा से बक्षस्थल भिगो रही हैं उक्त दुःखद सम्वाद सुन जेबेनी ने घर में प्रवेश किया।

जब मां बेटी दोनों ने खलीफा की कठिन आज्ञा सुनी तो वज्राहत की भांति स्तम्भित रह गईं मुख से एक शब्द न निकला वे जेबेनी

के चरणों में गिर पड़ीं।

जेबेनी प्रकृत दयालु था गानम की माता और बहिन का आर्त्तनाद सुन उसके नेत्र नीरस न रह सके, उसने कहा अपराधी गानम है उसकी माता और बहिन पर क्यों अत्याचार हो! खलीफा सत्यनिष्ठ बड़ा न्यायी और दयालु है यह बिडम्बना कैसी परन्तु मैं क्या कर सकता हूं विवश खलीफा की आज्ञा पालन करना ही पड़ेगा। निदान जेबेनी गानम की माता और बहिन को अपने संग लिवा ले गया और उनका घर खुदवा दिया गया।

अन्तःपुर पहुंचकर जेबेनी पत्नि ने गानम की माता और बहिन के रहने की सुविधा करा दी और क्षमा प्रार्थना पश्चात उन्हें समझा दिया कि हमें खलीफा की आज्ञा ने बाध्य कर दिया है अन्यथा तुमसे अति प्रेम और सहानुभूति है।

दूसरे दिन जेबेनी ने दोनों मां बेटी को नग्न कर निर्वासन दन्ड दिया। आह! उनका कोमल शरीर, चम्पे जैसा उज्वल वरण कीड़ों की मार से सायंकालीन अम्बर अम्बर की नाईं रक्तारक्त होगया जो कोई उन्हे देखता अश्रु बहाता था वरन् इस अत्याचार के कारण सबही खलीफा को क्रोधी और दुष्ट प्रकृति कहते थे। यद्यपि जेबेनी ने उन्हें एक एक मोटा कम्बल उढ़ा दिया था परन्तु लज्जा भय और अपमान के कारण उनकी बुरी दशा हो गई थी। बेचारी जिस गली में जातीं कोई उन्हे आश्रय न देता था। खलीफा के भय से वहां हमारी कोई रक्षा न करेगा चलो और कहीं प्रस्थान करें यह धारणा कर वे सामने को चलदीं। दया कर जेबेनी ने उन्हें एक स्वर्ण मुद्रा भोजनार्थ दे दी थी।

जेबेनी सब वृत्तान्त लिख कबूतर के कन्ठ में बांध कर बुगदाद की ओर उड़ा दिया। उधर बेचारी दुःखिनी योगिनी वेश किये किसी ग्राम में पहुंचीं।

उनकी बुरी दशा देख अनेक ग्रामीण रमणी एकत्रित होगईं दयाकर उन्हें भोजन कराया और वस्त्र पहनाये। तब दुःखिनी अनेकशः

आशिष देती हलब की ओर चल दीं।

बेचारी दिन भर चलतीं रात को किसी मसजिद में पड़ रहतीं बड़े श्रम से कहीं भिक्षा करतीं कभी निराहार रहतीं हलब पहुंचीं पुनः वहां से मूसल गईं तब कहीं बुगदाद पहुंची।

फितना बन्दीगृह में पड़ी दिन रात गानम को स्मरण कर रोया करती और प्रायः कठिन समस्या उपस्थित होने पर खलीफा बन्दीगृह से सटे सदन में टहल कर सोच विचार किया करते थे।

एक दिन खलीफा ने सुना फितना बड़े करुण स्वर में कह रही है—"अभागे गानम न जाने तू कहाँ किस दशा में है! ओह, मेरे कारण न जाने तुझे कैसी २ यातना भोगनी पड़ी होंगी? आह, तूने क्यों मुझे मुक्त कर जीवन दान दिया इस दुःख से मरना ही अच्छा था! अरे अभागे इतने दिन सम्पर्क रहने पर भी तूने मेरे शरीर को स्पर्श भी नहीं किया अच्छा होता यदि मेरी इच्छानुसार काम पिपासा तृप्त कर स्वर्गीय सुख का आनन्द ले लिया होता तो यह सब दुःख सुख में परिणित हो जाता परन्तु तूने खलीफा की प्रेयसी के नाते पूज्य बुद्धि ही रक्खी वास्तव में तुझ जैसा धीर वीर त्यागी संसार में बिरला ही होगा। अरे गानम (आहा कैसा प्यारा नाम है) सन्तोष कर प्रलय के दिन खलीफा! तेरे चरणों में गिर क्षमा प्रार्थना करेगा तब तू मनमाना दण्ड दे लेना।"

फितना की बातें सुनकर खलीफा सोच में पड़ गया उसे मानना पड़ा कि वास्तव में फितना और गानम के प्रति बिना अनुसन्धान के ही कठिन दंड दिया गया जो निरन्तर अत्याचार है। निदान उस समय खलीफा ने मसरूर को भेजकर फितना को बुलाला और समस्त वृत्तान्त आद्योरान्त श्रवणकर विषन्न हो कहने लगा—"गानम और तेरे प्रति जो अत्याचार हुआ वास्तव में मुझे उसका हृदय से पश्चात्ताप है अब तू जिस प्रकार कहे मैं वही प्रत्युपकार करने को उद्यत हूं।

"गानम निरपराधी है" फितना के कहने से खलीफा ने स्थान २

घोषणा करा दी परन्तु कई दिन बीतने और अनेक प्रयास करने पर भी गानम का कुछ समाचार न मिला तब विवश हो फितना ने खलीफा से स्वयं खोजने की आज्ञा ली ।

सबके पूर्व फितना ने मसजिदों में जाकर बहुत सा धन इस अभिप्राय से दान दिया कि उनके आशीर्वाद से गानम सकुशल लौट आवे । दूसरे दिन उसने एक दलाल को बुलाया जो प्रदेशी रुग्ण पथिकों की चिकित्सा किया करता था दूर दूर से दीन अनाथ रोगी उसका नाम सुनकर आया करते थे वह वास्तव में दीन प्रति पालक था नागरिक धनी बहुत सा धन उसके पास भेज दिया करते थे जिसे वह अनाथ बिधवा और रोगियों के भरण पोषण इत्यादि सदुपयोग में लगाया करता था ।

दलाल के आने पर फितना ने पूछा—"इस समय तुम्हारे यहां कोई रोगी वियोगी भी है ? मैं उनके लिये कुछ धन रक्षित किया चाहती हूं ।

दलाल ने प्रसन्न होकर कहा—"आपकी आज्ञा शिरोधार्य कल्याणी आपका धन सत् पात्रों के भरण पोषण में व्यवहृत हो इससे उत्तम और दान क्या ! किन्तु कल ही दो कुलीन रमणी मेरे यहां आई हैं उनकी मलीन दशा अति कृश शरीर देख मैंने उन्हें घर पर ही रखा है ।

यह सुन दयार्द्र फितना दलाल के घर पहुंची । दलाल पत्नी उचित अभ्यर्थना पश्चात् सन्मान पूर्वक फितना को सेजशायी दुःखिनी रमणी के पास जो वास्तव में गानम की माता थी ले गई ।

पास बैठकर फितना ने कहा—"वृद्धा, मैं तुम्हारी सेवा सुश्रूषा के लिये आई हूं तुम्हें जो दुःख हो निस्संकोच कह दो मैं यथा शक्ति तुम्हें प्रसन्न करने का उद्योग करूँगी । क्या तुम मुझे अपना परिचय देने की कृपा करोगी ।"

दीर्घनिश्वास त्यागकर गानम की माता ने कहा—कल्याणी

कोई फितना नामक खलीफा की प्रेयसी है जो हमारे दुख का कारण हुई है यद्यपि उसकी सत्यता का हमें लेशमात्र विश्वास नहीं है मेरा गानम बड़ा श्रद्धालु सच्चरित्र है परन्तु न जाने एसे न्यायी सम्राट ने हमें क्यों निर्वासन दन्ड दे अपार कष्ट……रुककर मैं दमिश्क रहवासिनी अबू अयूब व्यापारी की विधवा हूँ। मेरा पुत्र गानम बहुत दिनों से यहां बुगदाद आया। घर लौटकर नहीं पहुंचा कि सहसा यह भीषण कान्ड…? अब भी यदि ईश्वर मेरे गानम को जीवित मुझसे मिला दे तो यह सब बिपत्ति सुख कर मानूंगी ।"

फितना समस्त वृत्तान्त मौन साधे सुनती रही गानम की माता के चुप होने पर दीर्घ निश्वास त्याग कहने लगी—"माता, मैं ही वह अभागी फितना हूं जिसके कारण आपको अनेक असह्य कष्ट भोगने पड़े हैं परन्तु ईश्वर ने चाहा तो अब मेरे कारण आपका दुःख सहस्रशः अधिक सुख में परिणित हो जायगा ! गानम निरपराधी है वह खलीफा को भलीभांति सिद्ध हो गया है । वह गानम को देखने के लिये लालायित हो रहे हैं वरन् प्रत्युपकार स्वरूप आपकी क्षति से शतशः अधिक धन पारितोषिक देकर मेरा विवाह उसके संग करने को उद्यत हैं अब तुम मुझे पुत्र वधू समझ सन्तोष करो ।

निदान गानम की माता को सान्त्वना देकर फितना अल्कलब के पास गई अभी परस्पर परिचय ही हो पाया था कि हठात् वही दलाल घर में प्रवेश कर फितना से कहने लगा—"कठिन रोग ग्रस्त एक युवक अभी २ चिकित्सालय में लाया गया है मैंने उससे नाम पूछा परन्तु वह प्यारी फितना कहने और दीर्घ निश्वास त्याग अश्रु बहाने के अतिरिक्त कुछ बोलता ही नहीं है विवश हो मैं उसे घर पर ही ले आया हूं ।

मुझे शीघ्रता से उसके दर्शन कराओ सम्भव है वही प्री……।" यह कह फितना पुलकित हो उठ खड़ी हुई ।

दलाल फितना को रोगी के पास लिवा ले गया । फितना उसे

देखते ही "हा, गानम !! हा गानम !!" कह शय्या पकड़ रुदन करने लगी ।

गानम भी फितना को देखकर अचेत होगया अस्तु दलाल ने फितना को वहाँ से हटा दिया । सचेत होकर गानम ने अपने चतुर्दिक देखा नहीं है अतएव घबराकर कई बार "प्यारी फितना !" पुकारा तब दलाल ने सान्त्वना देकर उसे सब वृत्तान्त कह सुनाया ।

गानम का आना सुनकर उसकी माता और बहिन भी अचेत होगईं । बडी देर में जब वे सावधान हुईं तो—"अभी रोगी के पास जाना संकटापन्न है इस अवसर में सब समाचार खलीफा को सुना आऊँ । यह कहकर फितना चली गई ।

खलीफा गानम का आना सुनकर अति प्रसन्न हुआ उसने देखने की बडी इच्छा प्रकट की दूसरे दिन फितना दलाल के घर गई गानम से मिलकर खलीफा की इच्छा कह सुनाई ।

खलीफा ने उसका अपराध क्षमा कर दिया है, फितना का विवाह उसके साथ होगा यह जानकर गानम अति प्रसन्न हुआ परन्तु जब फितना ने उसकी माता और बहिन का दुखद समाचार वर्णन किया तो उसे दुःख पहुंचा उसी समय माता और बहिन दोनों गानम के पास आ प्रेमाश्रु बहाने लगीं ।

गानम ने कहा—'मैं खलीफा के भय से निकटस्थ एक ग्राम में जाकर अज्ञात रहने लगा परन्तु थोड़े दिनो में ही मेरा स्वास्थ्य बिगड़ गया जीवनाशा नष्ट होगई तब दयाकर एक ग्रामीण ने मुझे ऊँट पर कस कर यहां पहुंचा दिया है ।

जब गानम स्वास्थ्य लाभ कर चुका तो फितना ने सब को खलीफा के पास चलने का आग्रह किया । जैसे ही सब चलने को उद्यत हुए सहसा खलीफा की आज्ञा से जाफर सचिव अनेक सैन्य लेकर गानम के स्वागत को दलाल के घर पहुंचा और बड़े समारम्भ से उसे खलीफा के पास पहुंचाया गानम की माँ और बहिन अन्तःपुर में फितना

के पास पहुंचा दी गईं ।

गानम से मिल खलीफा अति प्रसन्न हुआ और पारितोषिक देकर अन्त:पुर में प्रविष्ट हो गानम की माता और बहिन को बुलवा भेजा ।

दोनों प्रणाम कर सन्मुख उपस्थित हुईं । खलीफा अल्कलम्ब को देखते ही मुग्ध होगया एक पल का वियोग भी सह्य न था अस्तु सबके पूर्व उसने अल्कलम्ब के सङ्ग अपना विवाह किया फिर गानम के सङ्ग फितना का ।

गानम की माता मे खलीफा ने कहा—"अभी तुम युवती हो अच्छा हो यदि तुम जाफर सचिव के संग पुन: विवाह करलो ।"

जब उसने स्वीकार कर लिया तो उसे भी बिवाह सूत्र में गठित कर दिया गया ।

सम्राट शाहजमां ने प्रसन्न होकर कहा—"प्रिये शहरजाद वास्तव मे तुमने अच्छी गल्प सुनाई ।

बीच में धन्यवाद देकर शहरजाद ने कहा—"प्रभो, यदि आप जेनुस्सनम का प्रणय सुनेंगे तो अधिक प्रसन्न होंगे ।"

निदान शाहजमां की आज्ञा से शहरजाद ने इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया ।

जेनुस्सनम की कथा

पूर्व समय में बांसरे का अधीश्वर अति प्रजावत्सल था, राज्य श्री इच्छातीत थी परन्तु सबमे अधिक दुःख राजा अपुत्रक था वह सन्तान के लिये सदैव ही उदास रहा करता था ।

बड़े दिनों पीछे ईश्वर ने राजा की प्रार्थना सुनी । राजमहिषी ने अति सुन्दर पुत्र प्रसव किया । राजा ने ज्योतिषी बुलाकर जन्मपत्री बनवाई, लग्न निश्चय कर ज्योतिषी ने कहा—"राजकुमार बड़ा प्रतापी, साहसी और दीर्घायु होगा"'परन्तु लग्न का स्वामी किंचित दल रहित होने से कुछ विपत्ति सहन करनी पड़ेगी ।"

राजा ने आश्वस्त होकर कहा—"कुछ चिन्ता नहीं है, राजा को आपदा न सहन करनी पड़ें तो वह अराजकता मिटाने नीति का उचित प्रयोग करने में असमर्थ रहे।" निदान राजा ने ज्योतिषी को पारितोषिक दे बिदा किया।

क्रमशः राजकुमार के ५-७ वर्ष बीतने पर राजा ने सुयोग्य अध्यापन के निरीक्षणत्व में शिक्षा का ऐसा अच्छा प्रबन्ध कर दिया था कि कुछ ही काल में राजकुमार अनेक विद्या तथा कला कौशल में पारगामी होगया। सहसा राजा रुग्ण हो सेजशायी हुआ जीवनाशा नष्ट होगई तब राजकुमार को पास बैठाकर राजा ने इस प्रकार शिक्षा दी—पुत्र ! स्वार्थियों की बात पर विश्वास न करना, किसी से अधिक प्रीति न शत्रुता करना प्रजा को पुत्रवत् पालन करना प्रत्येक कार्य में हानि लाभ सोचे बिना हस्तक्षेप न करना।" निदान इस प्रकार समझा बुझा कर राजा ने संसार यात्रा की।

एक सप्ताह पर्यन्त पिता के शोक पश्चात् राजकुमार जेतुस्सनम राजा होकर सिंहासनासीन हुआ। उसकी दशा विचित्र थी।

सिंहासनासीन होने के कुछ ही दिनों पश्चात् राजा विलास में ऐसा रत हुआ कि राज काज की ओर किंचित ध्यान न देकर सब कोष अपव्यय में नष्ट कर दिया। माता विदुषी थी उसने पुत्र को सन्मार्ग पर लाने की चेष्टा की, परन्तु कुछ प्रभाव न हुआ। अस्तु कोष नष्ट होजाने से सैनिक भी अपना २ वेतन छोड़ घर बैठे। नगर २ राजविद्रोह प्रारम्भ होगया। तब राजा को अपनी भूल का अनुमान हुआ।

अब राजा ने विलासी कर्मचारियों के स्थान वृद्ध दूरदर्शी नियुक्त किये। परन्तु विद्रोहानल शान्ति के लिये अधिक सेना चाहिए, धन है नहीं। राजा इसी चिन्ता में निमग्न रहने लगा। रात्रि को उसने स्वप्न में देखा कोई वयोवृद्ध उपदेश दे रहे हैं—'जेन संसार का ऐसा कोई कार्य नहीं जो दुःख के पीछे सुख उपलब्ध नहीं रात्रि के पीछे दिन का होना मुख्य है विपत्ति भोग कर ही सम्पत्ति हस्तगत होती है यदि तुझे

धन की वाँछा है तो केरू जा ।"

वयोवृद्ध अन्तर्हित होगये तब राजा ने अपनी माता को स्वप्न सुना केरो जाने की आज्ञा माँगी ।

माता ने कहा—"धन की आकांक्षा ने तुझे ज्ञानाहत कर दिया है स्वप्न पर विश्वास कर दूर देश जाना निरन्तर मूर्खता है ।"

राजा के चित्त पर वयोवृद्ध के उपदेश का पूर्ण प्रभुत्व था, उसने राजसिंहासन माता की अध्यक्षता में छोड़ केरो की ओर पयान किया ।

राजा केरो पहुंचा एक मसजिद के द्वार पर सो रहा । उसने स्वप्न में उक्त वृद्ध को देखा—"पुत्र ! मैं अति प्रसन्न हुआ तूने मेरे कहने पर विश्वास किया इससे मैं सन्तुष्ट हूं वास्तव में तू बड़ा साहसी है अपने दृढ़ निश्चय तथा बाहुबल से शीघ्र ही विशाल राज्य का शासक बनेगा । बस अब तू अधिक परिश्रम न कर स्वदेश लौट जा वहीं तेरा अभीष्ट सिद्ध होगा तुझे इतना धन मिलेगा जो किसी राजा के कोष में न होगा ।"

निदान प्रभात होने पर राजा वहां से चल दिया और अपनी माता को आकर स्वप्न सुनाया वह दीर्घनिश्वास त्याग कर कहने लगी—"बेटा, स्वप्न पर विश्वास करना मूर्खता है मैं तुझे पूर्व ही समझा चुकी हूं । अरे, तेरी प्रारब्ध में धन होगा तो घर बैठे ही मिल जायगा ।"

चिन्ता ग्रस्त राजा रात को सो रहा था तब उसने स्वप्न में देखा यही वृद्ध सांकेतिक रूप बता रहे है—"कल तू अपने पिता का अज्ञात भवन खोदना वहां तुझे अगाध सम्पत्ति मिलेगी ।"

यद्यपि माता ने भवन खोदने के लिए वर्जं दिया परन्तु राजा ने न माना भूमि खोदना प्रारम्भ कर दिया वह एक गज गहरा गढ़ा खोदने में ही थक गया परन्तु थोड़ी देर विश्राम लेकर पुनः खोदना प्रारम्भ किया सहसा एक चट्टान श्वेत प्रस्तर की उसे दृष्टि पड़ी ।

चट्टान सरकाने पर हठात् एक बन्द द्वार मिला । राजा ने ताला

तोड़कर भीतर प्रवेश किया स्वच्छ दालान जिसकी छत्त बिल्लौर और और दीवार चाना की बनी हुई हुई थी, दृग्गत हुई प्रथम ही चार सीप मण्डित तिपाई बिछी हुई मिली।

प्रत्येक तिपाई पर दो २ बड़े मटके क्रम से रक्खे हुए थे राजा ने सोचा कदाचित् उक्त मटकों में सुवासित मदिरा होगी परन्तु जब उसने ढकना उठाकर देखा तो उनमें सुवर्ण मुद्रा भरी हुई मिलीं।

राजा मुद्रा पाकर अति प्रसन्न हुआ उसने एक मुट्ठी मुद्रा निकाल-अपनी माता को दिखाई।

माता विस्मय और उल्लास से कहने लगी—"वास्तव में तेरा स्वप्न सच्चा निकला परन्तु इस दैवी सम्पत्ति को नष्ट न करना।" यह कहकर माता राजा के पीछे २ चलदी।

दालान से एक कोने में एक घट रक्खा हुआ था माता ने पूछा—"जैन इसमें क्या है।"

परन्तु रावा ने अभी उसे न देखा था झटित ढकना उठा कर देखने लगा—"उसमें एक कुञ्जी रक्खी हुई थी राजा ने बड़े ध्यान से देखा परन्तु कहीं ताले का कोई चिन्ह न दीखा अन्ततः एक ओर आड़ में एक छोटा सा छिद्र दृष्टि पड़ा राजा ने कुञ्जी डाली तो दो पाषाण इधर उधर हट गये।

राजा ने देखा पाषाण हटकर एक वर्गाकार भवन का द्वार खुल गया है। भीतर प्रवेश किया बीचों बीच भवन में स्वर्णमय नौ स्तम्भ बने हुये हैं उनमें से आठ के ऊपर एक एक हीरे से बनी मानव प्रतिमूर्ति रक्खी हुई है जिनके प्रकाश से समस्त भवन जगमगा रहा है।

राजा मूर्ति देखकर अति विस्मित हुआ ओह, मेरे पिता को यह मूर्ति बड़े श्रम और व्यय से उपलब्ध हुई होगी। परन्तु अन्तिम नवां स्तम्भ साटन मण्डित किस लिए मूर्ति बिहीन है। वह उसे ध्यान पूर्वक देखने लगा उस पर स्थूलाक्षर में अङ्कित था—"प्रियपुत्र! उक्त अष्टक यद्यपि संसार में दुष्प्राप्य है परन्तु नवी मूर्ति इन सब से सहस्रशः अधिक

ए बान वरन् विचित्र रत्न निर्मित अद्वितीय है। यदि तू उसे चाहता है तो केरो नगर की यात्रा कर वहां मुबारक नाम अति प्रसिद्ध तुझे मेरा एक सेवक मिलेगा जिसके द्वारा तू मूर्ति लाभ कर सकेगा।

उपरोक्त वृत्तान्त अवलोकन कर राजा केरो जाने को उद्यत हुआ माता ने कुछ बाधा न दी अस्तु कुछ सेवकों के संग राजा केरो पहुंच गया और मुबारक को खोजकर उसके घर पहुंचा।

मुबारक ने परिचय पाकर राजा को बड़े सन्मान से आसन दिया। राजा ने संक्षेप में समस्त वृत्तान्त कह सुनाया।

मुबारक ने चरण स्पर्श कर कहा—"वास्तव में आपके पिता ने मुझे क्रय किया था नवीं मूर्ति किस प्रकार उपलब्ध होगी कल उसकी प्राप्ति के लिए मैं आपके संग चलूंगा। आप अवश्य सफल मनोरथ होंगे। आज मेरे यहां कई मित्रों का भोज है चलिये आप भी सम्मिलित हूजिये।"

निदान राजा मुबारक के संग भोजनालय में पहुंचा जहां अनेक केरो रहिवासी धनी बैठे मुबारक की बाट देख रहे थे राजा के प्रति मुबारक की ऐसी श्रद्धा देख बड़े असमन्जस में पड़ गये।

सबका कौतूहल देख मुबारक ने कहा—"आप बांसरे के प्रतापी अधीश्वर हैं और हमारे स्वामी के पुत्र हैं कारणवशात् यहां पधारे हैं अस्तु कल मैं थोड़ी सी सेवा करने आपके संग जाऊंगा। आपके उपकारों से मैं उऋण नहीं हो सकता।"

राजा ने प्रसन्न होकर कहा—'प्यारे मुबारिक मैंने तुम्हें दासत्व से मुक्त किया अब मैं तुमसे केवल एक काम जिसके लिए यहां आया हूं लेना चाहता हूं शेष मेरा मैत्री भाव रहेगा।"

दूसरे दिन राजा को लेकर मुबारिक ने भ्रमण प्रारम्भ किया मार्ग में प्रकृति के वैचित्र्य दृश्य देखते चले जाते थे कई दिनों पश्चात् अति संकीर्ण मार्ग मिला। मुबारक सबको वहां छोड़ पदचर चलने लगा उसने समझाया—"यद्यपि हम भयानक शिविर में प्रविष्ट होंगे परन्तु

तुम कुछ भय न करना थोड़ी देर में एक नदी मिलेगी उससे पार होने के लिए एक मायावी नौका आवेगी परन्तु तुम बोलना नहीं यदि विचित्र केवट देखकर एक शब्द भी तुम्हारे मुख से निकला तो नौका मँझधार में डूब जायगी।"

थोड़ी देर में नदी आगई मुबारक ने कोई मन्त्र उच्चारण किया हठात् चन्दन निर्मित नौका विद्यमान होगई, दोनों ही उसमें बैठ पार होगये।

थोड़ी देर में नौका अन्तर्हित होगई तो मुबारक ने राजा से कहा—"यह द्वीप दैत्य सम्राट का है इसके सदृश कोई स्थान नहीं है यहां की समस्त भूमि हरित उर्वरा है।

इसी प्रकार दोनों कौतुक देखते दुर्ग के समीप पहुंचे। दुर्ग नीलमणि मण्डित अति विशाल बना हुआ था चतुर्दिक गहरी परिखा बनी हुई थी केवल एक ओर १२ गज लम्बा ६ गज चौड़ा पुल सीप का बना हुआ था। जिसके चतुर्दिक जेतून इत्यादि के हरित वृक्ष लहलहा रहे थे।

पुल के आगे अनेक विराटकाय दैत्य प्रहरी रूप खड़े हुए थे। मुबारक वहीं खड़ा होगया और राजा को समझा बुझाकर कोई मन्त्र जपने लगा।

मन्त्रबल से घन जैसा गर्जन और भूकम्प होने लगा। थोड़ी देर में दैत्य सम्राट मानव रूप में विद्यमान होगया।

राजा ने दैत्यराज को साष्टांग प्रणाम किया। दैत्य सम्राट कुशल प्रश्न पश्चात् मुस्कराते हुए उसके पास आ कहने लगा—"प्रिय पुत्र मुझे तुम्हारे स्वर्गीय पिता से असीम स्नेह था। वह जब २ मेरे पास आये विदा होते समय रत्न निर्मित एक मूर्ति मैं उसे दिया करता था अन्त में नवी मूर्ति के लिए तुम्हारे पिता ने बहुत आग्रह किया परन्तु मैंने उसे तुम्हें देना निश्चय किया था। जिस शिला लेख को देखकर तुम यहां आये हो मैंने ही अंकित कराया था, और अब मैंने

ही वयोवृद्ध रूप तुम्हें स्वप्न द्वारा उस अज्ञात कोष की सूचना दी थी अस्तु मैं अपने वचनानुसार तुम्हें नवीं मुर्ति जो अमूल्य है अवश्य दूंगा परन्तु यदि मूर्ति ले जाने के पूर्व मेरे लिए १५ वर्ष वयस्का अक्षतयोनि एक असामान्या सुन्दरी युवती ला दोगे तब, देखना उसकी ओर स्वयम् तुम भी कुदृष्टि न होना नहीं तुम्हारे प्राण······।"

राजा ने घबराकर पूछा—"वाह्य रंग रूप जैसा कहिए मैं खोज लाऊं भला युवती सच्चरित्र है किसी को आत्म समर्पण नहीं किया यह मैं कैसे अनुमान कर सकता हूँ ?

"वास्तव में मानसिक दुर्बलता विधि ही जान सकता है परन्तु परीक्षार्थ मैं तुम्हें एक दर्पण देता हूं इसमें रमणी मुख कान्तिमय प्रदर्शित हो उसे शुद्ध तथा निष्टष्ट को कुलटा समझना ।" यह कहकर दैत्य सम्राट ने राजा को एक दर्पण दे विदा किया।

वचन बद्ध हो राजा मुबारक को लिये स्वदेश लौटा । कैरो में पहुंच कर मुबारक ने कहा—"यदि इच्छित रमणी यहीं उपलब्ध हो सके तो आप और कहीं जाने का क्यों कष्ट सहन करें।

निदान मुबारक ने रमणी खोजने को एक वृद्धा दूती नियत करदी । थोड़े दिनोंमें ही अनेक रमणी राजा को दिखाई दीं परन्तु कोई सच्चरित्रा सती साध्वी न निकली अस्तु विवश हो राजा ने बुगदाद की ओर पयान किया ।

बुगदाद पहुँच कर राजा ने एक विशाल भवन किराये पर लिया वह प्रति दिन इतना पकवान बनवाता था कि सैकड़ों मनुष्यों को भोजन कराने के पश्चात् सन्ध्या समय अनेक दीन अनाथों में वितरण हो जाते किम्बहुना सब कोई राजा के औदार्य की प्रशंसा करने लगे । परन्तु उस मोहल्ले में मुराद नामक मुल्ला अति द्वेषी था राजा की उदारता देख उसे बड़ी ईर्षा होने लगी एक दिन उसने अपने मित्रों से परामर्श किया—"यहां कोई बड़ा दानी आया है हम तो जानते हैं कि यह कोई चोर जार है हमारे धन धान्य परिपूर्ण नगर को लूटने की इच्छा से सब

को वश में कर रहा है भाई, यदि अपनी रक्षा चाहते हो तो कोतवाल से कहकर पकड़वा दो कहीं इसकी बदी में हम तुम फँस कर दण्ड न भोगें। ।

मुराद जब अपने मित्रों से परामर्श कर रहा था अनायास मुबारक भी निमाज पढ़ने आया था वह चुपचाप सब वार्ता सुनता रहा। जब सब चले गये तो मुबारक पाँच सौ मुद्रा और रेशमी वस्त्र लेकर मुराद के घर पहुंचा और भेंट देकर कहने लगा—"आपके परोस में जेनुस्सनम बांसराधीश ठहरा हुआ है उसने आपसे मिलने की इच्छा प्रकट कर यह स्वल्प भेंट भेजी है आशा है आप दर्शन दे कृतार्थ करेंगे।

मुद्रा पाकर मुराद अति प्रसन्न हुआ दूसरे दिन उसने अपने मित्रों के चित्त से भी द्वेष निकाल दिया और सुचित्त हो राजा के पास गया।

उचित अभिवादन पश्चात् मुराद ने राजा से बुगदाद आने का कारण पूछा।

राजा ने कहा—"मैं एक लावण्यवती अक्षतयोनि युवती खोजने आया हूं।"

मुराद ने कहा—"ऐसी युवती मिलना अति कठिन है यद्यपि एक रमणी है पूर्व में उसका पिता यहाँ का मन्त्री था अब विरक्त है उसने अपनी पुत्री को धार्मिक शिक्षा दी है वह रमणी सौन्दर्य में असामान्या सती साध्वी है। देखिये उसका पिता तुम्हें देने में सहमत होता है या क्या।"

मुराद के मुख से मन्त्रि सुता की प्रशंसा सुनकर राजा अति प्रसन्न हुआ। वह मुल्ला को संग ले उसी समय मन्त्री के पास पहुंचा।

मन्त्री राजा को देखकर सन्तुष्ट हुआ किन्तु पुत्री को बुला राजा को दिखाया। राजा मन्त्रि सुता को देखते ही मुग्ध होगया दर्पण में देखने से भी परीक्षा होगई वह यथार्थ में सती साध्वी थी।

मन्त्री ने राजा को भद्रपुरुष जान अपनी पुत्री के संग विवाह

कर दिया और तीन दिन पर्यन्त अपने यहां सन्मान पूर्वक रख चौथे दिन बड़े समारम्भ से बहुत सा दायज देकर बिदा कर दिया।

राजा मन्त्रि सुता पर मुग्ध होगया था वह उसे दैत्य को देना नहीं चाहता था। अस्तु राजा को अधीर देख मुबारक ने समझाया—"अच्छा यही है सौंपे से दैत्य राज को अर्पण कर आओ अन्यथा तुम्हें मार कर बलात् छीन ले जायगा।

विवश हो राजा ने मन्त्री सुता को संग ले दैत्य सम्राट के द्वीप की ओर पयान किया मुबारक ने राजा और नव वधू का संयोग नहीं होने दिया था दोनों ही पृथक २ रखे थे इससे राजा की बुरी दशा थी वह नव वधू के वियोग में मृत प्राय: हो रहा था। उधर नव वधू भी राजा पर हृदय से अनुरक्त थी, राजा को न रखने के कारण वह भी अति व्याकुल हो रही थी।

राजा ने नव वधू दैत्य सम्राट को अर्पण तो की परन्तु उसे बड़ा क्लेश हुआ एक घड़ी का वियोग सह्य न था वह दुःखित हो प्राणघात करने पर उद्यत हुआ अस्तु ज्यों त्यों कर मुबारक उसे बांसरे लेगया।

घर पहुंच कर भी राजा विश्वमोहिनी, हृदयेश्वरी नव वधू को विस्मरण न कर सका। वह प्रति समय अश्रु धारा से अपना वक्षःस्थल भिगोता रहता था।

दैत्य सम्राट ने कहा था—नवीं मूर्ति तुम्हें तलगृह में नवम् स्तम्भ के ऊपर सुशोभित मिलेगी। यह जानकर राजा की माता ने तलगृह में जाने का बहुत आग्रह किया, परन्तु—"प्रेयसी को खोकर नवी मूर्ति ले क्या करूंगा।" यह कह राजा अति विषन्न हो रुदन करने लगा।

माता के आग्रह ने राजा को बाध्य कर दिया विवश हो उसने तलगृह में प्रवेश किया परन्तु यह क्या! नवें स्तम्भ पर मूर्ति के स्थान उसकी प्रेयसी बैठी हुई है वह विस्मित हो अचेत होजाने को ही था

कि स्वयम् प्रेयसी ने ही सँभालकर कहा –"कदाचित् मेरे स्थान आपको किसी दूसरी अमूल्य……।"

राजा ने माता के कारण लेजाते हुए प्रेम से हाथ पकड़ कर कहा—"लावण्यकलिके, तेरे कारण ही मेरी ऐसी दशा हुई है तुझे पाकर मुझे किसी वस्तु की आकांक्षा नहीं रही । हृदय पर पाषाण रखकर मैं तुझे दैत्य को दे तो आया परन्तु मैं सत्य कहता हूं जीवनाशा नष्ट होगई थी एक मात्र तेरा ध्यान ही अवलम्ब था। मेरे कारण तुझे बड़ा कष्ट हुआ प्यारी अपराध क्षमा……।"

राजा इतना कहने ही पाया था कि सहसा भूकम्प की नाईं समस्त भवन थर २ कांपने लगा। सभी भयभीत हो विस्मय से इधर उधर देखने लगे सहसा मानव रूप में उक्त दैत्य सम्राट विद्यमान हो कहने लगा—"तुम्हारे चले आने पश्चात् मैंने देखा यह रमणी तुम्हारे प्रेम में अति विह्वल है खान पान सब विसार एक मात्र तुम्हारे ध्यान में ही तल्लीन है और तुम भी उनके वियोग में प्राण देने को उद्यत हो तो मैंने सहसा तुम्हारे पास लौटाना ही निश्चय किया। ईश्वर तुम्हें सुखी करे दाम्पत्य सुख उपभोग करो परन्तु जैन दूसरा विवाह कर इसे दुखी न करना बेचारी सलज्जा बड़ी पतिव्रता है।" यह कहकर तथा नवीं मूर्ति राजा को दे दैत्य सम्राट अन्तर्हित होगया।

राजा ने बड़े समारम्भ से प्रेयसी पाने का उत्सव मनाया और घोषणा करा दी कि सब कोई प्रेयसी को महारानी बाँसरे कहा करें।

राजकुमारी खुदादाद और कुमारी दरियाबार की कथा

हेरनाधीश की विजय पताका समस्त देश में फहराती थी धन, जन, बल आदि किसी शक्ति की कमी नहीं थी परन्तु राजा अपुत्रक था पचास विवाहिता रमणियों में से सन्तान किसी के नहीं थी। एक रात्रि

राजा ने स्वप्न में देखा कि कोई वयोवृद्ध महानुभाव पीठ ठोंक कर कह र[illegible] है—"तेरी प्रार्थना स्वीकार हुई प्रातः अमुक वाटिका में जाकर जितने अनार के दाने खायगा उतनी ही सन्तति लाभ करेगा।"

प्रभात होने पर राजा वाटिका में पहुंचा और एक अनार तोड़ ५० दाने गिन कर खाये और क्रम से प्रत्येक महल में जाने लगा ईश्वर अनुकम्पा से सब रानियों ने गर्भ धारण किया केवल एक रानी पीरोज को कुछ गर्भ चिन्ह दर्शित न हुए। अस्तु राजा को उससे घृणा होगई वह उसे वन्ध्या समझ मारने को उद्यत हुआ परन्तु समझाने बुझाने पर राजा ने उसे अपने भतीजे सुमेर के पास भेज दिया।

कुछ दिनों पीछे गर्भ पूर्ण होने पर पीरोज ने भी पुत्र प्रसव किया अस्तु सुमेर ने प्रसन्न हो हेरान सूचना भेजी उत्तर में राजा ने कहला भेजा—"ईश्वर अनुकम्पा से यहां भी सबने एक २ पुत्र प्रसव किया है। तुम नवजात के लालन पालन में त्रुटि न करना और नव शिशु का खुदादाद नाम रखना।"

शनैः २ ज्यों २ खुदादाद बढ़ने लगा सुमेर ने उसके पठन पाठन की अच्छी सुविधा करदी वह थोड़े दिनों में ही सुशिक्षित हो कई भाषाओं का ज्ञाता बन गया विशेष कर धनुर्विद्या में अति कुशल होगया।

जब खुदादाद का वयक्रम १८ वर्ष अनुमान हुआ तो उसने अपनी माता पीरोज से विनय पूर्वक आज्ञा मांगी—"माता जी यह श्रवण कर मुझे अति खेद होता है कि कई राजा हेरान पर आक्रमण करने की चेष्टा कर रहे हैं यदि पिताजी सतर्क न हुए तो निस्संदेह शत्रु सफलीभूत होंगे।

माता ने कहा—"यद्यपि पुत्र तेरा वियोग असह्य है परन्तु ऐसी दशा में तुझे रोकना निरन्तर कापुरुषता है। बेटा आनन्द से जाओ विजय लाभ कर पिता का नाम और माता का दुग्ध प्रभावित करो।"

माता से आज्ञा लेकर खुदादाद भाई से पूछने गया, परन्तु विवश हो खुदादाद ने आखेट मिससे मित्र मण्डली सहित हेरन की ओर

पयान किया ।

जब हेरन पहुंच खुदादाद राजसभा में प्रविष्ट हुआ तो राजा देख कर अति प्रसन्न हुआ परिचय पूछने पर खुदादाद ने संक्षेप में कहा —"मैं केरो रहिगामी एक धनिक पुत्र हूँ । सुना है आप किसी राज्य पर सहसा आक्रमण करने वाले हैं यदि यह सेवा मुझे मिले तो सम्भवतः अपने वीरत्व का परिचय दे आपको सन्तुष्ट कर सकूंगा । आपकी सेवा सुश्रुषा मेरे लिए परम सौभाग्य है । शीघ्र ही शत्रुओं का पराभव कर पुरस्कार लाभ करूंगा ।"

अन्वेषण पश्चात् राजा ने परम पारदर्शिक खुदादाद को सेनापति नियुक्त किया । संप्रति खुदादाद ने अपने सदाचार से थोड़े काल में ही सबको वशीभूत कर लिया । सेना को ऐसा रण कुशल बनाया कि सहज ही शत्रुओं का दर्प चूर्ण होगया सब ही भयभीत हो शरण आगये ।

खुदादाद के प्रति राजा की अधिक श्रद्धा होगई वरन् अमात्य और ४९ पुत्रों से अधिक राजा का प्रेम पात्र बन गया राजा ने खुदादाद को दिग्गज विद्वान, गीयमान जान सुशिक्षा ग्रहण करने के लिये राजकुमारों का अध्यक्ष बनाया, यद्यपि खुदादाद राजकुमारों के समवयस्क ही था परन्तु अपने कौशल से सब मे गण्यमान्य होगया ।

सब ही राजकुमार खुदादाद से द्वेष करने लगे—"राजा की एक परदेशी के प्रति इतनी घनिष्ठता हमें सह्य नहीं है ।" किन्तु कोई अदूरदर्शी तो खुदादाद को मार डालने को उद्यत होगये । अन्ततः सबने परामर्श कर यह निश्चय किया—"मृगया मिस से हम कहीं दूर देश चल दें और कुछ दिनों तक अज्ञात रहे आवें इस प्रकार राजा समझेगा कि खुदादाद ने ही कहीं राजकुमारों को भेज दिया है अस्तु वह क्रुद्ध हो सहज ही खुदादाद को प्राणदंड की आज्ञा दे देंगे । यह धारणा कर सब राजकुमार खुदादाद से सायं समय की कहकर आखेट को चल दिये ।

जब तीन दिन बीत जाने पर राजकुमार न लौटे तो राजा ने विषन्न हो खुदादाद से पूछा—"क्या कारण है जो तीन दिन से

राजकुमार प्रणाम करने नहीं आते ।"

अति विनीत खुदादाद ने कहा—"प्रभो ! सायंकाल लौट आने की कहकर राजकुमार आखेट को गये हुए अभी तक नहीं लौटे । आज तीन दिन बीत गये मैं स्वयम् बड़े असमंजस में हूं ।"

राजा ने क्रुद्ध हो कहा—"यह तुमने बड़ा दुस्साहस का काम किया राजकुमारों को अकेला क्यों जाने दिया यह सब तुम्हारी ही करतूत है अब यही अच्छा है कि शीघ्र खोज लाओ अन्यथा तुम्हें कठिन प्राणदण्ड भोगना पड़ेगा ।

कठिनाज्ञा सुन खुदादाद अति विषन्न हो वहां से चल दिया । वह अनेक नगर खोजते २ विशाल कानन में पहुंचा जिसके मध्य पार्श्व में लोहित प्रस्तर का सुदृढ़ महल बना हुआ था ।

महल के नीचे पहुंचकर खुदादाद ने देखा मलीन मुख बैठी सुन्दरी दीर्घ स्वर से पुकार रही है—"युवक यहां से शीघ्र भाग ! अभी एक नराहारी दैत्य द्वारा कराल कालका कवर हो जायगा । निर्दय जङ्गी भूखे भटके श्रान्त पथिकों को भरमा कर यहां ले आता है और तब बेचारों को अति संकीर्ण तिमिराच्छादित तलगृह में बन्दी कर देता है ।"

खुदादाद ने पूछा—"कल्याणी तुम कौन हो ?"

"मैं केरो की रहने वाली हूं कार्यवशात् बुगदाद जा रही थी कि बीच में ही इस दुष्ट ने मेरे सेवकों को मारकर मुझे यहां बन्दी कर दिया । परन्तु अब जीवन भार होगया है क्योंकि वह मुझे पत्नी बनाने पर उतारू हुआ है यदि मैं उसे स्वीकार न करूंगी तो मार डालेगा-अतएव मेरा जीवन तो नष्ट प्राय है ही तुम व्यर्थ क्यों विपत्ति का आह्वान करते हो शीघ्र ही……"

सुन्दरी इतना ही कहने पाई थी कि सहसा वही दैत्य विद्यमान होगया । खुदादाद उसका भयानक रूप देख अति भयभीत हुआ परन्तु झटित किसी विचार के आते ही साहस कर खड्ग निकाल लिया ।

दैत्य खुदादाद को अति दुर्बल जान द्रुति गति पूर्वक अनायास ही पकड़ लेने की उत्कण्ठा से उसके पास पहुंचा हठात् खुदादाद ने नेत्र मूंद कर खड्ग प्रहार किया। जंगी का एक पैर कट गया।

असह्य मर्मवेदना से चीत्कार कर जंगी ने भी खड्ग प्रहार किया परन्तु खुदादाद ने कौशल से उसका वार बचा उलटा दैत्य का हाथ काट दिया। दैत्य निपतित हो धराशायी होगया। अस्तु खुदादाद ने उसका शिर काट कर सदैव को शान्त कर दिया।

खुदादाद ने महल में प्रवेश किया। सुन्दरी प्रसन्न हो हृदय से अनेकशः धन्यवाद देने लगी सहसा कई मनुष्यों का अस्फुट आर्तनाद कर्णगत हुआ।

खुदादाद ने सुन्दरी से पूछा तो वह हाथ पकड़ अति संकीर्ण दुर्गन्धमय तलगृह में लिवा ले गई, जहां अनुमान १०० पथिक कठिन बन्धन [illegible] अति विलाप कर रहे थे। क्योंकि दैत्य प्रतिदिन ही एक पथिक का मांस भक्षण किया करता था।

खुदादाद ने सबको बन्धन से मुक्त किया। जब सब बन्दी बाहर निकल आये तो खुदादाद के विस्मय का कुछ ठिकाना न रहा क्योंकि उन पथिकों में उसके सब भाई भी थे जिनकी खोज में वह यहां तक आया था। परन्तु ईश्वर को अनेकशः धन्यवाद है कि अभी तक दैत्य ने उनमें से किसी को भक्षण नहीं किया था किम्बहुना जिस पथिक का जो सामान दैत्य ने अपहरण किया था सबको दे दिया वे खुदादाद को सहस्रशः धन्यवाद देते हुए अपने २ घरों को चले गये।

तब खुदादाद और ४९ भाइयों ने सुन्दरी का परिचय पाने का बहुत आग्रह किया। एतदर्थ सुन्दरी इस प्रकार कहने लगी;—

——:०:——

राजकुमारी दरियाबर की कथा

अमुक द्वीप में दरियाबार नामक एक विशाल नगर था वहां बड़ा प्रतापी राजा राज्य करता था परन्तु अपुत्रक होने के कारण वह सदैव ही चिन्तित रहा करता था बहुत काल बीतने पर उसके घर एक पुत्री ने जन्म लिया।

कुमार, वह अभागी पुत्री मैं ही हूँ पिता ने बड़े समारम्भ से मेरा जन्मोत्सव मनाया जब मैं कुछ बड़ी हुई तो पिता ने अपने पीछे राज्य सिंहासनासीन होने के अभिप्राय से सुयोग्य अध्यापकों के निरीक्षणत्व में कितनी ही भाषा और राजनीति अध्ययन करा राजकुमारों के सदृश शिक्षिता बना दिया।

एक दिन पिता को आखेट में किसी वन्य जन्तु पर आक्रमण करते सन्ध्या होगई और न संग में ही कोई रहा वह घोड़े से उतर इधर उधर विश्राम के लिये रक्षित स्थान खोजने लगे सहसा दूर से कुछ प्रकाश दिखाई दिया।

पिता उसी प्रकाश की ओर चल दिये बहुत दूर चलकर उन्होंने देखा एक घर में से प्रकाश आरहा है और सामने ही एक विराटकाय दैत्य सदन में बैठा अनेक पात्रों में रक्खी हुई मदिरा बड़े स्वाद से पीकर ऊपर से बैल का मांस भक्षण कर रहा है सदन के एक पार्श्व में कोई असामान्या सुन्दरी युवती कठिन बन्धन ग्रस्त नत मुख उदास बैठी हुई है। पास ही पैरों के समीप २।३ वर्ष का एक अबोध बालक बैठा रो रहा है।

यह दृश्य देख पिता का हृदय द्रवित हो गया। परन्तु दैत्य की भयानकता वश वे कुछ बाधा न दे सके। किस प्रकार युवती का कल्याण हो इसी विचार में दैत्य को मारने की प्रतीक्षा कर रहे थे कि दैत्य ने मदिरा पीकर युवती से कहा—"प्यारी कब तक मुझे तरसावेगी तेरे अङ्ग प्रत्यङ्ग की सुघराई देख चित्त विह्वल होरहा है कामाग्नि

उद्दीप्त हो रही है आह, मैं तुझे हृदय से प्यार करता हूं और तू घृणा करती है लोग कहते हैं रमणी हृदय बड़ा कष्ट सहिष्णु होता है परन्तु न जाने तेरा हृत्पिण्ड क्या पषाण का बना है प्यारी अब बहुत होगया आ मेरी गोद में बैठ रसास्वादन और प्रगाढ़ालिंगन का आनन्द उपभोग करने दे।"

युवती ने विषन्न होकर कहा—नृशंस, मैं कैसी ही दुर्बल हूं परन्तु तू बलात् अपनी इच्छा तृप्त नहीं कर सकता यदि तुझे वारण करने में असमर्थ हूं तो क्या अपने प्राण विसर्जन नही कर सकती ?"

ऐसा कठिन उत्तर पा दैत्य क्रुद्ध हो निशित कृपाण ले युवती के मारने को उद्यत हुआ सहसा लक्ष्य कर पिता ने ऐसा वाण मारा कि दैत्य के सुदीर्घ हृदय के पार होगया।

दैत्य सदैव को शान्त हो गया तब पिता ने भीतर प्रवेश कर युवती से पूछा—"तुम कौन हो यहां कैसे फँसी।

युवती ने दीर्घनिश्वास त्याग कर कहा—"महानुभाव, मै समुद्रतटस्थ सिंहद्वीप जात्याध्यक्ष की पाणिग्रहीता हूं यह दुष्ट मेरे पति का विश्वस्त अमात्य रूप था न जाने कितने समय से यह मुझसे अज्ञात प्रेम करने लग गया था। एक दिन अवकाश पा जाने पर पति देव को मारकर अथवा और किसी उपाय से मुझे यहां भगा लाया। अहर्निश ही अनेक त्रास देकर सतीत्व नष्ट करने की चेष्टा किया करता था परन्तु जैसे हो सका मैने अब तक रक्षा की। आज ही बल प्रयोग करने पर उतारू हुआ था कि आपने प्राण भिक्षा दी।

दूसरे दिन पिता उक्त सुन्दरी को संग ले स्वदेश लौटे मार्ग में सब सैनिक भी मिल गये पिता ने सुन्दरी के रहने के लिये अलग महल बनवा दिया था और उसके पुत्र को शिक्षा दिलाने के लिये सुयोग्य शिक्षक नियुक्त कर दिये थे, जब सुन्दरी को रहते बहुत दिन बीत गये और उसके पूर्व पति का कोई समाचार न मिला तो पिता ने रूप सौन्दर्यपर मोहित हो उसके संग पुनर्विवाह कर लिया और उसके पुत्र के

सङ्ग, जो सुशील, शिक्षित, आजानुबाहु देखने में कामदेव का अवतार प्रतिभान होता था, मेरा विवाह निश्चय किया।

वैवाहिक रीति के पूर्व पिता ने मेरे भावी पति से यह प्रतिज्ञा करानी चाही कि मेरे जीवित रहते दूसरा विवाह न कर सकेगा। परन्तु उसने स्वीकार न किया उसने सोचा पिता ने उस अकुलीन समझा है अतएव पिता के प्रति उसके जो सद्भाव थे वह शत्रुता में परिणत होगये। अवकाश पा एक दिन उसने पिता का वध कर दिया और मुझे खोजने अन्तःपुर आया परन्तु स्वामी भक्त मन्त्री को रहस्य प्रकट होगया था वह मुझे कौशल से जलयान द्वारा अपने किसी मित्र राज्य को ले चला। दुर्भाग्य समुद्र में ऐसा कोलाहल मचा कि यान खंड २ होगया। देखते ही देखते सब समुद्र में डूब गये परन्तु मेरे भाग्य में अभी बहुत दुःख झेलना अवशिष्ट थे एक काष्ट के अवलम्ब से मैं किनारे से जा लगी। भयानक सुनसान देव का साम्राज्य देख मैं चीत्कार कर रुदन लगी सहसा कोई दयालु राजकुमार उधर आ निकला। और बड़ी श्रद्धा तथा प्रेम से अपने घर ले जा मेरे संग विवाह करना निश्चय किया। सहसा ठीक विवाह की ही रात जंगवार नामक राजा न बहुत सी सेना लेकर इस पर आक्रमण कर दिया।

यथा सम्भव राजा ने शत्रु पराजय की अनेक चेष्टा की बहुत सेना हत हुई परन्तु अन्त में विजय श्री शत्रु ने ही लाभ की निदान मैं अपने पति के संग रातों रात किसी मछुहे की छोटी नौका द्वारा वहाँ से भाग निकली। दो तीन दिन पर्यन्त नौका सामुद्रिक लहरों में पड़ी कभी इधर और उधर फिरती रही तीसरे दिन तीव्र वेग से कोई यान हमारी ओर आता दृष्टिगत हुआ।

थोड़ी देर में यान हमारे समीप आ गया और उसमें से ५-७ सशस्त्र डाकू निशित कृपाण लिये हम पर आ टूटे, मेरे पति को तो उसी समय समुद्र में डुबो दिया और मुझे लेकर यान पर लौट गये वे मेरी सुन्दर मुखच्छवि देख परस्पर झगड़ने लगे। प्रत्येक मुझे अपनी पत्नी

बनाने की उत्कट अभिलाषा करने लगा। पारस्परिक वैमनस्य वश द्वंद युद्ध प्रारम्भ हुआ अन्ततः सब मारे गये केवल एक डाकू शेष रहा जो वास्तव में अति बलवान था निरनिराले में वह मुझसे कहने लगा—"मैं पौरुष हीन हूं। तुझे केरो ले जाकर अपने मित्र को दूंगा। मैं चाहती थी कुछ सुयोग मिले तो समुद्र में डूब मरूं परन्तु डाकू ने अवकाश न दिया।

थोड़ी दिनों पश्चात् यान किसी छोटे से नगर में पहुंचा डाकू ने वहां से कई ऊंट और सवक क्रय कर केरो की ओर पयान किया।

कई दिनों तक हम निर्विघ्न चला किये कि सहसा मार्ग में इस नराहारी दैत्य से साक्षात् होगया। देखते ही देखते दैत्य ने सबको मार गिराया और मुझे पत्नी बनाने की इच्छा से अनेक प्रलोभन दे यहां लिवा लाया, आज वह किसी पथिक की खोज में गया हुआ निराश लौट रहा था कि तुमसे साक्षात् होगया। (कर बांध कर) ईश्वर तुमको दीर्घायु करे न जाने अभी यह दुष्ट कितने भूले भटके पथिकों का संहार करता।" यह कहकर सुन्दरी ने पुनः हृदय से खुदादाद को शहस्त्रशः धन्यवाद दिये।

खुदादाद ने आश्वासन देकर कहा—"कल्याणी, अब घबराओ ना परन्तु चलने के पूर्व...अच्छा पहिले तुम हममें से किसी को भावी पति रूप ग्रहण कर लो जिसमें पारस्परिक घनिष्ठता होकर दाम्पत्य सुख उपभोग कर सको किसी को कुछ संकोच न रहे। और प्रेम...।"

"आप ही मेरे जीवनदाता, जीवितेश्वर हैं। जो कुछ मुझसे सेवा हो सकेगी करूंगी मैं आपसे उऋण नहीं हो सकती। आशा है आप मुझे स्वीकार करेंगे।" यह कहकर सुन्दरी ने प्रेम से खुदादाद का हाथ पकड़ लिया।

दूसरे दिन सबने हेरन की ओर पयान किया। मार्ग में उल्लेख योग्य कोई घटना संघटित न हुई सानन्द भ्रमण करते रहे। हेरन

केवल एक पड़ाव रह गया तो भाइयों की प्रेरणा से सबने मदिरा पान की। रात्रि में भोजनोपरान्त खुदादाद ने कहा—"तात! मैंने अब तक तुम्हें अपना परिचय नहीं दिया वास्तव में मैं तुम्हारा भाई हूँ पीरोज माता ने मुझे प्रसव और राजकुमार सुमेर ने मेरा पालन पोषण किया है।"

खुदादाद हमारा भाई ही है—यह जान सबने मौखिक प्रेम से उसे कण्ठ लगाया परन्तु परस्पर परामर्श करने लगे—खुदादाद अजनबी है तब तो पिता का कितना विश्वास पात्र है और जब वह अपना अंग जनित समझेंगे तो निस्सन्देह उसी को युवराज पद पर विभूषित करेंगे अतएव आज सहज ही निबटारा कर देना चाहिये नहीं पीछे कुछ न हो सकेगा। यह निश्चयकर निशित कृपाण ले सब ही खुदादाद के डेरे में पिल पड़े और उसे अनेक स्थानों में आहत कर प्रभात होने के पूर्व ही वहाँ से पड़े।

हेरन नरेश अपने पुत्रों को देख अति प्रसन्न हुआ परन्तु किसी ने बन्दी होने इत्यादिका कुछ समाचार वर्णन न किया।

प्रभात होने पर राजकुमारी दरियाबार जागृत हो देखने लगी, खुदादाद अनेक मर्म स्थानों मे आहत होने से रक्तस्राव के कारण मृत प्राय हो रहा है वह वज्राहत की भांति स्तम्भित रह गई! ऐसी दशा कैसे-हुई इस जटिल रहस्य के समझने में उसे देर न लगी परन्तु शनैः २ श्वाँस चल रही है नाड़ी की गति अतिमन्द होने से कहीं ध्यान देने से बोध होता है। अतएव कुछ आशा का सञ्चार हुआ वह प्रसन्न हो नगर से वैद्य लिवाने दौड़ी गई परन्तु अभी वैद्य आने नहीं पाया था कि खुदादाद का शव भी अन्तर्हित हो गया। कदाचित् कोई वन्य पक्षी खींच ले गया हो यह सोच विपन्न हो राजकुमारी अविश्रान्त अश्रु धारा से अपना वक्षस्थल भिगोने लगी।

राजकुमारी का आर्तनाद सुन वैद्य ने करुणा से कहा—"जो कुछ भवितव्यता थी हो चुकी अब यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मैं हेरन

पहुंचा दूँ सम्भव है तुम्हें आश्वासन मिले ।"

निदान दो ऊट क्रयकर राजकुमारी वैद्य के संग हेरन चली गई उधर राजमहिषी पीरोज पुत्र का कुछ समाचार न पा हेरन आ गई थीं । राजकुमारी ने उसके पास जाने की उत्कण्ठा दिखाई परन्तु वैद्य ने बाधा देकर कहा—"सम्भव है तुम अपनी सासु के पास पहुंचने के पूर्व ही राजकुमारों द्वारा मारी जाओ अस्तु पहिले मैं मिलकर कुछ सुविधा करता हूं ।" यह कहकर वैद्य घर की ओर चल दिया ।

वैद्य ने देखा पीरोज मसजिद से महल को लौट रही है जब वह महल में पहुँच गई तो वैद्य ने प्रणाम कर खुदादाद और राजकुमारी का समस्त वृत्तान्त आद्योपान्त कह सुनाया ।

खुदादाद की मृत्यु का समाचार सुन पीरोज वज्राहत की भांति स्तम्भित रह गई, सहस्र वृश्चिकदंशन के समान वेदना होने लगी । उसी अवसर में लैरन नरेश ने पदार्पण किया ।

पीरोज ने खुदादाद का समस्त वृत्तान्त अति क्रन्दनकर कह सुनाया ।

राजा अब तक खुदादाद को अजनबी समझता था अब अपने अंग तनित का मरण समाचार पा अति विषन्न हुआ अनेक चेष्टा करने पर भी राजा के नेत्र नीरव न रह सके । उसने दुखित हो राजसभा में प्रवेशकर महामन्त्री को कठिन आज्ञा दी "कि अभी ४९ उनचासों राजकुमारों को पकड़ कर अमुक फांसी गार में बन्दी कर आ, देखना कोई भागने न पावे ।"

जब सब राजकुमार बन्दी हो गये तो राजा ने मन्त्री सहित फीरोज चे महल में प्रविष्ट हो बड़े सन्मान से राजकुमारी दरियाबार को बुलाकर कहा—"यद्यपि मैं अपने प्रिय पुत्र का शव नहीं पा सका परन्तु मेरी इच्छा है कि उसकी समाधि निर्मित कराऊँ ।" यह कहकर राजा ने नगर के मध्य पार्श्व में श्वेत प्रस्तर से खुदादाद की समाधि निर्मित करा उसी की एक प्रति मूर्ति वहां रखवा दी । राजा सब

कर्मचारियों सहित समाधि मन्दिर में बैठा खुदादाद के आत्म शान्त्यर्थ प्रार्थना कर रहा था कि सामने से अनेक नागरिक गण्यमान्य धनिक कुछ अश्वारोही अज्ञात सैनिक कुछ वयोवृद्ध, जिनके दर्शन मिलना दुरूह थे और सबके पीछे क्रमश: ५० नवयुवतियां प्रार्थना करने आईं । इस प्रकार जब सब चले गये तो राजा द्वार बन्द करा महल को चला आया वह प्रति सप्ताह प्रार्थना करने जाया करता था ।

एक दिन राजा ने सुना कोई शत्रु जिसे पूर्व में खुदादाद ने पराजित किया था, अगणित सेना ले सदल बल आ पहुंचा है जो कल ही हैरन पर आक्रमण करेगा । निदान राजा शत्रु के प्राश्लेष से भयभीत हो चिन्ता में पड़ गया । यदि शत्रु पर जय प्राप्त न हुई तो जलमार्ग से कहीं भाग जाऊंगा ऐसा प्रबन्ध कर वह रणक्षेत्र में आया ।

थोड़ी ही देर में शत्रु विजय लाभ कर लेता कि सहसा सन्मुख से शत्रु सेना का आक्रमण किये किसी दूसरे राजा की सेना दृष्टगत हुई । देखते ही देखते नवागत सेना ने शत्रु दल विच्छिन्न कर दिया शत्रु या तो भाग गये या रणभूमि में क्षात्र धर्म पालन कर सदैव को सुख की नींद सो गये ।

हैरन नरेश बड़े असमञ्जस में पड़ गया ऐसे दुर्दिन में किस मित्र ने साहाय्य दे प्राण और राज्य की रक्षा की है उसकी समझ में कुछ न आया । परन्तु जब उसका सहायक विजय पताका फुहराते हुए चरणों में आ पड़ा तो उसके विस्मय का कुछ ठिकाना न रहा क्योंकि वह स्वयम् खुदादाद था ।

खुदादाद के मिलने से राजा को हर्ष हुआ वह अकथनीय है वरन् उनका मिलाप अति करुणा जनक था । जब खुदादाद ने सुना उसकी माता और राजकुमारी दरियावार भी उसी के वियोग से सन्तप्त यहां आई हैं तो उसके आनन्द की सीमा न रही ।

जब सब परस्पर मिलकर प्रेमाश्रु बहा चुके तो राजा ने खुदादाद के पुनरुज्जीवन पर विस्मय प्रकट किया ।

ख़ुदादाद ने कहा—"जब राजकुमारी वैद्य लिवाने नगर में गई तो उसके पीछे कोई कृषक मेरे डेरे में आया और निरनिराला देख दयाकर वह मुझे अपने घर लेगया, कृषक वैद्यक में अति पारगामी था कुछ ही उपचार औषधि प्रयोग द्वारा मुझमें बल का सञ्चार हुआ किंबहुना अभी मैं स्वास्थ्य लाभ कर यहाँ आ रहा था कि मार्ग में शत्रु दल देख निकटस्थ ग्रामों में जा सबको अपने सङ्ग कर लिया आगे जो कुछ हुआ आप स्वयम् निरीक्षण कर चुके हैं।

सब कथा सुनकर राजा ने राजकुमारों के लिए प्राण दण्ड निर्माण किया परन्तु बीच में बाधा देकर ख़ुदादाद ने प्रार्थना की—"यद्यपि राजकुमार ऐसे जघन्य दण्ड के ही भागी हैं परन्तु वे सब मेरे भाई और आपके सङ्ग जनित हैं आशा है इस नाते से आप क्षमा करेंगे।"

निदान ख़ुदादाद के कहने से राजा ने सबको क्षमा कर दिया और उसी समय ख़ुदादाद को युवराज पद पर विभूषित कर नगर में घोषणा कर दी। ॥ इति ॥

उपर्युक्त कथा कहकर शहरजाद ने कहा—"स्वामिन् कल "सोते जागते" की कथा श्रवण करेंगे तो हंसी न रोक सकेंगे अति रोचक घटना है।

सोते जागते की कथा

बुगदाद रहिवासी किसी व्यापारी ने व्यवसाय द्वारा अधिक धनोपार्जन कर ख्याति पाई थी जब वह कालवश होगया तो उसके एक-मात्र पुत्र अबुलहसन ने कुत्सित आचरणों में पड़ सब धन नष्ट कर दिया उसने मित्रों को इतना धन दिया कि सब धनवान होगये जब अबुलहसन विलासिता हव्य में सब आहुति दे भिखारी बन गया तो स्वार्थी मित्रों ने आना जाना भी छोड़ दिया वरन् जब अबुलहसन उनके घर जाता तो वे किसी न किसी मिस से बिना साक्षात किये ही टाल देते इससे

अबुलहसन को कृतघ्नी मित्रों का अविश्वास होकर चित्त फिर गया।

पुत्र को विषन्न देख माता ने बहुत समझाया और कुछ धन देकर व्यवसाय प्रारम्भ करा दिया निदान थोड़े दिनों में ही अबुलहसन की दशा सुधर गई।

अबुलहसन ने कभी अकेले भोजन नहीं किया था और बुगदाद रहिवासियों से उसे अति घृणा होगई थी अस्तु वह सन्ध्या समय पुल पर चला जाता और किसी नवागत को अपने यहां ला आतिथ्य सत्कार कर प्रातः ही विदा कर दिया करता था।

सम्राट खलीफा हारूं रसीद प्रजा का सुख दुःख जानने के लिये भेष बदलकर घूमा करता था आज वह व्यापारियों के वेश में पुलपर खड़ा था संगमें केवल एक बलवान सेवक था, अबुलहसन क्रमशः किसी पथिक की खोज में आया हुआ था खलीफा को नवागत जान आग्रह कर अपने घर लिवा ले गया।

अबुलहसन ने बड़े शिष्टाचार से खलीफा का सत्कार किया। उसकी माता पाक बनाने में अति निपुण थी, अस्तु खलीफा भोजन कर अति सन्तुष्ट हुआ।

खलीफा के पूछने पर जब अबुलहसन अपना परिचय दे चुका तो दुःख प्रकाश कर और धन्यवाद दे खलीफा ने कहा—"कुछ कार्य मुझे बताकर आभारी बनाओ? मेरे कारण तुम्हें बहुत कष्ट हुआ है।"

अति विनीत अबुलहसन कहने लगा—'मैं आपको किन शब्दों में धन्यवाद दूं ऐसा अरुचि कर भोजन को कदाचित आपके सेवकों के भी अयोग्य था मेरे आग्रह से आस्वादन कर मुझे चिरकृतज्ञ बनाया है। वास्तव में सच्ची बात तो यह है कि मुझे कुछ आकांक्षा नहीं है केवल हमारे मुहल्ला में एक क्रूर स्वभाव मुल्ला तथा उसके सहकारी चार बड़े अत्याचारी हैं। यह सदैव ऐसी चेष्टा करते हैं जिसमें प्रतिवासियों को निरन्तर उत्पीडित होना पड़े।

कुछ सोच कर खलीफा ने पूछा—"तब तुमने इन दुष्टों के लिये

स्या।२५

स्याह

क्या निर्धारित किया है।"

मैं कुछ निश्चय नहीं कर सका (हसकर) ईश्वर से सदैव ही प्रार्थना किया करता हूं कि यदि वह खलीफा के स्थान में मुझे केवल एक दिन के लिये ही सिंहासनासीन कर दे तो मैं सब दण्ड देकर उचित प्रायश्चित करा दूं। निदान इस प्रकार मनमोदक बनाते अबुलहसन निद्रा देवी की गोद में अचेत होगया क्योंकि खलीफा ने अन्तिम मदिरा पात्र में कोई तीव्र मादक द्रव्य मिला दिया था।

जब अबुलहसन भलीभांति अचेत होगया तो खलीफा ने अपने सेवक को आज्ञा दी—"अबुलहसन को अन्त:पुर ले चलो और देखो, इस घर को भूल न जाना इसे यहीं पहुंचा जाना होगा।

जब अबुलहसन अन्त:पुर पहुंच गया तो खलीफा ने सबको आज्ञा दे दी—"यह जिस समय जागृत हो मेरी तरह इसका आदर सन्मान करना वरन् जो कुछ आज्ञा दे उसी समय पालन करना।"

प्रभात होने पर अबुलहसन ने बड़े विस्मय से चतुर्दिक देखा वह सुविशल शयनागार में सुखशय्या पर शयन कर रहा है अनेक दासी आज्ञा की प्रतीक्षा में हाथ जोड़े सन्मुख खड़ी है।

मसरूर ने नियमानुसार निद्रित अबुलहसन को सिरका सुंघाया। सिरका घ्राण से उसे छींक आई तब एक दासी ने स्वर्ण के पात्र में मधुर रस ले लिया यह दृश्य देख अबुलहसन बड़े असमञ्जस में पड़ गया। शय्या रत्न जटित अमूल्य वस्त्रों से आच्छादित है ऊपर को दृष्टि की तो छत रत्न निर्मित देखी। यह वैभव देख वह सोचने लगा—"मैं जागृत हूं अथवा सुप्तावस्था में स्वप्न देख रहा हूं। रात्रि को जो अतिथि से मैंने कहा था क्या वही विचार मस्तिष्क में भरे स्वप्न दिखा रहे हैं अथवा साक्षात् खलीफा बन गया। नहीं २ स्वप्न ही देख रहा हूं।" यह विचार अबुलहसन ने पुनः नेत्र मूंद लिये। हठात् एक सेवक ने हाथ जोड़ प्रार्थना की "प्रभो! यह समय शयन करने का नहीं है सूर्योदय हो चुका।"

"नहीं २ स्वप्न नहीं है।" यह कहता हुआ अबुलहसन उठ बैठा।

कई युवतियों ने बांसुरी के मनोहर स्वरों में कुछ गाकर बधाई दी परन्तु अबुलहसन फिर बड़े असमञ्जस में था उसे सम्राट होने का विश्वास नहीं होता था अतः मसरूर ने आकर कहा—"प्रभो क्या कारण है कि आप अभीतक नित्य कर्म से निवृत्त नहीं हुये राजसभा में कर्मचारीगण श्री दर्शनों की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

अबुलहसन ने नेत्र मलकर विस्मय से पूछा—"तुम किसे खलीफा कह रहे हो तुम्हें कुछ धोखा तो नहीं हुआ।

हाथ जोड़कर मसरूर ने कहा—"प्रभो क्या कोई दुस्वप्न देखा है आप चक्रवर्ती अधीश्वर जगत मान्य, जगदीश्वर प्रधान धार्मिक नेता सम्राट खलीफा हारूं रशीद हैं। भला जिनमें उदरपूर्ण हो ऐसे जगत पालक दयालु स्वामी को सेवक विस्मरण कर सके हैं।

खलीफा ऐसे स्थान पर बैठा था जहाँ से सब कुछ देख सके अबूलहसन को हंसते देख बड़ी कठिनता से अपनी हंसी रोक सका।

अबुलहसन ने बहुत हंसकर दूसरे सेवक से पूछा—"सत्य कहना मैं कौन हूं?"

सेवक ने उत्तर दिया—"आप हमारे स्वामी हैं प्रभो।"

"ओह तू झूठा है!" यह कहकर अबुलहसन ने एक युवती का हाथ पकड़कर कहा—"सुन्दरी बताना क्या मैं खलीफा नहीं? सब स्वप्न...............अच्छा ले तू मेरी अंगुली तो काट।"

सुन्दरी ने ज्यों ही अंगुली दांतों में दाबी कि अबुलहसन को पीड़ा होने लगी। तब अंगुली खींचकर उसने पूछा "क्यों जी वास्तव में मैं खलीफा नहीं, तो सबका स्वामी ही हूं।"

सबके खलीफा बताने पर गद्‌गद्‌ हो अबुलहसन राजसभा में जाने को उद्यत हुआ। एक सेवक ने दौड़कर हाथ को सहारा दे दिया। इस प्रकार अबुलहसन बाहर आया। स्वागत और प्रणाम के शब्दों से

समस्त अन्त:पुर प्रतिध्वनित हो अपूर्व दृश्य दिखाने लगा !

अबुलहसन बड़े आनन्द और उल्लास से चलते हुये मन ही मन अपने भाग्य को सराहने लगा—"अहो भाग्य, कल मैं तुच्छ अबुलहसन था और आज खलीफा ! धन्य है ।"

वस्त्राभूषण से सुसज्जित सिर पर ताज मुकुट धरे अबुलहसन राज सभामें पहुंचा। इधर उधर बड़े २ कर्मचारी यथा स्थान स्थित थे ।

साधारणत: प्रार्थना सुनने पश्चात् अबुलहसन ने कोतवाल को आज्ञा दी—"अमुक मुहल्ला के मुल्ला और उसके सहकारी चारों मित्रों को १००।१०० कोड़े मारकर निर्वासन दण्ड दिया जाता है नगर में घोषणा करा शीघ्र हमें सूचना दो ।"

कोतवाल के चले जाने पर अबुलहसन ने मन्त्री को आज्ञा दी—"उसी मुहल्ले में जाकर अबुलहसन की माता को एक सहस्र स्वर्ण मुद्रा पारितोषिक दे आओ ।"

आज्ञा देकर अबुलहसन अन्त:पुर की ओर चला मार्ग में शौच जाने की आवश्यकता हुई। ख्वाच ने पुरीष द्वार खोल दिया। उसमें नर्म मलमल बिछी हुई थी। जब वह भीतर जाने लगा तो एक सेवक ने शौच्युपयुक्त चरण पादुका उपस्थित कीं। अबुलहसन ने नर्म २ जूता अपनी ढीली बाहों में उरस लिये सेवक ने बड़ी कठिनता से हंसी रोक कर पैरों में पहिनाये ।

स्नानादि से निवृत्त होने पर मसरूर अबुलहसन को पाकागार में लिवा ले गया जहां सात दासी लावण्यवती नृत्य कर रही थीं गले का उतार चढाव कभी पंचम स्वर में खीच ले जाना और कभी मध्यम से षडज तक अवरोही मधुवर्षण करता अबुलहसन को आकुल करने लगा। उसने कहा—"आओ प्यारी तुम सब मेरे पास बैठकर भोजन करो ।"

युवती दासी बड़े संकोच से इधर उधर बैठ गई अन्त में अबुलहसन ने संग २ भोजन करने पर वाध्य कर दिया।

भोजनास्वादन पश्चात् मसरूर अबुलहसन को दूसरे कमरे में लेगया जो बड़े २ स्वर्ण चित्रों से अलंकृत था पदार्पण करते ही गीत वाद्य प्रारम्भ हुआ। यहाँ भी सात दासी मिलीं जो पूर्वोल्लिखित युवतियों से अधिक सुन्दरी थीं। मंच पर अनेक प्रकार की मेवा चुनी हुई थी। अबुलहसन ने दासियों सहित पानकर तीसरे कमरे में प्रवेश किया जहां सात सौन्दर्य वयस्का रमणी अनेक प्रकार के शरबत स्वर्ण पात्र में लिये खड़ी थीं।

दिन बड़े आनन्द में बीता। सन्ध्या होने पर अबुलहसन इन्द्रोपम विशाल प्रमोद भवन में पहुंचा जो मर्त्य-लोक में साक्षात् स्वर्ग धाम था। वहाँ सात असमान्या सुन्दरी युवतियां अपनी संगीत ध्वनि से सबको विमोहित कर रही थीं निकट ही सात अप्सरा लावण्य और सौन्दर्य में इन्द्र से भी अधिक मनोहार सुरादेवी का अनुष्ठान-गजक इत्यादि अपने सुकोमल हाथों में लिये खड़ी थीं। सम्मुख मंच पर सात बोतलों में सुगन्धित मदिरा भरी हुई थी अब तक जहां २ अबुलहसन गया केवल जल ही व्यवहार में आया था यहां आकर सुरादेवी के दर्शन हुये क्योंकि बुगदाद की आधुनिक सभ्य समाज का यह नियम था कि दिन में मदिरा को निषेध कह कर अति घृणा करते थे और रात्रि को निरनिराले में भोग की अपरिमेय कामोद्दीपन बसुधा जान सानन्द पान किया करते थे।

रति की प्रतिकृति सात-सुन्दरियों का सम्मुख पाकर अबुलहसन मुग्ध होगया वरन विह्वलता से गीत बाद्य बन्द करा एक सुन्दरी युवती का हाथ पकड़ सरोवर में डूबते उतराते तैराक की नाईं दोनों पीन पयोधरों का अालौकिक दृश्य देख प्रगाढ़ालिंगन और असंख्य चुम्बन कर नाम पूछने लगा—

"मेरा नाम-सिलक मिर बारीद-मुक्तावली है। युवती ने कटाक्ष

से उत्तर दिया।

युवती के कटाक्ष से आकुल तथा मनोहर दन्त पंक्ति अवलोकन कर अबुलहसन ने कहा—"झूठा किसी मूर्ख ने तुम्हारा नाम करण किया है भला कहां अवेध्य मुक्ता और कहां यह देदीप्यमान दन्तावली ?

सुन्दरी के सुकोमल हाथ से एक गिलास पीकर दूसरी सुन्दरी को अङ्ग में ले नाम पूछने लगा—

"मेरा नाम:कोकवुस्सुबह-प्रभात नक्षत्र है।" युवती ने लेजाते हुए कहा।

गण्ड प्रादेश चुम्बन कर अबुलहसन कहने लगा—"प्यारी तेरे नाम करण में भी भूल हुई है। भला कहां कोकव-तारा और कहां मृग की अनुहार सरस चपल नेत्र जिधर घूम गये उधर ही सैकड़ों मूर्छित हो गये।

निदान उपर्युक्त सुन्दरी की नाईं सातों सुन्दरियों के नाम इत्यादि पूछ भोग विलास में रत रह-क्रमशः सबके कोमल कर से एक एक गिलास मदिरा पीली परन्तु अन्तिम सुन्दरी ने खलीफा के संकेत से मदिरा में कोई मादक द्रव्य मिला दी थी थोड़ी देर में अबुलहसन अचेत होगया। तब खलीफा की आज्ञा से वही बलिष्ठ सेवक उसे कन्धे पर लाद घर सुला आया।

प्रभात होने पर अबुलहसन ने देखा अपनी ही शय्या पर सो रहा हूं। उसने घबराकर "प्यारी, सिलक मिर बाराद कोकवुस्सुबह, मिरजान" इत्यादि नाम लेकर पुकारे परन्तु उसकी माता ने पास आ सिर पर हाथ फेर कर कहा—"पुत्र क्या बक रहा है क्या कोई दुस्वप्न देख रहा है।"

अबुलहसन ने नेत्र खोल अभिमान से मां की ओर देखकर कहा—"कल्याणी तू किसे पुत्र कह रही है?"

मां ने कहा—"तू मेरा पुत्र अबुलहसन है। यह एक दिन में ही तुझे क्या होगया जो मुझे भी भूल गया। बेटा उठ देख कब का

सूर्योदय हो चुका।"

क्रुद्ध हो अबुलहसन ने कहा—"हट! दुष्टा, अमीरुलमा मनीन् खलीफा को अपना बेटा कहते भय नहीं करती।"

मां ने कहा—"बेटा ऐसा न कह जन समाज में क्यों थू थू कराता है लोग तुझे पागल जान पकड़ ले जावेंगे।"

अबुलहसन ने कहा—"तू ही पागल है। मैं तो वास्तव में खलीफा ही हूं।

मा ने यथा शक्ति उसकी भूल का सशोधन कर कहा—"बेटा, मुझे देख पहचान मैं तेरी मां हूं! जब से तूने जन्म लिया है इसी घर में मेरे संग रहा है (सिर हिला कर) निस्सन्देह किसी भूत प्रेत ने तुझ पर अधिकार पा लिया है क्या तूने नहीं सुना कल हमारे मुहल्ले के मल्ला और उसके चार मित्रों को खलीफा ने क्या दण्ड दिया है।"

यह सुन अबुलहसन अति खिन्न हुआ क्योंकि कल स्वयम् उसने मुल्ला को निर्वासन दण्ड दिया था। परन्तु उसकी माता क्या जानती थी किम्बहुना अबुलहसन ने लाठी लेकर माता से पूछा—"सच बता मैं कौन हूँ।"

माता ने ममता वश प्रेमपूर्वक उत्तर दिया—'तू मेरा पुत्र अबुलहसन है। हमारी दरिद्रता देखकर खलीफा ने सहस्त्र मुद्रा प्रदान की हैं अतएव हमें उचित है ऐसे उदार सम्राट को हृदय से आशीष दें न कि स्वयम् खलीफा बनें राम २ छोटा मुँह बड़ी बात·····।"

बीच ही में रोकर अबुलहसन ने कहा—"बस २ अब न बोलो मुझे निश्चय होगया कि मैं निस्सन्देह खलीफा हूं! कल मैंने ही मुद्रा भिजवाई हैं" कहकर उसने लाठी प्रहार की।

वृद्धा माता आहत हो चीत्कार कर रुदन करने लगी। उसका क्रन्दन सुन अनेक प्रतिवासी एकत्रित हो गये और अबुलहसन के हाथ से लाठी छीन कहने लगे—"क्या तुझे ईश्वर का भय नहीं है? ओह,

अपनी माता को मारता है। क्या तुझे लज्जा नहीं आती !"

अबुलहसन ने क्रुद्ध हो कहा—"तुम किसे अबुलहसन कहते हो क्या तुमने यह मेरा नाम रक्खा है।"

प्रतिवासी अबुलहसन की वक्तृता सुन अति विषन्न हो कहने लगे "अरे क्या यह तेरी मां नहीं है क्या तूने इस घर में जन्म नहीं लिया !"

अबुलहसन अति विषन्न हुआ क्रोध कम्पित अधरों पर दन्तारोपण होने लगा भ्रकुटी दीर्घायित हो गई दीर्घनिश्वास त्याग कर कहने लगा--'झूठ ! न यह मेरी माता है न मैं अबुलहसन वरन् मैं तो खलीफा हूं।"

अबुलहसन की दशा देख सबको विश्वास होगया कि यह पागल होगया है अस्तु बन्दीगृह के निरीक्षक को बुला अबुलहसन को पकड़वा दिया।

अबुलहसन ने भागने की चेष्टा की परन्तु निरीक्षक ने ५० कोड़े मारकर हथकड़ी बेड़ी डाल बन्दीकर लिया वरन् प्रतिदिन कोड़ों से आहत होने के कारण वह अधिक दुर्बल हो गया था। उसकी माता नित्य देखने जाया करती थी आज अबुलहसन ने माता को देखकर दण्डवत् की तो वह समझी कि अब उसकी बुद्धि ठिकाने आगई है। अस्तु उसने प्रसन्न होकर पूछा क्या दशा है"

अबुलहसन ने हाथ जोड़कर कहा—"माताजी ! क्षमा करो मुझसे बड़ा अपराध हुआ है। वास्तव में तुम मेरी जननी हो और मैं अनाज्ञाकारी तुम्हारा वज्रमूर्ख पुत्र हूं।"

माता ने प्रसन्न हो कहा—"बेटा उस दिन जो पथिक प्रात: उठकर गये थे द्वार बन्द नहीं कर गये सम्भव है शैतान (यवन) ने प्रवेश कर तुझे हत बुद्धि बना दिया था परन्तु ईश्वर को अनेकश: धन्यवाद है कि तूने शीघ्र ही ज्ञान लाभ कर शैतान के पजे से मुक्ति पाई।"

निदान माता के आग्रह से अबुलहसन ने अपने घर को पयान किया।

घर रहकर थोड़े दिनों में जब कुछ बल का संचार हुआ तो पूर्ववत् पुल पर जाकर प्रतिदिन एक नवीन पथिक को अपने घर लिवा लाया करता और रात्रि को आतिथ्य सत्कार कर प्रातः बिदा कर देता इस प्रकार एक मास बीत भया। आज अबुलहसन किसी पथिक की खोज में खड़ा था कि अनायास खलीफा से साक्षात् होगया जो आज भी पहिले की तरह व्यापारियों के वेश में था।

अबुलहसन खलीफा को देखकर अति भयभीत हुआ वरन् उधर दृष्टिपात करने में भी उसे घृणा होती थी परन्तु खलीफा को एक बार पुनः अबुलहसन का हास्य चरित्र देखने की उत्कण्ठा थी अस्तु स्वयम् आगे बढ़कर अबुलहसन का हाथ पकड़ कुछ कहने ही को था कि वह हाथ झटककर दूर जा खड़ा हुआ।

खलीफा ने मैत्री भाव दर्शाकर प्रेम पूर्वक कहा—"मित्र क्या तुम मुझे भूल गये एक महीना हुआ ठीक आज के ही दिन तुमने मुझे अपने घर ले जा अतिथि सत्कार कर मुझे आभारी बनाया था। वही चिर कृतज्ञ.........।"

अबुलहसन ने क्रुद्ध हो कहा—"जिसके कारण अनेक आपदा सहन करनी पड़ी है पुनः उससे मित्रता कर व्यर्थ विपद का आह्वान क्यों करूं।"

खलीफा ने आश्वासन देकर कहा—"मेरे कारण तुम्हें आपदा सहन करनी पड़ी हैं इसका मुझे स्वप्न में भी विश्वास नहीं था सम्भव है अब मैं कुछ साहाय्य दे सकूं क्योंकि जिससे दुःख पहुंचता है वही सुख का कारण हुआ करता है।

अबुलहसन खलीफा की बातों के ऐसा चक्रमें पड़ा कि सब घटना आद्योपान्त कह सुनाई किन्तु बड़े सन्मान से अपने घर लिवा ले गया। रात को भोजनास्वादन पश्चात् मदिरापान कर खलीफा ने पूछा—"तुमने

किसी सुन्दरी युवती से भी प्रेम किया है।"

"अजी नहीं हां मित्रवर्गों के संग अच्छी २ मदिरा पीना यही आकांक्षा है और हां प्रेम करने की पूछा सो जैसी युवती वीणाविनिन्दित स्वर से गान करती स्वप्न में देखी हैं यदि वैसी ही लाभ हो सके तो, परन्तु ऐसा रमणी रत्न खलीफा के प्रासाद के अतिरिक्त और कहीं पाना निरन्तर असम्भव है अतएव इसका उल्लेख करना ही व्यर्थ है। यह कहकर अबुलहसन ने खलीफा को मदिरा पिलाई।

थोड़ी देर में मदिरा पान पश्चात् खलीफा ने मदिरापात्र में कोई मादक द्रव्य मिलाकर अबुलहसन को पिला दी। हठात् वह अचेत होकर धराशायी होगया तब खलीफा ने अपने सेवक के कंधे पर लदवा अन्तःपुर भिजवा दिया।

अन्तःपुर में पहुंचते हर खलीफा ने अचेत अबुलहसन को अपने वस्त्र पहनवा प्रमोद भवन में अपनी शय्या पर सुला दिया।

प्रभात होने पर अबुलहसन ने देखा आज पुनः वही स्वप्न दिखाई देता है। ओह, यह सब धूर्त्तता पथिक की ही है आग्रह करने पर भी उसने द्वार बन्द नहीं किया जभी शैतान प्रविष्ट होगया। पूर्व में मुझे अनेक आपदा सहन करनी पड़ी थी वही स्वप्न अब दिखाई दे रहा है। निस्सन्देह यह सब माया शैतान की ही है परन्तु मैं आज शय्या से उठूंगा ही नहीं आप झक मारकर भाग जायगा।" यह कह अबुलहसन शैतान से मुक्त होने की ईश्वर से प्रार्थना करने लगा।

परन्तु लोगों ने अबुलहसन को चुप न रहने दिया राहत जान नामक एक सुन्दरी ने शय्या पर बैठ प्रेम पूर्वक कहा—"शिर क्षत्र स्वामिन यह समय शयन करने का नहीं है।"

अबुलहसन ने विषन्न होकर कहा—"अरे शैतान उठ! क्यों मुझे व्यर्थ दुःख देने पर उतारू हुआ है। भई मैं किसी का स्वामी नहीं हूँ खलीफा का साधारण दीन प्रजा मात्र हूँ।"

अपने सुकोमल हाथों से अबुलहसन का शरीर स्पर्श कर राहत जान ने कहा—"क्या प्रभो कोई स्वप्न देख रहे हो ? स्वामिन्, नेत्र खोलकर देखो कल इसी शयनागार में शयन किया था।"

अबुलहसन ने नेत्र खोलकर देखा सामने वही सिल्क मिरवारीद, कोकबुस्सुबह इत्यादि पूर्व परिचिता सुन्दरी युवतियां खड़ी हैं परन्तु वह पहिले सौख्य दृश्य देख अधिक दुःख भोग चुका था अस्तु पुनः नेत्र मूंद शय्या पर लेट रहा।

खलीफा को बहुत हंसी आई। उसी समय दो सुन्दरी युवती पारस्परिक कर क्रीड़ा कर नृत्य करने लगी। अस्तु अबुलहसन ने कोकबुस्सुबह को अपने पास बैठा बड़े विस्मय से पूछा—"कल्याणी, सच कहना मैं कौन हूं!"

"यह आपको क्या होगया है अच्छा, आप ही बताइये खलीफा नहीं तो कौन है?" सुन्दरी ने कटाक्ष से कहा परन्तु अबुलहसन ने शिर हिलाकर कहा—"अब मैं कदापि तुम्हारे षडयन्त्र में न फसूंगा मैं ही जानता हूं जैसा कष्ट मैंने भोगा है।"

इस अवसर में कोकबुस्सुबह के चातुर्य वश एवम् अनिन्द्य सौन्दर्य पर मुग्ध हो अबुलहसन आकुल होने लगा। वह बड़े असमञ्जस में था कि बन्दी होना स्वप्न था अथवा अब स्वप्न देख रहा हूं। निदान उसने एक सुन्दरी से अपने कान की लौर कटवाई।

जब वेदना असह्य होने लगी तो अबुलहसन ने निश्चय किया कि मैं जागृत हूं बन्दी होना ही स्वप्न है। अस्तु वह ऐसा मग्न हुआ कि सब वस्त्र उतार सुन्दरी युवतियों के संग नग्न हो नृत्य करने लगा वह नासिका पर अंगुली रखने तथा करतल ध्वनि कर स्त्रियों की नाईं 'आह ऊह' कर करतब दिखाने लगा।

यह विचित्र घटना देख खलीफा को बहुत हंसी आई। अट्टाहास कर कहने लगे—"ओ अबुलहसन, बसकर हंसते २ पेट पर बल पड़ गये हैं।"

खलीफा का कण्ठ स्वर पहिचान सबने मौन साध ली । अबुलहसन ने देखा ऊपर स्वयं खलीफा बैठे हुए हंस रहे हैं जिन्होंने गत रात्रि व्यापारियों के भेष में अबुलहसन से साक्षात् किया था । अब अबुलहसन समझ गया यह सब करतूत खलीफा की है स्वप्न कोई नहीं दिखाई दिया । तब उसने साहस कर कहा—"प्रभो ! भली दुर्गति कराई ।"

खलीफा ने आश्वासन देकर कहा—"वास्तव में तुम्हें अकारण ही बहुत कष्ट भोगना पड़ा परन्तु उसके प्रतिकार में अब तुम्हें निरन्तर सुख मिलेगा ।" यह कहकर खलीफा ने मसरूर को उत्तम वस्त्राभरण लाने की आज्ञा दी ।

सुसज्जित होने पर खलीफा ने अबुलहसन को कण्ठ लगा लिया । उसे रहने के लिए अन्तःपुर में ही एक विशाल भवन बनवा दिया । खलीफा को अबुलहसन से आन्तरिक प्रेम होगया था अबुलहसन भी नित्य खलीफा को प्रणाम करने आया करता था ।

खलीफा ने अबुलहसन की श्रद्धा और प्रेम देख अपने वचनानुसार उसकी प्रेयसी नजहतुल अरवाह के संग पाणिग्रहण करा दिया । नजहत सम्राज्ञी की प्रेम पात्री थी और अबुलहसन सम्राट का प्रीति भाजन । विवाह सूत्र में प्रसित होने पर दोनों को बहुत धन मिला ।

अबुलहसन तजहत के संग विलासी धनिकों की नाईं वहीं अन्तःपुर में रहने लगा । दोनों में परस्पर अधिक प्रेम था दाम्पत्य सुख में रत रहने लगे-सदैव उत्तमोत्तम पाक, बहुमूल्य वस्त्राभरण, और सुगन्धित मदिरा विपुलता से व्यवहार करते । कैसा ही कोई इनके पास आता बिना भोजन किये न जाता ।

निदान बहुत दिनों तक आनन्द से कालक्षेप करते रहे । जब सब धन व्यय होगया और दरिद्रता का प्रादुर्भाव हो ऋणी होगये तो उसने अपनी भार्या नजहत से इस प्रकार परामर्श किया—'मैने धनी होने का एक उपाय सोचा है । यदि तुम साहाय्य दो तो सहज ही सब दुःख सुख में परिणत हो जाय ।"

नजहत ने प्रसन्न होकर पूछा—"किस उपाय का अवलम्ब करना निर्धारित किया है ?"

अबुलहसन ने कहा—"आओ प्यारी, हम तुम दोनों मरण अभिनय......"

बीच में ही शिर हिलाकर नजहत कुछ कहने ही को थी कि अबुलहसन ने धैर्य देकर कहा—"पहिले सुन तो लो मेरा वास्तव में प्राण विसर्जन करना अभीष्ट नहीं है वरन् इस बिस्तरे में लेटकर अपने को मृतक बनाता हूं तुम एक चादर कफन स्वरूप मेरे ऊपर डाल देना और रोती हुई सम्राज्ञी के पास जाकर कहना मेरा पति स्वर्ग सिधार गया, इस प्रकार तुम्हारे विलाप से सम्राज्ञी का हृदय द्रवित होगा और वह बहुत सा धन अन्तिम संस्कार के लिए प्रदान करेगी। किंबहुना जब तुम सम्राज्ञी से धन लाभ कर चुकोगी तब मैं सम्राट के पास जाऊँगा-और तुम्हें मरण शय्या पर बताकर करुणा से उनको वश्य कर तुम्हारे मृतक संस्कार के मिस से बहुत सा धन लाऊँगा।" यह कहकर अबुलहसन मृतक की नाईं शय्या पर लेट गया।

नजहत अपनी ओढ़नी फाड़, शिर के बाल खसोट, क्रन्दन करती सम्राज्ञी के पास पहुंची।

सम्राज्ञी ने नजहत को वैधव्य दुःख से सन्तप्त देख बहुत शोक प्रकट करते हुए कहा—"अबुलहसन आजीविका निर्वहनार्थ कुछ न रखता था कहीं तू ही उसकी मृत्यु का कारण तो नहीं हुई ?"

"स्वामिनी, मैं उसे हृदय से प्यार करती थी जो कुछ होता उसी में सन्तुष्ट रहती थी परन्तु क्या करूं अनायास ही वज्रपात हो गया।" यह कह नजहत अश्रु बहाने लगी।

निदान सम्राज्ञी ने दयाकर एक सहस्र स्वर्ण मुद्रा और वस्त्र इत्यादि देकर उत्तम रीति से अन्तिम संस्कार करने की अनुमति दी।

जब नजहत धन लेकर घर पहुंच गई तो अबुलहसन उसे मृत्यु शय्या पर शयन करा खलीफा के पास पहुंच अश्रु बहा कहने लगा—

"प्रभो, पति प्राणा नजहत असमय संसार यात्रा कर असह्य दुःख दे गई।"

नजहत की मृत्यु सुन खलीफा को महा शोक हुआ अन्तिम संस्कार के लिए बहुत सा धन और वस्त्र अबुलहसन का दिये। वरन् नजहत की मृत्यु से सन्तप्त हो सब काम छोड़ अन्तःपुर में पहुंच सम्राज्ञी से कहने लगे—"प्रिया जी तुम्हारी नजहत बड़ी सुशीला थी परन्तु कराल काल की ऐसी विकराल गति है कि आबाल वृद्ध बनिता इसके जगड़वाल से बचने अति कठिन है।'

सम्राज्ञी अति विस्मित हुई कदाचित् खलीफा ने समझने में भूल की है वह दुःखित हो कहने लगी—"जीवितेश्वर, नजहत तो वैधव्य भोगने को जीवित है आपका अबुलहसन परलोक सिधार गया।"

खलीफा ने मुस्करा कर मसरूर की ओर देखा। वह हाथ जोड़ कहने लगा—"कदाचित् सम्राज्ञी ने सुनने में भूल की है।"

निदान बड़ी देर तक सम्राट और सम्राज्ञी परस्पर विरोध करते रहे अन्ततः सम्राट ने मसरूर को देख आने की आज्ञा दी।

अबुलहसन दूर से मसरूर को आते देखा खलीफा ने भेजा है यह सोच नजहत को शय्या पर लिटा, खलीफा के प्रदानित वस्त्र कफन स्वरूप उड़ा रुदन करने लगा।

मसरूर अबुलहसन को सान्त्वना दे कहने लगा—"भाई जैसी विपत्ति तुम पर पड़ी है ईश्वर रक्षा करे परन्तु सम्राज्ञी ऐसी हठ कर रही हैं कि नजहत नहीं अबुलहसन परलोकगत हुआ। यद्यपि स्वयम् सम्राट और मैंने बहुत समझाया परन्तु नारिहठ वश वह अमानी कब मानती है।

'जैसी खलीफा ने दया की है मेरे पास शब्द नहीं जो धन्यवाद दे सकूं। मैं स्वयम् जाकर सब वृत्तान्त कह आता परन्तु मृतक छोड़ने से विवश हूँ। यह कहकर अबुलहसन अधिक रुदन करने लगा।

तुम्हारे चलने की कोई आवश्यकता नहीं है मैं सब समझा दूंगा। यह कह मसरूर खलीफा के पास लौट आया।

नजहत इहलोक में नहीं है मसरूर के कहने पर सम्राज्ञी को विश्वास न हुआ अपनी किसी विश्वस्त दासी को देखने भेजा।

अबुलहसन दूर से दासी को देख झटिति शय्या पर लेट गया नजहत सिरहाने बैठकर क्रन्दन करने लगी।

यह दृश्य देख दासी ने मसरूर को कोसना प्रारम्भ किया तब नजहत कहने लगी—"क्या ही अच्छा होता जो मसरूर का कहना सत्य हो जाता तो आज यह काहे को वज्रपात होता क्यों मुझे आजीवन वैधव्य भोगना पड़ता ?"

दासी ने सान्त्वना देकर कहा—"भवितव्यता बड़ी प्रबल है तेरा मर्म भेदी क्रन्दन सुन हृदय द्रवित होता है सम्राज्ञी के प्रति वैमनस्य हो जाने के कारण मुझे विवश जाना पड़ता है अन्यथा ऐसे समय तुम्हे अकेली कदापि न छोड़ती।"

दासी ने आकर मसरूर को अनेक धिक्कार दीं किन्तु पारस्परिक विरोध की मात्रा भी अधिक बढ़ गई।

सम्राट बड़े असमञ्जस में पड़ गये—"यथार्थ घटना समझ में नहीं आती। न जाने क्या रहस्य है अस्तु आओ हम दोनों स्वयम् जाकर देखें।

अबुलहसन ने देखा स्वयम् सम्राट और सम्राज्ञी आरहे हैं निदान वे दोनों अपने २ कफन ओढ़ सदन में मृतवत् लेट गये।

यह दृश्य देख सम्राज्ञी ने विषण्ण होकर कहा—"हैं! यह तो दोनों मर गये वास्तव में हमारे भ्रम ने नजहत के प्राण विच्छिन्न किये हैं। यह विचारी पति के शोक से ही सन्तप्त थी कि हमारे बार २ पूछने से उसके कोमल चित्त में ऐसा आघात पहुंचा कि सहसा प्राण पखेरू अस्थि पिंजर को परित्याग कर गया।

खलीफा ने सम्राज्ञी को बीच में रोककर कहा—"नहीं २ ऐसा

नहीं हूँ वरन् अबुलहसन को नजहत से अधिक प्रेम था उसके वियोग को न सह सका !"

निदान बड़ी देर तक सम्राट और समाज्ञी के प्रति झगड़ा होता रहा। दासी और मसरूर विरोधी थे खलीफा बड़े असमञ्जस में पड़ा दोनों रथियों के बीच में बैठकर कहने लगा—"पहिले कौन मरा है जो कोई बतावेगा मैं उसे सहस्र मुद्रा पारितोषिक दूंगा।"

अबुलहसन की रथी से शब्द हुआ—"पहिले मैं मुवा हूं। हठात अबुलहसन कफन फेंक सम्राट के चरणों में गिर पड़ा उसी प्रकार नजहत भी सम्राज्ञी के चरणों में गिरी। यद्यपि सम्राज्ञी भयभीत हुई परन्तु खलीफा ने निर्भीक अबुलहसन से पूछा—"अरे आज तुमने यह क्या रूप भरकर व्यर्थ ही सम्राज्ञी से वैमनस्य कराया !"

चरणों में गिरकर अबुलहसन ने कहा—"अविवाहित दशा में मैं अपने मासिक वेतन मे बड़े आनन्द से कालक्षेप करता था परन्तु अब नजहत के कारण अपव्यय वश बहुत ऋण होगया जो कुछ हमारे पास था सब दे देने पर भी उऋण न हो सके उदरपूर्ण दुर्लभ होगई तब विवश हो हमने इस मिससे धन लाभ किया आशा है आप क्षमा करेंगे।"

खलीफा और सम्राज्ञी को कुछ क्रोध नहीं आया वे हंसते रहे वरन् अबुलहसन को इतना धन दिया कि फिर कभी कुछ दुख न उठाना पड़ा बड़े आनन्द से कालक्षेप करने लगा।

अलादीन और विचित्र दीपक,

चीन राज्य के अन्तर्गत किसी नगर में मुस्तफा नामक कोई शूचीकार वास करता था। वह बड़ी कठिनता से निज व्यवसाय द्वारा आजीविका निर्वाहन कर सकता था उसका एक मात्र पुत्र अलादीन अति उच्छृङ्खल और चंचल प्रकृति का था। माता पिता की आज्ञा किञ्चत

भी न मानता था। प्रातः घरसे गया हुआ दिन भर समवयस्क दुष्ट बालकों के संग बाल क्रीड़ा में रत रह सायं समय लौटा करता था।

पिता ने अलादीन के सुधार की अनेक चेष्टा कीं परन्तु सब विफल मनोरथ हुईं वह निरन्तर मुर्ख ही रहा विवश पिता ने उसे अपने संग दुकान पर ले जाकर अपने व्यवसाय में डालने का उद्योग किया परन्तु ज्योही पिता की दृष्टि इधर उधर होती वह दुकान से अन्तर्हित हो कहीं का कहीं जा पहुंचता यद्यपि मुस्तफा उसे अधिक ताड़ित करता परन्तु वह अपनी दुष्टता न छोड़ता था।

मुस्तफा अपने मूर्ख पुत्र के लिये सदैव ही चिन्तित रहने लगा, शरीर अति कृश हो गया वरन् चिरदुःखिनी रहने के कारण कुछ ही मास में उसका देहान्त होगया।

माता ने देखा दुकान अलादीन से चलना असम्भव है अस्तु उसने दुकान बन्द करादी। बेचारी वैधव्य भोगती बड़ी कठिनता से सूत कातकर अपनी और अलादीन की उदर पूर्णा क्रिया करती थी।

माता जब कभी अलादीन से किसी काम को कहतीं तो वह तिरस्कार कर और दुख पर दुख दिया करता। कुत्सित में पड़ जाने से चौदह वर्ष की आयु पर्यन्त अलादीन ने कुछ उद्यम न सीखा।

एक दिन अलादीन बाजार में खेल रहा था कि किसी मनुष्य से जो अफ्रीका रहिवासी मायावी एवम् रमल तथा ज्योतिष में परगामी था साक्षात् होगया वह अलादीन को देखते ही मन ही मन अति प्रसन्न हुआ क्योंकि जैसे मनुष्य की खोज में वह देश प्रदेश पर्यटन कर रहा था अलादीन में वह सब चिह्न विद्यमान थे। निदान उस कुहकी ने अज्ञात रूप से अलादीन के कौटुम्बिक समाचार जानकर अकेले में पूछा—"क्या तुम मुस्तफा सूचीकार के पुत्र हो?"

साधारणतः अलादीन ने उत्तर दिया—"आपका कहना सत्य है परन्तु पिता को स्वर्ग सिधारे कई वर्ष बीत गए।"

यह सुनते ही मायावी अलादीन को कण्ठ से लगा अनेक बार चुम्बन और मस्तका घ्राण पश्चात् अश्रुधारा से अपना वक्षस्थल भिगोने लगा।

अलादीन ने बिस्मय से पूछा— महाशय, आप रुदन क्यों करते हैं !"

दीर्घ निश्वास त्याग मायाबी कहने लगा—"पुत्र क्या कहूँ ! वास्तव में मैं तुम्हारा चचा हूं। तुम्हारे पिता मेरे अग्रज थे बहुत समय से मैं कारणवशात् देश प्रादेश अभीष्ट सिद्धि के लिए भ्रमण कर रहा था। अब केवल भाई के दर्शनार्थ ही स्वदेश आया था उनका स्वर्गवास सुन मुझे जो शोक हुआ वह अकथनीय है। बड़ी २ कामनाऐं चित्त में जागरूक थीं आह सब धूरि में मिल गई। परन्तु तुम्हारी मुखच्छबि भाई के अनुरूप है इससे मुझे बड़ा सन्तोष हुआ ईश्वर तुम्हें दीर्घआयु करे। जाओ अपनी माता स प्रणाम कहना कल अवकाश मिला तो आऊंगा।" यह कहकर मायावी मुट्ठी भर पैसे अलादीन को दे एक ओर चला चया।

अलादीन दौड़कर अपनी माता के पास पहुंचा और समस्त वृत्तान्त कह सुनाया।

माता बड़े असमञ्जस में पड़ गई बहुत सोचने पर भी उसे अपने किसी देवर का ध्यान न आया।

दूसरे दिन उसी मायावी चचा ने अलादीन को पा कण्ठ से लगा लिया और दो स्वर्ण मुद्रा देकर कहने लगा—'पुत्र, आज मैं तुम्हारे घर आऊंगा अपनी माता से कह देना भोजन बना रक्खें।"

अलादीन ने प्रसन्न हो मुद्रा अपनी माता को दे चचा की आज्ञा कह सुनाई।

कदाचित् अलादीन का कोई चचा ही हो परन्तु उसके विशुद्ध प्रेम से सुरुचि एवम् मुद्रा प्रदान से धनी होना निश्चय है यह धारणा कर अलादीन की माता ने स्वयम् बाजार से लाकर अनेक सुस्वादु पाक

बनाये और अलादीन को आज्ञा दी कि "शीघ्रता से अपने चचा को घर लिवा लाते"

किसी ने द्वार खटखटाया। अलादीन ने जाकर देखा स्वयम् उसका मायावी चचा दो बोतल मदिरा लिये खड़ा है।

अलादीन को बोतल देकर मायावी ने घर में प्रवेश किया और अलादीन की माता को बड़े शिष्टाचार से प्रणाम कर पूछने लगा—"भाई कहां बैठा करते थे ?"

अलादीन ने सामने की ओर संकेत कर दिया अस्तु मायावी ने उस भूमि को बड़ी श्रद्धा से कई बार चुम्बन किया 'आह, मैं कैसा मन्दभागी हूं इतना मार्ग कष्ट सहन करने पर भी भाई के दर्शन न कर सका। यह कहकर वह कुहकी रुदन करने लगा।

जब सब रो धोकर उचित स्थान पर बैठे तो वही मायावी कहने लगा—"भाभी जी, कोई चालीस वर्ष बीते मैंने इस नगर को छोड़ा था। सबके पूर्व मैं भारतवर्ष पहुंचा वहां से पार्श्व अरब और मिश्र गया अन्तत: मैं अफ्रीका पहुंच वहां के अलौकिक दृश्य और सभ्य समाज की शिष्टनीति वश मैंने वहां ही रहना निश्चय किया। परन्तु मैं चेष्टा करने पर भी स्वदेश और विशेषकर अपने भाई को विस्मरण न कर सका परन्तु शोक कि अन्तिम दर्शन न लाभ कर सका। अलादीन को देखकर इतना सन्तोष है कि इसकी मुखच्छवि निरन्तर भाई से मिलती जुलती है।"

मायावी ने देखा मन्त्र चला गया मेरे दुःख प्रकट करने से अलादीन की माता का हृदय द्रवित होगया है अविरल नयन अश्रु झर रहे हैं अस्तु उसने अलादीन से पूछा—"पुत्र ! तुम क्या किया करते हो ?"

अलादीन को मौनावलम्बित देख उसकी माता ने दीर्घनिश्वास त्याग कर कहा—"अजी यह बड़ा खिलाड़ी है। इसके स्वर्गीय पिता ने अपने जीवन काल में इसे सन्मार्ग पर लाने की बहुत चेष्टा की परन्तु

इसने कुछ शिक्षा ग्रहण न की (कुछ सोचकर) अजी, अब तुम आ ही गये हो ऐसा उपदेश दो कि यह कुछ आजीविका निर्वाहन कर सके । मैं दिन भर सूत काता करती हूँ तब बड़ी कठिनता से उदर पूर्ण होती है ।"

मायावी ने विस्मय से पूछा—"क्या यह सत्य है ? पुत्र तुम नहीं जानते 'उद्यमे नास्ति दारिद्रयम्' के आधार पर अवश्य कुछ न कुछ करना चाहिए किसी एक काम में चित्त नहीं लगता तो दूसरे काम में हस्तक्षेप करना चाहिये वरन् जिस ओर तुम्हारी अभिरुचि हो मुझ से निस्संकोच कह दो मैं कल ही सब उचित प्रबन्ध कर दूंगा यदि तुम चाहते हो कि आनन्द से गद्दी तकिया लगाये पड़े रहे तो ऐसा कपड़े का व्यवसाय है ।

अलादीन ने कृतज्ञता वश धन्यवाद में नीचा शिर कर दिया तब मायावी चचा ने प्रसन्न होकर कहा—"पुत्र, कल मैं तुम्हें स्वच्छ वस्त्र पहना व्यापारियों के पास ले चलूंगा वरन् कल ही एक दुकान चौक में तुम्हारे लिये निश्चय कर आऊंगा ।"

माता ने धनवान् समझ कर अलादीन का हाथ मायावी चचा के हाथ में पकड़ा कर कृतज्ञता पूर्वक कहा—"तुम्हें अधिकार है जो उचित समझो करो यह तुम्हारा ही तो पुत्र है ।

निदान अब तीनों ने मिलकर भोजन आस्वादन किया । पुनः थोड़ी देर कौटुम्बिक परामर्श पश्चात् मायावी प्रातः ही आने की कहकर विदा हुआ ।

दूसरे दिन प्रातः ही मायावी चचा ने घर आकर अलादीन को अपने संग लिया ।

एक दुकान में जहां अनेक वस्त्र विक्रय होते थे ले पहुंचा और इच्छानुसार उत्तमोत्तम वस्त्रों से अलादीन को सुसज्जित कर चौक में जहाँ कतिपय व्यापारी क्रय विक्रय कर रहे थे ले जाकर दिखाया ।

जब सन्ध्या होने आई तो मायावी अपने मित्र व्यापारियों से

मिलाने अलादीन को सराय में लिवा ले गया, जलपान कराया । तब अन्धकार देखकर अलादीन ने घर जाने की आज्ञा मांगी अस्तु मायावी स्वयम् उसे घर पहुँचा गया ।

अलीदीन की माता पुत्र के वस्त्र देख अति प्रसन्न हो मायावी को अनेकशः धन्यवाद देने लगी ।

दूसरे दिन मायावी ने घर आकर कहा—"भाभी जी, आज मैं अलादीन को वाटिका उपवनादि प्राकृतिक दृश्य दिखा ईश्वर परायण बनाऊंगा तब देखूं क्यों नहीं सन्मार्ग पर आता ।

अलादीन प्रसन्न हो मायावी चचा के संग चल दिया । मध्यान्ह तक बड़े सुख से राजप्रासाद पुष्पोद्यान इत्यादि निरीक्षण करता वह पीछे २ चला जाता था । "पुत्र तुम थक गये होगे । यह कह मायावी एक उद्यान में विश्राम लेने बैठ गया और मेवा इत्यादि जो कुछ अपने संग ले गया था अलादीन को खिलाये प्रेमत्व रूप मनो विनोदार्थ अनेक उपदेश भी देता रहा ।

जलपान से निवृत्त हो मायावी अनेक कथा गल्प सुनाता अलादीन को बहुत दूर लिवा ले गया । जब दिन थोड़ा रह गया और सन्मुख से ऊँचे २ पर्वत दृष्टि आने लगे मार्ग लोप होगया तो अलादीन ने उकता कर पूछा—"चचा जी, अभी कितनी दूर और चलोगे ।

मायावी ने अनेक सान्त्वना देकर कहा—"पुत्र मैं तुझे एक ऐसा पुष्पोद्यान दिखाऊंगा जिसके सदृश विश्व में कोई नहीं है वरन् सच तो यह है तुम उसे देखकर आनन्द मग्न हो जाओगे घर लौटने का नाम भी न लोगे ।"

इस प्रकार सान्त्वना देता हुआ मायावी अलादीन को ऐसे भीषण कानन में ले पहुंचा जो दो पर्वत शिखरों के मध्य स्थित था वरन् यही वह अभीष्ट स्थान था जिसके लिये वह अफ्रीका से यहां आया था । निदान मायावी ने वहां पहुंच कर अलादीन से कहा—"मैं आग लेने जाता हूं तुम सूखी लकड़ियां एकत्रित करलो ।"

अग्नि प्रज्वलित होने पर मायावी ने अपनी मन्त्र पूतबत्ती निकालकर जलाई इत्र इत्यादि सुगन्धित द्रव्य उस पर डाले और कुछ मन्त्र उच्चारण किया जिसे अलादीन कुछ न समझ सका। बत्ती में से निकला हुआ बहुत सा धुंआ चतुर्दिक फैलने लगा।

थोड़ी देर में भूकम्प की नाईं धरती थर २ कांपने लगी और एक शिला वर्गाकार जिसके मध्य में एक कढ़ा लोहे का उठाने के लिये लगा हुआ था विद्यमान होगई।

यह दृश्य देख भय से अलादीन भागने लगा तब क्रुद्ध हो मायावी ने मुष्टि प्रहार किया।

अलादीन अश्रु विसर्जन कर चचा से कहने लगा—"मैंने क्या अपराध किया था जो आपने यह अमानुषिक कठोर बर्ताव किया।

मायावी ने धैर्य देकर कहा—"पुत्र कुछ बुरा न मानो मुझे अपने पिता के समान समझो किन्तु यों समझ लो मैं तुम्हें अभी २ धनवान बनाये देता हूं। देखो मेरे मन्त्रबल से भूकम्प होकर जो यह शिला निकली है इसके नीचे बहुत बड़ा गुप्त कोष है उसे हस्तगत कर लेने पर तुम आज ही वसुन्धरा में सुविख्यात धनी बन जाओगे।

चचा के असीम दया के वशीभूत हो अलादीन ने कहा—"जो कुछ आज्ञा हो शिरोधार्य है।"

मायावी ने प्रसन्न हो अलादीन को कण्ठ से लगा लिया "पुत्र वास्तव में तुम्हीं इस अगाध सम्पत्ति के एक मात्र अधिकारी हो यह लो मैं तुम्हें एक छल्ला देता हूँ पहन लो यह मन्त्रपूत है इसे पहिनने से तुम्हें कुछ कष्ट न होगा। अब देखो शिला उठाने पश्चात् एक द्वार मिलेगा वहां से श्रेणीबद्ध बहुत सी सीढ़ियाँ पार करने पर नीचे कई पात्र स्वर्ण मुद्राओं से परिपूर्ण धरे मिलेंगे परन्तु तुम किसी ओर भ्रूक्षेप न करना सीधे आगे चले जाना। इस प्रकार क्रमशः तुम्हें तीन दालान मिलेंगे। उन्हें पार कर तुम एक हरे भरे उद्यान में पहुंचोगे। देखो मैं तुम्हें पुनः सतर्क करता हूं ? दालान „ उद्यान के प्रसून इत्यादि किसी

वस्तु को स्पर्श न करना अपने वस्त्र भलीभांति समेट लेना अन्यथा जीवन संकटापन्न हो जायगा पुनः अपनी माता का चरण दर्शन न पा सकोगे ।

इस प्रकार निश्चेष्ट भाव से चले जाने के पश्चात् तुम अभीष्ट स्थान पर पहुंच जाओगे देखो वहां तुम्हें कोई पचास थाप में सीढ़ियां मिलेंगी अस्तु तुम निस्संकोच ऊपर छत पर चढ़ जाना वहां तुम्हें आले में एक दीपक जलता मिलेगा बस तुम उसे बुझाकर मेरे पास ले आना देखो दीपक बुझते ही स्वयम् सूख जायगा जिस वस्त्र में बांधोगे चिकना न होगा दीपक हस्तगत् करने के पश्चात् यदि तुम्हारी इच्छा हो तो वाटिका में प्रस्फुटित विचित्र सुमन तोड़ लेना फिर भी यथा सम्भव दीपक लेकर शीघ्र लौटना ।

निदान अलादीन अंगुली में छल्ला पहन गढ़े में कूद पड़ा मायावी चचा के कहे अनुसार ठीक ही सीढ़ियां मिलीं पुनि नीचे उतर तथा दालानों और बाटिका में होता हुआ दीपक के निकट पहुंच गया ।

अलादीन ने दीपक बुझा अंगरखा में बांध लिया और लौटते हुये जितने फल फूल जहां स्थान मिला बांध लिये और शीघ्रता पूर्वक गढ़े में आकर ऊपर खींच लेने की प्रेरणा करने लगा ।

पहिले तू मुझे दीपक देदे तब मैं ऊपर चढ़ा लूंगा ।" यह कहकर मायाबी ने नीचा हाथ कर दिया

अलादीन बड़े असमञ्जस में पड़ गया दोनों हाथ भरे हुये थे दीपक कैसे खोलता परन्तु मायावी ने समझा अलादीन बाहर आकर दीपक न देगा वरन् अलादीन के बाधा देने पर मायावी को अति क्रोध हो आया उसने झटित कोई सुगन्धित वस्तु अग्नि में डाल मन्त्र बल से उक्त पाषाण शिला पूर्ववत् गढ़े के मुख पर रखदी । अलादीन "हाय चचा ! हाय चचा !! कहता ही रह गया ।

वास्तव में उक्त मायाबी मुस्तफा का भाई न था जैसा कि पाठकों को विदित हो चुका है । वह अफ्रिका रहिवासी था उसने मन्त्र

वल से जाना था चीन देश में एक दीपक है जिसके आधीन कई दैत्य हैं। परन्तु वह स्वयम् दीपक को उक्त तलगृह से निकालने में अक्षम है इसीलिये अलादीन के प्रति उसने षड्यन्त्र रचा था। उसकी इच्छा थी दीपक लेकर अलादीन को यमपुर पहूंचा दूंगा जिसमें रहस्य न खुल सके।

यद्यपि अलादीन का क्रन्दन सुनकर हृदय द्रवित होता था परन्तु मायावी ने समझा थोड़ी देर में ही प्राणान्त हो जायगा। वरन् कहीं मैं पकड़ा न जाऊं इस अभिप्राय से उसी समय अफ्रिका की ओर पयान कर दिया।

अलादीन बहुत घबराया सहस्र वृच्छदंश के समान वेदना होने लगी अन्धकार वश कुछ सुझाई न देता था बहुत प्रयत्न करने पर भी कहीं द्वार का चिह्न न मिला क्योंकि वह सब मायामात्र था। असीम दुःख तथा घर और माता की स्मृति प्राण छटपटा रही थी दो दिन इसी प्रकार क्रन्दन में बीते तीसरे दिन ऐसा ह्रास हुआ इतना कण्ठ सूख गया कि अन्तिम समय जान जब उसने ईश्वर से प्रार्थना की तो मुख से एक शब्द भी न निकला दोनों हाथ ऊपर को उठा दिये सहसा उंगुली में पहना हुआ छल्ला रगड़ गया हठात् एक विराट कार्य अति कुरूप दैत्य ने सुदीर्घ स्वर से पूंछा—"क्या आज्ञा है। मैं उसका दासानुदास हूँ जिसकी अंगुली में यह मन्त्रयुक्त छल्ला हो।"

यद्यपि अलादीन अति भयभीत हो किंकर्त्तव्यविमूढ़ बन गया परन्तु अति क्लेश पाने के कारण—"मुझे इस किरातपुरी से शीघ्रतया बाहर निकाल।" कम्पित कण्ठ से कह ही दिया।

कहने की देर थी दैत्य ने उसी दम बाहर ला खड़ा किया।

बाहर आकर अलादीन अति विस्मित हुआ क्योंकि अब वहां गढ़े का कुछ चिह्न नहीं था। सामने ही उसे अपना नगर दृष्टि आया अस्तु वह ईश्वर को धन्यवाद देता परसों मायावी के सङ्ग जैसे आया था सोचता समझता बड़ी कठिनता से अपने घर पहुंचा।

तीन दिन से खोये हुये अपने इकलौते पुत्र अलादीन को देख उसकी माता अति प्रसन्न हुई परन्तु क्षुधा तृषा से व्याकुल अलादीन माता के पास आ धड़ाम से गिरकर अचेत होगया निदान बड़ी देर में जब अनेक प्रयत्न करने पर अलादीन सचेत हुआ तो सबके पूर्व उसने भोजन मांगा।

किंबहुना माता ने थोड़ा भोजन कराने के पश्चात् अलादीन को सुला दिया।

जागृत होने पर अलादीन ने समस्त वृत्तान्त आद्योपान्त कह सुनाया तो उसकी माता मायावी को अनेक प्रकार से कोसने लगी।

अलादीन जो कुछ फल फूल दीपक इत्यादि लाया था वह सब एक कोने में डाल दिये परन्तु रात्रि के अन्धकार में उनका प्रकाश आंखें चुन्धियाने लगा तो सब उठाकर एक आले में रख दिये।

दूसरे दिन प्रभात होने पर अलादीन ने माता से कुछ भोजन मांगा। अस्तु दरिद्र माता ने दुःख प्रकाश कर कहा—"पुत्र क्या करूं इस समय कुछ भी भोजन नहीं है यदि थोड़ी देर सन्तोष करे तो मैं बाजार जाकर अपना काता हुआ सूत बेच लाऊं।"

उकताकर अलादीन ने कहा—"माता, सूर्योदय के पूर्व कैसे सूत बेच लावेगी, बड़ी देर लगेगी और क्षुधा अति प्रबल है अस्तु इस समय तू कल लाये हुए दीपक को बेच ला।"

आले में से दीपक निकाल माता कहने लगी—"अरे! तो पड़ा २ काई ने खा लिया मांज ले जाऊंगी तो कुछ अच्छे दामों में बिक जायगा।" यह कहकर थोड़ा रेत ले दीपक शुद्ध करने लगी सहसा रगड़ लगते ही एक विराटकाय दैत्य विद्यमान हो सुदीर्घ स्वर में पूछने लगा—"क्या आज्ञा है मैं और अन्य दैत्य सेवक हैं उसके जिसके अधिकार में यह दीपक हो।"

माता यह भयावह दृश्य देख वज्राहत की भांति स्तम्भित रह गई परन्तु अलादीन पूर्व में छल्ला के आधीनस्थ दैत्य को देख चुका

था अधिक भयभीत न हुआ वरन् झटित दीपक उठा कहने लगा—कुछ भोजन लाओ क्षुधा अति प्रबल है ।

आज्ञा पाते ही दैत्य थोड़ी देर में भोजन ले आया । एक बड़े थाल में बारह रौप्य पात्र जिनमें अनेक सुस्वादु पाक चुने हुए थे तथा श्वेत २ छः रोटी और दो बोतल सुगन्धित मदिरा अलादीन के आगे रख अन्तर्हित होगया ।

अलादीन माता के मुख पर जल छिड़क चैतन्य देख कहने लगा—"अब कुछ भय न करो उठो भोजन आगया है ।"

माता रौप्य पात्र और सुस्वादु भोजन देख अति विस्मित हुई बेचारी ने स्वप्न में भी ऐसे भोजन न देखे थे । अलादीन ने सूचित हो दीपक और छल्ला का रहस्य माता को सुनाया तो वह भय से कांप कर कहने लगी—पुत्र ! ऐसे विलष्ट दीपक को दूर फेंक कहीं वह दुष्ट दैत्य विद्यमान न हो जाय ।"

अलादीन ने सान्त्वना देकर कहा—"अजी इस दीपक के प्रसाद से तो हमें आशातीत लाभ हुआ और होने की सम्भावना है फिर कैसे दूर फेंकें ! अब आगे को सावधानता से व्यवहार करेंगे तुम निश्चिन्त रहो ।"

निदान माता पुत्र ने दो दिन पर्यन्त वह भोजन खाया तीसरे दिन जब कुछ अवशिष्ट न रहा तो अलादीन एक रौप्य पात्र विक्रयार्थ बाजार की ओर ले चला सहसा मार्ग में एक यहूदी से साक्षात् होगया जो ऐसे ही अनेक पात्र क्रिय विक्रय कर आनन्द से कालक्षेप करता था । अस्तु अलादीन पात्र दिखा पूछने लगा—क्या आप इसे लेने की कृपा करेंगे । मुझे आपका विश्वास है जो कुछ मूल्य आप देंगे धन्य समझूंगा ।"

अलादीन का सरल स्वभाव देख चातुर्य पटु यहूदी ने एक स्वर्ण मुद्रा अलादीन को भेंट की ।

यद्यपि पात्र ७२ मुद्रा का था परन्तु अलादीन एक मुद्रा पाकर ही अति प्रसन्न होगया।

यह दशा देख यहूदी रह २ कर पश्चात्ताप करने लगा—"मैंने बड़ी भूल की जो एक मुद्रा से कुछ कम न दिया कदाचित अब कुछ अलादीन लौटा दे इस आशा में थोड़ी दूर लपका भी परन्तु अलादीन दूर निकल गया था अस्तु यहूदी निराश अपने घर लौट गया।

अलादीन ने एक दुकान से रोटी मोल ली मूल्य चुका कर जो कुछ अवशिष्ट रहा अपनी माता को दे दिया। इसी प्रकार क्रमशः सब पात्र अलादीन ने उक्त यहूदी के हाथों बेच दिये। थाल में अधिक बोझ था अलादीन बाहर न ले जा सका परन्तु स्वयम् यहूदी घर आकर ही ले गया और केवल दस मुद्रा मूल्य दे गया।

अलादीन को जब २ अवकाश मिलता अच्छी संगति में बैठा करता वह निरन्तर सदाचारी बनने की चेष्टा किया करता था। जब अलादीन के पास कुछ न रहा तो उसने उक्त दीपक को किंचित रगड़ दिया सहसा वही दैत्य पुनः विद्यमान हो आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगा।

अलादीन ने कहा—शीघ्र ही कुछ भोजन उपस्थित करो। कहने की देर थी दैत्य पूर्व की नाईं पुनः भोजन देगया।"

दो दिन पर्यन्त भोजन आस्वादन किया पश्चात् एक रौप्य पात्र बचने के लिए ले चला यहूदी के पास जाते हुए मार्ग में एक वयोवृद्ध स्वर्णकार से साक्षात् होगया।

अलादीन को पास बुलाकर स्वर्णकार ने पूछा—"पुत्र, मैंने कई बार तुम्हें यहूदी के यहाँ जाते देखा है कदाचित तुम उसकी दुष्ट प्रकृति से अपरिचित हो जब कभी तुम्हें कुछ बेचना हुआ करे तो पहिले मुझे दिखा लिया करो।"

ऐसी सुहानुभूति देख अलादीन ने रौप्य पात्र स्वर्णकार को

दिखाया ।

चाँदी परख कर स्वर्णकार ने पूछा—यहूदी कितना मूल्य दिया करता है ।

कोई ऐसे बारह पात्रों का मूल्य उसने बारह मुद्रा दीं हैं । अलादीन ने सकुचाते हुए कहा ।

स्वर्णकार ने पात्र तोलने पश्चात कहा—"ओह दुरात्मा ने बड़ा कपट किया केवल एक पात्र का मूल्य ७२ स्वर्णमुद्रा है ।" यह कह कर उसने ७२ मुद्रा अलादीन के आगे रख दीं ।

इस प्रकार पात्र विक्रय कर अलादीन बहुत दिनों तक आनन्द से कालक्षेप करता रहा यदि वह चाहता तो दीपक द्वारा बहुत सा धन उपार्जन कर लेता परन्तु इस ओर कभी उसका ध्यान ही आकर्षित नहीं हुआ वह अति सरल स्वभाव था ।

एक लाभ अलादीन की यह और होगया कि रत्न पारखी कोई उसका मित्र होगया रत्नों का मूल्य प्रकार इत्यादि देखने से वह अमूल्य जिन्हें पुष्प समझ वह दीपक के संग लाया था जो कांच के सदृश समझ इधर उधर डाल रक्खे थे सावधानता से किसी योग्य स्थान में रक्षित कर दिये ।

एक दिन अलादीन नगर में घूम रहा था सहसा ढाल का अस्फुट शब्द कर्णगत हुआ ।

थोड़ी देर में एक राज कर्मचारी ने सुदीर्घ कण्ठ से घोषणा की आज कोई मनुष्य अपनी दुकान न खोले न अपने घर से बाहर निकले क्योंकि राजकुमारी बदरुल बदूर स्नान करने जावेंगी निदान जब तक वह लौट कर अन्तःपुर में प्रविष्ट न हों सब कोई अपने २ घरों का द्वार बन्द किये भीतर बैठ रहें ”

घोषणा सुनकर अलादीन को राजकुमारी के श्री दर्शनों की बड़ी उत्कण्ठा हुई । वह स्नानागार के निकटस्थ किसी गोप्य स्थान में बैठ गया ।

थोड़ी देर में राजकुमारी ने वहां आकर वस्त्र उतार दिये तो मुखच्छवि देख अलादीन स्तम्भित रह गया। निदान जब वह लौटकर घर पहुंचा तो उसकी बुरी दशा होगई।

अलादीन को सोच निमग्न दीर्घ निश्वास त्यागते देख माता ने कारण पूछा। परन्तु अलादीन ने कुछ न बताया क्योंकि—

जग जानत कौन है प्रेम बिथा केहि सों चरचा या वियोग की कीजिये। पुनिका कही माने कहा समुझै कोऊ क्यों बिन बात की रारहि लीजिये।

अन्ततः अलादीन राजकुमारी के प्रेम में मुग्ध हो वियोगाग्नि में जलने लगा। खान पान इत्यादि सब दैनिक कर्म छूट गये।

वियोग सन्तप्त अलादीन ने रात्रि करवट बदलते काटी किस प्रकार राजकुमारी से साक्षात हो इस प्रश्न की मीमांसा में सूर्योदय होगया उसने अति व्याकुल अपनी माता द्वारा अभीष्ट सिद्धि का प्रयोग का उपाय निश्चय किया अस्तु प्रातः ही जब उसकी माता सूत कात रही थी अलादीन ने समस्त वृत्तान्त अपनी माता को कह सुनाया।

मुख पर हाथ रख माता ने बर्जकर कहा—"फिर ऐसी बात मुख से न निकालना वास्तव में सौन्दर्य पर विमोहित हो तू ज्ञान रहित होगया है। परन्तु स्मरण रख.............।"

अलादीन ने अति बिनीत माता से कहा—'मां, ऐसे बचन क्यों मुख से निकालती हो मैं अवश्य ही राजकुमारी के संग विवाह करूंगा। माता मेरी बुद्धि नष्ट नहीं हुई।"

बीच में रोककर माता ने कहा—"पुत्र, क्या तू अपनी दशा पर कुछ विचार नहीं करता कहां कुलाभिमानी राजकुमारी और कहां तू दानातदीन असभ्य प्रजा, अवश्य ही तेरी बुद्धि नष्ट हो गई है।"

माता तेरा कहना अक्षरशः सत्य है परन्तु प्रेम ने मुझे अन्धा बना दिया है। जैसे हो सके मेरी प्रार्थना राजा तक पहुंचा दे।" यह कहकर अलादीन माता के चरणों में गिर पड़ा।

"अरे, तेरा ध्यान है कहां ? भला राजकुमारी किसी युवराज की पाणिग्रहीता बनेगी कि तेरी दरिद्र पत्नी ।" यद्यपि माता ने बहुत समझाया परन्तु अलादीन ने क्रन्दन कर कहा "माता जीवन अति संकटापन्न है प्राण बचाना तेरे आधीन है मैं शपथ देकर कहता हूं राजकुमारी का वियोग मुझे जीवित न छोड़ेगा ।

इस पर भी माता ने अलादीन को बहुत समझाया, प्राण भय दिखाया परन्तु उसके दृढ़ निश्चत को भङ्ग न कर सकी वरन् अलादीन की हठ ने राजा के पास जाने पर ही उसे बाध्य कर दिया ।

श्वेत वस्त्राच्छादित एक पात्र में बहुत से रत्न जो दीपक के साथ अलादीन लाया था, लेकर उसने राजसभा की ओर पयान किया ।

सन्ध्या समय जब राजा अन्तःपुर चले गये तो यह बेचारी भी अपने घर लौट आई ।

माता को अनमयस्का देख अलादीन को बड़ा दुःख हुआ वह विगत मद मतवासे की नांई माता के चरणों में गिर पड़ा विवश वह दूसरे दिन पुनः राजसभा में गई परन्तु दो दिन की छुट्टी थी आज भी वह निराश लौट गई ।

इसी प्रकार कई दिनों पर्यन्त अलादीन की माता राजासभा में गई परन्तु कुछ कहने सुनने का अवकाश ही न मिला ।

एक दिन राजा ने मन्त्री से पूछा—"यह कौन स्त्री है जो प्रतिदिन यहां आया करती है ।

मन्त्री ने कहा—"प्रभो, इस समय तो वह चली गई । प्रायः स्त्रीगण व्यर्थ की प्रार्थना किया करती हैं सम्भव है किसी ने कोई वस्तु कम तोली हो अथवा इसी प्रकार और कुछ हो...।"

शिर हिलाकर राजा ने कहा—"यदि कल वह आवे तो हमारे पास ले आना ।'

दूसरे दिन जब अलादीन की माता राजसभा में पहुँची तो

आज्ञानुसार तुरन्त उसे उपस्थित कर दिया।

अलादीन की माता ने राजा के सन्मुख पहुंच पृथ्वी पर गिरकर प्रणाम किया।

राजा ने पूछा—"वृद्धा, कई दिनों से मैं तुम्हें यहाँ आते देखता हूँ परन्तु अभी तक तुमने कुछ इच्छा प्रकट नहीं की।"

वृद्धा ने दीर्घ निश्वास त्याग एकान्त में प्रार्थना सुनने का अनुरोध किया हठात् राजाज्ञा से सब कोई वहां से हटा दिये गये केवल एक महामन्त्री राजा के समीप बैठे रह गये।

निरनिराला पा वृद्धा ने राजकुमारी के प्रति अपने पुत्र अलादीन के अनिन्द्य असीम प्रेम प्रणय तथा वियोग दुःख वर्णन कर विवाह की प्रार्थना की और अमूल्य रत्न राशि पात्र सहित राजा को भेंट कर दिये।

राजा रत्न राशि देख अति विस्मित हुआ इतने अधिक दार्घाकार समुन्नत रत्न संसार में उपलब्ध हो सकेंगे उसे स्वप्न में भी विश्वास न था क्योंकि वह वास्तव में थे ही अमानुषिक। निदान प्रत्येक रत्न निरीक्षण पश्चात् राजा ने महामन्त्री से पूछा—"जो मनुष्य ऐसे अमूल्य रत्न भेंट करे वह निस्सन्देह राजकुमारी के अमूल्य कर का भागी बन सकता है।"

यह सुन मन्त्री अति विषन्न हुआ उसे विश्वास था राजा मेरे पुत्र के अतिरिक्त राजकुमारी का विवाह और किसी के संग न करेगा अतः कुछ देर सोचने के पश्चात् मन्त्री ने कहा—"प्रभो! इन तुच्छ रत्नों के पीछे एक अप्रसिद्ध व्यक्ति के संग राजकुमारी का विवाह करना बड़ी भूल है यदि आज्ञा हो तो तीन महीने के भीतर ही इनसे उत्तम रत्न मेरा पुत्र भेंट कर सकता है।"

थोड़ी देर सोचकर राजा ने अलादीन की माता से कहा वृद्धा! वैवाहिक दायज एकत्रित करने में हमें कुछ अवकाश चाहिए अतएव इस समय तो तुम अपने घर लौट जाओ तीन महीना पश्चात् फिर

यहां हो जाना और अपने पुत्र को विश्वास दिला देना हमने उसकी प्रार्थना स्वीकार करली है।"

माता ने लौटकर जब समस्त वृत्तान्त अलादीन को सुनाया तो वह अति प्रसन्न हुआ परन्तु तीन महीने का समय उसे तीन वर्ष से भी अधिक प्रतीत होता था। ज्यों त्योंकर दो महीने सकुशल बीत गये।

एक दिन संध्या समय अलादीन की माता तेल लेने बाजार गई उसने देखा अनेक राजकर्मचारी गण इधर से उधर दौड़ रहे हैं वरन् व्यापारी इत्यादि सब ही उत्साह से आनन्द मग्न हैं अस्तु सब कुतूहल वश देख उसने कारण पूछा तो ज्ञात हुआ, आज की रात महामन्त्री के पुत्र के संग राजकुमारी बदरुल्बदूर का विवाह सुसम्पन्न होगा।

यह सुन वृद्धा अति विषन्न हुई राजा अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ न रहेगा। उसे स्वप्न में भी आशा न थी अस्तु घर आकर उसने समस्त वृत्तान्त अलादीन को सुनाया।

अलादीन वज्राहत की भांति स्तम्भित रह गया बड़ी देर में जब वह सचेत हुआ तो विक्षिप्त की नाईं न जाने क्या बकने लगा। वरन् प्रलाप देख माता के नेत्र भी नीर बहाये बिना न रह सके।

अलादीन ने क्रुद्ध हो अपने दीपक को रगड़ दिया सहसा वही दैत्य शीघ्र उपस्थित होगया।

अलादीन ने कहा—"यहां के राजा ने अपनी पुत्री मेरे संग विवाहने का वचन दिया था परन्तु आज वह अपनी प्रतिज्ञा भंग कर मन्त्री पुत्र के संग विवाह करने को उद्यत हुआ अस्तु इस कार्य में तुम्हारी यह आवश्यकता है कि जब विवाह हो जावे और वर वधू दोनों एक शय्या पर शयन करें तुम शय्या सहित दोनों को यहाँ उठा लाना देखो किसी को कुछ प्रकट न हो अति गोप्य लाना।"

ठीक उसी समय जब अलादीन दैत्य को समझा रहा था अन्तः-

पुर में राजकुमारी के संग सचिव पुत्र का विवाह कार्य सम्पन्न हो रहा था। जब सब वैवाहिक रीति हो चुकी तो सानुरोध बर वधू सुसज्जित प्रमोद भवन में प्रविष्ट हो सलज्ज एक ही शय्या पर शयन करने लगे। बाहर से परिचारिकाओं ने द्वार बन्द कर दिया।

यह सुअवसर देख दैत्य ने मन्त्रबल से दोनों को सूक्ष्म रूप में परिणत कर शय्या सहित अलादीन के सम्मुख उपस्थित कर दिया।

अलादीन राजकुमारी को देख अति आल्हादित हुआ और सचिव पुत्र के लिए दैत्य को आज्ञा दी—"इसे रात भर किसी पुरीषगृह में बन्दी रक्खो प्रभात होने पूर्व ही यहाँ ले आना।"

निदान दैत्य ने सचिव कुमार को पुरीषगृह में जो अति संकीर्ण मूत्र विष्ठा से दुर्गन्ध मय था, बन्दी कर दिया सचिव कुमार का मस्तिष्क घूमने लगा। यद्यपि वेदना असह्य थी परन्तु विवश अपने भाग्य को कोसते सहन करनी पड़ी! परन्तु इसके विपरीत सान्त्वना रूप अलादीन राजकुमारी की शय्या पर बैठ प्रेम पूर्वक कहने लगा—हृदयेश्वरी, तुम कुछ भय न करो मैं तुम्हारे लिये बहुत दिनों से लालायित हो रहा था। आवश्यकता वश तुम्हें इस अवस्था में यहां लाना पड़ा है कोई दो मास बीते जब तुम्हारे पिता ने तुम जैसी असमान्या सुन्दरी युवती का विवाह मेरे संग कर देने का वचन दिया था परन्तु न जाने किस कारण से प्रतिज्ञा भंग की अतएव तुम समझ सकती हो ऐसी दशा में जब कि मैं तुम्हारे प्रेम में अपने प्राण विच्छिन्न करने को उद्यत था, मेरे हृदय में कितना व्याघात पहुंचा होगा।

राजकुमारी को अब तक इस अपूर्व प्रणयी के कुछ समाचार न मिले थे मौनावलम्बी हो शय्या पर एक ओर पड़ रही। अलादीन ने भी और कुछ न कहा अपना खंग शय्या के बीच में रख मुख फेर कर सो गया।

प्रभात होने पर दैत्य ने सचिव पुत्र को उपस्थित किया तो अलादीन ने पूर्ववत् दोनों को शय्या पर सुला अन्तःपुरस्थ प्रमोद भवन में पहूँचाने की आज्ञा दी।

यद्यपि राजकुमारी भय और सचिव पुत्र दुर्गन्ध से अति विषण्ण थे परन्तु दैत्य का भीषणाकार देख थर २ कांपने लगे।

ठीक इसी समय देश प्रथानुसार स्वयम् सम्राट बधाई देने पुत्री और जामाता के पास प्रमोद भवन में आये सचिव पुत्र राजा को देखते ही अन्यत्र चला गया परन्तु राजकुमारी अति विषन्न शय्या पर पड़ी रही।

राजकुमारी की मुखच्छवि अति मलीन देख राजा अन्तःपुर में प्रविष्ट हो रानी से अन्यमनस्कताका कारण पूछने लगे।

परन्तु कल राजकुमारी उत्साह से फूली अंग न समाती थी विषन्न होने का कारण रानी कुछ न समझ सकी उसने विश्वास दिलाकर कहा—"प्रायः नववधू गण तीन दिन पर्यन्त ऐसी ही लज्जा किया करती हैं जिसमें निरन्तर दुःख का आभास होता है अन्यथा······।"

राजा के अनुरोध करने पर विवश रानी ने राजकुमारी के पास पहुंच कुशल पूछी।

थोडी देर मौन रहने पश्चात् राजकुमारी ने दीर्घनिश्वास त्याग शय्या सहित उठा ले जाना इत्यादि समस्त दुर्घटना वर्णन करदी।

रानी अति विस्मित हुई राजकुमारी के कहने पर उसे अणुमात्र भी विश्वास न हुआ। उसने यह सब लीला दुःस्वप्न मात्र समझ उपहास से कहा—"अच्छा हुआ जो तूने अपने पिता से न कहा नहीं तुझे बौरी समझने में क्या संदेह था।"

राजकुमारी ने विषन्न होकर कहा—"माता मैंने कोई स्वप्न नहीं देख बुद्धि नष्ट नहीं हुई (कुछ सोचकर) तनक मेरे·····(पतिदेव) से तो पूछ लीजे।"

निदान रानी ने सचिव पुत्र को बुला रात्रि की घटना पूछी

परन्तु उसने लज्जा से शिर हिला दिया ।

अलादीन को दैत्य द्वारा सब समाचार मिलते रहते थे आज भी वर वधू अन्यत्र किसी भवन में एक ही शय्या पर शयन करेंगे अस्तु उसने दैत्य को आज्ञा दी—"कल की नांई आज भी दोनों को शय्या सहित मेरे पास उठा लाओ !"

निदान ज्योंही कि दोनों एक शय्या पर बैठे कि सहसा दैत्य उठाकर अलादीन के कमरे में ले आया ।

आज्ञानुसार सचिव पुत्र पुरीषगृह में बन्दी कर दिया गया और कृपाण बीच में रख अलादीन राजकुमारी के संग सो रहा ।

प्रभात होने पर दैत्य शय्या सहित दोनों को अन्तःपुर पहुंचा आया । रीत्यानुसार राजा आज भी कुशल पूछने राजकुतारी के पास आया परन्तु वह कल की अपेक्षा आज अधिक विषन्न थी कोमल गण्ड से वह अविरल नयनाश्रु झर रहे थे यह देख राजा का हृदय द्रवित हो गया । यद्यपि सानुरोध राजा ने कई बार कारण पूछा परन्तु राजकुमारी ने अश्रु बहाने और दीर्घनिश्वास त्यागने के व्यतिरिक्त मुख से एक शब्द भी न कहा ।

यह अनुभावित रूप देख राजा अति विषन्न हुआ और क्रोधि कम्पित अधरों पर दन्तारोपण होने लगा । निशित कृपाण कर राजा ने कहा—"या तो सत्य २ घटना वर्णनकर अन्यथा मै तुझे ही मारकर अपना क्रोध शान्त करूंगा ।

राजकुमारी भय से कांपने लगी अश्रु बहाते हुये उसने गति रात्रि दैत्य के उटा ले जाने इत्यादि की समस्त घटना आद्योपान्त कह सुनाई ।

"मैंने तुम्हारा विवाह दुःख झेलने को नहीं किया । राजकुमारी को सान्त्वना दे राजा ने महामन्त्री को बुलाया ।

"मैंने कुछ पूछा नहीं है। महामन्त्री राजा से कहकर अपने घर आ पुत्र से पूछने लगे ।

सचिव पुत्र ने राजकुमारी के वचन की पुष्टि करते हुये दीर्घ निश्वास त्यागकर कहा—'यदि मैं एक दो दिन राजकुमारी के पास और सोया तो प्राणान्त में कोई सन्देह नहीं है पिताजी, जैसे हो इस विवाह सम्बन्ध से मुझे बंचित कीजिये इसमें राजकुमारी की भी कुशल नहीं है।"

वास्तव में दो दिन में ही पुत्र की बुरी दशा होगई है यही सोचते विचारते महामन्त्री ने राजा से आकर कहा—"प्रभो आपका कहना अक्षरशः सत्य है उत्तम यही है दोनों का विवाह सम्बन्ध तोड़ दिया जावे।"

अस्तु राजा ने समझ सोचकर विवाह सम्बन्ध तोड़ दिया गया ऐसी घोषणा करादो।

इस प्रकार एक महीना बीत गया तब अलादीन ने अपनी माता को राजसभा में भेजा।

अलादीन की माता का सन्देश सुन राजा बड़े असमञ्जस में पड़ गया उसने महामन्त्री से कहा—"वचन बद्ध होने के कारण अब मैं कैसे मने करूं!"

महामन्त्री ने आश्वासन देकर कहा—"आप मनें क्यों करें मेहर * (रक्षित धन) में इतना धन बतादें जो यह एकत्रित न कर सके बस सहज ही पीछा छुट जायगा।',

राजा ने कुछ सोचकर कहा—',अच्छा वृद्धे हम तुम्हारे पुत्र के संग विवाह करने को उद्यत हैं तुम मे ४० थाल स्वर्ण के उन रत्नों से परिपूर्ण जो पहिले तुम भेंट दे चुकी हो ४० चालीस समवयस्क परिचारिकों के शिर पर रखवा उपस्थित कर दो। यदि ऐसा न कर सको तो विवाह का नाम न लेना।"

यह सुन वृद्धा ने घर की ओर पयान किया वह मार्ग में सोचती जाती थी भला इतना मेहर अलादीन कहां से लावेगा मुझे व्यर्थ ही लज्जित किया है। उसने सब वृत्तान्त अलादीन से कह सुनाया।

अलादीन ने हसकर कहा—'माता तुम क्यों सोच निमग्न हो एक क्षण में सब उपस्थित किये देता हूं जाओ तुम कुछ भोजन बाजार से ले जाओ।

ज्योंहीं वृद्धा बाजार की ओर गई त्यों ही अलादीन ने दीपक रगड़कर दैत्य से सब मेहर मंगा लिया।

वृद्धा ने घर आकर देखा तो वह अति विस्मित हुई तुरन्त चालीसों सेवकों के शिर पर थाल रखवा राज प्रसाद की ओर चल दी। मार्ग में जो कोई देखता आश्चर्यित हो देखता का देखता रह जाती।

जब वह राजसभा में पहुंची तो राजा ने अति विस्मित हो महामन्त्री से कहा—"जो मनुष्य इतना शीघ्र मेहर उपस्थित करे वह निस्सन्देह राजकुमारी के योग्य है।"

यद्यपि मन्त्री ने ईर्षावश बहुत बाधा दी परन्तु राजा ने एक न मानी उसने वृद्धा से कहा—"मुझे विवाह स्वीकार है अभी जाकर तुम अलादीन को यहां भेज दो मुझे उसके देखने की बड़ी उत्कण्ठा है।

वृद्धा ने घर आकर सहर्ष अलादीन को सब वृत्तान्त कह सुनाया। अस्तु अलादीन ने दीपक रगड़ दैत्य को आज्ञा दी—"मेरे नाप के वस्त्राभरण तथा अति चपल एक घोड़ा जो राजा के अश्वालय में न निकले, और १२ सेवक वस्त्राभरण से अलंकृत मेरी सेवा सुश्रूषा के लिये और एक कोड़ी परिचारक जो मेरे घोड़े के आगे २ चलें और ६ सेविका माता की सेवा को तथा दो परिचारिका और वस्त्राभरण नववधू राजकुमारी बदरुलबदूर के निमित्त और दो तोड़ा स्वर्ण मुद्रा शीघ्र उपस्थित करो।"

निदान सबके पूर्व दैत्य ने अलादीन को श्वेत प्रस्तर मण्डित उष्ण स्नानागार में पहुंचा दिया और उबटन गन्ध लेपन इत्यादि से निवृत्त होने पर पुनः घर पहुंचा दिया।

घर आकर अलादीन ने देखा [illegible] रत्न जटित उत्तमोत्तम

वस्त्राभरण इत्यादि विद्यमान है। वस्त्राभूषण धारण कर अलादीन ने दर्पण में देखा तो वह स्वयम् अपना रूप देखकर चमत्कृत रह गया। आज उसकी मुखच्छवि तेजपुंज पूर्व की अपेक्षा शतत: अधिक सुन्दर भान होती थी दूसरा कामदेव प्रतिबोध होता था।

निदान समस्त इच्छित वस्तु पा अलादीन ने दैत्य को बिदाकर अपने आने की सूचना राजा को भेजी और बड़े समारम्भ से अश्वारूढ़ हो सेवकों को यथा विहित आगे पीछे करके स्वयं राजसभा को ओर पयान किया वरन् आगे चलने वाले दो सेवक अलादीन के ऊपर मुद्रा बखेरते जाते थे।

नागरिक अलादीन का राजसी ठाठ देख विस्मित हो चारों ओर घिर आये वह राजकुमारी को विवाहने जा रहा है यह जान स्वागत में करतल ध्वनि करने लगे।

अलादीन बड़े समारम्भ से राजसभा में पहुंचा बीचों बीच राजा सिंहासनासीन थे और इधर उधर राजकर्मचारी गुण यथा स्थान स्थित थे। अलादीन को देखते ही स्वागत के लिये उठ खड़े हुए किम्बहुना राजा ने बड़े सन्मान से अलादीन को सिंहासन पर बैठाया।

कुशल प्रश्न पश्चात राजा अलादीन का हाथ पकड़े पाकशाला में लिवा ले गया। अस्तु दोनों ने मिलकर भोजन आस्वादन किया और भी अनेक राजकर्मचारी भी भोजन में सम्मिलित हुये थे।

भोजनापरान्त राजा ने काजी पंडित बुला अलादीन के संग राजकुमारी बदरुलबदूर का विवाह कार्य प्रारम्भ किया।

जब विवाह कार्य सुसम्पन्न होकर काजी चला गया तो राजा ने अलादीन को अति सुशील नीति पटु देख प्रसन्न हो रात्रि को वहीं अन्त:पुर में राजकुमारी के पास शयन करने की उत्कण्ठा दिखाई।

परन्तु अलादीन ने अति विनीत प्रार्थना की—"इस समय आप क्षमा करेंगे मेरी इच्छा है यहीं प्रासाद के निकटस्थ राजकुमारी के योग्य शीघ्र ही एक महल बनवाऊं यदि आपकी अनुमति मिले ! क्योंकि यहां रहने से समय श्री दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त होता रहेगा ।"

राजा ने प्रसन्न हो कहा—"जहां तुम्हारी इच्छा हो महल निर्माण कराओ प्राकार के समक्ष ही बहुतेरी भूमि है ।

निदान राजा की अनुमति पा अलादीन उसी समारम्भ से मुद्रा लुटाता अपने घर को लौट आया और दीपक रगड़ दैत्य को आज्ञा दी—"जितना शीघ्र हो सके राज प्रासाद के सन्निकट एक विशाल महल जिसकी प्राकार स्वर्ण मंडित हो प्रत्येक ओर छः छः द्वार रत्न जटित बनाये जावें परन्तु एक ओर केवल एक द्वार साधारण प्रस्तर का ही हो किंबहुना महल इतना बने जो विश्व में उसके सदृश कोई न निकले । महल के आगे पुष्पोद्यान अवश्यमेव हो और प्रत्येक कमरा आवश्कीय वस्तुओं से परिपूर्ण हो कुछ आकांक्षा न रहे अश्वालय में सुन्दर चपल अश्व अश्वपालक सहित तथा दास दासी इच्छातीत समस्त राजसी बसुधा विद्यमान् हो ।

दैत्य के अन्तर्हित होने पर अलादीन ने राकुमारी के वियोग में अति विषन्न रात्रि के तीन पहर बिता दिये चौथे पहर में निद्रा देवी ने कुछ कृपा की कि प्रभात होने पर सहसा विगत मत मतवारे की नांई घबराकर उठ बैठा दैत्य ने महल बनने और निरीक्षण पश्चात् जो कुछ आश्यक हो आज्ञा देने की प्रार्थना की ।

अलादीन ने देखा महल बहुत अच्छा बना है आमोद प्रमोद की समस्त वस्तुएं विद्यमान हैं वरन् उसके कहे अनुसार सहस्रशः अधिक हैं । वह अति प्रसन्न हो बार २ दैत्य की सुरुचि की प्रशंसा करने लगा । सब कुछ देखने पश्चात् उसने कहा—"ओह, यह तो विस्मरण ही नहीं रहा उक्त महल से राजप्रासाद पर्यन्त एक बड़ा सा गलीचा तो बिछा दो ।"

कहने की देर थी दैत्य ने तुरन्त गलीचा भी बिछा दिया ।

प्रभात होने पर राजप्रासाद का द्वार खुला तो कर्मचारी गण देखकर विस्मित रह गए वरन् एक क्षण में इस नवीन महल के रातों रात बन जाने का समाचार समस्त महल रहिवासियों के कर्ण कुहर में गूंजने लगा ।

महामन्त्री यह समाचार पा राजा के पास आ कहने लगा "प्रभो! यह सब अलादीन की मायामात्र है ।

बीच में ही शिर हिलाकर राजा ने कहा—"नहीं २ कल ही तो अलादीन ने राजकुमारी के लिये महल बनाने की आज्ञा ली थी वही वस्तु नैपुण्य शिल्पकारों द्वारा शीघ्रतः बनवा लिया है । क्या तुम नहीं देखते अलादीन प्रतिदिन शुभ्रालङ्कार भूषित और शुभ्र माल्यादि विशिष्ट मणिमय तेजःपुञ्ज देख सब पर जैसा आतङ्क छा जाता है निस्सन्देह तुम द्वेषवश मायाबी बताते हो ।"

उधर अलादीन ने अपने घर पहुंचकर माता से कहा—"देखो अब राजा अवकाश पा सुचित्त होंगे राजकुमारी की बिदा का अनुमोदन करना और वस्त्राभरण दास दासी समर्पण कर स्वयम् राजा से महल निरीक्षण का अनुरोध करना ।

ज्योंही कि अलादीन की माता राजसी वस्त्राभरण से अलंकृत हो दास दासियों के सङ्ग राजसभा में पहुंची त्यों ही अलादीन ने अपना दीपक ले नवीन महल में प्रवेश किया ।

अलादीन की माता के महल में प्रविष्ट होने पर बड़े आनन्द और उल्लास से उत्सव मनाया गया नगर में जहां देखो नृत्य गान आमोद प्रमोद महोत्सव मनाया जाने लगा ।

राजा अलादीन की माता को कुरूप वृद्धा ही समझता था आज खुला मुख देखकर बोध हुआ वह सुन्दरी युवती है ।

निदान सन्ध्या समय राजकुमारी प्रत्येक को कंठ लगा विदा हो श्वसुराल चली वाम ओर सासु पीछे अनेक दास दासी परिचारिका

इत्यादि हो लीं जब यह मण्डली द्वार के बाहर पहुंची तो १००-१२५ दास इधर उधर और ३०० सेवक पीछे २ वस्त्राभरण से सुसज्जित तथा और भी अनेक दास दासी मणिमय दंड हाथों में लिये चल रहे थे जिस प्रकार दिन में बिजली का प्रकाश होता है उसी प्रकार उक्त मंडली में मणिमय दंडों का प्रकाश था उन्हें देखकर ऐसा बोध होता था मानो स्वर्गवासी दंड लिये भूलोक का शासन करने जा रहे हैं वरन् उन्हें देख कर कतिपय नागरिक उनकी प्रखर प्रभा पुन्ज अवलोकन कर चकित रह गये स्वयम् राजा ने सहिष्णुता के साथ निरीक्षण किया तो उनको अति रमणीय भान हुए यद्यपि सबके पीछे कतिपय प्रहरीगण की भयंकर भ्रू भंगी ने प्रकम्पित भयभीत कर दिया परन्तु इनके विपरीत आगे चलने वालों ने सबको अपने प्रसन्न मुख से सुमधुर हास्य से आनन्द के नीर निधि में प्लावित कर दिया था शेष अप्सरा गण अपने सुकोमल कोकिला कंठ से गान और नृत्य कर रसिकों के चित्त रंजन में अलग ही पराकाष्ठा दिखा रही थीं। इसी प्रकार बड़े आमोद-प्रमोद से राजकुमारी ने पतिगृह में प्रवेश किया।

राजकुमारी ने अलादीन को देखा वह ऐसा सौन्दर्य पूर्ण मुख कमल अवलोकन कर मुग्ध होगई उधर अलादीन प्यार से नेत्रों से लावन्य कलिका राजकुमारी की मुखच्छवि निहार अति विनीत कहनेलगा—"प्यारी बदर कहां तक आपको धन्यवाद दूं (मस्तक स्पर्श कर) वास्तव में तुम जैसी रमणी रत्न चराचर में बड़े पुण्य से मिलती है।"

राजकुमारी ने हाथ जोड़ कटाक्ष से कहा—"प्रियतम ! अब तक आपके श्री दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था और फिर मैं परवश थी पिता ने जिसको चाहा पाणिगृहीता बना दिया परन्तु ईश्वर को सहस्रशः धन्यवाद है कि अन्ततः जैसा मैं चाहती थी सुन्दर सुरसिक पति लाभ कर सकी।"

प्रेम पूर्ण उत्तर पा अलादीन ने गद् गद् हो राजकुमारी का कर

चुम्बन किया वरन् बड़ी देर तक पारस्परिक गाढ़ालिंगन और चुम्बन कर दोनों स्वर्गीय सुख उपभोग करते रहे । पुनः दोनों ने मिलकर भोजन आस्वादन किया ।

स्वर्ण रौप्य पात्र और भी इन्द्रोपम महल एतदर्थं समस्त राजश्री पदार्थ देख राजकुमारी ने कहा—"पितृ गृह देख मेरा अनुमान था कि पिता के सदृश विश्व में कोई नहीं है परन्तु वह भ्रम निकला इस बारहद्वारी की ईयत्ता ही नहीं । इसी प्रकार राजकुमारी की जिधर दृष्टि जाती थी आल्हाद से फूली अंग न समाती थी वह सब माया मात्र है उसे स्वप्न में भी विश्वास न था ।

अर्द्ध रात्रि बीतने पर चीन देश की प्रथानुसार दम्पत्ति नृत्य करने लगे अन्त में थोड़ी मदिरा पान कर दोनों सौख्य शयनागार में शयन रति क्रीड़ा में मत्त हुए । दासियों ने बाहर से द्वार बन्द कर दिया ।

प्रभात होने पर अलादीन स्नानादि से निवृत्त हो वस्त्र पहन अश्वारूढ़ हो राजसभा में पहुंचा । सन्मान पूर्वक राजा ने सिंहासन पर बैठ कुछ जलपान करने का अनुरोध किया ।

अलादीन ने बाधा देकर कहा—"इस समय क्षमा कीजिये तो आपको लिवाने आया हूं कृपाकर सेवक की अपावन कुटीर को सुशोभित कीजै वहां ही आपके भोजन का प्रबन्ध किया है

अलादीन के अधिकानुरोध से स्वयम् राजा ने महामन्त्री इत्यादि कर्मचारियों को संग ले नवीन महल में प्रवेश किया ।

राजा महल देखकर चकित रह गया ऐसा रमणीक स्थान उसने देखा ही न था अस्तु अति विस्मित हो राजा ने मन्त्री से पूछा—"क्यों जी यह २३ द्वार तो रत्न मंडित अति रमणीक बनाये हैं परन्तु यह चौबीसवां क्यों साधारण प्रस्तर का ही बनाया है । क्या सामिग्री नहीं रही अथवा अवकाश नहीं मिला ?"

सहसा अलादीन ने उपस्थित हो कहा—"कारणवशात् द्वार

अधुरा रह गया है आप अपने कर्मचारियों को निर्माण की आज्ञा दे दें जो सदैव स्मरण रहे......।"

"यदि तुम्हारी यही इच्छा है तो मैं शीघ्र ही इसे पूर्ण करने का प्रयास करूंगा" अनुमोदन कर राजा ने महामन्त्री को बड़े २ स्वर्णकार और रत्न पारखी उपस्थित करने की आज्ञा दी।

अलादीन राजा को पाकशाला में लिवा ले गया जहां एक सुन्दर मन्च पर स्वर्ण पात्रों में अनेक सुस्वादु पाक चुने हुये थे। अतः स्वयम् राजा अलादीन और राजकुमारी सहित वहां बैठ गया और दूसरे मंच पर और राजकर्मचारी गण यथा स्थान बैठकर भोजन आस्वादन करने लगे।

पाकागार के बाहर अनेक युवती कंठस्वर मिला अपने स्वर्गीय गान से कर्ण कुहर में सुधा बरसाने लगीं।

इस प्रकार आमोद प्रमोद पश्चात राजा अन्तःपुर को लौटने ही को थे कि महामन्त्री ने स्वर्णकार और रत्न पारखी उपस्थित किया। अस्तु सबको संग लिये राजा पुनः बारहद्वारी के साधारण द्वार को दिखला कहने लगा—"उक्त २३ द्वारों की नाईं इसे भी शीघ्रतः बना कर पारितोषिक लाभ करो।"

राजाज्ञा श्रवणकर सब ने कहा—"प्रभो ऐसे रत्न हमने स्वप्न में भी नहीं देखे वरन्......।"

बीच में ही रोककर राजा ने कहा—"अभी हमारे साथ चल कर कोषाध्यक्ष द्वारा कोष और मन्त्री के यहां से उपयुक्त रत्न ले लो। समझ गये! इस प्रकार सहज ही बना सकोगे न?"

निदान जहां तक रत्न मिल सके सब ही लगा दिये गये परन्तु द्वार अभी आधे के अनुमान बनना अवशिष्ट रह गया, यह देख अलादीन ने उपहास से सब रत्न निकलवा कर लौटा दिये और उसी समय दीपक रगड़ दैत्य द्वारा द्वार निर्माण करा दिया।

राजा लज्जित हो स्वयम् अलादीन के पास पहुंच कहने लगा—

“पुत्रवर्य, क्यों द्वार बनाना बन्द कर दिया ?’ यह कहकर राजा ने द्वार की ओर देखा तो उनके विस्मय का ठिकाना न रहा वह यह बिश्चय न कर सके अमुक द्वार रत्न विहीन था अस्तु वह अलादीन की अति प्रशंसा कर कहने लगा—“पुत्र तुम्हारे सब काम अमानुषिक हैं कुछ भी तो सूत्रपात नहीं मिलता। वास्तव में तुम जैसा प्रबल प्रतापी शौर्य वीर्य पुरुष विरला ही होगा।”

धन्यवाद में शिर झुकाकर अलादीन ने कहा—“मैं किस योग्य हूं यह सब आपकी अतुल अनुकम्पा का फल है।”

निदान राजा ने राजसभा में प्रविष्ट हो अलादीन का प्रबल प्रताप बखानते हुए विस्मयापन्न समस्त वैचित्र्य दृश्य महामन्त्री से वर्णन किये।

मन्त्री ने विश्वास दिलाने का प्रयास कर कहा—“राजन् मैं तो पहिले ही कह चुका हूं। अलादीन निस्सन्देह मायावी है।”

राजा ने वर्ज कर कहा—‘तू ईर्षावश अलादीन को मायावी बताता है वरन् अब तक तू बदर को पुत्र वधू बनाना विस्मरण नहीं कर सका है।”

मन्त्री ने देखा राजा अलादीन के कुचक्र में फँस रहा है कुछ कहना सुनना अपनी मान हानि कराना है।”

अलादीन यदा कदा अपने मित्रों के यहां भी जाया करता था और कभी २ अपने यहां उनको भोजन दिया करता था। साप्ताहिक आखेट को भी जाया करता था जो उसी दिन अथवा २-४ दिनों में लौटा करता था परन्तु जब २ वह कहीं निकलता बहुत सा धन दीन अनाथों को बांटता जाता था अतएव जहां वह जाता पीछे एक भीड़ हुआ करती थी किम्बहुना धनवान् और निर्धनी सब ही उसके उपकारों के चिरकृतज्ञ थे।

किसी शत्रु का आक्रमण हो तो अपना वीरत्व दिखा राजा का अधिक विश्वास पात्र बन जाऊं। अलादीन के हृदय में यह धारणा

सदैव ही जागरूक रहा करती थी। सहसा एक दिन उसने सुना कोई शत्रु सदल बल राजसीमा का अतिक्रमण कर रहा है। अस्तु वह राजा के पास जा कहने लगा—"शत्रु वारण करने की मुझे आज्ञा देकर आभारी बनाइये।"

निदान राजा ने अलादीन को सेना नायक नियुक्त कर सहर्ष संग्राम की आज्ञा दे दी।

अलादीन थोड़ी सेना लेकर, रणक्षेत्र में जा पहुंचा और अपने कौशल से सुगमता पूर्वक शत्रु को परांजित कर अनायास ही विजय श्री लाभ कर लीं इस कारण उसका सुयश दूर २ तक फैल गया।

उधर जब मायावी स्वदेश अफ्रीका पहुँच गया और बहुत दिन बीत गये तब एक दिन उसने ज्योतिष द्वारा अलादीन की व्यवस्था देखी, ओह, वह तो दीपक के कारण अतुल वैभवशाली अगाध सम्पत्ति का अधिकारी है अनेक लावण्यवती युवतियों के अतिरिक्त चीन नरेश की राजसुता उसकी पाणिग्रहीता है। यह जान मायावी अति विषन्न हुआ भृकुटी दीर्घायत होगई क्योंकि वह अलादीन को मृत प्राय छोड़ आया था अब वह इहलोक में नहीं है यह उसे पूर्ण विश्वास था। इसी असमञ्जस में उसे रात बिताना कठिन होगया। प्रभात होने पर अश्वारूढ़ हो चीन की ओर पयान कर दिया।

थोड़े दिनों में ही मायावी चीन में आ किसी पथिकालय में ठहर गया। यहां आकर उसने अलादीन की प्रभुता देखी तो अति दुःखी हुआ। दीपक कहां है? ज्योतिष द्वारा इस प्रश्न की मीमांसा पश्चात् भैक्ष्यवृत्ति कर किसी कसेरे से बारह ताम दीपक बनवा तथा एक टोकरे में, रखकर अलादीन के नीचे दीर्घ स्वर से कहना प्रारम्भ किया "जीर्ण- पुराने धुराने—दीपकों से जो चाहें नवीन विशुद्ध सुन्दराकार बदल लेवें।"

यद्यपि बालक्रीड़ा वश बहुतसे खिलाड़ी बालक मायावी को

चिराने लगे परन्तु तीन दिन से मृगया के लिये अलादीन बाहर गया हुआ है। इस दशा में कदाचित् सफलता हो जावे, वह महल के चातुर्दिक चिल्लाता ही रहा।

अलादीन ने दीपक एक आले में रख दिया था और राजकुमारी इसका रहस्य जानती न थी अनायास उसकी दृष्टि दीपक पर जा पड़ी हठात् उसने एक सेविका को नया दीपक बदल लाने की आज्ञा देदो।

आज्ञानुसार सेविका दीपक बदल लाई। मायावी मन्त्र पूत दीपक पा अति प्रसन्न हो गया। वह उसी समय टोकरा फेंक भागकर निकटस्थ किसी ग्राम में चला गया। घोड़ा इत्यादि छुटने का उसे पश्चात्ताप न था वरन् आह्लाद से फूला अङ्ग न समाता था।

अर्द्ध रात्रि बीतने पर मायावी ने दीपक रगड़ा हठात वही दैत्य विद्यमान हो आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगा।

मायावी ने कहा—‘अमीर जो तुमने अलादीन का महल बनवाया है राजकुमारी और दासियों सहित यथावत् उठाकर दूर देश अफ्रीका में पहुंचा दो।”

आज्ञानुसार दैत्य ने उसी समय मायावी सहित अलादीन का महल उठा अफ्रीका में पहूँचा दिया।

प्रभात होने पर चीन नरेश ने देखा अलादीन के महल का कहीं चिन्ह नहीं है। वह अतिविस्मित हुआ महल कहां गया ? यदि भूमिगत होता तो कुछ तो चिन्ह अवशिष्ट होते निदान राजा ने महामन्त्री को बुलाकर पूछा।

मन्त्री ने कर बांधकर—“प्रभो, मेने तो पूर्व में ही कहा था आपने विश्वास न किया वास्तव में अलादीन मायावी ही था न जाने महल कहां लोप कर दिया।

राजा ने क्रुद्ध हो आज्ञा दी—“इसी समय तीस सैनिक जाकर जहां मिले अलादीन को बधिकों की नांई पकड़ लावें।’

आज्ञानुसार सैनिक चल दिये ३–४ कोस जाने के पश्चात् मृगया प्रेमी अलादीन मिल गया उसने कौशल से अनेक वन्य जंतु मार गिराये थे ।

सैनिकों ने अलादीन से राजाज्ञा कह सुनाई । वह वज्राहत की भांति स्तम्भित रह गया अपराध क्या है अलादीन कुछ न समझ सका । अतः अन्यमनस्क सैनिकों ने अलादीन को कठिन बन्धन में जकड़ पयान कर दिया ।

नागरिक अलादीन के उपकारों से अत्याभारी थे उसे कठिन बन्धनयुक्त देख अति विषण्ण हुये । वरन् जिस किसी ने देखा त्राहि २ कर पीछे हो लिया ।

राजसभा में अलादीन के प्रविष्ट होने पर द्वार बन्द कर दिया गया । राजा क्रोध से प्रकम्पित अलादीन की प्रतीक्षा ही कर रहा था । सम्मुख उपस्थित देख झटिति शिर भङ्ग की आज्ञा देदी ।

दुःख लज्जा और भय से अलादीन पाषाण मूर्ति सदृश जहां का तहां खड़ा रह गया सहसा महामन्त्री ने बाधा देकर कहा—‘प्रभो, अलादीन के प्राणान्त पर भीषण विद्रोहानल जागरूक हो बड़ा अनिष्ट करेगी इस समय अलादीन को क्षमा करना ही युक्ति सङ्गत है । विद्रोही महल का आश्लेष किये हुये हैं ।”

ऐसा दशा देख राजा ने अलादीन को क्षमा करने की घोशणा करा बन्धन से मुक्त कर दिया । तब अलादीन ने हाथ जोड़कर अपना राजा ने विस्मित हो कहा—“अरे, क्या तुम अपराध स्वीकार नहीं करते ! देखो तो सामने तुम्हारा महल कहां लोप होगया, नहीं २ कहीं जाओ जी, राजकुमारी; कहां गई हमें तो एक मात्र उसका ही शोक है !”

महल नहीं है, यह देख अलादीन का शिर घूम गया पैरों के नीचे धरती चक्र देने लगी वह कांपते हुये कहने लगा—“राजन् आप विश्वास रखिये मैं निरपराधी हूं महल कहां है ? मुझे अणुमात्र बोध

नहीं है यदि कुछ अवकाश मिले तो मैं शीघ्र ही प्राण प्रिया राजकुमारी को खोजने की चेष्टा करूं।"

सन्तप्त चीन नरेश ने कहा—"अच्छा जाओ तुम्हें चालीस दिन का अवकाश दि–या–जा–ता है।" इसके व्यतिरिक्त दुःख से कातर राजा कुछ न कह सका।

दीर्घ निःश्वास त्याग अलादीन ने कहा—यदि चालीस दिन में मैं राजकुमारी को न पा सका तो स्वयमेव अपना शिर काट इसी सिंहासन के नीचे डाल दूंगा।"

ऐसी दृढ़ प्रतिज्ञा कर अलादीन राजा से विदा हो बाहर आया। वह किम्कर्त्तव्य विमूढ़ बड़े असमञ्जस में था कहां जाऊं किससे पूछूं? क्या मैं इस प्रकार खोज सकूंगा? कदापि नहीं राजकुमारी का वियोग मुझे जीवित न रहने देगा निदान नैराश्य सागर में निमग्न विक्षिप्त की नांई प्रत्येक के द्वार २ पर पूछता फिरता—"कहीं किसी ने प्राणेश्वरी राजकुमारी भी देखी है?" कभी वह द्रुमलता, पशु पक्षी इत्यादि से उपर्युक्त प्रश्न करता। परन्तु उत्तर किसी से न पाता इसी भांति खोजते फिरते अपने नगर में ही उसे तीन दिन बीत गये। उदासीन हो जिधर ही मुंह उठा चल दिया। थोड़ी दूर चलने पर उसे अगाधि जल पूरित कल कल करती एक नदी मिली। स्फटिक समान जल में उसे अपना प्रतिविम्ब अति भयावह दृष्टत हुआ।

लज्जा वियोग और अपमान वश अलादीन ने नदी में डूब मरना निर्धारित किया परन्तु राजकुमारी की स्मृति ने उसके निश्चय को भङ्ग कर दिया। असावधानता से चलने के कारण अलादीन का पैर फिसल गया सम्भव था कि वह डूबकर मर जाता परन्तु अभी जीवन अवशिष्ट था एक बड़े से पाषाण के आश्रय लटक गया।

पाषाण बलपूर्वक पकड़े रखने के कारण मन्त्र पूत छल्ला जो प्रथम ही मायावी ने दीपक लाने के लिये रक्षार्थ अलादीन को पहना दिया था और जिसके कारण वह गढ़े में से प्राण बचा चुका था रगड़

गया छल्ला के अधीनस्थ दैत्य विद्यमान हो आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगा ।

अलादीन ने कहा—"पहिले मेरे प्राण बचाओ ।"

निदान बड़ी सुगमता से दैत्य ने अलादीन को बाहर निकाल दिया । तब अविश्रान्त अश्रु धारा प्रवाहित कर अलादीन ने अपने महल और राजकुमारी के लोप होने का दुःखद वृत्तान्त वर्णन किया ।

'यह सब भीषणता उसी अफ्रीका रहिवासी मायावी की है इस प्रकार दैत्य ने अलादीन को बहुत आश्वासन दिया ।"

आशान्वित अलादीन ने पूछा—"क्या तुम राजकुमारी और महल को पुनः चीन में पहुंचा सकते हो ?"

शिर हिलाकर दैत्य ने कहा—'स्वामिन् ! यह हमारी शक्ति से बाहर है । दीपक के अधीनस्थ दैत्य ही ला सकेंगे ।"

पुनः अलादीन ने पूछा—"क्या तुम मुझे महल तक पहुंचा सकते हो ?"

कहने की देर थी दैत्य ने झटित महल के बाहर जा खड़ा किया । अलादीन ने रात्रि के अन्धकार में ही अपने महल को पहिचान लिया ।

आज अलादीन को निराहार कई दिन बीत गए थे एक मिनट भी सोने का अवकाश नहीं मिला था । ईश्वर को अनेकशः धन्यवाद दे आश्वस्थ वहीं पड़कर सो रहा प्रभात होने पर पक्षियों के कलरव से उसकी निद्रा भङ्ग होगई मैं अब शीघ्र ही अपने महल में प्रवेश कर राजकुमारी से मिल जाऊंगा उसके हर्ष का पारावार न था ।

किसी दासी ने अलादीन को बाहर बैठा देख लिया वह दौड़कर राजकुमारी के पास पहुंची ।

राजकुमारी ने स्वयं अलादीन को देखकर आल्हाद से कहा—"जाओ शीघ्र ही अलादीन को चोर द्वार से मेरे पास लिवा लाओ ।"

निदान सेविका बाहर जा अलादीन को महल में लिवा ले गई दोनों ही एक दूसरे को देख आनन्द मग्न हो अचेत होगये वास्तव में उनका मिलाप अति करुणा जनक था बार २ पारस्परिक गाढ़ालिंगन कर तृप्त न होते थे। क्रमशः दोनों ने प्रेमाश्रु बहाते हुए वियोग दुःख वर्णन किया। अलादीन ने पूछा–“वह दीपक जो मैं अमुक आले में रख गया था क्या किया ?”

राजकुमारी ने अश्रु विसर्जन कर कहा–“बड़ी भूल हुई वह दीपक मैंने इसी मायावी से बदलवा लिया था।” यह कहकर राजकुमारी ने समस्त वृत्तान्त आद्योपान्त कह सुनाया।

अलादीन ने दीर्घ निश्वास त्याग पूछा–“प्राणेश्वरी, तुम मायावी से कैसे अपने सतीत्व की रक्षा कर सकी होगी।”

राजकुमारी ने हृदय पर हाथ रख कर कहा–“अब तक तो मैं अपने कौशल से बची रही हूँ आगे भगवान्......।”

बीच में रोककर अलादीन ने पूछा–“अच्छा पहिले यह बताओ अब दीपक कहां है ?”

राजकुमारी ने विषन्न होकर कहा–“दुष्ट मायावी बड़ी सावधानता से दीपक वस्त्र में लपेटे प्रति समय अपने हृदय से लगाये रहता है।”

शोकान्वित अलादीन ने पूछा–“प्राणाधिके! यह तो कहो तुम से कैसा व्यवहार रखता है एवं किस समय मिलने आया करता है ?”

दीर्घ निश्वास त्याग राजकुमारी ने कहा–“दुष्ट नृशंस दिन रात में एक बार मेरे पास आया करता है और अपना प्रेयसी कहकर अनेक प्रलोभन दे मुझे पत्नी बनाने का आग्रह किया करता है। परन्तु मुझे तुम्हारे वियोग दुःख में कुछ न सुहाता वरन् उसका प्रेमोपहास बाण सम हृदय को वेधता रहता है। यदि वह बल का प्रयोग करने पर उतारू होता तो मैं अपने प्राण विच्छिन्न कर देती। परन्तु उस

दुष्ट ने तो समझ रक्खा था कि शनैः २ से सबको विस्मरण कर उसकी
पत्नी बन जाऊंगी ।"

सब व्यवस्था समझने के पश्चात् अलादीन ने कहा—"देखो, इस
ओर द्वार को सदैव खुला रखना । ईश्वर ने चाहा तो शीघ्र ही दुष्ट
दैत्य को दमन करने में सफल मनोरथ होऊंगा ।" यह कहकर अलादीन
बाहर चला गया । सबके पूर्व उसने किसी ग्रामीण को कुछ ले देकर
अपने वस्त्र बदल लिये । तब वह एक विष विक्रेता की दुकान पर आ
कोई सुतीव्र विष चूर्ण क्रय कर लाया ।

विष लेकर अलादीन पुनः राजकुमारी के पास आ कहने लगा—
"परमप्रिये, आज शृंगार करके इच्छा न होने पर भी उस दुष्ट के साथ
मौखिक प्रेम दिखाकर उसे विश्वास दिला देना मैंने सबको परित्याग
कर मात्र तुम्हारा ही अवलम्बन लिया है क्योंकि मेरे अन्तर्हित होने पर
पिता ने अलादीन का शिर चूर्ण कर दिया होगा अन्त में तुम अपने संग
भोजन करने का आग्रह करना अच्छी सी मदिरा मंगाना । अस्तु गिलास
इत्यादि पात्र निकालने पश्चात वह स्वयम मदिरा लेने जावेगा इस
अवसर में तुम इस चूर्ण को किसी पात्र में डाल रखना पीछे उसी में
मदिरा भरकर कौशल से उसे पिला देना ।"

इस प्रकार शिक्षा देकर अलादीन बाहर चला गया तब राज
कुमारी ने स्नान कर नवीन वस्त्र धारण किया क्योंकि जिस दिन से वह
यहां आई थी न तो स्नान किया था न वस्त्र ही बदले थे ।

राजकुमारी शृंगार कर दैत्य के आने की प्रतीक्षा करने लगी ।
अस्तु थोड़ी देर में नियमित समय पर दैत्य आया वह उसका अलौकिक
सौन्दर्य देख मुग्ध हो गया ।

राजकुमारी दैत्य को देखते ही स्वागत के लिये बाहर लिवाने
आई और हाथ पकड़ कहने लगी "मैंने सब कुछ छोड़ केवल तुम्हारा
ही अवलम्बन ले लिया आशा है तुम स्वीकार करोगे (कटाक्ष से देखकर)
देखो जी, आज तुम्हें यहीं भोजन करने पड़ेंगे और एक दूसरे के स्वास्थ

के लिए मदिरा पीनी होगी।" निदान जो कुछ अलादीन ने समझाया था राजकुमारी ने वैसा ही शिष्ट नीति मे प्रेम दर्शाकर वशीभूत कर लिता।

दैत्य ने अति प्रसन्न हो अपने भाग्य को सराहते हुये कहा—"कल्याणी, यहां अच्छी मदिरा न मिल सकेगी मेरे पास कोई सात वर्ष पुरानी रक्खी हुई है आज्ञा हो तो अभी जाकर ले आऊं !।'

राजकुमारी ने कटाक्ष से देखकर कहा—"नहीं २ मुझे तुम्हारा जाना स्वीकार नहीं किसी से मँगालो ना।"

"नहीं २ मेरे अतिरिक्त और कोई नहीं ला सकता।" यह कह दैत्य अनेक पात्र निकाल मदिरा लेने चल दिया।

यह सुअवसर पा राजकुमारी ने वही विष चूर्ण एक गिलास में डाल दिया। हठात दैत्य मदिरा लेकर आन पहुंचा जब २।३. गिलास परस्पर पान कर चुके तो राजकुमारी ने वही विष मिश्रित स्वास्थ्य गिलास कहकर अपने होठों मे लगा कहने लगी "हमारे देश में तो यह प्रथा है कि जब प्रेमी जन मदिरा पान करते हैं तो प्रेम वद्ध पारस्परिक एक दूसरे का गिलास बदल लिया करते हैं।"

यह सुन दैत्य ने राजकुमारी का गिलास लेकर बड़े आनन्द से पी लिया। विष तीव्र था कण्ठ से उतरते ही समस्त शरीरमें फैल गया। देखते ही देखते दैत्य अचेत होकर धड़ाम से धराशायी हो गया श्वास की गति रुक गई और उसने सदैव को नेत्र मूंद लिये।

यह दशा देख प्रसन्न हो राजकुमारी ने अलादीन को बुलाया। सबके पूर्व अलादीन ने दीपक खोला तब उसे किसी गोप्य कमरे में बन्द कर दिया। और दीपक रगड़ कर दैत्य को आज्ञा दी—"इस महल को पूर्ववत चीन में जहां पहिले था पहुँचा दो ?"

कहने की देर थी क्षणमात्र में ही महल चीन में पहुंच गया अपने स्थान पर आजाने से अलादीन ने निश्चिन्त हो बड़े सुख से राजकुमारी के सङ्ग शयन किया।

चीन नरेश अपनी पुत्री के अन्तर्हित होने से बहुत दुःखी रहा करता था अनायास उसकी दृष्टि जो सन्मुख गई तो अलादीन का महल दृष्टिगोचर हुआ वह अति प्रसन्न हो अपनी पुत्री से मिलने चल दिया।

राजा को आता देखकर अलादीन स्वागत के लिये पास पहुंचा—"मैं जब तक राजकुमारी को न देख लूंगा तुम से कुछ बात करूंगा।" यह कहकर राजा बारहद्वारी की ओर चल दिया।

राजकुमारी पिता को देख दौड़ी आई। राजा ने उसे कण्ठ से लगा कर पूछा—"कहो, तुम महल सहित कहां लोप हो गई थीं ?"

राजकुमारी ने कहा—"पिता जी मैंने ही मूर्खता वश विपत्ति का आह्वान किया था बेचारा अलादीन निर्दोष है।" कहकर उसने समस्त वृत्तान्त कह सुनाया। अलादीन ने राजा को जाकर मायावी का शव दिखाया जो विष के कारण मुख से फेन दे रहा था।

राजा ने अलादीन की पीठ पर हाथ फेर कर कहा—"पुत्र क्रोधवश जो कुछ मेरे मुख से निकल गया है उसे विस्मरण कर आशा है तुम क्षमा करोगे।"

निदान मायावी का शव बन में फिकवाने की आज्ञा देकर अलादीन ने राजा को अपने हार्दिक पुत्र प्रेम का विश्वास दिला दिया।

राजा ने आनन्द मग्न हो अलादीन का विपत्ति से मुक्त होने का बड़े समारम्भ से उत्सव मनाया। परन्तु अभी उसका एक प्रण शत्रु सालह नामक मृत मायावी का सहोदर भाई अवशिष्ट था। यद्यपि दोनों भाई पृथक २ दूर २ रहा करते थे परन्तु प्रतिवर्ष रमल द्वारा एक दूसरे के कुशल समाचार जान लिया करते थे।

नियमानुसार सालह ने भाई के नाम पांसा डाला, ओह भाई

को परलोक सिधारे बहुत दिन बीत गये हैं ! उसने विषन्न हो अलादीन से बदला प्रतिहिंसा निश्चय कर उसी समय अश्वारूढ़ हो चीन की ओर प्रयाण किया ।

कुछ कालोपरान्त सालह चीन में पहुंच गया । जहां तहां अलादीन की सुख्याति के साथ उसने फातमा नामक एक ईश्वर भक्त वयोवृद्धा की भी अति प्रशंसा सुनी जो दिन भर निराहार रोजा रख रात को ईश्वराधना नमाज पढ़ने में निमग्न रहा करती है वह पविआत्मा जिस रोगी को स्पर्श कर लेती है झटित स्वास्थ लाभ कर लेता है निदान सब ही फातमा और अलादीन की मुक्त कंठ से प्रशंसा कर आदर करते हैं ।

रात्रि के पिछले पहर में सालह फातमा के पास पहुंचा और किसी प्रकार बाहर से द्वार खोल भीतर प्रवेश कर देखा फातमा घोर निद्रा में है । अस्तु छुरिका निकाल और फातमा के हृदय पर रख कहने लगा—"बस चुपचाप अपने वस्त्र देने पश्चात् अपनी जैसी मुखच्छवि बना दे और अपनी प्रकृति हाव भाव तथा और भी सांकेतिक रहस्यों का मुझे पूर्ण परिचय दे दे अन्यथा यही छुरिका हृदय में आमूल वेध तुझे सदैव को शान्त कर दूंगा ।'

वृद्धा भय से थर २ कांपने लगी दीपक के प्रकाश में जहां तक हो सका उसने सालह की अपनी जैसी आकृति बना दी जो कोई देखता फातमा ही बताता । तब दुष्ट सालह ने फातमा का कंठ दबा किसी कुंड में फेंक दिया ।

प्रभात होने पर छद्मवेशी फातमा कंठ में बड़ी सी माला डाल बड़बड़ाते हुए घर से निकली जो कोई देखता फातमा जानकर चरण स्पर्श कर कृतार्थ होता कोई कोई वस्त्र ही छू लेता इस प्रकार फातमा अलादीन के महल के पास जा खड़ी हुई देखते ही देखते इतनी भीड़ लग गई कि प्रयत्न करने पर भी कोई पास न पहुंच सकता था ।

भीड़ देख राजकुमारी ने दासी द्वारा फातमा को महल में

बुलवाया और बड़ी श्रद्धा से उच्चासन पै बैठा वहीं रहने का आग्रह किया।

छद्मवेशी फातमा ने कहा—"मुझ जैसे भैक्ष्य वृत्ति तुच्छ दासी को महल से क्या प्रयोजन परन्तु आपकी आज्ञा अमान्य करना भी अनुचित है अस्तु मेरे लिये कोई गोप्य स्थान निश्चय कर दीजिये।

राजकुमारी ने इच्छानुसार एक छोटा कमरा बता कर भोजन करने का अनुरोध किया। फातमा ने कहा—"यह भोजन आपके लिये हैं मुझे तो शुष्क रोटी ही चाहिये।"

फातमा ने बारहद्वारी देखकर शिर हिलाते हुए कहा—"यद्यपि तुम्हारी बारहद्वारी अति सुसज्जित है परन्तु इसमें यदि रुख पक्षी का अण्डा और लटका दिया जावे तो विश्व में इसके सदृश कोई महल निकलेगा ही नहीं।

राजकुमारी ने कहा—"यह क्या बड़ी बात है अलादीन के आते ही मैं मंगा लूंगी परन्तु यह तो बताओ मिलता कहां पर है।"

फातमा ने कहा—"गन्ध मादन उच्च पर्वत शिखर पर ही रुख का आवास स्थान है वह वहीं से प्राप्य है वरन् महल निर्माण कर्ता सहज ही ला सकते हैं तुम्हारे पति की कहने मात्र की देर है।

अलादीन को आखेट गये ६ दिन बीत गये थे सौभाग्य से वह संध्या समय ही लौट आया परन्तु और दिन की नाईं आज राजकुमारी कुछ सोच निमग्न थी अलादीन ने कारण पूछा तो उसने फातमा के आने और रुख का अन्डा मंगाने की इच्छा प्रकट की।

अलादीन ने उसी समय दीपक रगड़ कर दैत्य को अंडा लाने की आज्ञा दी। परन्तु दैत्य ने चीत्कार कर कहा—"धन्यवाद देने के अतिरिक्त तुम उलटे हमारे स्वामी को बारहद्वारी में लटकाना चाहते हो यद्यपि इस दंड में तुम्हें खंड २ कर दिया जाता परन्तु अज्ञानता से तुम अपने प्राण शत्रु की शिक्षा वश ऐसा कहते हो। सावधान रहो फातमा रूप में सालह नाम मायावी का भाई तुम्हारे महल में विद्यमान

है प्राण लिये बिना न रहेगा।

यह सुनकर अलादीन अति विस्मित हुआ। उसने शिर पीड़ा मिस से फातमा को बुलाकर कहा—"मैं शिर पीड़ा से अति व्याकुल हूँ अपने पवित्र हाथ से स्पर्श कर मुझे शान्ति करदो।" यह कहकर अलादीन ने अपना शिर आगे कर दिया।

फातमा भी आगे बढ़ी उसने अपने वस्त्र में छूरिका गुप्त कर रक्खी थी ज्यों ही कि फातमा ने छुरिका निकालने का उद्योग किया कि अलादीन ने हाथ पकड़ बल पूर्वक वही छुरिका उसके हृदय में आमूल वेध दी। दुष्ट की आंतें निकल पड़ीं और वह सदैव को शान्त होगया।

राजकुमारी ने दुःखित हो कहा—"भला ऐसी ईश्वर परायणा वृद्धा के वध में आपने क्या वीरत्व दिखाया मैंने ही......।' अलादीन ने बीच में ही रोक कर कहा—"प्राणाधिके, यह वृद्धा नहीं वरन् उसी दुष्ट मायावी का सहोदर भाई है। मेरे वध करने को ही उसने छद्मवेश बना रखा है।" निदान समस्त वृत्तान्त जो अलादीन ने दैत्य द्वारा सुना था कह सुनाया।

राजकुमारी फातमा का चरित्र सुन अति विस्मित हुई, किंबहुना इस प्रकार शत्रुओं का नाश कर अलादीन बड़े सुख के कालक्षेप करने लगा।

चीन नरेश अपुत्रक था जब वह वृद्ध हुआ तो उसने अपनी पुत्री राजकुमारी बदरुलबदूर को अपना उत्तराधिकारी बनाया।

अलादीन चीन नरेश पदवी से विभूषित हो सिंहासनासीन हुआ वह अति नीति कुशल था उसके सुप्रबन्ध से प्रजा बहुत सुखी हुई। वह बहुत काल पर्यन्त चीन में निर्विघ्न शासन करता रहा।

—:o:—

❀ श्री ❀

अलफ-लैला

अर्थात्

सहस्र—रजनी—चरित्र

❀ चतुर्थ—भाग ❀

सम्राज्ञी शहरजाद सम्राट शहरयार से कहने लगी—प्राणेश्वर, एक दिन सम्राट खलीफा हारूं रशीद बड़े अन्य मनस्क बैठे थे कि सहसा जाफर सचिव ने प्रविष्ट हो कहा—"प्रभो ! आज का दिन आपने वेस परिवर्तन कर प्रजा का दुःख सुख जानने निमित्त निर्धारित किया था क्या न चलियेगा।"

ठीक ही, कहा चलो थोड़ी देर यों ही चित्त बहलेगा तुम शीघ्रतः व्यापारियों के वेश में मुझे बाहर मिलो। यह कहकर स्वयम् सम्राट खलीफा भी व्यापारियों के वेश में बाहर आकर मिल गए।

दोनों ही नगर में घूमते हुये नदी के पुल पर पहुंचे वहां एक नेत्र विहीन भिक्षुक ने खलीफा से दान मांगा।

उदार खलीफा ने एक मुद्रा निकालकर भिक्षुक को दी। कि तुरन्त उसने खलीफा का हाथ पकड़ कर कहा—"दाता ! जिस प्रकार आपने मुद्रा प्रदान कर कृतार्थ किया है उसी प्रकार एक धोल मेरे सिर

में और लगा दो।"

भिक्षुक उपहास से ऐसा कहता है खलीफा ने हाथ छुड़ाने की चेष्टा की परन्तु उसने हाथ छोड़ तथा बल पूर्वक अङ्ग रखा पकड़ कर कहा—"मैं उपहास नहीं करता वास्तव में मैं इसी दण्ड का भागी हूँ आप निस्संकोच मुष्टि प्रहार कर मेरा बचन सार्थक करें (कुछ सोचकर) अथवा आप अपनी मुद्रा लौटा लें।"

विवश खलीफा को धौल लगानी ही पड़ी परन्तु वह बड़े असमञ्जस में पड़ गया। थोड़ी देर सोचने पश्चात् मन्त्री से कहा यह भिक्षुक कौन है। इसका रहस्य जानने की बड़ी उत्कण्ठा है जिस प्रकार हो सके कल राजसभा में उपस्थित कर दो?"

"जो आज्ञा" कहकर मन्त्री ने भिक्षुक को मुद्रा देने और धौल लगाने पश्चात् राजाज्ञा कह सुनाई।

भिक्षुक कल मध्यान्ह के पूर्व ही उपस्थित हो जायगा मन्त्री ने विश्वास दिला दिया खलीफा सन्तुष्ट हो आगे चल दिया।

थोड़ी ही दूर गये होंगे कि एक युवक तीव्र वेग से घोड़ी दौड़ाते दृष्टिगत हुआ। अनुसन्धान से विदित हुआ कि उक्त युवक प्रतिदिन अपनी घोड़ी दौड़ाया करता है। वरन् अहर्निश १० २० चक्कर लगाया करता है। खलीफा ने मन्त्री द्वारा कल राजसभा में युवक को उपस्थित होने की आज्ञा दी।"

आगे एक गली में जाकर खलीफा ने श्वेत प्रस्तर निर्मित नवीन महल देखा जो रज्जुविक्रेता हसन नामक किसी बड़े व्यापारी का था परन्तु पूर्व में हसन अति दरिद्र रस्सी बट बट कर आजीविका निर्वाहन किया करता था अब कैसे अधिक धनोपार्जन कर इस प्रकार सुख से कालक्षेप करता है यही जानने के लिये हसन को भी कल राजसभा में उपस्थित होने की आज्ञा दी।

निदान इन्हीं उपर्युक्त तीनों मनुष्यों की मीमांसा में खलीफा ने अन्तःपुर पहुंच शयन किया।

दूसरे दिन सबके उपस्थित होने पर खलीफा ने नेत्र विहीन भिक्षुक से मुख्यतः धौल लगवाने का कारण पूछा—

नेत्रविहीन भिक्षुक—

अब्दुल्लह की कथा

प्रभो ! मेरी जन्मभूमि यही बुगदाद नगरी है। माता पिता के परलोक गत होने पर मुझे बहुत धन मिला था। परन्तु कुसंगति में पड़ जाने के कारण अपव्यय हव्य में पैतृक सम्पत्ति की आहुति दे शीघ्र ही निर्धन हो गया। तब कहीं आंख खुली ! स्वार्थी मित्रों को परित्याग ज्यों त्यों कठिन परिश्रम कर शनैः २ मैंने अस्सी ऊंट क्रय कर लिये। फिर भी व्यापारियों का भार ग्राही बन मैं बड़े सुख से कालक्षेप करने लगा था।

एक दिन मैं बांसरे में व्यापारियों का माल उतार कर घर लौट रहा था सहसा मार्ग में एक साधू से साक्षात होगया पारस्परिक परिचय पश्चात मैंने पूछा—"महात्मन् ! कहां जाने का विचार है।"

बड़ी देर तक सोचने के बाद साधू ने बताया—"यहां से सन्निकट ही एक बड़ा कोष अगाध सम्पत्ति रक्षित है यदि तुम अपने अस्सी ऊंट केवल स्वर्ण मुद्रा और अमूल्य रत्नों से भर लाओगे तो उसमे किंचित अभाव न होगा।

मैं यह सुनते ही फूला अंग न समाया। साधू के औदार्य वश यह कुछ भी ध्यान न आया कि कुछ कपट है। वरन् साधू की निर्लोभता की प्रशंसा करते हुये मैंने कहा—"यद्यपि आपको ऐसे धन से कुछ प्रयोजन नहीं है परन्तु आप मेरे ऊपर दया करेंगे तो मैं एक ऊंट आपको भेंट करूंगा।

साधु सन्तुष्ट हो गया है यह देख मुझे लोभवश बड़ा पश्चात्ताप

हुआ—आह क्यों मैंने व्यर्थ ही एक ऊंट देने कहा साधू ना क्षमा प्रार्थना ही से प्रसन्न हो जाता। परन्तु कुछ सोचने पश्चात् साधु ने कहा—"आप भूलते है एक ऊंट के पीछे मै आपको कोष बताने से अक्षम हूं वरन् आधे ऊंट देना आपको स्वीकार हो तो मेरे मेरे संग चलिये अन्यथा अपना मार्ग—लीजे।"

चालीस ऊंट ही क्या कम है यह सोचकर मैं साधू के संग चल दिया। थोड़ी दूर चलने पर अति संकीर्ण मार्ग मिला। बड़ी कठिनता से हम ऊंट निकाल कर ले गये। यद्यपि जिधर देखो सुनसान देवका साम्राज्य था परन्तु भय लगा ही रहा। साधू ने कुछ लकड़ियां एकत्रित कर अग्नि प्रज्वलित की और कोई सुगन्धित द्रव्य डालकर मन्त्र उच्चारण किया। बहुतसा धुआं चतुर्दिक फैलकर जब हटा तो बड़ा सुगम मार्ग दृष्टि आने लगा।

विशाल कोष द्वारा खुला देख हम ऊंटों सहित भीतर प्रविष्ट हुये। यथा सम्भव हमने शीघ्रत: सब ऊंट स्वर्ण मुद्रा और अमूल्य रत्न से लाद लिये। परन्तु चलने के पूर्व साधू ने उक्त कोष के मध्य पार्श्व में खोजकर एक छोटी डिबिया जिसमें कोई लेप था निकाल कर अपने पास रखली और आधे ऊंट बांट पुन: बांसरे की ओर चल दिया।

मैंने भी बुगदाद की ओर पयान किया परन्तु थोड़ी दूर चलने पर मैंने सोचा—"साधू विरक्त है यदि मै दस ऊंट उससे मांग लूंगा तो वह सहर्ष मुझे देदेगा क्योंकि चालीस ऊंटों के भरण पोषण में बहुत समय नष्ट होकर ईश्वराधना से बञ्चितकर देगा।" यह सोचकर मैं अपने ऊंट वहीं छोड़ साधू के पास पहुंचा।

मेरी सम्मति युक्ति सङ्गत है साधू ने सहर्ष दस ऊंट मुझे और दे दिये परन्तु लोभने हतिबुद्धि बना दिया था मैंने पुन: दौड़कर साधू से कहा—महात्मन् तीस, ऊंटों की देख रेख भी आपसे होना दुर्लभ है।"

अस्तु साधु ने दस ऊंट और मुझे दे दिये, किन्तु इसी प्रकार दो

तीन बार कहने सुनने से मैंने चालीसों ऊंट साधू से ले लिये, फिर भी मुझे सन्तोष न हुआ तृष्णा पापिन ने मुझे ज्ञान रहित कर दिया था विवश मैंने साधू से उस डिबिया का रहस्य पूछा।

साधू ने डिबिया देना अस्वीकार किया। यह अनुमावित रूप देख मुझे क्रोध हो आया यदि साधू देना स्वीकार न करेगा तो मैं बल प्रयोग कर छीन लूंगा।

साधू मुझे क्रुद्ध देख उक्त डिबिया देकर कहने लगा "बाबा यदि तेरी इच्छा डिबिया लेने की है तो इसे भी ले परन्तु इसमें है क्या: पहिले यह सुन ले, इस डिबिया में अति विचित्र एक लेप है। यदि तुम किंचित लेप बाम चक्षु के ऊपर लगाओ, तो विश्व में जितने कुछ गोप्य कोष रक्षित हैं दर्पणवत तुम्हें दृष्टि आने लगे और इसके विपरीत कहीं दक्षिण चक्षु के ऊपर मर्दन करो तो झटित अन्धे हो जाओगे।"

ऐसी अपूर्व प्रशंसा श्रवण कर मैंने डिबिया साधु को लौटा कर कहा आप इसके रहस्य से पूर्णतया परिचित हैं थोड़ा सा मेरे बाम चक्षु पर लेप कर दीजे।"

मुझसे पीछा छुड़ाने को साधू आकुल था अतः शीघ्रता पूर्वक लेप लगा दिया। साधू के वचनानुसार ज्यो ही मैंने नेत्र खोलकर देखा चतुर्दिक अगाध सम्पत्ति कोष ही कोष दृष्टि आने लगे। बालायित हो मैंने दूसरी सीधी आंख मे लेप करने की प्रार्थना की।

साधू ने विषन्न होकर कहा—"बाबा मैं पहिले ही कह चुका हूं क्या तुमको अन्धे होने का कुछ भय नहीं।' लोभ के जगद्वाल में पड़ कर ज्ञान नष्ट कर चुका था मैंने सोचा भला जिस लेप को एक आंख में लगाने से ऐसा कौतुक दृग्गत हुआ है दोनों नेत्रों में लगाने से न जाने कितना लाभ न होगा कैसे विचित्र दृश्य न दृष्टि आवेंगे विस्मरण कर किसी समय में लाभ न उठा सकूं बुधवान साधु ने अन्धे हो जाने [illegible] ही भय दिखलाया है वह आज जब मेरे दिन फिर गये हैं क्यों

न सीधी आंख में लेप कर सर्व सुख समृद्धि शाली बनूं । मैं अन्धा हो जाऊंगा बेचारे साधू ने विश्वास दिलाने का अधिकाधिक प्रयत्न किया परन्तु मैंने एक न मानी ऐसे अन्ध विश्वास का मैं निरन्तर विरोधी हूं मैंने साधु को लेप लगाने पर बाध्य कर दिया ।

विवश साधु ने बज्र मूर्ख कहकर लेप लगा दिया परन्तु अब तक ही नेत्र फाड़ २ देखने की चेष्टा की कुछ भी दृष्टि न आया प्रभो उस दिन से आज पर्यन्त मैं अन्धा हूं उस समय मैंने साधु और अपने भाग्य को बहुत कोसा मुद्राओं रत्नों से लदे ऊंटों की स्मृति से प्राण छटपटाने लगे हठात् डिबिया और ऊंट लेकर साधू ने प्रस्थान किया यद्यपि मैंने क्रन्दन कर साधू से नय विनय कर अनेक प्रार्थना घर पहुंचा देने की परन्तु उसने किंचित् ध्यान न दिया निदान मैं क्षुधित तृषित उसी नराहारी दैत्यों के आवास स्थान भीषण बन में अपने आर्तनाद से सबके हृदय द्रवित करने लगा सहसा कोई व्यापारी बुगदाद की ओर जा रहा था दयाकर उसने मुझे यहां पहुंचा दिया नेत्र विहीन होने से भैक्ष्य वृत्ति के अतिरिक्त और किसी प्रकार उदर पूर्ण न कर सकता था अन्ततः मैंने यह प्रण किया कि दया कर जो कोई मुझे दान दिया करेगा उस दाता के एक धौल अपने सिर पर अवश्य लगवा लिया करूंगा क्योंकि इसके अतिरिक्त मुझ पामर का और कुछ प्रायश्चित नहीं हो सकता । अबदुल्ला की कथा सुन खलीफा ने धैर्य देकर कहा—"अब तुम भिक्षा न मांगा न करो चार रुपया प्रतिदिन तुमको मिला करेंगे तुम्हें उचित है सन्तोष कर ईश्वर से अपने जटिल अपराध के लिये क्षमा प्रार्थना किया करो" यह कह कर खलीफा ने उस युवक से जो अपनी घोड़ी अति निर्दयता से दौड़ाया करता था सामर्ष पूछा ।

युवक सीदी नैमान की कथा

प्रभो, मेरा नाम सीदी नैमान है मेरे माता पिता भी इतना धन जोड़ मरे थे जो आजन्म कुछ व्यवसाय न करूं तो भी बड़े सुख

से कालक्षेप कर सकूं परन्तु कुछ दिनों पीछे युवावस्था में पदार्पण करते ही किसी सुन्दरी युवती की बांछा हुई यद्यपि चराचर में वड़े पुण्य से सुगृहिणी लाभ हुआ करती है परन्तु कुछ धनाभाव तो था ही नहीं अनायास ही एक सुन्दर युवती-अमीन—नामक को पाणिग्रहीता बना अपने घर ले आया।

दूसरे दिन भोजन उपस्थित होने पर सुन्दरी ने कुछ आस्वादन न किया वरन् चिमटी द्वारा अति दुराव से शनैः २ एक २ चावल उठाकर मुख में रखने लगी मैं यह कौतुक देखकर अति विस्मित हो कहने लगा—क्या सुन्दरी कुछ आहार परिमित न करोगी! अथवा खाचुकी हो कदाचित् बड़ी कठिनता से अब तक तुमने १०। २० चावल खाये होंगे।

सुन्दरी ने कुछ उत्तर न दिया क्रमशः तीसरे चौथे दिन भी उसने पूर्ववत् १०। २० चांवल और किञ्चित् रोटी का बकुल ही खाया सम्भव है लाजवश संकुचित हो परन्तु बहुत कुछ ध्यान रखने पर भी मैंने उसका आहार इतना थोड़ा पाया जिसमें जीवन रहना निरन्तर असम्भव था।

मैं बड़े असमञ्जस में पड़ गया बहुत रात जाने पर भी इस प्रश्न की मीमांसा में नेत्र मूंदे था कि मुझे सुषुप्त जान सुन्दरी चुपचाप शय्या से उठी और वस्त्र बदलकर वहां से चल दी मैं अति विस्मित हो उसके पीछे हो लिया।

थोड़ी देर में जब सुन्दरी श्मशान में पहुँची तो अनेक जाज्वल्य युवती पिशाचिनी एकत्रित होगईं और किसी नवीन समाधि को खोद तथा शव बाहर निकालकर बड़े स्वाद से मांस भक्षण करने लगीं यद्यपि किंकर्त्तव्यविमूढ़ पारस्परिक उनकी वार्ता न सुन सका तथापि उनकी विकसित मुखच्छवि अवलोकन मात्र से प्रेम—सौहार्द्र का भलीभांति परिचय मिलता था।

मांस खाने के पश्चात् सबने अस्थि-पिञ्जर पुनः समाधिस्थ कर ऊपर

से मिट्टी थोपदी में अति भयभीत झटित घर आकर पूर्ववत् शय्या पर सो रहा।

क्षणमात्र में ही सुन्दरी भी लौट आई और वस्त्र बदल कर मेरे बराबर उसी शय्या पर लेट गई यद्यपि पिशाचिनी के सङ्ग शयन करना असह्य था परन्तु विवश एक ओर पड़ा रहना पड़ा।

ज्यों त्योंकर प्रभात हुआ ईश्वराधना के पश्चात् मैंने अनेक उपाय सुन्दरी को सन्मार्ग पर लाने के सोचे वरन् इसी असमञ्जस में भोजन का समय होगया।

पाकागार में पहुंचकर भोजन करना प्रारम्भ किया सुन्दरी नियमानुसार एक २ चांवल मुख में रखने लगी तब मैंने विषन्न होकर कहा—"यदि कोई पदार्थ रुचिकर नहीं है तो और कुछ इच्छानुसार बनवा लिया करो क्या मृतक के मांस से और कोई पाक स्वादिष्ट नहीं होता?"

अभी मेरे मुख से इतना ही निकला था कि सुन्दरी समझ गई मुख-आरक्त और भृकुटी दीर्घायित होगई हठात उसने एक जलपात्र उठाया और उसमें अपनी अंगुली डुबोकर कोई मन्त्र उच्चारण किया मैं कुछ भी न समझ सका सुन्दरी का रौद्ररूप देख क्षमा प्रार्थना करने ही को था सहसा उसने वही मन्त्र पूत जल मेरे ऊपर छिड़क दिया जिसके कारण मनुष्य से श्वान बन गया।

सुन्दरी ने लकड़ी प्रहारकर ऐसा आहत किया कि चलने की शक्ति भी जाती रही तब उसने खदेड़कर मुझे बाहर निकाल दिया यद्यपि असह्य वेदना से मैं मुक्त होगया परन्तु अन्य बहुत से कुत्ते मुझे देखकर भोंकने लग गये मैं पूंछ दबाकर किसी बधिक की दुकान में जा छिपा।

बधिक ने मेरी रक्षा की रात भर मैं उसी की दुकान में रहा आया प्रभात होने पर बधिक मांस विक्रयार्थ लाया बहुत से कुत्ते मांस पाने की लालसा में दुकान के आगे आ खड़े हुये अस्तु मैं भी उनमें जा

मिला मैंने रातसे कुछ नहीं खाया था दयाकर बधिक ने एक लोयड़ा मेरे आगे डाल दिया मैंने कृतार्थ हो धन्यवाद में अपनी पूंछ हिलाई परन्तु बधिक ने कोई अपशकुन जान मुझे वहां से भगा दिया।

मैं घूमते हुये धावे-रोटी विक्रेता की दुकान में घुस पड़ा उस समय स्वामी जलपान कर रहा था अस्तु दयाकर उसने एक रोटी मेरे आगे फेंक दी मैंने पूंछ हिलाकर उसे भी धन्यवाद दिया।

स्वामी अति प्रसन्न हुआ वरन् मध्यान्ह के समय मुझे अपने घर लेजाकर बड़े सुख से रखा मेरे लिये एक स्वच्छ स्थान निश्चय कर दिया था स्वामी जहां कहीं जाता मुझे अपने सङ्ग ले जाया करता था। यदि समयासमय मैं किसी कारणवश सङ्ग न जाता तो वह मुझे दीर्घ स्वर से पुकार कर बुला लिया करता था इस प्रकार मैं बड़े सुख से उसके घर में रहने लगा।

एक दिन कोई स्त्री रोटी मोल लेने आई और एक रुपया खोटा मिलाकर उसने दिया। स्वामी ने रुपया बदलने का आग्रह किया। परन्तु वह सहमत न हुई अपना रुपया अच्छा ही बताया करी।

स्वामी ने मुझे पुकारकर सब रुपये मेरे आगे डाल दिये। जो रुपया खोटा था मैंने उसपर अपना पैर रख दिया, विवश आगता को रुपया बदलना ही पड़ा।

स्वामी ने मेरे इस गुण की प्रतिवासियों से अति प्रशंसा की अस्तु परीक्षार्थ अनेक खोटेखरे रुपया मुझसे परखवाए वरन् इस गुण के कारण सब कोई मेरी अधिक प्रशंसा करने लगे।

एक दिन कोई वृद्धा पुनः रोटी लेने आई और ६ रुपया जिनमें एक खोटा था स्वामी को दिये।

स्वामी ने सब रुपया मेरे आगे डाल दिए। अतः खोटा रुपया निकाल कर मैंने अपना पैर रख दिया।

वृद्धा ने हंसकर कहा—"वास्तव में यह रुपया खोटा ही था।"

अस्तु वृद्धा रुपया बदल कर मेरी ओर संकेत कर चल दीं।

मैं उसका अभिप्राय समझ गया स्वामी की दृष्टि बचा उसके संग चल दिया। वृद्धा अपने घर पहुंच कहने लगी—"पुत्री ले देख! मैं कुत्ता लिवा लाई।"

पुत्री मन्त्र शास्त्री थी। मुझे १।२ बार शिर से आपाद निहार कोई जल पात्र उठा लाई और अंगुली डूबोकर मन्त्रोच्चारण के पश्चात कहने लगी—"यदि मन्त्रबल से श्वान रूप में होगया हो तो शीघ्र ही मनुष्य बनजा!"

निदान जल छिड़कते ही मैं पूर्ववत मानवरूप में आगया मैं उस युवती रमणी के चरणों में गिर अनेकश: धन्यवाद देने लगा।

युवती रमणी ने परिचय पाने के पश्चात मुझे एक बोतल देकर समझाया—"इस बोतल को सावधान से पास रखना। अमीना घर में नहीं है ज्योंही कि यह आती दीखे इसमें से थोड़ा जल छिड़क देना। जिस रूप में कहोगे आ जावेगा।"

बोतल लेकर मैं बड़ी सुगमता से घर में आकर गृहणी अमीना की प्रतीक्षा करने लगा। थोड़ी देर में ही वह घर में प्रविष्ट हो मुझे देख पीछे भागना ही चाहती थी कि हठात मैंने जल छिड़क कर 'घोड़ी' कह दिया।

सामने ही अमीन घोड़ीं रूप दृष्टि पड़ी मैंने केश पकड़ उसे अश्वालय में बाँध दिया। उसी दिन से निरन्तर मैं कोड़ों से आहत कर दौड़ाया करता हूं आशा है अब मेरी विचित्र घटना पर विचार करके इस पिशाचिनी को ऐसे ही दण्ड के उपयुक्त पाकर उपेक्षा न करेंगे।

कदाचित मानवरूप में आकर यह राक्षसी अकारण ही सीदी नेमान को दुःख पहुंचावे अस्तु खलीफा कुछ न कह कर तीसरे मनुष्य हसन से पूछने लगे।

ख्वाजा हसन की कथा

प्रभो अपनी कथा प्रारम्भ करने के पूर्व में बुगदाद रहिवासी अपने दो मित्रों के अविकल विचार वर्णन करना समुचित समझता हूँ क्योंकि मेरी कथा से उनका घनिष्ट सम्बन्ध है वरन् उनके कारण ही मैं उन्नत हो सका हूँ। उनमें एक का नाम सअद और दूसरे का सअदी था।

सअदी का विश्वास था कर्म प्रधान है परन्तु सअद कहता था सब कुछ प्रारब्ध से मिलता है यदि भाग्य में नहीं है तो अनेक उपाय करने पर भी कुछ नहीं मिल सकता। सअदी ने विरोध कर कहा—"प्रारब्ध असली—निरुद्यमी मनुष्यों का ढकोसला है।" निदान दोनों ही अपने पक्ष का समर्थन करते थे अतः इस जटिल प्रश्न के निरूपणार्थ दोनों किसी श्रमजीवी की खोज में चल दिये, जिसे रुपया देकर उद्योग द्वारा धनी बनाना निर्धारित किया था।

दोनों घूमते हुये भाग्य से मेरे पास आये। जब मैं रस्सी बट कर बड़े श्रम से गार्हस्थ चलाता था मैं अति दरिद्री था। कठिन परिश्रम करने पर भी यदा कदा निराहार रह जाना पड़ता था। मेरी मलीन दशा देख सअद ने कहा—"यदि २०० मुद्रा व्यापारार्थ हम तुझे देवें तो क्या आनन्द से कालक्षेप कर धनवान नहीं बन सकेगा।"

थोड़ी देर सोचकर मैंने कहा—"इतने थोड़े धन से धनवान तो सहज नहीं हो सकता परन्तु मैं जानता हूँ—"उद्योगिनं पुरुषसिंह मुपैति लक्ष्मी।"

अपने पक्ष का समर्थन देख सअद ने प्रसन्न हो २०० मुद्रा मुझे प्रदान की और साधारणतः समझाकर कहने लगा—"असावधानता से मुद्रा व्यय न कर देना हमें आशा है अब तुम्हें सुखी देखेंगे।"

निदान जब दोनों मित्र चले गये मैं सोचने लगा मुद्रा कहाँ

रक्खूं कोई बक्स भी नहीं है अतएव सब मुद्रा मैंने अपनी पाग में बांध लीं। केवल १० मुद्रा जेब में डाल बाजार की ओर चल दिया।

बाजार में जाकर मैंने सन और कुछ मांस क्रय किया। कांख में सन और हाथ में मांस लिये चला आ रहा था कि सहसा किसी पक्षी चील ने झपटा मारा। एक बार तो मैंने रक्षा करली परन्तु दूसरी बार मांस के स्थान मेरी पगड़ी उसके पंजे में उलझ गई।

आह, पगड़ी में सब मुद्रा थीं मैं स्तम्भित रह गया अनेक उपाय करने पर भी मुद्रा न मिल सकीं देखते ही देखते चील न जाने कहां लोप हो गई निदान नैराश्य सागर निमग्न अपने भाग्य को कोसता मैं घर लौट आया। दस मुद्रा जो अवशिष्ट थीं सन इत्यादि क्रय कर कुछ काम चलाया परन्तु दरिद्रता ने पीछा न छोड़ा।

मैंने मुद्रा पाने और खोने का रहस्य किसी पर प्रकट न किया था स्त्री पुरुष कलत्र कोई भी परिचित न थे मुझे सोच निमग्न अति विषन्न देख प्रतिवासियों ने पूछा। जब मैंने अपनी दुःखद घटना वर्णन की तो छोटे २ बालक भी अविश्वास कर उपहास करने लगे। मेरी स्त्री को निस्सन्देह पश्चात्ताप हुआ।

छः मास बीत गये। एक दिन वही दोनों मित्र मेरे घर आये और विस्मय से पूछने लगे—"२०० मुद्रा पा तुमने क्या उन्नति की?"

मैंने अश्रु विसर्जन कर सब घटना आद्योपान्त कह सुनाई। सअद ने विषन्न होकर कहा—"भला कहीं चील पाग ले जा सकती है जिसमें क्षुधा निवृत्त हो ऐसी वस्तु भले ही पञ्जे में दबा ले जावे। अनायास ही धन पा जिस प्रकार कुसङ्गति में पड़ प्रायः मनुष्य सब धन नष्ट कर देते हैं, ऐसा ही तो नहीं हुआ?"

मैंने जब बहुत विश्वास दिलाया तब उन्होंने २०० मुद्रा मुझे और देकर समझा दिया कि किसी प्रकार इन्हें न खो देना।'

जब वह दोनों चले गये तो प्रसन्न हो मैंने अपने घर में प्रवेश

किया दुर्भाग्य से उस समय घर में स्त्री पुरुष कोई न थे । अस्तु पूर्व की नांई १० मुद्रा निकाल शेष किसी वस्त्र में बांध एक मटका में, जिसमें गेहूं की भुसी भरी हुई थी रख दीं । यद्यपि मेरी स्त्री उसी समय घर आगई परन्तु मैंने कहना उचित न समझा वरन् सन लेने बाजार चल दिया ।

बाजार जाते ही मेरे पीछे कोई शिर धोने की मिट्टी बेचने आया घर में कुछ नहीं था कह सुनकर गृहिणी ने भुसी के बदले में मिट्टी लेना निश्चय समझा ।

मिट्टी विक्रेता ने मटका सहित भुसी लेकर थोड़ी सी मिट्टी दे दी थोड़ी देर में मैं लौटकर घर आया सन के पांच बड़े बोझ भार-ग्राही द्वारा लाया था उन्हें रखवा कर निश्चिन्त हो मटका देखने लगा ।

शिर धोने की मिट्टी के बदले भूसी सहित गृहिणी ने मटका किसी को दे दिया है यह सुन मैं वज्राहत की भांति स्तम्भित रह गया । थोड़ी देर में सचेत होकर मैंने शिर पीटकर कहा—"१९० मुद्रा मैंने उसी मटका में रख दी थीं तूने सर्वनाश किया ।

निदान अपने भाग्य को कोसते हुए अन्यमनस्क शिर पकड़े पड़ रहा । अब सअदी को दया न आवेगी वह मुझे बज्र मूर्ख का किंचित बिश्वास न करेंगे । (दीर्घनिश्वास त्याग) "दैव, क्या मुझ जैसा कोई मन्दभागी भी होगा ।"

मैं अहर्निश चिन्तित रहने लगा । एक दिन वही दोनों मित्र पुनः मेरे घर आये और मेरी दरिद्रावस्था देख पश्चात्ताप कर पूछने लगे । मैंने समस्त दुर्घटना कह सुनाई ।

सअद ने प्रसन्न होकर कहा—"वास्तव में तुम सत्य कहते हो भाग्य में नहीं होता तो सोना मिट्टी हो जाता है परन्तु अब देखना भाग्य बल से तुम कैसे उन्नतशील नहीं बनते" यह कहकर सअद ने एक पैसा जेब से निकाल कर मुझे दिया ।

सग्रदी हंसने लगा परन्तु सग्रद वादा देकर कहा—"भ्रात हसन ! तुम विश्वास रक्खो भाग्य बलवान होगा तो तुम इसी एक पैसे से अवश्य धनी हो जाओगे !"

जब दोनों मित्र चले गये मैं अति विषन्न होकर घर पहुंचा। वस्त्र उतारने में उक्त पैसा निकल पड़ा अतः मैंने उठाकर असावधानता से किसी आले में डाल दिया।

मेरे घर के पिछवाड़े कोई मछुहा रहता था अनायास उसका जाल टूट गया। अस्तु सुधरवाने के लिए एक पैसा चाहिये। मछुहे के पास कुछ न था। २-४ प्रतिवासियों से मांगने पर भी जब कुछ न मिला तो उसने अपनी पत्नी को मेरे घर भेजा किंबहुना मेरी अनुमति से गृहिणी ने वही पैसा दे दिया। मछुहा पत्नी धन्यवाद दे कहने लगी—"कल जब मेरा पति नदी में जाल डालेगा तो पहिली बार जितनी मछली फंसेगी मैं सब लाकर तुम्हें भेंट करूंगी।" यह कहकर शीघ्र लौट गई।

पत्नी का बचन बद्ध होना मछुहे ने सुना तो वह अति प्रसन्न हो कहने लगा—"तुमने बहुत दूरदर्शिता का काम किया मैं सहर्ष पहिली बार की सब मछलियाँ तुम्हें लाकर दे दूंगा।"

प्रभात होने पर मछुहे ने नदी में जाल डाला प्रथम ही केवल एक मछली उसमें फँसी पुनः अनेक बार उसने जाल डाला और बहुत सी मछलियां फंसी परन्तु वे सब पहिली से आकार प्रकार में छोटी थीं।

मछुहे ने घर लौटकर अपनी पत्नी द्वारा वही मछली मेरे पास भेजीं यद्यपि इस प्रकार भेंट लेना मैंने अस्वीकार किया परन्तु उसके आग्रह ने बाध्य कर दिया। विवश मैंने वही मछली गृहिणी को देकर सग्रद के पैसा देने का समस्त वृत्तान्त कह सुनाया।

गृहिणी ने मछली लेकर सोचा अधिक नहीं तो बालकों का ही काम चलेगा अस्तु वह छुरिका ले उसका उदर शोधने लगी। एक

टुकड़ा उदर में से नीचे निकल पड़ा। अरे बड़ा भारी कांच का टुकड़ा है ! धोकर नव—शिशु को खेलने के लिए दे दिया।

ज्वलन्त कांच के टुकड़े में इतना तेज देख बालक परस्पर झगड़ने लगे। प्राथमिक बाल क्रीड़ा वश मैंने कुछ ध्यान न दिया अन्ततः जब विरोध की मात्रा अधिक देखी तो मैंने ज्येष्ठ पुत्र से चुप होने को कहा।

"पिताजी, छोटे भाई के हाथ में क्या है? दीपक की नांई चमकता है। देखते हुये आँखें चुंधियां जाती हैं।"

निदान मैं भी देखकर अति विस्मित हुआ चलो, अब दीपक न जलाना पड़ेगा इसका प्रकाश तो सूर्य के सदृश है, निस्सन्देह सअद का पैसा निकला बड़े महत्व का।

प्रभात होने पर मैंने अपना काम प्रारम्भ कर दिया। उस टुकड़े का कुछ ध्यान ही न रहा।

मेरे एक धनी प्रतिवासी यहूदी रत्न पारखी थे। उन्हें रात को बालकों के झगड़ने और चीत्कार वश देर से नींद आई थी। अस्तु प्रातः ही इनकी सुगृहिणी कारण पूछने मेरे घर आई। मेरी स्त्री ने समस्त वृत्तान्त कह सुनाया।

कांच के टुकड़े की ऐसी प्रशंसा सुन उसने देखने को अनुरोध किया। अस्तु किसी बालक से लेकर गृहिणी ने दिखाया तो वह विस्मित हो कहने लगी—"बहिन यह तो बहुमूल्य रत्न हीरा है। मेरे पास भी ऐसा ही हीरा है परन्तु वह चमक न्यून है। अतएव तुम इसे किसी को दिखाना देना नहीं।" यह कहकर वह तुरन्त लौट गई और अपने पतिदेव-रत्न पारखी से हीरा उपलब्ध होने का सब वृत्तान्त कह सुनाया।

रत्न पारखी ने आतुरता पूर्वक कहा—"जिस मूल्य में मिल सके ले आ, वह बहुमूल्य—अप्राप्य रत्न है।"

रत्न पारखी-रत्नी शीघ्र आ कहने लगी—"बहिन इसे मुझे देदो

बीस मुद्रा मूल्य स्वरूप तुम्हें भेंट करूंगी।"

मेरी स्त्री ने स्वप्न में भी हीरा न देखा था वह सोचने लगी बीस मुद्रा बहुत हैं। परन्तु बालक चीत्कार करने लगे थे। अस्तु मैंने घर में पैर रखा ही था कि बालकों को वर्जकर गृहिणी कहने लगी—"अजी वह कल वाला टुकड़ा हीरा है (मुख फेरकर) यह बीस मुद्रा में उसे मांगती है।"

अभी मैंने कुछ उत्तर न दिया था परन्तु रत्न पारखी पत्नी ने अमत जानकर कहा—"अच्छा बीस में नहीं देते तो ५० मुद्रा लेलो।"

मैंने सोचा मौन रहने पर ही इसने २० से ५० मुद्रा कर दीं है तो निस्सन्देह यह मौलिक पदार्थ कोई रत्न है अभी मैंने कुछ न कहा था कि रत्नपारखी-पत्नी ने मूल्य १००।५०० और १००० मुद्रा की वृद्धि कर दी। तब मैंने साहस कर कहा—"अजी, चाहे एक बार कहो या १० बार परन्तु मैं एक लाख मुद्रा से कम न बेचूंगा।"

"अच्छा, मैं अभी आती हूँ" कहकर चलदी और अपने पति रत्न पारखी को संग लिवा लाई।

रत्न पारखी ने आते ही सत्तर सहस्र मुद्रा मूल्य लगा दिया। मेरे कहने पर रत्न पारखी लक्ष मुद्रा देने पर सहमत होगया।

दूसरे दिन लक्ष मुद्रा पाने पर मेरे आनन्द की सीमा न रही। वस्त्राभरण विपुलता से दास दासी इच्छातीत एवम् रमणीक भवन इत्यादि क्रय कर धनिकों की नांई रहने लगा वह विशाल भवन जिसे आपने देखा स्वयम् मेरा बनवाया हुआ है परन्तु मैंने अपने पुरातन व्यवसाय को नहीं छोड़ा अनेक नगरों में मेरी दुकानें हैं वरन् अल्पकाल में ही आशातीत लाभ होकर मूल धन द्विगुणित हो गया है।

कुछ दिनों पीछे वहां पूर्व परिचित दोनों मित्र मेरे घर आये जहाँ अब बड़ा गोदाम है निदान बड़ी देर खोज पश्चात वे मुझे मिले मेरा वैभव देख अति प्रसन्न हुये मैंने चरण स्पर्श कर उन्हें उच्चासन पर विराजमान कर कुशल, पूंछी।

सम्रदी ने संकुचित होकर कहा—"जान पड़ता है दोनों बार तुमने झूठ बोला अन्यथा एक पैसा किसी दशा में इतना शीघ्र आपको उन्नति के उच्च शिखर पर नहीं पहुंचा सकता ।

मेरे उत्तर देने के पूर्व ही सम्रद ने बाधा देकर कहा—"हसन मिथ्या भाषी नहीं है क्यों व्यर्थ दोषारोपण कर लज्जित करते हो उसका कहना अक्षरशः सत्य है भाग्य में नहीं होता तो सोना मिट्टी हो जाता है जैसे ही भाग्य उदय हुआ अनायास ही मनुष्य उन्नत हो जाता है जैसे तुम हसन ख्वाजा साहिब को प्रत्यक्ष ही देखते हो ।

मैंने कहा—'आप व्यर्थ क्यों विवाद करते हैं मेरी कथा श्रवण कर स्वयम् निश्चय हो जायगा । कहकर मैंने उपरोक्त हीरा पाने बेचने इत्यादि की घटना आद्योपान्त कह सुनाई ।

थोड़ी देर में जब दोनों जाने को उद्यत हुये तो मैंने अति विनीत प्रार्थना की—"आपके कारण ही मैं धनी हुआ हूं । अस्तु आतिथ्य सत्कार स्वीकार कर कृतार्थ कीजिये ।"

निदान मेरे आग्रह से दोनों ने रहना निश्चित किया मध्याह्न के समय मैं उन्हें पाकागार में लिवा ले गया अभी भोजन आस्वादन नहीं किया था कि मेरे दोनों पुत्र घूमते हुये वहां आये सामने के बट वृक्ष पर किसी पक्षी ने घोंसला बनाया था पहिले तो दोनों ने उस घोंसला को तोड़ने की स्वयम् चेष्टा की परन्तु वह न पहुंच सके तो सेवक से तुड़वाया उसमें भारी बोझ था। वह मेरे पास ले आये ।

"अरे यह तो मेरी पगड़ी है जिसे चील ले उड़ गई थी । सम्रद ने खोलकर देखा वही थैली जो सबके पूर्व हसन को दी थी दृगगत हुई सम्रदी ने थैली को खोला तो १९० मुद्रा निकलीं तब सम्रदी ने कहा—"वास्तव में ये मुद्रा चील ले गई थी परन्तु निस्सन्देह पिछली २०० मुद्रा तुम्हारे पास ही रहीं जभी तुम उन्नति कर सके हो ।"

'चलो, आपको २०० मुद्रा खोने का विश्वास तो हुआ संभव है पिछली २०० मुद्रा का और कोई प्रमाण मिल जावे यह कहकर

मैंने उन्हें भोजन कराया।

बहुत देर तक विश्राम करने पश्चात् सायं समय हम सब घोड़े लेकर बुगदाद की ओर चले, संयोग वश उस दिन सब दुकानें बन्द थीं और अश्वपालक दाना लाते हुए पीछे रह गये थे अस्तु मैंने एक सेवक को दाना लेने नगर में भेजा।

प्रयत्न करने पर भी कहीं दाना नहीं मिला सौभाग्य से एक सेवक एक मटका भुसी ले आया और थोड़ी २ घोड़ों के आगे डालने लगा सहसा अन्धकार में उसे एक पोटली मिली जो उसने तद्वत मेरे आगे ला रक्खी।

ज्योंही कि पोटली मैंने प्रकाश में देखी तो मेरे आनन्द की सीमा न रही क्योंकि वह वही मटका था जिसमें मैंने १९० मुद्रा रक्षित की थीं।

मटका पहचानने को मैंने घर में भी भिजवाया। जब निश्चय होगया तो सअदी को अपना पक्ष परित्याग कर मानना पड़ा "जो कुछ होता है भाग्य से ही होता है।" निदान सअदी ने सअद और मुझ से क्षमा प्रार्थना कर अपने शब्द लौटा लिये और मैत्री भाव से विदा हो अपने २ घर की ओर पयान किया।

ख्वाजा हसन के मुख से कथा श्रवण कर खलीफा ने कहा— "तुम्हारा वही हीरा हमारे कोष में है सअदी को बुला लो देखकर उसे निश्चय हो जायगा कि रुपये पैसे से कोई दरिद्री प्रयत्न कर धनी नहीं बन जाता।

निदान सीदीनैमान अब्दुल्ला और ख्वाजाहसन प्रणाम कर अपने २ घर गये।

यद्यपि सम्राज्ञी शहरजाद ने अलीबाबा और चालीस ठगों की कथा को जो एक स्वामिभक्त सेविका के चातुर्य से यमपुर पहुँचे, वर्णन करना चाहा परन्तु प्रभात होजाने के कारण सम्राट शहरयार ने आगामी रात्रि को सुनाने की आज्ञा दी।

अलीबाबा की कथा

पार्स्व देश रहिवासी दो सहोदर भ्राता अग्रज कासिम और लघु अलीबाबा नामक थे। पिता के स्वर्गवास पश्चात् जो कुछ पैतृक सम्पत्ति मिली वह अल्पकाल में ही अपव्यय वश सब नष्ट होगई सौभाग्य से कासिम का विवाह ऐसी रमणी के सङ्ग हुआ जो अपने धनी पिता की एक मात्र सन्तान थी। जैसे ही कि श्वसुर ने संसार यात्रा की बहुत सा भूमिगत धन मकान दुकान इत्यादि पर सहज ही भाई का अधिकार होगया। वह नगर में प्रतिष्ठित गण्य मान्य धन कुवेर प्रसिद्ध होगया। परन्तु अलीबाबा की पाणिग्रहीता का पिता अति दरिद्री था अतएव बेचारा प्रतिदिन वन से सूखी लकड़ियां गधों पर भार करके लाया करता था निदान इस प्रकार बड़ी कठिनता से गार्हस्थ चलाता था वह सपत्नीक एक छोटे से घर में रहा करता था।

एक दिन अलीबाबा लकड़ी काटकर गधों में लादने ही को था कि सहसा अनेक अश्वारोही युवक इसी की ओर आते दृग्गत हुये। कदाचित ये डाकू न हों! इस भय से अपने गधे एक ओर हांके स्वयम् पर्वत तट सघन वृक्ष पर चढ़ उनकी प्रतीक्षा करने लगा।

थोड़ी देर में वे सबके सब जो दीर्घाकाय बलवान दस्यु थे उसी वृक्ष के सन्निकट पहुंच घोड़ों से उतर पड़े। ये सब चालीस थे जो लूटमार कर प्रचुर धन कहीं रक्षित करने आये थे।

सबके आगे दस्यु प्रधान था वह अधित्यका में खड़ा होकर कहने लगा:—"खुल सम् सम्!" हठात् प्रधान के कहते ही सम्मुख एक द्वार खुल गया।

थोड़ी देर में इधर उधर देखकर सबके सब अपना २ गठुर लिये भीतर प्रविष्ट हो गए सबको बाहर निकलने में कुछ देर हुई अतः अलीबाबा ने सोचा—"क्या इनके घोड़े हांक ले चलूं! परन्तु पहिले सब दस्यु गण बाहर निकल आये तब प्रधान ने—"बंद हो सम सम!" कहा

और अश्वारूढ़ हो जिधर से आये थे उधर ही चल दिये।

सबके चले जाने पर अलीबाबा ने नीचे आकर देखा द्वारका कहीं चिह्न नहीं है दस्यु प्रधान की नाईं उसने भी "खुल सम् सम्" कहा हठात् वही द्वार खुल गया।

अलीबाबा ने भीतर प्रवेश कर देखा—"विशाल भवन बहुमूल्य पदार्थों से परिपूर्ण है वस्त्राभरण विपुलता से तथा स्वर्ण मुद्रा चर्म थैलियों में खचा खच भरी हुई हैं।

जितना गधे भार ले जा सकते थे अलीबाबा ने मुद्रा लाद और ऊपर से लकड़ी रख—"बन्द हो सम् सम्" कहकर शीघ्रतया घर की ओर पयान किया।

यथासम्भव शीघ्र घर पहुंचकर अलीबाबा ने गधे भीतर कर लिए और लकड़ियां इधर उधर फेंककर अपनी स्त्री के आगे मुद्रा ढेर कर दीं पति ने चोरी की है यह जान गृहिणी निन्दा करने लगी परन्तु जब वास्तविक रहस्य प्रगट हुआ तो प्रसन्न हो मुद्रा गिनने लगी अलीबाबा ने कहा—"प्रिये, कहांतक गिन सकेगी सदन में गड्ढा खोद इस समय गाढ़ न दूं।"

मुसकराकर गृहिणी ने कहा—"कितना धन है कुछ तो अनुमान कर लेने दो!"

"अच्छा, जैसी तुम्हारी इच्छा परन्तु रहस्य प्रकट न हो यह ध्यान अवश्य रखना।" यह कह अलीबाबा एक ओर मौन हो बैठ गये।

गिनने में देर लगेगी अलीबाबा की स्त्री कासिम के घर से तोलने के लिए कांटा लेने गई। कासिम पत्नी बड़ी धूर्ता थी कांटे में क्या तुलेगा यह जानने के लिए उसने पलड़ों के नीचे मोम लगा दिया।

मुद्रा तोलने पश्चात् कांटा कासिम के घर पहुँचा दिया मोम के कारण कोई मुद्रा चुपटी रह गई है कि यह किंचित ध्यान न किया। परन्तु कासिम पत्नी ईर्षा से जर्जरित हो सोचने लगी, अलीबाबा अति

दरिद्री था इतनी मुद्रा कहां से पागया। गिनी नहीं जा सकती तोली है! सन्ध्या समय जब कासिम घर आया तो पत्नी ने सब वृतान्त कहा।

कासिम को ईर्षा वश रात भर नींद न आई वह प्रातः ही अलीबाबा के पास पहुंचा कहने लगा—"भाई, देखने को तो तुम बड़े दरिद्री बोध होते हो परन्तु इतनी सम्पत्ति तुम्हारे अधिकार में है जो तोल २ कर भूमिगत् करते हो! अच्छा मैं कोतवाल से कहूंगा।"

अलीबाबा ने देखा-भाई सब रहस्य जान चुका है और फिर भाई ही तो है अपना गिरह से कुछ देना नहीं पड़ता और सबके ऊपर कहीं कोतवाल से न कह बैठे अतएव उसने दस्यु प्रधान का मूल मन्त्र "खुल सम् सम्" इत्यादि सब बता दिया। कासिम को कहां सन्तोष था उसने उसी समय उक्त अधित्यका में पहुंचकर "खुल सम् सम्" कहा।

सन्मुख द्वार खुल गया कासिम ने भीतर प्रविष्ट हो देखा अगाध सम्पत्ति रक्षित हैं। "बन्द हो सम् सम्" यह कहते कहते ही द्वार बन्द होगया तब निश्चिन्त हो कासिम ने अपने दस गधों में लादने योग्य स्वर्ण मुद्रा थैलों में भरकर बाहर निकालना चाहा परन्तु उसे वह मूल मन्त्र स्मरण न रहा 'द्वार खुल ! अरे द्वार खुल जा !!' उसने कई बार कहा परन्तु द्वार न खुला प्रयत्न करने पर तोड़ भी न सका विवश हो इधर उधर देखने लगा जिस प्रकार बिना पानी के मछली तड़फती है यही दशा कासिम की थी उसे एक २ पल पहर समान भान होता था बाहर निकलने के लिये अति व्याकुल था मानों सहस्रवृश्चिकने एक साथ ही दंश मारा हो सहसा मध्यान्ह के समय वही दस्यु गण वहां आये प्रधान ने 'खुल सम् सम्' कहकर भीतर प्रवेश किया हठात् कासिम ने भागने की चेष्टा की परन्तु किसी दस्युने खड्ग कर प्रहार कर शिर तन से अलग कर दिया। प्रधान ने कासिम का शव चार खण्डों में विभक्त कर वहीं द्वार के सन्निकट उत्तर दक्षिण डाल दिया और वह थैली जो कासिम निकाल लाया था तद्वत रखदीं।

उधर सूर्यास्त के समय कासिम पत्नी को चिंता होने लगी परन्तु अलीबाबा ने आश्वासन देकर कहा—"कासिम अति चातुर्य पटु हैं भुलावा देकर आता ही होगा।"

कासिम पत्नी को प्रतीक्षा करते अर्द्ध रात्रि व्यतीत होगई पति-देव लौटे नहीं वह व्याकुल हो पश्चात्ताप करने लगी—

"यदि मैं न कहती तो वह काहे को जाते।" इसी प्रकार बेचारी विरह विह्वल हो पति को स्मरण कर अश्रु बहाने लगी।

प्रभात होने पर कासिम पत्नी के आग्रह में अलीबाबा ने भाई का समाचार लेने उक्त जाङ्गल्य उपत्यका की ओर प्रस्थान किया।

अलीबाबा ने अभीष्ट स्थान पर पहुंच "खुल सम् सम्" कहकर भीतर प्रवेश किया। प्रथम ही भाई का शव चार खंड किया हुआ मिला, बहुत प्रयत्न करने पर भी नेत्र नीरव न रह सके दुःखित हो कासिम का शव एक गधे पर लाद ऊपर से लकड़ियां चुन दीं शेष गधों पर जितना हो सका मुद्रा लाद अपने घर की ओर पयान किया!

घर आकर मुद्रा अपनी स्त्री को दे एक गधा कासिम के घर ले गया पति का शव देख कासिम पत्नी वैधव्य दुःख से सन्तप्त अति क्रन्दन करने लगी परन्तु अलीबाबा ने समझाया इस प्रकार आर्त्त-नाद से यदि रहस्य प्रकट होगया तो मेरी और तुम्हारी कुशल नहीं है। युक्ति से अन्तिम संस्कार कर देंगे। अब भाई आ नहीं सकता यह समझ लो। निदान बेचारी लहू का घूंट पीकर रह गई। अलीबाबा अपने घर आ अपनी स्त्री और सेविका मरजीना से समस्त वृतान्त कह अन्त्येष्टि संस्कार में साहाय्य मांगा। अस्तु मरजीना उसी समय किसी पंसारी की दुकान पर जा ऐसी औषधि मांगने लगी जो प्रायः रोगी के प्राण कण्ठगत होते समय वैद्य प्रयोग में लाते हैं।

"रोगी कौन है पंसारी ने पूछा।"

अश्रु विसर्जन कर मरजीना कहने लगी—"स्वयम् मेरा युवा

पति मृत्यु शय्या पर है देखिये इस औषधि को प्रयोग में लाने का अवसर मिलता है या पूर्व ही......।"

दूसरे दिन कासिम पत्नी ने रुदन प्रारम्भ किया हटात् मरजीना किसी वृद्ध सूचीकार मुस्तफा के पास पहुंच एवम् एक मुद्रा दे कहने लगी—"मैं तुम्हें आशातीत लाभ कराऊंगी शीघ्रत: एक मृतक का कफन सीने सङ्ग चलो। परन्तु मैं तुम्हारे नेत्रों से पट्टी बांधकर ले चलूंगी। धर्मयाजक की ऐसी ही आज्ञा है।"

मुस्तफा को अमत देख मरजीना ने एक मुद्रा और दे दी अस्तु वह प्रसन्न हो पट्टी बांधकर सङ्ग चल दिया।

घर पर किसी कोठरी में बिठा मुस्तफा की पट्टी खोल दी। थोड़ी देर में कफन सिल गया। मरजीना पुन: पट्टी बांध मुस्तफा को उसकी दुकान तक पहुंचा आई।

मरजीना ने कासिम का शव क्रम से मिलाकर कफन से ढक दिया और घर से दूर ले जा किसी स्थान में अर्थी रख निकटस्थ मसजिद में जा किसी मुल्ला पण्डित और उसके सहकारी चार मनुष्यों से अरथी उठवा आगे २ स्वयम् क्रन्दन करती श्मशान की ओर चल दी।

श्मशान भूमि में कासिम को समाधिस्थ कर मरजीना अलीबाबा के पास लौट आई। निदान अलीबाबा उनकी पत्नी मरजीना और कासिम पत्नी के अतिरिक्त रहस्य किसी पर प्रकट न हुआ।

थोड़े दिनों पीछे अलीबाबा ने कासिम पत्नी के सङ्ग पुनर्विवाह कर लिया। धनाभाव से ज्येष्ठ पुत्र तक किसी व्यापारी के पास रहा करता था अब वह स्वयं कासिम की दुकान चलाने लगा।

दस्युउपाख्यान

नियमानुसार चालीसों दस्यु अपना गुप्त कोष देखने आये परन्तु कासिम के शव का कहीं चिह्न न मिला। बहुत सी मुद्रा चोरी गई है

यह देख दस्युप्रधान ने विषन्न होकर कहा "बन्धुओ ! बड़े दुःख से कहना पड़ता है कि यह अज्ञात शत्रु यदि इसी प्रकार स्वतन्त्र रहेगा तो एक न एक दिन हमें पूर्वोपार्जित समस्त धन से हाथ धोने पड़ेंगे, कहो कौन वीर दस्यु है जो नगर में जाकर खोज लगावे। गत २।३ दिनों में कौन कैसे मनुष्यों की मृत्यु हुई है यह जानने पर चोर अनायास ही हाथ लग जायगा।"

प्रधान की अनुमति से एक दस्यु नगर में आया अभी सूर्योदय नहीं हुआ था सब दुकानें बन्द थीं केवल एक वृद्ध सूचीकार अन्धकार में ही कुछ सी रहा था। दस्यु ने प्रणाम कर पूछा—"भाई इस समय तो टांका दीखता भी न होगा ?"

सूचीकार ने जिसका नाम मुस्तफा था कड़क कर उत्तर दिया—"महाशय अभी मेरी नेत्र ज्योतिमन्द नहीं हुई कल तो मैंने अंधेरी कोठरी में बैठकर कफन सिया था।

झटित दस्यु ने एक मुद्रा देकर मुस्तफा से पूछा—"कल किस घर में आपने कफन सिया था ?"

मुस्तफा ने विवश होकर कहा—"मैं घर बताने से विवश हूं। एक रमणी पट्टी बांध कर मुझे लिवा ले गई थी।"

पट्टी बांधकर ले जाना सुन दस्यु का सन्देश विश्वास में परिणित हो गया निश्चय यही चोर है यह जान तथा एक मुद्रा और दे मुस्तफा से कहने लगा—"महाशय ! चलकर इतना बता दीजिये कि रमणी ने पट्टी किस स्थान पर बांधी थी सम्भव है वहां पहुंचने पर पट्टी बांध देने उपरान्त में इच्छित स्थान पा सकूं।"

थोड़ी दूर चलने पश्चात् मुस्तफा ने स्थान बता दिया तो दस्यु ने नेत्रों से पट्टी बांध चलने को कहा।

टटोलते २ आगे आकर मुस्तफा ने अलीबाबा का घर बता दिया अतः दस्यु ने श्वेत खरिया से द्वार पर कुछ चिह्न कर दल में पहुंच प्रधान से समस्त वृत्तान्त कह सुनाया।

"यदि तुमने धोखा दिया तो दण्ड भोगना पड़ेगा।" यह कहकर प्रधान दस्यु के संग चल दिया।

सौभाग्य से उस समय मरजीना कार्यवशात् कहीं बाहर गई थी लौटती बार द्वार पर श्वेत चिन्ह देख अति विस्मित हुई उसने खड़िया लेकर मुहल्ले भर के द्वारों पर वही चिन्ह बना दिया।

मुहल्ले में आकर प्रधान ने देखा सबके द्वार पर एकसा चिह्न विद्यमान है।—निराश अपनी मण्डली में पहुंच उक्त दस्यु को कुछ दण्ड दे घोषणा की—"जो कोई चोर को खोजेगा बहुत पारितोषिक लाभ करेगा।" दूसरे दिन दस्यु ने चोर पकड़ने का भार ले नगर में जा बड़े परिश्रम से अलीबाबा का घर खोज रक्त गेरू का द्वार पर चिन्ह कर दिया और तुरन्त ही प्रधान से सफल मनोरथ होने का हर्ष प्रद वृत्तान्त जा वर्णन किया।

"यदि पूर्व दस्यु की नांईं धोखा दिया तो तुम्हें अधिक दण्ड भोगना पड़ेगा" प्रधान ने पुनः देख आने का अनुरोध किया परन्तु दस्यु ने उसी समय चलने का आग्रह किया।

दस्यु प्रधान को लेकर उसी मुहल्ले में आया। इस अवसर में मरजीना ने सबके द्वार पर वैसा ही गेरू का चिन्ह बना दिया अस्तु प्रधान को पुनः निराश लौट जाना पड़ा।

अब प्रधान ने स्वयम् खोजना निर्धारित किया। शीघ्र ही उसने अलीबाबा का घर खोज लिया और अपने दल में आ सबको एकत्रित कर समझाया—"पहिले उन्नीस गधे लाओ, और फिर सैंतीस तैल के बड़े २ कुप्पा खोजो प्रत्येक कुप्पा में एक २ दस्यु गुप्त बैठकर उसका छोटा सा मुख रहने दे शेष सब सींकर बन्द करदो। अब प्रत्येक गधे पर दो-दो कुप्पा लादो। उन्नीसवें गधे पर एक ओर तो कुप्पा रहेगा दूसरी ओर मैं प्रत्यक्ष बैठ जाऊंगा शेष दो रह गये उनमें एक कुप्पा उठाने वाला सेवक दूसरा गधे वाला बन जायगा इस प्रकार तैली बनकर अलीबाबा के घर क्षमा प्रार्थना कर ठहर रहेंगे जैसे अवकाश मिलेगा

चोर का बध कर जितना धन वह ले गया है इन्हीं गधों में भर लावेंगे।" प्रधान का परामर्श युक्ति युक्त समझ सबने स्वीकार कर लिया। दूसरे दिन ही सब काम से निवृत्त हो तैली जैसी आकृति बना संध्या समय अलीबाबा के द्वार पर जा पहुंचे।

भोजन करके अलीबाबा द्वार पर टहलता हुआ वायु सेवन कर रहा था तैली प्रधान ने सहज ही रात्रि वहीं बिताने की आज्ञा लेली। और कुप्पा उतार कर भीतर रख दिये।

अलीबाबा ने अतिथि स्वरूप उनका उचित सत्कार कर मरजीना को आज्ञा दी—–इन्हें कुछ कष्ट न भोगना पड़े। मेरे लिए जल पान सामिग्री रात में बना रखना मैं प्रात: उष्ण जल से स्नान कर नवीन वस्त्र पहनूंगा।" यह कहकर अलीबाबा शयनागार को चला गया।

मरजीना किसी सेवक को वस्त्र देने चली गई। इस अवसर में प्रधान ने कुप्पों के पास पहूंच प्रत्येक दस्यु को समझा दिया—'अर्द्ध-रात्रि बीतने पर तुम स्वयम् छुरिका से कुप्पों का मुख काट बाहर निकल आना।" यह कहकर प्रधान थोड़ी देर बिश्राम करने शय्या पर पहुंच निद्रा देवी की गोद में अचेत होगया।

मरजीना वस्त्र देकर जलपान सामिग्री जुटाने लगी परन्तु दीपक सब बुझ गये थे ढूंढ़ने पर तैल कहीं न मिला तो उसने सेवक से पूंछा—

"ऐसी चिन्ता क्यों करती हो तैली तो घर पर ठहराही है बानगी वाले कुप्पा में से थोड़ा सा ले आओ।" धीरे से सेवक ने समझा दिया।

सेवक की बात सुन मरजीना लोटा लिए ज्योंही किसी कुप्पा के पास पहुंची दस्यु ने अपना प्रधान समझ पूंछा—"क्या समय होगया निकल आवें! दुष्ट को मुद्रा लाने का फल तो चखा दें!"

यह सुन मरजीना अति भयभीत हुई परन्तु शीघ्र ही साहस कर कहने लगी—"नहीं २ अभी बहुत देर है।"

मरजीना जिस २ कुप्पे के पास गई इसी प्रकार व्यङ्ग वचन कर्णगत हुये। अन्तिम छोटे कुप्पे में तैल मिला अतः उसी में से उसने अपना लोटा भर लिया और शीघ्रतः आग पर रख कर पकाने लगी।

मरजीना ने अति उष्ण तैल प्रत्येक कुप्पे में जाकर डालना प्रारम्भ किया। कुछ शब्द नहीं हुआ सहज ही सेंतीस दस्यु जल भुनकर भस्म हो गये।

थोड़ी देर में प्रधान ने जागृत हो अपने दस्युगण को बाहर निकल आक्रमण करने का संकेत किया। कई बार पुकारने पर जब कुछ उत्तर न मिला तो प्रधान ने स्वयम् कुप्पों के पास पहुंच प्रबोध दे बाहर निकलने को कहा। अरे कोई कुछ उत्तर क्यों नहीं देता कुप्पे में झांका तो दुर्गन्ध से उसका मस्तिष्क घूम गया। भय से प्रकम्पित उसने देखा सबके सब जलकर भस्म होगये हैं। अतएव उसने पिछवाड़े से भागकर प्राण रक्षा की।

प्रभात होने पर अलीबाबा ने जलपान से निवृत्त हो बाहर आकर देखा—तेल के कुप्पे तो रक्खे हुये हैं परन्तु तैल के व्यापारी का कहीं चिन्ह नहीं है।

मरजीना ने समस्त रात की घटना अलीबाबा से वर्णन करदी। अतः अलीबाबा ने अपने सेवक अबदुल्ला की सहायता से सेंतीस दस्यु पिछवाड़े उद्यान में समाधिस्थ कर दिये।

दस्यु प्रधान भागकर अपने गुप्त कोष में जाकर सोया दुःख और चिन्ता ने उसे रात भर अनिद्र रखा अन्त में—अलीबाबा राजकर्मचारियों द्वारा पकड़ा ही गया होगा और यदि बचा भी होगा तो मैं स्वयम् उसे मारूंगा—यह सोचकर कुछ उसे आश्वासन मिला।

दूसरे दिन दस्यु प्रधान ने वेश बदलकर नगर में खोज की, अलीबाबा अपने घर आनन्द से है उसे बड़ा दुःख पहुंचा चौक में अली-

बाबा का पुत्र मादर जलो कासिम की दूकान पर बैठा करता था दस्यु ने पास ही कोई दुकान किराये पर ली और उत्तमोत्तम वस्तु एकत्रित कर अपना नाम ख्वाजा हसन प्रसिद्ध किया २। ४ दिनों में ही उसने मादन जलो से बड़ी मित्रता करली दोनों ही एक दूसरे की दुकान पर घण्टों बैठे रहा करते थे।

ख्वाजाहसन ने मादर जलो को कईबार अपने संग भोजन कराया था। अस्तु उसने निमन्त्रण दे ख्वाजा को अपने घर बुलाने के लिए पिता से अनुमति मांगी।

अलीबाबा ने पुत्र को समझाकर कहा—"निर्वेद देने से तो यह अच्छा होगा कि तुम बातों ही बातों में उसे यहां लिवा लाओ। जिस प्रकार उसने तुम्हें भोजन कराया है उसी प्रकार तुम भी करो।

ख्वाजाहसन तो चाहता ही था कि किसी प्रकार मेरा आना जाना हो जावे वह बातें करता हुआ मादर जलो के संग घर तक चला आया। यद्यपि वह इस समय घर में प्रविष्ट होना नहीं चाहता था परन्तु मादर जलो के आग्रह से उसे भीतर जाना ही पड़ा।

घर में प्रवेश कर मौखिक प्रेम दर्शाते हुये ख्वाजा हसन सहर्ष अलीबाबा से मिला। थोड़ी देर बैठने पश्चात् उसने विदा मांगी परन्तु अलीबाबा ने बाधा देकर कहा—जैसा मैत्री भाव मादर जलो के प्रति तुम्हारा है मैं भलीभांति परिचित हूँ अस्तु बिना भोजन किये जाओगे तो हमें बुरा प्रतीत होगा।"

"मैं लवण नहीं खाता हूँ।" इस मिस से भोजन करना अस्वीकार किया परन्तु "अलौना ही भोजन बनेगा" यह कहकर अलीबाबा ने पाकागार की ओर प्रस्थान किया।

अलीबाबा की आज्ञा सुन मरजीना बड़े असमञ्जस में पड़ गई—"क्या कोई रोगी है ?" यह कहकर अबदुल्ला को वही छोड़ स्वयम् देखने बाहर आई, सामने वही, दस्यु प्रधान विद्यमान् है वह अति विस्मित हुई। वरन् युक्ति से उसने जाना दस्यु प्रधान ख्वाजा हसन

के पास छुरिका गुप्त है। वह सहज ही उसका मनोभाव ताड़ गई। लवण खाकर उसी का घात करने से पापमोचन नहीं हो सकता इसीलिये अलौना भोजन बनवाया है।

थोड़ी देर में भोजन उपस्थित हो गया। अस्तु सबने बड़े आनन्द से आस्वादन किया। पीछे मरजीना ने सुगन्धित मदिरा लाकर रक्खी।

ख्वाजा हसन ने सोचा मदिरा पान करने में सहज ही अलीबाबा का प्राणान्त कर पिछवाड़े से भाग जाऊंगा परन्तु मरजीना और अबदुल्ला बाधा देंगे अस्तु वह भोजन करने चले जावें यह प्रतीक्षा करने लगा।

मरजीना मनोभाव ताड़ गई। वह उसी समय वस्त्राभरण से सुसज्जित हो घूंघट निकाल और खड्ग ले, नर्तकी रूप में वहां आ गई। अबदुल्ला ने मृदङ्ग ले लिया। इस प्रकार मरजीना ने नृत्य कर अलीबाबा और ख्वाजाहसन को अति प्रसन्न कर दिया। वह रीत्यनुसार दक्षिण हाथ में खड्ग और वाम में मृदङ्ग ले पारितोषिक लेने चली।

आनन्द मग्न हो अलीबाबा ने एक मुद्रा दे दी अब वह मादरजनों के पास जाकर बैठी उसने भी एक मुद्रा दी।

अब मरजीना मेरे पास आवेगी यह सोच ख्वाजा हसन ने भी ज्यों ही मुद्रा निकालने को हाथ डाला त्यों ही मरजीना ने बल पूर्वक अपना खडग उसके हृदय में आमूल वेध दिया।

अलीबाबा यह भीषण दृश्य देख प्रकम्पित हो चीत्कार कर उठे—"दुष्टे, यह क्या सूझी?"

मरजीना ने आश्वासन देकर कहा—"स्वामिन्, यह वही दस्युप्रधान है जो तेली बनकर आया था यह आपको बध करना चाहता था...... ...।"

अलीबाबा प्रमुदित हो कहने लगे—"बेटी मरजीने! तेरी कहां

तक प्रशंसा करूं वास्तव में तू सच्ची अङ्ग रक्षिका है। मेरी इच्छा है तुझे पुत्र बधू बनाऊं।"

निदान अलीबाबा ने दस्यु प्रधान को समाधिस्थ कर मादरजलो के संग बड़े समारम्भ से मरजीना का विवाह कर मित्र बांधवों को हर्ष भोज दिया।

एक दिन अलीबाबा ने उसी कोष में जाकर देखा बहुत दिनों से द्वार खुला नहीं है सम्भव है कोई दस्यु अब जीवित नहीं रहा अस्तु उसने मादरजलो को भी कोष दिखाकर मूल मन्त्र बता दिया।

इस प्रकार अलीबाबा बड़े सुख से कालक्षेप करने लगे।

सम्राज्ञी शहरजाद ने प्रभात होने के पूर्व ही कथा समाप्त कर "अपूर्व न्याय, अली ख्वाजा की कथा कहना प्रारम्भ किया।

अलीख्वाजा की कथा

बुगदाद रहिवासी अलीख्वाजा नाम कोई अविवाहित साधारणत: व्यवसायी था। उसने तीन रात्रि पर्यन्त स्वप्न में देखा कोई वयोवृद्ध हज (मक्का मदीना की यात्रा) करने का आदेश कर अन्तर्द्धान हो जाते हैं। अतएव उसने सब कुछ बेचकर घर किराये पर उठा दिया। और यात्रा के उपयुक्त धन अपने पास रख शेष एक सहस्र मुद्रा किसी कुप्पी में भर, ऊपर जैतून का तैल डाल, अपने किसी विश्वस्त मित्र व्यापारी के घर रखने चल दिया।

व्यापारी मित्र ने अलीख्वाजा को कुञ्जी देकर कहा—"जहां तुम्हारी इच्छा हो रख जाओ।"

निदान अलीख्वाजा मित्र के घर कुप्पी रखकर यात्रियों के संग कुछ व्यापारिक वस्तु ऊंट पर लाद चल दिया।

थोड़े दिनों में ही अलीख्वाजा मक्का पहुंच गया। परिक्रमा इत्यादि से निवृत्त हो व्यापार प्रारम्भ किया। २।४ व्यापारियों ने समझाया—"यदि तुम मिश्र की राजधानी केरो में जाकर क्रय विक्रय

करो तो आशातीत लाभ हो, क्योंकि तुम्हारी प्रत्येक वस्तु मौलिक नितांत वहीं के उपयुक्त है।"

अलीख्वाजा की इच्छा सैर करने की थी ही झटित ऊंट किराये कर चल दिया। व्यापारियों के कथानुसार उसे बहुत लाभ हुआ। अस्तु वहां के उत्तमोत्तम पदार्थ क्रयकर वह दमिश्क में पहुंचा और भी अनेक नगरों में परिभ्रमण करता हलब मूसल इत्यादि होता हुआ शीराज़ में आ गया।

शीराज की उर्वरा भूमि गगन स्पर्शी विशाल भवन, रमणीक उद्यान इत्यादि निरीक्षण कर अलीख्वाजा बुगदाद भूल गया।

सात वर्ष बीत गये अभी अलीख्वाजा नहीं लौटा मित्र व्यापारी के चित्त में चिन्ता होने लगी। मक्के से करो जाने का समाचार तो यात्रियों द्वारा मिल चुका ही है परन्तु अब न जाने कहां और किस दशा में हैं? इसी विचार में कई दिन बीत गये एक दिन वह सायं समय सपत्नी भोजन कर रहा था जैतून तैल की अति प्रशंसा की तो पत्नी ने खाने की इच्छा प्रकट की।

कुछ स्मरणकर मित्र व्यापारी बोला—"यदि कोई छोटा सा पात्र लाओ तो मैं अलीख्वाजा के रक्खे हुए तैल में से थोड़ा निकाल कर देखूं बिगड़ा तो नहीं है।"

पति धर्म भ्रष्ट होता है पत्नी ने बर्जकर कहा—"नहीं २ पीछे तैल न निकालना' विश्वासघात महान् पाप है।"

बहुत कहने सुनने से उस समय तो वह मौन हो रहा, परन्तु और किसी समय उसने कुप्पी खोल कर थोड़ा तैल पलट लिया अंगुली डुबोकर स्वाद लेना चाहता था कि एक मुद्रा पर उसकी अंगुली जा पड़ी बिस्मित हो उसने तैल पलट लिया। एक

सहस्र मुद्रा निकाली उन्हें भूमिगन् कर जिनकी कुप्पी खाली हुई उतना ही नवीन तेल बाजार से लाकर उसमें मिला दिया ।

एक महीना पश्चात् अलीख्वाजा लौटकर अपने घर आया वह दूसरे दिन अपने मित्र के घर कुप्पी लेने गया । कुशल प्रश्न पश्चात् मित्र ने कुंजी देकर कहा—"मैंने किसी दिन तुम्हारी कुप्पी नहीं देखी जहां तुम रख गये हो अपनी उठा ले जाओ ।

अलीख्वाजा कुप्पी निकाल कर अपने घर पहुंचा परन्तु अब उसमें मुद्रा नहीं हैं, वह अति विषन्न हो मित्र के पास पहुंच कहने लगा—"यदि आवश्यकता वश तुमने ही मुद्रा निकाली हों तो कुछ चिन्ता नहीं जब तुम्हारे पास आजावें मुझे दे देना अथवा"".....।"

मित्र ने क्रुद्ध होकर कहा—"जैसी कुप्पी तुम रख गए थे उठा ले गए हो मैंने तो देखी तक नहीं है क्यों व्यर्थ दोष लगाते हो !" वह कह कर उसने क्रुद्ध हो अलीख्वाजा को घर से निकलवा दिया ।

दोनों में वैमनस्य हो गया था अस्तु विवश हो अलीख्वाजा ने न्यायालय में पहुंच अभियोग चलाया परन्तु प्रतिवादी के विरुद्ध कोई साक्षी नहीं थी न्यायाधीश ने निरपराध समझ मुक्त कर दिया ।

अलीख्वाजा ने सत्यता के आशय स्वयम् खलीफा से निवेदन किया । खलीफा ने प्रार्थना सुनकर दूसरे दिन उपस्थित होने की आज्ञा दी ।

नियमानुसार रात्रि को ज्योत्स्ना के प्रकाश में खलीफा वेश बदलकर नगर में घूमने निकले सहसा मार्ग में बालकों की बालक्रीड़ा देख विस्मित हो ठहर गए । एक छोटा बालक जो सबमें सुन्दर और चतुर था सबसे कहने लगा—"आओ भाई, आज हम सब यह खेल करें कि मैं स्वयम् न्यायाधीश बनता हूं कोई अलीख्वाजा और कोई उसका मित्र व्यापारी प्रत्यर्थी बने ।"

एक बालक अलीख्वाजा बन कर उपस्थित हो गया और

कुप्पी में मुद्रा रखने ऊपर से भरने इत्यादि समस्त घटना कह सुनाई ।

प्रतिवादी ने सौगन्ध देकर कहा—"कुप्पी कहां रखी थी मैंने देखी तक नहीं यह व्यर्थ दोष लगाता है ।"

खलीफा अति विस्मित हुआ—"यही तो मुझे कल न्याय करना है । वह ध्यान देकर सुनने लगा । अब न्यायाधीश ने प्रतिवादी से पूछा —, 'क्या मुद्रा तुम्हारे पास नहीं है ।"

प्रतिवादी सौगन्ध देने को उद्यत हुआ परन्तु न्यायाधीश ने रोककर कहा—'ठहरो, पहिले कुप्पी देखना चाहता हूं" अलीख्वाजा ने वस्त्र लपेट कुप्पी रूप में उपस्थित किया । उसे दोनों ने स्वीकार कर लिया तब न्यायाधीश ने कहा—"इसमें से थोड़ा सा तैल निकाल कर मेरे पास लाओ ।"

निदान हाथ पर रखकर न्यायाधीश ने तैल चखकर कहा—"ओह, सात वर्ष बीतने पर भी इसका स्वाद नहीं बिगड़ा जाओ बाजार से दो तैल विक्रेता लिवा कर लाओ ।"

उन्हीं में से दो बालक उपस्थित हो गये तब न्यायाधीश ने पूछा—"जैतून का तैल कितने दिनों में बिगड़ जाता है ।"

बड़ी सावधानता से रखने पर तीन वर्ष में गन्ध और रूप बिगड़ जाता है । निदान दोनों ने उक्त कुप्पी में से तैल निकाल सूंघने और चखने पश्चात् एक वर्ष का बता दिया न्यायाधीश ने साक्षी पर विचार करके प्रतिबादी को प्राण दण्ड की आज्ञा देदी ।

न्याय देखकर खलीफा ने मन्त्री से कहा—"इन बालकों को पहिचान रख कल में इन्हें बुलाकर इसी प्रकार न्याय करूंगा ।"

दूसरे दिन खलीफा ने सब बालक अलीख्वाजा और उसके मित्र को उपस्थित होने की आज्ञा दी ।

निदाब सब के आ जाने पर खलीफा ने उन्हीं बालकों के

आगे अलीख्वाजा को उपस्थित कर अभियोग चलाने आज्ञा दी। अस्तु जो कुछ रात किया था वास्तव में कर दिखाया था किम्बहुना साक्षी द्वारा सिद्ध होने पर सहज ही प्रत्यर्थी ने अपराध स्वीकार कर लिया।

बालक न्यायाधीश ने खलीफा से कहा—"प्रभो, दण्ड देने का मुझे अधिकार नहीं है प्रतिवादी से अलीख्वाजा को बलात् मुद्रा दिलाकर कठिन प्राणदण्ड की आज्ञा दी जावे" खलीफा ने उक्त बालक को कन्ठ लगा एक सहस्र मुद्रा पारितोषिक दीं और बड़े सम्मान से घर पहुंचा दिया। ॥ इति ॥

साम्राज्ञी शहरजाद ने उपरोक्त घटना वर्णन कर कल के घोड़े की कथा प्रारम्भ कर दी।

कल के घोड़े की कथा

सहस्रों वर्ष बीतने पर भी पारस देश वासी नव दिन की ईद-महोत्सव मनाते है विशेष कर अग्नि पूजक उस दिन बड़े आमोद प्रमोद से गान नृत्य इत्यादि कर समुन्नत अपने राजा और धन कुवेरों को बहुमूल्य भेंट दिया करते हैं।

शिल्पकार नैपुन्य बड़े २ वैज्ञानिक अपने अपूर्व आविष्कारों से सामयिक नृपति को प्रसन्न कर अधिक पारतोषिक लाभ किया करते हैं। अस्तु—

पूर्व समय में पारस नरेश जिसके प्रबल प्रताप से शत्रु प्रकम्पित होते थे उक्त महोत्सव नगर बाहर मनाया करता था एक वर्ष किसी भारतीय विज्ञान वेत्ता ने एक कल का घोड़ा राजा को भेंट दिया।

राजा ने साधारणतः देख कर कहा—"ऐश्वर्य और रोष्य खिचत लड़की का घोड़ा तुमने अच्छा बनाया है परन्तु हमारे शिल्पकार

कुछ और ही बनाकर दिखा सकते हैं।"

भारतीय शिल्पकार ने गम्भीरता से उत्तर दिया—"प्रभो, केवल आपके लिये ही मैंने बड़े परिश्रम से बनाया है इसका रहस्य आपके शिल्पकार जान सकेंगे इसका मुझे स्वप्न में भी विश्वास नहीं है। राजन्, कल घूमते ही घोड़ा पक्षी बनकर आकाश वितान में उड़ने लगेगा। वरन् क्षणमात्र में ही १००।२०० कोस की यात्रा कर लौट आ सकता है।

ऐसी प्रशंसा सुन राजा को देखने की बड़ी उत्कण्ठा हुई घोड़े के पास खड़े होकर शिल्पकार ने पूछा—"प्रभो, कहां जाने की आज्ञा है! कुछ सोच राजा ने कहा—'कोई डेढ़ कोस दूर सामने ही पर्वत शिखर के तट पर एक खजूर का वृक्ष है उसका पत्ता तोड़ लाओ।

कहने की देर थी शिल्पकार ने अश्वारूढ़ हो न जाने किस कल को घुमाया कि पर्वत की ओर जाता दृष्टि पड़ा।

क्षणमात्र में ही खजूर का पत्ता लिये शिल्पकार ने उपस्थित हो प्रणाम किया। यह कौतुक देख राजा ने घोड़े का मूल्य पूंछा।

शिल्पकार ने कुछ सोचकर कहा—'प्रभो, यदि आप वचनबद्ध हों तो मैं मांगने का साहस करूं'। मैं चाहता हूं राजकुमारी का विवाह मेरे सङ्ग कर दिया जावे।"

यद्यपि मूल्य की व्याख्या सुनकर राजा मौनावलम्बित हो शोच में पड़ गया परन्तु और राजकर्मचारी गण शिल्पकार को घृणित दृष्टि से घूरने लगे।

अतएव राजा को मौन देख युवराज फिरोजशाह क्रुद्ध हो कहने लगे—"पिताजी, यदि आप शिल्पकार की प्रार्थना स्वीकार करेंगे तो जगत में भारी निन्दा होगी परन्तु व्यर्थ क्यों जन समाज में थू-थू करा अपयश लेते हो?"

राजा ने कहा—"यद्यपि राजकुमारी को विवाह देना भारी

अपयश लेना है परन्तु ऐसा अप्राप्य घोड़ा उपलब्ध होना भी कठिन है।"

राजा को सहमत देख युवराज ने टालने के मिस से पूंछा—"क्या मैं परीक्षा कर सकता हूं ?"

शिल्पकार के मुख से 'अवश्य, निकलते ही युवराज उचक कर घोड़े पर बैठ गया और जैसे देख चुका था कल घुमादी।

देखते ही देखते युवराज आकाश की ओर उड़ा दृष्टि से लोप हो गया तब विषन्न हो शिल्पकार ने कहा—"ओह, युवराज ने कितनी शीघ्रता की नीचे उतरने इत्यादि का कुछ रहस्य न पूंछा। सम्भव है उन्हें कुछ कष्ट न सहना पड़े।"

यह सुन राजा ने अधीर होकर कहा—"आह, बड़ी भूल की क्यों नहीं युवराज को सब बता दिया। न जाने वह किसी नदी में गिरेगा या हिमाच्छादित पर्वत शिखर पर......

शिल्पकार ने दु:खित हो कहा—"मुझे अवकाश ही नहीं मिला कदाचित युवराज खोजने पर दूसरी कलों को उपयोग में ला सकें। यह आप विश्वास रखिये अगम्य जल में भी घोड़ा डूबेगा नहीं अनायास ही इच्छानुसार तट पर पहुंचा देगा।"

"जब तक युवराज सकुशल न लौटें एक महीने के लिये तुम्हें यहां रहना पड़ेगा।" यह कह कर राजा ने शिल्पकार को वन्दी कर शोच निमग्न अन्तःपुर को प्रस्थान किया अभी एक क्षण पूर्व जो आमोद प्रमोद से उत्सव हो रहा था शोक में परिणित हो गया।

युवराज फीरोजशाह घोड़े सहित बहुत ऊंचा हो गया, वह ज्यों-ज्यों उस कल को घुमाता था त्यों-त्यों घोड़ा तीव्र वेग से ऊंचा ही होता जाता है बहुत चेष्टा करने पर भी घोड़ा नीचे न उतरा। जीवनाशा नष्ट हो गई उसने घबराकर कान के नीचे हाथ फेरा अत: कोई कल बाहर निकल आई जिसे घुमाते ही घोड़ा शनैः शनैः नीचे

उतरने लगा, यद्यपि अन्धकार प्रतिक्षण बढ़ता जाता था। परन्तु सचेष्ट रह अर्द्ध रात्रि अनुमान नीचे पृथ्वी पर उतर आया।

युवराज ने इधर उधर देखा अरे! यह तो किसी बड़े महल की छतें हैं। परन्तु वह क्षुधा तृषा से अति व्याकुल हो रहा था नीचे जाने के लिए सीढ़ियां देख शनैः शनैः नीचे उतर आया। कदाचित अन्धकार में कोई चोर जार समझ आघात न पहुंचावे अस्तु वह बड़ी सावधानता, से नीचे पहुंच इधर उधर देखने लगा। दीपक के प्रकाश में उसने निकटस्थ कमरे में देखा अनेक सेवक शयन कर रहे हैं। तब उसने अनुमान से जाना कि यह महल किसी राजकुमारी का आवास स्थान है।

आगे चल कर युवराज ने देखा विशाल कमरे के द्वार पर रेशमी परदा पड़ा हुआ है। दबे पांव परदा उठाकर देखा अनेक सेविका परिचारिका यथा स्थान शयन कर रही हैं। अस्तु उसने इनकी ओर कुछ भी ध्यान न दिया और आगे बढ़कर देखा सुसज्जित कोमल शय्या पर एक असमान्या सुन्दरी युवती प्रगाढ़ निद्रा में निमग्न है। वह देखते ही मुग्ध हो गया।

“अहा, कैसा अलौकिक सौन्दर्य है! वास्तव में यह कोई स्वर्ग राज की अधिष्ठात्री देवी है। लावण्य कलिके! यदि मेरी प्रेयसी बन जाओ तो आपका क्रीतदास बना आजन्म सेवा में रहा आऊं।” विवश हो युवराज राजकुमारी के मुख से पट हटा मुखच्छवि देखने लगा।

जागृत हो राजकुमारी ने देखा राजसी वस्त्राभरण से अलंकृत कोई पास बैठा उसीको देख रहा है। अस्तु वह भयभीत हो कुछ कहने ही को थी कि युवराज ने अति विनीति प्रार्थना की—“मेरा नाम फीरोजशाह है मै ईरान का युवराज हूं। आज प्रातः ही अपने पिता के पास बैठा नव दिन महोत्सव का कौतुक देख रहा था कि एक

शिल्पकार की दया से अनायास ही यहां स्वर्ग धाम में आ पहुँचा आपके भी दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अब मैं आपकी शरण हूं आशा है आप क्षमा करेंगी।

उक्त राजकुमारी बंग नरेश की प्रिय पुत्री थी यद्यपि और भी कई छोटी छोटी बहिनें थीं परन्तु सब में बड़ी यही थी पिता ने स्वतन्त्रता से रहने के लिए यह अलग महल बनवा दिया था। युवराज की नय विनय सुन राजकुमारी ने कहा—"यह आपका ही घर है आनन्द से रहिये मैं तो आपकी तुच्छ दासी हूं।"

युवराज धन्यवाद में शिर झुकाना ही चाहता था कि राजकुमारी ने हाथ पकड़कर बर्ज दिया क्योंकि राजकुमारी युवराज से अधिक प्रेम पाश रञ्जित थी।

इस अवसर में कुछ सेविका जागृत हो रहस्य भरी दृष्टि से युवराज को देखने लगीं परन्तु राजकुमारी ने शीघ्रतः भोजन बना शय्या बिछाने की आज्ञा दी।

भोजनोपरान्त जब युवराज शय्या पर पहुंच गया तो सेविका राजकुमारी के पास आ अति प्रशंसा कर कहने लगीं—"यदि युवराज के संग तुम्हारा विवाह हो जावे तो जैसी रति की प्रतिकृति तुम हो वैसा ही कामदेव का अवतार युवराज है वरन् सच तो यह है ऐसा वर खोजने पर भी सौभाग्य से ही मिलता—सो अनायास ही बिना बुलावे घर आ गया है।"

यद्यपि राजकुमारी सुनकर मन ही मन अति प्रसन्न हुई परन्तु प्रत्यक्ष में "क्यों व्यर्थ बकवाद करती हो चलो मुझे सोने दो।" कह कर सो रही परन्तु नींद नहीं आई।

प्रभात होने पर राजकुमारी स्नान गन्ध लेपन से निवृत्त हो शृंगार में लगी। परिचारिकाओं द्वारा शिर में मोती गूंथने कण्ठ में पन्नगव रत्न-जटित माला धारण करने पश्चात् राजकुमारी ने युव-

राज से कहला भेजा—"आज्ञा हो तो प्रणाम करने उपस्थित होऊं ?"

अनुमति पा राजकुमारी युवराज के पास पहुंची। उस समय दिन के प्रकाश में एक दूसरे को देखकर ऐसे मोहित हुए कि बड़ी देर तक कुछ सुध ही न रही। तब फीरोजशाह ने हाथ जोड़ कर कहा—"कल्याणी, मैंने अनधिकार कार्य किया है परन्तु आशा है आप क्षमा करेंगी।"

राजकुमारी ने हाथ खोलकर कहा—"हें! हें!! यह काम तो मेरा है आप हाथ जोड़कर क्यों मुझे नारकी बनाते हैं। परन्तु दूर देश ईरान से एक दिन में आप यहां पहुँचे कैसे? आशा है आप सविस्तर वर्णन कर कौतूहल दूर करेंगे।"

युवराज ने कल के घोड़े का सब वृत्तान्त कह सुनाया। कुछ सोचकर राजकुमारी ने विस्मित हो पूंछा—"अब क्या स्वदेश लौटने की वांच्छा है ?"

युवराज ने विश्वास दिलाकर कहा—"भला मैं आपके वियोग में जीवित रह सकता हूं।"

"भोजन उपस्थित है।" किसी सेविका के कहते ही राजकुमारी बड़े प्रेम से युवराज का हाथ पकड़े पाकशाला में लिवा ले गई।

भोजनोपरान्त सुन्दरी नर्तकी अपने सुमधुर गीत और नृत्य से युवराज के कर्ण कुहर में सुधा बरसाने लगी, क्योंकि वास्तव में युवराज ने ईरान में ऐसे मनोहारी दृश्य बहुत कम देखे थे। अस्तु कामशर वेधित युवराज राजकुमारी के लिए आकुल हो उठा वह बार-बार देखकर भी तृप्त न होता था।

यह दशा देख मन्मथ व्यथित राजकुमारी ने सोचा यदि युवराज पिता से भेंट करे तो वह निस्सन्देह मेरा विवाह कर देंगे। अस्तु वह कहने लगी—"यदि पिता के पास जाओगे उसकी शिष्ट नीति से आपके आनन्द को सीमा न रहेगी। उनका प्रशस्त विभव देख आप

ईरान को भूल जावेंगे।" परन्तु युवराज ने कुछ ध्यान न दिया। उसे राजकुमारी का क्षणमात्र वियोग सह्य न था।

२।४ दिन घुमाकर राजकुमारी ने अपने पिता से मिलने का बहुत आग्रह किया तो कुछ सोचकर युवराज ने कहा—"प्रेयसी ! ऐसी दशा में जाने से तुम्हारे पिता मुझे तुच्छ समझेंगे मेरी इच्छा हैं पहिले अपने पिता के पास जाऊँ और तुम्हारी असीम दया एवम् विवाह सम्बन्ध निश्चय करना वर्णन करूँ। मुझे आशा है उस समय युवराज रूप में मिलूंगा तो तुम्हारे पिता बहुत आदर सन्मान करेंगे।"

युवराज घर जाकर मुझे भूल न जावे अस्तु उसने निश्चय किया कि कुछ दिनों सहवास रहने से स्वयं इसे इतना प्रेम हो जायगा जो शीघ्र ही लौट आवेगा। निदान अपना मनोभाव वर्णन कर राजकुमारी ने कुछ दिनों के लिए युवराज को रोक लिया।

दिन में आखेट और रात्रि को नवीन कौतुक देखने में युवराज को बहुत दिन बीत गये। "पिता मेरे वियोग में मृत प्राय हो रहे होंगे।" युवराजने पुनः घर जाने की आज्ञा मांगी।

राजकुमारी ने दुःखित हो पूंछा—"प्यारे कितने दिन वियोगाग्नि में जलाओगे ? क्या…………

'यदि शीघ्र लौटने का तुम्हें विश्वास नहीं है तो मेरे सङ्ग चली चलो।" युवराज ने आग्रह पूर्वक कहकर सङ्ग चलने के लिये बाध्य कर दिया अस्तु दूसरे दिन सूर्योदय के पूर्व सबको सुप्तावस्था में छोड़ उसी कलके घोड़े पर अपने आगे राजकुमारी को बैठा युवराज ने अपने घर की ओर पयान किया।

ऐसी दशा में घर जाना उचित नहीं है अस्तु शीराज के निकट किसी ग्राम में जहां राजकीय महल बना हुआ था

राजकुमारी को छोड़ एवं महल निरीक्षक को सेवा सुश्रूषा के लिये नियुक्त कर युवराज स्वयं घर पहुंचा।

घर पहुंच कर युवराज पिता के चरणों में गिरा और अपनी समस्त कथा राजकुमारी को संग लाना और विवाह के लिये वचन बद्ध होना इत्यादि सब कह सुनाया।

राजाने प्रसन्न हो युवराज को कण्ठ से लगाया। बेचारा शिल्पकार अब तक बन्दी था उसी समय उसे मुक्तकर दिया और आज ही युवराज का विवाह होगा" ऐसी घोषणा करा स्वयं राजकुमारी को लाने की आज्ञा दी।

शिल्पकार मुक्त हो सीधा उक्त ग्राम में राजकुमारी के पास पहुंच कहने लगा—"मध्यान्ह के पूर्व ही आपके संग विवाह होगा आप अभी मेरे संग चलने को उद्यत हों घोड़ा किस प्रकार चलता है यह सब रहस्य युवराज ने मुझे बता दिया है।

अविश्वास का कोई कारण नहीं था ज्योंहों राजकुमारी घोड़े पर बैठी शिल्पकार एक क्षण में ही बहुत दूर ले गया।

राजकुमारी को लेने स्वयम् ईरान नरेश अपने कर्मचारियों सहित उक्त ग्राम की ओर चले परन्तु पिता के आने की सूचना देने युवराज अश्वारूढ़ हो शीघ्रत: वहां पहुंच गया सहसा निरीक्षक ने द्वार पर ही शिल्पकार के सङ्ग राजकुमारी का प्रस्थान करना वर्णन कर दिया।

यह सुन युवराज अचेत हो धड़ाम से धाराशायी हो गया जैसा व्याघात युवराज के हृत्पिण्ड पर पहुँचा लेखनी शक्ति से बाहर है वह सचेत हुआ तो "हा प्यारी! हा प्राणेश्वरी!! न जाने कितना कष्ट न सहन करना पड़ा होगा कहकर योगियों का वेश बना रात्रि के अन्धकार में ही जिधर मुंह उठा चल दिया।

युवराज को जाते देख अश्रु विसर्जन कर निरीक्षक ने कहा—

"प्रभो" अज्ञानतावश जैसा आपको अपार कष्ट भोगना पड़ा है आशा है आप क्षमा करेंगे परन्तु अब रात होगई है विश्राम कीजिये प्रातः ही मैं भी सेवा में चल·······।"

बीच में ही रोककर युवराज ने कहा—नहीं २ तुम्हारे चलने की कुछ आवश्यकता नहीं। या तो मैं राजकुमारी को खोज कर लाऊंगा अथवा प्राण······।"

थोड़ी देर में ही शिल्पकार राजकुमारी को लेकर काश्मीर की सीमा में पहुंच गया। गत दिवस कारागार में उसने कुछ भोजन नहीं किया था इस समय क्षुधा अति प्रबल हुई अस्तु राजकुमारी को वहीं छोड़ भोजन की चिन्ता में इधर उधर घूमने लगा।

दया कर किसी ने शिल्पकार को भोजन दे दिया अतः वह स्वयम् भोजनास्वादन के पश्चात राजकुमारी से भी आग्रह करने लगा।

'मैं कुछ न खाऊँगी बस मुझसे बोलो न।" यह कहकर राजकुमारी दुखित हो अश्रु धारा से अपना वक्ष स्थल भिगोने लगी।

शिल्पकार भोजन का ही आग्रह न करता था वरन् इस मिस से पत्नी बनाने की धमकी भी देता था।

काश्मीर नरेश मृगया से लौट रहा था सुकोमल रमणी कण्ठ के आर्तनाद को श्रवण कर वहाँ आया तो वह राजकुमारी के रूप को देख मुग्ध हो गया।

"यह मेरी पत्नी है" कहकर शिल्पकार बलात् राजकुमारी को आगे ले जाने को उद्यत हुआ परन्तु सेवक ने राजा का मनोभाव देख खंग प्रहार कर शिल्पकार का शिर चूर्ण कर दिया।

अब राजकुमारी एक दुष्ट से मुक्त हो दूसरे के अधिकार में पहुंची। दो दिन पर्यन्त तो काश्मीर नरेश ने कुछ न कहा तीसरे दिन राज नियमानुसार उसने विवाह की घोषणा कराई। अतएव सबको

पर बैठा दिया। घोड़े के चतुर्दिक ठौर ठौर अग्नि जलवा युवराज ने मन्त्रोच्चारण कर और कुछ सुगन्धित द्रव्य अग्नि में डाल परिक्रमा देना प्रारम्भ किया। तीसरी परिक्रमा के समय धुँवां तीव्र वेग से निकलने लगा था युवराज ने अवकाश पा घोड़े पर बैठ कल उमेठ दी।

कल घुमाते ही घोड़ा बहुत ऊंचा हो गया तब युवराज ने दीर्घस्वर से कहा—"राजन्, आप बड़े भ्रम में पड़ गये यह राजकुमारी युवराज फीरोजशाह की प्रेयसी है जिसे वह कौशल से अपने संग लिए जाता है। आशा है आप रालकुमारी को विस्मरण कर मेरी धृष्टता क्षमा करेंगे। यह कह कर युवराज ने अपने घर की ओर पयान किया।

सब कोई विस्मित हो देखते रह गये। उधर युवराज क्षणमात्र में ही अपने घर पहुंच गया।

सब कोई युवराज को राजकुमारी सहित देखकर अति प्रसन्न हुए वरन् आनन्द से घर घर उत्सव होने लगा।

दूसरे दिन राजकुमारी के संग समारम्भ से युवराज का विवाह हो गया, जो कोई देखता वर-वधू को अनेकश: आशिष देता था।

विवाह कार्य सुसम्पन्न होकर बंग नरेश को सब समाचार लिख कर भेजा। राजकुमारी को योग्य वर मिला है यह देख बंग नरेश अति प्रसन्न हुए पुत्री और जामाता को दायज स्वरूप बहुमूल्य उपहार भेजा।

॥ इति ॥

उपयुंक्त वक्तव्य पश्चात् शहरजाद ने राजकुमार एहमद और बानो अप्सरा की कथा कहना प्रारम्भ किया।

———

राजकुमार एहमद और
दैत्य कुमारी बानो की कथा ।

पूर्व समय में भारत सम्राट के तीन पुत्र ये अग्रज हुसेब मँझला अली और कनिष्ट राजकुमार एहमद था और रतिकी प्रतिकृति नूरुन्निहार नामक एक भतीजी थी, भाई के स्वर्ग गमन पश्चात् सम्राट ने राजकुमारों के संग ही नूरुन्निहार का लालन पालन किया था ।

वास्तव में नूरुन्निहार का जैसा नूर-रूप सौन्दर्य-असामान्य था वैसी ही वह शिक्षिता, गुणी, मर्मवेत्ता थी । युवती होत पर किसी राजकुमार के संग विवाह कर देंगे सम्राट ने निश्चय कर रखा था परन्तु तीनों राजकुमार नूर को प्राणों से अधिक प्यार कर उसके लिए लालायित हो रहे हैं वे बड़े असमञ्जस में पड़ गये । किसी एक के संग विवाहने में एक दूसरे का प्राण शत्रु बन जायगा और इनके अतिरिक्त अन्य किसीको विवाह दें तो तीनों ही क्लेशित हो न जाने कहीं को चल ही दें अस्तु सबको बुलाकर सम्राट ने कहा—"नूरन्निहार ने युवावस्था में पदार्पण किया इच्छानुसार तुम तीनों के संग उसका विवाह होना असम्भव है अतएव मैंने यह निर्धारित किया हैं कि—"तुम तीनों ही प्रत्येक दूर देश जाकर उपहार स्वरूप उत्तमोत्तम वस्तु लाओ उनमें जिसका उपहार अपूर्व होगा वह नूर के अमूल्य कर का भागी होगा ।"

किसी ने अमृतप्रकाश नहीं किया । बहुत सा धन ले व्यापारियों का वेश परिवर्तन कर चल दिये । कई दिनों तक तो साथ रहा अन्तत; जब पृथक पृथक होने का समय आया तो सब इस प्रकार वचनबद्ध हुए कि—"प्रत्येक एक वर्ष से अधिक भ्रमण न करे वरन् अभीष्ट सिद्ध होने पर पथिकालय में एक दूसरे की बाट देखे । जब तीनों एकत्रित हो जावें संग ही घर को चलें ।"

निदान दूसरे दिन तीनों ने अपना मार्ग लिया। राजकुमार हुसेन ने जो सबमें बड़ा था विष्णुगढ़ की ओर पयान किया। तीन मास पर्यन्त सामुद्रिक मार्ग से जलयान द्वारा पर्यटन करता विष्णुगढ़ पहुंच गया।

किसी पथिकालय में ठहरने पश्चात् दूसरे दिन हुसेन बाजार देखने गया। लम्बी चौड़ी सड़कें ऊंची ऊंची दुकानें दोनों ओर लगे हरित वृक्ष आकाश वितान के मध्य शोभायमान देख वह अति प्रसन्न हुआ किन्तु एक प्रकार की दुकानें क्रमशः देखकर जैसा मनोरञ्जन होता था अकथनीय है। प्रत्येक देश और विशेषकर ईरान और चीन के बने वस्त्र प्रायः ऐसे उत्तम देखने में आये जो कहीं मिलने निरन्तर असम्भव थे।

हुसेन बाजार के दूसरे मार्ग में पहुंचा तो रौप्य और स्वर्ण पात्र पन्नगवर हीरा, मुक्ता आदि रत्नों की राशियाँ देख अति विस्मित हुआ मानो वह कुबेर की नगरी है धन, जन, बल आदि किसी शक्ति की कमी न पाई। विशेषकर वहां के ब्राह्मण पुजारियों को देखकर हुसेन विस्मित रह गया वे सभी रत्न जटित वस्त्राभरण से सुसज्जित थे वरन् इनके सेवक भी हाथों में भारी भारी कड़े कण्ठ में माला इत्यादि बहुमूल्य आभूषण से अलंकृत थे।

बहुत देर तक घूमने के कारण हुसेन थक गया था वह विश्राम के लिए स्थान खोज रहा था तब किसी व्यापारी ने बड़े आदर से राजकुमार को दुकान पर बैठाया। अभी परस्पर परिचय ही हुआ था कि कोई मनुष्य चार वर्गगज का गलीचा हाथ में लिये कहता फिरता था—"आवश्यकता वश स्वामी इस गलीचे को चालीस सहस्र मुद्रा में बेचना चाहता है जो न लेगा आजन्म पछतायगा।"

अति विस्मित हो हुसेन ने विक्रेता को बुलाकर उपहास से

पूंछा—"इसमें ऐसा क्या गुण है जो इतना अधिक मूल्य मांगते हो अन्यथा एक रुपये में ऐसा गलीचा मिल जायगा।"

बिक्रेता ने हुसेन के पास बैठकर कहा—"महाशय ! इस गलीचा के ऊपर बैठकर जहां की इच्छा करो क्षणमात्र में पहुंच जाओगे।"

ऐसी प्रशंसा सुनकर हुसेन अति प्रसन्न हो कहने लगा "परीक्षा होने पर जो कुछ मांगोगे मैं दूंगा।"

"कहां जाने की इच्छा है ?" बिक्रेता ने पूंछकर गलीचा बिछा दिया। क्षणमात्र में ही हुसेन पथिकालय में आ पहुंचा।

हुसेन ने प्रसन्न होकर मन में कहा—"इससे उत्तम और क्या वस्तु होगी निस्सन्देह नूर मेरी पाणिग्रहिता बनेगी।" निदान ४० सहस्र मुद्रा देकर हुसेन ने गलीचा ले लिया।

गलीचा पाकर हुसेन शीघ्रतः घर लौटना चाहता था परन्तु वचन वद्ध होने के कारण और वहां के अलौकिक दृश्य देखने की उत्कण्ठा से थोड़े दिनों और वहीं रहना निश्चय किया।

विष्णुगढ़ नरेश प्रति सप्ताह व्योपारियों के अभियोग सुना करता था। हुसेन प्रकृत सुन्दर और अति नीतिज्ञ था। अनायास ही राजा का प्रेमपात्र बन गया। एक दिन वह राजा के संग मन्दिर देखने गया। जो १० वर्गगज क्षेत्र में बना हुआ था मध्य पार्श्व में सुविशाल मूर्ति विराजमान थी।

मूर्ति में नेत्र के स्थान पर दो बड़े २ बहुमूल्य लाल जड़े थे वरन् शिल्पकार ने ऐसी युक्ति से निर्माण की थी कि जिधर से देखो अपनी ही ओर हंसते पाओ परन्तु यह मन्दिर निकटस्थ किसी मन्दिर के अन्तर्गत थी अस्तु यह उसे भी देखने गया।

यह मन्दिर पूर्व से विलक्षण था तीन गज ऊँची प्रस्तर प्राकार वेष्टित अति रमणीक बना हुआ था वरन् ऐसी उत्तमता से पारस्परिक

पाषाण जड़े थे कि सदन पाषाणमय दृष्टि आता था। चित्रकारों ने ऐसे सुन्दर चित्र बनाये थे कि साक्षात सिंह, भालू इत्यादि हिंसक जन्तु देख भय उत्पन्न होता था। मन्दिर में पीछे की ओर श्रेणीबद्ध अनेक सजीव हाथी बांसुरी लिए खड़े थे। एक कूंजर बड़े मधुर स्वर से बांसुरी बजाता था जो कोई देखता विस्मित रह जाता।

प्रातः और सायं दोनों समय सहस्रों दर्शक दर्शन करने आया करते थे किन्तु भारत के प्रत्येक प्रान्त के मनुष्य देखने में आते थे।

इस प्रकार बहुत दिनों तक हुसेन वहां के कौतुक देखता रहा। जब ६।७ महीना बीत गये तो सेवक सहित गलीचा पर बैठ क्षणमात्र में ही उस पथिकालय में आगया जहां सबने एकत्रित होने का वचन दिया था।

दूसरा राजकुमार अली व्यापारियों के संग शीराज पहुंचा जिन व्यापारियों से मार्ग में मित्रता हो गई थी उनके पास किसी पथिकालय में ठहर गया। शीराज के बाजार की स्वच्छता सौख्यता देख अति प्रसन्न हुआ। वहां गोलाकार अष्टकोण स्तम्भ स्थित ऐसी सुरम्य दुकानें बनी हुई थीं कि घण्टों देखने पर भी तृप्ति न होती थी।

अली ने देख लिया एक मनुष्य आध गज परिधि का हाथी दांत का बना दूर दर्शक यन्त्र हाथ में लिये तीस सहस्र मुद्रा मूल्य कहता फिरता है अस्तु उसने विस्मित हो किसी व्यापारी से पूंछा—“क्योंजी तीस सहस्र मुद्रा? कहीं यह पागल तो नहीं है?” व्यापारी बोला—“अजी यह बड़ा विश्वस्त दलाल है निस्सन्देह तीस सहस्र मूल्य झूंठ नहीं है।”

अली ने दलाल बुलाकर इसका रहस्य पूंछा अस्तु दलाल ने विश्वास दिलाकर कहा—“महाशय, इस यन्त्र के दोनों सिरों पर कांच के टुकड़े किसी विज्ञान वेत्ता ने ऐसी युक्ति से लगाये हैं कि यदि आप

सहस्रों कोस दूर की कोई वस्तु देखें तो वह ऐसी निकट दृष्टि आवेगी मानों नेत्रों के सामने ही वह दृश्य हो।

प्रशंसा सुनकर यन्त्र के दोनों सिरे मिला अली ने अपने पिता को देखा जो सिंहासनासीन राज काज प्रजा की प्रार्थना सुनने में निमग्न थे अब उसने राजकुमारी नूरुन्निहार को देखा जो बड़े सुख से शयन कर रही थी।

अली अति प्रसन्न हुआ परन्तु अब दलाल ने ४० सहस्र मुद्रा में बेचना बताया अस्तु मूल्य देकर अली ने यन्त्र क्रय कर लिया ऐसा अपूर्व उपहार उपस्थित कर में निस्सन्देह नूर के संग स्वर्गीय सुख उपभोग करूंगा? यह सोचकर पारस होता हुआ अली उसी पथिकालय में आ पहुंचा जहां हुसेन पूर्व से ही आया हुआ था।

तीसरा राजकुमार एहमद समरकन्द की ओर गया। वह भी किसी पथिकालय में ठहरकर बाजार में घूमने गया सहसा एक दलाल ने कोई कृत्रिम सेव दिखाकर पहिले ३५ सहस्र और पीछे ४० सहस्र मुद्रा मूल्य बताया। एहमद ने विस्मित हो उसका रहस्य पूंछा।

दलाल ने कहा—"महाशय इस गुण गौरव सेवको सूंघने से कैसा ही कोई कठिन रोग ग्रस्त हो ऐसा स्वस्थ हो जाता है मानो उसे रोग हुआ ही नहीं यद्यपि अनेक रोगी उसे सूंघ कर स्वास्थ्य लाभ कर चुके हैं परन्तु स्वामी के परलोकगत हो जाने के कारण आवश्यकता वश उसकी विधवा वेचने पर उतारू हुई है।"

सहसा कोई मनुष्य अश्रु बहाता वैद्य लिवाने जा रहा था सेवकी प्रशंसा कर कहने लगा—"मेरा एक धनी मित्र अधिक रुग्ण है जीवनाशा नष्ट हो गई है यदि आप उसे सुंघाकर निरोग करेंगे तो वह आजन्म कृतज्ञ रहेगा।"

निदान ज्योंही रोगी ने सेव सूंघा वह अति दुर्बल होने पर

भी स्वयमेव शय्या से उठ एहमद को धन्यवाद देने लगा अस्तु ४० सहस्र मुद्रा देकर एहमद परिभ्रमण करता उसी पथिकालय में आ गया जहां हुसेन और अली पूर्व से आये हुए उसकी बाट देख रहे थे।

एहमद के आ जाने पर पारस्परिक तीनों ने अपनी अपनी कथा कहना प्रारम्भ किया सबके पूर्व हुसेन ने अपना गलीचा दिखा कर उसका रहस्य बताया।

अली ने प्रसन्न हो अपना दूरदर्शक यन्त्र दिखाया हुसेन ने दोनों सिरे मिलाकर राजकुमारी नूरुन्निहार को देखा हुसेन के हाथ से यन्त्र गिर पड़ा वह हृदय के आवेग को रोककर कम्पित स्वर से कहने लगा—"आह, जिसके कारण हमने इतना कष्ट भोगा वही राजकुमारी मृत्यु शय्या पर (दीर्घस्वास त्यागकर) अन्तिम श्वास पूर्ण कर रही है अनेक सेविका शय्या के निकट खड़ी अश्रु बहा रही हैं लो तुम भी अन्तिम दर्शन करलो यह कह कर हुसेन ने यन्त्र अली के हाथ में दे दिया।"

अली देखकर विषन्न हुआ हठात् अहमद ने आश्वासन देकर कहा—"भाई साहब जैसी आपने गलीचा की प्रशंसा की है यदि क्षण मात्र में मुझे राजकुमारी के पास पहुंचा दो तो अभी स्वस्थ करदूं (जेब से सेब निकाल कर) मैने इसे समरकन्द से ४० सहस्र मुद्रा में क्रय किया है। कोई कैसा ही कठिन रोग ग्रस्त हो सूंघते ही रोग समूल नष्ट हो जाता है।

निदान सेवकों को वहां छोड़ हुसेन के गलीचा पर तीनों बैठ क्षणमात्र में राजकुमारी के पास पहुंच गये। प्रथम तो सब कोई देख कर अति भयभीत हुए परन्तु तीनों राजकुमार हैं राजकमारी की रोग दशा वर्णन कर रुदन करने लगीं। हठात एहमद ने आगे बढकर राजकुमारी को वही सेब सुंघाया।

राजकमारी ने स्वस्थ हो उसी समय वस्त्र बदले मानो वह रुग्ण थी ही नहीं सोकर जगी है।

राजकुमारी नूरन्निहार अपने भाइयों को देखकर अति प्रसन्न हुई विशेष कर एहमद को हृदय से धन्यवाद देने वाली।

सम्राट सब घटना सुन ही चुके थे राजकुमारों को देखकर हर्षित हो कण्ठ लगा कहने लगे—"यद्यपि जिसका उपहार सर्व श्रेष्ठ होगा उसी के सङ्ग नूर का विवाह कर दिया जायगा निश्चय किया था परन्तु अब देखा तो एक दूसरे से बढ़कर तुमने उपहार उपस्थित किया है। वह माना कि लहमद का सेव सूंघ कर ही नूर ने स्वास्थ लाभ किया है। परन्तु अलीके दूर दर्शक बिना तुम्हें कुछ दिखाई ही न देता और हुसेन के गलीचा बिना यहां पहुँच नहीं सकते थे अस्तु मैंने एक उपाय सोचा है—"तुम तीनों नगर बाहर चलकर लक्ष्य बेधो अतः जिसका वाण दूर जाकर गिरेगा उसी के सङ्ग नूर का विवाह हो जायगा।

निदान दूसरे दिन सम्राट के संग तीनों राजकुमार बन में पहुंच गये और क्रम से सबने तीर छोड़ा। हुसेन के तीर से अली का दूर जा कर गिरा। एहमद के वाण का कहीं चिन्ह न मिला न जाने वह बहुत दूर जाकर गिरा अथवा प्रत्यक्ष में ही रह गया।

न्यायन: सम्राट ने नूरन्निहार के संग अली का विवाह कर दिया। परन्तु ईर्षावश हुसेन और एहमद, अली के विवाह उत्सव में सम्मिलित न हुए वरन् हुसेन ने सब कुछ परित्याग कर एकान्त वास किया। एहमद को अपने वाण न पाने का बड़ा पश्चात्ताप था अस्तु वह प्रति दिन खोजने स्वयम् जाया करता था।

एक दिन एहमद बहुत दूर निकल गया उसने ऊँचे टीले पर सुदृढ़ पाषाण को बेधे अपना तीर देखा ओह इतनी दूर आया! (शिर

हिलाकर) असम्भव, नितान्त असम्भव है।

एहमद अपना वाण लिये इधर उधर खोजने लगा नीचे उतर कर उसे लोहित द्वार मिला। भीतर अन्धकार होगा इस अभिप्राय से उसने झांका परन्तु न जाने कैसे सूर्य्यरश्मि प्रविष्ट हो अपूर्व ही प्रकाश दे रही थी वह निर्भीक भीतर चला गया।

कुछ ही आगे एहमद को विशाल महल मिला और कोई असामान्या सुन्दरी युवती वस्त्राभरण से सुसज्जित सम्राज्ञी रूप में सामने से आती दृग्गत् हुई।

एहमद चरणों मे गिरना ही चाहता था कि युवती प्रणाम कर कहने लगी—"आइये राजकुमार एहमद अपने शुभागमन से कृतार्थ कीजिये।"

अपना नाम सुन एहमद अति विस्मित हो कहने लगा—"कल्याणी। यद्यपि मैं ऐसे भीषण कानन में आकर अकुला गया था कि सहसा अपना तीर देख अति विस्मित हुआ परन्तु तुम जैसी लावण्यवती यौवनाभार से झुकी हुई कोमलांगी मुझ अभागे के नाम से परिचित हैं बड़े असमञ्जस मे डाल दिया हैं क्योंकि दुर्भाग्य से यदि आपसे कभी साक्षात भी हुआ है तो अब ऐसा विस्मरण होगया है कि बहुत सोचने पर भी कुछ ध्यान नहीं आता। आशा है आप क्षमाकर अपना परिचय देने की कृपा करेंगी।

युवती ने कटाक्ष से देखकर कहा—"प्यारे राजकुमार, यहाँ खड़े २ आपको कष्ट होता होगा कमरे में चलिये।

कमरे की सजावट देख सुन्दरी की रुचि का भली भांति परिचय मिलता था। वरन् इन्द्रोपम महल देख एहमद को विश्वास होगया कि अधिष्ठात्री कोई बड़ी राजकुमारी है। कौमार चिन्ह देख हृदय में आशा का सञ्चार भी हुआ।

सुन्दरी अपना परिचय इस प्रकार देने लगी—"मैं सुप्रसिद्ध दैत्यराज की पुत्री हूं मेरा नाम बानो.........।"

एहमद यह सुन अति विस्मित हुआ कि वह कृत्रिम सेव जिसके कारण नूरन्निहार स्वस्थ हुई बानो ने ही उसे बेचा था। एहमद का तीर सबसे आगे जाकर गिरेगा जिसके उपलक्ष में नूर के सङ्ग विवाह होकर कभी भेंट होने का अवकाश न मिलेगा क्योंकि चिरकाल से बानो एहमद के रूप सौन्दर्य पर मुग्ध थी जैसे ही एहवद ने वाण छोड़ा मन्त्रवल से वायु में ही बानो ने उसे पकड़ लिया और यहां टीले पर लाकर पाषाण में बेध दिया। जिसमें किसी समय तीर खोजते हुए वहां आने पर एहमद से साक्षात् हो जावे।

एहमद उपरोक्त घटना श्रवण कर आश्चर्यित हो बार २ सुन्दरी की मुखच्छवि देख तृप्त न होता था वास्तव में बानो अति रूपवती थी। जो लोग सौन्दर्य के उपासक हैं वह उनकी आराध्य देवी थी, वरन् नूरन्निहार से तो अत्यन्त सुन्दरी थी। एहमद विमोहित हो कहने लगा—"यदि आप की दया हो तो मैं क्रीतदास बना आजन्म श्री सेवा में रहकर स्वर्गीय सुख उपभोग करूं परन्तु मैं तुच्छ मनुष्य और तुम ठहरीं दैत्यसंतान, कदाचित आपके माता पिता...अस्वीकार करें।

"नहीं २ मैं विवाह करने में स्वतन्त्र हूं हमारी जाति में माता पिता वर नहीं खोजते सम्भव है वे अपने सुभीते से जिसको पुत्री दें अयोग्य हो ऐसी दशा में दम्पति को आजन्म सुख का आभास न मिलेगा। किम्बहुना आज से आप हमारे स्वामी—पति देव हैं इन्द्रोपम महल दास दासी इत्यादि समस्त बसुधा पर आपका स्वत्व है जो इच्छा हो आज्ञा दीजिये तुरन्त प्रयोग में आवेगा।"

एहमद ने यह सुन भावित रूप देख अति प्रसन्न हो धन्यवाद में सुन्दरी बानो का वस्त्र शिर से लगाना चाहा परन्तु सुन्दरी ने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।'

बड़े प्रेम से एहमद ने सुन्दरी का कर चुम्बन कर हृदय से लगा लिया।

सुन्दरी ने अहमद का हाथ दबाकर लजाते हुये कहा—"जैसे आपने प्रेम पूर्वक कर गहा है निर्वाह करना!"

अहमद ने पुनः कर चुम्बन कर कहा—"प्राणेश्वरी! मैं आपको कहां तक धन्यवाद दूं। दृष्टि मिलते ही हृदय पर तो आपका अधिकार हो ही गया था शरीर यह अर्पित है जिस प्रकार चाहो मुझे सेवा में अपनाये रहो।"

"प्यारे मुझे कुछ अविश्वास नहीं है। आप हमारे स्वामी हैं मुझे अपनी तुच्छ सेविका जान दया करते रहिये। रहा विवाह संस्कार—वह मेरी सम्मति से व्यर्थ थोथा धन्धा है कुछ आध्यात्मिक संस्कार थोड़ा ही है दम्पति हृदय में प्रेम चाहिये अन्यथा इससे अधिक और वे किस सूत्र में ग्रथित हो सकते हैं।" यह कह कर बानो एहमद का हाथ पकड़े पाकागार में लिवा ले गई।

भोजनास्वादन पश्चात दोनों प्रेमी बड़ी देर तक सुगन्धित मदिरा पान करते रहे। कामातुरा सुन्दरी बानो मदिरा के आवेग से उन्मत्त एहमद का हाथ पकड़े दूसरे कमरे में लिवा ले गई जहां नर्तकी अपने नृत्य से और अप्सरागण कोमल कण्ठ स्वर से एहमद को उल्लसित करने लगीं सहसा अनेक युवतियां दैत्यों के संग उपस्थित हो प्रणाम कर अपने अपने कौतुक दिखाने लगीं इस प्रकार बड़ी देर तक उत्सव मनाया गया दैत्य वर पक्ष और युवतियां वधू पक्ष बन कर कामोद्दीपक लीला करती रहीं अन्ततः जब सब प्रणाम कर चले गये तो कामपिपासा कुलित दम्पति शयनागार में पहुँच परस्पर प्रगाढ़ालिंगन और असंख्य चुम्बन इत्यादि रति क्रीड़ा में निमग्न हो स्वर्गीय सुख उपभोग करने लगे।

अहमद ने शयनागार की अति प्रशंसा की तो सुन्दरी बानो ने अट्टहास कर कहा—“अरे, इतना विस्मय यदि कभी दैत्य सम्राट के महल देखोगे तो न जाने क्या दशा होगी।”

निदान इस प्रकार अहमद को ३ मास बीत गये। उसे बानो का क्षण मात्र वियोग भी सह्य न था और यही दशा सुन्दरी की थी।

एहमद सबको भूल गया था यदा कदा अपने पिता को स्मरण कर कुछ आकुलता हो जाती थी अस्तु सुअवसर देख उसने पिता के दर्शनों की इच्छा प्रकट की।

कदाचित् इस मिस से अहमद यहां से जाना चाहता हो बानो को चिन्ता होने लगी उसने कातर भाव से कहा—“क्या अब तुम्हें प्रेम नहीं रहा अपना बचन भूल गए।”

एहमद ने दीर्घविश्वास त्याग कर कहा—“प्राणेश्वरी क्या तुम्हारे वियोग में मैं जीवित रह सकता हूं यदि तुम सहर्ष आज्ञा दो तो मैं बृद्ध पिता को देख आऊं मैंने आपको अप्रसन्न करने को नहीं कहा यदि आपका अमत है तो मैं कभी ऐसी प्रार्थना ही न करूंगा।

ऐसा अधिक प्रेम देख बानो ने पिता को देख आने की सम्मति दे दी।

अली नूरुन्निहार को पाकर बड़े सुखसे रहने लगा परन्तु हुसेन और एहमद को न देख भारत सम्राट अति विषन्न रहते थे हुसेन ने दुखित हो एकान्त वास किया है यह सुन कर केवल एहमद की चिन्ता अवशिष्ट रही।

सम्राट ने एहमद की बहुत खोज कराई ग्राम ग्राम घोषणा करादी परन्तु अहमद न मिला। स्वयम् मन्त्री ने बहुत खोज की परन्तु मनोरथ सफल न हुआ।

नगर में कोई मायाविनी रहती थी मन्त्री के कहने से सम्राट ने उसे बुलाकर पूछा—"क्या तुम माया बल से एहमद का कुछ पता बता सकती हो-वह कहाँ और किस दशा में है । क्या मैं उसे देख सकूंगा ।

जितना शीघ्र उत्तर दोगी उतना ही अधिक पारितोषिक लाभ कर सकोगी । यह सुन मायाविनी ने कहा—"राजकुमार अहमद जीवित है वह किस दशा में कहां है यह मैं इस समय बताने में विवश हूं । निदान इस प्रकार आश्वासन दे मायाविनी चली गई ।

एक दिन अहमद ने पिता को देखने की बहुत उत्कण्ठा दिखाई अस्तु सहर्श आज्ञा दे बानो ने समझाया—"घर जाकर किसी से अपने आवासस्थान और मेरे सम्बन्ध में कुछ न कहना यदि तुम्हारे पिता बहुत आग्रह करें तो कह देना मैं बहुत सुखी हूं । केवल आपके दर्शनों को आया हूं जो शीघ्र ही लौट जाऊंगा ।

निदान सुन्दरी बानो ने अहमद के लिये अति चपल अश्व और बीस सहस्त्र अश्वारोही सैनिक उपस्थित कर विदा कर दिया ।

थोड़ी देर में ही अहमद घर पहुंच गया जो कोई देखता स्वागत में करतल ध्वनि कर संग हो लेता । अस्तु बड़े समारम्भ से अहमद राजसभा में पहुंच पिता के चरणों में गिरा । सम्राट अहमद को कण्ठ से लगा कहने लगे—"पुत्र, तुम नूरन्निहार से निराश हो अनायास ऐसे लोप हुये कि बहुत कुछ अनुसन्धान करने पर भी कहीं तुम्हारा चिन्ह न मिला, तुम्हारे वियोग में जैसी मेरी बुरी दशा हुई है मेरी मलीनाकृति देख तुम्हें अनुमान होगया होगा । प्रिय सत्य कहना तुम इतने दिनों रहे कहां ।"

अहमद ने अति विनीत प्रार्थना की—"पिताजी, वास्तव में नूरन्निहार को न पाने से जैसा मेरे हृदय को व्याघात पहुंचा अकथनीय

है परन्तु इससे भी अधिक दुःख मुझे अपने तीर के न मिलने का था अस्तु मैं अपना तीर खोजता हुआ अमुक टीले पर जो वहां से चार कोस दूर है पहुंचा और बड़े विस्मय से कहना पड़ता है कि वहां सुदृढ़ पाषाण को वेधेवाण दृग्गत हुआ उस दिन से निरन्तर मैं बड़े सुख से रहता हूँ। इससे व्यतिरिक्त मैं कुछ नहीं बता सकता हाँ यदाकदा आपको प्रणाम करने अवश्य आया करूंगा। आशा है आप मुझे वचनबद्ध होने के कारण शीघ्र ही लौट जाने की आज्ञा प्रदान करेंगे ?'

सम्राट ने और अधिक वृत्तान्त सुनने के लिए एहमद को बाध्य न किया हर्ष से उसे लौट जाने की आज्ञा देदी निदान तीसरे दिन एहमद बानों के पास पहुंच गया।

एहमद को पाकर बानो अति प्रसन्न हुई। दोनों बड़े सुख से रहने लगे जब एक मास बीत गया एहमद ने घर जाने की इच्छा प्रकट न की तो बानो ने कहा—"तुम तो प्रत्येक मासारम्भ में पिता को देखने का वचन दे आये हो अब क्यों नहीं जाते ? क्या वह राह न देखते होंगे एहमद ने कहा—"आपकी आज्ञा बिना कैसे जाऊं।"

नहीं नहीं मेरी आज्ञा की प्रतीक्षा न किया करो सदैव अपने पिता को देखकर चौथे दिन लौट आया करो निदान बानो की अनुमति से एहमद प्रति मास अपने घर जाता और चौथे दिन लौट आया करता था।

एक दिन कोई मन्त्रीं एहमद की प्रभुता देख सम्राट को बहका कर कहने लगा—"प्रभो कभी आपने एहमद के अभ्युदय का भी विचार किया है ? नहीं देखते वह किस युक्ति से सेना की वृद्धि कर रहा है यदि आपने ध्यान न दिया तो कहीं वह आपको बन्दी कर स्वयं सम्राट न बन जावे महा मन्त्री इत्यादि पर उसका प्रभुत्व है ही

आपने नूरन्निहार का विवाह अली के संग करके एहमद और हुसेन को अपना प्राण शत्रु बना लिया है हुसेन ने जो एकान्त वास किया है इस जटिल रहस्य को आपने नहीं समझा ये दोनों अवकाश पा ऐसी विद्रोहानल प्रज्वलित करेंगे कि आपको राज छोड़ने के अतिरिक्त कुछ न बन आवेगा।"

सम्राट बड़े भ्रम में पड़ गया वह अदूरदर्शी था महा मन्त्री जो एहमद का शुभचिंतक था उससे गुप्त रख उक्त मायाविनी को बुलाकर कहा—"जिस प्रकार पूर्व में तुमने एहमद को जीवित बता आभारी किया उसी प्रकार उसके आवास स्थानादि की सूचना देकर पारतोषिक लाभ करो।"

मायाविनी सम्राट से विदा हो उसी टीले पर किसी कन्दरा में गोप्य बैठी एहमद की प्रतीक्षा करने लगी थोड़ी देर में ही एहमद वहां होकर निकला। मायाविनी ने चतुर्दिक् देखा परन्तु कही कुछ चिह्न न मिला क्योंकि बानो जिसे चाहती वही उस माया द्वार को देख सकता था अस्तु मायाविनी निराश अपने घर लौट गई।

एक मास बीतने पर मायाविनी पुनः प्रत्यक्ष रूप में उसी टीले पर जा पड़ी सहसा एहमद ने निकल कर देखा कोई पाषाणवत् पड़ा दोनों हाथों से साहाय्य माँग रहा है।

एहमद ने पास जाकर पूंछा—"तुम कौन हो यहां कहां से आई हो?"

मायाविनी जो अति धूर्ता थी क्रन्दनकर कहने लगी—"राजकुमार, मैं अपने घर से कार्य्यवश अमुक ग्राम की ओर जा रही थी किन्तु सहसा ऐसे वेग से ज्वर चढा जो विवश हो पिपासा कुलित यहा पड़ रही हूं।"

दयाकर एहमद ने कहा—"यहां कोई रक्षित स्थान नहीं है

यदि थोड़ी दूर चल सको तो तुम्हें अपने आवास स्थान पर पहुंचा दूं जहां तुम्हें अधिक सुख मिलने की सम्भावना है।"

मायाविनी ने दीर्घ निश्वास त्यागकर कहा—"मैं ऐसी अशक्त हूं कि एक पग चलना कठिन है।"

एहमद ने किसी सैनिक के घोड़े पर मायाविनी को बैठा बानो के पास ले जाकर कहा—"कल से बेचारी ज्वर से ऐसी उत्पीड़ित है कि अपना परिचय देने में भी असमर्थ है यदि दयाकर तुम औषधि दे दोगी तो स्वस्थ हो तुम्हें अनेक आशीष देगी।"

बानो ने नाड़ी देखकर कहा—"प्यारे राजकुमार ज्वर तो दीखता नहीं है मुझे भय है यह दुष्टा कुछ कष्ट न दे निस्सन्देह तुम्हारे किसी शत्रु का षडयन्त्र रचा हुआ है परन्तु आप कुछ चिंता न करें ईश्वर तुम्हें दीर्घायु करे आप निस्संकोच अपने पिता के पास चले जावें। लौटने पर आप इसे सुखी देखेंगे।"

एहमद विदा हो अपने पिता के पास आया बानो ने मायाविनी को नर्म शय्या पर शयन करा सेवा सुश्रुषा के लिए दो सेविका नियुक्त करदीं। एक सेविका ने पात्र देकर कहा—"लो यह क्षीरकुण्ड का जल है इससे रोग समूल नष्ट होकर शरीर चैतन्य हो जाता है।"

मायाविनी औषधि पीकर सो गई। थोड़ी देर पीछे जागृत हो सेविका से कहने लगी—"तुम्हारी दयार्द्र स्वामिनी ने ऐसी अच्छी औषधि दी जिसे पीते ही निद्रा आ गई पसेव निकालकर शरीर चैतन्य हो गया। कृपाकर मुझे उनके पास ले चलो धन्यवाद देकर अपने घर चली जाऊंगी।"

सेविका मायाविनी बानो के पास ले गई जो बहुमूल्य वस्त्राभरण से सुसज्जित रत्न जटित सिंहासन पर विराज रही थी दोनों ओर अनेक सेविका परिचारिका हाथ जोड़े खड़ी थीं। मायाविनी देख

कर स्तम्भित रह गई राज प्रसाद में भी उसने ऐसी गौरवान्वित सुन्दरी राजमहिषी कोई न देखी थी। बानो को आशिष देकर घर जाने की आज्ञा मांगी।

मुस्कराकर बानो ने कहा—"अभी तुम्हारा ज्वर उतरा है ठहरो राजकुमार को आ जाने दो।"

निदान थोड़ी देर महल निरीक्षण पश्चात् क्षमा प्रार्थना कर मायाविनी अपने घर चली गई। उसने महल के द्वार पहिचान रखने की बहुत चेष्टा की परन्तु सफलता न हुई विवश भारत सम्राट के पास पहुंच उसने समस्त घटना आद्योपान्त कह सुनाई उसने विश्वास दिलाया कि एहमद बड़ा सभ्य आज्ञाकारी पुत्र है वह कभी आपसे द्रोह न करेगा वह सुन्दरी बानो पर मोहित है उसकी प्रेरणा से आपके विरुद्ध खड्ग गहे इसके लिए आप सावधान रहें अन्यथा एहमद तो बड़ा सुशील है।

शोच निमग्न सम्राट ने एहमद के विरुद्ध मन्त्री को बुलाकर पूंछा—"किस उपाय से एहमद से रक्षा हो सकती है?"

मन्त्री ने कहा—"इसका उपाय सहज है एहमद यहां ठहरा हुआ ही है आप सुगमता से उसे बन्दी करा लीजे।"

"मौनंसम्मतिलक्षणम्" के आधार किसीने समर्थन नहीं किया परन्तु सम्राट किंकर्त्तव्यविमूढ बन गये उक्त मायाविनी को बुला परामर्श करने लगे।

कुछ सोचकर मायाविनी ने कहा—"एहमद को बन्दी करने की किसकी सामर्थ्य है क्योंकि उसके साथी सैनिक माया बल से कठिन बन्धन से मुक्त हो अपनी स्वामिनी बानो से सब वृत्तान्त जा कहेंगे उस समय वह क्रुद्ध हो न जाने आपके प्रति कैसा कठोर बर्त्ताव न करे अतएव आप एहमद से ऐसी वस्तु मांगें जिन्हें वह उपस्थित न कर सके। इसके पूर्व आप एक बड़ा सा डेरा मँगवावें। शनैः शनैः

आपके अधिकार में ऐसी वस्तु आ जावेगी तब आप बन्दी करेंगे तो मुक्त न हो सकेगा अथवा आपकी इच्छित वस्तु न पाने के कारण यहां न आवेगा।

दूसरे दिन सम्राट ने एहमद से कहा—"यद्यपि तुमने अपना कुछ परिचय नहीं दिया तथापि बानो अप्सरा तुम्हारी पाणिग्रहीता है यह सुनकर मुझे हर्ष हुआ है। इसके व्यतिरिक्त और मैं कुछ नहीं जान सका और न जानने की उत्कण्ठा है परन्त एक ऐसे डेरे की आवश्यकता है जिसमें मृगया एवम् संग्राम के समय सेना सहित रह सकूं और अकेले तुम उसे उठा सको। आशा है तम अपनी प्रेयसी से मांगोगे तो वह सहर्ष दे देगी।"

एहमद ने कुछ सोचकर कहा—"यद्यपि जो कुछ मैं मांगूगा बानो को देने में कुछ संकोच न होगा परन्तु सम्भव है ऐसा डेरा उसके अधिकार में न हो अथवा किसी कारण से देना ही उचित न समझे ऐसी दशा में कैसे आपको वचन दे सकता हूँ।"

सम्राट ने कहा—"यदि तुम डेरा न लाओगे तो मैं तुम्हारा मुख न देखूंगा। जब बानो तुम्हारी पत्नी है तब कैसे सम्भव है कि तुम जो वस्तु मांगोगे वह न देगी। जब एक छोटी सी वस्तु भी अपने पिता को न दे सकोगे तो समझलो उसका प्रेम मौखिक है।"

निदान दूसरे दिन ही एहमद लौट गया बानो ने कारण पूंछा तो एहमद ने कहा—"हृदयानन्दवर्धिनी, यद्यपि मैंने पिता से यहां का कुछ समाचार वर्णन नहीं किया परन्तु न जाने वह तुम्हारे नाम से कैसे परिचय हो गये हैं।" यह कह कर एहमद ने डेरा मांगने इत्यादि का समस्त वृत्तान्त कह सुनाया।

"जीवतेश्वर! तुम्हें ध्यान नहीं रहा वह वृद्धा जिसे तुमने ज्वर पीड़ित जान यहां रखा था वह तुम्हारे पिता की भेजी माया-

विनी दूती थी, यहां का रहस्य जानने को ही वह रुग्ण बनी थी वरन् उसी की प्रेरणा से तुम्हारे पिता ने डेरा मंगया है। परन्तु कुछ चिन्ता नहीं।" यह कह कर बानो ने अपनी नूरजहां कोषाध्यक्षिका को ऐसा डेरा लाने की आज्ञा दी।

न जाने क्या नूरजहां अहमद के हाथ पर रख गई। उसने समझा बानो ने उपहास किया है परन्तु जब उसे तान कर देखा तो ऐसा विशाल डेरा था कि भारत सम्राट सेना सहित उसमें प्रवेश करें तो अधोभाग ही घिर सके।

एहमद उसी समय पिता के पास पहुंचा वह भी डेरा देख कर विस्मित हुये। रात्रि को उसी मायविनी से डेरा का वृत्तान्त कहा।

सम्राट को संदेह प्रद व्यङ्ग वचन कहते देख मायाविनी ने आश्वासन देकर कहा—"प्रभो, कुछ चिन्ता नहीं अब आप एहमद से थोड़ा सा क्षीर कुण्ड का जल मंगाइये।"

निदान प्रभात होने पर सम्राट ने एहमद से क्षीर कुण्ड का थोड़ा जल मंगवाया।

अहमद ने बानो के पास पहुंच डेरा के लिए पिता का धन्यवाद और क्षीर कुण्ड के जल मंगवाने का वृत्तान्त कहा।

बानो ने कहा—"तुम्हारे पिता कुछ अग्रशोची नहीं हैं, मायाविनी के कहने में आ जाते हैं। क्षीर कुण्ड एक सुदृढ़ दुर्ग के अन्तर्गत है जिसका मार्ग अति कठिन है चार दीर्घाकार सिह उक्त कुण्ड के पहरे पर नियुक्त हैं दो सोते दो अवश्य जागते रहते हैं अस्तु तुम कल प्रातः ही दो घोड़े लेना एक पर स्वयम् आरूढ़ हो दूसरे पर चार भेड़ों का मांस लाद ले जाना। जब तुम्हें अमुक दिशा में कोई लोहित द्वार मिले मैं तुम्हें गेंद बना दूंगी घोड़े के सन्मुख फेंक देना। वह स्वयमेव लुढ़कती जावेगी तुम उसके पीछे पीछे चले जाना जहाँ

गेंद ठहरे तुम सिंहों के आगे क्रमश: मांस फेंक देना और घोड़ा दौड़ाकर सामने ही कुण्ड है पात्र में जल भर लाना लौटने में सिंह बाधा न देंगे वह मांस खाने में लगे रहेंगे। परन्तु सिंह आक्रमण करें तो घोड़े से न उतरना भगा ले जाना।"

बानो के कथनानुसार अहमद जल भर लाया परन्तु चारों सिंहों ने आक्रमण किया। हटात् एहमद ने खडग निकाल लिया सहसा एक सिंह तो वहीं रह गया शेष तीन पीछा किये चले गये।

अहमद दौड़ कर अपने पिता के महल में चला गगा अस्तु सिंह भी निराश होकर लौट गये।

सिंह देख कर नागरिक अति भयभीत हुये परन्तु किसी को कुछ आघात नहीं पहुंचाया।

सम्राट जल पाकर अति विषन्न हुआ इतनी कठिनाई सहन कर अहमद जल ले आया है तो इसे मेरा बन्दी कर लेना अति सुगम है अतएव उसके हृदय में शत्रु भाव दश गुणित अधिक प्रवल होगया तब मायाविनी ने तीसरी वस्तु लाने का अनुमोदन किया। अस्तु सम्राट ने अहमद से कहा—"पुत्र, तुम्हारा अथक श्रम देख प्रशंसा नहीं हो सकती परन्तु मुझे एक ऐसे मनुष्य की आवश्यकता है जो केवल एक गज प्रमाण ऊंचा हो और उसके डाढ़ी बीस गज लम्बी हो साढ़े छः मन की भारी सांकर दन्ड की नांई घुमाता हो।"

निदान अहमद ने बानो के पास आ समस्त बृत्तांत कह सुनाया।

"कुछ चिन्ता नहीं है जब तुम जल ही सकुशल ले गये हो तो यह क्या बड़ी बात है मेरे सहोदर भ्राता शब्बर में यह गुण परिपूर्ण हैं मैं अभी उसे बुलाये देती हूं तुम देख कर भय न करना यद्यपि

तुम्हारे पिता ने तुम्हें मारने का षडयन्त्र रचा है परन्तु मुझे वही मरण समीप दीखते हैं । यह कह कर बानो ने स्वर्ण अँगीठी मंगा बक्स में से कोई सुगन्धित द्रव्य निकाल जलाई क्षणमात्र में ही शब्बर विद्यमान् हो गया ।

शब्बर को देखकर एहमद अति प्रसन्न हुआ, शब्बर राजा था । शिर पर मुकुट विराज रहा था दाढ़ी बहुत लम्बी थी, जिसे वह सावधानी से लपेटे रहता था मूछें कानों तक चढ़ी रहती थीं । कन्धे की सांकर सँभालकर पूछा—"बहिन यह कौन है जो अंक से लगा बैठा है ।"

बानो ने कहा—"यह तुम्हारे बहनोई हैं । भारत सम्राट के पुत्र राजकुमार एहमद इनका शुभ नाम है । मेरे विवाह के समय तुम रणक्षेत्र में थे अब तुमने विजय श्री लाभ की अस्तु दर्शनों की लालसा से ही तुम्हें कष्ट दिया है ।"

शब्बर ने पूछा—"क्या में राजकुमार की कुछ सेवा कर सकता हूं ?"

बानो ने एहमद की ओर संकेत कर कहा—"इनके पिता को तुम्हारे देखने की बड़ी उत्कण्ठा है ।"

शब्बर उसी समय चलने को उद्यत हुआ परन्तु बानो ने बाधा देकर कहा—"भाई, थक गये होगे कल चले जाना ।"

निदान बानो ने सम्राट की शत्रुता मायाविनी का षडयन्त्र इत्यादि सब घटना कह सुनाई ।

दूसरे दिन एहमद के संग शब्बर राजसभा में पहुंचा जो कोई देखता भय से प्रकम्पित हो एक ओर हो जाता । सम्राट देखकर अति भयभीत हुआ उसने दोनों हाथ नेत्रों पर रख लिये और भागने की

चेष्टा करने लगा सहसा शब्बर ने सांकर घुमाकर भयातुर सम्राट के सिर में मार दी।

सम्राट का शिर विदीर्ण होकर सदैव को शान्त हो गया। शब्बर महामन्त्री को भी मारने को उद्यत हुआ परन्तु एहमद ने आगे बढ़कर रक्षा करदी। जो आगे आया शब्बर ने यमपुर पहुंचा दिया राजसभा किरातपुरी सी दीखने लगी।

मन्त्री मायाविनी इत्यादि जो एहमद से विरोध रखते थे सबको ही शब्बर ने प्राणदंड दिया। वह नगर वासियों को भी मारता था परन्तु एहमद ने बर्ज दिया।

निश्चिन्त हो शब्बर ने एहमद के शिर पर ताज मुकुट रख सिंहासनासीन किया।

बड़े समारम्भ से एहमद का राज्यारोहणोत्सव मनाया गया नागरिक आनन्द मग्न हो भेंट देकर एहमद के सम्राट पद पर विभूषित होने से अति सुखी हुये।

बानो के सम्राज्ञी होने की नगर में घोषणा करादी गई अतः सम्राट एहमद और सम्राज्ञी बानो बड़े सुख से रहने लगे।

एहमद ने अली को नूरुनिहार सहित राज्य देकर बड़े सुख से अन्यत्र किसी नगर में भेज दिया। वह हुसेन को भी राज्य देने को उद्यत हुआ परन्तु उसने अस्वीकार कर साधु वेश में ही रहना सुखकर समझा।

॥ इति ॥

उपर्युक्त कथा सुनाकर सम्राज्ञी शरहजाद ने दो बहिनों की शत्रुता वर्णन करना प्रारम्भ करदी।

———

दो बहिनों के आन्तरिक द्वेष की कथा

प्राचीन काल में पारस नेश का युवराज खुशरोशाह नामक बहुधा रात्रि को वेश बदलकर सेवक सङ्ग ले नगर में घूमा करता था। जब पिता ने संसार यात्रा की तो युवराज सिहासनारूढ हो अपने को खुशरोशाह नाम से पाश्वं सम्राट प्रसिद्ध किया।

एक दिन सम्राट किसी गली में घूम रहा था कि कुछ स्त्रियों का अस्फुट शब्द कर्णगत हुआ। द्वार के छिद्रों में से शाह ने देखा तीन बहिनें परस्पर कुछ परामर्श कर रही हैं।

बड़ी बहिन ने कहा—'यदि शाह के रसोइया के संग मेरा विवाह हो जावे तो इच्छानुसार रोटी खाने को मिले।"

मँझली ने कहा—"यदि मेरा विवाह शाह के प्रधान पाक निरीक्षक के संग हो जावे तो अनेक सुस्वादु पाक आस्वादन कर तुम दोनों को ईर्षाग्नि में जलाया करूं।"

छोटी बहिन ने कहा—"मेरे विचार ऐसे क्षुद्र नहीं हैं मनमोदक ही बनावे तो चुराकर क्यों खाय। मेरी आकांक्षा है, रानी बनूं और शीघ्र ही एक अति सुन्दर पुत्र रत्न प्रसव करूं, जिसके एक ओर के केश स्वर्णमय और दूसरी ओर रौप्य सदृश्य हों, जब वह रुदन करे अश्रु मोती बन कर झड़ें और हंसने के समय रक्त ओष्ठ पुष्प ज्ञात हों।"

शाह तीनों बहिनों की वक्तृता और विशेषकर छोटी बहिन की उच्चाकांक्षा देख अति विस्मित हुआ। उसने उसी समय संगी मन्त्री को आज्ञा दी—"कल प्रातःकाल ही तीनों बहिनों को राजसभा में उपस्थित कर देना।"

निदान दूसरे दिन प्रातः ही तीनों बहिनों के उपस्थित होने पर सम्राट ने पूछा—"गत राति तुम क्या परामर्श कर रही थीं?"

बड़ी देर होने पर भी किसी ने कुछ उत्तर न दिया । सम्राट छोटी बहिन का रूप सौन्दर्य देखकर मुग्ध हो गया था बड़े समारम्भ से अपने संग विवाह कर सम्राज्ञी बनाया और बड़ी का रसोइया के संग तथा मँझली का प्रधान पाक कर्त्ता के संग विवाह कर दिया । यद्यपि इच्छानुसार पति पाकर सब प्रसन्न होतीं परन्तु छोटी बहिन को सम्राज्ञी देख उलटा द्वेष करने लगीं ।

एक दिन दोनों बहिनें संग ही स्नान करने गईं तब बड़ी ने मँझली से कहा—“क्या छोटी बहिन ऐसी सुन्दर है जो सम्राज्ञी हो वास्तव में यह सम्राट की निरन्तर मूर्खता है ।”

मँझली ने दीर्घविश्वास त्यागकर कहा—“यथार्थ में सम्राट ने बड़ी भूल की है देखो ना, छोटी तो कैसी कुरूपा बानरी सदृश्य है, यदि कहीं तुम्हें देखे तो मोहित हो जावे । अतएव बहिन कोई ऐसा उपाय सोचो जिसमें उसे सहज ही पराभव कर सम्राट का चित्त फेरने में कृतकार्य हो सको तब मैं तुम अनायास ही सम्राज्ञी बन जावेंगी । अजी सम्राज्ञी न सही हम तीनों रहेंगी तो एक सी दशा में, बस मनोकामना सफल हो गई ।”

परन्तु अनेक चेष्टा करने पर भी वह दोनो बहिनें सफलीभूत न हुईं । थोड़े दिनों में ही सम्राज्ञी ने गर्भ धारण किया सम्राट ने आनन्दमय मग्न हो समस्त राज्य में उत्सव मनाये जाने की घोषणा करदी ।

यह सुअवसर देख द्वेषी बहिनों ने सम्राज्ञी के पास रहने का बहुत आग्रह किया । अस्तु हर्ष प्रकाश कर सम्राज्ञी ने कहा—“तुम्हारा प्रति समय यहाँ रहना मेरे लिए निस्सन्देह सुखकर होगा तुम अपने अपने पति से आज्ञा लेलो । मेरी अनुमति पा सम्राट तो सहर्ष आज्ञा दे देंगे ।”

आज्ञानुसार दोनों बहिनें समाज्ञी के पास रहने लगीं। थोड़े दिनों पश्चात् जब प्रसब का समय आया तो असह्य वेदना से सम्राज्ञी ज्ञानाहत हो अचेत होगई। अबकाश पा दोनों बहिनों ने कोई कुत्ते का मृत पिल्ला सूतिकागार में डाल नवजात राजकुमार को कम्बल में लपेट और छोटे से टोकरा में रख नदी में बहा दिया।

यह सुन सम्राट अति विषन्न हो सम्राज्ञी का बध कराने पर उद्यत हुआ परन्तु मन्त्री ने आश्वासन देकर समझाया "बहुधा स्त्रियां प्रकृति विरुद्ध सन्तानोत्पत्ति कर बड़े असमञ्जस में डाल दिया करती हैं, परन्तु इसमें उनका दोष क्या? आशा है आप सम्राज्ञी को क्षमा करेंगे।"

नदी में डाला हुआ टोकरा बहता हुआ सम्राट के पुष्पोद्यान के निकट पहुंचा सहसा उद्यान निरीक्षक ने कौतूहल वश किसी माली द्वारा टोकरा निकलवा खोलकर देखा कम्बल में लिपटा नवजात शि र है। वह विस्मित हो अपने घर ले गया, और प्रसन्न हो गृहिणी नों कहने लगा—"हम अपुत्र थे दयाकर ईश्वर ने हमें पुत्र दिया है। किसी धात्री को बुला बहुत सावधानता से पालन पोषण कराना।"

गृहिणी पुत्र समान लालन पालन करने लगी। निरीक्षक की समझा नवजात अन्तः पुर की ओर से आया है परन्तु किसका है इस मुझे क्या प्रयोजन! उसने किसी पर यह रहस्य न प्रकट किया।

दूसरी वर्ष जब सम्राज्ञी ने पुनः गर्भ धारण किया तो पूर्व की नांई दोनों बहिनों ने मिलकर नवजात को टोकरे में रख दिया और सम्राज्ञी ने बिलाव प्रसव किया है ऐसा प्रसिद्ध किया।

निरीक्षक ने इसे भी अपनी पत्नी को देकर कहा—"ये ईश्वरदत्त दोनों पुत्र सहोदर भाई हैं बड़ी सावधानता से पालन पोषण करना।"

सम्राट क्रुद्ध हो सम्राज्ञी का वध करने को उद्यत हुआ परन्तु मन्त्री ने क्षमा प्रार्थना कर सम्राज्ञी की रक्षा करली।

तीसरी बार सम्राज्ञी ने पुत्री प्रसव की परन्तु दुष्टा बहिनों ने इसे भी नदी में बहा दिया और प्रसूती गृह में छछूंदर डालदी। सौभाग्यवश पुत्री भी उसी निरीक्षक के घर पहुंच गई दो पुत्र और एक पुत्री पा जैसा दम्पति को सुख पहुंचा अकथनीय है। परन्तु सम्राट अति क्रुद्ध हुए अस्तु क्षमा प्रार्थना कर मन्त्री ने कहा—"स्त्री का वध न्याय विरुद्ध हैं रानी को तो यही दण्ड पर्याप्त है कि आप कुछ सम्बन्ध न रखें।"

शाह ने थोड़ी देर सोचकर कहा—"अच्छा तुम्हारे कहने से मैं उसका वध नहीं करता परन्तु अमुक मसजिद के निकट छोटा कारागार बनवा उसमें बन्दी करने की आज्ञा देता हूं जो नवाज पढ़ने वहां जावे वह पहले सम्राज्ञी के मुख पर थूक दे और यदि कोई आज्ञा उल्लंघन करे तो उसे भी वही दण्ड दिया जावे।"

सोच शीघ्र ही कारागार बनकर सम्राज्ञी उसमें वन्दी करदी गई, शाहाज्ञा से जो कोई वहां जाता निर्दोश साम्राज्ञी की कथा सुनकर अश्रु बहाये बिना न रहता वरन् आराधना पश्चात् सब कोई रानी के लिए प्रार्थना किया करते।

दोनों पुत्र और पुत्री को निरीक्षक बड़े प्रेम से रखता था उसने बड़े का नाम बहमन, छोटे का नाम परवेज और रति की प्रतिकृति पुत्री का नाम परीजाद रक्खा।

तीनों की बुद्धि अति विलक्षण थी अस्तु निरीक्षक ने सुविख्यात अध्यापकों के निरीक्षणत्व में विद्यारम्भ कराया।

अल्प समय में ही दोनों भाइयों के सदृश्य परीजाद भी शिक्षिता बन गई। गणित, इतिहास, नीति इत्यादि में पारगामी होने के अतिरिक्त मृगया में भी अति कुशल हो गई। बाण चलाना, लक्ष्यवेध, अदृश्यलेध इत्यादि में ऐसी सिद्धहस्त हुई कि भूल न पड़े।

निरीक्षक का पुरातन घर बहुत छोटा जीर्ण था अस्तु उसने वास्तु विद्या नैपुण्य कर्मचारियों द्वारा नगर बाहर विशाल भवन बहमन, परवेज और परीजाद के लिए बनवा दिया ।

भवन अति सुसज्जित पुष्पोद्यान इत्यादि से परिपूर्ण था उद्यान के एक पार्श्व में सुदृढ़ प्राकार वेष्टित अनेक जीव-जन्तु मृगयार्थ एकत्रित कर रक्षित कर दिये थे जिसमें बहमन इत्यादि अवकाश पा मृगया मिस से वहाँ आ चित्त बहलाया करें ।

निरीक्षक पत्नी बहुत दिन बीते स्वर्ग सिधार गई थी राजा से आज्ञा ले निरीक्षक अपने नवीन भवन में आ रहा ।

बहमन, परवेज और परीजाद निरीक्षक को ही अपना पिता समझते थे निरीक्षक को भी कभी वास्तविक वृत्तान्त कहने का अवकाश नहीं मिला था कि सहसा कठिन रोग ग्रस्त हो उसने संसार यात्रा को किम्बहुना अन्त्येष्टि कर्म पश्चात् शोक निवारण कर तीनों भाई बहिन बड़े प्रेम से वहां रह कर सुख पूर्वक कालक्षेप करने लगे ।

एक दिन दोनों भाई आखेट को गये थे घर पर केवल परीजाद रह गई थी सहसा किसी तपस्विनी ने भीतर आकर नमाज पढ़ने की प्रार्थना की । परीजाद ने सहर्ष आज्ञा देदी ।

वृद्धा तपस्विनी जब निमाज से निवृत्त हो गई तो परीजाद की आज्ञानुसार कोई सेविका ने समस्त भवन इत्यादि उसे दिखलाई ।

वृद्धा भवन देख अति प्रसन्न हुई वह आज्ञा ले घर लौटने ही को थी कि परीजाद ने अर्घ अभ्युत्थान देकर कहा—"आपको धन्य है आपने जो दैवी मार्ग गहा है सब कोई उसीकी वांछा करते हैं अस्तु हमें भी हरिभक्ति का सदुपदेश देकर कृतार्थ करो । आपके तो दर्शन मात्र से पाप मोचन होते हैं ।"

निदान वृद्धा के बैठने के उपरान्त चीनी पात्रों से अनेक

सुस्वादु भोजन मंच पर चुना गया। परीजाद ने थोड़ा भोजन वृद्धा को भी दिया।

वृद्धा ने आशिष देकर कहा—"यद्यपि ऐसे पाक मैंने आजन्म आस्वादन नहीं किये परन्तु तुम जैसी उदार राजकुमारी की आज्ञा अमान्य करना साधुता के विरुद्ध है। थोड़ा अवश्य खाऊंगी।"

निदान भोजनोपरान्त परीजाद ने पूछा—"भवन कैसा है इसमें क्या त्रुटि है?"

वृद्धा ने अति प्रशंसा कर कहा—"भवन बहुत रमणीक बना है। यदि इसमें बहुभाषी चिड़िया जिसका कलरव सुन दूर दूर से अनेक पक्षी आकर एकत्रित हो जाते हैं और विशेषकर रसिक जन उसका मृदुल मधुर शब्द चातुर्य सुन अति लुभा जाते हैं। दूसरा गायक वृक्ष है जब वायु द्वारा उसके चिकने पत्ते परस्पर रगड़ते हैं सो ऐसे मनोहर स्वर अलापता है कि सुनने वाले श्रान्तपथिक तक तन्मय हो जाते हैं। तीसरा पदार्थ पीत वर्ण जल है यदि कुछ जल विन्दु किसी बड़े जल पात्र में डालकर बाटिका में रखदो फौवारे के सदृश्य जल उद्गिरण कर अपूर्व दृश्य दीखता है और आश्चर्य यह है कि जल लौटकर उसी पात्र में पुनः पहुंच जाता है।

परीजाद ने उत्सुकता से पूछा—"वृद्धा तपस्विनी, उक्त तीनों पदार्थ मिलते कहां हैं?"

वृद्धा ने सोचा उक्त पदार्थों का लाना सहज नहीं है उसने यथा क्रम कहना प्रारम्भ किया—"बेटी! यह तीनों पदार्थ भारतवर्ष के सीमान्तर्गत किसी द्वीप में हैं जो यहां से अमुक दिशा में बीस दिन के मार्ग के लगभग है कैसे प्राप्त होंगे यह रहस्य जानने के लिये स्वदेश सीमा पर; जिस साधू से साक्षात होगा वह सब मर्म बता देगा। यह कहकर वृद्धा ने तो अपना मार्ग लिया परन्तु परीजाद बड़े असमञ्जस में पड़ गई।

निदान जब परीजाद के भाई मृगया से लौटे तो बहिन को चिन्तित देख कारण पूछने लगे थोड़ी देर सोचकर परीजाद ने वृद्धा का आना और तीनों पदार्थों की आकांक्षा वर्णन कर कहा—"आप मुझे सहायता दो तो मैं तीनों पदार्थ खोज लाऊंगी ?"

बहमन ने कहा—"बहिन तुम्हारा जाना उचित नहीं है यह तीनों पदार्थ कहां मिलेंगे मुझे बताओ मैं कल प्रातः ही यहां से प्रस्थान कर यथा सम्भव शीघ्र लौटने की चेष्टा करूंगा।"

यद्यपि परीजाद ने भाई का वियोग असह्य जान रोकना चाहा परन्तु बहमन अपना जाने का विचार दृढ़ कर चुका था भाई और बहिन को आश्वासन दे कहने लगा—"लो मैं तुम्हें अपनी छूरिका देता जब तुम्हें मेरा कुछ समाचार जानना हो इसे निकालकर देख लेना जब तक वह स्वच्छ दर्पणवत दृष्टि पड़े मुझे जीवित समझना और यदि रक्तवर्ण हो जावे तो कुशल न जानना।"

निदान विदा हो वहमन भारत की ओर चल दिया। बीसवें दिन एक वयोवृद्ध जिसकी आकृति अति भयानक थी सघन वृक्ष के तट अपनी कुटी के बाहर बैठे दृष्टि पड़े।

वहमन ने निकट जाकर देखा कि वृद्ध का रूप अति विकृत है दाड़ी मूंछ भ्रू इत्यादि सब श्वेत ऐसी जघन्य हैं कि मुख का कोई भाग दृष्टि नहीं आता। वरन् मुख से आपाद दाड़ी दाढ़ी फैली हुई बढ़े हुए नख देखकर अंगुली द्विगुणति बोध होती हैं। शरीर पर चटाई लपेट शिर पर लम्बी टोपी धरे ध्यानावस्थित है वह वास्तव में साधु हैं। वहमन उसे देख घोड़े से उतर प्रणाम कर पास जा बैठा।

वयोवृद्ध ने न जाने क्या आशीष दी वहमन कुछ न समझ सका उसने हाथ जोड़कर कहा—"यदि आज्ञा हो तो कुछ श्मश्रु और दाढ़ी के बाल कतर दूं वह आपको कष्ट देते होंगे।"

निदान साधू की आज्ञा से वहमन ने कतरनी निकाल बाल काटने पश्चात् प्रशंसा कर कहा—"यदि दर्पण होता तो मैं दिखाता कि आपको मुखच्छवि कैसी सुन्दर है साधुता का कैसा तेजपुञ्ज है।"

साधू ने मुसकरा कर कहा—"मैं तुम्हारी सेवा से अति प्रसन्न हुआ हूँ यदि मेरे योग्य कुछ कार्य हो तो बताओ।"

वहमन ने धन्यवाद देकर कहा—"महात्मन्! पारस देश से केवल आपके पास ही आया हूँ दया कर मुझे बहु भाषी चिड़िया गायक वृक्ष और पीत जल लाने का मार्ग बता अनुग्रहीत करो।"

साधु मौनावलम्ब हो न जाने किस शोच में पड़ गया अस्तु वहमन ने प्रबोध देकर कहा—"साधुवर्य! मुझे एक दो पल पहर समान भान होता है कृपया शीघ्र मार्ग बता कर बाधित कीजिये।"

साधू ने दीर्घनिश्वास त्याग कर कहा—"पुत्र, मुझे तुमसे बड़ा प्रेम होगया है मेरी इच्छा नहीं है कि तुम उक्त पदार्थ लेने जाओ यद्यपि जिस स्थान में तीनों पदार्थ विद्यमान हैं मैं भली भांति परिचित हूं परन्तु मार्ग अति कठिन कष्टकर है। पुत्र इस लालसा में अनेक मनुष्य यहां आए परन्तु कोई जीवित लौट कर न जा सका। यदि तुम्हें भी जीवन भार हो तो निस्सन्देह वहां जाकर प्राण गँवाओ अन्यथा इस विचार को चित्त से निकाल सकुशल घर लौट जाओ।"

अन्यमनस्क वहमन ने कहा—ऐसी आप कुछ चिन्ता न करें यदि कोई आक्रमण करेगा मैं सशस्त्र हूँ रक्षा कर लूंगा। कोई भय एवम् दुःख मेरे सुनिश्चय का भङ्ग नहीं कर सकता कृपा कर आप मार्ग बता दीजिये।

"पुत्र वहां तुम पर जो संकट पड़ेगा आक्रमण कर्त्ता दृष्टि न आवेगा ऐसी दशा में विश्वास नहीं कि तुम अपनी रक्षा कर सकोगे।

इस प्रकार साधू ने बहुत समझा कर वहमन से लौट जाने का आग्रह किया परन्तु वह अपने संकल्प पर दृढ़ था अस्तु विवश हो साधू ने एक गेंद देकर वहमन को समझाया—"इस घोड़े के आगे डाल देना यह स्वयमेव आगे आगे लुढ़कती जायगी। आगे जाकर जब पर्वत के तट ठहर जावे घोड़े को वहीं छोड़ पर्वत पर चढ़ जाना। इधर उधर तुम्हें अनेक काले काले पाषाण मिलेगे अति भयानक शब्द कर्णगत होंगे जिस कारण अनायास ही क्रोध और भय उत्पन्न होगा वरन् शिखर तक पहुंचने में अनेक बाधा आवेंगी यदि तुम सावधान रहे आये तो निस्सन्देह अभीष्ट सिद्ध हो जायगा और कहीं क्रोधित हो पीछे मुड़ कर देखा तो जिस प्रकार बहुत से पाषाण दीखेंगे तुम्हारी भी वही दशा होगी शीघ्र ही पाषाण रूप परिणित हो जाओगे क्योंकि वे सब तुम्हारे सदृश उक्त पदार्थों की लालसा में आये और असावधानता से पाषाण बन कर वहीं रह गये। निदान जब तुम शिखर पर पहुंच जाओ तो सन्मुख रखे पींजरा पर अधिकार कर लेना। बहुभाषी चिड़िया हस्तगत होने पर गायक बृक्ष और पीत जल अनायास ही मिल जायगा परन्तु फिर भी मैं तुम्हें समझाता हूं अपने घर लौट जाओ।"

"मैं भलीभांति समझ गया बिना अभीष्ट सिद्ध किये घर न जाऊंगा। ईश्वर रक्षा करे।" यह कह कर वहमन ने गेंद अपने आगे डाल पयान किया।

बहुत दूर चलने पश्चात् गेंद पर्वत के तट जाकर रुक गई हठात् वहमन ने घोड़ा वहीं छोड़ पर्वत पर चढ़ना प्रारम्भ किया वह जिधर देखता काले काले पाषाण ही दृष्टि आते।

अभी वहमन १०–१२ पग ही ऊपर चढ़ा होगा कि अति भयानक कोलाहल श्रवण गोचर हुआ। सन्निकट किसी कंदरा में से चीत्कार कर कोई कह रहा है—"बज्रमूर्ख! कहाँ जाता है?

क्या प्राणभय नहीं है अरे, चला ही जाता है ! यक्षगण रोक दो इसे, आगे न जाने पावे ।"

किसी ओर से भीषण शब्द आता—"पकड़ो, मारो, वध करो देखो जाने न पावे !" परन्तु वहमन निर्भीक चढ़ा चला गया । कुछ ही आगे तीसरी बार ऐसा कोलाहल हुआ जो घन गर्जन से भी अधिक था सहसा किसीने बल पूर्वक चीत्कार कर कहा—"अच्छा ही है जाने तो दो इसका मांस बड़ा स्वादिष्ट होगा देखें यह पक्षी लाता है अथवा अपने मांस से स्यार गिद्ध और कौओं को भोज्य दे तृप्त करता है ।" परन्तु वहमन किंचित् विचलित न हुआ वह बड़ी वीरता से आगे बढा चला गया ।

वहमन कहां तक स्थिर रहता कुछ ही आगे जाकर इस किरातपुरी की विभीषिका से प्रकम्पित हो ज्योंही पीछे मुड़ कर देखा कि क्षणमात्र में ही पाषाण बन गया ।

जिस दिन से वहमन विदा हो भारत की ओर गया था परवेज और परीजाद सदैव ही भाई की दी हुई छूरिका देख कर निश्चिन्त रहा करते थे । एक दिन जैसे ही वह पाषाण बना छूरिका आरक्त हो गई ।

जैसे ही परवेज ने छूरिका देखी हाथ से नीचे छूट पड़ी बहुत चेष्टा करने पर भी नेत्र नीरव न रह सके । परीजाद भी भाई को स्मरण कर अश्रु बहा कहने लगी—"आह भाई ! मेरी मूर्खता से ही तुम्हारे प्राण संकट में पड़े (दीर्घविश्वास त्यागकर) क्यों मैंने तपस्विनी वृद्धा से तीनों बातों का रहस्य पूंछा था अब यदि भाई को खोकर मुझे सब कुछ मिल भी जावे तो किस अर्थ का......।"

बहिन को आश्वासन देकर परवेज ने कहा—"कल मैं भारत

की ओर प्रस्थान करूंगा यदि भाई के संग किसी न कपट किया होगा तो मैं उससे बदला लेकर सन्तुष्ट होऊंगा।

यद्यपि परीजाद ने भाई को जाने से बहुत रोका परन्तु वहमन के वियोग दुख से सन्तप्त वह सन्तोष न कर सका। विवश परीजाद ने भाई से पूछा जिस प्रकार चिन्ह स्वरूप वहमन छूरिका दे गया था तुम्हारा समाचार किस प्रकार मिला करेगा।

परवेज ने अपने कण्ठ से माला उतार परीजाद के आगे रखकर कहा—"जब तक मोती पृथक पृथक रहें मुझे जीवित जानना और किसी कारण से परस्पर चुपट जावें तो जीवन संकटापन्न समझना। यह कह कर परवेज ने भारतवर्ष की ओर पयान किया।

ठीक बीसवें दिन उसी साधू से साक्षात हुआ वहमन की नांई साधु ने परवेज को भी पर्वत शिखर पर जाने से बहुत रोका। परन्तु परवेज ने पश्चात्ताप कर कहा—"थोड़े दिन बीते कि मेरा भाई वहमन यहाँ आया था वह लौट कर नहीं पहुँचा विवश उसे खोजने मुझे जाना ही पड़ेगा कृपा कर आप मार्ग बता दीजिये।"

साधू ने कहा—"मैंने उसे रोकने की बहुत चेष्टा की परन्तु उसने कुछ ध्यान नहीं दिया निस्सन्देह वह पाषाण बन कर वहीं रह गया।

परवेज ने अश्रु विसर्जन कर कहा—"वहमन मेरा सहोदर भाई था उसके वियोग में सहस्त्र वृश्चिक दंशन समान जैसी वेदना हो रही है वर्णन कर नहीं कर सकता। विवश जहां वह पाषाण बना है मैं देखने अवश्य आऊंगा रुक नहीं सकता आपने जैसा उपकार किया है मैं कहां तक धन्यवाद दूं।"

निदान साधू ने बहमन की नांई समझा कर परवेज को गेंद दे सब रहस्य बता दिया।

परवेज ने गेंद घोड़े के आगे डाल दी । चलते चलते जब गेंद रुक गई परवेज घोड़े सहित पर्वत पर चढ़ने लगा। वह ५–६ पग ही गया होगा कि किसीने चिक्कार देकर कहा—"आरोही कहाँ जाता है बेचारे वहमन की दुर्दशा स्मरण कर बड़ा पश्चात्ताप होता हैं। परन्तु तेरी गणना न तो पुरुषों में न स्त्रियों में तू तो नपुंसक है तेरा क्या ?"

इतना ही सुना था कि परवेज ने क्रुद्ध हो खड्ग निकाल ज्योंही पीछे मुड़ कर देखा कि हठात् अश्व सहित पाषाण होगया ।

परवेज के जाने पश्चात् परीजाद रात्रि को माला कण्ठ में धारण कर सोती और प्रभात होने पर सबके पूर्व देख लिया करती थी जिस दिन वह पाषाण हुआ मुक्ता परस्पर चुपट गये ।

परीजाद वज्राहत की भाँति स्तम्भित रह गई जब दोनों भाई चले गए तो मेरा क्या होगा मुझे भी उनका अनुकरण करना चाहिये । अस्तु दूसरे दिन उसने पुरुष वेष कर सेवकों को समझा बुझा भारत की ओर पयान किया ।

परीजाद बड़ी मृगया प्रेमी थी वह घोड़े पर चढ़ना भली भांति जानती थी बीसवें दिन उसी साधू से साक्षात् होगया अस्तु वह घोड़े से उतर प्रणाम कर साधू के पास चली गई ।

साधू ने आशिष देकर कहा—"यद्यपि तुम्हारा पुरुष वेष है परन्तु कण्ठ स्वर से तुम रमणी बोध होती हो कहो किस महत कर्त्तव्य ने वेश परिवर्त्तन करने पर उतारू किया है ?"

परीजाद ने तीनों पदार्थ लाने की उत्कण्ठा दिखाई। अस्तु साधू ने बहमन और परवेज की नाँई रोकने की चेष्टा की, मार्ग कष्ट वर्णन किया परन्तु परीजाद ने दीर्घनिःश्वास त्याग कर कहा—"महात्मन ! इतना श्रम उठा मैं यहां तक पहुंची हूं निराश लौट कर

न जाऊंगी। भयानक शब्द न सुनने का मैंने उपाय सोच लिया है कानों में रुई ठूंस लूंगी।"

"जान पड़ता है कदाचित तुम तीनों पदार्थ ला सकोगी क्योंकि आज तक किसी ने इस उपाय का अवलम्बन नहीं किया।" यह कहकर साधू ने परीजाद को गेंद देकर सब रहस्य बता दिया।

गेंद आगे डाल कर जैसे जैसे वह लुढ़कती गई परीजाद भी घोड़ा दौड़ाये चली गई। जब पर्वत के तट उपत्यका में गेंद रुक गई घोड़े को वहीं छोड़ कानों में रुई ठूँस पर्वत पर चढ़ने लगी।

रुई के कारण परीजाद कुछ सुन न सकी वरन् ऐसे अश्लील निन्द्य शब्द जो मुख्यकर स्त्रियों के लिये व्यवहृत होते हैं उसे सुनाई पड़ने लगे परन्तु वह क्रुद्ध होने के स्थान अट्टहास से हँसने लगी।

अहा! जिस भयानक दुर्गम मार्ग में वीरवृत्त–पालक रुस्तम और अस्फन्दयार सरीखे स्थिर नहीं रह सके वहां सुकुमार परीजाद अनायास पहुंच गई। धन्य है तेरी सहन शीलता और प्रतिज्ञा पालन?

शिखर पर पहुंच कर परीजाद ने पिंजड़ा में बन्द छोटा सा पक्षी देखा। यद्यपि पक्षी ने चीत्कार कर पीछे भाग जाने का अनुरोध किया परन्तु परीजाद ने रुई कान से निकाल पींजड़ा हाथ में उठा लिया और प्रसन्न हो कहने लगी–"पक्षी मैंने अनेक कष्ट सहन कर तुझे पाया है अब मैं कदापि न छोड़ूंगी।"

पक्षी चिड़िया ने मानवी कण्ठ में आश्वासन देकर कहा—"कल्याणी! मैं आपके अधिकार में हूं यद्यपि मेरी लालसा में सकड़ों मनुष्य दुख भोग चुके हैं परन्तु अब तुम्हें कुछ हानि न पहुंचेगी यहां चिरकाल से मैं बन्दी हूं तथापि कोई रहस्य मुझसे छिपा नहीं, मैं तुम्हारी चरण सेविका हूं जो षडयन्त्र तुम्हारे प्रसव समय रचा

गया है तुम्हें अणुमात्र उसका ज्ञान नहीं है अस्तु किसी दिन मैं तुम्हारी ऐसी सेवा करूंगी कि आपका सब श्रम सफल हो जायगा।"

परीजाद उक्त वक्तृता का कुछ मर्म न समझ सकी उसे अपने भाइयों की चिन्ता ने मुमूर्ष बना दिया था।

यह दशा देख चिड़िया ने कहा—"धैर्य धरो व्याकुल न होओ पहिले सन्मुख कुण्ड से थोड़ा सा स्वर्ण जल भर लाओ।"

परीजाद ने प्रसन्न हो पात्र जल भरकर गायकवृक्ष का चिह्न पूछा, चिड़िया के बताने पर परीजाद ने देखा वृक्ष सघन और विशाल है किस प्रकार ले जा सकूंगी वह लौट कर चिड़िया से पूंछने लगी—

चिड़िया ने कहा—"स्वामिनी ! उसकी छोटी सी शाखा काट लेना ही पर्याप्त है जहां गाढ़ दोगी ऐसा ही वृक्ष हो जायगा।"

अस्तु चिड़िया के बताये अनुसार परीजाद एक छोटी शाखा काट लाई इस प्रकार तीनों पदार्थ हस्तगत् कर प्रसन्न होने के स्थान अपने भाइयों की स्मृति से व्याकुल हो क्रन्दन करने लगी।

चिड़िया ने धैर्य देकर कहा—"रुदन क्यों करती हो इस पात्र में से थोड़ा सा जल ले इन काले काले पाषाणों पर छिड़क दो ये सब जीवित हो जायेंगे उन्हीं में अपने भाइयों को पहिचान लेना।"

निदान ज्योंही परीजाद ने थोड़ा थोड़ा जल छिड़का वे सब मानो सुप्तावस्था से जागृत हो विस्मय से इधर उधर देखने लगे। परीजाद दोनों भाइयों को कन्ठ लगा अतीव प्रसन्न हुई।

वहमन और परवेज सब वृत्तान्त सुन बारबार बहिन के अमानुषिक साहस की सराहना कर कन्ठ से लगा तन्मय हो गये। उन्होंने पर्वत पर चतुर्दिक पाषाण देखे थे अब कोई दृष्टि न आया

वरन् उनके स्थान अनेक मनुष्य परीजाद के चरण स्पर्श कर सहस्र धन्यवाद देने लगे ।

परीजाद ने उचित अभ्यर्थना पश्चात् वहां से प्रस्थान किया उसने स्वयम् तो पिंजड़ा लिया वहमन ने गायक बृक्ष की शाखा और परवेज जलपात्र लेकर चला । पीछे पीछे अनेक मनुष्य जो परीजाद ने जीवित किये थे चले ।

मार्ग में साधू से साक्षात् न हुआ न जाने वह कहां लोप हो गया अथवा बन्धन से मुक्त हो स्वयमेव कहीं चला गया । निदान जिसका घर मार्ग में पड़ता परीजाद को धन्यवाद दे नहीं रह जाता अन्ततः बीसवें दिन यह तीनों भी अपने घर आ पहुंचे ।

पिंजड़ा बारहद्वारी में लटका दिया वाटिका में गायक बृक्ष लगा दिया और छोटा सा कुण्ड बनवा उसमें स्वर्णजल पात्र रख दिया जो बीस फुट ऊंचा होकर फौहारे की नाई जल उद्गिरण करता था ।

२-३ दिनों में जब वहमन और परवेज स्वस्थ्य हुए तो आखेट जाना प्रारम्भ कर दिया । एक दिन दोनों भाई बन में पहुंचे ही थे कि सहसा पारस सम्राट का प्रत्यागमन देख घर लौटने लगे परन्तु संयोग से मार्ग में साक्षात हो गया ।

शाह ने दोनों भाइयों को देख अनुमान किया कि कोई उच्च राजकर्मचारी है वरन् नम्रता पूर्वक दण्डवत् करते देख पूर्ण विश्वास हो गया । शाह ने प्रसन्न हो शुभ नाम और ग्राम पूछा ।

वहमन ने अति विनीत उत्तर दिया—"प्रभो ! हम दोनों भाई आपके स्वर्गीय उद्यान शिक्षक के पुत्र हैं । पिता ने अपने जीवन काल में नगर बाहर जो भवन बनवाया था वह हमारा आवास है ।

आपके श्री चरणों के दर्शन का हमें आज ही सौभाग्य मिला है इसीलिये हम राज नियम से अपरचित हैं आशा है आप क्षमा करेंगे।

शाह ने उल्लसित हो पूछा—"तुम बड़े मृगया प्रेमी दीखते हो परन्तु आखेट करना तो राजकुमारों का मुख्य कर्त्तव्य है। अस्तु देखें आपका मृगया कुशल।"

निदान राजाज्ञा से बहमन ने एक सिंह और एक भालू तथा इसी प्रकार परवेज ने लक्ष्य वेध शाह को दिखाया।

शाह ने प्रसन्न होकर कहा—"बस बस अब रहने दो क्या सबही वन्य जन्तु मार गिराओगे कुछ हमें भी रहने दो। (प्रसन्न होकर) धन्य है तुम्हारा कौशल अब हमारे संग चल भोजन कर सन्तुष्ट करो।

बहमन ने हाथ जोड़कर कहा—"प्रभो! हम तो आपके सेवक हैं आपकी आज्ञा शिरोधार्य परन्तु आज हमें क्षमा कीजिये हम कल................।"

बीच ही रोककर शाह ने कारण पूछा। अस्तु बहमन ने सकुचाते हुए कहा—"प्रभो! परीजाद नामक हमारी एक छोटी बहिन है अस्तु हम तीनों बिना एक दूसरे के परामर्श के कोई काम नहीं करते।"

"अच्छा कल ही सही।" यह कह कर शाह ने अन्तःपुर और दोनों भाइयों ने अपने घर की ओर पयान किया।

दोनों भाइयों को बहिन से कहने का ध्यान ही न रहा! दूसरे दिन शाह ने पूछा तो वे अति लज्जित हुए। "कल अवश्य पूंछ आवेंगे।" यह कह कर अपने घर चले आये

आज भी पूछने का ध्यान न रहा शाह ने पूछा तो लज्जित

हो बहुत सकुचाये। शाह ने जेब से निकाल बहमन को स्मरणार्थ तीन स्वर्ण गेंद दे दीं जिससे वस्त्र उतारते समय ध्यान आ जाय। अस्तु गेंद ले दोनों भाई अपने घर चले आये।

रात्रि को जब सोते समय वस्त्र उतारने में गेंद भूमि पर गिर पड़ी तो ध्यान आया वे दोनों भाई उसी समय बहिन के पास जा असमय कष्ट देने की क्षमा प्रार्थना कर शाह से साक्षात् होकर निमन्त्रित करने की समस्त घटना कहने लगे।

परीजाद भाइयों को धिक्कार दे कहने लगी—"तीन दिन से शाह निवेद देते हैं और तुमने स्वीकार नहीं किया नहीं जानते "राजा जोगी, अग्नि, जल इनकी उलटी रीति।" वास्तव में तुम बड़े भाग्यशाली हो जो शाह क्रुद्ध नहीं हुये परन्तु मैं अपनी चिड़िया से परामर्श कर तुम्हें उत्तर दूंगी। यह कह कर परीजाद ने चिड़िया के पास जा सब वृत्तान्त कह सुनाया।

चिड़िया ने कहा—"भाइयों को सम्राट की आज्ञा पालनी चाहिये परन्तु तुम भी निवेद दे सम्राट को अपने यहां बुलाओ।"

अनुमति पा दूसरे दिन बहमन और परवेज मृगया मिस से सम्राट के पास जा प्रणाम कर कहने लगे—"प्रभो! हमारी बहिन बड़ी अप्रसन्न हुई तुमने सम्राट की आज्ञा अमान्य की है शीघ्रता जाकर अपना अपराध क्षमा कराओ।

सम्राट ने प्रसन्न होकर कहा—"तुमने कोई अपराध नहीं किया तुम्हें देखकर जैसा आनन्द होता है अकथनीय है अब तुम कृपा कर हमारे साथ चलो।"

दोनों भाई शाह के संग चल दिये, परन्तु शाह का अनिवार्य प्रेम देख कुछ कर्मचारियों को ईर्षा हुई। नागरिक उन्हें देख कहने

लगे—"जैसे ये सुन्दर सुकुमार हैं ऐसे ही पुत्र ईश्वर शाह को करे वरन् रानी ने पुत्र उत्पन्न किये होते तो वह भी ऐसे ही होते।"

निदान शाह अन्तःपुर में पहुंच दोनों भाइयों को पाकशाला में लिवा ले गये वहां अनेक सुस्वादु भोजन मञ्च पर चुना हुआ था। इङ्गित पा दोनों भाई बैठकर आस्वादन करने लगे। यद्यपि दोनों भाई सभ्यता पूर्वक मौनावलम्बित थे परन्तु थोड़ी देर में ही शाह को वार्त्तालाप में उनकी प्रखर बुद्धि का परिचय मिल गया। शाह अति प्रसन्न हो मन ही मन कहने लगा—"यदि ईश्वर ने ऐसे ही पुत्र दिये होते तो कैसा आनन्द होता।"

भोजनास्वादन पश्चात् गीतवाद्य प्रारम्भ हुआ रमणियों का कोमल कण्ठ दोनों भाइयों को उल्लसित करने लगा किम्बहुना बड़े आमोद प्रमोद में दिन बीत गया। सायं समय जब दोनों भाई विदा होने लगे तो शाह ने कहा—"नियमानुसार कल भी आखेट को आकर यहीं भोजन करना।"

वहमन ने अति विनीत प्रार्थना की—"यद्यपि हम आपकी कुछ सेवा नहीं कर सकते परन्तु हमारी और विशेषकर बहिन की यह प्रार्थना है कि कल आखेट से लौटती बार अपने शुभागमन से हमारे अपावन घर को पवित्र कर कृतार्थ करें। यद्यपि आपके पधारने योग्य स्थान नहीं है परन्तु आप जैसे प्रवल प्रतापी शाह जिस क्षुद्र पर कृपा करें उसके कल्याण में क्या सन्देह।"

शाह ने प्रसन्न होकर कहा—"आपका निवेदन स्वीकार है कल तुम्हारे घर चल कर तुम्हारी बहिन का आतिथ्य अवश्य ग्रहण करूंगा।"

निदान दोनों भाई विदा हो अपने घर आये और यथाक्रम सब वृत्तान्त बहिन को सुनाया।

चिड़िया के पास जा परीजाद ने पूछा तो वह कहने लगी—"सम्राट के योग्य अनेक सुस्वादु पाक बनवाओ और खीरे की आशु जिस पर क्रम से अवेध्य मुक्ता लगे हों भोजन पट पर अवश्य रखना।"

परीजाद ने पूछा—"भला कहीं मुक्ता भी आहार में व्यवहृत होते हैं और फिर हमारे पास हैं भी नहीं लगावें कहां से।"

चिड़िया ने कहा—"मुक्ता लगाने में एक रहस्य गुप्त है में तुम्हारी शुभचिन्तका हूँ देखना कैसा अच्छा फल निकलता है। बाटिका में अमुक वृक्ष के नीचे खोदने से तुम्हें मोती बहुत मिल जांयगे।"

प्रभात होने पर परीजाद ने माली से उसी वृक्ष के नीचे खुदवाया। अस्तु थोड़ा खोदने पर एक स्वर्ण बक्स निकला जो पौन गज वर्गाकार समान गोल और चौकोर मुक्ताओं से परिपूर्ण था। वह बक्स लिये घर की ओर आ रही थी कि भाइयों से साक्षात् होगया वे चिड़िया का परामर्श और मुक्ता पाने से अति विस्मित हुये।

परीजाद की आज्ञानुसार उत्तमोत्तम पाक बनना प्रारम्भ हुआ दोनों भाई सम्राट को लिवाने चल दिये, बहुत देर तक बन में आखेट करते रहे जब सूर्य रश्मि प्रबल हो अधिक उष्ण हुई तो सम्राट को लिये दोनों भाई घर की ओर चले ?

फरवेज ने सम्राट के प्रत्यागमन की बहिन को सूचना दी अस्तु वह स्वागत कर सम्राट को भीतर लिवा ले गई। ज्योंही सम्राट ने भीतर प्रवेश किया परीजाद चरणों में गिर पड़ी।

सम्राट ने परीजाद को कण्ठ से लगा लिया। वह तीनों भाई बहिन का रूप तथा भवन इत्यादि देख अति विस्मित हुआ। हृदय में स्वयमेव प्रेम का संचार होगया।

बहमन शाह को भवन दिखाकर बाटिका में लिवा ले गया। सबके पूर्व शाह फौवारा देख कर अधिक विस्मित हुये। अभी भलीभाँति फौवारा निरीक्षण नहीं किया था कि सहसा गाने का मनोहर शब्द कर्णगत् हुआ वह चारों ओर देखने लगे—"हैं! कोई दृष्टि आता नहीं परन्तु सुमधुर स्वर आकुल किये देता है।"

परीजाद ने मुस्कुराकर कहा—"यहाँ कोई नहीं हैं यह शब्द उक्त गायक बृक्ष का है।"

बड़े आश्चर्य से सम्राट ने बृक्ष के पास जाकर देखा तो वह तन्मय हो गये निदान बड़ी देर तक कभी फौवारा और कभी गायक बृक्ष देखते रहे। तब अधीर होकर सम्राट ने पूंछा—"तुमने ये दोनों अपूर्व पदार्थ कहां से पाये हैं।"

"प्रभो! अभी तीसरा पदार्थ बहुभाषी चिड़िया और देख लीजिये तब मैं आपको समस्त कथा सविस्तार सुनाऊंगी।" यह कह कर परीजाद सम्राट को बारहद्वारी की ओर ले चली।

सम्राट ने विस्मय प्रकाश कर कहा—"न तो कोई यन्त्र है और न जल भाण्डार ही, केवल एक छोटे पात्र में स्वर्ण जल है न जाने कैसे स्वयमेव ऊंचा होकर पुनः पात्र में ही लौट आता है।"

परीजाद सम्राट को बारहद्वारी में लिवा ले गई जहां अपने सुमधुर भाषण से चिड़िया विमोहित कर रही थी अनेक पक्षी उसके चतुर्दिक बैठे आनन्द मग्न हो कलरव कर रहे थे। चिड़िया के निकट ही भोजन मञ्च था अस्तु सम्राट वहीं बैठ भोजन आस्वादन करने लगे।

सम्राट ने खीरा की आशु पर ही
पूंछा—"यह तो खाने योग्य नहीं भोजन

SPS
891.433 R 90 A
23247

29/70

बहमन शाह को भवन दिखाकर बाटिका में लिवा ले गया। सबके पूर्व शाह फौव'रा देख कर अधिक विस्मित हुये। अभी भलीभाँति फौवारा निरीक्षण नहीं किया था कि सहसा गाने का मनोहर शब्द कर्णगत् हुआ वह चारों ओर देखने लगे—"हैं ! कोई दृष्टि आता नहीं परन्तु सुमधुर स्वर आकुल किये देता है।"

परीजाद ने मुस्कुराकर कहा—"यहाँ कोई नहीं हैं यह शब्द उक्त गायक बृक्ष का है।"

बड़े आश्चर्य से सम्राट ने बृक्ष के पास जाकर देखा तो वह तन्मय हो गये निदान बड़ी देर तक कभी फौवारा और कभी गायक बृक्ष देखते रहे। तब अधीर होकर सम्राट ने पूंछा—"तुमने ये दोनों अपूर्व पदार्थ कहां से पाये हैं।"

"प्रभो ! अभी तीसरा पदार्थ बहुभाषी चिड़िया और देख लीजिये तब मैं आपको समस्त कथा सविस्तार सुनाऊंगी।" यह कह कर परीजाद सम्राट को बारहद्वारी की ओर ले चली।

सम्राट ने विस्मय प्रकाश कर कहा—" न तो कोई यन्त्र है और न जल भाण्डार ही, केवल एक छोटे पात्र में स्वर्ण जल है न जाने कैसे स्वयमेव ऊंचा होकर पुनः पात्र में ही लौट आता है।"

परीजाद सम्राट को बारहद्वारी में लिवा ले गई जहां अपने सुमधुर भाषण से चिड़िया विमोहित कर रही थी अनेक पक्षी उसके चतुर्दिक बैठे आनन्द मग्न हो कलरव कर रहे थे। चिड़िया के निकट ही भोजन मञ्च था अस्तु सम्रांट वही बैठ भोजन आस्वादन करने लगे।

सम्राट ने खीरा की आशु पर

पूंछा—"यह तो खाने योग्य नहीं भोजन

SPS
891.433 R 90 A
23247

29/8/70

DELEEP KUMAR KAUL

১৬.০৮ [illegible] [illegible]

7586-27 6/73

10495 25-11-73

15 1/78